

श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

सचित्र

श्री श्री चैतन्यचरितामृत (ब्रजभाषा में)

श्री श्री सुवलश्यामजी कृत

रसिक प्रवर पूज्य श्री गौरांगदासजी महाराज के कृपापात्र,
वरसाना (कोसी) निवासी, सेठ वनखण्ड आत्मज,
गौरनिष्ठ, लाला चतुर्भुज (चेतराम) हरि-
सम्बन्धि नाम चैतन्यदास जी के
सम्पूर्ण आर्थिक सहाय
से मुद्रित

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।

न्यौछावर

प्रथमावृत्ति १०००

सम्बत २००६ विक्रमी,
चैतन्याब्द ४६४

प्रकाशक—

कृष्णदास

कुसुमसरोवर

मुद्रक:— बालकृष्ण बन्सल, बन्सल प्रेस, छीपीटोला आगरा।

❀ श्री श्री गौरांगविधुर्जयति ❀

ब्रजभाषा में

श्री श्री चैतन्यचरितामृतम्

महा महोदय श्रील सुबलश्यामजी विरचितम्

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुनित्यानन्द ।

हरेकृष्ण हरेराम राधेगोविन्द ॥

भज-निताई गौर राधेश्याम ।

जय-हरेकृष्ण हरेराम ॥

ग्रन्थकर्त्ता की गुरुपरम्परा

- (१) श्रीराधाकृष्ण मिलित स्वरूप श्रीमन्महाप्रभु । (२) तस्य पार्षदप्रवर श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामी (३) तच्छिष्य श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी (४) तच्छिष्य ब्रजाचार्य, ब्रज में रासलीलानुकरण के मूल आचार्य तथा बरसाना में श्रीलाडिली जू के प्राकृत्यकारी नारदावतार श्रीनारायण भट्ट (५) तच्छिष्य श्रीदामोदर भट्ट, (६) तच्छिष्य श्रीबालमुकुन्द भट्ट, (७) तच्छिष्य श्रीगोपाल भट्ट, (८) तस्य श्रीब्रजपति भट्ट, (९) तस्य यदुपति भट्ट, (१०) तच्छिष्य ग्रन्थ रचयिता श्रीसुबलश्याम ।

अर्थ सहायक—

सेठ बनखण्ड आत्मज,
कोसो (बरसाना) निवासी,
चतुर्भुज (चेताराम) जी

प्रथमावृत्ति १०००

वि० सं० २००६ चैतन्याब्द ४६४

प्रकाशक :—

बाबा-कृष्णदास
कुसुमसरोवर
पो० राधाकुण्ड

जि० मथुरा ।

सूची-पत्रम्

परिच्छेद	विषय	पृष्ठ	परिच्छेद	विषय	पृष्ठ
आदिलीला			६—नीलाचल गमन, श्रीसार्वभौम मिलन		
१—गुर्वीरविवन्दना, प्रभु अवतार का साधारण तत्व	१-७				४२-५२
२—अवतार का विशेष तत्व	७-११		७—दक्षिणयात्रा-श्रीवासुदेव उद्धार		५३-५८
३—अवतार होने का बाह्यकारण	१२-१५		८—श्रीरामानन्द राय मिलन		५८-७२
४—,, ,, अन्तरंग कारण	१६-२५		९—दक्षिणदेश तीर्थ भ्रमण		७२-८४
५—श्रीनित्यानन्द प्रभु तत्व	२६-३४		१०—नीलाचलपुरी प्रत्यागमन		८५-९१
६—श्री अद्वैत प्रभु तत्व	३४-३८		११—भक्त संमिलन तथा वेडा कीर्तन		९१-१००
७—पञ्च तत्व वर्णन	३८-४५		१२—गुण्डिचा गृह माउर्जन		१००-१०७
८—ग्रन्थ उपक्रमणिका तथा ग्रन्थ-कर्त्ता का परिचय	४५-४८		१३—रथाम्ने कीर्तन तथा नृत्य		१०७-११६
९—महाप्रभु का मालाकार रूप से वर्णन तथा प्रेम फलदान की उदारता वर्णन	४८-५०		१४—होरा पंचमी महोत्सव दर्शन		११६-१२५
१०—मूल स्कन्ध शाखा गणन	५०-५६		१५—भक्त विदायी और सविभौम के गृह में भोजन विलास		१२६-१३६
११—श्रीनित्यानन्द शाखा वर्णन	५६-५८		१६—वृन्दावन के लिये गमन, कानार्ड-नाटशाला से प्रत्यावर्तन		१३६-१४६
१२—अद्वैत प्रभु शाखा वर्णन	५८-६२		१७—वनपथ होकर श्रीवृन्दावन यात्रा		१४६-१५५
१३—महाप्रभु जन्म तथा महोत्सव	६२-६६		१८—वृन्दावन में भ्रमण; उत्कट प्रेमोन्माददशा वर्णन		१५५-१६३
१४—बाल्यलीला वर्णन	७०-७३		१९—प्रयाग में श्रीरूप गोस्वामीजी के लिये अनुग्रह तथा शिक्षा		१६३-१७३
१५—पौगण्डलीला वर्णन	७३-७४		२०—सनातन-शिक्षा, भगवान का स्वरूपतत्व और स्वरूप भेद विचार		१७३-१८६
१६—कैशोरलीला वर्णन	७४-७८		२१—सम्बन्ध-तत्व तथा श्रीकृष्ण माधुर्य विचार		१८६-१९६
१७—यौवनलीला सूत्र	७८-८०		२२—अभिधेय और भक्ति तत्व विचार		१९७-२०४
मध्य लीला			२३—प्रेम प्रयोजन विचार		२०४-२०६
१—मध्य तथा अन्त्य लीला सूत्र	१-१२		२४—आत्माराम श्लोक की ६१ प्रकार व्याख्या		२०६-२२१
२—प्रेमोन्माद तथा प्रलापादि वर्णन	१२-२०		२५—मायावादीगणोद्धार, काशी-वासियों को वैष्णव करना फिर नीलाद्रिगमन		२२२-२३०
३—सन्यास, राढ़तेश में भ्रमण, अद्वैतप्रभु गृह में विलास	२१-२८				
४—श्रीनाथजी की प्राकट्य कथा	२८-३६				
५—श्रीमाधवेन्द्र पुरीजी का चरित्रा-स्वादन	३६-४२				

[illegible][illegible][illegible][illegible]

Arkansas. 1881

अवतरणिका

आज करुणामय गुरुदेव की कृपा से करुणावरुणालय प्रेम पुरुषोत्तम प्रेमावतार प्रेमदाता श्री राधाकृष्ण मिलित विग्रह श्री भगवान गौराङ्ग महाप्रभु के श्री लीलारस से युक्त यह श्री चैतन्य-चरितामृत मूलबंगभाषा के आधार पर ब्रजभाषा में मुद्रित होकर जन साधारण के लाभार्थ प्रकाशित है। इस ग्रन्थ रत्न के रचयिता ब्रजभाषा के प्राचीन कवि श्री सुबलश्यामजी हैं। प्रायः २५० वर्ष पूर्व इसकी रचना उन्होंने की थी। आप ब्रज के प्रसिद्ध आचार्य्य नारदावतार रासलीला प्रवर्तक श्री नारायण भट्टजी की शिष्य-परम्परा की सातवीं पीढ़ी में हुए हैं। इन्होंने श्री नारायणभट्टजी के द्वारा बरसाना-स्थित श्री लाडिलीजी तथा ब्रज के अनेक लुप्ततोर्यों का प्राकट्य हुआ था।

श्री चैतन्यचरितामृत मूल ग्रन्थ बंगला भाषा में पयार छन्द में रचित है जिसका श्रेय श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी महोदय को है। इन्होंने इसमें समस्त उपनिषद् पुराण इतिहास पंचरात्र श्रीगीता ब्रह्मसूत्र तथा श्रीमद्भागवतादि भक्ति-ग्रन्थ और भक्ति-रसामृतसिंधु, उज्ज्वलनीलमणि प्रभृति यावतीय गोस्वामी गण विरचित वैष्णव ग्रन्थों का सार तथा प्रमाण रूप अनेक श्लोक उद्धरण देकर यह अद्भुत ग्रन्थ रत्न प्रगट किया। श्री कविराज गोस्वामिपाद श्रीनित्यानन्द प्रभुपाद की शक्ति-प्रेरणा से इस अद्वितीय ग्रन्थ की रचना करने में समर्थ हुए थे। आपने श्री श्री महाप्रभु के लीला चरित्रों को श्री रघुनाथदास गोस्वामिपाद के मुखारविन्द से श्री राधाकृष्ण पर श्रवण करके श्री वृन्दावनदास ठाकुर द्वारा रचित श्री चैतन्य-भागवत के आधार पर इस अमूल्य लीला रूप गाथा को संचय किया। श्री चैतन्य-भागवत में जो लीलाएं श्री वृन्दावनदास ठाकुर ने विस्तार से नहीं लिखी थीं उनको इन्होंने उक्त ठाकुर महाशय के प्रसाद रूप विस्तार से दिया है तथा श्री चैतन्य-भागवत की विस्तृत कथाओं को सूक्ष्म रूप से दिया है। यह ग्रन्थ आपाततः दो भागों में विभक्त है, सिद्धान्तांश और लीलांश। श्री महाप्रभु की लीलाओं तथा स्वरूप-तत्त्व को जानने की पुष्टि के लिये ही सिद्धान्तांश निहित है।

श्री महाप्रभु के स्वरूप-परिकर-धामादि तत्त्वों को समझाने के लिये ग्रन्थ के आदि के ग्यारह परिच्छेद केवल सिद्धान्त से ही भरे हैं, इसी प्रकार मध्यखण्ड के अष्टम तथा उन्नीस से चौबीस परिच्छेद तक सिद्धान्त का विस्तार है। विज्ञ पाठक गण इन परिच्छेदों में दिये सिद्धान्त तथा समग्र ग्रन्थ में अन्य स्थलों में दिये हुए सिद्धान्त-समुच्चय को बड़े चाव से धैर्यपूर्वक दृढ़-निष्ठ हो श्री गुरु-वैष्णवानुगत्य में निरन्तर पाठ करें तथा समझने का उद्योग करें। यह ग्रन्थ इसी कारण समस्त वैष्णवों के लिये परम आदर की वस्तु है और श्री माध्व-गौड़ेश्वर सम्प्रदाय का तो यह आधार-भूत नित्य पाठ्य-ग्रन्थ ही है।

किन्तु बंगभाषा में होने के कारण यह ग्रन्थ इतरदेशीय जनों को अधिक लाभप्रद नहीं होता था। इस बात को दृष्टिगोचर रखते हुए ब्रजस्थ-वैष्णव गणों के आदेशानुसार श्री सुबलश्याम जो ने (प्रायः २५० वर्ष पूर्व) इस अनुपम संग्रहणीय ग्रन्थ रत्न को सरल ब्रज भाषा में भाषान्तरित कर के परवर्त्ति जनसाधारण का अतुलनीय उपकार किया है। हिन्दी भाषा भाषी जनता श्रीमहाप्रभु की लीला से प्रायः अनभिज्ञ है जो दो एक छोटे बड़े ग्रन्थ हाल में प्रकाशित हुए भी हैं, उनसे श्री महाप्रभु के विषय में भ्रम फैलने की जो शंका है उसको निराकरण करने के लिये इस प्राचीन (प्रायः २५० वर्ष पूर्व लिखित) ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन होना परम श्रेयस्कर है। श्री नाभादासजी द्वारा लिखित श्री भक्तमालजी के शब्दों में विश्वास-शैथिल्य के कारण इतर लेखकों ने प्रायः महा-प्रभु को भगवदवतार न मान कर ही भक्तरूप से वर्णन-चेष्टा की है। इस ग्रन्थ में निहित सिद्धान्त ही ऐसे भ्रमादि का निराकरण करेंगे।

जिन हस्त लिपियों से यह पुस्तक प्रस्तुत हुई है उनके आदि अन्त के पृष्ठों के प्रति-रूप (फोटो) चित्र इस ग्रन्थ में दे रहे हैं। इसमें तीन पृष्ठों के चित्र हैं (१) ऊपर में ग्रन्थकार का

गुरुपरम्परा-परिचय है (२) मध्य में-आदि खण्ड के अन्तिम पृष्ठ का प्रतिरूप है, तथा (३) नीचे-मध्य खण्ड के अन्तिम पृष्ठ का। अन्तिम दोनों चित्रों में ग्रन्थ की प्रति-लिपि लेखन सम्बन् १८२८-२९ दिये हुए हैं।

इस ग्रन्थ का सन्धान सर्व प्रथम हमारे पूज्य गुरुभ्राता श्री रजनीदास बाबाजी (गोविन्द कुण्ड वृन्दावन) से हमें प्राप्त हुआ, तत्पश्चात् श्री पूज्य वंशीदासजी बाबाजी (गौ घाट वृन्दावन) से आदि खण्ड प्राप्त हुआ, तदनन्तर राधारमणैक-जीवन गौरनिष्ठ गोस्वामी श्री कृष्ण चैतन्यजी महाराज से आदि तथा मध्य दो खण्ड प्राप्त हुए।

भक्तिविशारद, आचार्य श्री मदन मोहन गोस्वामीजी ने इस ग्रन्थ की प्राप्ति कराने में हमें अत्यन्त सहायता प्रदान की। हमारे काकागुरु श्री युक्त अद्वैतदासजी महाराज (नवद्वीप धामस्थ) के शिष्य श्रीमान् वृन्दावनदास से उक्त पुस्तकों की प्रतिलिपि कराने में हमें बड़ी सहायता मिली है। पूज्य श्री ज्येष्ठ गुरुभ्राता श्री गौराङ्गादासजी महाराज, श्रीयुक्त कृपासिन्धुदासजी महाराज (रमणरेती) तथा पूज्य काका गुरु श्री बाबा उद्धरणदासजी (कुसुमसरोवर) और श्रीमान् राधाचरणदासजी (गोविन्द कुण्ड, वृन्दावन) श्रीमान् हरिदास शास्त्रीजी, (कालिदह) श्री पूज्य बाबा मनोहरदासजी (चकलेश्वर गोवर्द्धन) बरसाना निवासी गोस्वामी श्री प्रियालालजी तथा जयदेव वंशोद्भव गोस्वामी श्री यमुनावल्लभजी, श्रीमान् गौरनिष्ठ श्री जगमोहनलालजी श्रीवास्तव, न्याय मन्त्री (मध्य भारत प्रान्त) श्रीमान् राजा रघुनन्दनजी (मुंगेर) एवं अन्यान्य ब्रजस्थ वैष्णवगणों के प्रोत्साहन फल स्वरूप यह ग्रन्थ प्रकाशित करने में हमें समर्थ हुए हैं। इस ग्रन्थ के मुद्रितादि कार्य में हमें आगरा निवासी श्रीमान् डाक्टर पूर्णचन्द्र शर्माजी से सम्पूर्ण सहाय मिली है। पूज्य श्री गौराङ्गादासजी के शिष्य बरसाना (कोसी) निवासी लाला चेताराम (चतुर्भुजदास) के सम्पूर्ण अर्थ सहाय से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। एतदर्थ समस्त महानुभाव सज्जनों के हम आभारी हैं।

मूल ग्रन्थ तीन खण्डों में वंग भाषा में उपस्थित है। परन्तु बहुत खोज करने पर भी हमें ब्रज भाषा में श्री सुबलश्याम कृत दो ही (आदि तथा मध्य खण्ड) प्राप्त हुए हैं। अभी अन्त खण्ड की खोज हो रही है। विलम्ब होने के कारण दो ही खण्ड छाप कर प्रकाशित किये जा रहे हैं। इतने पर भी कोई महानुभाव प्रस्तुत पुस्तक को असम्पूर्ण ग्रन्थ न समझे; स्वयं मूल ग्रन्थकार ने इस शंका का निराकरण मध्य खण्ड के द्वितीय परिच्छेद के अन्तिम पयारों में इस प्रकार किया है:—

शेष लोलार सूत्रगण कैल किलु विवरण इहा विस्तारिते चित्त हय।

थाके जदि आयुः शेष विस्तारिव लीला शेष यदि महाप्रभु कृपा हय ॥

आगे भी—एह अन्त लीला सार सूत्र मध्ये विस्तार करि किलु करिल वर्णन।

इहामध्ये मरिजवे वर्णिते ना पारि तवे एई लीला भक्तगण धन ॥

श्री सुबल श्यामजी ने भी इस प्रकार कवित्त में उक्त शब्दों को कहा है:—

सेस लीला सूत्र गण विवरण कियो कछु कियो चाहे मन मेरो तिनको विस्तार है।

जो पै आयु अवसेस करों व्यास लीला सेस जो है महाप्रभु की करुणा अपार है।

यहै सेस लीलासार ताके सूत्र बीच कहूँ वर्णन कियो है कछु करिके विस्तार है।

जो पै याही बीच मरों सकों नहिं ताहि कहि तौ पै यह लीला भक्त गण धनसार है।

सर्व साधारण से प्रार्थना है कि हमारी त्रुटि को क्षमा करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक जल्दी में छपने के कारण जहाँ कहीं प्रेस भूल रह गई हैं कृपालु पाठक भूल सुधार कर पाठ कर लें जल्दी के कारण विस्तृत भूमिका देने में असमर्थ हैं।

मार्गशीर्ष पूर्णिमा

सम्बन् २००६ वि०

विनीत प्रकाशक—

कृष्णदास (कुसुमसरोवर)



नितार्ई

गौराङ्ग

आजानुलम्बितभुजौ
संकीर्तनैकपितरौ
विश्वम्भतै द्विजवरौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ

कनकावदातौ
कमलायताक्षौ।
युगधर्मपालौ
करुणावतारौ ॥

* श्री श्रीगौरांगविधुर्जयति *

श्री श्रीचैतन्यचरितामृत

(आदिखण्ड)

आज लों न दीन्हीं जोय उज्ज्वल सुधारस की, भक्तन उधार सार सम्पदा भगति की ।
दैन हेत ताकों अवतार धार आये कलि, अधम उधारन की करुणा प्रघट की ।
सुन्दर सुवर्ण दुति पुंज सों दिपति देह, नेह के निधान लज्जवन रतिपति की ।
तुम्हरे हिय कन्दरा विराजें हरि सर्वदा, सो नन्दन शची जू के मूरति पिरीति की ॥

पूरन प्रकाश पुंज मञ्जुल श्री वृन्दावन, कल्पद्रुम नीचे मणि मन्दिर विशाल है ।
ताके मध्य भाग रत्न सिंहासन राजत है, उज्ज्वल अनूप दुति दीपति रसाल है ।
राधिका सहित तँह श्री गोविन्द क्रीड़त हैं, प्रिय सखी गण सेवें वंशी गावें कल है ।
मेरो मन हंस ध्यान करें स्मरें मत्त हूँ के, पाइवे को चाह सदा श्री पद मृणाल है ॥

गोपी मन मीन सुख खेलिवे को वत्त महा, लावन कलोल सुख सरसी पसारी है ।
कैधों राधाचित्त नटिनी के नाचवे कों रंग, बत्सादिक चिन्ह से विचित्र सु-सँभारी है ।
हास मुख-सुधा वसुधा की महा बाधा हरै, मुरली की धुनि तापै तन मन बारी है ।
वंशी बट तट मद मत्त गोपी गण साथ, सोई गोपीनाथ प्यारौ सम्पदा हमारी है ॥

जिन्हों निज मन्त्र दियौ तुच्छ जीव स्वच्छ कियौ, लियौ अपनाइ तेई चाहौ सो गहाय हैं ।
जिनकी कृपा तें गौर कृष्ण गण नातो भयो, वेई कृष्ण महाप्रभु चरित कहाय हैं ।
जिनकी कृपा तें धाम वृन्दावन वास लह्यौ, वेई निज शक्ति बल पंगु कौ नचाय हैं ।
मन हूँ को दुर्लभ जे सुलभ ते करी जिन्हों, तेइ श्री यदुपति जू सिर पै सहाय हैं ॥४॥

मोहि बल बड़ौ श्री गुसाईं ब्रजपति जू को, ब्रज में विराजमान सदा अधिकार है ।
श्री गोपाल भट्ट जू के पद सिर छत्र मेरै, ताते ही संताप भजि गयो निरधार है ।
बालमुकुन्द भट्ट जू के पद हिय में धारि, श्रीयुत दामोदर जू देहु रस सार है ।
भट्ट श्री नारायण जू ब्रज के उपासी एक, तिन पद धूरि मेरी जीवनि आधार है ॥५॥

प्रणवों श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारि, मदनगुपाल जू के प्यारे रसरस हैं ।
महाभाव पगे प्रभु राधिका गदाधर जू, दया करौ हिये होय चरित प्रकाश हैं ।
मोह से अयोग पर कृपा कीये हैं है जग, दीनबन्धु दयासिन्धु जस के विकास हैं ।
यह दान चाहौ अवगाहौ गौरकृष्ण लीला, जे जे कही कविराज राज कृष्णदास हैं ॥ ६ ॥

अथ आज्ञा निरूपण-कवित्त—

प्रेम निज दान हेत गेह वृषभान नन्द, प्रगट हूँ करी लीला राधाकृष्ण नाम हैं ।
ताही हेत फेर तेई गदाधर चैतन्य हूँ प्रगटे हैं दोऊ गुण रूप अभिराम हैं ।
तेइ निज रूप आप रूप के स्वरूप हूँ के, कहै गुण रूप प्रेम लीला नित्य धाम हैं ।
श्री गोविन्द जिन्हों जोग पीठते प्रगट किये, दिये दरसाय जिये जीव पूजे काम हैं ॥ ७ ॥
प्रगटे अनंत तेई श्री गुसाई हरीदास बहुधा लड़ाये जिन्हों गोविंद पियारे हैं ।
दैं निदेश जिन्हों कविराज राज जू सों फेरि चरित कहाये प्रभु जीवनि जियारे हैं ।
वेइ पुनि प्रगटे हैं श्री गुसाई नित्यानंद तेई श्री गुसाई सिवराम उजियारे हैं ।
कृष्ण के चरण हियें जिनके विराजै सदा श्री गोविंद चरण जू सरस हियारे हैं ॥ ८ ॥
तिन हीं कौ रूप आप श्री गुसाई जगन्नाथ, प्रगट विराजमान जग हितकारी हैं ।
गौरलीला विना कैसे कृष्ण के स्वरूप जानैं, भक्ति हीन दीन जीव चिंता चित धारी हैं ।
वारुणी दिशा के जीव कैसे भान उदौ जानैं, हिये उन मानें प्रभु गुण सुखकारी हैं ।
महाप्रभु लीला वृज भाषा के प्रगट होय जानें जन सबै मिटैं हिये अंधियारी हैं ॥ ९ ॥
ऐसे जीव दया देखि दियो है निदेश जिन्हों ताते अति भई मेरी मति मतवारी हैं ।
कहाँ मति मंद मैं जु कहाँ गौरलीला सिंधु कैसे पार हूँ हों याके जिय न विचारी हैं ।
हिये ही कौ राग तान हाथ के प्रताप जैसे काठ सों गवावैं गावैं आप वीना धारी हैं ।
जानि ऐसी आशा अब प्रबल उछाह बढ्यौ लोक उपहास हूँ की लाज सब टारी हैं ॥ १० ॥
जाही के विलास वस भये मुनि जपी तपी मोहिनी के बल जीते शिव से प्रबल हैं ।
औरन की कहा बात तात सब विश्व के जे ते ते अज मोहे रहे ताहि ते अचल हैं ।
ऐसे मैं सैन जिहि सैन आगे भजैं तजैं सर पांच छूटैं जाहि छूटे छलवल हैं ।
मोहन मदन तातें भयो अभिराम नाम तिन्हों वस किये जिन्हों ताही ते सुवल हैं ॥ ११ ॥
ऐसे श्री सुवल पाय तिन को सहाय हियों भर्यौ चाप भाय रखौ नेकु न विचार हैं ।
रहे अवगाहि जाही कृष्ण के विभूति से श्री गौरलीला सुधासिंधु निपट अपार हैं ॥
ताकी कोऊ बीच छिर्यौ चाहै तट बीच ठाढ़ौ मो सों नीच जीव जाहि नाहि अधिकार हैं ।
मेरो अभिलाष और नाम निज दोऊ एई करि हौ सफल अब परैगी सम्हार हैं ॥ १२ ॥

रैन दिन नाम गान ताही सौं पगे हैं प्रान आन कौन भान जिय तम के हरन हैं ।
जीति अनायास जन मन में निवास कियो सो न पास आवे काम गहै ता सरण हैं ।
गोपीनाथ प्यारे न्यारे नेक हूँ न होत जिहि देखें दुख नसै महारस को भरन हैं ।
भयो श्री श्यामचरन नाम अभिराम याते आठ जाम हियें रहैं स्याम के चरन हैं ॥ १३ ॥
जहाँ तहाँ कृष्ण भक्त वत्सल सुने हैं मैं जु भक्ति लेस हीन ताते भयो हिय त्रास हैं ।
एक दीनबन्धु नाम काम को न सोऊ मेरे जाते वह दीनता न आवै आस पास हैं ।
जिते हरी भक्त ते अभक्तनि पै कृपा करें यहै सुनि देखि भई मोहि बड़ी आस हैं ।
ताते ही निसंक हूँ के मोसो मति मंद जीव गौर गुन भाषा निज करत प्रकास हैं ॥ १४ ॥
वृन्दावन वासी गौर कृष्ण के उपासी भक्त सब सुख-रासी तिन पद सिर नायकैं ।
कृष्ण रस मांते देह नांते ह्यांते किये जिन्हों दोस हूँ में लेत गुन अपने सुभायकैं ।
नेकु संग कियें हियें डारें रस भंभरि को कृष्ण भक्ति प्रेम रूप देहि दरसाय कैं ।
तिन हीं कौ बल पाय लाज ही बहाय महाप्रभु गुन कहाँ व्रज भाषा में बनाय कैं ॥ १५ ॥

ग्रंथकर्तुः श्रीकृष्णदासस्य मंगलाचरणश्लोकानि ॥

वन्दे गुरुनीशभक्तानीशमीशावतारकान् । तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ॥ १ ॥
वन्दे श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्दौ सहोदितौ । गोडोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥ २ ॥
यद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ।
षडैश्वर्यैर्पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं न चैतन्यात्कृष्णाजगति परतत्वं परमिह ॥ ३ ॥
अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ समर्पयितुमुन्नतोच्चलरसां स्वभक्तिश्रियम् ।
हरिः पुरटसुन्दरदधुतिकदम्बसन्दीपितः सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥ ४ ॥
राधाकृष्णप्रणयविकृतिहर्दिनीशक्तिरस्मादेकात्मनावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं राधाभावद्युति सुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम् ॥ ५ ॥
श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा-स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः ।
सौख्यं चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भे सिन्धौ हरीन्दुः ॥ ६ ॥

संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोविधशायी ।

शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानंदाख्यरामः शरणं ममास्तु ॥ ७ ॥

मायातीते व्यापि वैकुण्ठलोके पूर्णैश्वर्ये श्रीचतुर्व्यूहमध्ये ।

रूपं यस्योद्भाति संकर्षणाख्यं तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

माया भर्ता जाण्ड संघाश्रयांगः शेते साक्षात् कारणाम्भोधिमध्ये ।

यस्यैकांशः श्रीपुमानादिदेवस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

यस्यांशः श्रीलगभोदशायी यन्नाभ्यञ्जं लोकसंघातनालम् ।

लोकस्रष्टुः सूतिका धाम धातुस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ १० ॥

यस्यांशः परात्माखिलानां पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी ।

क्षौणीभर्ता यत्कला सोऽप्पनंतस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ११ ॥

महाविष्णु जगत्कर्ता मायया यः सृजत्यदः । तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः ॥१२॥
 अद्वैत हरिणाद्वैताचार्य भक्तिशंसनात् । भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्यमाश्रये ॥१३॥
 पञ्चतत्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम् । भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ॥१४॥
 जयतां सुरतौ पंगो रम मन्दमते गती । मत्सर्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥१५॥

दिव्यद्वन्द्वद्वन्द्वारण्यकल्पद्रुमाधः

श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ ।

श्री श्री राधा श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठाभीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥१६॥

श्रीमन्नासरसारम्भी वंशीवटतटस्थितः । कर्षणवेणुस्वनैर् गोपीः गोपीनाथो श्रियोऽस्तु नः ॥

॥ अथ दोहा ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकन्द ॥
 ग्रंथ आदि मंगल करै यहै सिष्ट आचार । गुरु हरि हरिजन सुमिरियै ताको यहै प्रकार ॥
 इन तीनों सुमिरै सकल होय सुविघ्न विनास । अनायास पूरण सबै होय हिये की आस ॥
 सो वह मंगल त्रिविध है एक वस्तु निर्देश । इक आसिस इक प्रणति है कहै जु करि उद्देश ॥
 श्लोक दोय करि प्रथम हीं कीनौ इष्ट प्रणाम । सो सामान्य विशेष करि दोऊ रूप अभिराम ॥
 श्लोक तृतीय में दूसरौ कह्यो वस्तु निर्देश । याही ते जान्यौ परै परम तत्व उद्देश ॥
 श्लोक चतुर्थ करि जगत कौ दीनौ आशीर्वाद । सब ही कौ माग्यो यहै श्री चैतन्य प्रसाद ॥
 ता में प्रभु अवतार को कारण कह बहिरंग । छटे पांच ये मधि कह्यौ कारण मूल सरंग ॥
 श्लोक छहनि करि प्रथम हीं कह्यो सुप्रभुको तत्व । और पांच करि पुनि कह्यौ नित्यानन्द महत्व ॥
 श्लोक दोय करि पुनि कह्यौ श्री अद्वैत स्वरूप । और एक करि पुनि कह्यौ पंच तत्व को रूप ॥१०॥
 इन चौदह सब पदनि करि कीनौ मंगलचार । ताही में कीनौ कथन तत्व वस्तु को सार ॥११॥
 सब श्रोता हरि जननि कौ करि प्रणाम बहुवार । श्लोक सवनि को करत है नीके अर्थ विचार ॥
 सुनौ भक्त सब एक मन करि कै हिय उल्लास । गौर कृष्ण रस शास्त्र मत कीजै अर्थ प्रकास ॥
 गुरु दोऊ हरिदास हरि हरि अवतार प्रकास । शक्ति कृष्ण पट रूप धरि इहि विधि करै विलास ॥
 इनि छह तत्त्वनि के चरण कमल सीस पर धार । प्रथम कियो सामान्य करि मंगल एक प्रकार ॥

वन्दे गुरुनीशभक्तानीशमीशावतारकान् । तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ॥

कृष्ण मंत्र-गुरु और जै सीचा गुरु सुख धाम । तिन के पद पंकजनि कौ आगे करौ प्रणाम ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ भट्ट गोपाल । जीव दास रघुनाथ जू जीवन के प्रतिपाल ॥
 ए छह गुरु सिचा गुरु जु मेरे इष्ट आधार । इन के श्रीयुत पदकमल प्रणवौ वारंवार ॥
 अरु प्रभु के सब भक्त हैं जे श्री वास प्रधान । तिन सब के पद दंडवत करि सहस्र भुज जान ॥
 आचारज अद्वैत जू विष्णु अंस अवतार । पादपद्म तिनकेन कौ मम प्रणाम बहुवार ॥२०॥
 श्रीयुत नित्यानन्द प्रभु हैं जु स्वरूप प्रकाश । चरण कमल वन्दौ जु तिन जिनको हों निजुदास ॥
 पंडित गदाधरादि ये हैं प्रभु के निजु शक्ति । तिन सबके चरणन करौ प्रणति हिये धरि भक्ति ॥

श्री चैतन्य महाप्रभु आप स्वयं भगवान् । चरण कमल प्रणवौ जु तिनि मेरे जीवनि प्राण ॥
 वंदन करि आवरण सह प्रभु को बारंवार । ज्यों येइ छह हैं तेई तैसैं करौ विचार ॥
 जद्यपि मम गुरु हैं महाप्रभु जू के निजुदास । तिन को हम जानतेऊ तिन ही को जु प्रकाश ॥
 गुरु स्वरूप हैं कृष्ण कौ वेद पुरान प्रमान । कृपा करै गुरु रूप धरि भक्तन पर भगवान् ॥

तथाहि श्री भागवते—आचार्य मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् ॥ इति ॥

शिखा गुरु को जानियै है निज कृष्ण स्वरूप । अन्तरयामी भक्तवर ये विवि रूप अनूप ॥
 तथाहि तत्रैव-आचार्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥ गीतायां-दादामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते इति ॥
 अन्यत्र च-शिखागुरुश्च भगवान् शिखिपिच्छमौलिरिति ॥ तथा ब्रह्मणे भगवान् स्वयमुपदिश्यानुभावितवान् ॥

तथाहि-ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् । सरहस्यं तदगच्छ गृहाण गदितं मया ॥

यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः । तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहान् ॥

दोहा-प्रभु स्वरूप के भक्त हैं बसिवे कौ निजु धाम । भक्तन के हिय कमल में सदा कृष्ण विश्राम ॥

तथाहि भागवते—

साधवो हृदयं मद्यं साधूनां हृदयं त्वहमिति ॥ तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता ॥

दोहा

एक अंस अवतार है इक गुण शक्त्यावेश । त्रिविध कहे अवतार प्रभु श्रीभागवत विशेष ॥३०॥
 पुरुष और मत्स्यादि सब कहै अंस अवतार । अज हरि हर तीनों जु एगुन अवतार विचार ॥
 सनकादिक पृथु व्यास मुनि शक्त्यावेश अनूप । अरु है श्रीभगवान के दोय प्रकाश स्वरूप ॥
 तिनको एक प्रकाश है अरु है एक विलास । तिनके लच्छन सुनो अब करिकै हिये हुलास ॥
 एकहि विग्रह होइ जौ रूप अनेक अनूप । आकृति भेद न होय जो है एक ही स्वरूप ॥
 महिषी गण के कर गहै जैसे कीनौ रास । याही कौ कहियै जु श्री प्रभु को मुख्य प्रकास ॥
 सब भक्तन निरनौ कियो ताको नाम विलास । एकहि वपु आकृति पृथक् ठौर अनेक प्रकाश ॥
 ज्यों हलधर वैकुण्ठ में नारायण भगवान् । वासुदेव प्रद्युम्न ज्यों अरु संकर्षण जान ॥
 कृष्ण शक्ति निज त्रिविध है इक लक्ष्मी गण रूप । अरु महिषीगण शक्ति निज है अति परम अनूप ॥
 सर्वोपर निजशक्ति है गोपीगण जु प्रधान । पूरणतम जिनिके जु प्रिय नंद नंदन भगवान् ॥३६॥
 स्वयं रूप भगवान के कायव्यूह हू जान । भक्ति सहित आवरण सब है तिन ही जु प्रमान ॥४०॥
 भक्त आदि क्रम कै कियो सब ही कौ जु प्रणाम । इनको वंदन सुभ सवनि कौ कारण अभिराम ॥
 श्लोक एक कर यों कह्यौ सो सामान्य प्रकार । वंदन कियो विशेष करि विवि पद अर्थ विचार ॥

वन्दे श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्दौ सहोदितौ । गौड़ोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दो तमोनूदौ ॥२॥

ब्रज में विहरे प्रकट ज्यों प्रथम कृष्ण बलराम । कोटि भानु ससि सम उदित दिपत दुहुन कौ धाम ॥
 तेई विवि सब जगत पै हिय में भये दयाल । गौड़देश गिरितै इत उदै भये सम काल ॥

महाप्रभु श्रीकृष्ण जू और श्री नित्यानंद । जिनि के उदै प्रकाश तें भयौ जगत आनन्द ॥
भानुचंद जैसें हरै जीवनि को अंधियार । देहि वस्तु दरसाय कै करै सुधर्म प्रचार ॥
भाई दोऊ प्रकट इमि जीवनि कौ अज्ञान । सोई तम सब नाश किय तत्व वस्तु कौ दान ॥
ताही तम अज्ञान को कहियै कैतव नाम । धर्म अर्थ कामादि कौ सो हिय उपजै काम ॥
तामें चाहजु मुक्ति की कैतव भाग प्रधान । कृष्ण भक्ति कै होत है जाते अंतर्धान ॥

तथाहि श्री भागवते:—धर्म प्रोज्झितकैतवेत्यादि ।

स्वामी श्रीधर जू कियौ या को अर्थ प्रमान । कैतव कछौ प्रशब्दते मुक्ति चाह हू जान ॥५०॥
कृष्ण भक्ति बाधक जिते शुभ अरु अशुभ जु कर्म । तेऊ है या जीव के तम ही कौ इक धर्म ॥
जिनि के होय प्रसाद ते इन सब तम कौ नास । हिय अज्ञान नसाय कै करै जु तत्व प्रकास ॥
तत्व वस्तु हरि भक्ति हरि कहिये प्रेम स्वरूप । नाम कीर्तन कृष्ण कौ है सब आनंद रूप ॥
दिनकर ससि ते होत है बाहर तम को नास । वहिवस्तु घटपट जिते तिन कौ होय प्रकास ॥
दोऊ भाई रविजु ससि कियौ हिये तम नास । दोऊ भागवत कौ कियो हिय में जिन्हौ प्रकास ॥
एक भागवत शास्त्र कौ बड़ो भागवत जान । कृष्ण भक्ति रस पात्र जौ भक्त भागवत मान ॥
दोऊ भागवत द्वार है दियो भक्तिरस जान । ताही रस के वस भये तिन के हिय भगवान ॥
इक अद्भुत समकाल विवि एक समान प्रकास । अरु अद्भुत हिय गुहा कौ कीनौ सब तम नास ॥
ये दोऊ रवि ससि परम सद्य जीव के काज । जगत भाग्य वस उदै किय गौड़ उदै गिरिराज ॥

कवित्त

वन्दे महाप्रभु नित्यानन्द भानु ससि दोऊ गौड़ गिरि उदै सम काल ही प्रकाश हैं ।
हृदय सरोज खिले भक्ति मकरन्द फिले विमुख उलूकनि के भये तम नास हैं ।
जीव निज कृत्य लगे महानिसा ते जु जगे मेंड तजि भाव सिंधु उमड़ें कुलास हैं ।
चहुं दिस राग छयौ वेद हिम कंप गयौ रसिक चकोर हिय आनन्द उजास हैं ॥

दोहा—

श्लोक दोय इनि करि कियौ वंदन विविध प्रकार । जाते विघ्न विनाश हरि वांछा सिद्धि प्रकार ॥

कवित्त

महाप्रभु नित्यानंद और श्री अद्वैत जू कौ कछौ हैं महत्व जामें मति अनुसार है ।
तिन के जे भक्त नाम प्रेम रस धाम तत्व न्यारे-न्यारे लिखे आछे करि कै विचार है ।
ग्रन्थ बहु व्यास भये कियो विस्तार अति थोरे आंक कछौ सब अर्थनि को सार है ।
सुने जाने सब वस्तु तत्व सार नीकै करि भक्ति को प्रकास होय मिटै अंधियार है ॥

दोहा—

रूप दोय रघुनाथ पद रज ही कीजै आस । कृष्णदास जे कहत है चरितामृत रस रास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत सो कहत है ब्रज भापाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखंडे गुर्वीदिवन्दनमंगलाचरणं नाम प्रथम परिच्छेदः ॥

द्वितीय परिच्छेद

श्रीचैतन्यप्रभुं वन्दे वालोऽपि यदनुग्रहात् । तरेन्नानामतग्राहव्याप्तं सिद्धान्तसागरम् ॥ १ ॥
कृष्णोत्कीर्तनगाननर्तनकलापाथोजनि भाजिता, सद्भक्तावलि हंसचक्रमधुपश्रेणी विहारारूपदम् ।
कर्णानन्दिकलध्वनि बहंतु मे जिह्वामरुप्रांगणे, श्री चैतन्यदयानिधे तव लसल्लीला सुधास्वधुनी ॥ २ ॥

दोहा—

जय-जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकन्द ॥ १ ॥
श्लोक तृतीय को अर्थ अब करौ बुद्धि अनुसार । कियौ वस्तु निर्देस में जामें मंगल चार ॥

तथाहि—यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ॥

षडैश्वर्यैः पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं, न चैतन्यात् कृष्णाज्जगति परतत्वं परमिह ॥३॥

ब्रह्म आत्म भगवान अरु यह अनुवाद जु कीन । आभा अस स्वरूप जो कहै विषय ये तीन ॥
आगे कहि अनुवाद कौ पाछे कहै विधेय । अर्थ रीति यह शास्त्र की सुनौ संत मन देय ॥
स्वयं कृष्ण भगवान पर तत्व पूर्ण आनन्द । पूरण ज्ञान महत्व प्रभु कहे जु शुक नंदनन्द ॥
तेई प्रभु अब अवतरे श्री चैतन्य स्वरूप । तीन नाम तेई धरै बहु प्रकास अंग रूप ॥
ब्रह्म एक परमात्म अरु पूरण श्री भगवान । तिनहीं के यह नाम है श्री भागवत प्रमान ॥

तथाहि श्री भागवते—

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम् । ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्दयते ॥४॥

दोहा—

निर्मल तिनके अङ्ग की किरण मण्डली आहि । निर्विशेष सब उपनिषद ब्रह्म कहत है ताहि ॥
चर्म चक्षु को दीखई निराकार ज्यों शूर । ज्ञान मार्ग इमि ना लहै कृष्णरूप छवि पूर ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटी, कोटीष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम् ।

तद्ब्रह्म निष्कलमनंतमशेषभूतं गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥५॥

दोहा—

कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जिहि है जु विभूति समान । वही ब्रह्म गोविन्द की अङ्ग प्रभा है जान ॥
तिन श्री गोविंद कौ भजौ मेरे प्रभु है जोय । तिनहीं के जु प्रसाद तें सृष्टि शक्ति मम होय ॥

तथाहि श्री भागवते—

मुनयो वातरसनाः श्रमणा ऊर्ध्वमन्थिनः । ब्रह्माख्यं धाम ते यान्ति शान्ताः सन्न्यासिनोऽमलाः ॥६॥

दोहा—

अन्तरजामी आत्म करि जोगी कहत है ताहि । सोऊ श्री गोविन्द की अंस विभूति जो आहि ॥
ज्यों अनन्त फटिकनि विषै एक भान कौ भास । जीवनि में गोविन्द कौ त्यों इक अंस प्रकास ॥

गीतायां—अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन धनञ्जय । विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥

श्री भागवते—तस्मिन्महमजं शरीरभाजां हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकल्पितानाम् ।

प्रति दिशमिव नैकधार्कमेकं समाधिगतोऽस्मि विभूतभेद मोहः ॥

दोहा—

सोई श्री गोविन्द जू आप कृष्णचैतन्य । नाहिन जिव निस्तार हित दयावान इमि अन्य ॥
परव्योम में बसत जे नारायण अभिधान । षट् गुण पूरण ये सदा लक्ष्मीपति भगवान ॥
वेद भागवत उपनिषद् आगम और पुरान । पूर्ण तत्व जाकौं कहै ताकौ नाहि समान ॥
भक्ति योग करि लहत है जिनको दरसन धीर । देवयूथ ज्यों भानु कौ देखत है स-शरीर ॥१८॥
ज्ञान योग मारग भजै तिनको जे सब लोय । ब्रह्म आत्मा रूपकरि तिनको अनुभव होय ॥
भक्ति भेद ते होय तिहि ईश्वर महिमा ज्ञान । ताही तै तिनको दर्ई उपमा भानु समान ॥
तिन नारायण कृष्ण को है जो नाम अभेद । एकहि विग्रह है तऊ आकृति मात्र विभेद ॥
कृष्णचन्द्र ये द्विभुज वे नारायण भुज चार । चक्रादिक वे धरे ये मुरलीधर सुकुमार ॥

तथाहि श्री भागवते—नारायणस्त्वं नहि सर्वदेहिनामात्मास्यधीशाखिललोकसाक्षी ।

नारायणोऽगं नरभुजलायनात्तच्चापि सत्यं न तवैव माया ॥

दोहा—

ब्रह्मा बालक वत्स हरि किय अपराध प्रसाद । ताकौ क्षमा कराय कै मागत है जु प्रसाद ॥
नाभि-कमल तुमते भयो मेरो जन्म प्रमान । ताते माता पिता तुम मोहि पुत्र अभिमान ॥
मात पिता नहि ये धरें बालक कौ अपराध । मम अपराध क्षमा करौ और प्रसाद अगाध ॥
कृष्ण कहै अज पिता तुव नारायण भगवान । तुम ब्रह्मा हौं गोपसुत कैसे तनय समान ॥

कवित्त—

ब्रह्मा कहै महाप्रभु नारायण नाहीं तुम तुमहीं हो मुख्य सुनौ हेतु अभिमान है ।
प्राकृत औ अप्राकृत जिते जीव लोकनि में तिनके निदान तुम तुमहीं तो धाम है ।
षट् कुल कारण औ आश्रय हू पृथिवी ज्यों ऐसे तुम तातें मुख्य नारायण नाम है ।
कारण कछो है एक दूसरोऊ सुनौ प्रभु नाम की निरुक्ति जामें कही अति वाम है ।
जीव के जे ईस पुरुषादि अवतार सब तिन हूँ में बड़ी तुव ईसता अपार है ।
याही ते अश्वीसुर हो सब ही के पिता तुम शक्ति तें तुम्हारी तिन्हें रक्षा अधिकार है ।
नार के अयन जाते पालन करौ हो तुम ताते मूल नारायण नाम निरधार है ।
ये है एक हेतु कछो तीसरोऊ सुनौ प्रभु जाते तुम नाम सो जु अर्थ अनुसार है ॥२॥

दोहा—

अनन्त कोटि ब्रह्मांड जे बैकुण्ठादिक धाम । तिनमें जितेक जीव हैं नार कहै तिंहि नाम ॥
तिनके सुभ अरु असुभ जे है त्रैकालिक कर्म । साक्षि तुम देखौ तिन्हें जानत हो सब मर्म ॥
तुम देखौ सब जगत को थिति नीके करि होय । जो तुम तिहि देखौ नहीं ताकी गति नहि होय ॥
जाते देखौ नार को जानों तुम जगदीश । नारायण तुम मूल हो सब ईश के ईश ॥
कृष्ण कहै यह वचन तुम जानत नहि सब कोय । जीव हिये जल में बसै सो नारायण होय ॥
ब्रह्मा कहै जो जल बसै नारायण भगवान । है तेऊ इक अंश तुव वेद पुराण प्रमान ॥
कारण अर्णव गर्भ जलनिधि क्षीरोदक सैन । माया द्वार रचै जगत सब ये माया ऐन ॥
जलशायी जे सबनि के अन्तर्यामी आहि । ब्रह्माण्डनि के आतमा पुरुष नाम है ताहि ॥
हिरण्यगर्भ के आतमा गर्भोदक में सैन । व्यष्टि जीव के आतमा क्षीर उदधि में ऐन ॥
ये सब देखै पृकृति कौ तामे माया गन्ध । कृष्ण तुरीय तिनमें नहीं माया को सनबन्ध ॥

तथाहि श्री भागवते—

विराट् हिरण्यगर्भश्च कारणञ्चेत्युपाधयः । ईशस्य यत्त्रिभिर्हीनं तुरीयं तत्प्रचक्षते ॥

यद्यपि ये तीनों करें माया में व्यवहार । परसैं तऊ न ताहि ये सब हैं माया पार ॥
तथाहि तत्रैव - एतदीशानमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः । न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥
नारायण तीनों के तुमहीं परम जु भौन । तुम नारायण मूल हो यामें संशय कौन ॥
अंसी इन तीनों के परव्योम में धाम । नारायण भगवान वे तुम प्रकाश अभिराम ॥
याही ते अज वचन कौ तत्व कछो यह व्यास । नारायण बैकुण्ठ में सोई कृष्ण प्रकाश ॥
श्लोक तत्व लक्षण परम यहै भागवत सार । है परिभाषा रूप यह सर्वग जिहि अधिकार ॥
ब्रह्म आत्म भगवान ये है श्रीकृष्ण विहार । अर्थ न जानें अज्ञ इह कछु औ करे विचार ॥
औतारी बैकुण्ठपति और कृष्ण अवतार । ते नारायण चारि भुज ये मनुष्य आकार ॥४२॥
पूर्व पक्ष इह मत करै नाना भाँतिन अज्ञ । तिनको निर्जित करन इक पद्य भागवत विज्ञ ॥
श्लोक सुनौ तुम बन्धु सब नीके करौ विचार । मुख्य तत्व इक तीद ये तिनही के परकार ॥
अद्वय ज्ञान सुतत्व है सो श्रीकृष्ण स्वरूप । ब्रह्म आत्म भगवान ये तीनों तिनके रूप ॥
याही पद के अर्थ तुम भये निरुत्तर आहि । और भागवत को वचन एक कहौं सुनि ताहि ॥
तथाहि—एते चांशकला पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं । इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगेयुगे ॥

दोहा—

लक्षण सब अवतार के करि सामान्य प्रकार । कृष्णचन्द्र हू की करी गणना तिनहि मझार ॥
तब तौ श्री शुकदेवजी मन में है भयभीत । फिर पाछै निरनौ कियौ जिहि स्वरूप जो रीति ॥
जे अवतार जु पुरुष के कला अंश सब जान । सब ही के अवतंस है कृष्ण स्वयं भगवान ॥

याही ते ह्यं कहत हैं कृष्ण रूप अवतार । यही अर्थ तुव वचन कौ क्योंअरु करत विचार ॥
तासों कहियै करै तू क्यों कुतर्क अनुमान । अर्थ जु शास्त्र विरुद्ध जो सो क्यों-हू न प्रमाण ॥
तथाहि शास्त्रे—अनुवादमनुकंवेव न विधेयमुदीरयेत् ॥

दोहा—

बिना कहै अनुवाद के कहियै नाहि विधेय । आगे करि अनुवाद कौ पाछे कहिय विधेय ॥
कहियै ताहि विधेय है जोई वस्तु अज्ञात । ताहि कहै अनुवाद सब होइ वस्तु जो ज्ञात ॥
कहौ विप्र परिडत परम यहां विप्र अनुवाद । परिडत ताहि विधेय है अर्थ यहै अविवाद ॥
द्विज करि जानै ताहि सब परिडतता अज्ञात । आगे जाते विप्र कहि परिडतता पश्चात् ॥
तैसे यहै अवतार जू को कैसे है ज्ञात । ये अवतार जू कौन के सो विधेय अज्ञात ॥
एते कर अवतार कौ आगे कहि अनुवाद । कला अंश है पुरुष के पुनि विधेय संवाद ॥
त्यों ही सब अवतार मधि कृष्णचन्द्र है ज्ञात । तिनको ज्ञान विशेष जो वही वस्तु अज्ञात ॥
याही ते आगे कहौ कृष्ण शब्द अनुवाद । फिर भगवन्त स्वयं कियौ है विधेय संवाद ॥
ह्यं भगवत्ता स्वयं ही है जु कृष्ण की साध्य । और स्वयं भगवान कौ भई कृष्णता बाध्य ॥
कृष्ण अंस अंसी जु तिहि नारायण हों सोय । वचन तवै शुक्रदेव कौ यह विपरीत जु होय ॥
नारायण अंसी जु है आप स्वयं भगवान । तेइ इक भये कृष्ण सों जो करते व्याख्यान ॥
अम प्रमाद अरु वंचना करुणापाटव आहि । आरप विज्ञ वचनन में ए सब दोष जु नाहि ॥
कहत जु अर्थ विरुद्ध तुम कहत करौ अरु रोस । है अवमृष्ट विधेय इक तुव व्याख्या में दोस ॥
भगवत्ता ते जासु की पर-भगवत्ता होय । शब्द स्वयं भगवान की सत्ता निश्चय सोय ॥
इक दीपक ते होइ ज्यों दीपक प्रकट अनेक । गणना किये अनेक हूँ कारन दीपक एक ॥
सब भगवानन के भयौ कारण कृष्णहि जान । कुत्सी व्याख्या खंडगुण पद्य सुनौ दे ध्यान ॥
तथाहि तत्रैव—अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थान पोषण मृतयः । मन्वन्तरेशान कथा निरोधो मुक्तिराश्रयः ॥

दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिहि लक्षणम् । वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चाञ्जसा ॥

दोहा—

नवम पदार्थ कहिये हों जु होय आश्रय ज्ञान । हेतु नवनि उत्पत्ति कौ वही आश्रय ज्ञान ॥
कृष्ण एक सब आश्रय कृष्ण सवन कौ धाम । विग्रह में श्रीकृष्ण के सकल विश्व विश्राम ॥
तथाहि श्रीधर पादेनोक्त—

दशमे दशमं लक्ष्यमाश्रिताश्रय विग्रहम् । श्रीकृष्णाख्यं परं धाम जगद्धाम नमामि तत् ॥

कृष्ण स्वरूप जु और तिहि शक्ति त्रय कौ ज्ञान । सो जिहि होय न तासु हिय होय कृष्ण अज्ञान ॥
तिहि श्रीकृष्ण स्वरूप को है षड विधि जु विलास । प्राभव वैभव रूप है तिनको द्विविध प्रकाश ॥
अंश जु शक्त्यावेश औ द्विविध रूप अवतार । प्रथम वाल्य पौगंड तिहि धर्म जु दोय प्रकार ॥

कृष्ण किशोर स्वरूप नित अवतारी गुनसिंधु । क्रीड़ें ये छह रूप धरि विश्वम्भर जगवन्धु ॥
इनही छहनि स्वरूप को है जु अनन्त विभेद । एक रूप बहुरूप में है नाहिन कछु भेद ॥
चित् स्वरूप जो शक्ति है अन्तरंग जिहि नाम । ताके वैभव है अमित वैकुण्ठादिक धाम ॥
वहिरङ्गा माया शक्ति जग को कारण जोय । गण अनन्त ब्रह्माण्ड के ताके वैभव सोय ॥
शक्ति तटस्था जीव इक ताकौ नाहिन अन्त । मुख्य तीन ये शक्ति हैं तिनकौ भेद अनन्त ॥
ये स्वरूप गुण और जे तीनों शक्ति जु तास । सब के आश्रय कृष्ण हैं सबके कृष्ण निवास ॥
यद्यपि गण ब्रह्माण्ड के आश्रय पुरुष प्रधान । तिनहूँ सब पुरुषादि के आश्रय कृष्ण निदान ॥
कृष्ण स्वयं भगवान है सबको आश्रय सोय । कृष्ण जु है ईश्वर परम कहै शास्त्र सब कोय ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

ईश्वरः परमः कृष्ण सच्चिदानन्दविग्रहः । अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥

ये-ही सब सिद्धान्त तुम जानत हौ भलि चेत । पूर्व पक्ष तऊ करत हौ हमें चलावन हेत ॥
अवतारी श्री कृष्ण जो आप ब्रजेन्द्र कुमार । सो चैतन्य स्वरूप हूँ प्रकट कियौ अवतार ॥
ताही ते चैतन्य जू सीमा है परतत्व । क्षीरोदधिशायी तिनहूँ कहै कहा जु महत्व ॥
भक्तन कौ सोऊ वचन नहि विभिचारी होय । सब ही तिन कौ संभवै अवतारी है सोय ॥
अवतारी के देह में सब अवतार निवास । किहूँ रूप कोऊ कहौ जैसे बुद्धि प्रकास ॥
कोऊ कहै श्री कृष्ण कौ है नारायण रूप । क्षीरोदधिशायी कहै कोऊ वामन रूप ॥
नारायण वैकुण्ठ पति कोऊ कहत है ताहि । ताते सब ही उचित तिहि अवतारी ते आहि ॥
सब श्रोता गण पद कमल वंदन करौ अनेक । सब सिद्धान्त श्रवण करौ करिकै मन को एक ॥
कहत सुनत सिद्धान्त के आलस करौ न जीय । याही ते श्री कृष्ण में लगै सुदृढ़ करि हीय ॥
लहियै सब सिद्धान्त ते महिमा श्री चैतन्य । महिमा ही के ज्ञान ते हिय दृढ़ लगै अनन्य ॥
कहन हेत चैतन्य प्रभु महिमा अकथ अपार । याते महिमा कृष्ण की कहियै करि विस्तार ॥
महाप्रभू भगवान हैं तत्व निरूपण सार । महाप्रभू भगवान हैं आप ब्रजेन्द्र कुमार ॥
श्री रूप जु रघुनाथ पदरज ही की जिहि आस । कृष्णदास जू कहत हैं चरितामृत रसरास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत सो कहत है ब्रजभाषा हि प्रकास ॥६४॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे वस्तुनिर्देश मंगलाचरणं नाम द्वितीय परिच्छेदः ॥

तृतीय परिच्छेद

श्री चैतन्यप्रभुं वन्दे यत्पादाश्रयधीर्यतः । संगृह्णात्प्राकरघ्रातादङ्गः सिद्धान्तसन्मणीन् ॥

दोहा—

जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द । जै अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकन्द ॥
श्लोक तृतीय कौ अर्थ यह कहाँ बुद्धि के भाय । चौथे हूँ कौ अर्थ अब मुनो रसिक मन लाय ॥
तथाहि—अनर्पितचरीं विराज् करुणयावतीर्णः कलौ, समर्पयितुमुन्नतोच्चतरसां स्वभक्तिश्रियम् ॥
हरिः पुरट् सुन्दरद्युतिकदम्बसन्दीपितः, सदा हृदय कन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥
पूर्ण कृष्ण भगवान् जे श्री ब्रज राज कुमार । ब्रज गन सह ब्रज लोक में तिन कौ नित्यविहार ॥
ब्रह्मा के दिन एक में एक बार अवतार । तिनको तब तहँ होत है ब्रजपुर प्रकट विहार ॥
सत त्रेता द्वापर जु कलि ऐ चारों जुग जानि । तेई चारों जुग मिलै दिव्य एक जुग मान ॥
इकहत्तर जुग दिव्य कौ मन्वन्तर इक होइ । चौदह मन्वन्तर जु हो ब्रह्मा कौ दिन सोइ ॥
मन्वन्तर सप्तम तहँ वैवस्वत जिहि नाम । सात बीस जुग चौकरी भये तहां जु विराम ॥
अष्टाविंशति चतुरजुग तहँ द्वापर कौ शेष । होत तहां ब्रज जन सहित कृष्ण प्रकाश विशेष ॥
दास्य सकल वात्सल्य शुचि चारों रस जु प्रधान । चारि भाव मय भक्ति जे तिन के बस भगवान् ॥
दास सखा माता पिता प्रेयसि गण लै संग । ब्रज में क्रीड़ा करें हरि प्रेम सहित तिन रंग ॥
जैसी इच्छा विहरि कै जब किय अन्तर्धान । पाछे फिर ऐसैं हिये करें कृष्ण अनुमान ॥
बहुत काल लौं नहि कियौ प्रेम भक्ति हम दान । भक्ति बिना नहि जगत की गति कोऊ है आन ॥
सकल जगत मेरी करें बहुधा वैधी भक्ति । वैधी ते ब्रज भाव के पालन की नहि शक्ति ॥
ईश्वर मोकों जानि कै करें जु वैधी भक्ति । जाय लोक बैकुण्ठ में पावै चारों मुक्ति ॥
साष्टि और सारूप्य पुनि सामिप सालुक् चारि । सायुज लेहि न भक्त जिहि ब्रह्म सु एकाकार ॥
करौ प्रवृत्त जु युग धरम कीरतन हरि नाम । चारि भाव मय भक्ति दै जगत नचावौ वाम ॥
भक्ति भाव आपुन करौ हिय में अङ्गीकार । करि आचरण बताय हौं सर्व धर्म कौ सार ॥
आप किये विन आचरण होय न धर्म प्रचार । गीता अरु श्री भागवत कहत जु यहै पुकार ॥
तथाहि गीतायां—धर्म संस्थापनाश्चायं संभवामि युगेयुगे । उत्सीदेयुरस्मिल्लोकाः न कुर्यादकर्म चेदहम् ।
शंकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्वामिमाः प्रजाः । यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ॥
होय सकै इक अंश ते युग कौ धर्म प्रचार । मो विन कोउ न दै सकै ब्रज कौ प्रेम अपार ॥
तथाहि—सन्वत्सराः बहवः पङ्कजनामस्य सर्वतो भद्राः । कृष्णादन्यः को वा लतास्वपि प्रेमदो भवति ।
ताते अपने भक्त सब तिनको लै करि संग । पृथ्वी में अवतीर्ण हूँ करौं जु नाना रंग ॥
ऐसे स्वगत विचार करि कलि संध्या के आदि । नवद्वीप में जगत हित प्रगटे कृष्ण अनादि ॥

भयौ सिंह चैतन्य कौ नवद्वीप अवतार । सिंह ग्रीव बल सिंह कौ और सिंह हुंकार ॥
बसौ सिंह चैतन्य सो जिय हिय गुहा जु आय । हुंकारि मुनि हिय गुहा कौ कल्मष द्विरद नसाय ॥
तिनको लीला प्रथम में प्रभु विश्वम्भर नाम । भक्ति सुधारस दान दै धरै भरै जिय ग्राम ॥
अर्थ जु हु भृङ्ग धातु के धारन पोषण दोय । धारै पोषै प्रेम दै त्रिभुवन में प्रभु सोय ॥
धर्यौ लीला शेष में नाम कृष्ण चैतन्य । कृष्ण चितायो सवनि कौ विश्व कियो अतिधन्य ॥
गर्ग महाशय परम ऋषि तिन के युगअवतार । नाम करण श्रीकृष्ण हैं तहँ कीनों निरधार ॥
तथाहि दशमे—आसन्वर्णां स्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनुः । शुक्लो रक्त-स्तथापीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥
शुक्ल रक्त अरु पीत पुनि ये तीनों दुति जान । सत त्रेता कलिकाल में धारै श्री भगवान् ॥
अब द्वापर में कृष्ण है कृष्णवर्ण भगवान् । आगम शास्त्र पुरान कौ यही मर्म है जान ॥

तथाहि—द्वापरे भगवान् श्यामः पीतवासाः निजायुधः ॥

कलियुग कौ यह धर्म है केवल नाम प्रचार । ताही हित चैतन्य कौ पीत वर्ण अवतार ॥
तप्त हेम सम कांति जिहि महाप्रकाण्ड शरीर । नव जलधर की गरज जिमि कंठ नाद गर्भीर ॥
चार हाथ निज होय जिहि देह दीर्घ विस्तार । महापुरुष ताको कहै विज्ञ लोक निरधार ॥
परिमण्डल न्यग्रोध इक कहि तिनको यह नाम । बट परिमंडल सदृश तन अतन-कांति गुण धाम ॥
लंबितभुज आजानु जिहि अरुणकमल दलनैन । नासा तिलके कुसुम सम वदन चंद रस ऐन ॥
चंदन के अंगद बलय चंदन भूषण अंग । नृत्य समै ये पहिरि कै करें कीर्तन रंग ॥
वैशंपायन मुनि प्रवर येई गुन सब धारि । कहे जु नाम सहस्र में ये तिहि नाम विचारि ॥
द्वै लीला चैतन्य की आदि शेष सुख धाम । इक-इक लीला में कहे चारि-चारि प्रभु नाम ॥
तथाहि सहस्रनाम स्तोत्रे—

सुवर्ण वर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गी । सन्न्यास कृच्छ्रमः शान्तो निष्ठा शान्ति परायणः ॥

कहौ भागवत व्यक्तकरि सब ठां बारम्बार । कलियुग कौ युगधर्म अरु युग अवतार विचार ॥
तथाहि भागवते—

कृष्णवर्णं त्विषा कृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम् । यज्ञैः संकीर्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः ॥

महिमा श्री चैतन्य की सुनौ सकल चितधारि । याही पद करि कही तिहि महिमा सीम अपार ॥
कृष्णजु इहि द्वैवरन कौ जिहिमुख सदा निवास । कै वर्णन श्रीकृष्ण कौ निसदिन निज सुख रास ॥
कृष्ण वर्ण इहि शब्द कौ अर्थ यहै जु प्रमान । कृष्ण नाम विन एक छिन तिहिसुख नाहि न आन ॥
कोऊ कहै जु स्याम तनु कृष्ण वर्ण करि ताहि । और विशेषण एक तिहि करै निवारण आहि ॥
तप्त हेम सम देह द्युति प्रकट विराजत तास । छटा समूह करै जु तिहि हिय तम तति कौ नास ॥
जीवनि कौ अज्ञान तम नाश करन के काज । अङ्ग उपाङ्ग सु नाम धरि नाना अस्र समाज ॥
भक्ति विरोधी कर्म जे धर्म अधर्म जु आन । ताही को कल्मष कहै वही महा तम जान ॥

ऊर्ध्वाहु बोलें हरी प्रेम दृष्टि करि चाय । कल्मष तमसौ नास करि तिन दै प्रेम बढ़ाय ॥
 श्री अंग श्री मुख माधुरी जे जे देखें लोय । तिनके पाप नसै लहै कृष्ण प्रेम धन सोय ॥
 और जिते अवतार सब शस्त्र सैन्य तिहिं सङ्ग । सैन्य सङ्ग चैतन्य के निज श्री अङ्ग उपङ्ग ॥
 अङ्गोपाङ्ग जु अस्त्र सब साधे निज निज काज । अङ्ग शब्द कौ अर्थ सब सुनौ सु संत समाज ॥
 अङ्ग शब्द अंशहि कहैं हैं सब शास्त्र प्रमान । जो अवयव इक अङ्ग कौ सो उपाङ्ग करि जान ॥
 तथाहि भागवते—नारायणोङ्गं नर भूजलायनात्तच्छाऽपि सत्यत्र तवैव माया ॥

सोरठा—नारायण जु प्रशंस अन्तर्यामी जलशयी । सोई है तुव अंश तुम नारायण मूल हो ॥
 दोहा—

अंश कहैं अंग शब्द करि सत्य सोउ जु प्रमान । माया कार्य नहीं सबै चिदानन्द मय जान ॥
 नित्यानन्द अद्वैत जू दोऊ प्रभु के अङ्ग । इनके अवयव गन जिते ते कहिये जु उपाङ्ग ॥
 प्रभु संग अंग उपाङ्ग जे तीक्ष्ण अस्त्र समाज । पाखण्डी दल दलमलै यह अस्त्रनि कौ काज ॥
 नित्यानन्द गोस्वामि जू हैं हलधर को रूप । आचारज अद्वैत जू ते ईश्वर के रूप ॥
 श्रीवासादिक पारिषदगण सैना लै संग । दोऊ सेनापति फिरैं करत कीर्तन रंग ॥
 सोरठा—श्री नित्यानन्द राय भेष दलन पाखण्ड कौ । पाखण्ड पाप पलाय आचारज हुँकारते ॥

दोहा—

नाम कीर्तन के जु हैं आचारज चैतन्य । यज्ञ कीर्तन करि भजै तिन्हें तेई अति धन्य ॥
 सर्व यज्ञ हू ते अधिक कृष्ण नाम मखसार । वही सुमति है जगत में औ कुबुद्धि संसार ॥
 कोटि कोटि हयमेध हू कहैं सुनाम समान । सो पाखण्डी जानियै तिहि दण्डै सुत भान ॥
 रच्यौ ग्रन्थ संदर्भ के प्रथमहि मंगलचार । जीव गुसाईं तहाँ किय इह पद अर्थ विचार ॥
 तथाहि—अन्तः कृष्णं बहिर्गौरं दर्शितांगादिवैभवम् । कलौ संकीर्तनाद्यैः स्म कृष्णचैतन्यमाश्रिताः ॥

भारत पुनि श्री भागवत आगम और पुराण । गौर कृष्ण अवतार के हैं सब प्रकट प्रमान ॥
 अरु प्रत्यक्ष प्रमान हैं नाना प्रगट प्रभाव । कर्म अलौकिक लोक ते हैं अपूर्व अनुभाव ॥
 देखे हू देखें नहीं गण अभक्त जन आहि । ज्यौ उलूक दग सकै नहि, भान किरन अवगाहि ॥
 तथाहि यमुनाचार्य स्तोत्रे—

त्वं शील रूप चरितैः परम प्रकृष्टं स्वत्वेन सात्त्विकतया प्रवलैश्च शास्त्रैः ।

प्रख्यातदैवपरमार्थविदाम्मतैश्च नैवासुरप्रकृतयः प्रभवन्ति वोढुं ॥

रूप दुरावन हेतु हरि करैं अनेक उपाय । तऊ तिन्हें तिनके भगत जानि लेंहि निज भाय ॥

तत्रैव—उल्लंघितत्रिविधसीमसमातिशायि, सम्भावनं तत्र परिवृद्धिमत्वाभावम् ॥

मायावलेन भवतापि निगृह्यमानं, पश्यन्ति केचिदनिशं त्वदनन्यभावाः ॥

कवहुं न जानै कृष्ण को जाकौ असुर सुभाय । अपने प्रीतम भक्त सों कवहु न सकै लुकाय ॥

तथाहि—द्वौ भूतस्वर्गौ लोकेऽस्मिन् दैव आसुर एवच । विष्णुभक्तः स्मृतो दैव आसुरस्तद्विपर्ययः ॥

आचारज अद्वैत जू कृष्ण भक्त अवतार । हेतु कृष्ण अवतार कौ हैं जिन कौ हुँकार ॥
 जब पृथिवी पर कृष्ण जू करैं प्रकट अवतार । पहिले ही गुरुवर्ग कौ करैं आप संचार ॥
 तात मात गुरु आदि जे अरु पूजक सुखधाम । पहिले ही सब भूमि पर प्रकट भये अभिराम ॥
 प्रगट होय आचार्य जू देखें सब संसार । कृष्ण भक्ति सौगंधि सों हीन विषै व्यवहार ॥
 कोई पाप कोई पुन्य लगि करै विषै भोग । भक्ति गंधहू नाहि जे मिटैं जु जिहि भवरोग ॥
 आचारज लखि लोकगति हिय करुणा सों भोय । चिंता करैं जु लोक कौ कैसे कै हित होय ॥
 आपुन जो श्रीकृष्ण जू करैं प्रकट अवतार । साधक हैं आचरण करि करैं जु भक्ति प्रकार ॥
 नाम विना कलिकाल में और धर्म नहि कोय । कलिपुग में अवतार प्रभु कौन भांति करि होय ॥
 शुद्धभाव करि कृष्ण कौ करि आराधन चाय । करैं निवेदन दैन्य करि निसि दिन अपने भाय ॥
 नाम कीर्तन कौ करों लाय कृष्ण संचार । सफल नाम अद्वैत मम तव हैं हैं निरधार ॥
 जिहि आराधन प्रभुजु वस होय सु कौन प्रकार । श्लोक एक आयौ मनहि ऐसे करत विचार ॥
 तथाहि—तुलसीदलमात्रेण जलस्य चुलुकेन वा । विक्रीणीते स्वमात्मानं भक्तेभ्यो भक्तवत्सलः ॥

आचारज या वचन को कछो अर्थ विस्तार । सोई अब हूँ कहत हों निज मति के अनुसार ॥
 जल तुलसी श्रीकृष्ण को जो जन अपैं आहि । करैं कृष्ण चिंता दिये ऋण सोधैं हित ताहि ॥२॥
 तुलसी की तुलसी नहीं निजघर में कछु आन । तव आपुन कौ बेचि तिहि ऋण सोधैं भगवान् ॥
 यह हिय करकै भावना आचारज रसलीन । सोई आराधन करैं जातै कृष्ण अधीन ॥४॥
 अनुछिन तुलसी मंजरी गंगाजल पुनि आहि । कृष्ण चरन हिय भावना करिकै अपैं ताहि ॥
 आवाहन हरि को करैं करिकै अति हुँकार । इही भांति श्री कृष्ण कौ करवायो अवतार ॥
 गौरकृष्ण अवतार कौ मुख्य यही है हेतु । जन इच्छा करि अवतरैं कृष्ण धर्म के सेतु ॥

तथाहि श्रीभागवते—त्वं भक्तिगोपपरिभावितहृत्सरोज, आस्ते श्रुतेक्षितपथो ननु नाथ पुंसां ।

यद्यद्वियात उरुगाय विभावयन्ति, तत्तवपुः प्रनयसे सदनुग्रहाय ।

यह पद कौ संक्षेप करि यहै अर्थ है सार । जन इच्छा करि कृष्ण कैं हैं सब हीं अवतार ॥
 भयो सु चौथे पद्य कौ अर्थ सुनिश्चित एत । भये गौर अवतीर्ण ह्या प्रेम प्रकाशन हेतु ॥
 रूप सनातन पद कमल मधि जाको है वास । चरितामृत चैतन्य कौ कहैं कृष्ण को दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवलश्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखैं ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे आशीर्वादमंगलाचरणे

श्री चैतन्यावतारसामान्यकारणं नाम तृतीय परिच्छेदः

चतुर्थ परिच्छेद

श्री चैतन्यप्रसादेन तद्रूपस्य विनिर्णयं । वालोऽपि कुरुते शास्त्रं दृष्ट्वा ब्रजविलासिनः ॥

जय-जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांसु जय दास वर्ग सुख कंद ॥१॥
श्लोक चतुर्थ के अर्थको किय विवरण इहि भाय । श्लोक पांचवे कौ सुनौ अर्थ संत मन लाय ॥२॥
श्लोक मूल के अर्थ कौ कीजतु हैं जु प्रकास । अर्थ लगावन हित प्रथम करि लीजै आभास ॥
चौथे पद कौ यह सुनौ कछो अर्थ विस्तार । प्रेम नाम विस्तार हित यह प्रकटे अवतार ॥
यह हेतु अवतार कौ सत्य किन्तु वहिरंग । और हेतु तुम सुनौ इक अन्तरंग करि रंग ॥३॥
पहिले ज्यों श्री कृष्ण जू हरणहेतु भूभार । स्थिति-कर्त्ता जो विष्णु हैं जग पालैं निरधार ॥
किन्तु कृष्ण अवतार को कालहु तो जवजोय । भार हरण को काल हैं तहां मिल्यौ जव सोय ॥
पूर्ण स्वयं भगवान के अवतरिबे के काज । और सबै तिन में मिलैं अवतारिन के काज ॥
चतुर्व्यूह वैकुण्ठपति मत्स्यादिक अवतार । मन्वन्तरावतार युग विष्णु जिते जु अपार ॥४॥
कृष्ण अङ्ग में आयकै सबै भये अवतीर्ण । याही विधि कै अवतरे कृष्ण आप परिपूर्ण ॥५॥
याही ते सब विष्णु हैं कृष्ण शरीर मंभार । तिनही द्वारा कृष्ण जू करें असुर संहार ॥
अनुपंगिक इह कर्म है मारण सुर प्रतिकूल । जिहि कारण अवतार सो कारन कहै जु मूल ॥
रसिक मुकुटमणि कृष्ण जू परम करुन हैं सोय । इनहीं दोनों हेतु करि इच्छा उपजी दोय ॥
प्रभुता ज्ञान मिल्यौ भजै सब जग की यह रीति । सिथिल प्रेम ऐश्वर्य करि तासों नहिं मम प्रीति ॥
मुहिको ईश्वर मानि करि आपुन मानत हीन । कबहुँ ताको प्रेमवश हौं न होंहुँ आधीन ॥६॥
जो जो जन मोकों भजै करि करि जैसौ भाय । तैसेई ताकों भजों मेरो यहै सुभाय ॥

तथाहि गीतायां—ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ॥

कृष्ण तनय मम सखा मम मेरे पति हैं प्रान । करै शुद्ध रति कोइ जो इहि विधि मोकों जान ॥
आपुन को बड मानई मोको सम अरु हीन । मन बच क्रम करि होत हूँ मैं ताके आधीन ॥
तथाहि दशमे—मयि भक्ति हिं भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥
पुत्र भाव करि मात मम वंधन करें प्रवीन । लालन पालन करत नित जानि मोहि अति हीन ॥
सुद्ध सख्य करि सखा मम कांधे चढ़ै सुजान । कौन बड़े तुम लोक हौं हम तुम एक समान ॥
मान समैं जव प्रिया मम भर्त्सन करें निदान । वेद स्तुति हूते अधिक हरे सुमन अरु प्रान ॥
शुद्ध भक्त ये संग लें करौं प्रगट अवतार । ब्रज में करौं जु विविध विधि अद्भुत सहजबिहार ॥
जिनिको नहीं प्रचार हैं वैकुण्ठादिक लोय । मन ते लीला करौं जिहि चमत्कार मम होय ॥
गोपी गन कौ मम विषय हैं उपपति जो भाव । करि हैं माया योग निज तिहि अपने जु प्रभाव ॥
सोरठा—हौं नहिं जानों ताहि गोपीजन जानै नहीं । हरै नित्य मन आहि विवि गुन रूप दोऊनके ॥

धर्म छांड़ि दोऊ करें मिलन राग के चाय । कभूँ मिलै न मिले कभूँ देवयोग विवि पाय ॥
यह सब रस निर्यास कौ करि नीके आस्वाद । इही द्वार करि करौं सब भक्तनि पै जु प्रसाद ॥
ब्रज कौ निर्मल राग सुनि जन समूह है चूर । राग मार्ग करि भजैगो-धर्मनि करि करि दूर ॥
तथाहि श्रीभागवते—

अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमाश्रितः । भजते तादृशीः क्रीडाः या श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥

इहाँ क्रिया विधि लिंग जो सो यों कहत जु गाय । आवश्यक कर्तव्य है अनिथा है प्रतिवाय ॥

सोरठा—कारन यहै विचार मुख्य कृष्ण अवतार कौ ।

करि यों असुर संहार अनुसंगिक फल सवनि कौ ॥

दोहा—

ऐसे ही चैतन्य जू कृष्ण पूर्ण रस धाम । करै जु धर्म प्रचार जग इह तिनको है काम ॥
जव मन भयौ अवतार कौ कारन कौ जु उपाय । तिहीं समैं युग धर्म कौ काल मिल्यौ तहँ आय ॥
जन गन संग लै अवतरें दोय हेतु जिय जान । आपुन आस्वादन करें प्रेम नाम गुणगान ॥
तिही द्वार करि स्वपच लौं करि कीर्तन संचार । नाम प्रेम-माला गुही पहराई संसार ॥
भक्त भाव इहि भाय करि करि कै अङ्गीकार । आपुन करि कै आचरण किय यों भक्ति प्रचार ॥
दास्य सख्य वात्सल्य है और मधुर रस सार । चारि विधिन के भक्त जे चारों रस आधार ॥
अपने अपने भाव कौ सब ही मानैं सार । आस्वादैं ये कृष्ण सुख सबै भाव अनुसार ॥
करै विचार तटस्थ है हिय में जवै सुजान । सब रस तें सिंगार में अधिक माधुरी ज्ञान ॥

तथाहि रसामृतसिन्धौ—

यथोत्तरमसौ स्वादु विशेषोल्लासमय्यपि । रतिर्वासनया स्वाद्वी भासते कापि कस्यचित् ॥

याही ते ताकौ कहैं विज्ञ मधुर रस नाम । स्वक्रिया परकीया और भाव द्विविधि संस्थान ॥
भाव परकीया मध्य है निरवधि भाव प्रभाव । ताहू में श्रीराधिका कौ निरवधि है भाव ॥७॥
प्रौढ़ भाव निरमलसु रस प्रेम जु सर्व प्रधान । कृष्ण माधुरी स्वाद को कारण सोई जान ॥
याही ते तिहू भाव कौ करि कै अङ्गीकार । पूर्णकरी श्री गौरहरि निज बांछा रस सार ॥
तदुक्तं श्रीरूपगोस्वामिना—

सुरेशानां दुर्गं गतिरतिशयेनोपनिषदां, मुनीनां सर्वस्वं प्रणतपटलीनां मधुरिमा ।

विनिर्यासः प्रेम्णो निखिलपशुपालाम्बुजदृशां, स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ॥

अपारं कस्यापि प्रणयिजनवृन्दस्य कुतुकी, रसस्तोमं हत्वा मधुरमुपभोक्तुं कमपि यः ।

रुचिं स्वामावत्रे युतिमिह तदीयां प्रकटयन्, स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां नः कृपयतु ॥

भाव ग्रहन को हेतु किय धर्महि स्थापन सार । श्लोक पांचवेकौ करत ताके लिये विचार ॥
श्लोक पांचवे कौ कछौ ऐसे करि आभास । अब ताही कौ कीजियतु नीकै अर्थ प्रकास ॥

तथाहि—राधा कृष्णप्रणयविकृतिर्लादिनी शक्तिरस्मा, देकात्मानावपि भुवि पुरादेहभेदं गतौ तौ ॥
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं, राधाभावद्युति सुबलितं नौमि कृष्णस्वरूपं ॥

श्रीराधा अरु कृष्ण एक रूप देह द्वै धार । आस्वादन रसकौ कियो करि अन्योन्य विहार ॥
तेई दोऊ एक अव श्री चैतन्य गुसाइ । आस्वादन हित भाव के भये जु विवि एक ठाइ ॥
याही ते आगे करें ताको विवरण सोइ । याही ते श्री गौर की महिमा कथन सुहोइ ॥
राधा जू श्रीकृष्ण कौ हैं निज प्रणय विकार । निज जु शक्ति आल्हादिनी है जिहि नाम प्रचार ॥
करवावै आल्हादिनी कृष्णानंद आस्वाद । ताही द्वारा हरि करें जन पोषन परसाद ॥
सत् चित् आनन्द पूर्ण जो हैं श्रीकृष्ण स्वरूप । तिनकी इक चित् शक्ति जो धरै तीन यह रूप ॥
हर्ष अंश आल्हादिनी संधिनि है सत अंश । चित् अंश संवित कहैं ज्ञान भान परसंश ॥
संधिन कौ सारांश हैं शुद्ध सत्व जिहि नाम । जित जित सत्ता कृष्ण की तहां जु तिहि विश्राम ॥
तथाहि विष्णुपुराणे—

ल्हादिनी सन्धिनी सम्बित् त्वय्येका सर्व संश्रये । ल्हादतापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्जिते ॥
मात पिता जु स्थान गृह सज्या आसन जोय । शुद्ध सत्व श्री कृष्ण को तिहि विकार सब सोय ॥
तथाहि श्री भागवते—सत्त्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितं यदीयते तत्र पुमानपावृतः ।

सम्बित कौ यह सार हैं हरि भगवत्ता ज्ञान । ब्रह्म ज्ञान आदिक सर्वे तिहि परिवारहि जान ॥
ल्हादिनि सार जु प्रेम हैं भाव सार तिहि वाम । परमसार जो भाव कौ महाभाव तिहि नाम ॥
ठकुराइन श्री राधिका महा भाव कौ रूप । कृष्ण सुकांता मुकुटमणि गुणगण परम अनूप ॥

तथाहि उज्जल नीलमणौ—महाभाव स्वरूपेयं गुणैरति वरीयसी ॥

कृष्ण प्रेम भावित सदा जिहि चित् इंद्रिय काय । कृष्ण शक्ति निज राधिका क्रीड़ा की जु सहाय ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां—आनन्द चिन्मय रस प्रतिभाविताभिस्ताभिर्य एव निज रुपतयाकलाभिः ॥

रस आस्वादन कृष्ण कौ करवावैं जिहि भाय । सो विवरण सुनु भांति जिहि क्रीड़ा की जु सहाय ॥
कृष्ण सु कान्ता गण जितें त्रिविधि प्रकारहि जान । इक लक्ष्मी गण नाम हैं महिषीगण पुनिआन ॥
ब्रज देवी गण रूप अरु हैं कांता गणसार । राधा जू ते होत सब कान्तागण चिस्तार ॥
अवतारी श्री कृष्ण ज्यों करें जु बहु अवतार । ऐसे राधा अंसिनी तें गण तीन प्रकार ॥

कवित्त—लक्ष्मी गण तिनकी हैं वैभव विलास रूप, महिषीगण वैभव प्रकासरू जानिये ।
आकृति स्वभाव भेद ब्रज देवीगण काय व्यूह रूप तिनको कारण रस मानिये ॥
ताहु मध्य ब्रज नाना भाव भेद रासादिक, लीला स्वाद कृष्ण जू को करावे वखानिये ॥
कान्ता बहु बिना नहीं रस कौ उल्लास ताते लीला के सहाय बहु प्रकास सु ठानिये ॥१॥

गोविंद की आनंदिनी राधा मोहनि और । सर्वस हैं गोविन्द की सब कांता सिरमौर ॥
गौतमीय तन्त्रे—देवी कृष्णमयी प्रोक्ता राधिका पर देवता । सर्वलक्ष्मीमयी सर्वकान्तिः संमोहिनी परा ॥
द्योतिमान देवी कहें परम सुन्दरी होय । हरिक्रीड़ा पूजानिकी कैं निवास है सोय ॥
कृष्णमयी कहैं कृष्ण जु अन्तर बाहिर आहि । जित जित नेत्र परै तिते कृष्ण फुरै है ताहि ॥
परम प्रेम रस मय जु ये अथवा कृष्ण स्वरूप । जिन की जो निज शक्ति हैं हैं तिनसों इकरूप ॥
कृष्ण सु बांछा पूर्ति सब आराधैं तिहि जान । याही तै श्री राधिका नाम पुरान बखान ॥

दशमे—अनया राधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः । यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रहः ॥

याही ते पूज्या सबनि परम देवता जोय । पालन कर्त्ता विष्णु की जग माता हैं सोय ॥
सर्व लक्ष्मी शब्द कौ आगे कियौ व्याख्यान । सब लक्ष्मीगण में जु तिहि अधिष्ठान हैं जान ॥
सर्व लक्ष्मी कृष्ण जु कौ किय पडिबध ऐश्वर्य । अधिष्ठात्रि तिन की जु हैं सब शक्तिन में वर्य ॥
सर्व कांति सौंदर्य जो तिन में बसै जु सोय । सर्व लक्ष्मी गणन की सोभा जातें होय ॥
कांति शब्द कहि कृष्ण की सब इच्छाहि बखान । सकल बांछा कृष्ण की राधा ही ते जान ॥
पूरै सब श्री राधिका कृष्ण जु बांछित जान । सर्व कांति जो शब्द है ताकौ यहै बखान
जग के मोहन कृष्ण हैं ए मोहत हैं ताहि । याही ते सब में परम ठकुरानी ए आहि ॥
पूर्ण शक्ति श्री राधिका शक्तिमान भगवान । भेद न दोऊ वस्तु में वेद पुराण प्रमान ॥
मृगमद ताकी गंध ज्यों नहिं कबहूँ विच्छेद । ज्वाला ते नहिं अग्नि कौ जैसे कबहूँ भेद ॥
कृष्ण राधिका यों सदा ये हैं एक स्वरूप । लीला रस आस्वाद हित दोय धरत हैं रूप ॥
शिक्षा हित निज प्रेम की आपुन ले अवतार । भाव कांति विवि राधिका कौ करि अङ्गीकार ॥
गौर रूप श्री कृष्ण जू आप कियौ अवतार । श्लोक पांचवे कौ यहैं जानौ अर्थ प्रचार ॥
श्लोक छठे के अर्थ कौ कीजतु है जु प्रकाश । तातैं पहिले कहतु हैं ताही कौ आभास ॥
नाम कीरतन कौ कियौ अवतरि प्रभु जु प्रचार । बाइ हेतु यह प्रथम ही करि आये जु विचार ॥
बीज और अवतार कौ अन्तरंग है जोय । रसिक मुकुटमणि प्रभु जु कौ निजकारज है सोय ॥
अति निगूढ़ जो हेत है सो वह त्रिविध प्रकार । श्री स्वरूप गोस्वामिते जाकौ भयौ प्रचार ॥
अन्तरंग प्रभु के अधिक श्री स्वरूप जू आहि । प्रभु प्रसंग जानै जु ये तिनहीते अवगाहि ॥
प्रभु अन्तर निति वसति हैं मूर्तिराधिका भाय । निसिदिन ताही भावकरि सुख दुख उठैजु आय ॥
प्रभु के लीला शेष में कृष्ण विरह उन्माद । प्रभु चेष्टा सब भ्रम मई अरु प्रलाप मई बाद ॥
उद्धव देखी ज्यों भई राधा भाव प्रमत्त । निसिदिन प्रभु त्यों ही रहैं तिहीभाव करि मत्त ॥
निसि कौ करें विलाप प्रभु श्रीस्वरूप हियलाय । आप कहैं आवेस में खोलि हिये कौ भाय ॥
प्रभु जू के हिय में उठें जब-जब जोई भाय । श्री स्वरूप जू देहि सुख वही पद्य पद गाय ॥

अब कछु कारज नहीं है इन सब के जु विचार । आगे इनि कौ कहेंगे करि नीके विस्तार ॥
 पहिले ब्रज में कृष्ण कौ त्रिविध कबौ वयधर्म । है कुमार पौगंड पुनि अरु किशोर अति मर्म ॥
 वात्सल्य आवेस में सफल कियो कौमार । सफल कियो पौगंड पुनि लै बल सखा अपार ॥
 श्री राधादिक संगलै किय रासादि विलास । इच्छा भरि आस्वाद किय यह रस को निर्जास ॥
 वय किशोर मनमथ जु पुनि सकलजगत जो दीन । रासादिक लीलान करि सफल किये ऐ तीन ॥
 तथाहि विष्णु पुराणे—सोपि कैशोरकवयो मानयन्मधुसूदनः । रेमे स्त्रीरब्रकूटस्थः क्षपासु क्षपिताहितः ॥
 रसामृत सिन्धौ—

बाचा सुचित शर्वरी रतिकला प्रागल्भ्यया राधिकां, व्रीडा कुञ्चित लोचनां विरचयन्प्रे सखीनामसौ ॥
 तद्वच्चोद्दृष्टिचित्रकेलिमकरीपारिहृत्य पारं गतः, कैशोरं सफली करोति कलयन्कुञ्जे विहारं हरिः ॥
 हरिरेव तच्चेदं गतः प्रियन्मधुरायां मधुराक्षि राधिका च अभविष्यदियं वृथाविस्मृष्टि मकराङ्गस्तु विशेषतः स्तदात्र ॥
 पहिले इहिविधि कृष्णजु सब रस के जु निवास । चर्वन कीनौ यदपि यौ सवरस कौ निर्जास ॥
 तऊ तहां नाहिन भई इच्छा पूरन तीन । तहां जु नित आस्वाद हित जद्यपि जतन जु कीन ॥
 तिनकी बांछा प्रथम कौ कीजतु है विख्यान । मन में कहैं जू कृष्ण हम सवरस के जु निधान ॥
 हौं पूरण आनंदमय चिन्मय पूरण तत्त्व । राधा जू के प्रेम सो हमैं करै उन्मत्त ॥
 नाहि जानौ तिहि प्रेम के नीको बल है कोय । विहवल करें जु सर्वदा हमहूँ कौ बल सोय ॥
 मम गुरु राधा प्रेम हैं हौं नट तिहि आधीन । नाना नाच नचावहीं हमको सदा प्रवीन ॥
 तथाहि गोविन्द लीलामृते—

कस्माद्वन्दे ! प्रिय सखि ! हरेः पादमूलान् कुतोऽसौ, कुण्डलारण्ये किमिह कुरुते नृत्यशिक्षां गुरुः कः ।
 तत्त्वन्मूर्तिः अतिविरक्तता दिग्भिविह्वल स्फुरन्ती शैल्यपीव भ्रमति परितो नर्तयन्ती स्वपश्चान् ॥
 निज प्रेम आस्वाद में होय जु मम अहलाद । ताहते है कोटि गुण राधा प्रेमास्वाद ॥
 आश्रय धर्म विरुद्ध कौ जैसी है मम रूप । ऐसी राधा प्रेम है सदा विरुद्ध स्वरूप ॥
 राधा प्रेमा विभु जिही बढ़िबे कौ नहि ठौर । इतनेऊपै सो सदा छिन छिन बाढ़ै और ॥
 जाते नहि गुरु वस्तु अरु सो गौरवता हीन । जातें निर्मल नहि कोऊ तऊ वक्रता लीन ॥

तथाहि दानकेलिकौमुद्यां—

विमुराषि कलयन सदातिवृद्धि, गुरुरपि गौरवचर्यया विहीनः ।

मुहु रूपचित्त अक्रिमापि शुद्धो, जयति मुरद्विषि राधिकानुरागः ॥

श्री राधा जू हैं सदा परम आश्रय ताहि । विषयालंबन में सदा तिहि प्रेमा कौ आहि ॥
 विषयजाति कौ मुख जु है ताको मम आस्वाद । मोहू ते है कोटि गुण आश्रय कौ अहलाद ॥
 मुख आश्रय जातीय तिहि हेत सदा मन धाय । ताहि न पावे यत्न करि करीं जु कीन उपाय ॥
 जो कबहुं इहि प्रेम कौ हूँ आश्रय सोय । तब इह प्रेमानन्द कौ अनुभव नीको होय ॥

रहैं कौतुकी कृष्ण तब यौ चिंता करि जीय । प्रेम लोभ की धक-धकी दिन-दिन बाढ़ै दीय ॥
 यहै हेत इक और ही सुनौ जु लोभ प्रकार । कृष्ण देखि निज माधुरी आपु न करै विचार ॥
 अद्भुत पूरण अंत नहि मम मधुरिमा जु आहि । नहि पावै तिहुँ लोक में सीमा कोऊ याहि ॥
 इही प्रेम द्वारा जु नित राधा एक प्रवीन । माधुर्यामृत मम सकल आस्वादें रस लीन ॥
 यद्यपि राधा प्रेम सत निर्मल दर्पन आहि । तऊ स्वच्छता अधिकही छिन-छिन बाढ़ै ताहि ॥
 नाही है मम माधुर्य कौ बढ़िबे कौ अवकास । इहि दर्पन के अग्र पुनि नव-नव होय प्रकास ॥
 प्रेम जु तिहि माधुर्य मम हिये होउ करि दोय । छिन-छिन विधि बाढ़ै अधिक दार न मानै कोय ॥
 है मेरो माधुर्य निति नव नव परम अनूर । आस्वादें तिहिं भक्त सब निज निज रति अनुरूप ॥
 जब देख्यौ निज माधुरी दर्पणादि के माहि । होय लोभ आस्वाद हित हों समर्थ तिहि नाहि ॥
 तथाहि ललित माधवे—अपरिकलितपूर्वः क्षयचमत्कारकारी, स्फुरति मम गरीयानेष माधुर्यपूरः ।

अयमहमपि हन्त प्रेक्ष्य यं लुब्धचेताः, सरभसमुपमोक्तुं कामये राधिकेव ॥

अद्भुत माधुरि कृष्ण की अद्भुत बल है ताहि । जाके श्रवान सुभायते मन करि देतहि काय ॥
 यहै कृष्ण माधुर्य कौ स्वाभाविक बल एक । कृष्ण आदि नारी पुरुष चंचल करै जु टेक ॥
 आकर्षे दर्शन श्रवन सब के मन अपनाय । आपुन के आस्वादहित करै अनेक उपाय ॥
 माधुर्यामृत यह सदा पान करै जो कोय । होय न तृष्णा शांति किहुँ छिनछिन बाढ़ै सोय ॥
 हूँ अमृति निंदन करै विधि कौ सवै विदग्ध । विधिहि न जानें मली विधि सृजन बड़ा अविदग्ध ॥
 रोंम रोंम नहि नैन दीय सब के द्रौहीकीय । ताहू में जु निमेष दिय क्यों करि देखें पीय ॥

तथाहि श्री भागवते—यद्दर्शने दृशिषु पद्मकृतं शपन्ति ॥

दरसन चिन श्री कृष्ण के नाहि नेत्र फल आन । जो जन देखै कृष्ण को भाग्यवान सोइ जान ॥
 तथाहि दशमे—अक्षयवतां फलमिदं न परं विदामः, सख्यः पश्यन्नु विवेशयतोर्वयस्यैः ।

वक्तं ब्रजेश सुतयो रनुवेणु जुष्टं, यै वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥

गोप्य स्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावाण्यसारमसमोद्धमनन्यसिद्धं ।

दग्निः पिबान्यनुसवाभिनवां दुरापमेकान्तधाम यशसः श्रिय ऐश्वरस्य ॥

अद्भुत माधुरि कृष्ण की उपजावति है छोम । सकैं तु नहि आस्वाद करि मन में रहै जु लोभ ॥
 द्वितीय हेतु कौ यह कीयौ नीके करि विख्यान । तृतीय हेतु कौ अब सुनौ लच्छन कहां बखान ॥
 है अत्यन्त निगूढ़ यह सब रस कौ सिद्धांत । श्री स्वरूप गोस्वामिजु जानत हैं एकान्त ॥
 कोऊ जानै और जो ले—तिनहीं ते सोय । गोस्वामी चैतन्य के गूढ़ मर्म है जोय ॥
 गोपीगण के प्रेम कौ रुढ़ भाव है नाम । अमल विशुद्ध जु प्रेम सौ है कबहुं नहि काम ॥

तथाहि तन्त्रे—प्रेमेव गोप रामाणां काम इत्यगमत्प्रथां ।

काम प्रेम इन दुहुन के न्यारे लक्षण जान । ज्यों सुवर्ण अरु लोह कौ रूप विलक्षण मान ॥

जो निज इन्द्रिय प्रीति की चाह कहै तिहि काम । कृष्ण प्रीति अभिलाख कौ धरै प्रेम तिहि नाम ॥
कवित्त-काम तातपर्य कहै केवल संभोग निज कृष्ण सुख तातपर्य प्रेम बल यही है ।
वेद धर्म लोक धर्म देह धर्म कर्म लज्जा धैर्य आत्म देह सुख जोई प्रिय सही है ।
दुस्त्यज जो आर्य पथ परिजन स्वजन को ताडन और भर्त्सन सोऊ सुख नहीं है ।
सब त्यागि कृष्ण भजै तत्सुख ही हेत सजै करै प्रेम सेवा भांति प्रिय रुचि लही है ॥ ३४ ॥

दोहा—

याही ते श्री कृष्ण कौ कहियै दृढ़ अनुराग । जैसे उज्ज्वल वसन में नाहि न कोऊ दाग ॥
याही ते अन्तर बडौ काम प्रेम में जान । काम अन्धतम महा है प्रेम अमल है भान ॥
जहाँ भान तहाँ तम नहीं जहाँ तम नहीं रविधाम । जहाँ काम प्रेम न तहाँ जहाँ प्रेम नहीं काम ॥
यातै गोपी गण विषै नहीं काम कौ गन्ध । तिन के तत्सुख मात्र हित है तिन सौं संबन्ध ॥
दशमे—यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु, भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु ।

तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किं स्विन्, कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥

अपने सुख दुख कौ नहीं गोपिन के जु विचार । करै कृष्ण सुख हेत सब तन मन कौ व्यवहार ॥
कृष्ण विना और सबनि कौ करि नीके परित्याग । करै कृष्ण सुख हेत ये परम शुद्ध अनुराग ॥
एक प्रतिज्ञा कृष्ण की पहिलै करी जु आय । जो मोकौ जैसे भजै हों त्यौ भजौ जु ताहि ॥ ४० ॥
तथाहि—ये यथा मां प्रपद्यते तां स्तयैव भजाम्यहं ॥

तिन को गोपी भजन ने सो वृत्त मिथ्या कीय । ताकौ वहै प्रमाण है श्री मुख उत्तर दीय ॥
तथाहि दशमे—न पारयेऽहं निरवाद्यसंयुजां स्वासाधु कृत्यं विविधायुषाऽपि वः ॥

या माभजन् दुर्जरोह शृङ्खला संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना ॥

गोपिन के निज देह में तऊ जो लखियै प्रीति । सोऊ है श्रीकृष्ण हित निश्चय यह तिहि रीति ॥
यहै देह हम कृष्ण कौ कियौ समर्पन आहि । साधन तिहि संभोग कौ यह धन हैगो ताहि ॥
दरसै परसै देह यह होय कृष्ण सन्तोष । याहीतैं तिनकों करै मंजन भूषण पोष ॥
तथाहि गोपीप्रेमामृते श्रीकृष्ण वाक्यं—

निजांगमपि या गोप्यो ममेति समुपासते । ताभ्यः परं न मे पार्थ निगूढ प्रेम भाजनम् ॥

और एक अद्भुत सुनौ गोपी भाव सुभाव । नहि गोचर हो बुद्धि को यह जाको जु प्रभाव ॥
जब देखें श्रीकृष्ण कौ गोपी गण रस भोय । सुख इच्छा नाहिन तऊ कोटि गुनो सुख होय ॥
गोपिनु देखै कृष्ण कौ जो आनंद सुख होय । आस्वादन गोपी करै कोटि गुणो सुख होय ॥
आस्वादन गोपी करै निज सुख को अनुरोध । तऊ जु सुख वादै अधिक यातैं परची निरोध ॥
या निरोध कै इहै इक समाधान है जान । गोपी सुख कौ कृष्ण सुख में है पर्यवसान ॥

गोपी देखें कृष्ण के बड़े प्रफूलनि जोय । ताते बड़े सु माधुरी ताकी सम नहिं कोय ॥
मम दरसन में कृष्ण जु पायौ इतौ इक रंग । याही सुख गोपीनुकें होय हर्ष अंग अङ्ग ॥
गोपी सोभा देखि हरिजू सोभा अधिकाय । हरि छवि लखि तिनकी बड़े सोभा तिहीं जु भाय ॥
होड़ा-होड़ी परसपर परै जु यों दुहुँ मांहि । बड़े परसपर यों वादन दोऊ मोड़ें नांहि ॥
गोपी गुण अरु रूप करि ऐपै हरि सुख होय । तिहि सुख सौ सुख वृद्धि अति गोपी गन के सोय ॥
याही ते तिहि सुख विषै होय कृष्ण सुख पोष । इही हेतु तिन प्रेम में नहीं काम मय दोष ॥
स्वभाविक एक चिन्ह है और प्रेम को तास । काम दोष करि हीन है प्रेम प्रकारहिं जास ॥
गोपी प्रेम करै जु श्रीकृष्ण माधुरी पुष्ट । तिहि माधुर्य बढ़ाय कै होय प्रेम संतुष्ट ॥
रति के विषयानन्द तब हर्ष आश्रय होय । निज सुख वांछा गंध जो तहां नाहिन सोय ॥
निरुपाधि प्रेमा जहां तहां इहै है रीति । प्रीति विषय सुख देखि कै होय जु आश्रयप्रीति ॥
प्रेमानंद बाधै जबै तिहि सेवानंद सार । तिहि आनंद पै भक्त के होय सुक्रोध अपार ॥
रसामृतसिन्धौ---अंगस्तम्भारंभमत्तुंगयन्तं प्रेमानन्दं दारुको नाभ्यनन्दन् ।
कंसाराते वीजने येन साक्षदत्तोदीयानन्तरायो व्यधाधि ॥

तत्रैव---गोविन्दप्रेक्षणोपि वाष्पपूराभिवर्षिणं । उच्चैरनिन्ददानन्दमरविन्द विलोचना ॥

शुद्ध भक्त जे कृष्ण के तिहि सेवा सुख बांच । निज सुख हित नाहिन गहै सालोक्यादिक पांच ॥
काम गंध विनु साहजिक है गोपिनु कौ प्रेम । निर्मल उज्जाल शुद्ध अति जैसे तापौ हेम ॥
हरि सहाय गुरु बंधु है और प्रेयसी आहि । गोपी है प्रिय शिष्य पुनि सखी जु दासी ताहि ॥
मन वांछित जो कृष्ण कौ जानै गोपी जोय । सेवा रीति जु प्रेम की इष्ट समीहित सोय ॥
तथाहि---सालोक्य साष्टि सामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानं न गृहन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥

तथाहि गोपीप्रेमामृते--

सहाया गुरवाः शिष्या भुजिष्या बान्धवाः स्त्रियः । सत्यं वदामि ते पार्थ गोप्य किं मे भवन्ति न ॥

ताहू गोपी गण विषै श्री राधा जु प्रधान । रति सुहाग गुण रूप करि सबतैं अधिक प्रमान ॥
तथाहि पद्मपुराणे—

यथा राधा प्रिया विष्णो स्तस्याः कुण्डं प्रिपं तथा । सर्वगोपीषु सेवैका विष्णोरत्यंतवल्लभा ॥
गोपीप्रेमामृते---त्रैलोक्ये पृथिवी धन्या यत्र वृंदावनपुरी । तत्रापि गोपिकाः पार्थ यत्र राधाभिधामम ॥

राधा सह क्रीड़ा रसै वृद्धिहि कारन आहि । गोपी गण सम और है सब उपकार सु ताहि ॥
कृष्ण-वल्लभा राधिका और कृष्ण-धन-प्राण । तिन विन सुख को हेतु नहिं गोपी गण जे आन ॥
तथोक्तं श्री जयदेवाचरणैः--

कंसारिरपि संसार बासना बद्धशृङ्खलां । राधामाधाय हृदये तत्याज ब्रजसुंदरीः ॥

सोई राधा भाव लै गौर कृष्ण अवतार । नाम प्रेम जुग-धर्म जो ताकौ कियो प्रचार ॥
करी गौर तिहि भाव करि निजइच्छा ही जोय । जिहि इच्छा करि अवतरै कारण मूल जु सोय ॥

गौर कृष्ण गोस्वामि जू हैं ब्रज राजकुमार । रसमय मूरति कृष्ण जू मूरतिमंत सिंगार ॥
 सोई रस आस्वाद हित प्रकट कियो अवतार । अनुसंगिक यह फल भयो सब रस को जु प्रचार ॥
 तदुक्त श्री जय देव चरणैः—शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥
 गौर कृष्ण गोस्वामि जू हैं रस सदन अशेष । आस्वादन रस कौ तिन्हौ कियो असेष विशेष ॥
 बहु प्रवर्त तिहि द्वार हैं कलियुगहू को धर्म । गौरचन्द्र के दास जे जानत ये सब मर्म ॥
 श्री अद्वैताचार्य जू अरु श्री नित्यानन्द । श्री निवास पुनि गदाधर पंडित जू सुख कन्द ॥
 श्री स्वरूप गोस्वामि जू दाभोदर अभिराम । और ब्रह्म हरिदास जू लेंहि निरन्तर नाम ॥
 और जिते चैतन्य के भृत्य वर्ग समुदाय । भक्ति भाव करि सीस धरि तिन सब कहौ पाय ॥
 श्लोक छठे कौ यह कह्यौ नीके के आभास । श्लोक अर्थ सब सुनौ अब कीजतु है जु प्रकास ॥

तथा—श्री राधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा, स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशौ वा मदीयः ॥

सौख्यञ्चास्याः मदनुभवतः कीदृशं वेतिलोभात्, तद्वावाक्यः समजनि शचीगर्भं सिधौ हरीदुः ॥

सब सिद्धांत निगूढ़ ये कहें न क्यों हूं जाहिं । कोऊ इन के विन कहैं अंतहि पावैं नाहिं ॥
 जानि लेंहिगे रसिक सब नहिं समझेंगे मूढ़ । याही तें जु इन्हैं कहैं कछु करि कैं जो गूढ़ ॥
 हिये धरें चैतन्य जे अरु श्री नित्यानन्द । इनि सब सिद्धांतनि जु में पैहैं अति आनन्द ॥
 यह सब जो सिद्धान्तरस सो रसाल दल आहि । कोकिल भक्त समूह जो बल्लभ सदा जु ताहि ॥
 विमुख ऊंट कौ या विषैं जो नहिं होय प्रवेस । तब तौ मेरे हृदय में है आनन्द विशेष ॥
 जासौ लागै कहत भय सोई जानें ताहि । याहू तें कछु सुख अधिक है त्रिभुवन के मांहि ॥
 नमस्कार करि सबनि कौं जन समूह जो सोय । शंका रहित कहौं तिन्हैं चमत्कार अति होय ॥
 इक विचार यौ कृष्ण कैं सदा रहै हिय जोय । पूरणआनंद पूर्णरस रूप कहैं मम लोय ॥
 हम ही ते त्रैलोक में सब आनन्दित होय । हम हू कौं आनन्द दे ऐसौ जन है कोय ॥
 हम हूं तें जाकौ अधिक सौ-गुण गुण जो होय । मो आल्हादन करन कौं जन समर्थ है सोय ॥
 जग में हमते गुनी बड़ यहै असम्भव आहि । एकहि राधा हैं अधिक किय अनुभव में ताहि ॥
 कोटि काम स्वरूप मम परम अनूप सु होय । महा अलौकिक माधुरी जाकी सम नहिं कोय ॥
 अद्भुत मेरे रूप करि सब त्रिभुवन आप्याय । राधा देखें मम नयन सीतलता अधिकाय ॥८८॥
 आकर्षण त्रिभुवन करै मम वंशी सुर गान । परम मधुर राधा वचन हरै सु मम मन कान ॥
 यद्यपि मेरी गन्ध करि सब जग होत सुगन्ध । चित्त प्राण मेरे हरै श्री राधा अँग-गंध ॥
 यद्यपि मम रस कैं सकल जगत सरस अति होय । राधा जू कौ अधर रस हम हि बस करै सोय ॥
 सीतल है विधु कोटि तैं यद्यपि परस हमार । राधा परस करै जु मम सीतलता जु अपार ॥
 सब जग कौ सुख हेतु में हौं याही जु प्रकार । राधा जू के रूप गुन मम जीवन जु अपार ॥
 अनुभव करि या भांति कैं मेरे है जु प्रतीत । करि विचार जग देखियै तब ही सब विपरीत ॥

राधा दरसन विषै मम सीतल नैन रु प्राण । मम दरसन सुख में तहां रावा के अज्ञान ॥
 वेणु गीत भांई तनक हरै चेतना ताहि । लपटें दौरि तमाल कौं तिहि मम भ्रम अवगाहि ॥
 आलिंगन पिय कौ लखौ जन्म सकल मम आहि । याही सुख में मगन हू रहै जु भुज भरि ताहि ॥
 पवन चलै अनुकूल जौ लहै जो मम तन गंध । उड़ि परि कैं चाहै जु तिहि होय नेत्र करि अंध ॥
 चर्वित मम तांबूल रस करैं दूर तें पान । मग्न होय आनन्द निधि जानैं नहिं कछु आन ॥
 मम संग में श्री राधिका लहै जु आनंद याहि । सत मुख हू कैं कहै जो अन्त न पावै ताहि ॥
 सुरतांत सुख बीच में अङ्ग माधुरी आहि । तिहिं लखि सुख करि मोहि तब आपौ विसारै जाहि ॥
 समरस जो है दुहुनि कौ यों मुनि भरत प्रमान । मम ब्रज कौ समरस जु यह ताकौ तिहूँ न ज्ञान ॥
 अरस परस संगम विषै मम जितनौ सुख होय । ताहूँ श्री राधिका सुख सत अधिक जु सोय ॥
 तातें जानत मो विषैं अद्भुत रस है कोय । राधा मेरी मोहिनी तिहि बस करै जु सोय ॥
 मोतें सुख श्री राधिका लहै जु जिहि जातीय । तिहि आस्वादन हेतु मम उत्कण्ठित है हीय ॥
 करों जतन आस्वाद हित तिहिं समर्थ हों नाहिं । सो सुख माधुरि प्राण हित लोभ बढ़ै हिय माहिं ॥
 रस आस्वादन हेत यह लियो जु मैं अवतार । आस्वादन किय प्रेम रस नीके विविध प्रकार ॥
 राग मार्ग करि जन करै भक्ति प्रकारहि जोय । लीला आचरण दार जु तिन्हें सिखायौ सोय ॥
 तृष्णा मम हैं तीन जो भई न पूरन आहि । नहीं विजाती भाव करि आस्वादन है ताहि ॥
 राधा जू की प्रेम वपु विन तिहि अङ्गीकार । तिनि तीनों सुख कौ कभूँ नहिं आस्वाद अपार ॥
 राधाभाव सुवर्ण तिहि करिकें अङ्गीकार । तीनों सुख आस्वाद हित करि हौं हों अवतार ॥
 सर्वभाव करि कृष्ण किय निश्चै यहै रसाल । युग अवतार समें तहां आयो ताही काल ॥
 तिहीं समें अद्वैत जू आराधे प्रभु हीय । तिनही के हूँकार करि कृष्णाकर्षण कीय ॥

पिता मात गुरु वर्ग कौं आगें करि अवतार । भाव वर्ण श्री राधिका कौ करि अङ्गीकार ॥
 नवद्वीप शचि गर्भ सों शुद्ध दुग्ध कौ सिन्धु । ताते प्रकटे कृष्ण जू पूर्ण इंदु जगबंधु ॥
 श्लोक छठे कौ यह कह्यौ नीकें करि व्याख्यान । श्री स्वरूप गोस्वामि के पाद पत्र करि ध्यान ॥
 इन ही दोऊ पद्य कौ जो हम कीनों अर्थ । रूप गुसांई पद्य है ताहि प्रमान समर्थ ॥

तथाहि—अपारं कस्यापि प्रणयिजनवृन्दस्य कुतुकी, रसस्तोमं हित्वेति ॥

रूप सनातन पद कमल मधि जाकौ है वास । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखें ब्रजभाषाहि प्रकाश ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखंडे श्री चैतन्यावतारे मूल प्रयोजनं नाम चतुर्थं परिच्छेदः ॥

पञ्चम परिच्छेद

वन्देऽनन्ताद्भूतैश्वर्यं श्री नित्यानन्दमीश्वरं । यस्यैच्छया तत्स्वरूपमज्ञेनापि निरूप्यते ॥
जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द । जय अद्वैतहिमांशु प्रभु दास वर्ग सुखकंद ॥
श्लोक छयनि इनि करि कहौ श्री चैतन्य महत्व । अरु इनि पांचनि करि कहै नित्यानन्द महत्व ॥
सब अवतारी कृष्णजू आप स्वयं भगवान । तिन को दूजो देह है श्री बलरामहि जान ॥
दोऊ एक स्वरूप हैं भिन्न मात्र है काय । काव्यव्यूह जू आद्य तिहि है लीला जु सहाय ॥
नवद्वीप चैतन्य जू जोई कृष्ण जु नाम । श्री नित्यानन्द संग हैं सोई श्री बलराम ॥

तथाहि—संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पथोन्विधशायी ।

शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानन्दारूप रामः शरणं ममास्तु ॥

आपु करें श्री कृष्ण कौ लीला कौ जु सहाय । सृष्ट्यादिक जो कार्य है करें चारि धरि काय ॥
संकर्षण जो मूल हैं सोई श्री बलराम । पंचरूप धरि कृष्ण कौ सेवत हैं सुखधाम ॥
सृष्ट्यादिक सेवाजु तिहि आज्ञा पालन जोय । शेष रूप धरि कृष्ण कौ सेवत विविध जु सोय ॥
सब वपु आस्वादन करें कृष्ण जु शेषानन्द । सोई राम जु गौर संग है श्री नित्यानन्द ॥
सातहि के अर्थहि करों करिकें चारि श्लोक । जातें नित्यानन्द को तत्व लहै सब लोक ॥

तथाहि—मायातीते व्यापि वैकुण्ठलोके पूर्णेश्वर्य्ये श्री चतुर्व्यूह मध्ये ।

रूपं यस्योद्भाति संकर्षणारूपं तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥

धाम प्रकृति ऊपर जु है परव्योम जिहि नाम । विग्रह ज्यों श्री कृष्ण के विभुतादिक गुणधाम ॥
सर्वग ब्रह्म अनन्त जिहि वैकुण्ठादिक धाम । कृष्ण कृष्ण-अवतार कौ ताही में विश्राम ॥
ताके ऊपर भाग है कृष्णालोक इक जान । द्वारावति मथुरा पुनि जु गोकुल त्रिविध स्थान ॥
सर्वोपरि गोकुल जु पुनि ब्रजलोकनि कौ धाम । श्वेतदीप गोलोक औ वृन्दावन है धाम ॥
सर्वग सो जु अनन्त विभु कृष्ण हि तनु सम आहि । ऊपर अध व्यापी सु है कछू नियम नहि ताहि ॥
सब ब्रह्मांड प्रकाश तिहि कृष्ण सु इच्छा पाय । है स्वरूप तिहि एक ही नहै दूसरौ काय ॥
चिन्तामणि मय भूमि है सुरतरु मय वन आहि । चर्म चक्षु देखें जु सब सम प्रपंच की ताहि ॥
प्रेम नेत्र जे देख ही ताहि स्वरूप प्रकास । गोप और गोपी जु संग जहां जु कृष्णविलास ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—चिन्तामणिप्रकरसद्मसुकल्पवृक्षलक्ष्मणावृतेषु सुरभिरभिपालयन्तं ।

लक्ष्मीसहस्रशतसंभ्रमसेव्यमानं गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥

मथुरा द्वारावति विषैं करि निज रूप प्रकास । चतुर्व्यूह हैं करत है नाना रूप विलास ॥
वासुदेव संकर्षणसु प्रद्युम्न जु अनिरुद्ध । चतुर्व्यूह अंसी जु सो है तुरिय विशुद्ध ॥
इन ही तीनों लोक हरि केवल लीला रूप । निज गण लै खेलैं सदा समय अनन्त अनूप ॥

परव्योम मधि कृष्ण जू करि सु स्वरूप प्रकाश । नारायण के रूप हैं करैं जु विविध विलास ॥
निज विग्रह जो कृष्ण कौ केवल द्विभुज जु आहि । नारायण पुनि रूप हैं भुजा चारि तनु ताहि ॥
शंख चक्र पंकज गदा है ऐश्वर्य्य स्वरूप । श्री भू लीला शक्ति जिहि सेवा करैं अनूप ॥
यद्यपि क्रीड़ा मात्र है केवल तिनको धर्म । तऊ जीव पर कृपा करि करैं एतनों कर्म ॥
सालोक्य जु सामीप्य है साष्टि और सारूप । चारि मुक्ति दै करत हैं जीव उधार अनूप ॥
ब्रह्मकत्व जु मुक्ति है ताहि तहां गति नाहि । बाहिर श्री वैकुण्ठ ते स्थिति सबकी ता माहि ॥
इक बाहिर वैकुण्ठ तें मण्डल ज्योति सरूप । कृष्ण अंग की प्रभा सों उज्ज्वल परम अनूप ॥
सिद्धि लोक तिहि नाम सो है मायातें पार । चित् स्वरूप नहि तहां है है चित शक्ति विकार ॥
ज्यों रवि मंडल बाहिरें निर्विशेष है जोय । रथ आदिक सविशेष है भीतर सविता सोय ॥
परव्योम में है जु त्यों बहु चिच्छक्ति विलास । निर्विशेष जो जोति है बाहिर विव प्रकाश ॥
निर्विशेष जो ब्रह्म इक ज्योतिर्मय है जोय । अधिकारी सायुज्य के लहैं तहां लय सोय ॥

तथाहि ब्रह्माण्ड पुराणे—

सिद्धलोकस्तु तमसः पारे यत्र वसन्ति हि । सिद्धाः ब्रह्मसुखे मग्नाः दैव्याश्च हरिणा हंताः ॥

परव्योम सोई विषैं नारायण चहुँपास । चतुर्व्यूह जो द्वारका है तिहिदुतिय प्रकास ॥
वासुदेव संकर्षण सु प्रद्युम्न जु अनिरुद्ध । चतुर्व्यूह यह दुतिय जो है सो तुरिय विशुद्ध ॥
तहां महा संकर्षण जु सो जु रूप बलराम । कारण के कारण जु ते चित शक्ति के धाम ॥
है चित शक्ति विलास इक शुद्ध सत्व जिहि नाम । शुद्ध सत्व मय हैं जिते वैकुण्ठादिक धाम ॥
अईश्वर्य्य षड विध तहां चिन्मय सकल सु आहि । संकर्षण सुविभूति सब निश्चै जानों ताहि ॥
नाम तटस्था शक्ति इक जीव नाम है ताहि । जीवन के आश्रय महा संकर्षण जू आहि ॥
जातें जग उत्पत्ति है प्रलय जिहीं तें होय । तिहीं पुरुष के आश्रय संकर्षण है सोय ॥
सर्वाद्भुत सब आसरय जिहि ऐश्वर्य्य अनन्त । कहि न सकैं जु अनन्त हूं तिहि महिमा कौ अन्त ॥
तत्व तुरीय प्रसिद्ध जो है संकर्षण नाम । सोऊ जिनि कै अंग है सो नित्यानन्दराम ॥
श्लोक आठयेकौ कहौ विवरण है संक्षेप । श्लोक नये कौ अर्थ सुनि तजि मन कौ विक्षेप ॥

तथाहि—मायाभर्ताजाण्डसंधाश्रयाङ्गः, शेते साक्षात्कारणाम्भोधिमध्ये ।

यस्यैकांशः श्रीपुमानादिदेव, स्तं श्रीनिन्दानन्दरामं प्रपद्ये ॥

बाहिर श्री वैकुण्ठ के जो ज्योतिर्मय धाम । ताहू के बाहिर जु है कारण अर्णव नाम ॥
वेष्टित इक वैकुण्ठ सों अद्भुत जलनिधि आहि । है जु अनन्त अपार सो नहीं अवधि है ताहि ॥
पृथिव्यादि वैकुण्ठ में चिन्मय सकल जु सोय । पंचभूत मायिकनिकौ तहां जन्म नहि होय ॥
चिन्मय सब सोई जु है कारण परम सु आहि । जग पावन गंगा जु है सो इक कन है ताहि ॥
कारण अर्णव तिही मधि संकर्षण जु सोय । अपनेई इक अंस करि शयन करे तहैं जोय ॥

पुरुष महत् स्रष्टा जु इक जग कारण है सोय । करें आद्य अवतार करि माया दरसन जोय ॥
बाहिर कारण उदधितें रहै जु मायाशक्ति । तिहि समुद्र के परस कौ माया की जु अशक्ति ॥
ताही माया की कहैं स्थिति है दोय प्रकार । उपादान है जगत की प्रकृति प्रधान विचार ॥
जग की कारण प्रकृति नहिं जड रूपा निरधार । कृष्ण कृपा करि करत हैं तहां शक्ति संचार ॥
कृष्ण शक्ति करि प्रकृति हैं कारण गौन जु सोय । अग्नि शक्ति करि लौह ज्यों कारण दाहक होय ॥
याही तें श्री कृष्णजू जग कारण हैं मूल । कारण प्रकृति जु अजा के हैं जुगलस्तन तूल ॥
कारण माया अंस करि कहैं निमित्त जु ताहि । सोउ नाहि जातें पुरुष कर्ता हेतु जु आहि ॥
घट कौ हेतु निमित्त है जिहि प्रकार घटकार । तैसें कर्ता जगत के हैं जु पुरुष अवतार ॥
कर्ता हैं श्री कृष्ण तिहि माया करै सहाय । ज्यों घट कारन चक्र अरु दण्डादिक जु उपाय ॥
करैं दूर ते पुरुष सो माया कौ अवधान । जीव रूप इक वीर्य कौ करैं तहां आधान ॥
करैं अंग आभास इक माया मिलन विचार । ताही तें जन्मे तवै गण ब्रह्मांड अपार ॥
अन गिन होय अनन्त यत अंड समूह अनेक । सब में करैं प्रवेश बहु रूप पुरुष जो एक ॥
नामातें जव पुरुष की बाहिर निकसै श्वास । तिही श्वास सह होत है बहु ब्रह्मांड प्रकास ॥
फेरि जबै तिहि श्वास सों तन में करे प्रवेश । तिहि संग तहां होय लय जे ब्रह्मांड अशेष ॥
जालरन्ध्र में होत है ज्यों त्रस-रेणु प्रचार । पुरुष रोम कूप जु विषैं त्यों ब्रह्मांड अपार ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां—यस्यैकनिस्वसितकालमथावलम्ब्य, जीवन्ति लोमविलजा जगदण्डनाथाः ।

विष्णुर्महान्स इह यस्य कलाविशेषो, गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥

दशमे—काहं तमो महदहं खचराग्निवाभू, संवेष्टिताण्डघटसप्तवितरितकायः ।

केद्विधाविगणिताण्डपराणुचर्या वाताध्वरोमविवरस्य च ते महत्त्वं ॥

होय अंस जो अंस कौ कला सु ताकौ नाम । प्रति-मूरति गोविंद की सो हैं श्री बलराम ॥
तिनिही कौ इक अंश श्री प्रभु संकर्षण जोय । पुरुष अंस तिन कौ जु है कलागणनि में सोय ॥
कला कौ तिनकी जिनहि महा विष्णु हैं जोय । अवतारी जु महापुरुष सर्वविष्णु हैं सोय ॥
गर्भोदक क्षीरोदके शायि पुरुष विव नाम । ते दोऊ जिहि अंश हैं विश्व विष्णु के धाम ॥

तथाहि—विष्णोस्तु त्रीणि रूपाणि पुरुषाख्यान्यथो विदुः ।

एकं तु महत् स्रष्टा द्वितीयं त्वन्दसंस्थितम् ॥

तृतीयं सर्व भूतार्थं तानि ज्ञात्वा विमुच्यते ॥

यद्यपि तिन कौ कृष्ण की कलौ कला करि आहि । मत्स्यादिक अवतार जे अवतारी ये ताहि ॥

तथाहि श्री भागवते—एते चांश कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ॥

सोई पुरुष जु सृष्टि अरु स्थित लय कर्ता आहि । नाना विधि अवतार करि जग भर्ता कहि ताहि ॥

सृष्ट्यादिक जु निमित्त करि जिहीं अंस अवधान । तिहीं अंस कौ कहै अवतार नाम है जान ॥

है जु आदि अवतार ये महापुरुष भगवान । बीज सर्व अवतार के सर्वाश्रय जु निधान ॥

तथाहि श्रीभागवते—आद्योवतारः पुरुषः परस्येति । जगृहे पौरुषं रूपं भगवान् महदादिभिः इति ॥

सर्वाश्रय तेउ यद्यपि तिनही तें संसार । अंतर आत्मा रूप करि तिन कौ जगत आधार ॥
तिनकें प्रकृति संयोग करि है दोऊ संबंध । तऊ प्रकृति सह नाहि नै तिनहि परस कौ गंध ॥

गीतायां—एतद्दीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः । न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥

इहीं भांति गीता तिन्हें कहै जु बारंवार । सदा अचिन्त्य जु शक्ति मय ईश्वर तत्व विचार ॥
बसै जु हम सब जगत में जगत बसै हम मांहि । नाहिन हम में जग बसै जग में हम न बसाहि ॥
ईश्वरता जु अचिन्त्य है इहै हमारी जान । गीता कौ यह अर्थ है कियो प्रचार प्रमान ॥
वही पुरुष जिन कौ जु इक अंस धरतु है नाम । गौर संग तेई जु ये श्री नित्यानंदराम ॥
तब ब्रह्मांड अनन्त सृजि सोई पुरुष विशेष । बहु मूरति हैं कें कियो सब ब्रह्मांड प्रवेश ॥
श्लोक नये कौ यहै है अर्थ विवरण आहि । श्लोक दसम कौ अर्थ जो सुनौ जु मन दै ताहि ॥

तथाहि—यस्यांशांशः श्रीलगभोदशाया यन्नाभ्यवजंलोकसंघातनालं ।

लोक खण्डः सूतिकाधाम धातुस्तं श्रीनित्यानंदरामं प्रपद्ये ॥

देखैं भीतर पैठि जो केवल है आंधियार । रहिवेकौ जु निवास कछु तब किय तहां विचार ॥
निज अङ्ग के प्रस्वेद करि तब जल सृजि भगवान । तिनहीं जलकरि भर्यौ तिन अण्ड अर्द्धपरिमान ॥
जोजन कोटि पचास है सब ब्रह्मांड प्रमान । जिहि आयाम रु दीर्घता दोऊ एक समान ॥
आधौ जल कै पूर्ण करि तिहि किय तहां निवास । और अर्ध करि कियो सब चौदह भुवन प्रकाश ॥
प्रगट कियो तब तहां ही निजवैकुण्ठ सुधाम । शेष शयन जल बीच सब कियो तिनहि विश्राम ॥
सज्या करि जु अनंतकी शयन कियो तहां आहि । मस्तक है जु सहस्र तिहि वदन सहस्र हैं ताहि ॥
चरण सहस्र रुहस्त है नयन सहस्र हैं ताहि । अवतारनि के बीज ये जग कारन है आहि ॥
नाभि कमल तें तासुकी प्रगट भयो इक पत्र । ब्रह्मा को तिहि कमल तें भयो जन्म अरु स्रज ॥
तिहीं कमल की नाल तें भुवन भये दस चारि । तातें ब्रह्मा होय के सृष्टि करी जु अपार ॥
विष्णु रूप करि करत हैं जग पालन वे आहि । गुणातीत सो विष्णु हैं गुन कौ परस न ताहि ॥
रुद्र रूप करि करत हैं जग संहारन सोय । सृष्टि स्थिति औ प्रलय हैं जिहीं इच्छा सु होय ॥६०॥
अंतर्यामि विराट कौ जग कारन है सोय । सब विराट की कल्पना जिनके अङ्ग ते होय ॥६०॥
नारायण ऐसैं जु सो तिहि अंसनि के अंस । सोई नित्यानन्द प्रभु हैं सब के अवतंस ॥
श्लोक दशम के अर्थ कौ किय विवरण इहि भाय । श्लोक ग्यारह कौ जु अब सुनौ अर्थ मन लाय ॥

तथाहि—यस्यांशांशांशः परमाखिलानां पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी ।

क्षौणीभर्ता यत्कला सोऽप्यनन्तस्तं श्रीनित्यशनन्दरामं प्रपद्ये ॥

नाभि नाल मधि भूमि सब नारायण के आहि । गणियों सात समुद्र ये ते मधि हेंगे ताहि ॥
 तिनमें क्षीरोदधि जु मधि श्वेतद्वीप जिहि नाम । पालयता जो विष्णु है तिनको सो निजु धाम ॥
 तेई हैं सब जीव के अंतर्गामी आहि । पालक तेई जगत के अरु स्वामी हैं ताहि ॥
 जुग मन्वन्तर मधि कर ते नाना अवतार । धर्म स्थापन करत हैं अरु अधर्म संहार ॥
 दरसन पायौ नाहि जिहि जिते देव गन आहि । क्षीरोदक के तीर में स्तवन कियो हूँ ताहि ॥
 तब अवतारी करतु हैं जग पालन जो सोय । तिहि वैभव जु अनन्त हैं तिहि गनना नहि होय ॥
 सोई हैं श्री विष्णुतिहि अंश अंशकौ अंस । सोई नित्यानन्द प्रभु हैं सब के अवतंस ॥
 सोई विष्णु जु सेस वपु धरणी धारें जोय । कहाँ है जु सिर पर मही यह नहीं जानें सोय ॥
 विस्तीरण जु सहस्र हैं फण मण्डल जु ताहि । सूरज सम मणिगण तहाँ करें जु झलमल आहि ॥
 जोजन कोटि पचास हैं पृथिवी कौ विस्तार । जिनके इक फन में रहै सरस्यों के आकार ॥१०२॥
 सोई आप अनन्त जू सेस भक्त अवतार । प्रभु के सेवन बिन नहीं जानै और व्यवहार ॥
 करें जु वदन सहस्र करि कृष्णचन्द्र गुनगान । निरवधि गावैं गुन तेउ नहीं अन्त कौ ज्ञान ॥
 सनकादिक श्री भागवत सुनें जु तिहि मुख जाय । कहैं जु गुन भगवान के प्रेमानन्द समाय ॥
 छत्र पादुका सेज उपधान वसन हैं जोय । सूत्र निवास अराम औ सिंहासन है सोय ॥
 इनि मूर्ति के भेद करि करें जु सेवन ताहि । सेस लहैं श्रीकृष्ण कौ सेस नाम यत आहि ॥
 सो अनन्त जिनकी कही एक कला है जान । ऐसैं नित्यानन्द की क्रीड़ा कौ किहि ज्ञान ॥
 जान्यौ इन जु प्रमान करि नित्यानन्द कौ तत्व । कहियै नितहि अनन्त जौ तिनको कहा महत्व ॥
 भक्तनि कौ सोऊ वचन सत्य मानिये ताहि । सोऊ तिनको संभवै यत अवतारी आहि ॥
 अवतारी अवतार में गिनें अभेद जु जान । पहिलें जौ श्री कृष्ण ही करें कउ कछु बखान ॥
 नर नारायण आप हैं कृष्णहि कहै जु कोय । कोऊ कहैं जु कृष्ण कौ आपुन वामन होय ॥
 क्षीरोदकशायी जु के कहें तिन्हें अवतार । तिहीं असम्भव है न कछु सत्य वचन सब सार ॥
 आश्रय सब अंसनि जु के कृष्ण करें अवतार । आय मिलें तब कृष्ण में सब ही अंस अपार ॥
 जिही रूप जे जानई त्यों ही कहैं जु ताहि । सकल संभवै कृष्ण में मिथ्या कछु नहि आहि ॥
 यातें प्रभु चैतन्यजू सकल रसिकमणि राय । लीला बस अवतार की करि सब दर्ई दिखाय ॥
 इहि विधि नित्यानन्द जू है अनन्त प्रकाश । उँही भाव करि कहूं मैं श्री प्रभुजी के दास ॥
 कवहुँ गुरु कवहुँ सखा कवहुँ लीलादास । तीनि भाव करि प्रथम ज्यों ब्रज में किय विलास ॥
 वृष हूँ कवहुँ कृष्ण संग करै जु युद्ध उपाय । कवहुँ करै जु कृष्ण जू संवाहन तिहि पाय ॥
 आपुन कौ तिहि भृत्य करि कृष्णहि निज प्रभु जानि । कृष्ण कलाकी कला जो ताकौ निज अभिमान ॥

तथाहि दशमे - वृषायमाणौ नर्दन्तौ युयुधाते परस्परं इति ॥ स्वयं विश्रमयत्याय्यं पादसंवाहनादिभिः ॥
 प्रायोमायास्तु मे भर्तु नान्यामेऽपि विमोहिनीति ॥ ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कला कलायाः ॥ इति ॥

एकहि ईश्वर कृष्ण जू और दास सब ताहि । जिहि विधि जाहि नचावई सो त्यों नाचै आहि ॥
 और सबै तिहि पारपद कै किंकर है कोय । ऐसे ही चैतन्य जू इक ईश्वर है सोय ॥
 नित्यानन्द अद्वैत जू है गुरु वर्ग सु ताहि । श्रोनिवास औरौ जिते लघु सम आरज आहि ॥
 सबै पारपद गण जिते लीला के जु सहाय । सब लै साधें कार्य निज गौरराय इहि भाय ॥
 आचारज अद्वैत जू नित्यानन्द विवि अङ्ग । दोऊ जन लै गौर कौ जितनौ है कछु रंग ॥
 आचारज अद्वैत जू ईश्वर प्रगट प्रभाव । प्रभु गुरु करि मानें तिन्हें तेऊ किंकर भाव ॥
 आचारज अद्वैत कौ तत्त्व कहाँ नहि जाय । ताएँ भुवन सबै जिन्हें प्रभु अवतार कराय ॥
 नित्यानन्द स्वरूप भौ पहिलें लक्ष्मण आहि । लघु भाई है राम कौ सेवा कीनौ ताहि ॥
 जो चरित्र श्री राम करै दुख कारन सब सोय । प्रभु स्वतन्त्र लीलानि में लक्ष्मण के दुख होय ॥
 यातें सकें न करि मन लघु आता हैं सोय । रहै मौन करि लक्ष्मण जु मन में अतिदुख होय ॥
 भये कृष्ण अवतार में अग्रज सेवा काज । करवायै श्री कृष्ण कौ सुख आस्वाद समाज ॥
 राम जु लक्ष्मण ये विषे कृष्ण राम कौ अंश । प्रगट समें विवि दुहुनि में कियौ प्रवेश प्रसंस ॥
 वही अंस लै ज्येष्ठ पुनि औ कनिष्ठ अभिमान । अंश जु अंशी भाव करि कहै जुशास्त्रवखान ॥
 महाप्रभु सो कृष्ण हैं नित्यानन्द सो राम । नित्यानन्द पूरण करें कृष्ण चन्द्र हिय काम ॥
 नित्यानन्द महिमा उदधि है जु अनन्त अपार । परस्यौ ताकौ एक कन सो तिहि कृपा विचार ॥
 और सुनौ तिहि कृपा की इक अद्भुत अधिकाय । जैसे तिन जन अधम कौं ऊंचे दियौ चढ़ाय ॥
 कहत निपट अयोग्य है देव गुह्य इक बात । तिन की कृपा प्रकास हित कहाँ तऊ न समात ॥
 लिखै जू आनन्द विवस है तुव प्रसाद निरुपाध । श्री नित्यानन्द महाप्रभु क्षमा करौ अपराध ॥
 कविच—नित्यानन्द अवधूत जू के एक भृत्य प्रेम धाम मीनकेतन श्रीरामदास नाम हैं ।
 आलय हमारे में तौ रैनदिन कीरतन न्योते तहाँ तेऊ आय बैठे मम धाम हैं ॥
 सकल समाज आय तिहि पद सीस नाय करें नमस्कार धाय जन अभिराम हैं ॥
 प्रेम मत्त काहू पर चढ़ै काहू मारें वंशी काहू कें थपेरे मारें रीती अति धाम हैं ॥

दोहा—

जिही नेत्र देख्यौ चहै जिहि मन आँख धार । तिही नेत्र सो वहि चलै आँसु अखंड अपार ॥
 कवहुँ काहू अङ्ग में पुलक कदम्ब दिखाय । एक अङ्ग तिहि जाख्यौ औ अङ्ग कंप अधिकाय ॥
 श्री नित्यानन्द बोलिकै करें जबै हुँकार । चमत्कार जिहि देखि कें लोकनि के जु अपार ॥
 मिश्र गुणार्णव नाम इक रहै आर्य द्विज सोय । श्री मूर्ति के दिग करै कारज तिन के होय ॥

आंगन बैठे आय तिनि संभासन किय नांहि । रामदास लखि कहै तिहि क्रोध होय हिय मांहि ॥
 पुत्र रोमहर्षण यह सूत दूसरौ आहि । देखि वह बलभद्र कौ उठौ न घट अवगाहि ॥
 ऐसे कहि करि कियौ हिय नांचि गाय संतोष । टहल करे प्रभु विप्र यह जाते कियौ न रोस ॥
 उत्सव पूर्ण भये चले तिहि पर करि जु प्रसाद । तिनसों मम भ्राता सम भयौ जु कछु विवाद ॥
 गोस्वामी चैतन्य मधि ताकें दृढ़ विश्वास । श्री नित्यानंद जू विपें कछु विश्वासाभास ॥
 रामदास के दुःख अति हियें भयौ यह जानि । भ्राता कौ भर्त्सन कियौ तव मैं तजि कै कानि ॥
 दोऊ भाई तत्व इक एक समान प्रकास । नित्यानन्द मानै नहीं है है तुव सब नास ॥
 एक विषै विश्वास करि नहीं अन्य सन्मान । अर्धकुक्कटी न्याय जिमि है तेरो जु प्रमान ॥५०॥
 वे दोऊ मानै नहीं होय बड़ौ पाखण्ड । इक मानै नहि अन्य कौ है यह मत अति भण्ड ॥
 रामदास तव क्रुद्ध है चले जु वंसी तोर । सर्व नास ताको भयौ जो भ्राता है मोर ॥
 तिनके सेवक कौ कछौ है जु अगाध प्रभाव । और एक कछौ मोर जो अति ही दया स्वभाव ॥
 भाई कौ भर्त्सन कियो यह गुन मम इक लीय । नित्यानंद प्रभु तिहीं निसि दरसन मोकौ दीया ॥
 नैहाटी के निकट इक भामटपुर है ग्राम । तहाँ स्वप्न में दरस दिय श्री नित्यानंद राम ॥
 पर्यौ जु मैं तव दण्डवत् चरन कमल मधि ताहि । पाद पद्म निज सीस मम दिये कृपा करि आहि ॥
 उठि उठि ऐसैं मोद करि कछौ जु वारंवार । उठि तिहि देख्यै रूप भौ चमत्कार विस्तार ॥
 चिकन स्याम जु कांति जिहि महा प्रकांड शरीर । मनमथ मूरतिवन्त जनु महामल्ल है वीर ॥
 सुवलित भुज अरु चरण जिहि अरुण कमल दल नैन । पट्ट वस्त्र परिधान जिहि पट्टवस्त्र सिर ऐन ॥
 सुवरन कुण्डल कर्ण जिहि अंगद वलय सु ताहि । नूपुर बाजे चरन जिहि पुहुप माल गर आहि ॥
 चंदन लेपित अङ्ग तिहि माथे तिलक सुडौन । अति ही मत्त गजेन्द्र जिमि मद मंथर तिहि गौन ॥
 कोटि चन्द्र सम देखियै उज्ज्वल वदन सुताहि । दन्त दाढ़िमी बीज सम चर्वित वीरा आहि ॥
 कृष्ण प्रेम करि मत्त अंग डुले दाहिनैं वाम । बोल वचन गंभीर सुर कृष्ण कृष्ण कहि नाम ॥
 अरुण छरी करि फेरै मत्तसिंह जिमि सोइ । चहँ ओर घिरि रहे अलि चरन कमल रस भोय ॥
 देखे ये गन पारपद सबै गोप के वेष । कृष्ण कृष्ण बोलें सबै भरे प्रेम आवेस ॥
 कोइ गावैं कोइ नाचइ वंशी शृङ्ग बजाय । जन कोऊ वीरा लियें कोऊ चौर डुलाय ॥
 नित्यानंद स्वरूप कौ देख्यौ वैभव आहि । महारूप लीला जु गुन सबै अलौकिक ताहि ॥
 आनन्द बिहवल भयौ तव मोहि कछु नहि ज्ञान । तवहि आप मोसों प्रभु बोले वचन सुजान ॥
 कृष्णदास हो आवतू जिनि करि भय हियमांहि । वृन्दावन जावैं तहां कछु अलभ्य तुवनाहि ॥
 ऐसे कहि प्रेर्यौ जु मन सैन हाथ की देव । अन्तर्धान कियौ प्रभु निज गण सब संग लेय ॥
 होय मूरझित तव तहां पर्यौ भूमि मम गात । स्वप्न भंग तिहि छिन भयो देख्योभयौ प्रभात ॥

म परि:

आदिलीला

[३३]

देख्यो कहा सुन्यौ जु मैं करौं विचार जु हीय । वृन्दावन के चलन कौ प्रभु निदेस मोहि दीय ॥
 वृन्दावन कौ तिहीं छिन गमन कियौ सब त्यागि । वृन्दावन आयौ तव प्रभु करुणा सुख पागि ॥
 जय जय नित्यानंद जू श्री नित्यानंद राम । पायौ जिनकी कृपा तें श्री वृन्दावन धाम ॥
 जय जय नित्यानंद जू कृपा रूप है जोय । रूप सनातन आसरो लखौ कृपा लहि सोय ॥
 जिनहीं तें पाये महाशय जू श्री रघुनाथ । श्री स्वरूप आशय लखौ जिनही ते जु अनाथ ॥
 लखौ भक्ति सिद्धान्त मैं कछौ सनातन जोय । प्रीति भक्ति रस कौ लखौ रूप कृपा करि सोय ॥
 जय जय नित्यानन्द जू जय तिहि पद अरविंद । जिनहीं ते पाये जु प्रभु श्री राधा गोविन्द ॥
 माधार्इतें अधम मैं और जगाई ते जु । पुनि पुरीष के कीट तें अति लघिष्ठ-हौं मैं जु ॥
 मेरे नामहि सुनै जो तिही पुण्य क्षय होय । मेरे नामहि लेहि जो होय पाप तिहि सोय ॥८०॥
 मोसे निर्धन पै कृपा करै कौन है जोय । इक श्री नित्यानंद विनु जगत मध्य में कोय ॥८१॥
 प्रेममत्त नित्यानंद जू कृपा रूप अवतार । तातें उत्तम अधम को करै न कछु विचार ॥
 जोई दृष्टि परै जु पथ करै जु तिहि निस्तार । दुराचारि मोह जु सों किय ताको उद्धार ॥
 ल्याये मो पापिष्ठ कौ श्री वृन्दावन जोय । चरण कमल श्री रूप के दिये अधम कौ सोय ॥
 दरसन मोहन मदन श्री गोविंद नैन विसाल । कहियै कौ नहि योग्य है ये बातें जु रसाल ॥
 वृन्दावन के इंद्र श्री मोहन मदन गुपाल । आपु ब्रजेन्द्रकुमार हैं रास विलासी लाल ॥
 राधा ललितादिक प्रिया लै संग रास विलास । मनमथ हू कौ मन मथै जिनकौ रूप रसाल ॥

तथाहि श्री भागवते—तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।

पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥

करै सु निज माधुर्य करि मन आकर्षण लोय । राधा ललिता दुहं ढिंग सेवत हैं रस भोय ॥
 नित्यानंद दया जु ते मोहि दीये जु दिखाय । राधा मोहन म न मम प्रभु करि दिये गहाय ॥
 योगपीठ वृन्दाविपिन सुरतरु वन जहँ होय । रतन खचित मंडप तहां रत्न सिंहासन सोय ॥
 श्री गोविंद वसैं तहां आप ब्रजेन्द्रकुमार । करि माधुर्य प्रकास अति मोहैं जगत अपार ॥
 वाम भाग श्री राधिका लिये सखी गन संग । रासादिक लीला करैं सो प्रभु नाना रंग ॥
 करै जु अज निज लोक में जिनही कौ नित ध्यान । करत उपासन अष्टदस अक्षर मंत्रविधान ॥
 भुवन चतुर्दस सब करैं जिनही कौ नित ध्यान । वैकुण्ठादिक मधि करैं जिहि लीला गुनगान ॥
 आकर्षण जिहि माधुरी करै जु श्री कौ आहि । रूप गुसाई भली विधि वर्णन कीनौ ताहि ॥

तथाहि—स्मेरां भंगीत्रयपरिचितां साचिविस्तीर्णदृष्टिं, वंशीन्यस्ताधरकिसलयामुज्ज्वलां चन्द्रकेत ।
 गोविन्दाख्यं हरितनुमितः केशितीर्थोपकण्ठे, मा प्रेक्षिष्ठा स्तव यदि सखे ! बन्धुसंगेऽस्तिरंगम् ॥
 है साक्षात् वृजेन्द्र-सुत यामें कछु नहि आन । जे अति अज्ञ करैं जु तिहि प्रतिमा कौ सो ज्ञान ॥

तिनकों तिहि अपराध करि नहीं होय निस्तार । ऐसें गोविंद के जु गुन करौ कहा विस्तार ॥
 ऐसें जौ गोविंद प्रभु पाये जिनतें सोय । तिनके चरननि की कृपा वरणि सकैं सो कोय ॥
 वृंदावन में बसत हैं वैष्णव मण्डल जोय । नाम परायन कृष्ण के मंगल अति है सोय ॥
 जिनि के दोऊ प्राणधन नित्यानंद चैतन्य । राधाकृष्ण सु भक्ति बिनु जाने नहिं कछु अन्य ॥
 तिन भक्तन की पादरज अरु पद छाया ताहि । नित्यानंद दया सु करि मोसे अधमहि आहि ॥
 तहां भयो सब लाभ मम जो प्रभु आज्ञा दीय । सोइ कह्यौ जु सूत्र यह ताको विवरण कीय ॥
 ये सब ही पाये जु मैं श्री वृंदावन आय । अभिप्राय प्रभु कौ यहै सर्व लभ्य यह भाय ॥
 आप लिखी अपनी कथा होय निलज अधिकाय । तऊ लिखायौ तिहि गुणनि करि उन्मत्त बनाय ॥
 नित्यानंद प्रभु गुणनि की महिमा है जु अपार । सेस कहै जो सहस मुख तऊ लहै नहिं पार ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि वास । नित्यानंद प्रभु तत्व कछु कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखैं ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री नित्यानंदतत्त्वनिरूपणं नाम पञ्चमपरिच्छेदः ॥१०७॥

षष्ठपरिच्छेदः

वंदे श्रीलमद्वैताचार्यमद्भुतचेष्टितं । यस्य प्रसादादज्ञोऽपि तत्स्वरूपं निरूपयेत् ॥

दोहा —

जय जय श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु प्रभु दास वर्ग सुख कंद ॥
 श्लोक पाँच करि यह कह्यौ श्री नित्यानंद तत्व । श्लोक दोय करि कहत हैं श्री अद्वैत महत्व ॥

तथाहि—महाविष्णुर्जगत्कर्त्ता मायया यः सृजयदः । तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः ॥

अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्यं भक्तिशंसनात् । भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्यमाश्रये ॥

आचारज अद्वैत जू ईश्वर आपुन आहि । नाहिन गोचर जीव कें अदभुत महिमा जाहि ॥
 महाविष्णु सृष्टी करैं जगदादिक जो कार्य । तिनही कौ अवतार है श्री अद्वैताचार्य ॥
 पुरुष जु सृष्टि स्थिति करैं निज माया करि आहि । सृष्टि अगण ब्रह्मांड की करैं जु लीला ताहि ॥
 इच्छा करि कें करैं बहु मूर्ति प्रकास विशेष । एक एक मूर्ति करैं सब ब्रह्मांड प्रवेश ॥
 अंश जु तिहि अद्वैत हैं नहि तिनसो कछु भेद । है जु शरीर विशेष तिहि नाहिन है विच्छेद ॥
 तिनको करैं सहाय ये लैं करि कें जु प्रधान । करैं कोटि ब्रह्मांड कौ इच्छा के निर्माण ॥

जग मंगल अद्वैत जू मंगल गुन गन धाम । मंगल सदा चरित्र जिहि मंगल जिहि कौ नाम ॥
 कोटि अंस औ शक्ति हू कोटि कोटि अवतार । इनकों ले करि सृजत हैं पुरुष सकल संसार ॥
 माया ज्यों द्वै अंस करि कारण विषै प्रमान । माया हेतु निमित्त है उपादान जु प्रधान ॥११॥
 ऐसें ईश्वर पुरुष हैं मूर्ति करि कें दोय । विश्व सृजै जो निमित्तरु उपादान हैं होय ॥
 कारण होय निमित्त जग आपुन पुरुष जु सोय । उपादान अद्वैत वपु सो नारायण होय ॥
 माया कौ ईक्षण करैं अंश निमित्त हि जोय । उपादान अद्वैत जू सृजै अजांडनि सोय ॥
 कर्त्ता श्री अद्वैत जू कोटि अंड के आहि । भरण करैं ब्रह्मांड अरु एक एक वपु ताहि ॥
 मुख्य अंग अद्वैत जू तिनि नारायण जानि । अंश शब्द करि अंस कहि श्री भागवत प्रमान ॥

तथाहि—नारायणोऽंगं नरभूजलायनात्तच्चापि सत्यत्र तवैव माया ॥

ईश्वर कौ अंग अंस जो चिदानंद मय आहि । माया कौ संबन्ध नहिं श्लोक कहै यह ताहि ॥
 काहे अंस कह्यौ नही अंग कह्यौ क्यों ताहि । यातें अंग है अंस तें अन्तरंग अति आहि ॥
 महाविष्णु कौ अंस महा आचारज गुन धाम । ईश्वर सों जु अभेद तें भौ अद्वैत जु नाम ॥
 पहिलैं सकल जु विश्व कौ जिन्ह सृजन किय आहि । अब अवतरि करि कियो है भक्ति-प्रवर्त्तन ताहि ॥
 सकल जीव निस्तार किय कृष्ण भक्ति करि दान । गीता अरु भागवत कौ करैं भक्ति व्याख्यान ॥
 नहीं भक्ति उपदेस बिनु तिनकें हैं कछु कार्य । याही तें तिनको भयो अवै नाम आचार्य ॥
 आचारज अद्वैत इक मिलै नाम भौ ताहि । ते गुरु हैं वैष्णवनि कें जगत आर्य हैं आहि ॥
 कमल नयन के हैं जु ते जाते ये अंग अंस । ताही ते कमलाक्ष करि धरै नाम अवतंस ॥
 पावै गणजे पारिषद ईश्वर सों सारूप । पीत वसन अरु चतुर्भुज नारायण जिहि रूप ॥
 आचारज अद्वैत जू अंस बर्य है ताहि । तिनके तिहि जो नाम गुन अचिरज कहाजु आहि ॥
 जिनके तुलसी और जल अरु जिनके हुंकार । गौरचन्द्र निज गण सहित प्रगट भयो अवतार ॥
 जिही द्वार हैं प्रभु कियो कीरंतन जु प्रचार । ताही द्वारा प्रभु कियो सकल जगत निस्तार ॥
 आचारज गोस्वामि कें गुन महिमा जु अपार । जीव कीट यह कहां तें पावै तिनको पार ॥
 आचारज अद्वैत हैं मुख्य अंग चैतन्य । तिनके नित्यानंद प्रभु अंग एक है अन्य ॥
 श्री वासादिक भक्तगण प्रभु उपांग इह जानि । अंग नेत्र मुख हस्त औ चक्राद्यस्त्र समान ॥
 इन सब ही कौ संग लैं निज वांछित जु प्रचार । इन सब ही कौ संग लैं प्रभु चैतन्य विहार ॥
 माधवेन्द्र जू कैं जु ये सिध्य यहै हिय जान । आचारज जू कौ करैं प्रभु गुरु करि सनमान ॥
 लौकिक लीला धर्म करि मरिजादा स्थिति आहि । तिनकी भक्ति स्तुति करैं अरु पद बंदन ताहि ॥
 आचारज चैतन्य कौ करि निजु प्रभु कौ ज्ञान । हम हैं श्री चैतन्य के दास यहै अभिमान ॥

ताही के अभिमान सुख भूलि अपनपौ जाहि । होहु जीव सब दास हरि यह उपदेस कराहि ॥
 कृष्णदास अभिमान में जो आनंद निधि आहि । कोटि ब्रह्म सम सुख नहीं एक बिंदु की ताहि ॥
 दास में जु चैतन्य कौ अरु है नित्यानंद । दास भाव सम नाहिने और कहूँ आनन्द ॥
 परम प्रेयसी लक्ष्मी हिय निवास है जाहि । वह दास सुख मांगई करिके विनती ताहि ॥
 दास भाव में मुदित हूँ गण पार्षद जु अपार । विधि भव नारद और शुक सनकादिक मुनि चार ॥
 नित्यानंद अवधूत हैं सब में मुख्य जु सोय । दास भाव चैतन्य के मत्त भये हैं जोय । ४० ॥
 श्री निवास हरिदास अरु राम गदाधर जान । शशिशेखर बक्रेशुर जु मुकुंद मुरारि प्रमान ॥
 ए सब पंडित लोग हैं जिनि कौ परम महत्व । गौरदास करि सबनि कौ कियौ प्रेम उनमत्त ॥
 नाचै गावैं इही विधि करै उच्च अतिहास । लोकनि कौ उपदेस दें हो प्रभु के तुम दास ॥
 मोकौ श्री चैतन्य जू आप करै गुरु ज्ञान । तब हूँ मेरे तिनि विषे है जु दास अभिमान ॥
 कृष्ण प्रेम को एक यह है जु अपूर्व प्रभाव । करवावै गुरु सम लघुनि दास भाव में चाव ॥
 यामे सुनौ जु प्रमान सब कहौ जु शास्त्र बखान । महदनुभव यातें बड़ौ है जो सुदृढ़ प्रमान ॥
 कहा कथा है और की नंद पिता ब्रज माहि । तिहि सम गुरुजन कृष्ण के कोऊ औरहि नाहि ॥
 वात्सल्य रस शुद्ध जेहि ईश्वर ज्ञान न ताहि । तिनहूँ कौ दासहि कृपा प्रेम करावै ताहि ॥
 तेऊ रति मति मांगई कृष्ण चरण मधि होइ । श्रीमुख वानी तिनहिकी तहां प्रमान जु सोइ ॥
 उद्धव सुनौ सु सत्य मम कृष्ण तनय यह नीति । तेऊ ईश्वर हांहि जो तुम मन यहै प्रतीति ॥
 तऊ जु तिनमें मम सदा रहै जु मन की वृत्ति । तुव ईश्वर श्री कृष्ण मधि मम रति होहु प्रवृत्ति ॥
 तथाहि श्रीभागवते—

“मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ।” “रति नः कृष्ण ईश्वरे ॥”

श्री दामादिक जिते ब्रजसखा समूह अनूप । हीन जु ईश्वर ज्ञान तिहि केवल सख्य सरूप ॥
 युद्ध करै श्रीकृष्ण संग काँधे चढ़ै जु ताहि । दास्य भाव करि करै ते सेवन चरन सु आहि ॥

तत्रैव—पादसंवाहनं चक्रुः केचित्तस्य महात्मनः । अपरे हतपाप्मानो व्यजनैः समवीजयन् ॥

कृष्ण प्रेयसी ब्रज जितौ गोपी गण अनुरक्त । जिनि की पद रज जांचई उद्धव से निज भक्त ॥
 जिनि सब तें ऊपर नही कृष्णप्रिया जो आन । तेऊ करै जु आपको तिहि दासी अभिमान ॥
 तथाहि तत्रैव—भक्त सखे ! भवत किंकरीः स्म नो” । “कचिदपि स कथां नः किंकरीणां गृणीते” ॥

कथा रही तिन सबन की श्री जुत राधा जोय । सबही ते सब के जु मत अधिका परम जु सोय ॥
 तेऊ तिहि दासी जु हैं पद सेवत हैं ताहि । जिनके अद्भुत प्रेम गुन सदा कृष्ण वश आहि ॥

तथाहि—दास्यस्ते कृपयाया मे सखे दर्शय सन्निधि ॥

महिषी गण जिति द्वारिका रुक्मिण्यादि सुजान । तेऊ आपुन कौ करै कृष्णदास्य अभिमान ॥

तत्रैव—साहं तद्गृहमार्जनीत्यादि ॥ आत्मारामस्य तस्येमा वयं वै गृहदासिका इति ॥

कहा काज है और कौ श्रीवल महा प्रभाव । शुद्ध सख्य वात्सल्य मय जिनके है निज भाव ॥
 तेऊ आपुन कौ करै दास्य भाव अभिमान । कृष्णदास इह भाव विनु नीके को जन आन ॥
 सहस वदन जे शेष जू है संकर्षण जोय । करै जु सेवन कृष्ण कौ दस वपु करिके सोय ॥६१॥
 रुद्र अगणिब्रह्मांड-मधि जिहि सिव जू कौ अंस । तेई गुण अवतार हैं सर्वदेव अवतंस ॥
 तेऊ करै जु कृष्ण की सदा दास की आस । कहैं निरन्तर शिव जु हौं कृष्णचन्द्र कौ दास ॥
 रहै जु विह्वल दिग्वसन कृष्ण प्रेम उन्मत्त । तिहि गुन लीला गायकें नाचें सदा प्रमत्त ॥
 मात तात गुरु मित्र किन कोऊ भाव जु होय । कृष्ण प्रेम को सहज यह करे दासता सोय ॥
 एक कृष्ण जू सेव्य हैं सब के ईश्वर आहि । सेवक अनुचर और ये सब जितने हों ताहि ॥
 सोई कृष्ण जु अवतरे ईश्वर श्री चैतन्य । तिनही के किंकर जु हैं याही तें सब अन्य ॥
 कोऊ माने नहिं कोऊ हैं सब तिनके दास । जो नहि माने होय तिहि तिंही पाप करि नास ॥
 प्रभु जू कौ हों दास हों हों प्रभु जू कौ दास । ते प्रभु जू के दास हैं हों जु दास कौ दास ॥
 ऐसे कहि नाचन लगे करि हुंकार जु सोय । तब बैठे आचार्य जू छिन इक सुस्थिर होय ॥७०॥
 श्री बलराम जु मूल है तिहि बलराम जु दास । अनुगत तिनके अंस गण सोई भाव प्रकास ॥
 तिनकौ इक अवतार है श्री संकर्षण जान । सदा सर्वदा भक्त करि करै जु ते अभिमान ॥
 तिनही कौ औतार जो श्रीयुत लक्ष्मण आहि । कियौ दास्य श्रीराम कौ सदा निरन्तर जाहि ॥
 कारणाब्धिशायी जु हैं संकर्षण अवतार । अनुगत तिनके हृदय में भक्ति भाव अति सार ॥
 तिनकौ भेद प्रकाश हैं श्री अद्वैताचार्य । मन वच क्रम करि भक्ति नित करै तास यह कार्य ॥
 हों अनुचर चैतन्य को यौं करि वचन प्रकास । मन में मनन करै सदा हों तिनकौ हों दास ॥
 जल तुलसी दै कार्य करि सेवन करै अपार । तारैं सबही भुवन जिन्हि करि कैं भक्ति प्रचार ॥
 पृथ्वी को धारण करै जो संकर्षण सेस । काय-व्यूह करि कृष्ण कौ सेवन करै असेस ॥
 एई सब श्रीकृष्ण के हैं जु प्रगट अवतार । तऊ निरन्तर देखिये सब के भक्त्याचार ॥
 इन सब ही कौं शास्त्र सब कहैं भक्त अवतार । है जु भक्त अवतार पद सर्वोपर रस सार ॥
 अंसी एकहि कृष्ण है औ सब अंस विचार । लखिये अंसी अंस में ज्येष्ठ कनिष्ठाचार ॥
 ज्येष्ठ भाव करि होत हैं अंसी मधि प्रभु ज्ञान । आपु विषे जु कनिष्ठ कें होय भक्ति अभिमान ॥
 तथाहि श्रीभागवते—

न तथा मे प्रियतम आत्मयोनि न शंकरः । न च संकर्षणो न श्री नैवात्मा च यथा भवान् ॥

दोहा—

नहीं जु सम हरि माधुरी आस्वादन हिय होय । भक्ति भाव करि करत है माधुरि-चर्वन सोय ॥
 यहै शास्त्र सिद्धांत है विज्ञान अनुभव आहि । मूढ़ लोक जानै नहीं भावै वैभव ताहि ॥

दास्यहि अंगीकार कीय बल लक्षण जु विसेश । नित्यानंद अद्वैत जू अरु संकर्षण संस ॥८६॥
 कृष्ण माधुरी रस अमृत तिहि नित करें जु पान । मत्त रहै सुख में तिहि जानें नहिं कछु आन ॥
 रही बात पुनि और की आपुन ही श्री कृष्ण । निज माधुरी जु पान हित आपुन ही जु सत्पुण ॥
 निज माधुरी जु स्वाद हित करें जतन बहु आहि । भक्ति भाव बिनु नाहि नै आस्वादन है ताहि ॥
 भावहि अंगीकार करि भौ अवतीरण जोय । सर्व भाव करि पूर्ण भौ गौर रूप करि सोय ॥
 नाना भक्ति जु भाव करि करै माधुरी पान । पहिले इहि सिद्धांत को करि आये विरूपान ॥
 अवतारिन कौ गुण जु तिहि भक्ति भाव अधिकार । भक्ति भावतें और कछु नहि सुख अधिक अपार ॥
 यातें जन अवतार हैं श्री संकर्षण आर्य । करिय भक्ति अवतार मधि गणना श्री आचार्य ॥
 आचारज अद्वैत कौ महिमा है जु अपार । जिनही के हूँकार करि लियौ जु प्रभु अवतार ॥
 कीरतन जु प्रचार करि जग तारन किय जोय । श्री अद्वैत प्रसाद करि लखौ प्रेम धन लोय ॥
 महिमा है जु अनंत जिहि सकै जु कहि तिहि कोय । सोई में जु लिखी जितौ सुनी महाजन लोय ॥
 श्री आचारज चरण मधि कोटि प्रणत मम आहि । यामें कछु अपराध नहिं भयो हमारें ताहि ॥
 महिमा है जु अपार तुव कोटि समुद्र अगाध । कहै इच्छा जो तिही यहै बड़ी अपराध ॥
 जय जय जय जय जय करौ श्री अद्वैताचार्य । जय जय श्री चैतन्य औ नित्यानंद जू आर्य ॥
 बिधि पद किय अद्वैत कौ तत्व निरूपण जोय । पंचतत्व विवरण कछु सुनौ भक्तगण सोय ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि वास । कहै कछुक प्रभु चरित कौ कृष्णदास तिहि दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखें ब्रजभापाहि प्रकाश ॥
 इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे ब्रजभाषायां श्री अद्वैततत्वनिरूपणं नाम पष्ठपरिच्छेदः ॥१०२॥

सप्तम परिच्छेदः

अगत्वेक गति नत्वा हीनार्थादिकसाधकं । ओ चैतन्यं लिख्यतेऽस्य प्रेमभक्ति वदान्यता ॥

जय जय प्रभु श्री कृष्ण जू जय जय जय चैतन्य । जे आश्रित तिहि चरण के तेई है अति धन्य
 प्रकटे श्री चैतन्य जू पंच तत्व लै संग । पंच तत्व लै संग में करै कीरतन रंग
 पंच तत्व इक वस्तु है यामें कछु नहिं भेद । तऊ जु रस आस्वाद हित होय जु विविध विभेद
 तथाहि—पंच तत्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकं । भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तिशक्तिकम् ॥
 गुर्वादिक षट् तत्व कौ पहिलें कियौ प्रणाम । कहि आये गुरु तत्व अब कहैं पंच के नाम
 कृष्ण आप भगवान जो ईश्वर एकहि आहि । नंदात्मज अद्वितीय सो नाम रसिकमनि ताहि

ब्रज ललना नागर जु हैं रास विलासी जोय । और जिते सब देखिये तिहि परिकर है सोय ॥
 सोई कृष्ण जु अवतरे आप कृष्ण-चैतन्य । बेई परिकर गन संग है सब ही अति धन्य ॥
 ईश्वर तन जो एक ही ईश महाप्रभु आहि । भक्ति भावमय है जु यह शुद्ध कलेवर ताहि ॥
 कृष्ण माधुरी कौ जु है अद्भुत एक स्वभाव । अपने ही आस्वाद हित कृष्ण करै जन भाव ॥
 भक्त भाव यातें धरें महाप्रभु रसकंद । तिन कैं भक्त स्वरूप हैं भाई नित्यानन्द ॥
 गोस्वामी आचार्य जू अहैं भक्त अवतार । प्रभु करि गाये सवनि मिलि एजु तीनि जन सार ॥
 महाप्रभु तौ एक हैं औ प्रभु-जन है दोय । प्रभु, जू के सेवें चरण प्रभु दोऊ है जोय ॥
 येई तीनि जु तत्व हैं सर्वाराध्य जु मान । चौथो तत्व जु भक्त जे तैं आराध्यक जान ॥
 श्रीनिवास जू आदि हैं कोटि भक्तगण ताहि । शुद्ध भक्त तत्व मधि करि तिनकी गणना आहि ॥
 श्री पंडित जू आदि हैं प्रभु के शक्ति अवतार । अन्तरंग तिहि भक्ति करि गणना करी विचार ॥
 जिनही सब कौ संग लै करैं प्रेम रस पान । तिन सब कौ संग लै करैं प्रेम महाधन दान ॥
 पंच तत्व एई जु मिलि आये भूमि विचार । पहिले प्रेम भंडार की मुद्रा दर्ई उधार ॥
 पांचौ मिलि लूटे करैं प्रेमास्वादन आहि । ज्यों जु पिये त्यों त्यों बढ़ै तृष्णा छिनछिन ताहि ॥
 फेरि फेरि पीवै जु तिहि पिये होय अतिमत्त । नाचैं गावैं हंसैं अरु रोवैं ज्यों उनमत्त ॥१६॥

कवित्त—

ऐसें मत्त भये जिन्हें स्थान औ अस्थान हू कौ पात्र ओ अपात्र हू कौ नाहिन विचार है ।
 उमगि चली है प्रेम नदी चारौ दिसा और फैलि गई पृथिवी में जाकी बड़ी धार है ।
 जाहि जहां पावै तही करैं प्रेमदान तहां खाय देय लूटि कियौ ऊजर भंडार है ।
 अचिरज यहै बड़ी प्रेम को भंडार ताहि ज्यों ज्यों ये लुटावै त्यों त्यों बाढ़त अपार है ॥१॥

नारी नर बाल बृद्ध सज्जन औ दुर्जन हू पंगु अंध गुणहीन जितौ जीव रास है ।
 प्रेम के प्रवाह नें बुढ़ाये सब जग जीव बूढ़ौ जग सबै भयो जीव बीज नास है ।
 देखि ताहि पांचन के हिये में हुलास भयो ज्यों ज्यों ये बढ़ावैं ताहि त्यों ही त्यों प्रकास है ।
 बह्यौ इतौ प्रेम जल तीनों लोक व्यापि गयो बिना भीजै कोऊ नहीं रखौ आगे तास है ॥२॥
 मायावादी कर्म निष्ठ औ कुतर्क में प्रविष्ट निन्दक पाखण्डी नीच पण्डित अपार है ।
 येई सब महादक्ष भाजै तासों भीत हू कैं तिन्है छूवैन सकी नदी नीचगामी धार है ।
 तिन्है देखि महाप्रभु सोचै येजु कीनैं मेंजु जग के बुढ़ायवे कौ जतन विचार है ।
 कोऊ कोऊ ऐंड़ि रहै भइ है प्रतिज्ञा भङ्ग तिन्है डूबिबे कौ करौ रंग उदगार है ॥३॥

दोहा—

ऐसे कहि मन में कछुक किय कौतुकी विचार । किय आश्रम संन्यास कौ प्रभु जु अङ्गीकार ॥
 गृहस्थ आश्रम में रहें वर्ष बीस अरु चार । पंच विंश ये वर्ष में किय यति धर्म विचार ॥
 करि संन्यास महाप्रभु किय आकर्षण सोय । जितने भाजि बचे हुते तार्किकादि गण सोय ॥
 पटुवा पाखण्डी जिते कर्मी निन्दक आहि । अवनत हैं ते आय सब चरण कमल मधि ताहि ॥
 क्षमा भयो अपराध तिहि बड़े प्रेम सुनीर । महा जाल प्रभु प्रेम के बचे कौन से धीर ॥
 सब ही के निस्तार हित प्रभुहि कृपा अवतार । तातें सब निस्तार हित करें जु बुद्ध्याचार ॥
 काजी म्लेच्छ जिते तिन्हें भक्त किये निज टेक । सब में काशी के बचे मायावादी एक ॥
 वृन्दावन कौ चलत प्रभु रहे जु कासी बीच । लागे निन्दा करन तिहि मायावादी नीच ॥
 संन्यासी हैं कैं करें नृत्य गान अति वाम । सुनें नहीं वेदान्त नित करें कीरतन नाम ॥
 मूरख संन्यासी जु निज धर्म न जानें ताहि । भावुक हैं ये भावुकनि संगहि मिल कैं आहि ॥
 यह सब सुनि चैतन्य हंसि मन ही मन के माहि । करी उपेक्षा सबनि सौं किय संभाषन नाहि ॥
 करी उपेक्षा गमन किय मथुरा कौ निरधार । देखि मधुपुरी तहां किय पुनि आगमन विचार ॥
 शूद्र चंद्रशेखर तहां लेखक रहै प्रमान । तिनही के घर रहैं प्रभु हैं स्वतन्त्र भगवान ॥
 भिचा निर्वाहन करें तपन मिश्र घर आय । मानें नहीं निमन्त्रणहि संन्यासिन संग जाय ॥
 प्रभु जू सौं तब तहाई मिले सनातन आय । तिहि शिक्षा हित प्रभु रहे तब द्वै मास बनाय ॥
 तिन्हें सिखायौ सब जितो जो भक्तनि कौ धर्म । शास्त्र भागवत कौ जितौ गूढ़ अर्थ कौ मर्म ॥
 तबै चंद्रशेखर तहां तपन मिश्र हू आय । कियौ निवेदन प्रभु चरन तिन्हें हिये दुख पाय ॥
 सुनें कहां लौं हम प्रभु निंदन करै जु जोय । अब सामर्थ न सहन कौ जीवन छाड़ैं सोय ॥
 सब संन्यासी गण जिते तुमकौ निंदै सोय । ताकौं हम नहिं सुनि सकैं श्रवन विदारन होय ॥
 सुनि प्रभु रहे जु मौन करि करि कै ईसत हास । इक द्विज मिलौ तिंही समै आय जु प्रभु के पास ॥
 आय निवेदन कियौ तिहि चरण सीस धरि सोय । एक वस्तु मार्गों प्रभु देहु प्रसन्न जु होय ॥
 सब संन्यासिन को कियौ मैं जु निमन्त्रण जोय । तुम जो आवां तहां मम मनसा पूरण होय ॥
 संन्यासिन की सभा तुम नहिं जावौ मम ज्ञान । तऊ निमन्त्रण मानि मम करौ अनुग्रह जान ॥
 कियौ महाप्रभु बिहंसिकें निमन्त्रणांगीकार । संन्यासिन पै कृपा करि तिहि भंगी जु अपार ॥
 काहू के गृह जाय नहिं प्रभु जानै द्विज जोय । प्रेरण तातें तिनहिं करै आग्रह सोय ॥
 गये महाप्रभु और दिन ताही भवन विचार । बैठे लखैं जु हैं तहां संन्यासी जु अपार ॥
 नमस्कार करि सबनि कौं गये धोयवे पाय । प्रक्षालन करि चरन प्रभु तिहिं ठां बैठे जाय ॥
 बैठि तहां प्रभु कियौ कछु निज ऐश्वर्य प्रकास । महातेज मय वपु सु जिहि कोटि सूर्य सम भास ॥

प्रभु प्रभाव ऐंचे सकल संन्यासिन मन आहि । उठि सनमान कियो सबनि निजु आसन तजि ताहि ॥
 नाम प्रकासानन्द तिहि संन्यासी जु प्रधान । बोल्यौ श्री गोस्वामि सौं कछु करिकें सनमान ॥
 आवौ ह्यां आवौ इहां सुनौं अहो श्रीपाद । बैठे अशुचि स्थल जु तुम कहाँ कहा अवसाद ॥
 तिनसौं महाप्रभु जु कहैं संप्रदाय हम हीन । सभा तुम्हारी में जु हम बैठि सकैं नहि दीन ॥
 आप प्रकासानन्द जू कर गहि तिन्हें जु लाय । बैठाये अति मान करि सभा मध्य सिर नाय ॥
 पूछें तिनसौं है जु तुम नाम कृष्णचैतन्य । तुम हो केशव भारती शिष्य जु तातें धन्य ॥
 सम्प्रदाय के तुम रहौ संन्यासी यह ग्राम । करौ न दरसन हम सबनि किहि कारण यह ठाम ॥
 संन्यासी हैं कैं करौ नृत्य गान किहि भाय । भावुक जन सँग लै करौ संकीर्तन अति चाय ॥

श्रवन कथन वेदांत कौ संन्यासिन कौ धर्म । ताहि छाड़ि क्यों करत हो भावुक के तुम कर्म ॥
 नारायण साक्षात् तुम लखिये बड़ौ प्रभाव । हीनाचार करौ जु क्यों कारन कौन सुभाव ॥
 कहैं जु प्रभु श्रीपाद सुनि ह्यां कारण है जोय । गुरु मोकौं मूरख जु लखि किय सासन जब सोय ॥
 मूरख तू वेदांत कौ नहिं तोकौं अधिकार । कृष्ण मन्त्र जपु तू सदा यहै मन्त्र है सार ॥

कृष्ण नाम ही तें सकल संसृत मोचन होय । कृष्ण नाम ही तें लहैं कृष्ण चरण रज भोय ॥
 नाम विना कलि काल में नहिं और कोउ धर्म । नाम मन्त्र सब सार है यहै शास्त्र कौ मर्म ॥
 श्लोक एक ऐसैं जु कहि दीनौ मोहि सिखाय । ताहि कंठ करि करत हौं तिहि विचार मन लाय ॥

तथाहि—हरेनाम हरेनाम हरेनामैव केवलं । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

यहै पाय अज्ञा सदा लेन लग्यो हौं ताहि । लेत लेत ही नाम मम आंति भयौ मन आहि ॥
 सकौं न हौं तब धीर धरि भयौ जु अति उनमत्त । हसौं पुकारौं नृत्य करि गावौं ज्यौं मदमत्त ॥
 तब हौं करिकें धैर्य अति मन में कियौ विचार । कृष्ण नाम ते ज्ञान मम ठकि लीनौ निरधार ॥
 धीरज नहिं मन में जु हौं भयो मत्त निरधार । कियो निवेदन गुरुचरन यौं मन में जु विचार ॥
 हौं गुरुमन्त्र दियौ कहा कोऊ बल है याहि । मोहि मन्त्र ने जपत ही कियो मत्त अति आहि ॥
 करवावै क्रंदन जु अति मोहि हँसाय नचाय । यह सुनिकें गुरुवर जु तब बोले मृदु मुसकाय ॥
 महा मन्त्र हरि नाम कौ कोऊ यह जु सुभाव । जोई जपै तिहि कृष्ण में उपजावै यह भाव ॥
 कृष्ण विषै जो प्रेम है सो पुरुषारथ सार । जिहि आगे तृण तुल्य है पुरुषारथ हैं चार ॥
 पञ्चम पुरुषारथ जु है प्रेमानंद रस सिंधु । मोक्षादिक आनन्द जो याकी नहिं एक बिंदु ॥
 कृष्ण नाम फल कृष्ण मधि-प्रेम कहैं श्रुति गाय । वही प्रेम तुव भाग्य करि उदै भयौ हिय आय ॥
 प्रेमा कौ जु स्वभाव यह करै चित्त तन दोष । कृष्णचरण की प्राप्ति में उपजावै अति लोभ ॥
 हँसै पुकारै गान करि हरिजन प्रेम सुभाय । लाज नहीं उनमत्त है नाचै इत उत घाय ॥७५॥

कवित्त—

स्वेद कंप सुरभंग अश्रु औ रोमांच संग ज्यों विवर्ण अंग अंग होय ये विकार हैं ॥
विषाद उन्माद धैर्य गर्व हर्ष दैन्य प्रेमा भायन नचावै इन भक्त ये अपार हैं ॥
कृष्णानंद सुखसिन्धु तामें तिन्हैं मग्न करैं चारों पुरुषार्थ हूं ताहि लागि छार हैं ॥
भली भई पायौ तुम सार पुरुषार्थ जौ यातें मैं कृतार्थ भयौ मुख्य ये विचार हैं ॥७६॥

दोहा—

नाचौ गावौ भक्त संग करौ कीरतन सार । कृष्ण नाम उपदेश करि करौ सबै निस्तार ॥
श्लोक एक ऐसैं जु कहि तिन्हैं सिखायो मोहि । यहै सार भागौत कौ कह्यौ जु फिरि फिरि मोहि ॥

तथाहि—एवं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्तउच्चैः ।

हसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकवाह्यः ॥

तिनके याही वचन मधि धरि कैं दृढ़ विश्वास । कृष्ण नाम संकीर्तन जु करौ निरन्तर तास ॥
कवहुँ नाम गवाव ही मोहि नचावै सोय । गाऊं नाचौं नाहि मैं निज इच्छा करि जोय ॥
कृष्ण नाम आनंद उदधि जों आस्वादन ताहि । वृद्धानन्द आगे जु तिहि खारोदक सम आहि ॥
तथाहि हरिभक्तिसुधोदये—तत् साक्षात् करणाल्हादविशुद्धाव्यवस्थितस्य मे ।

सुखानि गोष्पदायन्ते ब्राह्मण्यपि जगद्गुरो ॥

प्रभु कौ मधुर सुवाक्य सुनि संन्यासी गण आहि । मधुर वचन लागे कहन चित्त फिरि गये ताहि ॥
जो कह्यु कह्यौ तुम सबै सत्य वचन है सोय । कृष्ण प्रेम पावै वही भाग्य उदौ जिहि होय ॥
कृष्ण भक्ति जे तुम करौ यह सब कैं संतोष । सुनौ नहीं वेदांत तुम कह्यौ कहा तिहि दोष ॥
यह सुनि कैं हंसि महाप्रभु बोले वचन जु ताहि । जो नहि मानौ दुःख तुम करौ निवेदन आहि ॥
यह सुनि कैं बोले सकल संन्यासी गन जोय । तुमकौं हम जानै जु इमि नारायण निज सोय ॥
सीतल भये जु श्रवन ये सुनत तुम्हारे बैन । देखि तुम्हारी माधुरी सीतल भये हम नैन ॥
तुव प्रभाव सब के भये मन आनन्दित जोय । नहीं असंगत है कभू वचन तुम्हारो सोय ॥
कहैं महाप्रभु सूत्र तिहि ईश्वर वचन जु आहि । व्यास रूप हैं कैं कह्यौ श्री नारायण जाहि ॥
अम प्रमाद अरु वंचना करुणापाटव और । ईश्वर के नहि वचन में इन दोषन कौ ठौर ॥६०॥
उपनिषदनि के सहित ही सूत्र कहे जो तत्व । मुख्यावृत्ति जु कहैं वही अर्थ जु परम महत्व ॥
गौणवृत्ति करि भाष्य जों कह्यौ शंकराचार्य । ताकैं सुनें रु पढ़ें तें नास जाय सब कार्य ॥
ताहू कौ नहि दोष कह्यु ईश्वर आज्ञा पाय । गौण अर्थ करि मुख्य जो राख्यौ ताहि दुराय ॥
ब्रह्म शब्द कौ मुख्य जो अर्थ कहैं भगवान । पूरण चित् ऐश्वर्य जिहि ऊरध नहीं समान ॥
तिनकी देह विभूति जे चिदाकार सब आहि । चिद् विभूति आच्छादिकैं निराकार कहि ताहि ॥

चिदानंद मय देह तिहि स्थान और परिवार । तिनकौ प्राकृत सत्व कौ तेई कहैं विकार ॥
दोष न तिहि तेऊ जु है आज्ञाकारी दास । और कोई जो तिहि सुनें होय सर्व तिहि नास ॥
निंदा नहि अरु विष्णु की यातें ऊपर आहि । प्राकृत करिके मानियें विष्णु कलेवर ताहि ॥
जोई ईश्वर तत्व है ज्वलित ज्वलन सम होय । है स्वरूप इमि जीव कौ विस्फुलिंग कन जोय ॥
जीव तत्व हरिशक्ति है शक्तिमान प्रभु तत्व । गीता विष्णु पुरान ह्यां है जु प्रमान महत्व ॥
तथाहि गीतायां—

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मामिकां । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥

विष्णु पुराणे—

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा । अविद्या कर्म संज्ञान्या तृतीया शक्तिरिष्यते ॥

जीवतत्व ऐसो जु तिहि लिख्यौ जु तिहि परतत्व । आच्छादित क्रिय श्रेष्ठ जो ईश्वर कौ जु महत्व ॥
व्यास सूत्र के मध्य परिणाम वाद करि सोय । व्यास आंत कहि तहां तिहि वाद उठायो जोय ॥
प्रभु परिणाम जु वाद मधि होय विकारी आहि । विवर्त्तवाद थाप्यौ तहां ऐसैं कहिके ताहि ॥
परिणामहि जो वाद है वास्तव वहै प्रमान । आत्मबुद्धि जो देह में यहै विवर्त्त स्थान ॥
युत अविचिन्त्य जु शक्ति है श्रीभगवान जु नाम । इच्छा करि जगरूप सौं पावै है परिणाम ॥
तऊ अचिन्त्य जु शक्ति तहैं है अविकारी आहि । प्राकृति चिंतामणि तहां धर्यौ निदरसन ताहि ।
चिंतामणि सौं होत हैं रत्नरासि बहु जोय । चिंतामणि जु स्वरूप करि तऊ जु अविकृत सोय ॥
जो प्राकृतिहि वस्तु सो शक्ति अचिन्त्य जु आहि । प्रभु अचिन्त्य शक्ति जु तहां कौनौ विस्मय नाहि ॥
महावाक्य औ वेद को है सो प्रणव निदान । प्रभु स्वरूप ही प्रणव है विश्वधाम सब जान ॥
सर्वाश्रय प्रभु कौ जु सो करै प्रणव उद्देश । है जु तत्वमसि वाक्य जो सो जु वेद इक देश ॥
महावाक्यता प्रणव की आच्छादन करि जोय । महावाक्य करि तत्वमसि स्थापन कौनौ सोय ॥
सर्व वेद औ सूत्र के करै कृष्ण अभिधान । मुख्यावृत्ति हि छाड़ि किय लक्षण करि विख्यान ॥
सहजहि वेद प्रमान है और सिरोमनि ताहि । निज प्रमानता हानि भो किये लक्षणा आहि ॥
इहि सम सब सूत्रनि सहज अर्थ छाड़ि करि जोय । गौण अर्थ व्याख्या सबै करी कल्पना सोय ॥
याही मत प्रति सूत्र सब प्रभु जु दूषण दीय । चमत्कार सुनि कैं भयौ संन्यासिन को हीय ॥
तिनसौं संन्यासी सकल कहे सुनौ श्रीपाद । अर्थ कह्यौ जो मुख्य तुम है सो नहीं विवाद ॥
आचारज कल्पित अर्थ सब यह हमकौं ज्ञान । संप्रदाय अनुरोध तिहि तऊ करै सनमान ॥
मुख्य अर्थ व्याख्या करौ देखैं तुम बल जोय । मुख्य अर्थ करि सूत्र सब दिये लगाय जु सोय ॥
ब्रह्म कहिय वस्तु जु बृहत् कौ हैं श्री भगवान । षडैश्वर्य करि पूर्ण पर तत्व धाम तें जान ॥
है स्वरूप ऐश्वर्य तिहि नाही मायागंध । तेई श्री भगवान सब वेदनि कौ संबन्ध ॥१२०॥

निर्विशेष तिनकों कछौ नहि चिच्छक्तिहि मानि । मानौ अर्थस्वरूप नहि पूरणता की हानि ॥
 प्राप्त होत भगवान की जे करिये जु उपाय । श्रवणादिक औ भक्ति जो है प्रभु प्राप्ति सहाय ॥
 सब ही वेदनि कौ वही है अभिधेय सुनाम । नवधा साधन भक्ति तें होय प्रेम उदाम ॥
 कृष्ण चरन मधि जो कभू होय प्रेम अनुराग । अन्यत्रहि श्रीकृष्ण विनु रहै नही तिहि राग ॥
 पंचम पुरुषारथ वही प्रेम महाधन आहि । करै कृष्ण माधुर्यरस आस्वादन जन ताहि ॥
 प्रेमाहीते होय हरि निज भक्तनि वश आहि । प्रेमाहीतें पाइयै सेवा सुख रस ताहि ॥
 अभिधेय जु संबंध औ नाम प्रयोजन जान । इनही तीनों अर्थ मधि सूत्रनि पर्यवसान ॥
 सब सूत्रनि कौ इही विधि सुनि नीके व्याख्यान । बोले संन्यासी सकल विनै होय करि मान ॥
 तुम मूरति हौ वेदमय नारायण निज सोय । क्षमा करौ अपराध किय पहिलें निंदन जोय ॥
 तबही ते फिरि मन गयौ संन्यासिन कौ आहि । कृष्ण कृष्ण यह नाम जो सदा उचारै ताहि ॥
 इही मांति सबकौ प्रभु क्षमा कियो अपराध । कृष्ण नाम सबहीनकों कियो प्रसाद अगाध ॥
 तब सब संन्यासी महाप्रभु संग लै चाय । भिचा करि जु सवनि कें मध्य तिन्हें बैठाय ॥
 भिचा करिकें महाप्रभु आये घर तिहि काल । इमि लीला अद्भुत करै सुन्दर गौर दयाल ॥
 तब चन्द्रशेखर जु औ मिश्र तपन जु आहि । आनन्दित मन दुहुनि के सुनि अरु देखि सुताहि ॥
 आवैं संन्यासी सकल प्रभु के दरसन चाय । करै प्रशंसा सब पुरी प्रभु जू की करी भाय ॥
 आये पुरि वाराणसी महाप्रभु चैतन्य । पुरी सकल सब लोक भौ ताही तें अति धन्य ॥
 लख लख आवैं जु जन प्रभु के चरणनि चाय । द्वार प्रवेस न करि सकें होय भीर अधिकाय ॥
 विश्वेश्वर के दरस कौ जब श्री प्रभु जू जाँय । लाख लाख जे लोग हैं मिलै आय तिहि ठाय ॥
 स्नान करन कौ जाँय जब प्रभु जू गंगातीर । आवैं लोक तबै सकल होय तहां ई भीर ॥
 उर्द्धवाहु बोले प्रभु हरि हरि हरि कहू लोय । करै लोक हरि धुनि सर्व भरे स्वर्ग भुव जोय ॥
 निस्तारयौ सब लोक प्रभु मयी चलन कौ दीय । वृन्दावन कौ प्रभु तबै पटै सनातन दीय ॥
 कोलाहल बहु लोक कौ निमि दिन लखि प्रभु चाय । छाँड़ि तबै कासी चलै नीलाचल कौ घाय ॥
 यह मुलीला कहैगे आगे करि विस्तार । इहां कही संक्षेप करि पाय प्रसंग विचार ॥
 पंचतत्व इमि रूप है महाप्रभु चैतन्य । प्रेम नाम श्री कृष्ण कौ दियौ विश्व किय धन्य ॥
 मयुरा कौ पठये जु श्री रूप सनातन दोय । दोऊ सेनापतिनु किय भक्ति प्रचारण सोय ॥
 नित्यानंद गोस्वामि कौ पठयौ गौड जु देस । भक्ति प्रचार तिन्हें कियो तहां अशेष विशेष ॥
 आपुन दक्षिण देस कौ गमन कियो जु विचार । ग्राम ग्राम में कियो प्रभु नाम प्रचार अपार ॥
 सेतुबंध पर्यंत प्रभु कियो जु भक्ति प्रचार । कृष्ण प्रेम कौ दै तिन्हें किय सब कौ निस्तार ॥
 पंचतत्व कौ यह कछौ नीके करि विख्यान । होय जु याके सुनत ही गौरतत्व कौ ज्ञान ॥

प्रभु जु नित्यानंद औ श्री अद्वैत जु जोय । श्री बासादि गदाधर जु और भक्तगन सोय ॥
 चरन कमल तिनि सवनि के करि दण्डौत अपार । जैसे तैसे कछु कछौ श्री चैतन्य विहार ॥
 रूप सनातन जीव रघुनाथ चरण जिहि बास । गौर चरित कछु कहत हौ कृष्णदास तिहि दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखौ वृजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे पंचतत्व लक्षणं नाम सप्तम परिच्छेदः ॥१४॥

अष्टम परिच्छेदः

वन्दे चैतन्यदेवं तं भगवन्तं यदिच्छया । प्रसन्नमृत्युते चित्रं लेखरगे जटोत्पथम् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौरचंद रसकंद । जय जय परमानन्दमय जय श्री नित्यानंद ॥
 जय अद्वैताचार्य जू जय जय कृपा स्वरूप । जय श्री परिहृत गदाधर आश्रय महा अनूप ॥
 जय जय जय श्री बास जू आदि भक्त गन सार । प्रणत होय बंदौ सवनि चरन कमल मिरवार ॥
 इनि सब के सुमिरें करै मूक कवित्त सुधार । पंगु लैव गिरि अंध हैं उदगम लखै अपार ॥
 इन सब कौ मानें नहीं पंडित सब जे आहि । विद्या पढ़िवां मेक कौ कोलाहल है ताहि ॥
 इन सबकों मानें नहीं कृष्ण भक्ति करि जोय । कृष्ण कृपा तिनपै नहीं नहिं तिनकी गति होय ॥
 पहिले जैसे राजगन जरासिन्धु मुख जोय । वेद धर्मतें करै अरु विष्णुहि पूजै सोय ॥
 ये नहिं जानें कृष्ण कौ तातें दैत्य समान । मानें नहिं चैतन्य ये दैत्य तिन्हें त्यों जान ॥
 मोकों मानेंगे न सब लोक होय गौ नाम । ताही लिये कृपा जु करि लीनौ प्रभु संन्यास ॥
 नमस्कार मम करेंगे संन्यासी जु विचारि । तऊ दोष सब नासि है हैं है तिहि निस्तार ॥
 प्रभु जु ऐसैं कृपा मय जे न भजें जन ताहि । सर्वोत्तम हैं तऊ जु वे असुर गणन है जाहि ॥
 याही तें फिरि फिरि कही उर्द्धवाहु मैं होय । प्रभु नित्यानंदहि भजौ तजि कुतर्क है जोय ॥
 जो कबहुँ तार्किक कहें तर्क सोइ जु प्रमान । तर्क शास्त्र करि सिद्ध जो सेव्यधाम मो जान ॥
 गौर कृष्ण की दया कौ नीके करी विचार । कियें विचार हि लहीगे चमत्कार निरधार ॥
 बहुत जन्म लागि करै जो श्रवण कीर्तन जोय । तउ नहि पावै कृष्ण के चरण प्रेमधन सोय ॥
 तथाहि पाद्ये - ज्ञानतः सुलभा मुक्ति मुक्तिर्विज्ञादि पुण्यतः । सेव्यं साधन साहसै हरिभक्तिः सुदुर्लभा ॥
 भक्ति मुक्ति दै भक्त कौ कृष्ण तौ जु छुटिजाय । प्रेम जु कबहुँ दैय नहिं राखै ताहि दुराय ॥

तथाहि श्री भागवते—राजन्पति गुरु रत्नं भवतां यदूनां दैवं प्रियः कुलपतिः कच किंकरो वः ।
अस्वेवसंगभजतां भगवान्मुकुन्दो मुक्तिं ददाति कर्हिचित्स्म न भक्तियोगं ॥

कवित्त—

ऐसौ प्रेम श्री चैतन्य नित्यानंद जाहि ताहि जैसें तैसें दियौ कियौ नाहिने विचार है ।
जगाई माधाई लौ सु औरन की कहा बात ईश्वर स्वतंत्र दुरचौ प्रेम कौ भण्डार है ।
दीनों है लुटाय जाकौं ताकौं न विवेक कियौ देख्यौ अवहू लौं तिन महिमा अपार है ।
लेय जो चैतन्य नाम कृष्ण प्रेम कंप रोम विह्वल सो होय अति वहै अश्रुधार है ॥

दोहा—

श्रीनित्यानंद कहत ही हरि प्रेमोदय होय । सकल अंग अकुलाय दग वहै सुरधुनी सोय ॥
कृष्ण नाम अपराध कौ मन में करै विचार । अपराधी जे कहैं हरि होय न प्रेम विकार ॥

तथाहि श्री भागवते—तदश्मसारं हृदयं वतेदं यद्गृह्यमाणै हरिनामधेयैः ।

न विक्रियेताथ यदाविकारो नेत्रे जलं गात्ररुहेषु हर्षः ॥

एक कृष्ण नाम जु करें सब पापन कौ नाश । कारण हैं जो प्रेम कौ करें जु भक्ति प्रकाश ॥
उदय प्रेम कौ होय जब करै सु प्रेम विकार । स्वेद कंप पुलकादि अंग गद गद आँसुधार ॥
अनायास संसार क्षय हरिसेवन तें होय । कृष्ण नाम इक फल इतो धन पैयतु है सोय ॥
कृष्ण नाम ऐसौ जु तिहि कोऊ लै बहुवार । तऊ न प्रेमा जो उदय होय न आँसुधार ॥
जानिय तब ताकै जु अपराध प्रचुर है कोय । कृष्ण नाम जो बीज तिहि तहां न अंकुर होय ॥
श्री प्रभु नित्यानंद के ये सब नहीं विचार । नाम जो लेहीं देंहि तिहि प्रेम वहै दगधार ॥
प्रभु ईश्वर जु स्वतन्त्र है है अत्यन्त उदार । तिनहूँ को जो भजौ नहिं नाहिं कभूँनिस्तार ॥
सुनौ लोक सब मृदु हौ मंगल श्री चैतन्य । श्री प्रभु महिमा जानियौ याही तें अतिधन्य ॥
हरिलीला भागवत के वक्ता वेदव्यास । गौरचरित के व्यास हैं श्रीवृन्दावनदास ॥
श्री वृन्दावनदास किय प्रभु कौ मंगल जोय । जाके सुनें विनासई सबै अमंगल सोय ॥
श्री प्रभु नित्यानन्द की जानिय महिमा ताहि । कृष्ण भक्ति सिद्धांत की सीमा लहियै ताहि ॥

कवित्त—

भक्ति कौ सिद्धांतसार कब्यौ जितो भागवत । इहां सोई लिख्यौ तातें करिकें उद्धार हैं ।
श्री चैतन्य मंगल जो म्लेच्छ औ पाखंडी सुनें सोऊ महा भागवत होय तिही वार हैं ।
ऐसें ग्रन्थ रचना की नाहिन मनुष्य शक्ति तिन मुख ह्वै करिकें वक्ता निरधार हैं ।
वृन्दावनदास पाद कोटि नमस्कार जिन्हौं ऐसौ करि ग्रन्थ तार्यौ सब ही संसार हैं ।

दोहा—

नारायणी जु गौर की है उच्छिष्ट निवास । तिनके गर्भहि जम्म लिय श्री वृन्दावनदास ॥

चतन्य चरित वर्णन सु कब्यौ अद्भुत ताहि । शुद्ध कियौ जिहि श्रवण तें सब त्रिभुवन जो आहि ॥
भजौ जु याही तें सबै प्रभु औ नित्यानन्द । खण्डन ह्वै है दुःख सब लहि हौं प्रेमानन्द ॥
किय चैतन्य जु भागवत श्रीवृन्दावनदास । प्रभु लीला सब तहां तिहि वर्णन करै प्रकास ॥
प्रथमहि लीला सूत्र करि कीनौ ग्रन्थनि आहि । पीछें किय विस्तार करि नीकें विवरण ताहि ॥
गौरचन्द्र लीला उदधि है सु अनन्त अपार । करत करत वर्णन जु तिहि भयौ ग्रन्थ विस्तार ॥
मन में कछु संकोच भौ देहि ताहि विस्तार । कछु कछु लीला सूत्र करि धरी न किय विस्तार ॥
नित्यानंद लीलानि कें वर्णन में आवेश । भयौ जु लीला शेष प्रभु रघौ जु तिहि अवसेस ॥
सुनिये सो लीलानि कौ जो है विवरण ताहि । वनवासी वैष्णवन कौ उत्कण्ठित मन आहि ॥
वृन्दावन मधि कल्पतरु हेमसदन है जोय । महा जोगपीठ सु तहां रतन सिंहासन सोय ॥
आप व्रजेन्द्र कुमार जु तहां विराजै ऐन । गोविन्द जु श्री नाम जिहि मूरति वंत सुमैन ॥
होय राजसेवा जु तिहि तहां विचित्र प्रकार । अलंकार सब दिव्य तिहि वसन सौंज सब सार ॥
अनुछिन सेवक सहस्र जिहि सेवा करें बनाय । जिन की वदन सहस्र करि सेवा कही न जाय ॥
सेवा के अध्यक्ष हैं श्री पण्डित हरिदास । जिनि को जस गुन जगन सब होय रघौ जु प्रकास ॥
शान्त सहिष्णु सुशील अति औ वदान्य गंभीर । मधुर वचन चेष्टा मधुर दीनबंधु अति धीर ॥
कर्त्ता सब सनमानिकै करें जु सब हित आहि । मत्सर हिंसा कुठिलता चित्त न जानें नाहि ॥
साधारण जे कृष्ण के हैं सद्गुण पंचास । तिनहीं सब सद्गुणनि कौ तिहि शरीर मधि वास ॥

तथाहि श्री भागवते—यस्यास्ति भक्ति भगवत्यकिंचना सर्वैर्गुणैस्तत्र समासतेसुराः ।
हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणाः मनोरथेनासति धावतो वहिः ॥

पण्डित श्री गोस्वामि के शिष्य अनन्तचार्य । कृष्ण प्रेम मय तन सुजिहि अति उदार औ आर्य ॥
तिन कें हैं जु अनन्त गुन कैसें करौ प्रकाश । तिन हीं के ए शिष्य हैं पण्डित श्री हरिदास ॥
प्रभु श्री नित्यानन्द मधि जिन कें परम विश्वास । गौरचन्द्र मंगल विषै जिनि कें परम हुलास ॥
गुणग्राही वैष्णवनु के देखें नहिं कछु दोष । काय वाक्य मन करि करें वैष्णव कों संतोष ॥
गौर चन्द्र मंगल सरस सुनें निरन्तर सोय । तिन हीं कों जु प्रसाद करि सुनें वैष्णव जोय ॥
कथा सबै उज्ज्वल करें जैसें पूरणचंद । करै जु निज गुण अमृत करि भक्तनि कौ आनन्द ॥
कीनी तिन्हौं कृपा बड़ी आज्ञा मम दिय जोइ । लीला सेस जु गौर की कही लिखन कों सोइ ॥
काशीश्वर गोस्वामि के शिष्य जे गोविन्द सोय । प्रिय सेवक गोविन्द के तिनतें बड़ौ न कोय ॥
संगी जे श्री रूप के श्री यादवाचार्य । गौर चरित मधि ते जु अति रंगी बड़े सु आर्य ॥
पण्डित जू के शिष्य भूगर्भ गुसाई सोय । गौर कथा विनु जिहि वदन और बात नहिं कोय ॥
गोविन्द जू के शिष्य तिहि हैं चैतन्य जु दास । मुकुंदानन्द चक्रवै प्रेमी कृष्ण हि दास ॥
वृन्दावन में औ जिते वसें भक्त गन चाय । लीला शेषहि श्रवन कौ भौ सब के मन भाय ॥

मोकों आज्ञा करी सब करुणा करिकें जोय । तिन ही सब के कहे तें लिख्यौ निलज अतिहोय ॥
 भक्तन आज्ञा पाय के हिय विचार किय आहि । गयो मदन गोपाल के आज्ञा मांगन ताहि ॥
 दरसन करिकें कियौ मैं वंदन चरणन तास । करैं पुजारी जु सिवपद तवै गुसाईं दास ॥
 आज्ञा मांगी मैं जबै प्रभु चरननि के पास । आनि कंट माला दई मोहि गुसाईं दास ॥
 आज्ञा माला पाइके भौ आनंद मम हीय । तब ही तिन के ग्रन्थ कौ मैं आरम्भ जु कीय ॥
 मोहि लिखायौ ग्रन्थ यह मोहन मदन गुपाल । है मेरौ जो लिखन सो ज्यों शुक पढ़न रसाल ॥
 मोहि लिखायौ तिन्हैं जो लिख्यौ जो सोई सोय । जैसे प्रतिमा दारु की कुहक नचावै जोय ॥
 कुल अधिदैवत है जु मम मोहन मदन सु आहि । रूप सनातन और रघुनाथहि सेवक ताहि ॥
 श्रीवृन्दावनदास के चरन कमल करि ध्यान । तिहि आज्ञा लै लिख्यौ मैं जातें होय कल्याण ॥
 मूर्ख नीच अति क्षुद्र मैं विषै लालसा हीय । भक्तनि आज्ञा बलहि करि इतनौ साहस कीय ॥
 रूप और रघुनाथ के चरन कमल बल जोय । जिनिकें सुमिरैं सिद्धि सब होय बांछित फल सोय ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । प्रभु चरितामृत कहै सो कृष्णदास तिहि दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखैं ब्रज भाषाहिप्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे आज्ञानिरूपणं नाम अष्टमपरिच्छेदः ॥७१॥

नवम परिच्छेदः

तं श्रीमत्कृष्णचैतन्यदेवं वन्दे जगद्गुरुं । यस्यशानुकम्पया द्वापि महात्त्रिं संतरेत्सुखं ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौरचन्द्र सुखकंद । जय जय अद्वैत जू जय जय नित्यानंद ॥
 श्रीनिवास आदि जय जय प्रभु जन गण सुख रास । जिन सुमिरन जु अभीष्ट सब देय करें दुखनाश ॥

श्लोक—मालाकारः स्वयं कृष्णः प्रेमासरतरुः स्वयं । दाता भोक्ता तत्फलानां यस्तं चैतन्यमाश्रये ॥

प्रभु जो कही भर्यौ जु हम विश्वम्भर यह नाम । नाम सु सार्थक होय तब भर्यौ विश्वसुखधाम ॥
 यो विचारि के लियौ प्रभु मालाकार जु धर्म । नवद्वीप आरम्भ किय फल उद्यान जु कर्म ॥
 माली श्री चैतन्य जू लाय भूमि मधि जोय । रोप्यौसुखतरु भक्ति कौ इच्छा सींचौ सोय ॥
 जय जय श्री माधवपुरी कृष्ण प्रेम के पूर । भक्ति कल्पतरु के जु हैं तिहीं प्रथम अंकुर ॥
 अंकुर सो अति पुष्ट भो ईश्वर पुरी स्वरूप । स्कंध प्रगट भौ आपु प्रभु माली परम अनूप ॥
 स्कंध भये निज शक्ति करि आपुन माली जोय । स्कंध सकल साखा जु कौ मूल आश्रय सोय ॥
 परमानन्द पुरी जु श्री केशव भारति सोय । श्री ब्रह्मानन्द भारती ब्रह्मानन्दपुरी सोय ॥

विष्णुपुरी केशवपुरी पुरी जु कृष्णानंद । श्री नृसिंह तीरथ पुरी सुखानंद सुखकन्द ॥
 एई नव मूल जु सुदृढ़ निकसीं तरे जु ताहि । इनहीं आठन मूल तरु निश्चल कियौ जु आहि ॥
 धीर सु परमानंदपुरी मध्य मूल हैं ताहि । इनही नव मूलन जु तरु सुस्थिर कियौ जु आहि ॥
 स्कंधनि ऊपर बहुत ही शाखा निकसीं जोय । उपरि उपरि साखा जु तिहि अगनित भक्ती सोय ॥
 बीस बीस शाखानि किय इक इक मंडल खंड । महा महा शाखानि सब छायां सब ब्रह्माण्ड ॥
 एक एक साखानिते उपशाखा शत आहि । उपजी जित्ती सुकहाँ लौं गणना करौं सुताहि ॥
 साखा ऊपर वृक्ष के स्कंध भयो है दोय । एक नाम अद्वैत जू अरु नित्यानंद सोय ॥
 मुख्य मुख्य साखा जु गण नाम गणन जो आहि । आगे करि हैं सुनौ अब वर्णन वृक्ष सु ताहि ॥
 शाखागण उपज्यौ जु तिहि दुहुं स्कंधते आहि । छाया गयो सब ही जगत उपसाखा गण ताहि ॥
 बड़ शाखा साखा जु उप उपसाखा है आहि । व्यापि गयो सब जगत सो कहा लिखौ कहि ताहि ॥
 शिष्यनि जिते प्रसिध्य तिहि औ उपसिध्य समूह । छाया गयो सब जगत जिहि गणना है जु दुख ॥
 जैसे वृक्ष उडुंवर जु सब अंग फलै जु आहि । सबठां इहि विधि भक्ति तरु फल लागत है ताहि ॥
 स्कंध मूल शाखा जु के उपसाखा के वृन्द । लागै तिन जे प्रेम फल अमृत तुल्य रसकंद ॥
 पाके जे बहु प्रेम फल मधुर अमृत ते आहि । बांढि दिये माली जु प्रभु मोल न लीनौ ताहि ॥
 उत्तम धन अरु रतन मनि जिते त्रिलोकी आहि । एक एक फल मोल करि गणना नाहिन ताहि ॥
 मांगें के मांगें नही कौउ पात्र अपात्र । याकौ नहीं विचार जिहि जानें देवौ मात्र ॥२५॥
 भरि भरि अंजुली फलनि कौ फेंकें दिसानि चारि । लै लै खांय जु रंक त्यों माली हंसै उदार ॥
 वृक्ष अलौकिक यह करै सब इन्द्रिय कौ कर्म । स्थावर हैं के धरत है यह जंगम कौ धर्म ॥
 अंग जिते या वृक्ष के सब सचेतन सोय । बड़ के व्याप्यौ सर्व तब सकल भुवन है जोय ॥
 मालाकार जु एक लौ कहाँ कहाँ लौं खाव । कितेक फलनि उठाइके हौं एक लौ लुटाव ॥
 अरु एक लें उठाय के देत परिश्रम होय । कोऊ पावै नहि कोउ रहै यहै भ्रम सोय ॥
 याही तें मैं सवनि कौं आज्ञा दीनी आहि । जहां तहां ए प्रेम फल देहु जाहि अरु ताहि ॥
 माली जौं हौं एकलौ केतिक ये फल खाव । कहाँ करौं जो देहु नहि धरिवे कौं नहि ठाव ॥
 अपनी इच्छा अमृत करि सींच निरन्तर ताहि । ताही तें अक्षय जु फल उपर तरु के आहि ॥
 याही तें सब फलनि कौं देहु जाहि अरु ताहि । अजर अमर यह लोक सब होय खायके जाहि ॥
 पुण्य ख्याति हैं है जु सब जगत भरैगो सोय । सुखी होय सब लोक मम कीर्ति गाय है जोय ॥
 भारत भुवि में भयो जिहि जन्म मनुष्य सुसार । यहै सुफलता ताहि तिहि करै जु पर उपकार ॥
 तथाहि श्री भागवते—

एतावज्जन्म साफल्यं देहिनामिह देहिषु । प्राणैरर्थैर्धिया वाचा श्रेय आचरणं सदा ॥

माली मानुष हों जु मम राज्य भूमि धन जोय । दै फल फूलन करत हों पुण्य उपार्जन सोय ॥
माली है के वृक्ष भौ यह इच्छा करि सोय । तरु ही तें उपकार जौ सब प्राणिन कौ होय ॥
तथाहि श्री भागवते—

अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम् । सुजन्मस्येव येषां वै विमुखाः यान्ति नार्थिनः ॥

यहै आज्ञा करि जवै प्रभु जु मालाकार । पायो आनंद परम तब सकल वृक्ष परिवार ॥
जहां तहां तेई करै दान प्रेम फल सोय । प्रेम फलनि कौ स्वादु सुख व्याप्यो सब ठां जोय ॥
महामादक सु प्रेमफल उदर जु भरि भरि खाय । मतवारे भौ लोक सब नाचै हसै जु गाय ॥
कोऊ लोटै जाय गड़ि कोउ करै हुंकार । भये जु हर्षित देखिके हंसै जु मालाकार ॥४२॥
यहै प्रेम फल खाय के ई मालाकार । निरवधि मातो रहत है विहवल विवस अपार ॥
सब लोकनि कौ मत्त किय आपुन ही जु समान । प्रेम मत्त सब जन रहै देखत नहि कछु आन ॥
जिन्हौ प्रथम निन्दा करी मतवारो कहि जाहि । तेऊ नाचै खाय फल साधु साधु कहि ताहि ॥
भक्ति वृक्ष कौ प्रेम फल वितरण कहाँ जु ताहि । फलदाता कौ सुनहु अब जे साखा गण आहि ॥
रूप और रघुनाथ के चरननि की करि आस । प्रभु चरित्र कछु कहत हैं कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखै ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे भक्तिकल्पवृक्षावर्णनो नाम नवमपरिच्छेदः ॥४८॥

दशम परिच्छेदः

चैतन्यचरणाम्भोजमधुपेभ्यो नमो नमः । कथञ्चिदाश्रयाद्येषां श्वापि तद्गन्धभागभवेत् ॥
जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैताचार्य जू जय प्रभु भक्तनिवृन्द ॥
यह माली यह वृक्ष की कथा अकथ्य है सोय । सुनौ जु अब सब मुख्य करि साखाविवरणजोय ॥
प्रभु जू के जे पारिषद गण समूह है जोय । गुरु लघु भाव जु तिनहि मधि है निश्चै नहिं सोय ॥
जिन जिन कीनों महत जन गणना तिहि सब आहि । गुरु लघुक्रम जो तिनहिकौ सकै न करिके ताहि ॥
याही तें तिन सबन कौ नमस्कार करि तोष । नाम मात्र ही लेत हों लीजै नहिं मम दोष ॥

तथाहि—वन्दे श्रीकृष्णचैतन्यप्रेमामरतरोः प्रियान् । शाखारूपान्भक्तगणान्कृष्णप्रेमफलप्रदान् ॥

श्री निवास पण्डित सरस अरु पण्डित श्री राम । विवि भाई साखा जु है जगत विदितगुणधाम ॥
श्रीपति श्री निधि तिनहि के है जु सहोदर दोय । गृह परिकर दासादि सब चारण कौ है सोय ॥
तिन दोऊ शाखानि की उपशाखा सब जोय । संकीर्तन तिनके जु गृह प्रभु के सदा जु होय ॥

चारों भाई वंशयुत करें जु प्रभु कौ सेव । गौरचन्द्र विनु और नहिं जिनि के देवी देव ॥
श्री आचारज रत्न जू इक वड साखा आहि । तिन कौ परिकर शिष्य जे उपसाखा है ताहि ॥
श्री आचारज रत्न कौ ससिशेखर है नाम । नाचै देवी भाव करि प्रभु जू तिन के धाम ॥
पुण्डरीक विद्या जु निधि तिहि वड साखा जानि । प्रभु जू तिन कौ नाम लै क्रन्दन कियो प्रमानि ॥
तिन की बड़ि साखा गदाधर पण्डित जू सोय । ते हैं लक्ष्मी रूप निज तिन सम और न कोय ॥
तिन जु शिष्य उपशिष्य सब उपसाखा हैं ताहि । इही भांति शाखानि उप साखा लिखन जु आहि ॥
वक्रेश्वर पण्डित जु हैं प्रभु के बड़ प्रिय भृत्य । एक भाव करि चारि औ बीस पहर जिहि नृत्य ॥
नृत्य समें जिहि महाप्रभु आपुन गावै आहि । प्रभु जू के पद धरि कहै यों वक्रेश्वर ताहि ॥
दश सहस्र गंधर्व मम देहु चन्द्रमुख जोय । ते गावौ नाचौ जु हों तब मेरें सुख होय ॥
कहै जु प्रभु तुम पक्षमम साखा इक सुख राशि । पाऊं पांख जु और जो तौ उड़ि जाउं अकाश ॥
पण्डित जगदानन्द जू प्रभु के प्रान स्वरूप । तिन कौ लोक कहै जु सब सतिभामा कौ रूप ॥
प्रभु कौ चाहौ कियो जे लालन पालन आहि । प्रभु वैराग्य जु लोक भय कबहुं न मानें ताहि ॥
परै खटपटी दुहुनि में भगरौ होय सु आहि । तिन की प्रीति कथा जु सब आगे कहि हैं ताहि ॥
राघव पण्डित गौर के अनुचर मुख्य हैं जोय । तिहि उपसाखा एक है मकरध्वज कहि सोय ॥
दमयंती भगिनी सुतिहि प्रभुदासी हैं आहि । करै सौंज सब भोग की द्वादश मासहि ताहि ॥
सो सब सामग्री जितौ भरि पिटारि के माहि । राघव भाली कहै सब यह प्रसिद्ध है ताहि ॥
तिनि सब सामग्रीनि कौ करिहैं अग्र विचार । जिनि के सुनें जु भक्ति करि वहै अश्रुकी धार ॥
प्रभुजू के अत्यन्त प्रिय पंडित गदाधरदास । जिनि के सुमिरे होत है सब बन्धन कौ नाश ॥
श्री आचार्य पुरन्दर प्रभु के पार्षद सोय । बोलें जिन कौ पिता करि गौर महाप्रभु जोय ॥
दामोदर पण्डित जु तिहि शाखा प्रेम प्रचण्ड । प्रभु जूह कौ जिन्हें कियो वाक्यरूप करिदंड ॥
दण्ड कथा आगे जु तिहि कहि हैं करि विस्तार । नवद्वीप प्रभु तुष्ट हैं पठ्यो तिन्हें विचार ॥
साखा तिन के अनुज हैं संकर पण्डित आहि । प्रभु पद के उपधान करि नाम विदितहै ताहि ॥
अरु पण्डित श्री सदाशिव जिहि प्रभुपद की आस । पहिलें नित्यानंद कौ जिनके घर में वास ॥
सेवक श्री नरसिंह के बहु प्रद्युम्न जु आहि । नाम नृसिंहानन्द करि प्रभु जू धर्यो जाहि ॥
नारायण पण्डित जु प्रभु साखा एक उदार । जिन के प्रभु के चरण विनु और न कछु विचार ॥
अरु पण्डित श्रीमान जू साखा प्रभु निज भृत्य । दीवट धरें जु हाथ जब प्रभु जू करै सुनृत्य ॥
शुक्लाम्बर वड हैं जु ते भागवान वड आहि । अन्न मांगि अरु कादिकें प्रभु जू खायौ ताहि ॥
जगत विदित शाखा जु तिहि श्रीनंदन आचार्य । जिनके गृह में रहे दुरि विवि प्रभु सब के आर्य ॥
मुकुंददत्त साखा प्रभु अरु स्वाध्यायी ताहि । नृत्य करहि जिहि गान महि गौर महाप्रभु आहि ॥
वासुदेव दत्त जु महा आसय प्रभु के दास । सहस्र बदन करि गुणनि कौ कथन होहि नहि तास ॥

जिते जीव सब जगत के लै तिन पापनि जोय । चाहैं भोग्यों नरक कौं जीव छुटावौ सोय ॥
 साखा श्री हरिदास जू अद्भुत चरित जु सोय । तीन लक्ष हरि नाम ते निरपराध लै सोय ॥
 तिन के गुन जु अनन्त दिगदरसन करौंजु ताहि । श्राद्धपात्र आचार्य जू भुगतायौ जिन आहि ॥
 हैं जु सद्यः प्रह्लाद की जिहि गुन के जु तरंग । जवननि ताडन किय तऊ भयौ नहीं भ्रमंग ॥
 पाइ सिद्धि जिन्हों तबै देहि अंक लै ताहि । नृत्य कियौ चैतन्य प्रभु महाकुतूहल आहि ॥
 और जु कुलीन ग्राम जन तिहि उपसाखा जोय । सत्यराज हूँ आदि तिहि कृपा पात्र है सोय ॥
 तिहि लीला नीकें कही श्री वृन्दावनदास । जो अवसेस रही जु तिहि करि हैं फेरि प्रकास ॥
 प्रभु के गुप्त मुरारि हैं गुप्त प्रेम भण्डार । प्रभु कौ हृदय द्रव्य सुनें जिनि कौ दैन्य अपार ॥
 करैं नहीं जु प्रतिग्रह परधन लेय न सोय । करैं कुडम्ब कौं भरन हूँ आत्मवृत्ति करि जोय ॥
 करैं चिकित्सा रोग की सद्यः हृदय है जाहि । देह रोग भव रोग जिहि नाश होय विवि ताहि ॥
 मानसेन श्री है महाप्रभु के भक्त प्रधान । श्री चैतन्यजु चरन विनु जानें नहिं कछु आन ॥
 साखा सर्वोपरि जु है नाम गदाधरदास । काजी गन के मुखहि हरि नाम कहायौ जास ॥
 श्री सिवानन्द सेन प्रभु भृत्य अन्तरंग जोय । चलै जबै जु समीप प्रभु सबै संग लै सोय ॥
 सिवानन्द प्रतिवर्ष हीं प्रभुगन लें सब संग । श्रीनीलाचल चलन मग पालन करैं अभंग ॥
 इक समान देखें सकल जन साक्षात् जु सोय । नकुल ब्रह्मचारी वपुहि प्रभु आवेश जु होय ॥
 ब्रह्मचारि प्रद्युम्न के आगे आविर्भाव । इमि जु अलौकिक कर्म प्रभु है जु अनेक स्वभाव ॥
 ये सब रस आस्वाद किय सिवानन्द रसकंद । कहियै ये विस्तार करि आगे सब आनन्द ॥
 सिवानन्द जू की सु उपसाखा परिकर ताहि । पुत्र भृत्य सब आदि ये प्रभु के अनुचर आहि ॥
 इक चैतन्य जु दास है रामदास पुनि जोय । कर्णपूर ये तीन सुत सिवानन्द के सोय ॥
 एक जु वल्लभसेन है औ जु सेन श्रीकांत । सिवानन्द सम्बन्ध करि प्रभु के भक्त एकांत ॥
 गोविन्दानन्द प्रभु प्रिय महाभागवत जोय । गोविन्ददत्त सु आदि द्वै प्रभु कीर्तनिया सोय ॥
 विजयदास जिहि नाम है प्रभु के लेखक जोय । पोथी दई अनेक हूँ प्रभु कौं लिखि लिखि सोय ॥
 रत्नबाहु करि महाप्रभु नाम धर्यौ है ताहि । कृष्णदास प्रभु प्रिय बड़े है जु अकिंचन आहि ॥
 दोना बेचा जु श्रीधर प्रभु जू के प्रियदास । जिन के संग महाप्रभु करैं नित्य परिहास ॥
 पण्डित श्री भगवान है प्रभु के अति प्रिय दास । पहिलै कृष्ण जु देह में भये अधिष्ठित जास ॥
 पण्डित श्री जगदीश औ महाशय जो हिरन्य । कृपा करी जिहि वाल्य ही दयारूप प्रभुधन्य ॥
 जिन हीं दोनों गेह प्रभु दिन एकादश आहि । आपुन खायौ मागि कें विष्णु निवेदन जाहि ॥
 पुरुषोत्तम संजय जु औ प्रभु पडुवां है जोय । मुख्य शिष्य व्याकरण के दोय महाशय सोय ॥
 वनमाली पण्डित जगत मधि विख्यात है जोय । सुवरन मूसल हल जु तिहि देखै प्रभु कर सोय ॥
 प्रिय है श्री चैतन्य के बुद्धिमंत श्रीखान । आज्ञाकारी जन्म ते प्रभु सेवक जु प्रधान ॥

लेहि नाम मंगल सदा पण्डित गरुड़ जु आहि । नाम अमृत केवल जु करि विहवल कियौ न जाहि ॥
 गोपीनाथ जु सिंह इक प्रभु जू के है दास । प्रभु जू तिन्हें अक्रूर करि करैं सदा परिहास ॥

कवित्त—

देवानन्दी भागवती बक्रेश्वर कृपाते जु भागवत भक्ति अर्थ प्रभु जू सों पायो है ।
 खण्डवासी श्री मुकुन्ददास रघुनंदन जु नरहरीदास महाप्रभु मन भायो है ।
 सुलोचन चिरंजीव येइ सब महा साखा महाप्रभु कृपाधाम रस सरसायो है ।
 प्रेम फल फलै सब करैं जहां तहां दान बड़ेई दयाल जस पात पात छायो है ॥

वासी ग्राम कुलीन सत राज औ रामानन्द । पुरुषोत्तम जदुनाथ औ संकर विद्यानन्द ॥

कवित्त—

वाणीनाथ वसु आदि जिते हैं कुलीनवासी महाप्रभु भृत्य सबै प्रभु धन प्रान है ।
 कहैं प्रभु जो कुलीन ग्राम कौ जु कूकर है सोऊ प्रिय मेरी दूरि रहौ जन आन है ।
 कुलीन ग्रामी जन कौ नहीं कहाय जाय भाग्य सूकर चरावै सोऊ करै प्रभु गान है ।
 रूप श्री सनातन औ अनुपम येई तीन वृक्ष साख पश्चिम कौं सबतें प्रधान है ।

रूप सनातन जगत गुरु रस आचारज जोय । तिनहूँ तीनों मध्य ये बड़ साखा है दोय ॥
 श्रीअनुपम जू अनुज तिहि सुत श्रीजीव जु आहि । श्रीराजेन्द्र जु प्रभृति ये उपशाखागन ताहि ॥
 माली इच्छा करि जु ये दोऊ साखा आहि । बहु बड़ि कै पश्चिम दिशा छाय लई सब जाहि ॥
 लैकें सिंधु नदि तीर तें और हिमालय जोय । वृन्दावन मथुरा जु सब जिते देस है सोय ॥
 विवि शाखा के प्रेम फल मग्न किये सब लोय । प्रेम फलनि के स्वाद जन भौ उनमत्त जु सोय ॥
 पश्चिम के सब लोक हैं अनाचार अतिमूढ़ । तिन हित भक्ति प्रचार किय सदाचार तिहि गूढ़ ॥
 शास्त्र दृष्टि करि तिन्ह किय लुप्त तीर्थ उद्धार । प्रगट कियौ श्री मूर्ति कौं पूजा कौ जु प्रचार ॥
 प्रभु जू के प्रिय भृत्य हैं श्री रघुनाथ जु दास । सबहि त्याग कियौ जिन्हों प्रभु चरन तल वास ॥
 श्री प्रभु जु सोंप्यौ तिन्है श्री स्वरूप के हाथ । प्रभु कौ सेवन गुप्त किय श्री स्वरूप के साथ ॥
 अन्तरंग सेवन कियौ सोरह वर्ष बनाय । श्री स्वरूप अग्रगट भे तब वृन्दावन आय ॥
 रूप सनातन दुहुँन के चरन तहां लखि जोय । गोवर्द्धन तें तनु तजौं करि भृगु पतन जु सोय ॥
 आये यह निर्द्वार करि वृन्दावन अकुलाय । रूप सनातन के किये तहां जु दरसन आय ॥
 तब दोऊ भाई जु तिनि मरन न दीनो आहि । करिकें भाइ निज तृतीय राखे निकट जु ताहि ॥
 प्रभु जू की लीला जिती बाहिर अंतर आहि । दोऊ जन तिनके जु मुख सुनें निरन्तर ताहि ॥
 त्याग कियौ जल अन्न कौ अन्य कथन हूँ आहि । पल द्वै तीन मठा जु लै भक्षण करै जु ताहि ॥
 करैं दण्डवत सहस्र नित लेहि तीन लख नाम । द्वै सहस्र वैष्णवन कौं करैं जु नित्य प्रनाम ॥

निस दिन राधा कृष्ण कौ मानस सेवन आहि । श्री प्रभु जू कौ चरित जो कहैं जाम इक ताहि ॥
अपतित तीनौ समय मधि करें कुण्ड अस्नान । ब्रजवासी जन कौं करें आलिंगन सनमान ॥
सार्द्ध सप्त पहेर करें साधन भक्ति जु आहि । चारि दंड निद्रा करें सोउ काहु दिन नाहि ॥
सुनें होत आश्चर्य अति साधन रीति जु ताहि । सो जु रूप रघुनाथ जू मेरे प्रभु हैं आहि ॥
इन सब कौ जैसें भयो प्रभु सौं मिलन सु आहि । कहि हैं बहु विस्तार करि आगें कथा सु ताहि ॥

कवित्त—

संकर है न्यायाचार्य एक शाखा वृत्त की ये काशीनाथ औ मुकुंद उपसाखा जानियें ।
पण्डित श्रीनाथ जू प्रभु के कृपा भाजन हैं कृष्ण सेवा देखि जिहि जगवस आनियें ।
आचारज जगन्नाथ प्रभु जू के प्रियदास आज्ञा पाय जिन्हों गंगातट वास ठानियें ।
कृष्णदास वैद्य और पण्डित शेखर जू है कविचंद्र षष्ठीवर कीर्तनीया मानियें ॥

दोहा—

नाथ मिश्र श्री शुभानंद अरु श्रीराम इसान । श्रीनिधि गोपीकांत जू मिश्र और भगवान ॥
कमल नैन सुबुद्धि जू मिश्र जु हृदयानंद । पण्डित महेस श्रीकर जु मधुसूदन रसकंद ॥

कवित्त—

भक्त पुरुषोत्तम श्री गालिम श्री जगन्नाथदास चंद्रसेखर औ द्विज हरिदास हैं ।
रामदास कविचंद्र और भागवताचार्य ठाकुर सारंगदास भरै प्रेम रास हैं ।
श्री गुपालदास जगन्नाथ तीर्थ विप्र और जानकी जु नाथ प्रभु भक्ति के उजास हैं ।
श्री गोपाल आचारज और विप्र वानीनाथ नाथ है अनाथनि के साखा ये प्रकास हैं ॥

वासुदेव गोविंद औ माधव भाई तीन । नाचैं जिनके गान प्रभु नित्यानंद रसलीन ॥
मुख्य प्रेम की रासि है राम दास अभिराम । काठ जु सोरह सांगि कौ वंसी किय तिहिवास ॥
चले गौड़ नित्यानंद जु प्रभु आज्ञा करि रंग । आये प्रभु आज्ञा जु करि ए तीनौ तिन संग ॥
रामदास माधव जु औ वासुदेव ये घोष । गोविंद घोष रहै जु प्रभु संग पाय संतोष ॥
चिरञ्जीव रघुनन्दन जु श्री भागवताचार्य । जदुनंदन कमलाकांत रु श्री माधव आचार्य ॥
माधवाई जगाई औ कृपा पात्र अति सोय । पावन पतित जु गुन प्रभु ताके साक्षी दोय ॥१००॥
कथन जु किय संक्षेप करि नवद्वीप गन जोय । जन अनन्त चैतन्य के तिन गणना नहि होय ॥
येई सब नीलाचलहि भक्त जु प्रभु के संग । दोऊ ठां सेवा करें प्रभु की नाना रंग ॥
केवल नीलाचल विषे प्रभु जन गन हैं जोय । तिन सब कौ संक्षेप करि करें कथन कलु सोय ॥
नीलाचल मधि संग प्रभु जिते भक्तगन आहि । तिन सब में अध्यक्ष ये विवि जन मर्महि जाहि ॥
परमानन्द पुरी जु औ दामोदर जु स्वरूप । प्रभु रहस्य अत्यंत ये विवि जन हैं रसरूप ॥

कवित्त—

गदाधर जगदानंद संकर वक्रेश्वर पण्डित दामोदर ठाकुर हरिदास हैं ।
वैद्य रघुनाथ और दास रघुनाथ आदि संगी पूर्व बड़े भक्त गन रस रास हैं ।
करैं एहि नीलाचल प्रभु जू कौ सेवन ये और जिते गौड़ वासी भक्त गन तास हैं ।
वर्ष प्रति प्रभु जू कौ नीलाचल मिलैं आय करें तहां सेवा प्रभु रहै चारि मास हैं ॥

नीलाचल मधि प्रभुजु कौ प्रथम मिलन भौ जानि । तिनही भक्तनि कौ जुअव गणना करिये आनि ॥
सार्वभौम साखा जु बड भट्टाचारज आहि । गोपीनाथाचार्य जू भगनीपति हैं ताहि ॥
कासीमिश्र प्रद्युम्न जु और भवानंदराय । जिनकें मिलैं महाप्रभु पायो सुख अधिकाय ॥
आलिंगन करि महाप्रभु कब्यौ वचन यह ताहि । पाण्डव तुव पांचौ तनय तुमहो पांडव आहि ॥
रायजु रामानंद पडु नायक गोपीनाथ । कलानिधिजु सुधानिधि औ नायक वाणीनाथ ॥
एई पांचौ पुत्र तुव प्रेमपात्र मम सोय । देह मात्र मम भेद है रामानंद संग जोय ॥
नृप प्रतापरुद्र जू औ रुद्र जु कृष्णानन्द । महापात्र परमानंद जु उडू सिवानंद चंद ॥
आचारज भगवान औ भारती ब्रह्मानंद । सिखी माहिती माहिती औ मुरारि रसकंद ॥
सिखी माहिती की भगिनी माधवि देवी आहि । राधादासी मध्य है नाम सुगणना जाहि ॥
शिष्य जु ईश्वर पुरी के काशीश्वर बड आहि । श्री गोविन्द जु नाम इक प्रिय अनुचरहै ताहि ॥
सिद्धि प्राप्ति के समै विवि तिहि आज्ञा कौ पाय । नीलाचल के मध्य ते मिलैं जु प्रभु संग आय ॥
किय गुरु के संबंध करि दौउन कौ सनमान । सेवा दीनि दोउन कौ तिहि आज्ञा कौ जान ॥
श्री प्रभु जू गोविन्द कौ सेवा दई निज अंग । समैं दरस जगन्नाथ के काशीश्वर जू संग ॥
अपरस जायौ चहैं प्रभु तहां नरन की भीर । तिन्हें ठेलि कें पथ करें काशीश्वर बड़वीर ॥
रामाई नंदाई विवि प्रभु किंकर हैं आहि । सेवा ये गोविन्द संग करें निरन्तर ताहि ॥
वाईस घड़ा जल भरें रामाई नित चाय । सेवा करें नंदाई बहु गोविंद आज्ञा पाय ॥
द्विज जो शुद्ध कुलीन है कृष्णदास जिहि नाम । जिहि संग लै दखिन गनन कियौनुप्रभुअभिराम ॥

कवित्त—

वलभद्र भट्टाचार्य भक्ति अधिकारी बड़े मथुरा गमन समैं प्रभु वाट जोई है ।
बड़े हरिदास और छोटे हरिदास महा प्रभु पास रहै सदा कीर्तनिया दोई है ।
राम भट्टाचार्य और उडू सिंहेश्वर जू है तपनआचार्य प्रभु पद मति भोई है ।
और रघुनीलाम्बर सिंहाभट्ट कामाभट्ट औ दंतुर सिवानंद प्रभु भृत्य जोई है ॥
पूर्व भृत्य जो गौड़ में प्रभु प्रिय कमलानन्द । नीलाचल में रहैं ते प्रभु पद सेवानन्द ॥
श्री अद्वैताचार्य के तनय अच्युतानन्द । नीलाचल में रहैं प्रभु पद आश्रय रसकंद ॥
गंगादास अलोम औ विष्णुदास रसरस । नीलाचल में ये जु सब संग प्रभु करें निवास ॥

कासी मधि सँग भक्त प्रभु ये तीनों जन जोय । तयन मिश्र जू वैद्य इक शेखर चन्द्र जु सोय ।
मिश्र तयन रघुनाथ हैं भट्टाचारज लेखि । आये प्रभु काशी जवैं वृन्दावन कौ देखि ॥
प्रभु चन्द्रशेखर जु गृह किय द्वै मास जु वास । तयन मिश्र के घर प्रभु भिचा किय द्वैमास ॥
वाल्मीकि रघुनाथ जू प्रभु सेवन किय आहि । मांगै तिन की भूँट अरु पद संवाहन ताहि ॥
बड़े भये नीलाचलहि प्रभु समीप गौ जोय । आठ मास रहि भोजन हि कोऊ दिन है सोय ॥
आये श्री वृन्दाविपिन प्रभु आज्ञा कौ पाय । रूप गुसाई के निकट रहैं तहां ते जाय ॥
रूप गुसाई तिहि निकट सुनै भागवत निज । प्रभु की करुणा तें जु ते कृष्ण प्रेम में मत्त ॥
इहि विधि संख्यातीत हैं प्रभु जु भक्त गन आहि । कछु दिग्मात्र लिखे नहीं सम्यक् गणना ताहि ॥
एक एक साखनि के कोटि कोटि लगि डार । तिहि जु शिष्य उपडार हैं तिनहि सिष्य उपडार ॥
सब ही नीकें फले अति प्रेम फूल फल सोय । कृष्णप्रेम के फलनि में जगत मगन किय जोय ॥
एक एक साखनि की महिमा शक्ति अनन्त । सहस्रवदन करि सकैं नहिं तिहि सीमा कौ अन्त ॥
कछु कहैं संक्षेप करि प्रभु जू के गन संत । सब गणना तिन की जु तिहि सकैं न करि जुअनन्त ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरन जिहि वास । गौर चरितअमृतजु कहैं कृष्णदास तिहि हास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखैं वृजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखण्डे मूलस्कंधशाखागणनं नाम दशमः परिच्छेदः ॥१३६॥

एकादश परिच्छेदः

तस्य श्रीकृष्णचैतन्यसत्प्रेमामरशाखिनं । ऊर्ध्वस्कन्धावधूतेन्दोः शाखारूपान् गणान्नुमः ॥
नित्यानन्दपदाम्भोजभृङ्गान्प्रेममधून्मदान् । नत्वाखिलान् तेषु मुख्या लिख्यन्ते कतिचिन्मया ॥
जै जै जै श्री कृष्ण जू महाप्रभु चैतन्य । जय जै श्री अद्वैत जू जय नित्यानन्द धन्य ॥
श्री नित्यानन्द वृत्त कौ स्कन्ध पुष्ट अति सार । शाखा उपसाखानि कौ तातें भौ विस्तार ॥
माली इच्छा जलसु करि बड़ि साखागन सोय । भरि सुप्रेम फल फूल करि छायौ त्रिभुवन जोय ॥
अगन अनंत जो गणन कौ गणन करें सो कोय । कहाँजु आप पवित्र हित मुख्य मुख्यजनसोय ॥
वीरभद्र गोस्वामि जू साखा स्कंध समान । तिहि उपसाखा जिति तिहीं लिखनअसंख्यप्रमाण ॥
ईश्वर होय कहावई महाभागवत जोय । वेद धर्म के विषै नहीं वेद धर्म अति सोय ॥
अंतर ईश्वर की क्रिया बाहिर सों निदम्भ । मण्डप श्री हरि भक्ति कौ ताके मूल स्तम्भ ॥
अबहुँ प्रकट जु देखिये दया प्रताप जु ताहि । श्री प्रभु नित्यानन्द कौ गावैं सब जग आहि ॥
वीरभद्र गोस्वामि जू चरन सरन लै जोय । जिन ही के जु प्रसाद करि इच्छा पूरण होय ॥

रामदास अभिराम अति और गदाधर दास । श्री प्रभु जू के भक्त ये रहैं जु तिनकें पास ॥
आज्ञा गौड़ हि जानकी नित्यानन्द कौ कीय । श्री प्रभु येई दोउ जने तब नित साथ हि दीय ॥
याही तें विवि गणनि में गननि दुहुनि कौ आहि । माधव वासु जु घोष कौ यह विवरन हैं ताहि ॥

कवित्त—

रामदास अभिराम नित्यानन्द मुख्यसाखा महा प्रेम रासि भरें हिये सख्य भायकें ।
बड़ौ एक काठ जुग सोरह उठावैं जन वंसी ताकी करी धरी हाथ पै उठायकें ।
गदाधर दास गोपी भावानन्द पूर्ण नित्यानन्द करी दान लीला जिहि गृह जायकें ।
श्री माधव घोष मुख्य कीर्तनियां गण माहि जिहि गान नित्यानन्द नृत्य करैं चायकें ॥

वासुदेव जू गान में प्रभु कौ वरणें आहि । द्रवै काष्ठ पापान हू श्रवण किये तें जाहि ॥
प्रभु के दास मुरारि जू करैं अलौकिक रंग । मारैं व्याघ्र थपेर जे खेलैं सर्पन संग ॥
नित्यानन्द के गन जिते ते व्रजसखा असेश । शृङ्गवेत्र शिखि पिच्छ सिर सबै गोप के भेष ॥१५॥
वैद्य उपाध्या हैं जु रघुनाथ महाशय सोय । जिहि दरसन तें कृष्ण की प्रेम भक्ति हिय होय ॥
हैं जु सुन्दरानन्द जू सखा भृत्य तिहि मर्म । जिनसों नित्यानन्द जू करें केलि व्रज नर्म ॥
कमलाकर पिपलाइ जू चरित अलौकिक सोय । प्रेम अलौकिक जिन्हों कौ भुवन विदित है जोय ॥
सूर्यदास सरखेल तिहि भाई कृष्ण जु दास । नित्यानन्द सर्वस्व जिहि दियौ सुदृढ़ विरवास ॥
पण्डित गौरीदास तिहि प्रेमोदण्ड जु भक्ति । धरें सु कृष्ण जु प्रेम के दें लें की शक्ति ॥
पण्डित ख्याति पुरन्दर जु नित्यानन्द प्रिय सोइ । प्रेम उदधि मधि फिरें ते मन्दिर गिरिलौ जोइ ॥
नित्यानन्द इक सरन जिहि सो परमेश्वर दास । कृष्ण भक्ति पावै सकल सुमिरन किये जु तास ॥
पण्डित श्री जगदीस जू सब जग पावन सोय । कृष्ण सु प्रेमाभूतनि कौ धन लौं वरसैं जोय ॥
नित्यानन्द भृत्य है पण्डित धनंजय सोय । अति विरक्त जग सौं सदा कृष्ण प्रेममय जोय ॥
श्री महेस पण्डित जु हैं व्रज के बड़े गुपाल । नाचैं इका वाद्य करि प्रेम सकैं न संभाल ॥
पुरुषोत्तम नवद्वीप के पण्डित महाशय सोय । जिहि नित्यानन्द नाम ते अति उनमाद जु होय ॥
स्वादी कृष्ण जु प्रेम रस श्री बलवाम जु दास । हैं नित्यानन्द नाम ते अति उनमाद जु तास ॥
कविचन्द्र जु यदुनाथ है महा भागवत आहि । श्री नित्यानन्द जु करें नृत्य हिये में जाहि ॥
कृष्णदास द्विज मुख्य सुराढ़ जन्म है जोय । श्री नित्यानन्द प्रभु जु के किंकर परम जु सोय ॥
काले कृष्ण जु दास हैं भक्त बड़े जु प्रधान । श्री नित्यानन्द चंद्र विनु जानें कछु न आन ॥
श्री जु सदासिव है सु कविराज महाशय आहि । श्री पुरुषोत्तम दास जू हैं जु तनय ये ताहि ॥
है निमग्न आजन्म तें नित्यानन्द पद रंग । लीला वाल्य निरन्तरहि करैं कृष्ण के संग ॥
श्री कान्हा ठाकुर जु है पुत्र महाशय ताहि । हरि प्रेमाभूत पूरि ज्यों रहै देह मधि जाहि ॥

श्रेष्ठ दत्त उद्धरण है महा भागवत सोइ । नित्यानंद पद सेवई सर्व भाव करि जोइ ॥
श्री आचारज वैष्णवानंद भक्ति अधिकार । पूर्वनाम जिहि श्री जु रघुनाथ पुरी सुखसार ॥३५॥

कवित्त -

विष्णुदास नन्दन औ गंगादास तीन भाई पूर्व जिहि गेह रहै नित्यानन्द राय है ।
नित्यानन्द भृत्य है उपाध्याय परमानन्द पण्डित है जीव हित गुन गन चाये है ।
श्री परमानन्द गुप्त कृष्णभक्ति महामति गेह जिहि नित्यानन्द वसे भरे भाय है ।
नारायण कृष्णदास मनोहर देवानन्द चारौ जन नित्यानन्द दास कहै गाय है ॥१॥
नित्यानन्द प्रभु-प्राण है विहारी कृष्णदास नित्यानन्द पद विन जानें नहीं आन है ।
नौकटी मुकुन्द सूर्य माधव श्रीधर रामानन्द वसु जगन्नाथ महीधर जान है ।
श्रीमत गोकुलदास हरि हरानन्द और सिवाई नंदाई दोऊ बड़े ई प्रमान है ।
परमानन्द अवधूत वसन्त नवीन होइ गोपाल सनातन रस के निधान है ॥२॥
विष्णुदास हाजरा कृष्णार्च्य औ सुलोचन जू औ कंसारि सेन रामचंद्र कविराज है ।
गोविन्द औ श्रीरंग जू औ मुकुन्द ये जु तीनों कविन के मांझ काव्य रस के समाज है ।
पीताम्बर औ माधवाचार्य दास दामोदर संकर मुकुन्द ज्ञानदास भक्तराज है ।
मनोहर नर्तक गोपाल रामभद्र और श्री गौरांगदास औ नृसिंहदास भ्राज है ॥३॥
श्रीमीनकेतन रामदास वृन्दावनदास नन्दन नारायणी के भरे प्रेम रास है ।
भागवत कृष्णलीला करी वेदव्यास आप महाप्रभु लीला आप वृन्दावन दास हैं ।
सर्व साखा श्रेष्ठ वीरभद्र श्री गुसाईं जू के तिहि उपसाखा जिती गणना न जास है ।
नित्यानन्द जू के गन है अनन्त गनै कौन निज सुद्व हेतु कछु कहै जन तास है ॥४॥

दोहा -

पूरन पाके प्रेमफल ये सब साखा होय । जिहि देख्यो तिहि प्रेम दै दिय बहाय सब लोय ॥
प्रेम अनर्गल सबनकौ क्रिया अनर्गल जाहि । प्रेम कृष्ण जग दें में धरैं सुवल सब आहि ॥
ये जु कहे संक्षेप करि नित्यानन्द गन जोय । पावै नहि जिहि अवधि कौ सहस वदन हू सोय ॥
रूप समातन और रघुनाथ चरन जिहि आस । गौर चरित अमृत कहै कृष्णदास जिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । गौर चरित अमृत सु कहै ब्रज भापाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री नित्यानन्दशाखावर्णनं नाम एकादस परिच्छेदः ॥४०॥

द्वादशपरिच्छेदः

श्री अद्वैताग्रजभृंगान् सारासारभृतो खिलान् । द्वित्वा सारासारभृतो वंदे चैतन्यजीवितान् ॥
जय जय प्रभु श्री कृष्ण जू कृपासिन्धु चैतन्य । जय जय नित्यानन्द जू ससि अद्वैत जु धन्य ॥
आचारज गोस्वामि तरु स्कन्ध द्वितीय है सोय । तिनकी है साखाजिती तिनको लिखन न होय ॥

श्री चैतन्यामरतरोः द्वितीयस्कन्धरूपिणः । श्रीमदद्वैतचन्द्रस्य शाखारूपान्गणान्तुमः ॥

माली गौर दया जु जल तिहि सेवन है जोय । सोई जल करि पुष्ट है दिन दिन वाढ़ै सोय ॥
तिहि स्कन्ध में प्रेम फल उपजे जितेक सोय । कृष्णप्रेम के फलनि हित जगत भरि लियौ सोय ॥
स्कन्ध करै साखानि में जिहि जल करि संचार । फूलै फूलै सु वाढ़ै भौ साखा विस्तार ॥
आचारज गन मधि प्रथम हु तो एक मत जोय । भये दैव कारन जु करि पाछै मन तिहि दोय ॥
आज्ञाकारी आचार्य कौ कोउ कोउ जु स्वतन्त्र । स्वमत कल्पना करत है ते जु दैव परतन्त्र ॥
सोई मत आचार्य के सोई गन है सार । तिहि आज्ञा कौ लंघि चलै सोई गन जु असार ॥
इहां असार जु नाम सों नहीं प्रयोजन आहि । भेद जानिबै को कियौ इकठां गणना ताहि ॥
तुसहि सहित जौ नापियै धान्यरासि जिहि भाप । संस्कार जब कीजियै दीजै तुस जु उडाय ॥
बड़ साखा आचार्य के तनय अच्युतानन्द । सेवै जिन्ह आजन्म लौं श्रीप्रभु पद रस कंद ॥
गुरु है केशव भारती श्री प्रभु जू के आहि । यहै वचन सुनि पिता कौ अतिदुख पायो ताहि ॥
तुम गुरु है सब जगत के करौ जु इमि उपदेश । याही तुम उपदेश करि नष्ट भयौ सब देश ॥
गुरु है चौदह भुवन के महाप्रभु चैतन्य । नहीं कहूँ यह शास्त्र में तिन के गुरु है अन्य ॥
पांच वर्ष के शिशु कछौ सब सिद्धान्त जु सार । सुनि के श्री आचार्य जु लखौ संतोष अपार ॥
तनय और आचार्य के कृष्णमिश्र है आहि । गोस्वामी चैतन्य जू हिये वसत है ताहि ॥
और पुत्र आचार्य के श्रीगुपाल है नाम । तिहि चरित्र कछु कहत है अतिअद्भुत सुखधाम ॥
गुँडिचा मन्दिर में महाप्रभु के सनमुख आहि । नृत्यगान गोपाल जू करै प्रेम सुख ताहि ॥
नाना भाव उठै जु तन अद्भुत नर्तन सोय । प्रभु दोऊ हरि हरि कहै आनन्दित मन होय ॥
भये नाचते नाचते मूर्छित ते गोपाल । परचौ भूमि में देह तिहि नहीं जीव तिहि काल ॥
दुःखित है आचार्य जू अंक पुत्र लै ताहि । पढ़िकै मन्त्र नरसिंह कौ रक्षा करै जु आहि ॥
नाना मन्त्र पढ़े नहीं भई चेतना ताहि । दुखित भये आचार्य जू रुदन करै अति आहि ॥
धरचौ जु श्री प्रभु जू तवै हस्तकमल तिहि हीय । उठि गुपाल ऐसे कही हरिहरि धुनि तव कीय ॥
सुनि धुनि औ प्रभु के परस उठे तवै गोपाल । आनन्दित सब ही करै हरि-हरि धुनि तिहि काल ॥
और एक आचार्य के सुत है श्री बलराम । अरु इक साखा जिहि तनय है जगदीशजु नाम ॥

किंकर जो आचार्य के सिरीकांत विस्वास । आचारज व्यौहार सो सब अधीन हैं जास ॥
नीलाचल को तिनहि इक पत्नी लिखी बनाय । नृप प्रतापरुद्र जु निकट दीनी सो जु पठाय ॥
पत्नी को आचार्य जू कथा न जानै जोय । आई कोई द्वार है पत्नी प्रभु पै सोय ॥
ताही पत्नी में लिखौ लिखन इहै जु सुधार । ईश्वरत्व आचार्य को स्थापन कियौ विचार ॥
ऐसे कारण दैव करि कछु ऋण भयौ जु ताहि । ऋण सोधनहित चाहिये टका तीन सत आहि ॥
प्रभु के पत्नी पदि कछु मन में दुख भौ जोय । चंद्रवदन जू यौ कहै बाहिर हँसिकै सोय ॥
स्थापित किय आचार्य को ईश्वर करि कै जोय । या में नाहिन दोष कछु ईश्वर दैव जु सोय ॥
ईश्वर को करि दैन्य पुनि भीख मँगाई आहि । याही तें प्रभु दण्ड करि सिद्धा करी जु ताहि ॥
गोविंद को आज्ञा दई यहां आज ते आहि । तू और विश्वास को आवन दै जिन ताहि ॥
भयौ जु सुनि कै दंड को परम दुखित विश्वास । हरषित आचारज भये सुनि प्रभु दण्डहि तास ॥
कहै जु ते विश्वास को भाग्यवान तुम जोय । कियौ दंड भगवान प्रभु तुमको ताते सोय ॥
प्रथम महाप्रभु करत हैं मेरो अति सनमान । दुख पावै मन में जु मैं कियौ यह अनुमान ॥
कियौ योगवासिष्ठ को व्याख्या मुक्ति प्रधान । क्रुद्ध होय के प्रभु तवै किय मेरो अपमान ॥
दण्ड पाय के भयौ मम आनंद परम सु आहि । भाग्यवत श्री मुकुन्द जू पायौ दण्डहि जाहि ॥
ऐसे कहि आचार्य जू कियौ जु तिहि आस्वास । आये आनंदित जु है श्री प्रभु जू के पास ॥
भाग्यवती माता सची दंड लहै है जोय । सोई दण्ड प्रसाद अरु किनते पावै लोय ॥
बोले प्रभु सौ चरित तुव जान्यो किहू न जाय । कृपा पात्र कमला कियौ हम हूं ते अधिकाय ॥
यह सुनि कै तव महाप्रभु लागे हंसन जु सोय । लिय विश्वास बुलाय के अति प्रसन्नता होय ॥
हम को जातें कभू हीं सो प्रसाद नहि होय । तुम चरननि में कियौ हम कहै चूक है कोय ॥
आचारज बोले जु तुम क्यो दिय दरसन याहि । दोऊ विधि मेरो करौ वहै विडम्बन आहि ॥
सुनि कै श्री चैतन्य को मन प्रसन्न भौ आहि । अन्तर कथा दुहंन की दोऊ जानें ताहि ॥
कहै जु प्रभु तिहि कमलको इमि क्यौ करै जु जानि । करै जु सो आचार्य की लाज धर्म की हानि ॥
करिये नहि जु प्रतिग्रह कवहुं राजधन जोय । कृष्ण भजन विनु होय यह निष्फल जीवज सोय ॥
मन के दुष्ट भये जु तें कृष्णभजन नहि होय । कृष्ण भजन विनु होय यह निष्फल जीवन सोय ॥
लोक लाज इक होय अरु धर्म कीर्ति की हानि । सो यह कर्म न कीजियै कवहुं ऐसो जानि ॥
यह सिद्धा करि सबन को सब मन किये सोय । आचारज गोस्वामि जू हर्ष मन लबौ जोय ॥
अभिप्राय आचार्य को इक प्रभु समझै ताहि । समुझै प्रभु को वाक्य सो आचारज ही आहि ॥
है जु यह प्रस्तावना नीके बहु विस्तार । ग्रंथ बदन के भय जु करि लिखने को न विचार ॥
यदुनंदन आचार्य जू साखार्द्रत जु आहि । साखा उपसाखानि को लिखन कछु कहि ताहि ॥
श्री भागवताचार्य अरु विष्णुदास आचार्य । चक्रपानि आचार्य औ श्री अनंत आचार्य ॥

कामदेव अरु नंदिनी अरु चैतन्य जु दास । इक वनमाली दास जू औ दुर्लभ विश्वास ॥
जगन्नाथ कर नाम है अरु इक कर भवनाथ । इक हृदयानंद सेन अरु दास जु भोलानाथ ॥

कवित्त—

यादवदास विजयदास औजनार्दन है अनंतदास कान्हू पंडित परकास है ।
नारायणदास और श्री वत्स पण्डित जु है ब्रह्मचारी हरिदास भरे रस रास है ।
श्री पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी औ कृष्णदास पुरुषोत्तम पण्डित रघुनाथ उजास है ।
वनमाली कविचंद्र और वैद्यनाथ लोकनाथ पण्डित जू प्रभु नित्यानंद दास है ॥

श्री मुरारि पण्डित जु इक श्री हरिचरन जु नाम । पण्डित माधव विजय है अरु पण्डित श्री राम ॥
साखा श्री अद्वैत की है जु असंख्य अपार । नाम कहाँ लौं कीजिये कहे कछुक जु विचार ॥
दिय अद्वैत स्कंध को माली जल जु विचार । तिहि जल को लैकै करै सो साखा संचार ॥
ताही जल सौं जीवई साखा जितीक सोय । लहलहाय फूलै फलै जीवन दै सब कोय ॥
जिनहि जिवायौ जन्म दिय ताहि न मानें जोय । भये कृतघ्नो तिनहि पर स्कंध क्रुद्ध भौ सोय ॥
स्कन्ध क्रुद्ध है तिनहि में करै न जल संचार । जल विनु साखा कस जु है सुख मरै निरधार ॥
देह रहित चैतन्य करि भये सुस्क सम सोय । जीवत ही सो मृत कहै मरे दंड जम जोय ॥
केवल याही गन जु प्रति नाही है ए दंड । गौर विमुख जोई जु है सोई है पाखण्ड ॥
कहा पण्डित कहा तपस्वी कहा गृही संन्यास । गौर विमुख जोई जु है है जु यह गति तास ॥
श्री अच्युतानंद को मत जिनि लीनौ सोय । सोई गन आचार्य को महा भागवत जोय ॥
वहै वहै आचार्य को कृपापात्र अति धन्य । अनायास पाये जु ते चरन कमल चैतन्य ॥
कोटि प्रणति मेरे जु है गन आचार्यहि ताहि । प्राय अच्युतानंद की जीवन प्रभु श्री आहि ॥
आचारज गोस्वामि को यहै कह्यौ गन आहि । स्कन्ध तीन साखानि को कियौ गणन कछु ताहि ॥
साखा उपसाखानि को नहीं गणन है जाहि । किञ्चिन्मात्र कह्यौ यहै करि दिग दरसन आहि ॥
पण्डित है श्री गदाधर तिहि बड़ साखा आहि । तिन उपसाखा गन कछु करियै कथन जु ताहि ॥

कवित्त—

श्रेष्ठ साखा ध्रुवानन्द ब्रह्मचारी श्रीधर जू भागवताचार्य ब्रह्मचारी हरिदास है ।
अनन्त आचार्य कविदत्त मिश्र पुत्र गंगा मंत्री मामू ठाकुर औ भक्ति के प्रकास है ।
कण्ठाभरण भूगर्भ गुसाई औ भागवत दास ये ही दोय कियो वृन्दावन वास है ।
वाणीनाथ ब्रह्मचारी बड़े महा आशय है वल्लभ चैतन्यदास कृष्ण प्रेम रास है ॥
श्रीनाथ चक्रवर्ती उद्धवदास जिता मिश्र काठ काटा जगन्नाथ महारस रास है ।
श्री हरि आचार्य सादि पुरिया गोपाल कृष्णदास ब्रह्मचारि जिहि जगमें प्रकास है ॥

पुष्प गोपाल श्री हर्ष रघुमिश्र पण्डित श्री लक्ष्मीनाथ रंग वाड़ी श्री चैतन्यदास हैं ।
 रघुनाथ अमोघ पण्डित चैतन्य बल्लभ यदु गांगुली और मंगल जन जास हैं ॥२॥
 यह कथा संचेप करि श्री पण्डित गन आहि । ऐसे अरु साखानि उपसाखा गन जू ताहि ॥
 पण्डित जू कौ गन जु सब परम भागवत धन्य । प्राणनि ते प्यारे जु हैं सब के श्री चैतन्य ॥
 स्कन्ध तीनि इनको कथा कछु शाखागन जोय । जिन सबको सुमिरन किये बंधन मोचन होय ॥
 याही ते तिन सवनि के पद बंदन करि जोय । प्रभु माली को कथा यह चरित अनुक्रम सोय ॥
 जिन सबको सुमिरन किये पैये प्रभु पद जोय । जिन सबको सुमिरन किये वांछित पूरन होय ॥
 श्री प्रभु लीला अमृतको सिंधु अपार अगाध । सकैं कौन करिकै जु तिहि अवगाहन की साध ॥
 तिहि माधुर्यकी गंधको लुब्ध भयो मन आहि । याही ते तिहि तटहि रहि चारुयौ इक कन लाहि ॥
 रूप और रघुनाथ के चरन कमल जिहि वास । गौर चरित अभूत कछु कहत कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । गौर चरित को कहत है ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री अद्वैतशाखावर्णनं नाम द्वादसपरिच्छेदः ॥

त्रयोदश परिच्छेदः

स प्रसीदतु चैतन्यो देवो यस्य प्रसादतः । तल्लीलावर्णने योग्यः सद्यः स्यादधमोऽप्ययम् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौर कृष्ण जय चन्द । जय अद्वैताचार्य शशि जय श्री नित्यानन्द ॥
 जय पण्डित श्रीगदाधर जय जय श्रीजुनिवास । जय जय श्रीजुमुकुन्द जय वासुदेव हरिदास ॥
 जय स्वरूप दामोदर जु गुप्त मुरारि जु सोय । इनही सब चंद्रनि उदय लुप्त कियो तम जोय ॥
 जय जय श्रीप्रभुचंद्रके भक्त चन्द्रगण आहि । उज्ज्वल किय त्रिभुवनि सवनि प्रेम चांदिनी ताहि ॥
 यह जु ग्रंथारंभ में कियो प्रथम मुखबंध । अब जु करें चैतन्य कौ लीला क्रम अनुबंध ॥
 प्रथम ही सूत्र जु रूप करि करिय गणना आहि । फिर पाछे विस्तार करि विवरण करि है ताहि ॥
 आप कृष्णचैतन्य जू करि पृथिवी अवतार । बरस आठ चालीस ओ कियो जु प्रगट विहार ॥
 चौदह सत अरु सात के शाके जन्म प्रमान । चौदह सत पंचावने भौ प्रभु अन्तर्धान ॥
 किय चौबीस जु बरस श्री प्रभु जू गृह में वास । तिन्हों निरन्तर किय तहां कीरंतन जु प्रकास ॥
 चौबिस बरस जु सेस में प्रभु कीन्हो संन्यास । किय चौबिस बरस जिन्हों नीलाचल में वास ॥
 तिन में किय पट बरस लौ गमनागमन जु सोय । कभूँ गौड़ दक्षिण कभूँ श्री वृन्दावन जोय ॥
 बरस अठारह में रहे नीलाचल में आय । कृष्ण प्रेम नामामृतहि दिये जु सकल बहाय ॥

गार्हस्थ लीला जु प्रभू आद्य नाम है ताहि । मध्य अंत लीला जु हैं नाम सेस के आदि ॥
 जितिक लीला आद्य में प्रभु जू चरित सु आदि । गुप्त मुरारी जू कियो ग्रंथि सूत्र करि ताहि ॥
 मध्य सेस लीला जु प्रभु दामोदर जु स्वरूप । कियो ग्रंथ में ग्रंथन तिहि करि कै सूत्र अनूप ॥
 तिनहीं दोनों जननि के सूत्र देखि मुनि आहि । क्रम करिकै वर्णन करें सकल भक्तजन ताहि ॥
 सिसु पौगण्ड किशोर श्री जोवन चारि विभेद । आदिखण्ड लीला जु के याते चारि विभेद ॥

तथाहि—सर्वसद्गुणसंपूर्णं वन्दे फाल्गुनपूर्णिमां । यस्यां श्रीकृष्णचैतन्योऽवतीर्णः कृष्णनामभिः ॥

फाल्गुन पून्यौ निसि समें प्रभु जन्मोदय जानि । दैव योग करि तिहि समें चंद्रग्रहण भौ आनि ॥
 हरि हरि बोलें लोक सब अति हरपित हिय होय । कृष्ण नाम जन्माय कें जन्म लियो प्रभु सोय ॥
 जन्म बाल्य पौगंड जुव इन सब समें जु ताहि । सवन लिवायौ नाम हरि कौतिक छल करि आहि ॥
 बाल्य भाव कें मिस जु करि कंदन करें जु आहि । हरिहरि कृष्ण जु नाम मुनि रहै रुदन तब ताहि ॥
 याही तें हरिहरि करें सब नारी गन आहि । आवैं जे सब बन्धुगन देखन बालक ताहि ॥
 हंसैं जु कहि कें गौर हरि नारीगन तिहि ठाम । याही ते तिनको जु इक भयो गौर हरि नाम ॥
 जब लौ हाथ खरीदई बाल्य बयस अति वाम । जब लौ बय पौगंड नहि किय विवाह रस धाम ॥
 प्रगटौ नव जौवन सरस भये विवाह जु ताहि । संकीर्तन प्रभु नाम कौ सवन लिवायौ आहि ॥
 पढ़ै पढ़ावैं सिष्यगन बय पौगण्ड हि जोय । व्याख्या कृष्णहि नाम की सब ठां करें जु सोय ॥
 सूत्र वृत्ति आदिक सु जे हरि ही में तात्पर्य । होय प्रतीत जु सिष्य कें तिहि प्रभाव आश्चर्य ॥
 जिहि देखैं ताही कहैं लेहु कृष्ण कौ नाम । दिय बहाय हरि नाम में नवद्वीप सब ग्राम ॥
 बय किशोर आरंभ किय संकीर्तन हरि नाम । प्रेम नृत्य निसि दिन करें संग भक्तगन वाम ॥
 नगर नगर बोलैं जु ते कीरंतन करि सोय । दिय बहाय त्रिभुवन तिन्ह प्रेम भक्ति करि जोय ॥
 या विधि चौबिस बरस लौ नवद्वीप सब ग्राम । सब लोकनि जु लिवाय यों कृष्णप्रेम अरु नाम ॥
 भये बरस चौबीस के कियो जु प्रभु संन्यास । भक्तनि गन संग लै कियो नीलाचल जू वास ॥
 तिनहूँ में पट बरस लौ नीलाचल में जानि । नृत्य गीत अरु प्रेम रस भक्ति निरंतर दानि ॥
 सेतबन्ध लौ देस जे अरु वृन्दावन जोय । प्रेम नाम सु प्रचार करि कियो भ्रमन प्रभु सोय ॥
 यह मध्य लीला कहैं नीलाचल जन संग । प्रेम लिवायौ सवन कौ नृत्य गीत बहु रंग ॥३५॥

कवित्त—

द्वादस बरस शेष रही लीलारस आस्वादन छल कें सिखाई प्रेम की तरंग हैं ।
 रैन दिन कृष्ण विरह फुरैं चेष्टा उन्माद करें बचन प्रलाप उठत अभंग हैं ।
 श्री राधा कें प्रलाप भयो उद्धव कें देखें ज्यों तैंसैं प्रलाप चेष्टा होय सब अंग हैं ।
 विद्यापति जयदेव चंडीदास गीत करें आस्वादन रामानंद श्री स्वरूप संग हैं ॥१॥

कृष्ण वियोग औ योग कौ प्रेम चेष्टित जोय । आस्वादन पूरन कियो निज वांछित हौ सोय ॥
लीला प्रभु जु अनंत है जीव ह्रुद्र अति जोय । करिकैं तिहि विस्तार अति वरनि सकैं नहि कोय ॥
जो कबहूँ तिहि सूत्र करि गने जु आप अनंत । सहस वदन करि तऊ तिहि नाहिन पावै अंत ॥
दामोदर स्वरूप जू अरु श्री गुप्त मुरारि । मुख्य मुख्य लीला जु के सूत्र लिखे जु विचारि ॥
लीला सूत्र जु गन लिखे तिनही के अनुसार । वर्नन वृन्दावन कियो तिनही कौ विस्तार ॥
प्रभु लीला के व्यास हैं श्री वृन्दावन दास । लीला अति ही मधुर वरि करी तिन्हों प्रकास ॥
तिन्हों ग्रंथ विस्तार भय छाँड़ी जा जा स्थान । ताही ताही स्थान कछु करि हैं तिहि विख्यान ॥
प्रभु लीला अमृत तिन्हों किय आस्वादन आहि । अब करियतु है चर्वन जु भक्त शेष कछु ताहि ॥
लिखें सूत्र लीला प्रथम सुनौ भक्तगन जाहि । सब नहि जाय लिख्यौ लिखें कछु संक्षेप जु आहि ॥
को इक वांछा पूर्ण हित आप वृजेन्द्र कुमार । पृथिवी पै अवतीर्ण हित मन में कियो विचार ॥
अवतारे सब प्रथम ही जे जे गुरु परिवार । कहैं तिन्हें संक्षेप नहि कह्यौ जाय विस्तार ॥
जगन्नाथ श्री शची श्री माधवपुरी प्रवीन । अरु श्री केसव भारती ईश्वर पुरि रसलीन ॥
आचारज अद्वैत जू अरु पंडित श्री वास । श्री आचारज रत्न औ विद्यानिधि हरिदास ॥
हृद देस में घर जु तिहि मिश्र उपेन्द्र जु नाम । वैष्णव पण्डित धनी बहु सद्गुण के विश्राम ॥

कवित्त—

सात अपि तुल्य तिहि पुत्र सात मिश्र भये कंसारि परमानंद पद्मनाभ नाम हैं ।
सर्वेश्वर जगन्नाथ और श्री जनार्दन जू मिश्र और लोक नाथ रस के विश्राम हैं ।
नवद्वीप गंगावास कियो जगन्नाथ जिहि पदवी है पुरंदर मिश्र रसधाम हैं ।
नंद बसुदेव रूप सद्गुण के सागर हैं पत्नी तिहि शचीनाम पतिव्रता वाम हैं ॥१॥

सची माता जू के पिता नीलाम्बर चक्रवर्ती बड़ेई महानुभाव अति ही उदार हैं ।
राष्ट्र देस जन्म लियो ठाकुर श्री नित्यानंद गंगादास पण्डित जू भक्तन आधार हैं ।
श्री मुरारि गुप्त जू मुकुंद औ असंख्य निज भक्तन समूह के कराये अवतार हैं ।
पाछें अवतीर्ण भये पूर्ण अभिलाष छये कौतुकी परम वृजराज कौ कुमार हैं ॥२॥

प्रभु के आविर्भाव तें प्रथम भक्तगन जोय । श्री अद्वैताचार्य के निकट गमन कियो सोय ॥
कहैं जु गीता भागवत औ आचारज ताहि । ज्ञान कर्म निंदहि कहैं भक्ति बढ़ाई आहि ॥
सबे शास्त्र कौ करैं ये कृष्ण भक्ति विख्यान । ज्ञान योग अरु कर्म तप नहि कछु मानैं आन ॥
तिहि संग आनंद सों करैं वैष्णवगण सब आहि । कृष्ण कथा पूजा जु तिहि नाम सँकीर्तन ताहि ॥
ऐपैं देखें लोक सब कृष्ण बहिर्मुख जोय । विषय निमग्न जु लोक लखि हिय दुख पावै सोय ॥
करैं लोक निस्तार हित सोच दयाकरि ताहि । किहि विधि इहि सब लोककौ ह्वै तारण आहि ॥

जौ अवतरि कैं कृष्ण जू करैं भक्ति विस्तार । तौ सबही इन लोक कौ होय सहज निस्तार ॥
ते जु कृष्ण अवतार हित करी प्रतिज्ञा आहि । तुलसी गंगा जलहि दै करि हरि पूजा ताहि ॥
करैं कृष्ण आह्वान करि ते जु सधन हुंकार । भै आकर्ष हुंकार करि श्रीवृजराज कुमार ॥
श्रीजगन्नाथ पत्नी सची तिनके उदरहि जोय । क्रम करि कन्या अष्ट है जन्मत मरी जु सोय ॥
पुत्र विरह करि मिश्र कौ दुखी भयो मन आहि । आराधै हित पुत्र के विष्णु चरण तब ताहि ॥
तब तिनके उपजे तनय विश्वरूप जिहि नाम । बड़े महागुनवान ते श्रीवलराम जु धाम ॥
संकर्षण वैकुण्ठ बलदेव प्रकासहि जोय । उपादान कारण जु है विश्वरूप कौ सोय ॥
तिहि बिनु कछु न विश्व में वस्तु और है आहि । विश्वरूप जो नाम यह याही तें भौ ताहि ॥
तथाहि दशमे—नैतच्चित्रं भगवति ह्यनन्ते जगदीश्वरे । ओतं प्रोतमिदं यस्मिन् तन्तुष्वंग यथा पटः ॥
याते प्रभु के ते भये बड़ भाई रस कंद । कृष्ण और बलदेव विवि श्रीप्रभु नित्यानन्द ॥
भये पुत्र लहि दंपती आनन्दित मन जोय । आराधन गोविन्द पद करैं विशेष जु सोय ॥
शाके चौदहसत जु षट सेस माघ जो मास । जगन्नाथ शचिदेह में भौ श्री कृष्ण प्रकास ।
मिश्र कहैं तब सची सों रीति और लखि आहि । लक्ष्मी आश्रित गेह बहु ज्योतिर्मय है ताहि ॥
जहां तहां सब लोक हू करैं तिनहि सनमान । घर ही देय पठाय ते वस्त्र और धन धान ॥
शची कहैं आकास पर देखत हों में जोय । दिव्यमूर्ति जे लोक सब स्तुति अति करैं जु सोय ॥
मिश्र कहैं हम आजु इक स्वप्न लखो इहि भाय । ज्योतिर्मय जो धाम मम हिय में पैस्यौ आय ॥
मम हियतें तुव हृदय में कियो प्रवेश जु ताहि । ऐसैं जानौ जनमि है कोऊ महाशय आहि ॥
ऐसे कहि दोऊ रहैं अति हरषित हिय होय । सेवा सालगाम की करैं अधिक करि सोय ॥
होत होत ही गर्भ कौ भयो त्रयोदस मास । तऊ गर्भ जन्मै नहीं भयो मिश्र के वास ॥
कहैं जु लगन विचार करि नीलांबर इहि भाय । है है याही मास में पुत्र पुन्यक्षण पाय ॥
चौदहसत अरु सात के शाके फागुन मास । पून्यौ सांभू समें भयो सुभ छिनकौ जु प्रकास ॥
रासि लगन तिथि सिंह है ग्रहण उच्च है जोय । अष्ट वर्ग षट वर्ग औ सबहि सुलक्षण सोय ॥
दरसन दीनो गौरहरि अकलंकित द्विजराज । सकलकित ससिकौ तहां रह्यौ कहा अब काज ॥
यहै जानि किय राहुन चंद्रग्रहण तब जोय । कृष्ण कृष्ण हरि नाम हरिकहैं जु त्रिभुवन सोय ॥
जगत भर्यौ सब लोक जै हरिहरि बोलै आय । गौर कृष्ण भुवि अवतरे नाम सहित छिनताय ॥
तिहि छिन सबही जगत के भै प्रसन्न मन जोय । हिंदुन कौ करि हास्य हरि बोले जवन जु सोय ॥
हरि हरि करि नारी जु गन करैं जु जै कार । नृत्य बाद्य दिवि सुर करैं कौतूहल जु अपार ॥
दसो दिसा अरु नदीजल मुख प्रसन्न छिन ताहि । स्थावर जंगम भये सब आनंद विहल आहि ॥

पदराग विहागरो

जीवनि के हित काज कृपा करि जीवन के हित काज ।
 नदिया उदया चलतें प्रगटे अकलंकित द्विजराज ॥ टेक ॥
 पूरन कला अंस संग लियें उडगन भक्त समाज ।
 यहै जानि सकलंकित द्विजपति राहु अंक दव्यौ लाज ॥
 छयो अनुराग लोक रंजित भये होतहि प्रथम प्रकास ।
 भक्ति चन्द्रिका फैली दिवि भुवि भयौ दरिद्र तम नास ॥
 भक्त कुमुद फूलें चहुँ दिसि भयौ रसिक चकोर हुलास ।
 हरि हरि धुनि भई भरे लोक सब त्रिजगत हृदय विकास ॥
 ताही समें उठे निज गृह तें श्री अद्वैत गुसांइ ।
 नृत्य करैं आनंदित मन अति फूले अंगन माइ ॥
 करैं हुंकार संकीर्तन रंग भरे लै हरि दासहि संग ।
 नहि कोऊ जानै कौन हेतु ये करैं नृत्य बहुरंग ॥
 लखि उपराग हँसे आये तव वेगिहि गंगा तीर ।
 स्नान कियौ तामें आनंद भरै भक्तन की संग भीर ॥
 पाय ग्रहन कौ मिसु अरु अपनौ मन उत्साहै जान ।
 श्री आचारज बोलि द्विजन कौं दिन नानाविधि दान ॥
 आनंद मय सब देख जगत कौ अरु निज मन हुल्लास ।
 अति विस्मै भये सेंना वेंनी कहै कछुक हरिदास ॥
 ऐसौ न कछु है रंग तुम्हारे अरु मम मन आनंद ।
 ऐसैं भाषत नीके कोऊ है है सुख कौ कन्द ॥
 मन आनंद भये आचारज रत्न और जु श्री निवास ।
 कियौ स्नान जाय गंगा मधि प्रगट भई हिय आस ॥
 हरि संकीर्तन करैं मन आनन्द जु के प्रवाह ।
 नाना दान द्विजनि कौं तिहि छिन दिय मन के जु उछाह ॥
 इही भांति पांति भक्तनि की जिहिं तिहिं देस निवास ।
 तहां तहां सब पाय हर्ष मन भयौ मंगल कौ भास ॥

नाचैं करैं सु कीर्तन सबही आनंद विह्वल हीय ।
 पाय ग्रहन कौ मिस जु सवन तहां दान द्विजन कौं दीय ॥
 द्विज सज्जन नारी भरि थारिन नाना द्रव्य संजोय ।
 मंगल भेंट तहां लै आईं मन अति आनन्द सोय ॥
 तप्त हेम सुठि वालक मूरति देखि भरी अति चाय ।
 देहि असीस जियौ चिर वालक मनहि महासुख पाय ॥
 सावित्री गौरी जु सरस्वति रंभा अरु ऋषि नारि ।
 औरौ जिती देवनारी गन निज प्रभु जन्म विचारि ॥
 नाना द्रव्य पात्र भरि भरि लै द्विज पत्नी वपु धारि ।
 आईं सबै करैं दरसन नति रहीं कछुक निहारि ॥
 अंतरिच्छ गन्धर्व देव गन ऋषि चारन समुदाय ।
 स्तुति अरु नृत्य करैं बहु गावैं नाना वाद्य वजाय ॥
 नवद्वीप में गुणी जिते अरु नर्तक वाद्यक भाट ।
 सबै आय नाचैं जु प्रीत लहि अपने अपने ठाट ॥
 को नाचैं यह गावैं कौ हैं को आयौ गयौ कोय ।
 तहाँ तिन्हें जु संभारण कारण नहि काहू सुधि कोय ॥
 दुःख शोक सब ही खंडन भये अति ही प्रमुदित लोक ।
 आनंद विह्वल मिश्र भये तव मिटे जु मन के शोक ॥
 श्री आचारज रत्न और पुनि श्रीनिवास जु धाय ।
 मिश्र जु पास आय तिन कीन्हौ सावधान समुझाय ॥
 जात कर्म करवायौ नीकें ज्यौं विधि धर्म प्रमान ।
 नाना दान करैं तव मिश्र जू तुष्ट हेत भगवान ॥
 पायौ जितेक भेंट धन औरौ जितौ हुतौ कछु गेह ।
 दियौ सबै धन दान मिश्र जू आनंद भरे अछेह ॥
 जिते नर्तक गायक वंदिजन जन जु अकिंचन आन ।
 सब ही धन दै दै तहां कीनौ सब ही कौ सनमान ॥
 गृहिणी श्रीवास जु की तहां नाम मालिनी ताहि ।
 पत्नी संग आचाररत्न की तिहि छिन हिये उमाहि ॥

लै सिंदूर और जल जु हरिद्रा श्रीफल रंभा लाज ।

दै दै पूजै नारीगण कौ हर्ष समाज हि साज ॥

श्री अद्वैताचार्य की भार्या श्री ठकुरानी नाम ।

जगवंदित आचार्या हैं सब में वत्सल रस धाम ॥

आज्ञा लै आचारज जू की चली लैकै उपहार ।

बालक मुकुट रत्न देखन हित हिय उत्साह अपार ॥

कर्णफूल चक्री जु सलाको है अंगद कमनीय ।

सुवरन कंकन चूरी संख की कंठ हार बहु लीय ॥

कंचन मुँदरी रजतु वांक पद अरु पायल जु विसेस ।

अनवट विछियां नूपुरादि बहु आभूषण जु अशेष ॥

वधना हेम जडित कटि डोरी गूहि रेसम अति लाल ।

हस्त चरन के जिते आभरन लिये सब हर्ष विसाल ॥

घोती उपरैना अति सुन्दर पाट किनारी चारु ।

चित्र वर्ण पट सारी अरु बहु मुद्रा धन नहि पारु ॥

दूध धान गोरोचन हरदी कुकुम मलय सुवास ।

मंगल द्रव्य पात्र भरि के चढ़ि डोला छादित वास ॥

चली जु संग दास दासी लै बहु वस्त्रालंकार ।

भक्त भोज्य उपहारनि के संग लीये बहु भरि भार ॥

लै सब चली रली आनंद में सचि गृह पहुँची आय ।

आई वेगि सतिका गृह में आनंद कबो न जाय ॥

बालक की लखि अति सुठौनता आप कृष्ण निरधार ।

वर्ण मात्र विपरीत लखै इक अरु सब तिहि उनहार ॥

सब अंग निर्मान मनोहर कंचन प्रतिमा भान ।

सबही अंग सुलक्षण मय है सुन्दरता की खान ॥

बालक की लखि दिव्य देह दुति हृदय लही बहु प्रीति ।

वात्सल रस द्रवि चल्थो हियो तिहि सकै कौन कहि रीति ॥

दूध धान तिहि सिर धरि कीनौ आसिस करि भरि पूर ।

दोउ भाई चिरजीवौ ये हैं सब की जीवन मूरि ॥

डाकिनि साकिनि तें तिहिकें हिय कछु उपज्यो भय जोय ।

तिहि भय करि तिहि नाम निमाई धर्यौ नेह वस होय ॥

छट्टी पूजा कर्यौ तिहि दीनै भूषण वरुंग सार ।

कीनौ किन्हौ मिश्र कौ बहु विधि पुत्र सहित सत्कार ॥

सची मिश्र पूजी तिन्हें तिनकी पूजा लेय ।

आई निज गृह ठकुरानी जू हरपित आसिस देय ॥

ऐसैं जगन्नाथ श्रीशची जु पुत्र पाय श्री नाथ ।

पूरन भै वांछित गृह आई मनो रंक निधि हाथ ॥

भर्यो कलेवर जग आदर करि घर धन धान्य भंडार ।

दिन दिन अति आनन्दित मनमें लह्यौ सब सुख कौ सार ॥

मिश्र भागवत शुद्ध अलंपट शान्त दांत गुन वान ।

देह गेह धन भोग सु जिन कैं नहि नैंकौ अभिमान ॥

जितनौ धन मिलै आय मिश्र कौ सहजहि पुत्र प्रभाव ।

विष्णु प्रीति सब दान देहि ते बड़े उदार सुभाव ॥

नीलाम्बर जु भये हरपित मति लगन उच्च गृह देखि ।

कहैं मिश्र सों छिपि कै लच्छन महापुरुष अव रेखि ॥

अंग अंग के सुभ लच्छन करि और लगन अनुसार ।

देखियै ए तुव तनय तारि है सकल विमुख संसार ॥

कियौ कृपा करि ऐसैं शचिगृह आप कृष्ण अवतार ।

जो यह सुनै कहै गावै लहै गौर चरन निरधार ॥

लहि नरदेह सुनै न गौरगुन जो नर विषय अधीर ।

अमृतधुनि लहि पियें अज्ञ यौ महाविष गर्त कौ नीर ॥

वृथा जन्म ऐसौ भयौ ताकौ रम्यौ न प्रभु गुन मांझ ।

जनमत ही न मर्यौ सो क्यौ तिहि जननी भई न बांझ ॥

श्री चैतन्य अरु नित्यानंद जू भक्ति यज्ञ के यूप ।

श्री अद्वैत स्वरूप रूप रघुनाथ दास रस रूप ॥

इन सब को पद सिर करि वदन निज धन मम सुख रास ।

प्रभु जन्म लीला गाई यह कृष्णदास तिहि दास ॥

ताकौ वृजभाषा करि कीनौ यथा बुद्धि अनुवाद ।

रूप सनातन पद रज सिर धरि वेनी कृष्ण प्रसाद ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखण्डे महाप्रभु जन्म लीला नाम त्रयोदशपरिच्छेदः ॥

॥ चतुर्दश परिच्छेदः ॥

कथञ्चन स्मृते यस्मिन् दुष्करं सुकरं भवेत् । विस्मृते विपरीतं स्यात् श्रीचैतन्यं नमामि तं ॥

जै जै श्री चैतन्य शशि जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत आचार्य जु जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
प्रभु की लीला जन्म जो कछौ सूत्र यह ताहि । जसुदानंदन इहां जौ शचीसुनु भौ आहि ॥
करि संक्षेप कछौ जनम लीला अनुक्रम जोय । प्रभु सिसुलीला सूत्र कौ करै गणन अब जोय ॥

वन्दे चैतन्यदेवस्य बाल्यलीलां मनोहरां । लौकिकीमपि तामीशचेष्टया बलितान्तराम् ॥

शयन पाद उच्चान शिशु लीला आद्यहि ताहि । चरन दिखाये चिन्ह जुत तात मात कौ आहि ॥
दुहुंजन देखें गेह में लघुपद चिन्ह नवीन । तहां महाध्वज वज्र पुनि संख चक्र अरु मीन ॥
देखि दुहुनके अतिभयौ तब विस्मय हिय माहि । गृह पद चिन्ह ये कौनके निश्चय पायौ नाहि ॥
मिश्र कहैं जु गुपाल शिशु नीकै शिला जु संग । तेई जानौ मूर्ति धरि खेलें गृह बहु रंग ॥
जगे निमाई तिहींछन तिन किय रोदन आहि । अंक लेय तब शचीजू स्तन जु पिवायौ ताहि ॥
स्तनजु पिवावत पुत्र कै पद देखे तिहि भाय । बहुधा तेई चिन्ह लखि लिय तब मिश्र बुलाय ॥
देखि मिश्रजूकी भई आनन्दित मति जोय । गुप्त लिये जु बुलाय तिहि नीलाम्बर जू सोय ॥
नीलाम्बर जू चिन्ह लखि बोले हसि कैं ताहि । पहिलैं ही हम लग्न गनि लिखि राख्यौ है आहि ॥
लक्षण हैं बत्तीस जे महा पुरुष के जोय । यह सिसु के अंग देखि ये हैं सब लक्षण सोय ॥
तथाहि सामुद्रके—पंचसूक्ष्मः पञ्चदीर्घः सप्तरक्तः पट्टन्नतः । त्रिह्रस्वपृथुगम्भीरो द्वात्रिंशलक्षणो महान् ।
नारायण के चिन्ह करि कर पद युक्त है याहि । यह शिशु या सब लोक कौ करिहैं तारन आहि ॥
यहै जु शिशु करि है महा हरिजन धर्म प्रचार । याही करि कैं होयगौ दोउ कुल कौ निस्तार ॥
करिहैं ये सब लोक कौ धारण पोषन आहि । विश्वम्भर यह नाम है यह कारण करि याहि ॥
सबही द्विजन बुलाय कैं करौ महोत्सव ताहि । आजु भलौ दिन करौ तुम नाम करन अब याहि ॥
सुनिजु शची अरु मिश्र कैं आनन्द बाढ्यो हीय । द्विज दम्पति जु बुलाय कैं महा महोत्सव कीय ॥
तबही कितेक घाँस में प्रभु घुटुवन चले चाय । चमत्कार नाना तहां सबको दिये दिखाय ॥
सबनि कहायौ रुदन मिस हरे कृष्ण यह नाम । नारी सब जब हरि कहैं हसैं गौर धुति धाम ॥
तब ही कितेक घाँस में किय तिहि पद संचार । सिसु गन मिलि करि करें ते खेल विविध प्रकार ॥
खील खांड विव लाय इक घाँस शची जु आहि । दियौ पात्र भरि खाहु तू बैठि कछौ यह ताहि ॥
ऐसैं कहि गद् गेह में काज करन कछु आन । बाही छिन लुकि के जु सिसु लगे मृत्तिका खान ॥
आइजु देखि शची तबै हाय हाय करि धाय । लई छीन सो कछौ यौ माटी काहे खाय ॥
करि क्रन्दन बोले जु सिसु क्यौ तुम करौजु रोस । तुम ही माटी खान कौ दई कहा मम दोस ॥
खील खांड अरु अन्न सब माटी के जु विकार । यहै जु सोऊ मृत्तिका कहा जु भेद विचार ॥

माटी वपु अरु भक्त हू माटी लखौ विचार । बोलि सकौ अब कहा तुम देहु दोष अविचार ॥
अन्तर विस्मित होय शचि कहन लगी यों ताहि । जुगति जु माटी खानकी तोहि सिखाई काहि ॥
माटी के जु विकार हैं अन्न खांय बल होय । माटी खायें रोग अरु छीन होय वपु सोय ॥
माटी कौ जु विकार घट जल भरि लीगैं ताहि । धरियैं माटी पिंड जब सुखि जाय जल आहि ॥
अपने रूप दुराव करि कहन लगे प्रभु ताहि । काहे यह माता प्रथम नहि सिख्यौ मम आहि ॥
अब जान्यौ नहि आज तें माटी खेंहैं सोय । भूख लगै जब तुव स्तन दूध पियौगौ जोय ॥
ऐसैं कहि कैं मात की अंक चढ़े अति धाय । स्तन पान लागै करन प्रभु ईसत मुसिकाय ॥
इहि विधि नाना छल सु करि ईश्वरता जु दिखाय । बाल भाव कौ प्रगट करि पाछे लेंहि छिपाय ॥
अन्न पाक द्विज अतिथि कौ खायौ तीन जु वार । पाछें ताही विप्र कौ कियौ गुप्त निस्तार ॥
चोर एक लै गयौ श्री प्रभु कौ बाहिर पाय । कांधे चढ़ि आये जु तिहि ताकौ देय भुलाय ॥
व्याधि छलहि करिकै जु जगदीश हिरण घर जोय । खायौ हरि नैवेद्य प्रभु दिन हरिवासर सोय ॥
पार परोसिनि के घरनि सिसु सब सँगलै आहि । खांहि द्रव्य चोरीजु करि लरकनि मारैं ताहि ॥
सिसु सब आय शची जु कौ निकट निवेदन कीय । सुनि कैं शचीजु पुत्र कौ कछु उरहानो दीय ॥
काहे चोरी करौ तुम क्यौ सिसु मारौ सोय । काहे पर घर जातु हौ कहा न निज घर जोय ॥
सुनि कैं क्रोध भये प्रभु जाय गेह मधि सोय । जिते पात्र घर में हुते फोरि फेंकि दिय जोय ॥
गोद लेय तब शची जू किय तिन कौ संतोष । लजित भये जु प्रभु तबै जानि आपनौ दोष ॥
इक दिन मृदु कर सों कियौ माता के जु प्रहार । तिनकौ मूर्छित देखिकैं रोदन करत अपार ॥
तिय गन कहैं जु नारियल देहु आनि जौ याहि । स्वस्थ होय तिहि पायके तुव जननी ये आहि ॥
तब प्रभु बाहिर जायकें लाये द्वै फल सोय । भई तबै विस्मित सकल देखि अपूरव जोय ॥
स्नान करत हैं सुरधुनी कवहं सिसु लै संग । आई पूजन देवता कन्या गन हिय रंग ॥
स्नान सुरधुनी करि लगी पूजा करन सुभाय । कन्यागन कैं बीच श्री प्रभु जू बैठे जाय ॥
तिनहि कहैं पूजौ हमें हम हैं सब देवेश । गंगा दुर्गा दासिका मम किंकर जु महेश ॥
आपुन चंदन और तिहि पहिरैं फूलन हार । रंभादिक नैवेद्य सब काढ़ि कियौ आहार ॥
कहैं जु कन्या क्रोध करि सुनौ निमाई बात । तुम जु ग्राम संबंध करि लगौ हमारे आत ॥
हम सबसौं ऐसैं करौ उचित नहीं इहि भाय । सौंज देवता की सु जिनि लेहु न करौ अन्याय ॥
प्रभु बोले तुम सबनि कौ दियौ यहै वर जोय । तुम सबके हैं हैं जु पति सुन्दर परम सु सोय ॥
पंडित जुवा विदग्ध अति और धान्य धनवान । सात सात हैं हैं तनय ते चिरायु मतिमान ॥
वर सुनि कैं कन्यानिके अन्तर अति संतोष । बाहिर तिन सों अति खिन्न करिकैं मिथ्या रोस ॥
कोऊ लै नैवेद्य कौ कन्या गई पलाय । ताकौ कहैं पुकारि हरि करिजु रोष अधिकाय ॥
जो मोकों नैवेद्य नहि देहु कृपन तुम होय । तौ हैं हैं भरता विरध चारि सौति हूं सोय ॥

यह सुनिकें तिन सबनि कौ भय मन उपज्यौ कोय । को जाने इन में कोऊ दैव अधिष्ठित होय ॥
 तब नैवेद्यहि आनिकें सनमुख धर्यो जु ताहि । प्रभु नैवेद्य हि खाय तिहि दियौ इष्ट वर आहि ॥
 इही भांति चापल्य करि सवन खिभावै सोय । सवही पावै अधिक सुख नहि पावै दुख कोय ॥
 श्री बल्लभ आचार्य की तनया लक्ष्मी नाम । इक दिन आई देवता पूजन हित अभिराम ॥
 स्नान कियो गंगाजु तिहि प्रभुजो देखी ताहि । देखत हीं प्रभु कौं भयो साभिलास मन आहि ॥
 प्रभु देखे लक्ष्मी जु कें प्रीति लही अति हीय । प्रीति साहजिक दुहुनकी तव तिहि उदौ जु कीय ॥
 बाल भाव करि छन्न सो तऊ निश्चै भो ताहि । नित्य शुद्ध जो प्रीति है यहै रीति तिहि आहि ॥
 दोउनि देखे दुहुनि कें भयो हृदैं हुल्लास । करि जु देव पूजा छलहि कियो दोउनि प्रकास ॥
 पूजा मोहि जु प्रभु कह्यौ हों जु महेश्वर सोय । मम पूजा करि पाय हौ मन वांछित वर होय ॥
 दिये पुष्प माला तवै लक्ष्मी अंगहि ताहि । गरैं माल मल्ली जु की दै किय वंदन आहि ॥
 प्रभु तिहि पूजा पायकें लगे हंसन सुख सार । तिन कौ भाव श्लोक पढ़ि कियो जु अंगीकार ॥

संकल्पो विदितः साध्वी भवतीनां मदर्चनात् इति ।

इहिविधि लीला करि गये विवि गृह नेह अधीर । समभि सकै चैतन्य की को लीला गंभीर ॥
 चापल लखि चैतन्य कौ सवै प्रेम अधिकाय । शची मिश्र कों निकट तें देहि उरहनो आय ॥
 एक घौस देवी शची खिभि करि पुत्र हि सोय । चली पकरिवे पुत्र कौं भजे धाय करि जोय ॥
 जूठ गत में त्यक्त मृत भाजन परे जु आहि । सुख सों विश्वम्भर प्रभु बैठे ऊपर ताहि ॥
 शची आय तिनसों कह्यौ अशुचि छियो तुम काहि । स्नान जाय गंगा करौ भौ अपवित्रजु आहि ॥
 सुनि अपवित्र जु आप कौं कह्यौ मात सों ज्ञान । विस्मित है शचि सुरधुनी करवायो जू स्नान ॥
 कवहूँ शपन कियो शची लै करि पुत्रहि ताहि । देखे दैवत लोक करि भरयो भवन सब आहि ॥
 शची कहैं हे पुत्र तुम तातहि लेहु बुलाय । चलै तनय बाहिर तवै आज्ञा जननी पाय ॥
 चलते नूपुर तिहि वजें भुन भुन धुनि बहु कीय । चमत्कार सुनिकें भयो तात मात कें हीय ॥
 मिश्र कहैं अद्भुत बड़ी यहै कथा है सोय । सन्य चरन सिसुकेन में नूपुर धुनि क्यौं होय ॥
 शची कहैं देख्यौ जु में अरु ईक अद्भुत जोय । दिव्य दिव्य जन आयकें आंगन भरिलिय सोय ॥
 करैं कुलाहल व तहां ताहि सकौं नहि जान । स्तुति काहू की करत है किय ऐसै अनुमान ॥
 मिश्र कहैं कछु होहु किन कछु चिंता नहि सोय । विश्वम्भर के कुशल हो यहै चाह मम जोय ॥
 देखि चपलता पुत्रकी मिश्र एक दिन आहि । धर्म सिखायौ तव तिन्हौ करि बहु भर्त्सन ताहि ॥
 स्वप्न रैन ताही जु मधि देख्यौ इक द्विज आय । कहैं मिश्रसौं कछुक सो वचन क्रोध के भाय ॥
 मिश्र तुम्हें नहि पुत्र कौ है स्वरूप कौ ज्ञान । भर्त्सन ताहन करत हौ करि जु पुत्र अभिमान ॥
 मिश्र कहैं सुर सिद्ध मुनि काहे यह नहि होय । होहु बडौ कैसौ जु किन तनय तऊ मम सोय ॥
 लालन सिद्धा पुत्र कौं करै पिता कौ धर्म । हम न सिखावैं तौ जु क्यौं जानें धर्महि मर्म ॥

विप्र कहैं तुव पुत्र जो देव श्रेष्ठ है आहि । सहज सिद्ध ही जान जो सीख व्यर्थ है ताहि ॥
 मिश्र कहैं क्यौं नाहि हो पुत्र आप भगवान । तऊ पिता कौ धर्म तिहि सिद्धा करै सुजान ॥
 दोऊ इहि विधि सों करै धर्म विचार प्रमान । केवल वत्सल मिश्रकें नहि जानै कछु आन ॥
 यहै जु सुनि द्विज गयो तव आनंदित अति होय । जागे मिश्र भये तवहि विस्मित अतिही सोय ॥
 सिसु लीला इहि विधि करैं गौरचंद्र सुखकंद । तात मात के बडै अति दिन दिन ही आनन्द ॥
 कछुक दिवस में मिश्र जू खरी पुत्र कर दीय । संयोगी अक्षर जिते कछु दिन में सिखि लीय ॥
 सिसु लीला के सूत्र कौ अनुक्रम कियो प्रकास । कह्यौ जु इहि विस्तारि कै श्रीवृन्दावन दास ॥
 याही ते संक्षेप करि सूत्र कियो है याहि । कह्यौ नहीं पुनिरुक्ति भय करि विस्तारहि ताहि ॥
 रूप सनातन पद कमल रज ही की जिहि आस । चरित कछुक चैतन्य कौ कहैं कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखौ वृजभाषाहि प्रकास ॥
 इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे बाल्यलीलावर्णनं नाम चतुर्दशपरिच्छेदः ॥

पंचदस परिच्छेदः

कुमनाः सुमनस्त्वं हि याति यस्य पदाब्जयोः । सुमनोऽर्पणमात्रेण तं चैतन्यं प्रभुं भजे ॥
 जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द । जय अद्वैताचार्य जू जय भक्तति के वृन्द ॥
 लीला वय पौगण्ड की सूचन करिये ताहि । प्रभु कौ वय पौगण्ड में पढ़िबौ मुख्यहि आहि ॥
 पौगण्डलीला चैतन्यकृष्णस्यातिसुविस्तृता । विचारम्भमुखा पाणिग्रहणान्ता मनोहरा ॥
 परिणत गंगादास पै पढ़ै व्याकरण सोय । श्रवण मात्र किय कंठ सब सूत्र वृत्ति गण जोय ॥
 अल्पकाल में भये तिहि टीका में जु प्रवीन । पढ़ुवा जे चिरकाल के ते सब भये जवीन ॥
 एक दिवस श्री शची के पद प्रणाम करि जोय । कहैं प्रभु मोकौं जननि दान देहु एक सोय ॥
 कहैं शची जो मागि हौ तुम हम दैहैं ताहि । प्रभु जु कहैं हरिवासरहि अन्न न खावो आहि ॥
 शची कहैं नहि खाय हैं भली कही यह जोय । तिहि दिन तें लागी करन व्रत एकादसी सोय ॥
 विश्वरूप की तरुनता देखि मिश्र जू ताहि । कन्या मांगि विवाह हित मिश्र कियो मन आहि ॥
 विश्वरूप सुनिकें यहैं घरतें चले पलाय । करि सन्यासहि तीर्थ को करिवे गये जु धाय ॥
 मिश्र पुरन्दर को भयो सुनि कें दुखी जु हीय । तव प्रभु माता पिता कौं आस्वासन बहु कीय ॥
 विश्वरूप संन्यास किय भलौ भयो निरधार । पिता जु कुल माता कुलहु दोउ किये उद्धार ॥
 हम करि हैं तुव सबनि कौ सेवन नीकें आहि । सुनि कें मन संतुष्ट भौ तात मात जे ताहि ॥

ताम्बूल औ नैवेद्य कौं एक दिन प्रभु तिहि खाय । होय अचेतन भूमि पर गिरे तबै अकुलाय ॥
 अस्तव्यस्त मातापिता मुखमें जल दिय ताहि । स्वस्त होय प्रभु कहैं अति अद्भुत वानी आहि ॥
 विश्वरूप ह्यांते जु मुहि कहैं लै गयौ सोय । मोहि कह्यौ संन्यास तू करि आज्ञा मम जोय ॥
 मैं तिन सौं जु कह्यौ मम माता पिता अनाथ । बालक हौं संन्यास की अवहीं तैं कहा गाथ ॥
 तात मात जे सेवनहि करि हों गृही जु होय । याही तैं मम तुष्ट है है लक्ष्मीपति सोय ॥
 विश्वरूपजू सुनि यहै तब मोहि दियौ पठाय । मातासौं कहियौ जु तुम कोटि प्रणत मम जाय ॥
 नाना लीला इही विधि करैं गौरहरि जोय । लीला कारन कौन यह समझि सकै नहि कोय ॥
 ऐसैं केतिक दिवस रहि मिश्र गये परलोक । माता पुत्र जु दुहुनि कें बाढ़्यो अति हिय शोक ॥
 सकल बंधु बांधव जिते दुहुनि प्रबोध्यौ आय । ईश्वर है कें वेद विधि किय पितृ क्रिया बनाय ॥
 कितेक दिनमें प्रभु हियें कियौ चितवन सोय । हैं गृहस्थ अब चाहिये गेह धर्म है जोय ॥
 गृहिणी विनु गृह धर्म जो नाहीं सोभित होय । ऐसैं चित्य विवाह हित भौ प्रभु कौ मन सोय ॥

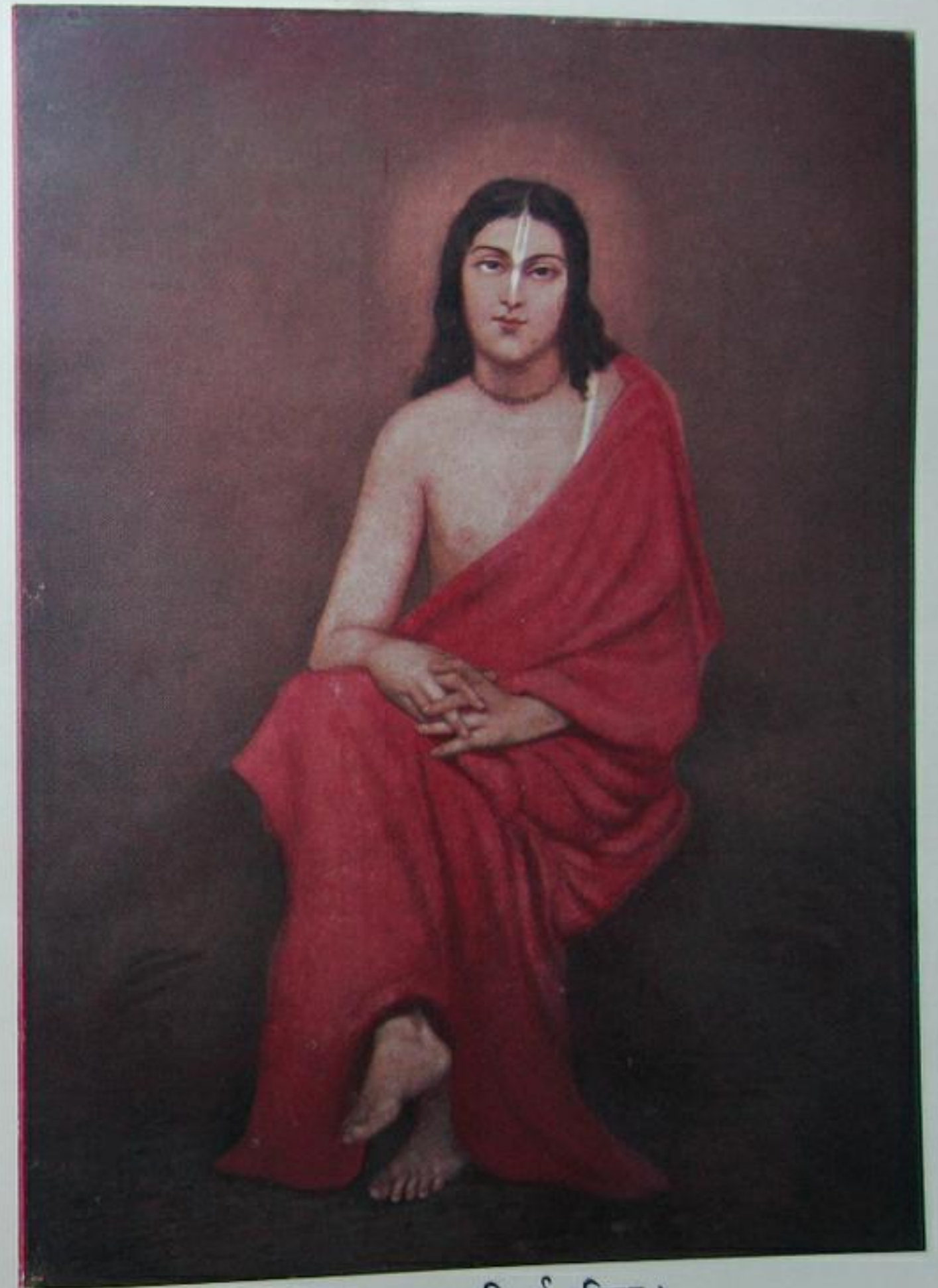
तथाहि—न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते ॥

पढ़ि आवत है एक दिन दैव जोग प्रभु आहि । श्रीवल्लभ आचार्य की कन्या देख्यौ ताहि ॥
 सिद्ध भाव जो दुहुनि के तब तिन कियौ प्रकास । आयौ वनमाली घटक दैव योग सचि पास ॥
 जानि शची क हृद की किय संबंध जु ताहि । लक्ष्मी कौ जु विवाह किय शची मूनु जू आहि ॥
 वर्णन तिहि विस्तार किय श्रीवृन्दावन दास । लीला वय पौगण्ड की यहै सूत्र परकास ॥
 लीला वय पौगण्ड की सो है बहुत प्रकार । किय वृन्दावन दास जू ताकौ अति विस्तार ॥
 याही तैं दिङ्मात्र तिहि इहां दिखाई सोय । सब चैतन्य जु मंगलहि लोक ख्याति है जोय ॥
 रूप और रघुनाथ के चरण कमल जिहि वास । गौर चरित अमृत कहैं कृष्णदास तिहि दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकाश ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे पौगण्डलीलावर्णनं नाम पञ्चदस परिच्छेदः ॥

षोडशपरिच्छेदः

कृपा सुधासरिद् यस्य विश्वमाप्लावयत्यपि । नीचगैव सदा भाति तं चैतन्यप्रभुं भजे ॥
 जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द । जय ससि श्री अद्भुत जय गौर भक्त के वृन्द ॥
 तथाहि—जीयात्कैशोरचैतन्यो मूर्तिमत्या गृहाश्रमात् । लक्ष्म्यार्चितोऽथ वाग्देव्या दिशां जयि जयच्छलान् ॥
 अब लीला कैसोर जो सूचन करिये ताहि । सिध्य समूह पढ़ाईवे किय आरंभ जु आहि ॥



षोडश वर्षीय—अध्यापक निर्माई पण्डित ।

सत सत सिष्य सदा जु सँग अध्यापन है जोय । व्याख्या सुनि सब लोककें चमत्कार मन होय ॥
 सब पण्डित सब शास्त्र करि लहैं पराजय जोय । विनय रीति जय हेतु करि दुख काहू नहि होय ॥
 नाना उद्धतता करें सिष्य समूहन संग । गंगा जू के मध्य जल केलि करें बहुरंग ॥
 कितेक दिन में प्रभु कियौ वंग गमन अभिराम । जहाँ जाय करवावई संकीर्तन हरि नाम ॥
 विद्या कौ जु प्रभाव लखि चमत्कार हिय होय । सत सत पढ़ुवा आयकें लगे पढ़न सब सोय ॥
 तपन मिश्र जिहि नाम है तिही देस द्विज आहि । निश्चै साधन साध्य कौ सकैं न करिकें ताहि ॥
 बहु सास्त्रनि के वाक्य करि भयौ चित्त भ्रम जोय । उत्तम साधन साध्य कौ नहीं जु निश्चै होय ॥
 देख्यौ स्वप्न कहै जु द्विज सुनौ तपन जू ताहि । गमन करौ पण्डित निकट नाम निमाई जाहि ॥
 ते तुव साधन साध्य कौ करि है निश्चै आहि । ते ईश्वर साक्षात हैं नहि संसै कछु आहि ॥
 स्वप्न देखि कै मिश्र सो आयौ प्रभुपद पास । तवै स्वप्न वृत्तांत कौ कियौ निवेदन तास ॥
 साधन साध्य कहाँ जु प्रभु है प्रसन्न अति ताहि । नाम कीर्तन कर्यौ यह किय उपदेश जु आहि ॥
 प्रभु समीप नदिया वसौ यह इच्छा तिहि हीय । जावौ तुव वाराणसी प्रभु आज्ञा तिहि दीय ॥
 तुमकौ दरसन होयगौ तहां हमारे संग । कियौ मिश्र कासी गमन आज्ञा पाय अभंग ॥
 प्रभु लीला जु अनन्त हि समुझि सकैं नहि कोय । क्यों निज संग छुड़ाय कें पठ्ये कासी जोय ॥
 कियौ महा हित लोककौ इहिविधि वंगहि जाय । किय वैष्णव सनमान दै औ पण्डितनि पढ़ाय ॥
 इहि विधि प्रभु वंगहि करें नाना लीला आहि । हां नदिया लक्ष्मी भई विरह दुखी अति ताहि ॥
 प्रभु के विरह भुजंग ते लक्ष्मी डसी जु आहि । विरह सर्प विष ज्वाल करि भौ परलोक जु ताहि ॥
 जानि लिये प्रभु हिये सों अन्तर्यामी जोय । आये प्रभु निज देस कौ जानि शची दुख सोय ॥
 घर आये तब महाप्रभु बहुधन जन लै आहि । दुःख विमोचन शची कौ कियौ तत्व कहि ताहि ॥
 लै कें सिष्य समूह फिरि विद्या कौ जु विलास । विद्याबल करि जीति सब करि औद्धत्य प्रकास ॥
 ठकुरानी विष्णुप्रिया तिहि परिणय तब कीय । दिग्विजयी कौ पराजय तहां जु प्रभु करि दीय ॥
 किय वृन्दावन दास जू याकौ बहु विस्तार । कहाँ नही गुण दोष तिहि जहां जु प्रगट विचार ॥
 सोइ अंस कहौ तिन्हें हों करि प्रणत अपार । तिहि सुनि दिग्विजयी कियौ आपुन कौ धिकार ॥
 रात्रि चांदनी में प्रभु सिष्य समूहनि संग । बैठे गंगातट करें विद्या कौ जु प्रसंग ॥
 दिग्विजयी इक तिहि समें आयौ तहां जु सोय । बंदन करि सुरधुनी कौ प्रभु पै आयौ जोय ॥
 आदर करिकें महाप्रभु बैठायौ तब ताहि । हियें अवज्ञा करि कहै दिग्विजयी यों आहि ॥
 पढ़ौ पढ़ावो व्याकरण पंडित निमाई नाम । बाल्य शास्त्र मधि लोक तुव कहैं गुननि कौ ग्राम ॥
 जानौ ताहु में करौ अध्यापन जु कलाप । सुन्यौ फकिता तें तुव सिष्यन कौ संलाप ॥
 तिहि प्रभु कहैं पढ़ावई हिय अभिमान बनाय । सिष्य न समुझैं ताहि कछु हों न सकौ समुझाय ॥
 कहां तुम सर्व शास्त्र में कविता में सु प्रवीन । कहैं तो हम सब सिष्य जु ये हैं पढ़ुवा जु नवीन ॥

मुनिवै कौ कहु काव्य तुव है मन मेरी आहि । जो तुम करौ कृपा जु करि वर्णन गंगा याहि ॥
लाग्यो वर्णन करन सो मुनि गर्वित छिन हीय । घरी एक में श्लोक शत वर्णन गंगा कीय ॥
महाप्रभु मुनि के कियौ तिहि सत्कार अपार । तुम सम पृथिवी में नहीं और सुकवि निरधार ॥
तुव कवित्त के अर्थ कौ समुझै सक्ति हि काहि । भलैं जु जानौ अर्थ तुम के भारती जु ताहि ॥
श्लोक एक कौ अर्थ जौ कहाँ जु निज मुख आहि । तौ सब लोक हिये वडौ सुख पावै सुनि ताहि ॥
दिग्विजई पूछ्यो जु तुव श्लोक अर्थ हित ताहि । श्लोक सतनि में इक श्लोक प्रभु पढ्यो जु ताहि ॥

तथाहि—महत्वं गंगायाः सततमिदमाभाति नितरां, यदेषा श्री विष्णोश्चरणकमलोत्पत्तिसुभगा ।

द्वितीय श्री लक्ष्मीरिव सुरनरैरर्च्यचरणा, भवानी भक्तुर्था शिरसि विभवत्यद्भुतगुणा ॥

कहौ इहौ कौ अर्थ तुम प्रभु जू कछौ जु ताहि । दिग्विजई विस्मित भयो प्रभु सौं पूछे आहि ॥
बहुधा भंभा बापुवत श्लोक पदे हम आहि । कैसै कंट भयो जु तुव श्लोक एक मधि ताहि ॥
कहै जु प्रभु वर देव करि ज्यौं तुव कविवर आहि । श्रुतिधर कोऊ होत है ऐसैं वर करि ताहि ॥
परिहृत अर्थ कियौ जु तिहि हिय में है संतोष । कहै जु प्रभु याके कहौ जेहैं गुण औ दोष ॥
परिहृत कहै जु दोष कौ यामें नहिन प्रकास । अलंकार उपमा सुगुण और कहु अनुप्रास ॥
कहै महाप्रभु कहै जु हम करौ नहीं जो रोस । श्लोक तुम्हरे इहीं मधि कहौ जु गुन औ दोस ॥
प्रतिभा कौ तुव काव्य है जौ दैवत संतोष । भलैं विचारें ते जु तिहि जानियें गुणरु दोष ॥
ताते याही श्लोक कौ नीकें करौ विचार । कवि कहै जो हम कछौ सोई श्रुति कौ सार ॥
व्याकरणौ तुम नहीं पदे अलंकार निरधार । तुम कैसै के जानि हो इहि कवित्त कौ सार ॥
कहै जु प्रभु याते तुमें पूछत हैं इहि भाय । गुण औ दोष विचारि के हमें देहु समुझाय ॥
अलंकार नाहिन पदे श्रवण कियौ कहु ताहि । ताते यामें देखियें बहु गुन दोष जु आहि ॥
कहै जु कवि देखे कही कहा जु गुण औ दोष । कहै जु प्रभु कहै सुनौ करौ नहीं जो रोस ॥
पंचदोस औ पंच ही अलंकार है याहि । क्रम हो करि हम कहत हैं करि विचार सुनि ताहि ॥
है अवमृष्ट विधेय अंस दोस दोष टां चीन । है पुनरुक्ति विरुद्धमति भग्नक्रम ये तीन ॥
गंगा कौ जु महन्व है या में मूल विधेय । इदं शब्द अनुवाद के पाछें है अभिधेय ॥
आगे कहि जु विधेय अनुवाद कही फिरि ताहि । याहीतें या श्लोककौ वृथा अर्थ किय आहि ॥

तथाहि—अनुवादमनुक्तैव न विधेय मुदीरयेत् ॥

द्वितीय श्री लक्ष्मी इहां है द्वितीयत्व विधेय । गौन भयो जु समास में नास भयो अभिधेय ॥
द्वितीय शब्द विधेय सौं पर्यौ बीच समास । लक्ष्मी सौ समता जु करि अर्थ कियौ जु विनास ॥
है अवमृष्ट विधेय अंस इहीं दोस कौ नाम ॥ सावधान आगे सुनौ और दोष इक वाम ॥
दियौ भवानी भक्तु पद पायौ बहु संतोष । याही कहै विरुद्धमति यहै महा है दोष ॥

शब्द भवानी कहै सो भव गृहीणी कौ आहि । भान होय पति द्वितीय कौ भर्ता कहै जु ताहि ॥
शिव पत्नी भर्ता सुपद सुनतें ही जु विरुद्ध । शब्द करै जु विरुद्ध मति सौं न शास्त्र में शुद्ध ॥
द्विज पति भर्ता जु के देहु हाथ में दान । सुनत भयो इहि शब्दके विवि भर्ता कौ ज्ञान ॥
विभवति क्रिया समाप्ति पद फेरि विशेषण आहि । अद्भुतगुन पुनरुक्त यह दूषण वडौ जु ताहि ॥
तीन चरण में देखिये अनुप्रास कौ पाँप । एक चरण लखिय तासों भग्नक्रम ये दोस ॥
यद्यपि नीकें पांच हैं अलंकार इहि जोय । इनही पांचौ दोष करि अलंकार नास होय ॥
अलंकार दस होय जौ एकहि में जु प्रकास । करै एक ही दोस सब अलंकार गुन नाय ॥
जैसे वपु सुन्दर सकल भूषण भूषित आहि । एक दाग ज्यौं कुष्ठ कौ करै निंदा अति ताहि ॥
तथाहि भरत मुनिः—

रसालंकारवत् काव्यं दोषयुक् चेद्विभूषितं । स्वादुः सुन्दरमपि शिवत्रैलोक्येन दुर्भगम् ॥

अलंकार ये पांच अव तिन कौ सुनौ विचार । द्वै शब्दालंकार है गुण अर्थालंकार ॥
शब्दालंकृति त्रय चरण अनुप्रास है ताहि । पुनरुक्त वदामास है श्री लक्ष्मी पद आहि ॥
प्रथम चरण के मध्य में पंच तकार जु पांति । तृतीय चरण मधि पदय के पंच रेफ तिहि भांति ॥
चतुर्थ चरण के बीचमें चारि भकार प्रकास । अनुप्रास या भांति है शब्द अलंकृत नास ॥
श्रीलक्ष्मी इन शब्द करि एक वस्तु है उक्ति । प्राय लगति पुनरुक्ति है नाहि न जू पुनरुक्ति ॥
श्रीयुत लक्ष्मी अर्थ मधि अर्थहि कौ जु विभेद । पुनरुक्ति वदामास करि शब्दालंकृति भेद ॥
अर्थालंकृति लक्ष्मीरिव है उपमा जु प्रकास । अर्थालंकृति आन है नाम विरोधाभास ॥
कमल जन्म सुर सरित तें सबही को जु सुबोध । गंगा जन्म जु कमल तें है अत्यंत विरोध ॥
इहां विष्णु पद पद्म तें गंगा जन्म जु आहि । इहां विरोधालंकृती करी चमत्कृति ताहि ॥
प्रभु अचिन्त्य शक्तिहि भयो गंगा कौ जु प्रकास । याही तें जु विरोध नहि है जु विरोधाभास ॥
तथाहि—अम्बु तमम्बुनि जातं कचिदपि न जातमम्बुजादम्बु । सुरभिदि तद्विपरीतं पादाम्बोजान्महानदी जाता ॥
साध्य वड़ाइ गंगा की साधन तिहि निरधार । विष्णु पाद उतपत्ति यह अनुमानालंकार ॥
एहै पंच अलंकृतिहि पंच दोष हैं ताहि । ज्यौं सूक्ष्म जु विचारियें तौ अपार ये आहि ॥
प्रतिभा की कविता जु में तुमकौ देय प्रसाद । अविचारहि जु कवित्त में परै दोष कौ वाद ॥
करै कवित्त विचारि के निरमल वह ही होय । सहित अलंकृति अर्थ भौ करै चमत्कृति सोय ॥
मुनि प्रभुके व्याख्यान दिग्विजयी विस्मित होय । मुख निकसत नहि वचन है प्रतिभास्तंभित सोय ॥
पटुवा बालक नें कियौ मेरी मति कौ लोप । जान्यौ देवि सरस्वती मोकौ कीनौ कोप ॥
किय निमाइ विख्यान जे मानुष शक्ति न होय । याके मुख रहि सरस्वति बोलैं जान्यौ सोय ॥
यही भावना करि कहै पंडित सुनौ निमाइ । तुम व्याख्या सुनि के भये हम विस्मित जु वनाइ ॥
अलंकार नाही पदे नहीं शास्त्र अभ्यास । काहे तें ए तुम सकल कीने अर्थ प्रकास ॥

सुनिकें ताके प्रश्न कौ प्रभु बहुरंगी आहि । जानि हृदय ताकौ दुखी करिकें भँगी ताहि ॥
 भली भुरी जानें न हम शास्त्रविचारहि जोय । जो कहायो सरस्वती वानी कही जु सोय ॥
 दिग विजई करिकें यही करिकें निहचै ताहि । शिशु द्वारा देवि करयो मोहि पराजय आहि ॥
 विनती करिहीं आजु तिहि करिकें जप अरु ध्यान । बालक द्वारा है कर्यौ एतौ मुहि अपमान ॥
 करबायो है वास्तवै सरसुति पद अशुद्ध । औसर बीच विचारि कें ठाँपि दई तिहि बुद्धि ॥
 हास्य करन लागे तवै सवै शिष्य गन आहि । तिन सब कौं जु निषेधि प्रभु बोले पण्डित ताहि ॥
 महा कविके मुकुटमणि तुम बहु पण्डित ताहि । बाहिर निकसी काव्यकी वानी असमुख आहि ॥
 कहिबे चाहत है कछु उत्तर आवत नाहि । तब तौ कछु विचारि कें भौ व्याकुल मन माहि ॥
 तुव कविता इहि भाँतिहै ज्यौ गंगाजल धार । तुमसम कविजु और कोउ लख्यौ नहीं निरधार ॥
 भवभूति सु जयदेव कवि औ कवि कालीदास । तिन सब के कवितानि में है जु दोष परकास ॥
 यही अल्प करि मानिये गुन औ दोष विचार । कविता करिबे की सकति वही वाखानी सार ॥
 शैशव कौ चापल्य हम कछु ना लेहु सुजान । नही हो सकै आप कें हम तौ शिष्य समान ॥
 आजु जाहु घर कालि हम मिलिहैं और जु वार । सुनिहैं पुनि मुख आपके सवही शास्त्र विचार ॥
 इही भाँति निज घर गये दोऊ जन सुविचार । जाय विप्र घर सरसुती किय आराधन सार ॥
 स्वप्न बीच में सरसुती कय आदेश जु ताहि । ईश्वर ही साक्षात् करि प्रभु कौ जानौ आहि ॥
 तिन आगें मो शक्ति नहिँ करिवै कछु विचार । तातें तिहिँ दिग जाय कौ प्रणति करौ बहुवार ॥
 आय तहीं परभात ही प्रभुपद सरनजु लीन । कृपा महाप्रभु की जु तिहिँ खण्डन बंधन कीन ॥
 ए लीला वरनी सकल भी वृन्दावन दास । जो कछु है जु विशेष सो इहाँ करी जु प्रकास ॥
 श्री चैतन्य गोस्वामि की लीला अमृत धार । वृत्ति होती सब इंद्रियें श्रवन सुनत निरधार ॥
 श्री रूपहि रघुनाथ के चरननि जाकै वास । श्री गौर चरित अमृत कौ कहत कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । गौर चरित कौ करत है वृजभाषा हि प्रकास ॥

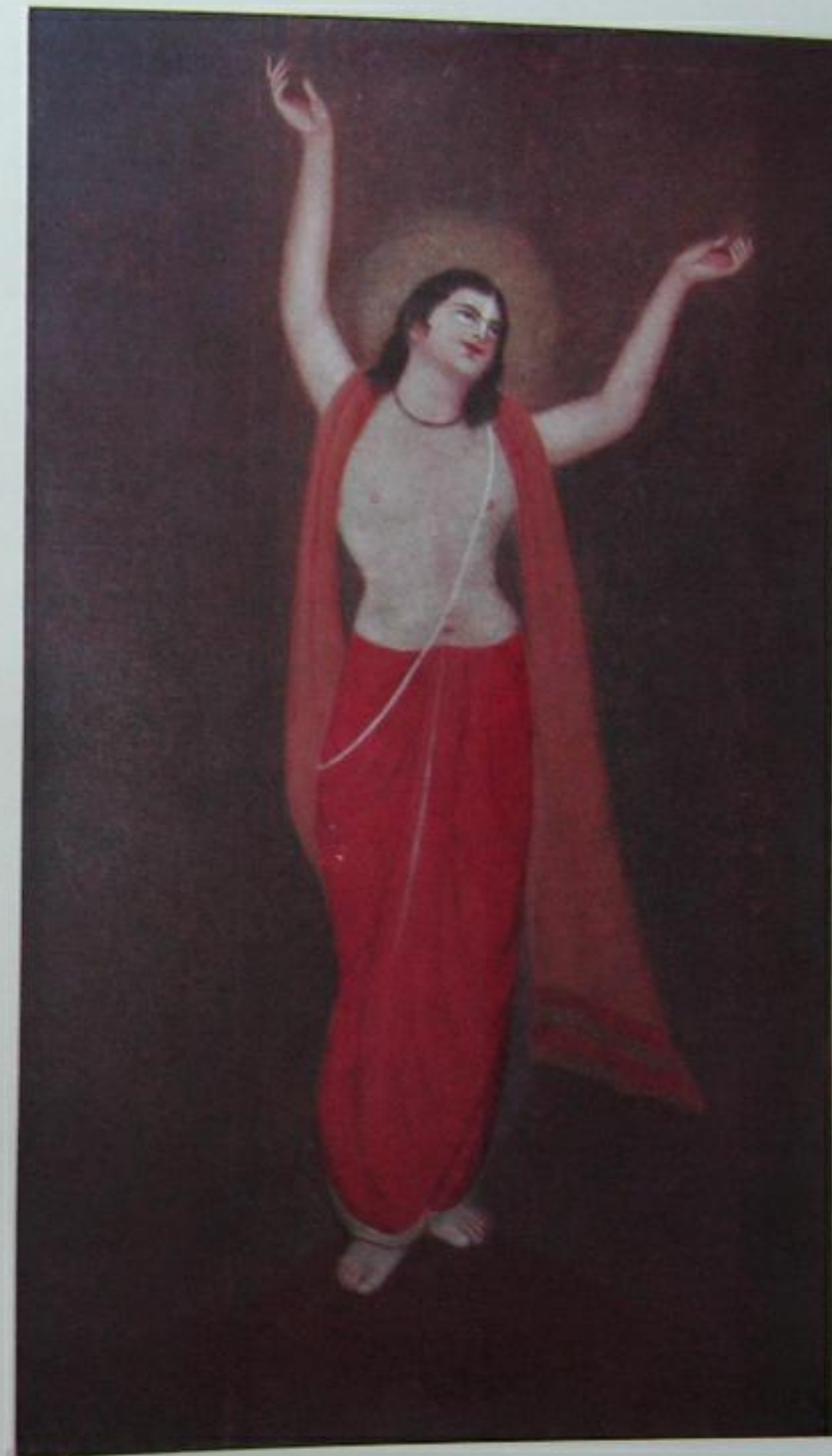
इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे कैसोरलीलावर्णनं नाम षोडशपरिच्छेदः

सप्तदश परिच्छेदः

बन्धे स्वैराद्भुतेहं तं चैतन्यं यत्प्रसादतः । यवनाः सुमनायन्ते कृष्णनामप्रजल्पकाः ॥

जय जय प्रभु चैतन्य जू जै श्री नित्यानंद । जय जय श्री अद्वैत जू जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
 जो लीला कैशोर तिहिँ सुख जु गन किय ताहि । जीवन लीला सुख कौ अनुकम करियै आहि ॥

विद्यासीन्दर्पसङ्गेश सम्भोगनृत्तकीर्तनैः । प्रेम नाम प्रदानैश्च गोरो दीव्यति धीवने ॥



गया से प्रत्यावर्तनकारी प्रेमाविष्ट श्रीगौरांग

अंग विभूषन अंग है जीवन के जु प्रवेश । चंदन मान्य सुदिन्य तिहि वस्त्र दिव्य सब वेश ॥
 विद्या के औद्धत्य करि गने न काह सोय । पण्डित सब ही जीति करि तिन्है पढ़ावै जोय ॥
 बात रोग के छल जु करि कीनों प्रेम प्रकास । जन गृथनि करि वंचना करै जु विविध विलास ॥
 गमन गयाकों महाप्रभु तव हीं कियो जु आहि । भयो जु ईश्वर पुरी संग मिलन तहांदे ताहि ॥
 दीक्षा कें पीछे कियो प्रभु प्रेम प्रकास । फेरि आगमन देस करि कियो प्रेम विलास ॥
 तवै मिलन अर्द्धत को प्रेम दान सचि सोय । विश्वरूप दर्शन लखी श्री अर्द्धतहि जोय ॥
 गृह मधि प्रभु अभिषेक जू कीनो श्रीनिजवास । खाट बैठि प्रभु कियो निज ऐश्वर्य प्रकास ॥
 नित्यानंद स्वरूप को तवै आगमन आहि । प्रभु को मिलि पायो तिन्ह पड़भुज दरसन ताहि ॥
 तिन को पड़भुज प्रयसही प्रभु दरसन दियो जोय । शंख चक्र पकंज गदा धनुष वेणु धर सोय ॥
 तवै चतुर्भुज भये प्रभु ललित त्रिभंगी सोय । द्रुं कर वेणु वजावहीं शंख चक्र कर दोय ॥
 केवल वंशीवदन प्रभु भये द्विभुज पुनि सोय । पीत वसन अरु श्याम तनु नंद नंदन है जोय ॥
 तव हीं नित्यानंद को व्यास जु पूजा सोय । नित्यानंद आवेस करि मूसल धार्यो सोय ॥
 राम कृष्ण भाई जु द्रुं लखै शची तिहि वार । तवै जगाई माधवाई दोउन किय निस्तार ॥
 सात प्रहर प्रभु के तवै भयो जु भावावेश । जैसे जैसे भक्तगन तिनतें लखे विसेश ॥
 शुक्लाम्बर के कियो तव तंडुल भक्षण आहि । हरेनाम या श्लोकको किय विवरण तव ताहि ॥

हरे नाम हरे नाम हरेनामैव केवल । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गति रन्यथा ॥

नाम रूप कलिकाल में है जु कृष्ण अवतार । नाम हि तें है है तहां सब जग को निस्तार ॥
 दाढ्य हेत हरि नाम की उक्ति बार वार आहि । जड़ लोकनि में ज्ञातही एव कार फिरि ताहि ॥
 केवल पद करि फेरि हूँ निरवै करन जु सोय । ज्ञान जोग तप कर्म को कियो निवारण जोय ॥
 कोऊ नहि मानें अन्यथा ताको नहि निस्तार । नहीं नहीं तामें कहैं एव कार वार वार ॥
 लैवो नाम सदा जु है तृण ते नीच निदान । आपुन हूँ अभिमान विनु जीवनि दैवो मान ॥
 तरुही सम जु सहिष्णुता हरि जन करिवे आहि । भर्त्सन ताडन करो किन कछु कहिवे नहि ताहि ॥
 कोऊ जो तरु काटई कछु न बोलै जोय । सुखि जाय मांगे न कछु काह पै जल सोय ॥
 काहू सों मांगे न कछु इहि विधि वैष्णव जोय । अमृत वृत्ति है साक फल मिलै खायवै सोय ॥
 नाम निरंतर लेय श्री यथा लाम संतोष । यह आचार करै जु हरि भक्ति सुधन को पोष ॥
 तवाहि श्री मुख शिखा—

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना । अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥

ऊर्द्ध बाहु करि कहीं हीं सुनौ भक्त जे लोक । नाम सुत्र मधि गुहिसु इहि पहिरो कंठ जु श्लोक ॥
 प्रभु आज्ञा करि करै इहि पद आचरण हि जोय । पैहै तवै अवश्य करि कृष्ण चरन रज सोय ॥
 तव प्रभु जु श्रीवास कें गृह जु निरंतर जोय । निसि संकीर्तन कियो रहि एक बरस लौ सोय ॥

कीर्तन करें कपाट दै भरै प्रेम आवेस । आवै पापंडी हसन पावै नही प्रवेस ॥
 पाखण्डी सुनि कीर्तन हि जरि वरि मरें जु सोय । श्री निवासके दुःख हित करैं जुक्ति बहु जोय ॥
 एक दिना इक विप्र जो चापल नाम गुपाल । पाखंडिन में श्रेष्ठ सो दुर्मुख अति वाचाल ॥
 देवों पूजा की जु सब सामिग्री ले आय । श्री जुवास के द्वार पै स्थल लीप्यो जु वनाय ॥
 तहां कदलि के पत्र पर औड़ू पुष्प धरि जोय । हरदि सिंदुर जु अरुन फल तंडुल राखे सोय ॥
 मदिस पात्र भरि धरिकै सो निज घर गौ आहि । श्रीजुवास प्रातहि उठि लखौ तहां तब ताहि ॥
 बड़े बड़े सब लोक जे ल्याये तिन्है बुलाय । श्री निवास जू कहैं यौं हसि हसि सबनि सुनाय ॥
 नित्य रात्रि कौं करैं हम देवी पूजन सोय । मम महिमा देखौ सकल द्विज सज्जन हैं जोय ॥
 सिष्ट लोक सब देखिकें करैं जु हा हा कार । ऐसौ कर्म कियौ जु तिहि कौन निंद्य आचार ॥
 नीच ल्याय कैं द्रव्य सब दूरि करायौ सोय । गंगा जल गोवर मिलै स्थल जु लिपायौ सोय ॥
 तिहि चापल गोपाल कैं तीनहि द्यौस विताय ॥ कुष्ठ भयौ सब अंग में धारा रुधिर बहाय ॥
 सबअंग वेष्टित कृमिजु करि डसैं निरन्तर ताहि । दुःमह वेदना दुखहि करि पजरै अन्तर आहि ॥
 घाट सुरधुनी वृत्त तर पर्यौ रहै द्विज सोइ । एक दिना बोल्यो कछु प्रभु कौं देखि जु जोय ॥
 हौं जु ग्राम सम्बंध करि तुव मातुल हौं आहि । कुष्ठ व्याधिभौ भानिजे होंअति व्याकुल ताहि ॥
 सब ही लोक उद्धार हित हैं तुम्हारौ अवतार ॥ वडौ दुखी हौं करौ तुम अब मेरौ उद्धार ॥
 यह सुनि के प्रभु जू भये महाक्रोध मन माहि । कहैं जु क्रोधावेस करि तर्जन वचन सुताहि ॥
 करवायौ श्री वास कौं देवी पूजन ताहि । कोटि जन्म है है जु तुव रौरव पतन जु आहि ॥
 पाखण्डी संहार हित है मेरौ अवतार । पाखण्ड जु संहार करि करि हौं भक्ति प्रचार ॥
 ऐसैं कहि प्रभु तब गये करन सुरधुनी स्नान । दुख पावै पापी वही जाय नही तिहि प्रान ॥
 करि सन्यास जु प्रभु गये नीलाचल तब सोय । आये जब फिरि तहाँ ते कुलिया ग्रामहि जोय ॥
 तिहि पापी नें तब तहां लियौ शरन प्रभु जोय । हित उपदेस कियौ तवै हृदे करुन अति होय ॥
 भौ पण्डित श्री वास कौं तौसों अति अपराध । तहां जाहु तेई करैं जौ तुव कृपा अगाध ॥
 तब तेरौ है है जु यहि पाप विमोचन आहि । जो फिरि ऐसैं करैगौ नहीं आचरन ताहि ॥
 सरन लियौ श्रीवास कौं तब तिहि पापी आहि । भयौ जु तिनकी कृपातें पाप विमोचन ताहि ॥
 देखन आयौ कीर्तन और एक द्विज आहि । द्वारपाल भीतर तवै जान दियौ नहि ताहि ॥
 निज घर गयौ जु विप्र सो मन अति दुखी जु होय । गंगापथ में प्रभु कौं लखि कहै और दिन सोय ॥
 हौं तुमकौं अब सांपि हौं पायौ दुख जु अखंड । तोरि जनेऊ सांपई दुर्मुख महा प्रचण्ड ॥
 प्रभु तुमरौ संसार सुख सब ही होहु विनास । सुनिकें साप बढ्यौ जु अति प्रभु कें हिये हुलास ॥
 साप बात प्रभु की सुनें जो श्रद्धायुत आहि । परित्राण है है सदा ब्रह्म साप तें ताहि ॥६०॥
 मुकुन्द दत्त कौं तब कियौ प्रभु जू दण्ड प्रसाद । खण्डन ताकौं हृदैं कौं भयौ जु सब अवसाद ॥

प्रभु जु श्री आचार्य की करै भक्ति गुरु जोय । यातें श्री आचार्य की महा दुखित मति होय ॥
 भंगी करिकै तब कियौ ज्ञान मार्ग विख्यान । प्रभु जू क्रोधावेस करि किय तिनकौं अपमान ॥
 आचारज गोस्वामि कें तब आनंद भौ हीय । लज्जित है कें महाप्रभु तब प्रसाद तिहि कीय ॥
 गुप्त मुरारिहि वदन तें सुन्यो राम गुन ग्राम । प्रभु जु लिख्यौ ललाट पर रामदास तिहि नाम ॥
 श्रीधर जू कैं लोह के पात्र कियौ जलपान । सबही भक्तनि कौं दियौ प्रभु इष्ट वर दान ॥
 ठाकुर श्री हरिदास कौं कियौ प्रसाद अगाध । आचारज दिग मात कौं छिमवायौ अपराध ॥
 महिमा कही जु नाम की भक्त गणनि प्रभु आहि । सुनि एक पदुवा क्यौ अर्थवाद जो ताहि ॥
 नाम स्तुति में वाद सुनि प्रभु के दुख भौ आहि । प्रभु सकोप वरज्यो लखौ मति कोऊ मुख याहि ॥
 संग सचैल कियौ जु प्रभु गंगा जाय सिनान । अद्भुत महिमा भक्त की तहां जु कही बखान ॥
 ज्ञान जोग कर्मादि करि नहीं कृष्ण वस होय । एक हेतु वस कौं जु तिहि प्रेम भक्ति रस जोय ॥
 श्रीभागवते—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव । न स्वाध्यायस्तपस्यागो यथा भक्तिर्ममोज्जिता ॥

प्रभु जू कहत मुरारि कौं तुम जु कृष्ण वस कीय । सुनि कैं पद्य पठन लगे श्रीमुरारि रस हीय ॥
 तथाहि—क्याहं दरिद्रः पापीयान् कः कृष्णः श्रीनिकेतनः । ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः ॥

कवित्त—

एक दिन प्रभु सब भक्तनि कौं संग लैकैं कीर्तन करैं रस श्रम युत भये हैं ।
 एक आंम बीज लैकैं आंगन में रोप्यो प्रभु ताही छिन जम्यौ वृत्त साखा बहु छाये हैं ।
 देखत ही देखत में फल्यो बहु पाक्यो फल देखि सब भक्तनि सु अचिरज ठये हैं ।
 द्वैसै फल भारि लैकैं धोय तिहि गंगा नीर नीकी भांति कृष्ण जू कौं भोग सुलगाये हैं ।

वरन अरुण औ पीत ते छिलका गुठलि न ताहि । एकहि फल भक्षण कियैं उदर भरै इक आहि ॥
 देखि भये संतुष्ट श्री शचीनंद जू ताहि । सबकौं प्रथम खवाय के फिरि भक्षण किय आहि ॥
 जिनमें नहि है आंस कछु अमृत जु रस मय सोय । एकहि फल को रस पियें उदर सुपूरित होय ॥
 याही विधि ते आभ्र फल प्रति दिन द्वादस मास । पान किये सब वैष्णवनि प्रभु कें हियें हुलास ॥
 ए सब लीला करैं प्रभु शचिनंदन जू सोय । जाने नहि बहिरंग जन जाने निज गन सोय ॥
 इहि विधि द्वादस मास प्रति दिन दिन प्रति भगवान । आभ्र महोत्सव करैं जू कीर्तन के अवसान ॥
 प्रभु कीर्तन करत में आये मेंह गन जोय । अपनी इच्छा कैं कियौ मेघ निवारण सोय ॥
 प्रभु पण्डित श्रीवास को इक दिन आज्ञा दीय । बृहत सहस्र नाम पढ़ौ सुनिबे कौं भौ हीय ॥
 आयौ ताकौ पढ़न में श्रीनृसिंह कौ नाम । सुनि आविष्ट भये जु प्रभु गौर अंग निज धाम ॥

गदा हाथ लैकै जु प्रभु श्रीनृसिंह के भाय । पाखण्डिन संहार हित चलै नगर कौ धाय ॥
 देखि नृसिंहाकृति महातेजो मय सब ताहि । भजै लोक पथ छाड़ि कै पाय बड़ो भय आहि ॥
 सकल लोक भय देखि कै बाह्य भये प्रभु जोय । श्रीजुवास घर जायकै गदा फेंकि दिय सोय ॥
 कहै प्रभु श्रीनिवास सों करि विषाद अति सोय । भयो मोहि अपराध जे रह्यो लोक भय जोय ॥
 ते जु कहै तुव नाम जिहि रसना करै प्रकास । कोटि कोटि अपराध तिहि होय तिही छिन नास ॥
 कियो नही अपराध औ कियो लोक निस्तार । जिनि जिनि देख्यो प्रभु तुम्हैं छूट्यो तिहि संसार ॥
 ऐसै कहि श्रीवास जू प्रभु सेवन किय आहि । आये अपने भवन तव तुष्ट होय प्रभु ताहि ॥
 और जु दिन शिव भक्त इक शिव के गीतहि गाय । प्रभु आँगन नृत्य हि करै हमरू वाद्य बजाय ॥
 है आवेस महेस के शचीसुनु जु आहि । नृत्य कियो बहु क्षण प्रभु कांधे चढ़ि कै ताहि ॥
 भिचुक एक जु और दिन माँगन आयौ जोय । प्रभु नृत्यहि लखि नृत्य कौ लाग्यो करन जु सोय ॥
 भिचुक परम हुलास सों प्रभु सँग नाचै जोय । प्रभु जू ताकौ प्रेम दिय बह्यो प्रेम रस सोय ॥
 और दिन इक ज्योतिषी आयौ जिहि सब ज्ञान । तासों यौ पूछ्यो जु प्रभु करिके बहु सनमान ॥
 पूर्व जन्म हौ कौन हौ कहि गनि लग्न विचार । गणन लग्यो सर्वज्ञ सो सुनि प्रभु वाक्य सुसार ॥
 जग अनंत बैकुण्ठ औ सबके आश्रय सोय । देखै गणक सु ध्यान में महा ज्योतिमय जोय ॥
 परम ब्रह्म परतत्व जो परम अधीश्वर जोय । प्रभु मूरति सर्वज्ञ लखि भयो चकित अति सोय ॥
 सकै बोलि नहि सो कछु रह्यो मौन गहि आहि । कहन लगे तव फेरि जब कियो प्रश्न प्रभु ताहि ॥
 प्रभु जु तुम पहिले हुते सब जग के जु निधान । जो है सर्वेश्वर्य मय परिपूरण भगवान ॥८॥
 पहिले जैसै हुते तुम अब हूं सोई रूप । नित्यानंद दुर्बोध अति है तुम्हरो स्वरूप ॥
 कहु नहि जान्यो गणक तुम प्रभु हंसि कह्यो जु ताहि । हुँतौ आगिले जन्म में गोप जाति हौ आहि ॥
 गोप जाति में जन्म लै भौ गायनि रखवाल । तिही पुण्य करि अब भयो हौं जु विप्र कौ बाल ॥
 कहै ज्योतिषी ध्यान मधि बहु लख्यो हौं आहि । भयो चकित हौं देखिके अति ऐश्वर्य्य हि ताहि ॥
 बहुरूप यह रूप औ देखे एकाकार । कभू भेद लखिये जु यह तुम माया निरधार ॥
 जो हो सो तुम तुम्हें नमस्कार मम आय । कियो ताकौ सनमान प्रभु दियो प्रेमधन ताय ॥
 बैठे मण्डप विष्णु के एक दिना प्रभु जोय । मधु आनय आनय सुमधु कहै उच्च सुर सोय ॥
 नित्यानन्द गोस्वामि जू जान्यो तिनकौ भाय । गंगा जल कौ पात्र भरि धर्यो जु सन मुख आय ॥
 नाचै प्रभु जल पान करि मद विह्वल अति होय । लीला कर्पणतरणिजा सब दिखाई सोय ॥
 अनुकृति सब बलदेव की गति मदमत्त सुठार । आचारज शेषर जु तिहि देख्यो रामाकार ॥
 बनमाली आचार्य जू लख्यो स्वर्ण हल ताहि । नृत्य करै आवेस सों विहवल सब मिलि आहि ॥
 इहि विधि नृत्य भयो तहां चारि पहर लौं जोय । संध्या गंगा स्नान करि समें गये गृह सोय ॥
 प्रभु जू नगर जनन कौं जबै सु आज्ञा दीय । होन लग्यो अति कीरतन घर-घर उत्सव कीय ॥

हरये नम कृष्णाय नम यादवाय नम आहि । गोविंद गोप श्रीराम जू मधुसूदन नम ताहि ॥
 करें कीरतन उच्च धुनि बजि मृदंग करताल । हरि-हरि धुनि विनु नाहि नै सुनिये अरु तिहि काल ॥
 सुनि आये अति क्रुद्ध है सकल यवन गन सोय । आये काजी पास सब कियो निवेदन सोय ॥
 साभ समें काजी कुपित आयौ इक गृह जोय । फोरि मृदंग सब जनन सों कहन लग्यो तव सोय ॥
 हिंदुबानी अब लौं प्रगट करी न काहू जोय । अब जो ऊधम कियो तुम कहा जानि कै सोय ॥
 सकल नगर में करौ जिनि कोऊ कीर्तन आहि । हौं तौ निज घर जात हौं आजु चमा करि ताहि ॥
 आगे कीर्तन करत जो सुनि पाऊं गो जाहि । करि हौं ताको जाति विनु सब धन लैहौं ताहि ॥
 ऐसै कहि काजी गयो सबै नगर को लोक । कियो निवेदन प्रभु निकट हिये पाय बड़ शोक ॥
 जावौ प्रभु आज्ञा दई कीर्तन करौ निसंक । अब हौं तिन्है संघारि हौं सकल जवन जेरंक ॥
 लोक सबै गृह जाय कै करें कीरतन आहि । काजी के भय सों रहित मन चिंता नहि ताहि ॥
 तिन सबकौ संकोच कौ प्रभु मन में अनुमाय । लागे लोगनि सों कहन सब कौं टेरि बुलाय ॥
 नगर-नगर में आजु हौं कीरतन करौं जोय । देखें काजी कौन है हमें निवारें सोय ॥
 ऐसै कहि संध्या चले गौर राय रसलीन । तवै कीरतन के किये संप्रदाय प्रभु तीन ॥
 आगे नृत्य करै सरस संप्रदाय हरिदास । मधि नाचें आचार्य जू हिय में अधिक हुलास ॥
 संप्रदाय पाछें करै नृत्य गौर रसकंद । तिन सँग नाचें कहै हरि प्रभु श्री नित्यानन्द ॥
 यह मंगल चैतन्य में श्री वृन्दावनदास । नीकें प्रभु की कृपावल वर्णन किय करि व्यास ॥
 इहि विधि कीर्तन करत सब नगर कियो संचार । अमत अमत ऐसै गये प्रभु काजी के द्वार ॥
 तजै गर्जे नगर के करें कुलाहल चाहि । गौरचंद्र बल करि सकल प्रेममत्त अधिकाय ॥
 काजी कीर्तन धुनिहि सुनि गृहमधि लुक्क्यो जु सोय । तर्जन गर्जन सुनें सो तऊ न बाहिर होय ॥
 बाहै तिहि गृह कुसुमवन उद्धत लोक अपार । तिहि वृन्दावनदास जू वर्णन किय विस्तार ॥
 तव प्रभु बैठे द्वार तिहि हृदे दया अधिकाय । भव्य एक जन प्रेरिकें काजी लियो बुलाय ॥
 आयो दूरि हिते जु तिहि माथौ दियो नवाय । बैठायो प्रभु ताहि तव करि सनमान बनाय ॥
 कहै प्रभु आये जु हम अभ्यागत तुव गेह । हमकौं देखि दुरे जु तुव कौन धर्म मत एह ॥
 सो जु कहै प्रभु सुनौ तुम आये कुपित सु होय । तातें तुम्हरे सांति हित रह्यो जु दुरि हौं सोय ॥
 इहि छिन तुम हरपित भये तब हौं मिल्यो जु आय । तुमसे अतिथि लहै सु मम भाग्य कौं न अधिकाय ॥

कवित्त—

चक्रवर्त्ति चाचा लगै मेरे ग्राम नातें करि देहनातें हुतें सांचौ नातौ सही सोई है ।
 नीलाम्बर चक्रवर्ती मामा तुव लगै तातें मेरे भानिजे हौ तुम जाते क्रोध होई है ।

मातुल कौ अपराध भानजौ न धरै हियै कहै दोऊ कथा गुप्त जानें नह कोई हैं ।
कहै प्रभु प्रश्न लियै आये तुम पास काजी कहै आज्ञा करौ तुम मनमें जु सोई है ॥

प्रभु कहै गोपय पियौ तातें गो तुम मात । वृष उपजावै अन्न सब तातें सो तुम तात ॥
तात मात कौ मारि कें खाहु कौन इह धर्म । कहौ कौन के बल जु तुम करौ इतेक विकर्म ॥
है तुम्हरे काजी कहै जैसे वेद पुराण । हमरे हैं तैसें जु है शास्त्र किताब कुरान ॥
एक निवृत्ति प्रवृत्ति औ दोय मार्ग किय ताहि । जीव मात्र को वध मनै कियौ निवृत्ति में आहि ॥
आज्ञा गोवध करन की है प्रवृत्ति मग आहि । आज्ञा बल करि वध करै नहीं पाप फल ताहि ॥
वेद तुम्हरे में जु है गोवध वानी जोय । याही तें गोवध करै बड़े बड़े मुनि सोय ॥
प्रभु कहै वेद मनै करै गोवध कौ निरधार । यातें हिंदुमात्र नहि गोवध करै विचार ॥
तब मारै प्राणी जु तिहि सकै जिवाय जु ताहि । यहै सु वेद पुरान कौ आज्ञा वचन सु आहि ॥
जीर्णदेह जिहि धेनु लो होय तरुणि तिहि वार । याही तें वध नहीं नैं है सो तिहि उपकार ॥
जैसि नही कलिकाल में विप्रनि शक्ति विशाल । याही तें गोवध करै नहीं कोऊ इहि काल ॥

तथाहि—अश्वमेधं गवांलम्भं सन्न्यासं पलपैतृकं । देवरेण सुतोत्पत्तिं कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

सकौ नहीं जु जिवाय तुम है वधमात्र जु सार । यातें तुम्हरो नरकतें नाहिन है निस्तार ॥
रोम जिते गो अंग में तिते जु वर्ष हजार । परि रौरव में गोवधी नहि ताकौ उद्धार ॥
कर्त्ता जो तुव शास्त्र कौ सो जु आंत भौ आहि । विनु जानें यों सास्त्र हिय आज्ञा दीनि ताहि ॥
मुनि सों थकित भयौ वदन आवै वचन न ताहि । काजी कहै विचारि करि मानि पराभव आहि ॥
पण्डित जू तुम कछौ जो सर्व सत्य है ताहि । सास्त्र हमारौ आधुनिक नहि विचार है ताहि ॥
कल्पित हमारौ शस्त्र है हम सब जानें आहि । तऊ जाति अनुरोध करि मानें शास्त्रहि ताहि ॥
यवन शास्त्रसों सहज ही अट्टह विचारहि आहि । हंसिकें पूछन लगे प्रभु और वार कछु ताहि ॥
प्रश्न करै इक और हम मामा सुनौ जु ताहि । कहि यथार्थ छलकरि हमें छलियौ जिनि तुम आहि ॥
होय तुम्हारे नगर में सदा कीरतन जोय । वादय गीत संगीत औ नृत्य कुलाहल सोय ॥
हिन्दु धर्म विरोध कौ तुम काजी अधिकार । मनै करौ नहि हेतु किहि समझि सकै न विचार ॥
काजि कहै जु सब तुम्है कहै गौर हरि जोय । तिहि नाम करि हरि तुम्है करै संवोधन सोय ॥
इही प्रश्न कौ गौरहरि कारण सुनौ जु आहि । होय जबै एकांत तब करौ निवेदन ताहि ॥
प्रभु जु कहै ए लोक सब अन्तरंग मम जोय । कहौ जु तातें प्रगट ही नहीं कछु भय सोय ॥
तिहि दिन हौ काजी कहै गयो हिंदु घर आहि । आयौ कीर्तन करि मने फोरि मृदंगहि ताहि ॥
तिहीं रात्रि में सिंह इक महा भयंकर जोय । सिंह वदन नरदेह अति गर्जन करै जु सोय ॥
सज्जा मेरी पर तब चढ़े कूदिकें सोय । कट कट दंत जु मुख करै अट्टहास अति जोय ॥

मेरी छाति नखनि दै बोले सुर अति धोर । सब मृदंग पलटें जु तुव उदर डारिहौ फोरि ॥
मने कियौ मम कीरतन करिहौ तेरौ नास । आंखि मूँदि कांपौ जु अति हिय भय पाऊं तास ॥
भीति देखि सिंह कछौ हृदय सदय अति सोय । तुव सिचा के हेतु तुव कियौ पराजय जोय ॥
ता दिन तें कीनौ नहीं याते बहु उतपात । तातें आजु क्षमा कियौ नाहि कियौ तुव घात ॥
ऐसैं फिरि जौ करै गो तब सहिहौ नहि ताहि । तोहि वंसहि मारि सब जवनन हति हौं आहि ॥
इतनौ कहि सिंह जु गये भौ मेरे भय सोय । ये देखौ नख चिन्ह तिहि है मेरें हिय जोय ॥
ऐसैं कहि काजी तिन्है दिय निज हियौ दिखाय । सुनिकें लोक हँसे जू अति अचिरज हिय पाय ॥
काजी कहै जु यह कथा करौ न कहूँ प्रकास । एक पियादौ तिही दिन आयौ मेरे पास ॥
आय कही हौंगो मनै करन कीरतन जोय । मेरे मुख उलका अग्निनि लगी अचानक सोय ॥
डाढ़ी सब जरि मुख भये बड़े फफोलक आहि । गयो प्यादौ जोइ जहां भइ रीति यह ताहि ॥
बोल्थौ हौं तिहि देखि कें हियें गयौ भय पैठि । मनै करौ जिनि हिंदुवनि रहैं सबै घर वैठि ॥
होन लग्यौ स्वछंद तब नगर कीरतन जोय । सुनि सब आये म्लेछ मम कियौ निवेदन सोय ॥
हिन्दुन कौ या नगरमें वाढ़्यौ धर्म अपार । हरि हरि धुनि विनु और कछु नहि सुनिये जु विचार ॥
और कहै हिंदु करै कृष्ण कृष्ण रस पूरि । नाचैं गावैं धुनि करै हसैं जाय गडि धूरि ॥
हरि हरि करि हिंदू सबै करै कुलाहल जोय । पातशाहि जो यह सुन करै कैद तुम सोय ॥
तब तिन जवन सौं जु हों पूछ्यौ ऐसैं आहि । जान्यौ हिंदु नाम लै यह सुभाव है ताहि ॥
तुम हिंदुन के इष्ट के नाम निरन्तर आहि । जवन होय के लेत हौ कारण कहा जु ताहि ॥
म्लेछ कहै हिंदुनि कौं बोलत हम परिहास । कृष्णदास काहु कछौ कछौ काहु हरिदास ॥
रामदास काहु कछौ हरि हरि बोलत सोय । जानौ घर कौ धन किहू लिय चुराय कें सोय ॥
रसना तवहीं ते जु हम बोलै हरि हरि आहि । इच्छा नहि तब हूँ कहै करै उपाय जु ताहि ॥
और म्लेछ भापै सुनौ हम हूँ इहि विधि जोय । हिंदुनि कौ परिहास किय तिही दिनातें सोय ॥
कृष्ण नाम जिह्वा कहै वरजि न मानें सोय । मंत्रौषधि मानों करौ कछु हिन्दू गण सोय ॥
ऐसैं सुनि तिन सवनि कौं घर कौं दियौ पठाय । हिन्दू पाखंडी तब पांच सात दिग आय ॥
कहैं निमाई नास किय हिंदुन कौ सब धर्म । किय प्रवृत्त जो कीरतन कहैं सुन्यौ नहि कम ॥
शिव चण्डी मंगल दिवस करै जागरन आहि । वादय नृत्य औ नरनकौ योग्य आचरण ताहि ॥
प्रथम निमाई शांत हौ पण्डित कैसी रीति । आय गया तें अब कछू करि प्रवृत्ति विपरीत ॥
गीत जु गावत उच्च करि करतालीनु वजाय । रव मृदंग करताल कौ लगै श्रवण सौ आय ॥
नाचैं गावैं मत्त हैं नहि जानें कछु खाय । क्रन्दन करै हसैं उठै परै भूमि गडि जाय ॥
मत्त नागरिक किये करि सदा कीरतन जोय । गई नींद निसि जागरन सकै न कोऊ सोय ॥

नाम निमाई छांडि अब गौर हरी सु कहाय । धर्म नष्ट हिंदून कौ किय पाखण्ड चलाय ॥
 कृष्ण कीरतन करें सब स्वपच आदि है जोय । इही पाप करि ग्राम सब ऊजर है है सोय ॥
 हिंदुन के है शास्त्र में नाम मंत्र वड़ जानि । ताहि सुनै सब लोक के मंत्र बीज है हानि ॥
 तुम ठाकुर सब ग्राम के सबै प्रजा तुम आहि । वोलि निमाई कौ अवै मनै करौ तुम आहि ॥
 तब तौ मैं बहु प्रीतिकरि कहौ सवनि सौं आहि । सब घर जावो वोलि हौं मनै जु करिहौं ताहि ॥
 हिंदुन के जो ईस वड़ नारायण भगवान । सोई तुम हौं करै यों मेरो मन उनमान ॥
 यह सुनि कैं श्री महाप्रभु हिय अति हरषित होय । काजी कौं छुवै कैं कछु कहन लगे तब सोय ॥
 कृष्ण नाम तुव वदन में यहै वड़ौ सुविचित्र । भये पापक्षय सबै तुव भयौ जु परम पवित्र ॥
 नारायण हरि कृष्ण यों तीन वार लिय ताहि । भाग्यवान बडहो जु तुम पुण्यवान बड आहि ॥
 यह सुनि जलधारा वहै काजी के युग नैन । छुवै कैं प्रभु के पदकमल कहै मधुर प्रिय वैन ॥
 तुम प्रसाद तें भई मम दुर्मति सबै जु नास । रहै जु तुम में भगति मम करौ कृपा जु प्रकास ॥
 मांगत तुम सौं दान इक यहै कहौ प्रभु जोय । कृष्ण कीरतन कौ विघन ज्यों नदिया नहिं होय ॥
 बोल्यौ सो ममवंश में जे उपजेंगे आहि । तिन सब कौं दैहौं सपत मनै करें नहिं ताहि ॥
 सुनि प्रभु हरि हरि बोलिकैं उठेजु हरषित होय । हरि हरि धुनि करिकैं उठे सकल वैष्णव जोय ॥
 गमन कियौ तब महाप्रभु करन कीरतन आहि । काजी आयौ संग चलि मन आनंदित आहि ॥
 तब तौ काजी कौ विदा सचिनंदन जू दीय । आये अपने भवन तब नाचत हरषित हीय ॥
 इहि विधि काजी कौ प्रभु कियौ प्रसाद अगाध । जो कोऊ इहि सुनै तिहि नास होय अपराध ॥
 श्री जुवास गृह एक दिन भरे गुसाई रंग । करै नृत्य भाई जु विवि नित्यानंद प्रभु संग ॥
 श्री जुवास के पुत्र कौ भयै तहां पर लोक । श्री जुवास के हिये नहि तउन जनम्यौ शोक ॥
 मृत बालक के वदन करि कियौ जु ज्ञान प्रकास । आपुहि विवि भाई भये नंदन श्री जुनिवास ॥
 सब भक्तन कौ तवै किय श्री प्रभुज वरदान । अधरामृत नारायणी कौ दै किय सनमान ॥
 सिये वसन श्रीवास के दरजी यवन जु आहि । तहां चतुर्भुज रूप प्रभु दरसन दियौ जु ताहि ॥
 देख्यौ हों देख्यौ जु कहि भयौ मत्त अति सोय । नाचै प्रेम भर्यौ भौ मुख्य वैष्णव सोय ॥
 वंसी प्रभु आवेस में श्री जुवास पै आय । मांगी तिन्हें जु तब कह्यौ गोपी लई चुराय ॥
 सुनि प्रभु कहौ कहौ कहैं भरि आवेस हुलास । वृदावन लीला सुरस वरन्यौ श्री जु निवास ॥
 माधुरि वृंदाविपिन की प्रथमहि वरणन कीय । प्रभु जू कैं सुनिकैं जु तिहि आनंद वाढ्यौ हीय ॥
 सुनि कैं प्रभुज यों कहैं कहौ कहौ बहुवार । फेरि-फेरि श्रीवास जू कहैं जु करि विस्तार ॥
 वेनु बाध गोपीन कौ किय आकर्षण जोय । तिन सवहिन के संग भौ ज्यों वन विहरण सोय ॥
 ताही मधि छह रितुन की लीला वर्णन आहि । अरु मधुपान रासोत्सव कही केलि जल ताहि ॥

श्री प्रभु कहौ कहौ कहैं सुनिवै कौ जु हुलास । श्री निवास जू तब कह्यौ अनुपम रास विलास ॥
 ऐसैं ही जु प्रभात भौ कहत सुनत ही सोय । श्री जु वास सौं प्रभु मिले हिये तुष्ट अति होय ॥
 तब आचारज गृह करी लीला कृष्ण अनूप । तहां महाप्रभु जू भये श्री रुक्मिणी स्वरूप ॥
 कवहूँ दुर्गा श्री कभूँ भये कभूँ चिच्छक्ति । भक्त गनन कौं खाट पै बैठि दई निज भक्ति ॥
 एक दिना चैतन्य कैं भये नृत्य अवसान । इक द्विज पत्नी आय कैं गहे चरन प्रभु जान ॥
 सो द्विज नारी चरन रज लेइ सु वारंवार । प्रभु जु कैं भौ देखि कैं हिये जु दुःख अपार ॥
 दौरि तिही छिन महाप्रभु परै सुरधनी जाय । नित्यानंद हरिदास जू लीयौ तिन्हौं उठाय ॥
 घर श्री विजयाचार्य के रहे जुरजनी ताहि । प्रातभयें सब भक्तगन गृह लै आये ताहि ॥
 इकदिन बैठे गेह हिय गोपीभावहि जोइ । गोपी गोपी नाम लै प्रभु विपन्न अति होइ ॥
 इक पटुवा आयौ तहां प्रभु कौं देखन जोय । गोपी गोपी नाम सुनि कहन लगौ यों सोय ॥
 क्यौं न लेहु श्री प्रभु जु तुम कृष्ण नाम अति धन्य । गोपी गोपी कैं कहैं है है कहा जु पुन्य ॥
 कृष्ण दोष उदगार किय सुनि प्रभु कुपित जु होय । पटुवा मारन कौं उठे लाठी लै कैं सोय ॥
 पटुवा भय करि भाजौ सु प्रभु तिहि पाछें धाय । तिन पाछें सब भक्तगन चलैजु अति अकुलाय ॥
 न्याये प्रभु कौं सांति करि निजगृह सब जन सोय । पटुवन कीजु सभा तहां भजि पटुवा गौं जोय ॥
 पटुवा सहस्र पढ़ैं तहां सर्व एक ठां होय । जहां जाय द्विज ने कह्यौ प्रभु वृत्तांत जु सोय ॥
 सबै जूथ पटुवान कैं क्रुद्ध भए सुनि ताहि । करन लगे तबमिलि सबै प्रभु कौ निंदन आहि ॥
 चाहैं द्विज कौं मारिबौ नहीं धर्म भय ताहि । कियौ निमाई एक लै देस भ्रष्ट सब आहि ॥
 जो कवहूँ ऐसै जु फिरि करै मारि हैं ताहि । करि सकि है सो कहा वह कौन मनुष्य है आहि ॥
 प्रभु निंदा करि सवन की भयौ बुद्धि कौ नास । सुपठित विद्या कौ नहीं काह होय प्रकास ॥
 होंय नम्र नहिं सब तऊ पटुवा दंभिक सोय । जहां तहां निंदा करै प्रभु उपहासै जोय ॥
 प्रभु सर्वज्ञ दया उदधि तिन दुर्गति जानि । करैं चितवन बैठि गृह सब कौ हित हिय ठानि ॥
 अध्यापक गण हैं जिते और सिष्य गन ताहि । धर्मी कभी तपहि पर निदुं क दुर्जन आहि ॥
 मम निंदा अपराध करि ये सब जितने आहि । भक्ति लिवावत हों तिन्हें लेय सकैं नहि ताहि ॥
 आयौ हों निस्तार हित भौ विपरीत जु सोय । इन सब ही दुर्जननि कौ कैसे कैं हित होय ॥
 करैं प्रणति ये ज्यों हमें पाप नास तौ होय । तब तौ हों इन सवनि कौ भक्ति लिवाऊं सोय ॥
 मोकौं प्रणति न करत ये निंदा कौ जुविचार । हों अवश्य करि हों तऊ इनि सबको उद्धार ॥
 करि हों अब सन्यास हों याही तें निरधार । तब हूँ हैं ये प्रणत मम संन्यासी जु विचार ॥
 हूँ हैं इनके पाप को प्रणत मात्र ही नास । तब इनके निर्मल हृद करि हों भक्ति प्रकास ॥
 इन पाखण्डी सवनि कौ तब है है निस्तार । नाहिन और उपाय कछु यहै युक्ति है सार ॥

प्रभु नीकें करि गोह में यौ दृढ़ युक्ति विचार । आये केशव भारती नदिया नगर मँभार ॥
 प्रभु तिनकौ किय दंडवत और निमन्त्रण आहि । करवाई भिन्ना कछू कियौ निवेदन ताहि ॥
 प्रभु नारायण आप तुम हौ ईश्वर निरधार । मम संसृति मोचन करौ करि कें कृपा अपार ॥
 कहैं भारती इस तुम अंतर्दामी सोय । जो कराव हौं करौं सो नहि स्वतंत्र हम जोय ॥
 ऐसैं कहि कें भारती गये सु कंटक ग्राम । किय संन्यास जु जाय कें महाप्रभु तिहि ठाम ॥
 ससिसेखर आचार्य जू श्रीनित्यानंद आहि । दत्त मुकुन्द जु तीनि जन किय सब काज सु ताहि ॥
 कियौ जु लीला आद्य कौ सूत्र गणन यह आहि । श्रीवृन्दावनदास किय नीके वर्णन याहि ॥
 भये यशोदा तनय सो सचीसुनु जू आहि । भक्ति भाव जो चतुर्विध किय आस्वादन ताहि ॥
 निज माधुरि औ राधिका प्रेम स्वाद के चाय । तांते अंगीकार किय नीके राधा भाय ॥
 जातें गोपीभाव प्रभु धर्यौ हिये एकांत । नंद नंदन कौ मानई तातें अपने कान्त ॥
 श्री गोपिन के भाव कौ इक दृढ़ निश्चै आहि । नंद नंदन विनु और ठां होय उदय नहिं ताहि ॥
 सुन्दर श्याम जु चन्द्रिका गुंजा भूषित जोय । गोपवेश मुरली बदन ललित त्रिभंगी सोय ॥
 या विनु कवहुं और हरि होय सु आकृति आहि । तो गोपिनु कौ भावसो निकट जाय नाहि ताहि ॥

तथाहि ललित माधवे—

गोपीनां पशुपेदनन्दनजुपो भावस्य कस्तां कृती विज्ञातुं क्षमते दुरुहपदवी सञ्चारिणःप्रक्रियां ।
 आविष्कुर्वति वैष्णवीमपि तनुं तस्मिन्भुजैर्जिष्णुभि र्यासां हन्त चतुर्भिरद्भुतरुचिं रागोदयः कुञ्चति ॥

करत रास गिरिराज तट समै वसंत सुजान । राधा सों संकेत करि हरि भौ अंतर ध्यान ॥
 बैठि एकान्त निकुञ्ज में देखें राधा वाट । आयौ दृढ़त तब तहां सब गोपिन कौ ठाट ॥
 दूरहि ते लखि कृष्ण कौ कहैं गोपिकावृन्द । देखौ याही कुंज मधि हैं आप कृष्ण चन्द ॥
 गोपीगन कौ देखि हरि भयौ जु साध्वस सोय । सकें न ते तब दूरि तहं भये विवश भय जोय ॥
 करि कें मूरति चतुर्भुज जके थके हूँ सोय । आई गोपी निकट कहि कृष्ण लखे वे जोय ॥
 देखि कहैं यह कृष्ण नहि हैं नारायण आहि । ऐसैं कहि गोपी करें नुति विनती सब ताहि ॥
 नारायण बंदन करौ देव करौ जु प्रसाद । देहु कृष्णसंग हमें तुम खण्डन करौ विषाद ॥
 हमि कहि गोपीगन गये करि कें प्रणति जु सोय । तिही समें श्री राधिका दरसन दीयो जोय ॥
 कृष्ण तबहि राधाहि लखि हास्य करन कौ ताहि । सोई मूरति चतुर्भुज चाहैं राख्यौ आहि ॥
 दोय हाथ छिपि गये श्री राधा आगें आहि । कीनौ जतन अनेक करि राखि सके नहिं ताहि ॥
 राधा निर्मल भाव कौ है सु अचिन्त्य सुभाव । करवायौ जिहि भाव ने कृष्णहि द्विभुज सुभाव ॥

तथाहि उज्ज्वल नीलमणौ—

रासारम्भविधौ निलीयवसता कुञ्जे मृगाक्षीगणै र्दृष्टं गोपयितुं समुद्ररधिया या सुष्ठु सन्दर्शिता ।
 राधायाःप्रणयस्य हन्त महिमा यस्य श्रिया रक्षितुं साशक्या प्रभविष्णुनापि हरिणा नासीच्चतुर्वाहुता ॥

सोई जसुमति है इहां देवी शची जु मात । सोई ब्रज के ईस ह्यां जगन्नाथ हैं तात ॥
 सोई नंद नन्दन इहां गोस्वामी चैतन्य । भाई सो बलदेव ह्यां नित्यानन्द अति धन्य ॥
 सख्य दास्य वात्सल्य पुनि ये जु तीनि जिहि भाय । सोई नित्यानंद हैं श्री चैतन्य सहाय ॥
 प्रेम भक्ति दीनी तिन्हों जगत बहाय सु आहि । तिनकौ चित्र चरित्र जन समझि सकें नहिं ताहि ॥
 श्री अद्वैताचार्य जू हैं जु भक्त अवतार । कृष्णहि प्रगट कराय कें कियौ जु भक्ति प्रचार ॥
 सख्य दास्य द्वै भाव ये सहजहि जिनि कें आहि । कवहुं प्रभुजु करत हैं गुरु व्यवहारहि ताहि ॥
 श्रीनिवास आदिहि जिते महा भक्तगन जोय । करैजु निज निज भाव करि श्रीप्रभु सेवन सोय ॥
 गोस्वामी पण्डित प्रमुख जिनिकें जो रस आहि । ताही ताही रसहि करि है जु कृष्ण वस ताहि ॥
 वंसी मुख ते स्याम है गोपविलासी जोय । कवहुं द्विज यै गौर हैं कहुं संन्यासी सोय ॥
 याही तें प्रभु आप धरि गोपी भावै ताहि । कहैं वृजेन्द्र कुमार कौ प्राणनाथ करि आहि ॥
 सोई गोपी कृष्ण सो यहै बडौ जु विरोध । प्रभु कौ चरित अचिन्त्य सो है अति ही दुरबोध ॥
 ह्यां कोऊ जु कुतर्क करि करौ न हिय संदेह । शक्ति अचिन्त्य जु कृष्ण की भक्तन के मन एह ॥
 अति अद्भुत सु अचिन्त्य है प्रभु चैतन्य विहार । चित्र भाव गुन चित्र सब है विचित्र व्यवहार ॥
 इन्हें न मानें तर्क करि दुराचार सो आहि । पचै सुकुंभीपाक में नहि निस्तार सु ताहि ॥
 तथा भाष्ये—अचिन्त्याः खलु ये भावा नतांस्तर्केण योजयेत् । प्रकृतिभ्यः परं यत्तु तदचिन्त्यस्य लक्षणम् ॥
 अद्भुत प्रभु लीलानि कौ जाकैं हिय विश्वास । जै है श्रीचैतन्य के चरण कमल के पास ॥
 पाय प्रसंग हि यह कह्यौ सब सिद्धांतहि सार । लहै वहै जोई सुनें सुद्ध भक्ति निरधार ॥
 लिखे ग्रंथकौ कीजिये जौ फिर कें अनुवाद । तिहि ग्रंथकौ पाइये तौ नीकें आस्वाद ॥
 याहीतें श्री भागवत देख्यौ मुनि आचार । करि जु कथा अनुवाद फिरि करै सुवारंवार ॥
 याही लीला आदय के परिच्छेद जे आहि । तिन ही गणना करत हैं पूर्व रीति अवगाहि ॥
 कियौ प्रथम परिच्छेद में मंगल भिष्टाचार । और द्वितीय विच्छेद में प्रभु कौ तत्व विचार ॥
 आप स्वयं भगवान श्री नंदनंदन हैं जोय । तेई श्री चैतन्य प्रभु शची नंदन हैं सोय ॥
 कारन गौन जु जन्म कौ कह्यौ तीसरे आहि । कृष्ण नाम जुग धर्म जो प्रेम प्रचारन ताहि ॥
 ताही मधि कारण कहैं अधिक प्रेम कौ दान । कहैं चौथ परिच्छेद में कारण जन्म निदान ॥
 अद्भुत निज जो माधुरी प्रेमानंद रस आहि । मूल प्रयोजन यहै जो आस्वादन किय ताहि ॥
 श्री नित्यानंद तत्व जो कह्यौ पांचवे ताहि । राम रोहिणीतनय जो भौ नित्यानंद आहि ॥

छठे मध्य अद्वैत कौ कीनौ तत्व विचार । आचारज अद्वैतजू महाविष्णु अवतार ॥
 किय सप्तम विच्छेद में पंचतत्व आख्यान । पंच तत्व मिलि ज्यों कियौ जगत प्रेम रसदान ॥
 लीला श्री चैतन्य की अति अगाध जो आहि । किय अष्टम परिच्छेद में विवरण कारण ताहि ॥
 एक कृष्ण के नाम की महिमा महा सु जोय । ताहि मध्य ताकौ कथन कीनौ अद्भुत सोय ॥
 भक्ति कल्पतरु कौ कियौ विवरण नवेंजु आहि । माली श्री चैतन्य जू आरोपण करि ताहि ॥
 दसवें मूल स्कंध की साखावलि गणि आहि । फल वितरण जैसैं कियौ सब साखा गन जाहि ॥
 नित्यानंद अद्वैत की साखा बलि है जोय । कही ग्यारहैं बार हैं करि विस्तारहि सोय ॥
 विवरण श्री प्रभु जन्म कौ कह्यौ तेरहैं सोय । श्री प्रभु जू कौ जन्म ज्यों कृष्ण नाम सह होय ॥
 विवरण लीला बाल्य की कछु चौधे हैं जोय । लीला तिहि पौगण्ड की कछु कहि पंद्रहैं सोय ॥
 सोइस मध्य किसोर की लीला कौ उदेस । यौवन लीला सप्तदस कही कछु जु विसेस ॥
 इहि प्रकार है सप्तदस लीला आदि प्रबंध । द्वादस ही जु प्रबंध करि भयौ ग्रंथ मुखबंध ॥
 पंच प्रबंधनि करि चरित पंच वैस कौ जोय । लिखी जु अति संक्षेप सौं करी न विस्तृत सोय ॥
 यह जु चैतन्य मंगलहि श्रीवृन्दावन दास । नित्यानंद आज्ञा बल वरन्यों विस्तर तास ॥
 लीला श्री चैतन्य की अद्भुत है जु अनंत । ब्रह्मा सिव औ सेस हूं जाकौ लहै न अन्त ॥
 जो जो अंस कहैं सुनें सोई सोई धन्य । निश्चै ताकौ वेगिहीं मिलि हैं श्री चैतन्य ॥
 श्री अद्वैताचार्यजू श्री नित्यानंद चैतन्य । श्री निवास श्री गदाधर प्रभृति भक्त गण धन्य ॥
 श्री स्वरूप श्री रूप जू श्री सुसनातन नाम । श्री जीव सुरघुनाथ युग उनके पद अभिराम ॥
 भक्त वृन्द जितने वसें वृन्दा विपिन भभार । नभ्र होय हौं सिर धरौं सब के पद निरधार ॥
 सिर धरि कैं बंदन करौं नित्य करौं तिन आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहत कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ कहैं वृजभाषाहि प्रकास ॥

॥३२१॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे वृजभाषायां यौवन लीला सूत्र वर्णनं नाम सप्तदश परिच्छेदः ॥
 समाप्तोऽयं आद्यखंडः—शुभमस्तु ।

श्री श्रीचैतन्यचरितामृत

(मध्य खण्ड)



श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रो जयति । श्रीराधागोपीनाथौ जयतां ॥

बन्दे श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानंदौ सहोदितौ । गौडोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥१॥
 यस्य प्रसादादज्ञोऽपि सद्यः सर्वज्ञतां व्रजेत् । स श्रीचैतन्यदेवो मे भगवान् संप्रसीदतु ॥२॥
 जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्दमतेर्गती । मत्सर्वस्वपदान्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥३॥

दिव्यद्वन्द्वदारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ ।

श्रीमद्राधाश्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठातीभिर्सेव्यमानौ स्मरामि ॥४॥

श्रीमन्नासरसारंभी वंशीवट तटस्थितः । कर्पन् वेणुस्वनैर्गोपीगोपीनाथो श्रियोऽस्तु नः ॥५॥

गौरचंद्र जय जय सदा कृपासिंधु है जोय । जय जय जय श्रीशचीसुत दीनबंधु है सोय ॥
 जय जय श्री अद्वैत श्री जय जय नित्यानंद । जय श्रीवास हि आदि दै गौरभक्त के वृंद ॥
 पहिलें लीला आदि कौ कह्यौ सूत्रगण आहि । वृन्दावनदास जु कह्यौ करि विस्तार जु ताहि ॥
 इक सूचन ही मात्र किय याही तें हम ताहि । जो विशेष कछु भयौ सो कह्यौ सूत्रमधि आहि ॥
 कहैंव लीला सेस कौ मुख्य सूत्रगण जोइ । प्रभु लीला अगनित भलै कही जाय नहि सोइ ॥
 ताही मधि जो भाग कछु श्रीवृन्दावनदास । किय मंगल चैतन्य मधि वर्णन करि कैं व्यास ॥
 लिखि हैं सूचन मात्र हम वही भाग ह्यां सार । जो विशेष ताकौ इहां कहि हैं करि विस्तार ॥
 प्रभु लीला के व्यास हैं श्रीवृन्दावनदास । चाखत तिहिं उच्छिष्ट हम पाय सुआज्ञा तास ॥
 मार्थे धरि अति भक्ति करि चरण कमल युग ताहि । वर्णन करिये सूत्रगण लीला सेस हि आहि ॥
 रहे वरप चौबीस लौं प्रभु जू अपने धाम । तहां जु लीला करी तिहि लीला आद्य जु नाम ॥
 तहां वर्ष चौबीस कैं सेस माघ है मास । शुक्ल पक्ष नव महाप्रभु तब कीनौ संन्यास ॥
 रहैं वरप चौबीस लौं प्रभु जू करि संन्यास । नाम सेस लीला जु तिहिं तहां जु करी प्रकास ॥
 है हैं लीला सेस के मध्य अंत है नाम । लीला भेद हि जन करें नाम भेद अभिराम ॥

ताही मधि षट वरष लौं गमनागमन हि जोइ । वृन्दावन नीलाचलहि गौड़ सेतबंध सोइ ॥१४॥
 तहां जु लीला करी प्रभु मध्य नाम है ताहि । ता पाछें लीला जु तिहि अंत नाम है आहि ॥
 केवल अष्टादश वरष प्रभु नीलाचल वास । सिखई करि आचरण निज प्रेम भक्ति रसरास ॥
 आदि मध्य अरु अन्त्य में है लीला रससार । अब कछु लीला मध्य कौं करियतु हैं विस्तार ॥
 ताही मधि षट वरष प्रभु भक्तगणनि के संग । करि प्रवर्तित प्रेमभगति नृत्य गान बहु रंग ॥
 गौड़देश पठये जु प्रभु नित्यानन्द प्रभु जोइ । दिय वहाय के प्रेमरस गौड़देश तिन सोइ ॥
 सहज हि नित्यानन्द हैं प्रेमोदाम सुभाय । प्रेमदान जहँ तहँ कियौ प्रभु की आज्ञा पाइ ॥
 नमस्कार कोटिक सु मम चरण कमल मधि ताहि । जिन्हौ भक्ति चैतन्य की जगतनि वोई आहि ॥
 गोस्वामी चैतन्य जू वड भाई कहैं जाहि । प्रभु मेरे चैतन्य हैं तेऊ कहैं जू आहि ॥
 आपुन नित्यानन्द हैं जद्यपि श्री बलराम । तेउ करें चैतन्य कौ दासभाव अभिराम ॥
 सेव हु प्रभु चैतन्य कौ नाम लेहु करौ गान । करें भक्ति चैतन्य की जो सोई मम प्राण ॥
 इहि विधि श्री चैतन्य की भक्ति दई संसार । दीन हीन निंदक जिते सब किये निस्तार ॥
 रूप सनातन कौ तवै प्रभु जू दियौ पठाय । वृन्दावन आये दोउ प्रभु की आज्ञा पाय ॥२६॥
 भक्ति प्रचारी तीर्थ सब प्रगट किये रसरास । गोविंद मदन गुपाल की सेवा करी प्रकास ॥
 नाना ग्रंथनि आनि किय भक्ति ग्रंथ कौ सार । मूढ़ अधम हूं जननि कौं कियौ तिन्हौ निस्तार ॥
 प्रभु की आज्ञा पाइ कें किय रसशास्त्र विचार । व्रज की भक्ति निगूढ़ हि किय ताकौ जु प्रचार ॥
 किय हरिभक्तिविलास अरु भागवतामृत आहि । दशम टिप्पनी करी अरु दशम चरित्र सु ताहि ॥
 इते सनातन जू किये सब ग्रंथ रससार । रूप गुंसाई जिते किय नहि गणना कौ पार ॥
 मुख्य मुख्य तिन में कछु तिन कौ लीजतु नाम । व्रजविलास वर्णन कियौ लक्ष ग्रंथ अभिराम ॥
 भक्तिरसामृतसिंधु किय श्रीउज्जलमणि सोइ । किय विदग्धमाधव ललितमाधव नाटक दोइ ॥
 दानकेलिरसकौमुद्री स्तवमाला गुहि आहि । लीला छंद दश आठ किय अरु पद्यावलि जाहि ॥
 श्री गोविंदविरुदावली लक्षन जा कें जोइ । मथुरा कौ महात्म्य किय नाटक लक्षण सोइ ॥
 भागवतामृत आदि ये सकें गुणनि करि कोइ । व्रजविलास वर्णन कियौ सब ठां रस में भोइ ॥
 आत पुत्र तिनके जु श्री जीव गुसाई आहि । भक्ति ग्रंथ किय जिन्ह जे नहीं अंतहैं ताहि ॥
 ग्रंथ नाम सन्दर्भ किय श्री भागवत विचारि । भक्ति रीति सिद्धांत कौ जहां दिखायौ पार ॥
 श्री गुपालचंपू रच्यौ ग्रंथ महारस सूर । लीला नित्य उपासना जिहिं व्रजरस कौ पूर ॥
 प्रथम वरष सब भक्तगण अद्वैतादिक जोइ । नीलाचल कौ गमन किय प्रभु देखन हित सोइ ॥
 रथयात्रा कौ देखि तव रहे जू चातुर्मास । नृत्य गान प्रभु संग करें अति ही भरे हुलास ॥
 विदा समें प्रभु जू कछौ तिन सब सों यह आहि । प्रति वत्सर ऐहौ सब गुंड़िचा देखन जहि ॥
 प्रभु की आज्ञा पाय सब प्रति वत्सर ही आइ । प्रभु कौ देखि सुगुंड़िचा जाहि महासुख पाइ ॥

करें गतागति यौं सब वीस वरस लौं जोइ । नहीं परस्पर दुहुन की रहनि दुहनि विनु सोइ ॥
 सेस और जो रहें तिहि द्वादस वत्सर जोइ । कृष्ण विरह लीला तहां प्रभु के अंतर सोइ ॥
 सदा निरंतर रेंन दिन कृष्ण विरह उन्माद । हंसि गावैं नाचैं गिरैं रौवैं भरैं विषाद ॥
 जगन्नाथ दरसन करें जे छिन प्रभु सुख भोइ । मिले बहुरि कुल्लेखत में मन हि भावना सोइ ॥
 जात्रा रथ आगें जवै नृत्य करें प्रभु आहि । तहां एक पद यहै जो गान करावैं ताहि ॥

पद—पायो हम सोई प्राणाधार । जाके हेतु मदन दावानल भयौ सबै तनु छार ॥

दो—

याही ध्रुवा के गान में नृत्य प्रहर द्वै कीय । कृष्ण लियें व्रज जाहि है यहै भाव मधि हीय ॥
 यही भाव करि नृत्य में श्लोक पढ़ें इहि आहि । इही श्लोक कौ अर्थ जौ कोइ न समझे ताहि ॥

तथाहि काव्यप्रकाश—

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा, स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढा कदम्बानिलाः ॥
 सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ रेवारोधसि वेतसितरुतले चेतः समुत्क्रण्ठते ॥ इति ॥

यही श्लोक कौ अर्थ जो जानें एक स्वरूप । दैव जोग ताही वरष तहां गये श्रीरूप ॥
 रूप गुसाई जू तंही प्रभु के मुख सुनि ताहि । तिही श्लोक के अर्थ कौ किय श्लोक इक आहि ॥
 करिकें तिहिइक ताल कौ पत्र बीच लिखि आय । निज निवासकौ छानि जौ तिहि मधि खुरस्यो ताय ॥
 गये उदधि ये न्यायवैं तहां राखि कें ताहि । तिही समें आये जु प्रभु तिन्हैं मिलन हित आहि ॥
 रूप सनातन और हरिदास नाम रसलीन । जगन्नाथ मन्दिर सु मधि जाइ न ये जन तीन ॥
 जगन्नाथ कौ महाप्रभु उपलभोग लखि सोइ । जाहि आपनैं गेह तव इन तीनों मिलि सोइ ॥
 इन तीनों जन मध्य जव रहैं कोऊ जन आइ । नेम रहैं प्रभु यह मिले आप आय तव ताइ ॥
 दैव जोग प्रभु आइ तव ऊचैं चाहौ जोइ । ताल पत्र मधि छानितें श्लोक लयौ वह सोइ ॥
 नीकें कै आविष्ट भौ प्रभु जू पढि के ताहि । रूप गुसाई आइ कें परे दंडवत आहि ॥
 उठि श्री प्रभु जू रूप कें पीठ थपेरहि मारि । लागे कहन तवै कछु तिनकौं भरि अँकवारि ॥
 अभिप्राय मम पदय कौ कोऊ न जाने ताहि । मेरे मन की बात तुम जानी कैसें आहि ॥
 ऐसें कहिकें प्रभु तिन्हैं बहु प्रसाद करि जोइ । श्री स्वरूप गोस्वामि कौ आनि दिखायौ सोइ ॥
 अति विस्मित हूँ महाप्रभु पूछत लगे स्वरूप । मेरे मन की बात यह कैसें जानी रूप ॥
 कहैं स्वरूप जु हृदय की जानी जातें जोइ । ताही के तुम कृपा के भाजन जानें सोइ ॥
 कहैं जु प्रभु हम तुष्टहैं तिनकौं पात्र विचारि । आलिंगन करि कियौ सब शक्तिनि कौ संचार ॥
 रस निगूढ़ सु विचारिकें जोग्य पात्र है आइ । आस्वादन रस गूढ़ कौं तुम हूं करौ जु ताइ ॥

कहिगें ये सब कथा हम आगे करि विस्तार । हां प्रस्तावहि पायकें किय संचेप विचार ॥

तथाहि—प्रियः सोऽयं कृष्णः सहचरि कुरुक्षेत्रे मिलितस्तथाहं साराधा तदिदमुभयोः संगमसुखम् ॥

तथाप्यन्तस्तेलन्मधुरमुरलीपञ्चमजुषे मनो मे कालिन्दीपुलिनविपिनाय स्पृहयति ॥८॥

इह पद कौ संचेप करि अर्थ सुनौ जन ताहि । जगन्नाथ लखि भावना ज्यों प्रभु के हिय आहि ॥
श्री राधा कुल्लेख में दरसन हरि कौ आहि । यद्यपि पायौ यह तऊ करै भावना जाहि ॥
जन गण घोरा गज कहां राजवेस यह जोइ । कहाँ विजन वृन्दाविपिन गोप भेष यह सोइ ॥
सोई भाव सु कृष्ण सों श्री वृन्दावन सोइ । जवै पाइये तव हियै वांछित पूरण होइ ॥

तदुक्तं दशमे—गेहजुषामपि मनस्पृदिधात् सदा नः ॥६॥

मेरे वृजपुर गेह में तुव पद पंकज जोइ । उदै करै जो तवहि मम वांछा पूरण होइ ॥
श्री भागवत श्लोक कौ अर्थ गूढ़ अधिकाय । रूप गुसाई श्लोक कौ दीनौ सवन जनाय ॥
ऐसे तव श्री महाप्रभु देखें श्री जगन्नाथ । संग सुभद्रा लखि पुनि नहि वंशी तिनि हाथ ॥
ललित त्रिभंगी ब्रजहिमधि श्रीब्रजराज कुमार । कहां लहौ अभिलास यह अनुछिन बड़े अपार ॥
राधा के उन्माद ज्यों उद्धव देखें जोइ । उद्घूर्णा सु प्रलाप त्यों प्रभु के निसिदिन होय ॥
द्वादश वत्सर शेष यौ श्री प्रभु वितये जोइ । इही भांति लीला त्रिविध करी सेस है सोइ ॥
किये वरष चौबिस मधि करि संन्यास जु कर्म । है जु अनंत अपार ते को जानै तिनि मर्म ॥
कहन हेत उदेस तिहि दिग दरसन करि आहि । लीला मुख्यन कौ करै सूत्रगणन जो ताहि ॥
प्रथम सूत्र मधि महाप्रभु कौ करिवौ संन्यास । ताही समें चले जु प्रभु वृन्दावन सुखरास ॥
अति ही विह्वल प्रेम करि नही बाह्य सुधि जोइ । राढ़ देस कीनौ भ्रमन तीन द्यौस प्रभु सोइ ॥
श्री नित्यानंद प्रभु तवै श्री प्रभु कौ जु भुलाय । ले आये गंगा निकट यमुना ताहि बताय ॥
सांतिपुरहि आचार्य के गृह आगमन सु आहि । भिक्षा प्रथा करी तहां संकीर्तन निस ताहि ॥
शचीजु भक्त समूहकी तहां मिल किय जोइ । समाधान सब करि कियौ गमन नीलगिरि सोइ ॥
नाना लीला पथहि सब दरसन देव विसाल । कथा सुमाधव पुरी की स्थापन गिरि गोपाल ॥
पायस चोरि कथा और साखि दें गोपाल । दंड भंग प्रभु कौ कियौ नित्यानंद रसाल ॥
जगन्नाथ देखन गये इकले कुपित सुहोय । परे भूमि पद देखि कें होय मूरछित सोइ ।
सार्वभौम प्रभु कौ तवै लै आये निजधाम । श्री प्रभु कौ करि चेतना बीते तीन सु जाम ॥
नित्यानंद मुकुन्द औ पंडित जगदानंद । पाछें आये मिल सब पायौ अति आनंद ॥
सार्वभौम कौ महाप्रभु कीय प्रसाद तव जोय । आपुन ईश्वर मूर्ति निज तिन्हें दिखाई सोइ ॥
गमन कियौ दक्षिण तवै कूर्मक्षेत्र मधि आय । वासुदेव कौ कुष्ठ तें मुक्ति कियौ हिय लाय ॥
स्तवन कियौजु नृसिंहकौ त्रियङ्ग नामहै सोइ । ग्राम ग्राम पथ पथ कियौ नाम प्रवर्तन जोइ ॥

भौ गोदावरि तीर बन वृन्दावन भ्रम ताहि । श्री रामानंद राय संग तहा मिलन भौ आहि ॥
त्रिमल्ल त्रिपदी गेह कौ जो दरसन किय ताहि । सबठां कियौ प्रवर्त प्रभु कृष्ण नामकौ आहि ॥
पाषंडिन के गनन के तवै दमन किय जोय । अहोवलादि नरहरि प्रभु दरसन कीन्हौ सोइ ॥
आये श्री रंगक्षेत्र पुनि कावेरी के तीर । श्री रंगजू के देखते भये जु प्रेम अधीर ॥
त्रिमल्ल भट्ट के गेह में श्री प्रभु कियौ निवास । रहे तहांई आप प्रभु वर्षा चातुर्मास ॥
त्रिमल्ल भट्ट श्री वैष्णव महापंडित हैं जोय । प्रभु पांडित्य और प्रेम लखि विस्मित भौ सोय ॥
चातुर्मास तहां प्रभु श्री वैष्णव के संग । वितयौ नृत्य सुगान करि हरि संकीर्तन रंग ॥
बीते चातुर्मास पुनि दक्षिण गमन सु ताहि । श्री परमानंद पुरी संग तहां मिलन भौ आहि ॥
कियौ भट्टमारी जु ते कृष्णदास उद्धार । राम जपी द्विज मुख कियौ कृष्ण नाम परचार ॥
रंगपुरी जु संग भयौ तवही दरसन ताहि । राम दास द्विज कौ कियौ दुःख विमोचन आहि ॥
कियौ तत्ववादीन संग श्री प्रभु तत्व विचार । भइ हीन बुद्धि आप में तिन सब को निरधार ॥
श्री अनंत पुरुषोत्तम जु और जनार्दन जोय । वासुदेव कौ दरस किय पद्मनाभ हैं सोय ॥
सप्तताल मोचन कियौ तव ही प्रभु जू आय । रामेश्वर दरसन कियौ सेतबंध मधि न्हाय ॥
श्री महाप्रभु जू तहांई सुने जु कूर्म पुराण । रावण माया सिय हरी तहां लिखन यह जान ॥
बही पुरातन पत्र प्रभु आग्रह करि ले आय । रामदास कौ दुख कियौ खंडन तिनहिं दिखाय ॥
कर्णामृत ब्रह्मसंहिता दोऊ पुस्तक देखि । आये द्वे पुस्तक सु लै अति उत्तम अवरेखि ॥
नीलाचल कौ फेरिकें गमन कियौ भरि भाय । स्नानयात्राजू प्रभुलखि भक्तगननि मिलि चाय ॥
जगन्नाथ कौ दरस प्रभु अनु अवसर नहि पाय । आयेनाथ अलाल तव विरह विकल अकुलाय ॥
रहे तहांई महाप्रभु संग भक्त समुदाय । सो सुधि पाई गौड़ तें जन सब पहुँचे आय ॥
सार्वभौम आग्रह करी नित्यानंद निज अंग । नीलाचल आये जु ते प्रभु जू कौ ले संग ॥
विरह विकल प्रभु कौ कहूँ नहि बीते दिन रैन । जन सब आय तिही समें गौड़ देसिननि ऐन ॥
संकीर्तन आरंभ किय सब मिलि जुक्ति बनाय । प्रभुकौ तव स्थिर मन भयौ संकीर्तन के चाय ॥
रामानंद सों पूर्व जव प्रभुजु मिले हैं आय । नीलाचल के आयवेकी आज्ञा दइ ताय ॥
आये राज निदेस लै ते कछु द्यौस विताय । निस दिन तिन संग प्रभु जू करे कृष्णकथा भरि ॥

कवित

काशीमिश्र जू पै कृपा प्रद्युम्नादि मिश्र मिले, परम भक्त परमानन्द पुरी आये हैं ।
श्री गोविन्द काशीश्वर श्रीस्वरूप दामोदर जूकौ कह्यो ऐवौ मिले अति मुख पाये हैं ।
यें कुलिया ग्रामवासी भक्तनिनकौ मिलाय, प्रथम ही भयौ प्रभु हिय अति भाये हैं ।
मिले सिखी माहिती औ राय भवानन्द गौड़ देस ते जे आये भक्त मुख्य २ गाये हैं ॥

जिते खंडवासी भगत नरहरिदास प्रधान । सिवानन्द संग आय कें मिले सबै गुणवान ॥
 स्नानजात्रा देखि प्रभु सबै भक्तगण संग । गेह गुंडिचा कौ कर्यौ सम्मार्जन भरि रंग ॥
 रथजात्रा दरसन कर्यौ संग सब भक्त प्रधान । रथ आगे प्रभु नृत्य करि गमन कियौ उद्यान ॥
 कृपा करि प्रभु ताही ठां रुद्रप्रताप हि जोय । विदा दिवस आज्ञा दई गौड जनन कौ सोय ॥
 प्रतिवत्सर ऐहौ जु तुम रथजात्रा के काज । चाहैं मिल्यो इहिं जु मिस निजगण भक्त समाज ॥
 भिक्षा परिपाटी जु प्रभु सार्वभौम के गेह । साटी विधवा होहु जिहि माता कहे जु एह ॥
 अद्वैतादिक भक्त सब आवैं वरस विताय । सिवानन्द जू सवनि कौ पालन करें वनाय ॥
 आयौ संग सिवानंदहि भाग्यवान इक स्वान । प्रभु पद दरसन पायकें भयौ जु अन्तर ध्यान ॥
 तिन सब कौ पथ मिलन भौ सार्वभौम सम आहि । फेरि क्यौ ताही समैं कासी गमनजु ताहि ॥
 श्री प्रभु जू सौं ते सबै मिले वैष्णव आय । प्रभु जलकीड़ा सवनि संग करी भरे अति चाय ॥
 सबै संग लै किय गुंडि गृह सम्मार्जन सोइ । रथजात्रा दरसन समैं प्रभु नृत्य करें जोइ ॥
 तिही नृत्य करि पुनि कियौ जल विहार सुखभेलि । देखें होरापंचमी तें श्री देवी केलि ॥
 उपवन मधि प्रभुजू किये विविध विलास अनेक । कृष्णदास द्विजने कियौ प्रभु जूको अभिषेक ॥
 कृष्णजन्म दिनतें भये गोपवेष प्रभु आहि । धरि सिर दधि को कलस तव लकुट फिरायौ ताहि ॥
 गौड देस के भक्त सब किये विदा प्रभु सोय । करें संग के भक्त लै सदा कीरतन जोय ॥
 वृन्दावन के चलनकौ गौड गमन किय आय । मारग सेवन विविध किय रुद्रप्रताप जु ताय ॥
 पुरी गुसाई संग जो वस्त्र प्रदान प्रसंग । आये रामानंद जू भद्रक लौं तिहि संग ॥
 विद्यावाचस्पति सदन रहे महाप्रभु आय । तिनके दरसन हित तहां आये जन समुदाय ॥
 देख्यौ जब दिन पांच लौं नहिं न लोक विश्राम । निसमें आये लोक भय श्रीप्रभु कुलियाग्राम ॥
 प्रभु जू कौ आगमन सुनि कुलिया के जन आय । कोटि कोटि आये तहां पाये दरसन ताय ॥
 तिहि ठां देवानंद पें कियौ प्रसाद अगाध । क्षमा कराय गुपाल कौ श्री निवास अपराध ॥
 पापंडी निन्दक तवैं आय परचो पद जाहि । करि अपराध क्षमा प्रभु कृष्णप्रेम दिय ताहि ॥
 वृन्दावन प्रभु चलन की सुनी नृसिंहानन्द । अति अदभुत मारग रच्यौ करि मन में आनन्द ॥
 रच्यौ कुलिया ग्राम ते रतनखचितपथ आहि । सज्या कोमल कुसुम दल विछये ऊपर ताहि ॥
 पथके दुहुदिस बकुलकी कुसुमपांति कमनीय । बीच बीच तिहिंदुहु निकट सरसी अति रमनीय ॥
 रतन जटित सोपानतिहिं प्रफुलित कमल अनूप । कोलाहल बहु खगनिकौ जो मन सुधा स्वरूप ॥
 सीतल मन्द बहे पवन बहु सुगन्ध लै जोइ । कान्हाई नटसाल सौं लिये वनाय पथ सोइ ॥
 मन आगे नाहिन चलै सकै वनाय न ताहि । बंधें न पथ प्रद्युम्न तव अति विस्मित भौ आहि ॥
 निश्चै करिकें कहै तब जन सब सुनौ विचार । प्रभु श्री वृन्दा विपिन कौ नहिं जैंहैं इहि बार ॥

कान्हाई नटसाल तें ऐहैं फिरि निरधार । कहि हैं निश्चय जानि कें फिरि पीछें जु विचार ॥
 चले जु कुलिया ग्राम तें प्रभु वृन्दावन चाय । तिनके संग सहस्र जन जिते भक्त समुदाय ॥
 जाय जहां प्रभु पद परें कमल चलें रस भूमि । तहां तहां रज लेत जन होय गर्त तिहि भूमि ॥

क०—वृन्दावन धाम अभिराम देखिवेकौं चले एसैं आये महाप्रभु रामकेलि ग्राम हैं ।
 गौडदेस पास बहु सुंदर निवास रहै तहां नृत्य करें प्रेममत्त आठों जाम हैं ।
 आये कोटि कोटि जन पादपद्म देखिवेकौं देखि सुख पाये सब पूजे मनकाम हैं ।
 गौडदेसराजा यह सुनिकें प्रताप बड़ौ केसव क्षत्री सौं कहैं वैन अभिराम हैं ॥

विना दीयें दाम लोक अगनित पाछे फिरें तातें हम जानें ए ईसुर निरधार हैं ।
 काजी औ जवन जिते इनकों न मारें कोऊ जाहि जहां इच्छा सोइ कहतु पुकार हैं ।
 सुनिकें यह केसव दीनी है उड़ाय बात गात भई चिंता बोले करिकें विचार हैं ।
 भिक्षुक सन्यासी फिरें तीरथ की जात्रा ताहि देखन कौ आवैं कोऊ जन दोय चार हैं ॥

तातें कछु म्लेच्छ कहीवात जिनि मानों तुम तासौं दोष कियौ फलहाथ नहीं आय हैं ।
 और सब नास हैं हैं ऐसैं समझाय नृप दीनौ प्रभु पास एक ब्राह्मण पठाय हैं ।
 ताके हाथ भेजी कहि चलनौ उचित ह्यातें तुम्है भय नाहि दास भय कौ सुभाय हैं ।
 ताही समैं पातसाह करि कें एकांत पूछी दवीर-खास मंत्री सौं पुर में बुलाय हैं ॥

पूछें तब कहन लगे महिमा महाप्रभु ए तौ प्रगटे हैं जिन्हौ तोहि राज दियौ हैं ।
 मंगल करण तेरौ तेरें भागवत आये लै कें जन्म गौड देस भागवान कियौ हैं ।
 वानी सिद्धि येतो तेरें इन ही के आसिष सौं हैं हैं जै इन की सम और नहीं वियौ हैं ।
 मोहि कहा पूछौ तुम राजा प्रभु अंस तातें सोई है प्रमाण जो कहन तुव हियौ हैं ॥

बोल्हो तब राजा मन मेरौ कहैं ऐसैं ए तौ ईश्वर प्रचक्ष यामें नेकु न सन्देह है ।
 ऐसैं कहि गयौ नृप सयन महल बीच आये ये दवीर खास जहाँ निज गेह है ।
 मिले दोनौं भाई तब जुगति वनाय निसि आधी जव आई चले प्रभु पद नेह है ।
 वेस कौ छिपाय आये प्रभु जू के देखवे कौं जहां ए विराजमान कृष्ण गौर देह हैं ॥

पहिलें श्री नित्यानन्द और हरिदास जू सौं मिले तिन्हैं कही महाप्रभु जू सौं जाय कें ।
 आये हैं दवीर-खास रूप दोनौ भाई ठाढ़े हेतु तुव दरसन वेस कौ छिपाय कें ।
 आय इन्हौ देखे तब दंत नृण पूंज धरे बांधि उपरैना गरें परे भूमि भाय कें ।
 दैन भरे रुदन करे गमन सुखसिन्धु देखि प्रभु हियौ गयौ करुणा सौं छाये कें ॥

प्रभु कहैं उठौ उठौ भंगल तुम्हारौ है है सुनि सृष्टु वानी उठे दंत तृण धरि कै ।
जोरि हाथ दीनता सौ लागे स्तुति करवे कौं कंप सुरभेद आये नैन नीर भरि कै ।
जय जय श्री कृष्ण चैतन्य दयामध अहो पतितन के पावन निज दया करि क ।
नीच जाति नीच संगी आगें कहैं लाज होति नीच कर्म किये सब आयुसव भरि कै ।

तथाहि पद्मपुराणे—मत्तुल्यो नास्ति पापात्मा नापराधीच कश्चन । परीहारेपि लज्जा मे किं ब्रुवे पुरुषोत्तम ॥

हम सौं न पातकी औ तुम सौं न पावन है यहै श्लोक पढ्यौ दोऊ भाई वार वार है ।
हम सौं अधम नाहि कोऊ जग बीच एक तिनके उधार हेत तुम अवतार है ।
जगाई मधाई तारे पौरुष न यामें भयौ तेन हम होय तुम्है परेगी सम्हार है ।
दोऊ द्विज जाति नवद्वीप में निवास करें संग नीच कौं न नीच सेवा अधिकार है ॥

हुतौ दोस एक पापाचार दूर कियौ सो तो पापरासि जारिवेकौ एक नामाभास है ।
निंदा करि लेय नाम तऊ मुक्ति देय ताकौं प्रीति सौं जु कहै लहै भक्ति कौ प्रकास है ।
जगाई मधाई दोऊ तिनहं तें कोटि गुण हम हैं अधम दोऊ कीनौ धर्मनास है ।
म्लेच्छ सेवा करें अरु म्लेच्छ हीकौ कर्म धरें गाय द्विज द्रोही ताकौं हमें सदा पास है ॥

तातें निजकर्म हमें बांधि विपै विष्टा गर्त डार्यौ अब काढ़िबे कौं लोकमें न कोई है ।
काहू के न बल एक विना तुम पतित पावन ऐसौ कौन बाह गहि काढ़े जोय है ।
करोगे प्रगट बल हम दोऊ के उधारि वे कौं तव ही सफल हैं है वृत्त सोइ है ।
सकल ब्रह्मांड दया बीच नीच गामी देखि मन जो विकल भयौ आसा जिय भोइ है ॥

दोहा

एक बात सांची कहौं सुनौ दयामय ताहि । मो विन कोऊ जगत में दयापात्र नहि आहि ॥
तातें मो पै दया करि करौ सफल अब ताहि । देखै सब ब्रह्मांड तुव बड़ौ दयावल आहि ॥

तथाहि—नमृषा परमार्थमेव मे शृणु विज्ञापनमेकमप्रतः । यदि मे न दयिष्यसे तदा दयनीयस्तव नाथ दुर्लभः ॥

कवित्त

देखि निज दीनताई मन विकलाई होत दीनबन्धुताई तुव हिय सुख दाई है ।
देखि कें अजोगताई होति है निरासताई निरखि कृपालताई हर्ष अधिकाई है ।
भक्त के सहाई सुनि कंप सरसाई होति भक्ति कहां पाई हम हीयें अज्ञताई है ।
अगतिन गतिदाई तुम सुने मन भाई बड़ेई अगति हमें तातें बनि आई है ॥

तथाहि गोस्वामिवा श्लोकः—भवन्तमेवानुचरन्तिरन्तरः प्रशान्तनिः शेषमनोरथान्तरः ।
कदाहमेकान्तिकनित्यकिंकरः प्रहर्षयिष्यामि स नाथ जीवितं ॥

जैसे वॉना चंद गहिवे कौं करै ऊचौ कर ताही कैसें धरै करै लोक उपहास है ।
ऐसें अभिलाष हियें उठेति हमारी तिन्है कहैं लाज होति तुम्हें सब ही प्रकास है ।
सुनि प्रभु बोले सुनौ रूप औ दवीरखास सदा तुम दास मेरे निज लोक वास है ।
आजु तें तिहारौ नाम रूप और सनातन छाडौ तुम दैन्य देखि होय धैर्य नास है ॥

दीनता की पत्री तुम भेजी वार वार हम ताही द्वार है कै व्यवहार जानि लीनौ है ।
जानि कें तुम्हारौ अभिलाष पत्रीलिखी तुम्हैतामें सब जीव सीझा सार लिखि दीनौ है ।
जैसे जार नारि करें आछें गृहकाज सब जानें नही कोऊ हियौ वाकौ रंग भीनौ है ।
इहां गौडदेस सौं न काम मेरौ हुतौ कछू एक ही तुम्हारे हेत आगमन कीनौ है ॥

तथाहि वासिष्ठरामायणोक्तशिवाश्लोकः—

परव्यसनिनी नारी व्यग्रापि गृहकर्मसु । तमे वास्वादयत्यन्त नवसंगरसायनम् ॥

आयौ मैं तुम्हारे हेत मन की न जानैं कोऊ जन सब कहैं प्रभु कौन हेत आये हैं ।
भली भई आये तुम दास मेरे सदा के हौं भय जिन करोगेहु जाहु सुख छये हैं ।
वेग ही उद्धार प्रभु करेंगे तुम्हारो कहि दोऊ माथें हाथ धर्यौ दया सरसाये हैं ।
दोऊ भाई प्रभु चरणारविंद सीस धरें कृपा के उठाय इन्हों हिये सौं लगाये हैं ॥

सबै भक्त वृन्दन सौं कब्यौ तव महाप्रभु कृपा करि करौ इन दोऊ कौ उधार है ।
ऐसें दोऊ भाई पर कृपा अधिकाई देखि भयौ सब भक्तन कें आनन्द अपार है ।
हरि हरि बोलि सब नाम धुनि कीन अति देखि के प्रताप प्रभु कीयौ जै जैकार है ।
कहैं सब धन्य दोऊ पाये प्रभु वेगि यातें तुम सम नहीं कोऊ यहै निरधार है ॥

नित्यानन्द हरिदास संकर श्री राम पुनि मुकुन्द जगदानंद सबै सुख ऐन है ।
बक्रेसुर औ मुरारि आदि जिते भक्त सब पादपद्म सीस धारि हीयें भीजै चैन है ।
सवन की आज्ञा लै कें चलि वे कें समै दोऊ प्रभु पद विनैं करि बोले महु वैन है ।
ह्यां तें तुम चलौ कार्य्य ह्यां न है तुम्हारौ कछू करे राजा भक्ति तऊ म्लेच्छ दुखदैन है ॥

दोहा

करै जवन भक्तिहितऊ की जै नहीं प्रतीत । इती भीर नहिं गमन कौं भली नहीं यह रीत ॥
विपिन दरस कौं चलैजो संग कोटि जन ताहि । इहि वृन्दावन गमन की नहि परिपाटी आहि ॥
यद्यपि वास्तव ईसकौं कछु भय नहिं प्रतिकूल । लौकिक लीला तऊ तिहि कृपा लोक अनुकूल ॥
यौ कहि प्रभु पद वंदि कें चले गेह दुहुं भ्रात । प्रभु कौ मन तिहि ग्राम तें चलिवेकौ भौ प्रात ॥
आये तहा तें प्रात प्रभु कान्हाई नटसाल । तहां लखी सब कृष्ण की लीला चित्र रसाल ॥

मनही मनमें भहाप्रभु किय विचार निसि ताहि । भलौ नही समुदाय संग कही सनातन आहि ॥
हम जैहैं जो मधुपुरी इतैं लोक लै संग । नहि पैहैं कछु सुख तहां अरु है है रसभंग ॥
तातै जैहैं एकले कैं इकही जन संग । वृन्दावन के गमन कौ सोभा है है रंग ॥
यौ मन में सुविचार करि प्रात सुरधनी न्हाय । नीलाचल कौ चलैं कहि चले गौर हरि राय ॥
इहि विधि आये सांतिपुर चले चले रसमेह । पांच सात दिन रहें प्रभु श्री आचारज गेह ॥
देवी सची बुलाय कैं नमस्कार करि ताहि । सात दिवस लौं करी प्रभु भिन्ना तिहि ठां आहि ॥
कियौ गमन तव तहां तैं तिहि ठां आज्ञा लेय । भक्त गननि कौ विनै करि विदा महाप्रभु देय ॥
जैहैं हम नीलाचलहि संग लेय जन दोय । हमें मिलन ऐहौ सर्व रथ उत्सव में जोय ॥

कवित्त

भटाचार्य बलभद्र पंडित दामोदर जू दोई संग लै कैं प्रभु नीलाचल आये हैं ॥
कोऊ दिन तहां रहि चले निस वृन्दावन जानैं नही कोऊ जन काहू न लखाये हैं ॥
भटाचार्य बलभद्र एकले ई संग लै कैं भारखंड है कैं कासी आय रंग छाये हैं ॥
चारि दिन कासी रहि वृन्दावन चले देखि मथुरा वन द्वादस हियें सुख पाये हैं ॥

लीलास्थल कौ देखि प्रभु प्रेम विकल भौ जोइ । कीने तव बलभद्र जू मथुरा बाहिर सोइ ॥
लै कैं गंगातीर पथ आये वेगि प्रयाग । प्रभु जू सौं जु मिले तहां आय रूप बड भाग ॥
सिन्हा करि श्री रूप कौ वृन्दावन जु पठाय । आपुन कासी आगमन कियौ भरैं हिय चाय ॥
कासी में प्रभु कौ मिले आय सनातन सोय । प्रभु तिनकौ सिन्हा करी रहे महीना दोय ॥
दै प्रभु जु निज भक्तिबल मथुरा पठायौ ताहि । संन्यासनि पै कृपा करि गये नील गिरि आहि ॥
ऐसैं प्रभु षट वरष लौं कीनैं विविध विलास । कवहु इत उत गमन किय कवहुं क्षेत्र निवास ॥
मधि लीला के सूत्र कौ कियौ जु विवरन आय । सूत्र जु लीला सेस कौ सुनौ भक्त गण ताहि ॥
लीलाचल आये जवैं वृन्दावन तैं जोय । वरष अठारह रहि तहां कहुठांगये न सोय ॥
सर्व भक्तगण गौड के तहां वरष प्रति आय । चारि मास सब रहे प्रभु संग मिले भरि माय ॥
नृत्य गीत औ कीरतन ताकौ सदा विलास । तिहि करि किय प्रभु सुपचलौं प्रेमभक्ति परकास ॥
नित्यानन्द अद्वैत जू औ मुकुन्द श्री वास । विद्यानिधि जु मुरारी वसु और जिते प्रभुदास ॥
प्रतिवत्सर आय जु करें चारिमास सह वास । लै के तिनहि सवन कौ प्रभु कैं विविध-विलास ॥
कासीस्वर भगवान पुनि गोविंद जगदानन्द । दामोदर जु स्वरूप श्री पुरी जु परमानन्द ॥
किय पंडित गोस्वामी जू लीलाचल मधि वास । वक्रेशुर दामोदर जु संकर पुनि हरिदास ॥
प्रभु जु संग इन सवन ही कीनैं नित्य निवास । रामानन्द प्रभू तजे कासी क्षेत्र सु रास ॥
सिद्धि प्राप्ति हरिदास की अति अद्भुत रस आहि । आपुन ही श्री महाप्रभु कीयो महोत्सव जाहि ॥

तवै रूप गोस्वामि कौ फेर आगमन जोहि । कियौ शक्ति संचार प्रभु तिनके हिय मधि सोइ ॥
तव ही लघु हरिदास कौ कियौ दंड प्रभु आइ । दामोदर पंडित कियौ वाक्यदण्ड प्रभु ताय ॥
तवै सनातन कौ तहां फेरि आगमन आहि । जेठ मास मधि महाप्रभु करी परीक्षा ताहि ॥
वृन्दावन कौ तुष्ट है, फेरि पठायौ नाहि । प्रभु कौ श्री अद्वैत करि अद्भुत भोजन आहि ॥
नित्यानंद संग युक्ति करि प्रभु एकांतहि जोइ । कृष्ण प्रेम परचार हित गौड पठाये सोइ ॥
तव ही वल्लभ भट श्री प्रभु कौ मिले जु आहि । कृष्ण नाम कौ अर्थ प्रभु क्यौ कृपा करि ताहि ॥
प्रभु प्रद्युम्नहि मिश्र कौ श्री रामानंद पास । श्रवन कराई हरि कथा कहि तिनके गुण रासि ॥
रामानन्द भ्राता यहै गोपीनाथ जु आहि । राजा मारण लायौ तिहि प्रभु रक्त हो जाहि ॥
पुरी रामचंद भय जु करि भिन्ना दर्ई घटाय । प्रभु दुख लखि वैष्णवन कौ अधिक राखी आय ॥
है जु एक ब्रह्मांड मधि भुवन चतुर्दस सोय । जितेक चौदह भुवन में वसें जीवगण जोय ॥
ते सब मानुष वेस धरि यात्रा मिस जु बनाय । श्री प्रभु कौ दरसन करैं लीलाचल मधि आय ॥
जिते भक्तगण एक दिन श्री वासादिक जोय । प्रभु जू के गुण गाय कैं करैं कीरतन सोय ॥
भक्त गननि सौं कहैं प्रभु कछु क्रोध मन पागि । करौ कहा तुम कीरतन कृष्णनाम गुण त्यागि ॥
जाने डडतता करण भयौ सवन मन जोय । जय जय श्री चैतन्य करि करैं कुलाहल सोइ ॥
तिही समैं दस दिसनि में कोटि कोटि जन जोय । जय श्री कृष्णचैतन्य कहि करैं कुलाहल सोइ ॥
जय जय जय श्री महाप्रभु जय ब्रजराज कुमार । तारण हित सब जगत कैं प्रभु तुम्हारौ अवतार ॥
आये हम अति दूर ते है बहु आरत जोइ । करौ कृतार्थ सवन कौ दरसन दै प्रभु सोय ॥
सुनि लोकनि कौ दैन्य प्रभु भयौ आर्द्र अति हीय । बाहिर आय जु दयामय तिनकौ दरसन दीय ॥
बोलौ हरि हरि कहैं प्रभु दोऊ भुजा उठाय । श्री हरि हरि धुनि उठी अति रही चहुँ दिस छाये ॥
प्रभु लखि प्रेम जु लोक कौ आनन्दित मन आहि । प्रभु कौ ईश्वर बोलि कैं करैं स्तवन सब ताहि ॥
तव सुनि कैं प्रभु सौं क्यौ श्री निवास रस रास । घर में दुरि किनि रहे क्यौ बाहिर होहु प्रकास ॥
लोक सिखाये किन कहैं कौन बात ये आहि । इन सब को मुख बापि तुम दै निज हाथ हि ताहि ॥
ज्यौं सूरज करि कैं उदैं चाहै दुर्यौ जु सोय । तैसैं वृष्णि सकै नही तुम चरित्र है जोय ॥
श्री निवास सौं प्रभु क्यौ तजौ विडम्बन सोय । सब मिल कैं क्यौ करौ मम महालांछना जोय ॥
ऐसैं कहि करि लोक कौ दृष्टिदान शुभधाम । प्रभु भीतर भौ लोक कैं भये सुपूरण काम ॥
गये दास रघुनाथ तव श्री नित्यानंद पास । चिरवा दधि कौ महोत्सव कियौ तहां जु प्रकास ॥
आये प्रभु के पद निकट लै कैं आज्ञा ताहि । श्री स्वरूप के हाथ प्रभु तिनकौ सोंपौ आहि ॥
भारथि ब्रह्मानन्द कौ चर्मावर जु छुड़ाये । लीला किय षटवरष प्रभु इहि विधि भरे सुभाय ॥
क्यौ सुलीला मध्य कौ यहै सूत्रगण सार । सूचन लीला सेस कौ करैं जित क विस्तार ॥

रूप और रघुनाथ पदरज निवास है जाहि । चरितामृत चैतन्य कौ कृष्णदास कहि ताहि ॥
रूप सनातन जगतहित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत कौ कहत सौ ब्रजभाषा हि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे ब्रजभाषायां मध्यलीलासूत्रवर्णनं नाम प्रथम परिच्छेदः ॥

द्वितीयपरिच्छेदः

गौरस्य कृष्णविच्छेद प्रलापाद्यनुवर्ण्यते । विच्छेदेस्मिन् प्रभोरंत्यलीला सूत्रानुवर्णने ॥ १ ॥

जय जय जय श्री गौर ससि जयश्री नित्यानन्द । जय जय श्री अद्वैत विधुजय भक्तनके वृन्द ॥
प्रभु जू के बारह वरस रहे सेष जे आहि । अनुभव कृष्णवियोग कौ होय नितन्तर ताहि ॥
राधा जू की गति भई जो उद्वल लखि नैन । इंदी भांति प्रभु की दसा होय सदा दिन रैन ॥
श्री प्रभु जू के रैन दिन रहे विरह उन्माद । चेष्टा सदा जु भ्रममई औ प्रलापमय वाद ॥
चलै रोम कूपनि रुधिर दसन हले सब आहि । अंग छिन छिन होय प्रभु प्रफुलित छिन में ताहि ॥
गंभीरामधि रैन कौ नहि निद्रा बल सोय । घसे सीस मुख भीत सौं सब अंगन छत होय ॥
द्वार कपाटहि तीन लंघि प्रभु जू वाहिर जाहि । सिंध-द्वार कवहूँ परें सिंधु नीर के मांहि ॥
उपवन कौ उद्यान लखि श्री वृन्दावन ज्ञान । गावैं नाचैं जाहि तंहि छिन मूर्छा कौं भान ॥
हाथ पाय की संधि सब एक वितस्ति प्रमान । होय पृथक संधि छाडि कै चर्म रहें स्वस्थान ॥
जिनि जिनि भावन कौ कहूँ नहि सुनियें जुविचार । तिन तिन भावन कौ रहैं प्रभुके अंगप्रचार ॥
हस्त पद सिर देह मधि सबै अचित्य स्वरूप । जाहि पैठि तव देखियै प्रभु कौं कूरम रूप ॥
ऐमें अदभुत भाव जो होय सरीर प्रकास । मनहु सन्यता वचन मधि हा हा हा जु हुतास ॥
कहां करौ पाऊ कहां श्री ब्रजराजकुमार । हा हा मेरे प्राणपति वंशी वदन सुचार ॥
काहि कहाँ जाने जु को मेरे दुःख अपार । हिय फाटे मेरो सखी विना ब्रजराजकुमार ॥
इहि विधि करें विलाप प्रभु अन्तर विहवल आहि । श्लोक राय नाटक जु मधि पढ़े निरंतर ताहि ॥

तथाहि जगन्नाथवल्लभनाटके ।—

प्रेमच्छेदरुजो वगच्छति हरि नायं न च प्रेम वा, स्थानास्थानमवैति नापि मदनो जानति नो दुर्बलाः ।
अन्यो वेद न चान्यदुः खमखिलं नो जीवनं वाश्रवं द्वित्रीयेव दिनानि यौवनमिदं हा हा विधे का गतिः ॥

राग विहागरौ

आलवाल हिय माहि सखी री उपज्यौ अंकुर प्रेम ।
दीय तोरि दुख पूरि ताहि नहि पीय कृष्ण हिय नेम ॥ टेका ॥
वाहिर नागर नृप जु सखीरी अन्तर अति सठ राज ।
परनारी वध करन किय मधि सावधान विन काज ॥
नही जानियें क्यों हूँ सजनी विधि घटना की रीति ।
प्रीति करी सुख हेत सखी जी भई सुगति विपरीति ॥
प्रेम कुटिल अजान सखी नही जानें थान अथान ।
भलो बुरो न विचार करै सो नहि माने अपमान
महाक्रूर सठ के औगुन तिन गुन की फासि बनाय ।
वांधी जु मम कंठ कर गाढ़े सकै न इत उत धाय ।
परद्रोह में निपुन सखी सो जो मनसिज तनुहीन ।
प्रांचवान सौं धै छिन छिन नहि समझै तनु दुख दीन ॥
चूर चूर करि वेधि सखी री सो अवलानि सरीर ।
लेय न हीये प्राण देय दुख जीये न मरें अधीर ॥
जो दुख मन में होय ओर कै सो नहि जानें आन ।
यहै जगत विख्यात शास्त्र की सो सांची जु निदान ॥
किहि गिनती मधि और कोउ जन प्राण सखी जो आहि ।
जाते कहि धीरज करिबे कौं सोउ न जानें ताहि ॥
कृष्ण कृपा के उदधि है कवहुँ करि हैं अंगीकार ।
यहै वचन तुम व्यर्थ सखी यौं भयौ जु अब निरधार ॥
कमल पत्र जल ज्यों अति चंचल जीव कौ जीवन जोय ।
आसा लगि जन जीयें सखि री तितनैं दिन लौं कौय ॥
सत वत्सर लगि होय सखी री जीव कौ जीवन नास ।
याहू वचन हि करि विचार हिय जिन कहि सुनि इकगास ॥
जिहि रुचि करें कृष्ण जुवती कौं जो जीवन धन सार ।
सो जोवन अति चंचल सजनी रहै दिना डै चारि ॥
ज्यों दीपक अभिराम धाम निज पहिलैं ताहि दिखाय ।
करि जु पतंगी कौ आकर्षन फिरि तिहिं देहि जराय ॥

ऐसे ही कृष्ण दिखाय गुन निजमन हरे नेह लगाय ।
 पाछे तहां समुद्र में डारे पर्युँ तहां बिललाय ॥
 इतेक करि जु विलाप गौरहरि हैं के विविध विसाद ।
 खोले हिय के दुखकपाट यौ तोरि लाज मरजाद ॥
 नाना भाव तरंग रंग वस रह्यौ न मन इक ठौर ।
 रस निर्वेद भावमय प्रभु जू श्लोक पढ़्यौ इत और ॥

तथाहि श्लोकः—

श्रीकृष्ण रूपादिनिषेवनं विना व्यर्थानि मे हान्यखिलेन्द्रियाण्यलं ।
 पाषाणाशुक्लेन्धनभारकाण्यहो विभर्म्मि वा तानि कथं हतत्रयः ॥

सम हत वित जन्मभूमि मधु वंशीनाद सु ऐन ।
 सो नहि देख्यो बदन चंद जिनको न काज ते नैन ॥
 तिहि माथे किन परौ वज्र सखि जरि वरि होहु सुझार ।
 कारण कौ नव हे सो सजनी इन नैननि कौ भार ॥
 कृष्ण मधुर बानी सो सजनी अमृत धुनि की धार ।
 जिन श्रवननि न प्रवेस कियौ तिहि अहि-विलनिरधार ॥
 तिन कौ श्रवणेंद्रिय करि कै सखि जाके है हिय ज्ञान ।
 जनम अकारण हैगौ ताकौ सो है निपट अयान ॥
 मृगमद नील कमल दोउ मिले जो परमल है आहि ।
 कृष्ण अंग कौ गंध सु ऐसै हरे मान मद ताहि ॥
 ऐसौ कृष्ण अंग परिमल कोउ जाकी नहीं सयान ।
 जिहि नासा संबन्ध न ताकौ सो भस्त्रा सम जान ॥
 ऐ कृष्णा धरामृत सब रस अरु गुण चरित्रहो जोय ।
 सुधासार कौ मधुर स्वाद तिहि है सुविनिदिक सोय ॥
 जानै नहि स्वाद जिहि तिहि भयो जनमत ही किन नास ।
 जिह्वा भेक समान है सोई रसना वचन प्रकास ॥
 कोटि चन्द्र सम सीतल हरि के करपदतल सुकुमार ।
 पारस मनि ज्यौ परसि जिन्हों कौ हरे ताप हिय मार ॥
 परस भयो नहि तिनकौ जाकौ छारखार तिहि गोन ।
 सोई वपु लोहा सम जानौ अति कठोर दुख दें ॥

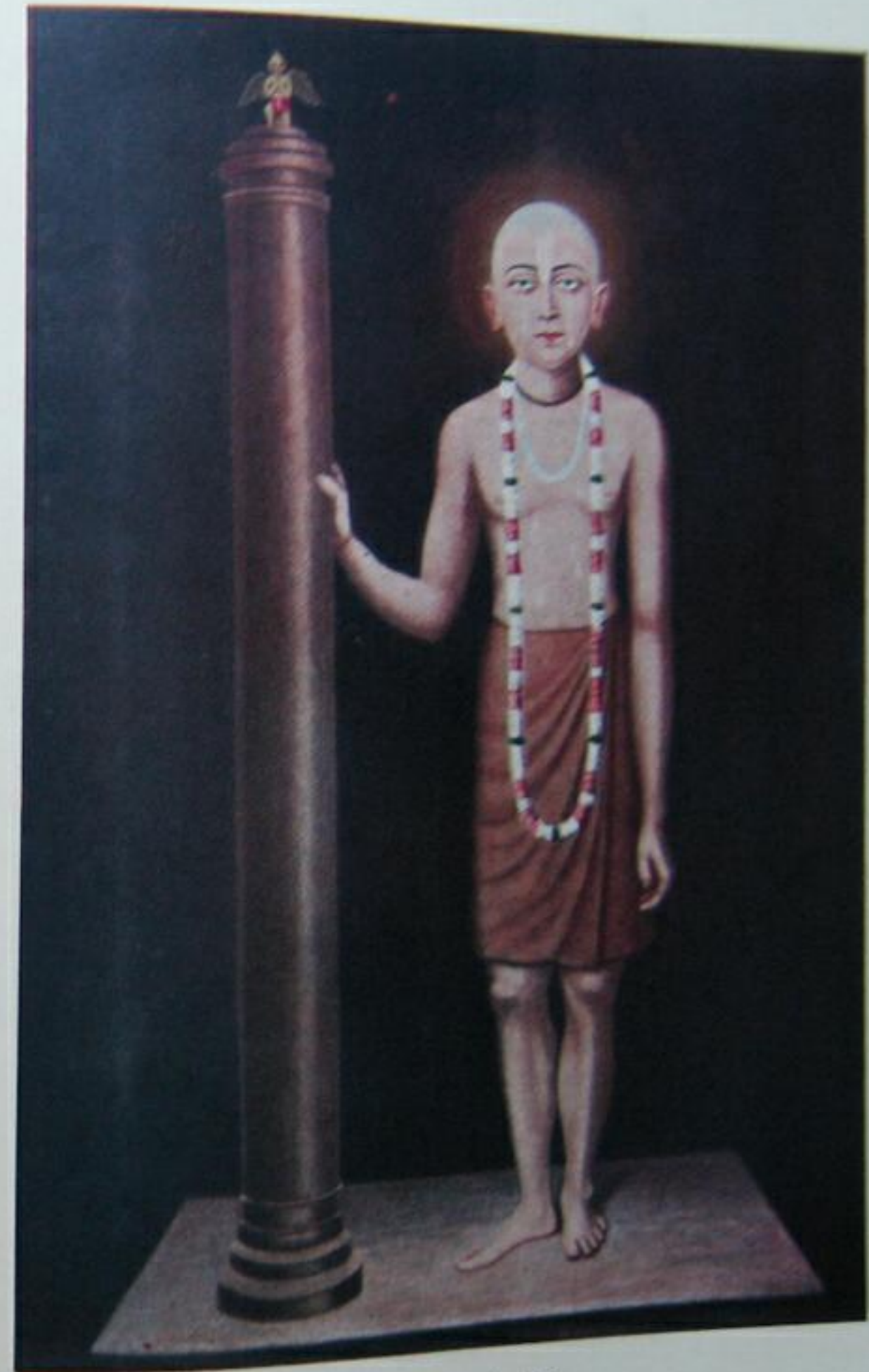
इतनौ करि विलपनु जु महाप्रभु सचिनन्दन भरि भाय ।
 सो कहिये कौ प्रगट कियौ यौ विवस महा अकुलाय ॥
 भाव दैन्य अति बढ्यौ हिये में अरु निर्वेद विसाद ।
 श्लोक एक पढ़ै जू तवै यह हिय में अति अवसाद ॥
 तथाहि—श्रीजगन्नाथवल्लभनाटके श्रीराधायाः वाक्यं—
 यदा जातो दैवान्मधुरिपुरसौ लोचन पथं तदास्माकं चेतो मदनहतकेनाहतमभूत् ।
 पुनर्यस्मिन्नेषत्तणमपि दृशोरेति पदवीं विधास्यामस्तस्मिन्नखिल घटिका रत्नखचिताः ॥४॥
 हार्यौ मेरो मन में सखी री हार्यौ मेरो मन में ।
 देखनन हि पाये मैं प्रीतम एकाँ छिन भरि नैन ॥
 जिहीं समैं सुपने में देखे वंशीवदन सुचारु ।
 तिही समैं आये द्वै वैरी अति आनंद अरु मार ॥
 पुनि कोऊ छिन दरसावै ये घरी छिनु पल आहि ।
 माला चन्दन दै आभूषन करौ अलंकृत ताहि ॥
 छिनेक बाह्य भयो मन देखे तव आगें जन दोइ ।
 पूछै तवै कहा हौं चैतन्य कहा स्वप्न लख्यौ सोइ ॥
 कियौ कहा जु प्रलाप हमनि अब नहि ताकौ जु विचार ।
 सुनौ जु कछु तुम दैन्य हमारौ कहा ताहि निरधार ॥
 प्राननि के बांधव मेरे सुनों कृष्ण प्रेम धन नाहि ।
 जीवन मेरो दिन सु वृथा सब दे हैं दुख जग माहि ॥
 सुनि करि करौ विचार यहै यों है किन ही क्यौ सार ।
 श्लोक उचार्यौ ऐसैं कहि कें श्री प्रभु प्रेम आधार ॥
 श्लोक—कइ अवरहिदं प्रेम्भं नहि होइ मानुसे लोय ।
 जइ होय कस्सविरहो विरहे होन्तस्मि को जियइ ॥
 जो इक श्री ब्रजराज कुमार कौ बिन कैतव है प्रेम ।
 सो अति ही अद्भुत निर्मल है ज्यों जावूनद हेम ॥
 सो प्रेम नरलोकनि न होई जौ काहू कै होय ।
 जौ होइ ताहि वियोग तिही कौ सो जीवै नहि कोय ॥
 इतनौ कहि पुनि तिहीं समैं श्री सचिनन्दन भरि भाय ।
 श्लोक पढ़ै अदभुत जाकौ सुनौ दोऊ ए मनलाय ॥
 जो कहियै अपनै मन की कछु लेय जु लाज दवाय ।
 इतनै पैं कहियै तउ ताकौ लाजवीज कौ खाय ॥

अति ही दुर्लभ दूरि है जु सो जो सुप्रेम कौ गंध ।
 सो नहि पाव कृष्ण हमारे कपट प्रेम सनवन्ध ॥
 तऊ जु इतनो क्रन्दन कीजै निज सौभाग्य प्रकास ।
 करियै यह जानौ तुम निश्चै हिये प्रतिष्ठा आस ॥
 बंसीनाद सुधा सुधारास व सुख तिनका ऐन ।
 देखियै नही सो वदन चन्द्रमा जिहि उजास दिन रैन ॥
 जद्यपि न है आलस्यन तऊ निजदेहमें कीजै प्रीत ।
 प्रानकीट कौ धारण करियै केवल निजसुख रीति ॥
 कृष्णप्रेम निर्मल अति मुचिसो गंगाजल के भाय ।
 सो प्रेमा है सिंधु अमृत कौ छिन २ अति अधिकाय ॥
 निर्मल तिहि अनुराग में क्यों हूं दूर न कोऊ दाग ।
 स्वत वसन में छिपै न जैसैं मसी बिन्दु कौ राग ॥
 सुद प्रेम सुख सिन्धु जो ताकी एक बिन्दु मिलै आय ।
 सोई बिंद आनंदके निधि में जगतहि देय बुडाय ॥
 जो गन हो इहि बात कहन कौ राखियै हिये दुराय ।
 बावरे हैं कैं कहैं तउ तिहि कहैंउ को पतियाय ॥
 इहि विधि दिन-दिन श्री स्वरूप अरु श्री रामानंद संग ।
 करें विदित निज भाव हिये कौ हृदय भरे रस रंग ॥
 बाहिर विष ज्वाला बलि जो है अंतर आनंद रूप ।
 कृष्ण प्रेम कौ कथन कोऊ अद्भुत चरित अनूप ॥
 तम उख चबन कीये ज्याँ आस्वादन है जाहि ।
 जरैं वदन तऊ जाय न छाछ्यो छिन २ बड़े रुचि ताहि ॥
 सो प्रेमा जिहि हिय राजै तिहि ताके बल को ज्ञान ।
 विष अमृत कौ मेलि एक ठाँ चन्द्र कोटि अरु भान ॥

तथाहि विदग्धमाथयः—

पीडाभिर्नृषकालकृतकटुतागल्लस्य निर्व्यासिनो, निःस्यन्देन मुदा सुधामधुरिमाहंकारसंकोचनः ।
 प्रेमा सुन्दरि नन्दनन्दनपरो जागति यस्यान्तरे ज्ञायन्ते स्फुटस्य वक्रमधुराग्लेनैव विक्रान्तयः ॥
 कवित्त—

महावदं दुखनि समूह करि डारे नव कालकृत कटुता कैं गर्व हूं कौ दूर है ।
 आनन्द कौ उर लाय तापय सिराय हिय करै सुधा माधुरी कौ मान भद चूर है ।



गरुडस्तम्भ के पीछे

जगन्नाथदर्शनकारी प्रेम के ठाकुर श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु
 गरुड समीप ठाढ़े रहे करें दर्शन जे आनंद समूह सो कैसे जात गये हैं ।
 ताही धर्मतरंग एक नीकी नीमतरंग रहे मरे सोई अश्रुजल ऐसे भाव छाये हैं ॥

प्रेम नन्द नन्दन कौ जाकैं हिय राजै सखी ताकैं बल बक्र अति जानें साई सूर है ।
जाकी विपरीति रीति नीति कौ न लेस जहां उठै विप ज्वाला तहां सुधाही कौ पूर है ।

जवैं देखें जगन्नाथ राम श्री सुभद्रा साथ तवैं प्रभु जानें हम कुरुखेत आये हैं ।
जीवन सुफल भयौ देखे ए कमल नैन तन मन नेत्र मेरे अति ही सिराये हैं ।
गरुड समीप ठाढ़े रहे करें दरसन जे आनंद समूह सो कैसें जात गाये हैं ।
ताही थंभ तरें एक नीकौ नीमन गर्त रहे भरें सोई अश्रुजल ऐसे भाव छाये हैं ।

तहां तें निवास आय बैठें जव मृतिका पै नख करि लिखैं भूमि चिंता कौ प्रकास है ।
हा हा कंहा वृन्दावन कहां नंद नन्दन सो कहां वंशीवदन जो छवि कौ निवास है ।
ललित त्रभंगी कहाँ कहाँ वेनु गान वह जमुना पुलिन कहां कहां उह रास है ।
कहां नृत गीत हास कहा वें विलास प्रभु मोहन मदन कहां सुख को उजास है ।

दोहा

नाना भावनि कौ तहौ उठ्यौ महा अति वेगि । छिनहुं सकैं विताय नहि भो मन में उद्वेग ॥
भो विरहानल प्रबल करि धीरज चंचल ताहि । श्लोक पढ़न लागे सु प्रभु ऐसैं नाना आहि ॥

तथाहि कृष्णकर्णामृते—

अमन्यधन्यानि दिनान्तराणि हरे त्वदालोकनमन्तरेण ।
अनाथबन्धो करुणैकसिन्धो हाहन्त हाहन्त कथं नयामि ॥
राग विहागरौ

कृपा करि दीजै दरसन दान । करुणासिंधु अपार बड़े तुम दीनबन्धु मम प्राण ॥
तुम दरसन विन अति अधन्य ए रेन द्यौसहै जोय ।
कटै नही ए काल घरी छिनु पल इक युग सम सोय ॥
उठ्यौ भाव चापल्य महा तव मन चंचल भयौ ताहि ।
जानी न जाय भाव गति क्यौ हूँ विन लखि हिय जरि आहि ॥
क्यौं करि पाऊ अब दरसन तुव हीय बढ़ौ अति चाय ।
तवै कृपन जू सौ पूछें यों देखन कौ जु उपाय ॥

तथाहि तत्रैष—

त्वच्छैशवं त्रिभुवनान्मुतमित्यवेहि मच्चापलञ्च तव वा मम वाधिगम्यं ।
तत्किं करोमि विरलं मुरलीविलासिमुखं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्याम् ॥

अहो कहा करौ कहा जाऊ । आपुन ही अहो कहो मोहि तुम जिहि उपाय तुम्हें पाऊ ।
 माधुरि कौ बल जो तुम तातें मेरे चापल जोय ।
 इन दोनों कौ तुम अरु हौ ही जानत हैं जन दोय ॥
 नाना भावनिकौ प्रभु जू कौ भयौ अति हि प्रावल्य ।
 भाव भाव कौ भयौ महारण भयौ संधि सावल्य ॥
 उत्कंठा चापल्य तिही छिनु भयौ जु दैन्य विषाद ।
 रोषामर्सादिक सेंना तिहि सब कारण उन्माद ॥
 मत्त द्विरदगण भाव औ प्रभु कौ देह पवन सम सोय ।
 जैसे महामत्त गज रण में बन कौ दलन जु होय ॥
 भयौ उन्माद दिव्य प्रभु जु कौ तन मन में अवसाद ।
 करें संवोधन भावसे में हियें जु प्रेम प्रमाद ॥

तथाहि तत्रैव—

हे देव ! हे दयित ! हे भुवनैकबन्धो । हे कृष्ण ! हे चपल ! हे करुणैकसिन्धो ॥

हे नाथ ! हे रमण ! हे नयनाभिराम ! हा हा कदानु भवितासि पदं दशोर्मै ॥

कवित्त

लखन उन्माद कौ करायें प्रकट कृष्ण भावावेस मध्य उठें प्रेम कौ जुमान हैं ।
 बोलन की बकरीति नाम मध्य व्याज स्तुति कहुं प्रिय निन्दा करैं कहूँ सनमान हैं ।
 देव तुम क्रीडा रत जीती नारि लोकनि में जाहूँ करौ क्रीडा सोई सुख कौ निदान हैं ।
 दई होत मेरे तुम बड़े वसें चित्र तुव आये मेरे भाग्य वस उदै भयैं भान हैं ॥

लोक में जे नारी गन सवन बुलावै जाय नेह करि सवन कौ करौ समाधान हैं ।
 कृष्ण तुम चित्त चोर ऐसी कौन पामर है करि कैं अखया करै तुम सौं जु मान हैं ।
 चंचल तुम्हारी मति नाहि एक ठाढ़ थिति तामें दोस नाहि कछू तुम्हारा निदान हैं ।
 करुणा के सिन्धु मेरे प्राननि के बंधु हौ जु तुम सौं न रोस मेरे कवहुँ अजान हैं ।

तुम ब्रज प्राणनाथ करौ सब रख्य ब्रज तातें बहु काज वस नाहि अवकास हैं ।
 रमन हमारे तुम आये सुख दें हेत यहै जु तिहारौ चतुराई कौ विलास हैं ।
 वाक्य मेरे निन्दा मानि गये छाडि कृष्णचंद्र सुनौहो वचन जामें स्तुतिकौ निवास हैं ।
 आखिन कौ अभिराम मेरे तुम प्राण धन हा हा फेरि देहु दरसन सुख रास हैं ।

स्तंभ कंप औ प्रसेद नैन अश्रु सुर भेद वैवर्ण पुलक अंग अंग व्याप भये हैं ।
 हमें यौ पुकारें नाचें गावैं इत उत चलैं धाय कभूँ गिरैं भूमि मूर्छा सुख छये हैं ।

प्रगट भये मूरछा में करें उठि हुँकार कहें आये महाशय दुख सब गये हैं ।
 कृष्ण माधुरीकौ गुण नाना भ्रम होय मन श्लोक पढ़ि करैं ऐसैं निश्चै हिय लये हैं ॥

तत्रैव—भारः स्वयं नु मधुरद्युतिमण्डलं नु, माधुर्यमेव नु मनो नयनामृतं नु ।
 वेणीमृजो नु मम जीवितवल्लभो नु कृष्णोऽयमभ्युदयते मम लोचनाय ॥

किधौ यहै कामरूप द्युति कौ स्वरूप किधौ किधौ सब माधुरी सुरूप धरि आई हैं ।
 उत्सव किधौ हैं यहै मेरे मन नैननि कौ किधौ प्राण प्यारे मेरे हियें सुख दाई हैं ।
 एतौ सांच कृष्ण आयें आखिन के भये भाये अति ही सुहाये मानौ रंकनिधि पाये हैं ।
 ऐसैं नाना भाव शुरु सिष्य तन मन होय सदाई नचावै नाना रीति मन भाई हैं ॥

निर्वेद विसाद दैन्य चापलता हर्ष धैर्य कोप इन नाचनि में बीते प्रभु काल हैं ।
 चंडीदास विद्यापति गान राय नाटक कौ कर्णामृत और गीत गोविन्द रसाल हैं ।
 श्री स्वरूप रामानंद संग प्रभुरें दिन गावैं सुनि होय हियें आनन्द विसाल हैं ।
 महा भाव पगे इही भांति रहैं रें दिन एक मन मीन परचौ बहु प्रेम जाल हैं ॥

श्री पुरी गुसाई जू के मुख्य रस वत्सल है रामानन्द जू कें सुद्ध सौख्य रस जानियें ।
 भक्त जे गाविंद आदि तिनकें है सुद्ध दास्य रसही की सेवा हियें ओर नही आनियें ।
 पंडित गदाधर जू और श्री जगदानन्द श्री स्वरूप जू कें हिय मुख्य रस सानियें ।
 एई चार मुख्य भाव तिन ही कें सदा बस रहैं महाप्रभु कहाँ कहाँ लौं बखानियें ॥

दोहा

लीला सुक जे मृत्यु जन भावोद्गम भौ ताहि । ये ईश्वर तिन कें जु सो कहा अचंभौ आहि ॥
 जाते आश्रय मुख्य रस भये महाप्रभु जोय । सब भावन की प्रगटता ताही तें तिन होय ॥
 ब्रज विलास मधि प्रथमजे तीनि मनोरथ आहि । जतन कियेहं नहि भयौ तव आस्वादन ताहि ॥
 आपुन अंगीकार करि श्री राधा की भाय । तीन वस्तु कौ स्वाद किय जिनको होय अचाप ॥
 आपुन करि आस्वाद तिहि सिखयौ भक्तन जोइ चिंतामनि जो प्रेम धन श्री प्रभु धनी जु सोय ॥
 तातें पात्रापात्र नहि जिहि तिहि कियौ सुदान । प्रभु जू दाता मुकुटमनि है रतननि की खान ॥
 दिय लुटाय संसार कौ ऐसौ धन है जोय । नहि अवतार दयाल इम दाता कोऊ न सोय ॥
 ऐसै जो अति गुप्त है भाव उदधि जो आहि । ब्रह्मा हू पावै नहीं एक बिन्दु हूँ ताहि ॥
 वरनि सकै नहीं कोऊ तिनकें गुणगण जोय । कहि वे की नहि कथा है कहैं न समझै कोय ॥
 ऐसैं श्री चैतन्य कौ है अति चित्रविहार । सो रसकी है जानि तुम जापै कृपा अपार ॥
 ताही पै चैतन्य की हूँ है कृपा अभंग । तिहि दासन के दास कौ हूँ है जा कौ संग ॥
 रत्न सार लीला जु प्रभु श्री स्वरूप भंडार । तिन्हौ ताहि रघुनाथ कौ कण्ठ धरचौ निरधार ॥

तिनि सों कछु जो सुन्यौ तिहि किय विवरण यह सोय । भक्तगनन कौ भेट यह यथा सक्ति दी सोय ॥
ग्रंथ किये हम श्लोकमय जु ऐसैं कहैं कोय । कैसैं ताकौ इतर जन जानि सकैगौ सोय ॥
प्रभु जू कौ आचरण जो कीनौ विवरण ताहि । सकै नहीं आराधिकें चित्त सवन कौ आहि ॥
राग द्वेष जो हो तिहि ताही मधि आवेस । सहज वस्तु के लिखन में होय नही परवेस ॥

कवित्त

जो पै है न जाने कोऊ सुनत सुनत सोऊ अद्भुत चैतन्य जू कौ चरित अपार है ।
हैं कैं कृष्ण विषे प्रीति जानि है सो रस मुनें बड़ी भांति है है हित ताकौ निरधार है ।
श्लोकमय भागवत टीका देव वा १ तऊ कैसैं जानें ताहि सब किये तें विचार है ।
श्लोक इहां दोय चारि अर्थ भाषा कियौ तऊजानी हैं न कैसैं सब जन तिहि सार है ॥

सेस लीला सूत्रगण विवरण कियौ कछू कियौ चाहै मन मेरौ तिनकौ विस्तार है ।
जो पै आयु अब सेस करौ व्यास लीला सेस जो है महाप्रभू जु की करुणा अपार है ।
हौं तौ जीण वृद्ध तऊ लिखत में कंपै कर होहि नही मेरे कछू मन में विचार है ।
देखौं नही नैन कान सुनौ नही तऊ कछू लिख्यौ चाहौं ताहि अचिरज निरधार है ॥

यहै सेस लीला सार ताकै सूत्र बीच कहूं वर्णन कियौ है कछू करिकैं विस्तार है ।
जो पै याही बीच मरौ सकौ नही ताहि कहि तौ पै यह लीला भक्तगण धन सार है ।
कीयौ है संक्षेप यहै सूत्र इहां जो न लिख्यौ नीकी भांति ताकौ आगे करेंगे विचार है ।
तित दिन जीये जो पै होय प्रभु कृपा यहै करि है विस्तार निज हीय अनुसार है ॥

दो०

छोटे बड़े जु भक्तगण वंदो सब पद आहि । मो पै तुम सन्तुष्ट सब होहु कृपा अवगाहि ॥
श्री स्वरूप मत जितौ कछु कछौ रूप रघुनाथ । सोई लिख्यौ न दोस मम तिन के पद धरि माथ ॥
श्री प्रभु नित्यानन्द मम श्री अद्वैत जु ईस । और भक्तगण जिते सब तिनके पद धरि सीस ॥
श्री स्वरूप गोस्वामि जू रूप सनातन जोइ । वंदौ श्री हरिदास पद तिन में मुख्य हैं सोइ ॥
श्री चैतन्य विलास निधि पुनि तरंग जो ताहि । कृष्णदास कहियथा मति इक कन कोऊ जाहि ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत कौ कहत है ब्रज भाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां मध्यलीला अंत्यलीला सूत्र कथन
प्रेमोन्मादप्रभाववर्णनो नाम द्वितीयपरिच्छेदः ॥

तृतीय परिच्छेदः

न्यासविधायोत्प्रेरणयोऽथ गौरो वृन्दावनं गन्तुमना भ्रमाद्यः ।
राढ़े भ्रमन शांतिपुरी मथित्वा ललास भक्तैरिह तं नतोऽस्मि ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैताचार्य ससि जय प्रभु भक्तन वृन्द ॥
वरस सेस चौबीस ये माघ मास है जोय । शुक्लपक्ष तिहिं तहां प्रभु किय सन्यास जु सोय ॥
प्रेम मगन वृन्दा विपिन चले जु करि सन्यास । राढ़ देस में तीन दिन भ्रमन कियौ रस रास ॥
पढ़े श्लोक इहिं महाप्रभु भावावेश हि जोइ । भ्रमत पवित्र कियौ सबै राढ़ देश है सोइ ॥

तथा:— एतां समास्थाय परात्मनिष्ठा मध्यासितां पूर्ववर्तमैर्महर्षिभिः ।

अहन्तरिष्यामि दुरन्तपारं तमो मुकुन्दाग्निपेवयैव ॥ २ ॥

कहै महाप्रभु साधु यह भिन्न वचन है जोय । हरि सेवा ही कें जुयों किय निर्धारन सोय ॥
जो परात्मनिष्ठा सु इक वेस मात्र है सोय । भव सागर तरिवो जु हरि सेवा ही सौं होय ॥
कियौ वेस सोई अवे वृन्दावन मधि जाय । करि हैं सेवन कृष्ण कौ वसि इकांत सुख पाय ॥
ऐसैं कहि कें चले प्रभु प्रेममत्त अति सोय । ज्ञान नहीं दिस विदिस कौं कहां रैन दिन जोय ॥
नित्यानन्द मुकुन्द औ रत्नाचारज जोइ । प्रभु कें पीछें गमन ए करें तीन जन सोइ ॥
जेई जेई प्रभु लखें तेइ तेइ सब लोक । प्रेम मगन हरि हरि कहैं नास होय दुख सोक ॥
तहां गोप बालक सबै प्रभु कौ लखि भरि माय । बोलि उठैं अति उच्च सुर हरि हरि अति हिय चाय ॥
सुनि कें तिन सब के निकट गये गौर हरि जोय । तिनकें सिर कर धरि कहैं कहौ कहौ पुनि सोय ॥
स्तुति इन सब की करें तुम भाग्यवान अधिकाय । किय कृतार्थ मो कौं जु तुम हरि हरि नाम सुनाय ॥
ठाकुर नित्यानन्द जू दुरि तिन सब कौं लाय । यहै सिखायौ सवन कौं हिय में जतन बनाय ॥
वृन्दावन पथ प्रभु तुन्है पूछेंगे भरि भाय । तब तुम गंगातीर पथ दीजौं तिन्है बताय ॥
तब प्रभु पूछें तिनै तुम सुनौ जु सिसु समुदाय । वृन्दावन कौं जाइये सो पथ देवु बताय ॥
सिसु सब गंगातीर पथ प्रभु कौं दियौ दिखाय । कियो गमन आवेस में तिन्हौं तिही पथ धाय ॥
करैं जु रत्नाचार्य सौं नित्यानन्द प्रभु राह । श्री अद्वैताचार्य के बेगि जाहु तुम गेह ॥
प्रभु कौं लै हम जाहिंगे तिन के मन्दिर जोइ । सावधान नौका हि लै रहैं तीर मधि सोइ ॥
तब तुम फिर कीजौ गमन नवद्वीप सुनिवास । सचा सहित सब भक्तगण लै ऐहौ प्रभु पास ॥
श्री नित्यानन्द महाप्रभु तिनकौ दियौ पठाय । प्रभु ऐहैं आय जु तिन्हौं आगे दियौ जताय ॥
कहैं जु प्रभु श्री पाद जू कहा गमन तुम जोय । तुम सँग वृन्दा विपिन कौं जाहिं कहैं यों सोय ॥
कितक दूर है प्रभु कहैं वृन्दावन रस कंद । यह यमुना दरसन करौ कहैं जु नित्यानन्द ॥

ऐसैं कहि लाये तिन्हें गंगा निकट सुजान । गंगा मधि आवेस में भौ प्रभु यमुना ज्ञान ॥
अहो भाग्य रविसुता कौ पायौ दरसन जोय । स्तुति श्री जमुना की करैं ऐसैं कहि कै सोय ॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

चिदानन्दभानोः सदानन्दसूनोः परप्रेमपात्री द्रव ब्रह्मगात्री ।

अघानां लवित्री जगत् क्षेमधात्री पवित्री क्रियान्तो वपुर्मित्रपुत्री ॥

यह पढ़ि करि कै दण्डवत कियौ जु गंगास्नान । इक ही है कोपीन अंग नही दूजौ परिधान ॥
तिही समै आचार्य जू नवका चढ़ि कै जोय । आये लै कोपीन नव बहिर्वास हू सोय ॥
आगे ठाढ़े आय भौ नमस्कार करि सोय । तिन्हें देखि बोले प्रभु करि मन संसय जोय ॥
तुम तौ श्री अद्वैत ह्यौ कैसे पहुँचे आनि । हम वृन्दावन में तुम जु कैसे लीनैं जानि ॥
श्री अद्वैत कहैं जहां तुम वृन्दावन जोय । गंगातट मम भाग्य तुम भयौ आगमन सोय ॥
प्रभु कहैं नित्यानन्द जू हमें छलौ है जोय । लायें गंगा कौ हमें कहिकें जमुना सोय ॥
अद्वैताचारज कहैं हिय तव हरषित होय । वचन कही श्री याद जो नाहिन मिथ्या सोय ॥
प्रभु जु तुम कियौ जहां स्नान तरनिजा सोय । एक धार है यहां बहै गंगा यमुना दोय ॥
जमुना धार पछिम बहै पूरव गंगा होय । पछिम यमुना धार मधि तहां स्नान किय जोय ॥
अब छाड़ौ कोपीन यह जो भीजी है आहि । सूकी औ नूतन कछू प्रभु जू पहिरौ ताहि ॥
तीन चारि दिन तें जु तुम जो कीनौ उपवास । चलौ आज मम घर करौ भीक्षा और निवास ॥
मुठी एक कछु अन्न कौ करवायौ है पाक । व्यंजन सूकौ रुख कछु एक दार अरु साक ॥
यौ कहि नाव चढाय कै लाये निज गृह सोय । कियौ प्रछालन पदकमल अन्तर हरषित होय ॥
श्री ठकुरानी प्रथम ही पाक कियौ है जोय । कियौ आप आचार्य जू विष्णु समर्पन सोय ॥
भोग उसारयौ तीन ठां करि कै एक समान । धातु पात्र मधि कृष्ण कौ भोग धर्यौ रसखान ॥
अति उच्चम कदली दलनि पनवारे जु सवार । भोग उसारयौ दोय ठां करि कै भलैं विचार ॥
मध्य पीत घृत सिक्त अति मात जु विविध प्रकार । व्यंजन दोना चहु दिसनि हरित मूंग की दार ॥
अदरक जुत किय साक के पाक अनेक प्रकार । पलवल पेठा करु बरी तरकारी जु अपार ॥
सूक्ता राई मिरच दै कीनैं बहु फलमूल । तिक्त भोल किय पंच विध सुधा न जिहिं समतूल ॥
कोमल दल है नीव के वेंगन कीये बनाय । फूलवरी भाजी विविध मानचक्र अधिकाय ॥
नारिकेल के मधुर फल भोगन की धरि पांति । व्यंजन कदली फूल के पेठा किये बहु भांति ॥
बरा मूंग के उरद के कदली के अति मिष्ट । पूरी श्री फल दूध की अरु प्रभु कौ जे इष्ट ॥
कदली दल मूल के दोना बड़े बड़े जोय । दोना चलै हलै नही दृढ़ विसाल है सोय ॥
दोना लै लै अर्ध सत व्यंजन भरि बहु भांति । धरे सु तीनौ भोग के आस पास करि पांति ॥
घृत पायस भरि कुंडिका माटी की जु नवीन । दूध अधावट सौ जु भरि धरे पात्र तहि तीन ॥

पय चिरवा दधि दूध के सामिग्री बहु भाय । धरि मृत कुंडीकाहि में ये जु चाय अधिकाय ॥
कदली के व्यंजन सु बहु धरे भोग तिहि ठाय । मिश्री बूरा दधि मधुर कहे न क्यौ हू जाय ॥
सब पाकनि उपरी तवे तुलसि मंजरी धार । धरे तीन जलपात्र तहां भरि जु सुवासित वार ॥
तीन पीढ़ तिन पर परम सुभ्र वसन जु विछाय । भोग महा श्री कृष्ण कौ करि रख्यौ भरि भाय ॥
समें आरती कें दोऊ प्रभु लीनैं जु बुलाय । देखी सवन सुआरती प्रभु जू के संग आय ॥
करी आरती कृष्ण कौ सज्या सयन कराय । भोजन कौ भाई दोऊ लीनैं तवें बुलाय ॥
तब मुकुन्द हरिदास विव प्रभु जु बुलाये जोइ । दौऊ जन कर जोरि तव कहन लगे यों सोइ ॥
कहैं मुकुन्द जु मम कछू कृत्य भयौ है नाहि । हों पीछे सों पाय हों तुम जु उठौ गृह मांहि ॥
तब हरिदास कहैं जु हों बड़ो अधम पापिष्ठ । करि हों भोजन इक मुठी पाछें वाहिर तिष्ठ ॥
आचारज घर मधि गये दोऊ प्रभु जू संग । प्रभु कें देखि प्रसाद कौ हिय आनन्द अभंग ॥
भोजन करवायौ तिन्हौ प्रभु कौं इहि विधिआहि । जनम जनम सिर पर धरौं चरण कमल हों ताहि ॥
तीनौ भोग जु कृष्ण कौ प्रभु जानैं इहि बात । आचारज के हीय की प्रभु नहि जानें घात ॥
प्रभु जू कहैं तीनौ करें भोजन बैठौ आय । करि हैं परिवेसन जु हम आचारज कहैं ताय ॥
कौन ठौर बैठें कहौ अरु लावौ द्वै पात । देहु आनि तिहिं अल्प करि कछु व्यंजन अरु भात ॥
आचारज कहैं पटा पर बैठौ दोऊ साथ । बैठायो दोऊन कौ यों कहि गहि कें हाथ ॥
प्रभु कहैं भोजन इतेक नहि सन्यासी जोग । कैसे इन्द्री बस करैं करि कै इतनौ भोग ॥
श्री आचार्य कहत जो अपनी चोरी जोय । हम जाने संन्यास की टाराटारी सोय ॥
भोजन करौ जु जो जु तुम वचन चातुरी भाय । प्रभु जु कहैं हंस एकले कितेक सकि है खाय ॥
श्री आचार्य कहैं करौ कपट छाडि आहार । जो नहि सकि हौ खायकछु रहि है कहा विचार ॥
इतेक न हम प्रभु जु कहैं खाय सकैं नहिं जोय । राखियें जो उछिष्ट नही धर्म यती कौ सोय ॥
ते जु कहैं लीलाचलहि खावौ चौवन वार । एक एक वारहि लगें अन्न जु सत सत भार ॥
तीन तीन जन भक्ष जो एक ग्रास तुम सोइ । तिहि लेखें यह अन्न तुम पंचग्रास नहि जोइ ॥
मम घर मेरे भाग्य बस भयौ आगमन जोय । तजौ गुसाईं चातुरी भोजन करौ जु सोय ॥
यौ कहि तिन्हौं जल दियौ दोऊ प्रभु के हाथ । हसि भोजन लागे करण प्रभु नित्यानन्द साथ ॥
न्यौते मधि आचार्य कें आजु हु भौ उपवास । उदर भर्यौ नही अर्ध हू इही अन्न इक ग्रास ॥
श्री आचार्य कहैं तुम्है है तीर्थक संन्यास । कबहुं खावौ मूल फल करौ कभू उपवास ॥
दरिद्री द्विज घर लखौ अन्न मुठी इक जोय । ताही में सन्तोष करि तजो लोभ मन सोय ॥
नित्यानन्द कहैं जवैं कियौ निमंत्रण सोइ । तब ही ते यह चारु है करिय भोजन सोइ ॥
तुम जु अष्ट अवधूत हौ उदर भरण के काज । कीनैं हैं द्विज दंड हित यह दंडी कौ साज ॥

चावर के दस भार जो सकों खाय तुम आहि । हम दरिद्र द्विज कहौ तुम पावै कहाँ जु ताहि ॥
 पायों मुठि यक अन्न जो उठौ खाय केँ ताहि । अब ह्यां करौ न मत्तता तजो न भूठन जाहि ॥
 इहि विधि नाना हास्य रस करें जु भोजन भाय । व्यंजन जब छोड़ै प्रभू आधो आधौ खाय ॥
 सो व्यंजन आचार्य जू करें पूर्ण हिय चाय । गौर हरी बोले यहै पूर्ण भये हम पाय ॥
 श्री आचार्य कहैं दियौ जो छाड़ौ जिनि ताहि । आधौऊ खावौ अवैं जो हम परसौ जाहि ॥
 नित्यानन्द कहैं जु मम पेट भरयौ नहि आहि । अन्न तिहारौ लियो जो नहि कछु खायौ ताहि ॥
 ऐसैं कहि करि भात कों एक ग्रास लै जोय । दियौ चलाय डछारि केँ कछुक क्रोध जुत होय ॥
 लगे भात द्वै चारि कन श्री आचारज अंग । आचारज जिहि अंग लै नाचौ भरि बहु रंग ॥
 भूठन लगी अवधूत की मेरे सबही अंग । कीनौ परम पवित्र मो यहि मिस दया अभंग ॥
 करिवे कौं मो आप सम यह उपाय किय जोइ । भूठन दर्ई न भय कियौ विप्र जानिकें सोइ ॥
 नित्यानन्द कहैं यहै प्रभु प्रसाद है जोइ । ताकौं तुम भूठन कहौ किय अपराध जु सोइ ॥
 संन्यासी सत एक कौ करौ निमन्त्रन जोइ । तब ही यह अपराध कौ निहचै खंडन होइ ॥
 आचारज कहैं कभु नहिं करौं निमन्त्रन ताहि । नास्यौ है स्मृति धर्म सब संन्यासी मम आहि ॥
 करवायौ तब आचमन ऐसैं कहि केँ वैन । करवायौ पुनि दुहुनि कौ उत्तम सग्या सैन ॥
 एला बीज लवंग पुनि अति उत्तम जु सुवास । तामें तुलसी मंजरी दियो दुहुन मुखवास ॥
 मलयज कुंकुम गंध पुनि कियौ लेप वपु आहि । अति सुगंध माला कुसुम पहिराई हिय ताहि ॥
 कियौ चहै आचार्य जू पद संवाहन ताहि । हिय में अति संकुचित है कहैं वचन प्रभु आहि ॥
 बहुत नचायौ नाच हम अब तुम छाड़ौ सोय । भोजन करौ मुकुन्द हरिदास संग लै दोय ॥
 तब तौ श्री आचार्य जू तिन दोऊ लै संग । किय भोजन जो हिय हुती इच्छा भरि रस रंग ॥
 सुनिकें प्रभु कौ आगमन सांतीपुर के लोक । देखन कौं आये सर्व प्रभु के पद सुख ओक ॥
 हरि हरि बोलैं लोक सब अति आनन्दित होय । प्रभुकी सुन्दरता सु लखि अति विस्मों भो सोय ॥
 गौर देह की दुति जनों उज्जल रविकी कांति । अरुण वसन सोभा तहां झिलि मिलाय बहु भांति ॥
 आवैं जाय सु लोक सब समाधान नहिं होय । भयौ जनन की भीर में दिन अबसान सु सोय ॥
 कीर्तन कौ आरंभ किय तिन्हौ सांभते आहि । निरत करें आचार्य जू प्रभु देखत हैं ताहि ॥
 बोले धरि आचार्य जू श्री नित्यानन्द जोय । पाछें श्री हरिदास जू नाचै हरषित होय ॥
 कैसैं कहियै आजु कौ आनंद उर न अछेह । बहुत दिनन में कृष्ण विधु उदै भये मम गेह ॥
 याही पदहि गवाइ केँ नाचै हरषित होय । स्वेद कम्प आँसु पुलक गर्जन गुंजन सोय ॥
 फिरि फिर केँ कबहुँ धरें प्रभु के पद सुख ऐन । आलिंगन करि केँ कभू कहैं मधुर यौ वैन ॥
 दिन अनेक मेरे जु तुम फिर किय वंचित जोय । अब पाये हौं गेह मधि बाँधि राखि हौं सोइ ॥

करें नृत्य आचार्य यों कहि भीजें आनन्द । एक जाम निसि किय तिन्हौं संकीर्तन स्वच्छंद ॥
 उत्कण्ठा प्रभु प्रेम कौ नहि न कृष्ण कौ संग । बड़ी विरह में प्रेम की ज्वाला की जु तरंग ॥
 विहवल है केँ महाप्रभु गिरे भूमि मधि जोय । प्रभु कौं लखि आचार्य जू नृत्य समेढ्यो सोय ॥
 तहँ मुकुन्द प्रभु हृदय की नीकें जोनें सोय । सरस भाव है एक पद गावतु संग जु सोय ॥
 प्रभुहि उठायौ नृत्य हित श्री अद्वैत गुसांइ । प्रभु कौं तिहि पद सुनतहि अंग धरे नहि जाँइ ॥
 अश्रु कम्प रोमांच जू स्वेद कंप सुर भंग । करें रुदन अति उच्च छिन गिरें उठे हिय रंग ॥
 श्रीमुकुन्द अतिमधुर सुर यह पद गावैं सोय । प्रभुकौ अन्तर हृदय तिहि सुनि विदीन अति होय ॥

क०—निर्वेद विषादामर्ष चपलता गर्व दैन्य भाव सैन्य युद्ध ए ई करें प्रभु संग हैं ।
 भाव के प्रभाव प्रभु भये जर जर ऐसैं गिरे मधि भूमि स्वास रखौ नही अंग है ।
 देखि सब भक्तगण भये अति चिन्तायुत औचुका उठैं हैं करि गर्जन अभंग है ।
 कहौ कहौ कहि नाचें आनन्द विवस महा जानी नहीं जाय महाभाव की तरंग है ॥
 नित्यानन्द संग बोले श्री आचार्य गहैं प्रभू पाछें हरिदास बोलैं नाचें भरे रंग है ।
 याही भांति एक जाम महाप्रभु नृत्य कियौ कबहुँ विषाद हर्ष भाव की तरंग है ।
 पांच दिन पाछें करि भोजन यौ कीयौ नृत्य महाश्रम भयौ उर आनन्द अभंग है ।
 भावाविष्ट जाते तिन्हैं श्रमकौ न ज्ञान राख्यौ प्रभुजकौं प्रभु नित्यानन्द गहि अंग है ॥

आचरज गोस्वामि तब राख्यौ कीर्तन जोय । नाना सेवा करि तिन्हौ सयन करायौ सोय ॥
 इही भांति दस द्यौस लौं भोजन कीर्तन जोइ । प्रभु जू कौ सेवन कियौ तिन्हौ एक रस सोइ ॥
 भोर ही रत्नाचार्य जू दोला मांझ चढ़ाय । आये माता सची लै संग भक्त समुदाय ॥
 लोग सु नदिया नगर के वाल वृद्ध लौं जोय । भयौ महा संघट अति आये सब ही सोय ॥
 करि केँ सब निज कृत्य प्रभु करें कीर्तन नाम । आये रत्नजु सची लै श्री अद्वैत जु धाम ॥
 शचि आगें गोस्वामि जू परे दंडवत होय । लीय उठाय क्रन्दन करि सची गोद निज सोय ॥
 भये दुहुन के दरस मधि दोऊ विहवल आहि । भई विकल अति सची तब केश न देखे ताहि ॥
 अंग पौछें चूमे वदन करैं निरीक्षण जोइ । नैन भरें जल अश्रु करि देखि सकें नहि सोइ ॥
 कहैं सची क्रन्दन सु करि वत्स निमाइ होइ । विश्वरूप सम निरुता तुम जिन करियौ सोइ ॥
 संन्यासी है केँ जु मुहि दिय दरसन नहि फेरि । तुम तैसें जो करौ मम मरन होय इहि बेरि ॥
 प्रभु जु कहैं तब रोय केँ सुन तुम मेरी मात । यामें मेरौ नहि कछू यह तुमरौही गात ॥
 तुम ही ते या देह कौ जन्म जु पालन जोय । कोटिजन्म लौं हौं जु तुव सकौ जु अश्रुणी होय ॥
 जानें अनजानें कहा किय यद्यपि संन्यास । तऊ तुम सौं है हैं नहीं हौं कबहुँ जु उदास ॥
 कहौं जहां ही तुम तंही हौं करि हौं जु निवास । जो आज्ञा तुम देहु सो करि हौं हृदय हुलास ॥

नमस्कार फिरि फिरि करें ऐसैं कहि कैं सोय । वार वार करि गोद में माय तुष्ट हिय होय ॥
आचारज जू सची लै गौ अभ्यंतर जोय । भक्त यूथ के मिलन कौ भो प्रभु सत्वर सोय ॥
एक एक करि मिले प्रभु सबै भक्त समुदाय । सब कौ मुख देखैं करैं आलिंगन दृढ़ चाय ॥
केस न देखे भक्तसब यदपि लखौ दुख आहि । तऊ लखौ हिय मांभ सुख लखि सुन्दरता ताहि ॥

कवित्त

श्री निवास रमाई जु विद्यानिधि गदाधर शुक्लांबर वक्रेश्वर औरु गंगादास हैं ।
श्री मुरारि बुद्धिमंत खान अरु नंदन जू श्रीधर विजय वासुदेव रसरास हैं ।
दामोदर श्री मुकुंद संजय जू कहां लगि नाम लेहु जिते जिनि नवद्वीप वास हैं ।
सब ही सौं मिले प्रभु हंसै करि कृपा दृष्टि आनन्द में नाचैं सब सुख के उजास हैं ॥

अरु हरि हरि बोलैं सबै करैं उच्च स्वर गान । मंदिर श्री आचार्य कौ भौ वैकुण्ठ समान ॥
जिते लोक आये तहां प्रभु कौ देखन जोइ । अरु जे नाना ग्राम ते नवद्वीप तें सोय ॥
तिन सब कौ जु निवास दिय भक्त अन्न बहु पान । बहु दिन लौं आचार्य जू किय सब कौ सनमान ॥
श्री अद्वैत भंडार जो घटैं नसै नहिं सोय । तामें जे खरचें जितौ तितनौ पूरण होय ॥
ताही दिन तें सची जू करें रसोई आहि । सब भक्तन कौ संग लै प्रभु आरोगें ताहि ॥
प्रभु कौ दरसन प्रीति ही दिन में लखैं जु जोय । प्रभु कौ अद्भुत कीरतन देखे निसि में सोय ॥
प्रभु कौ कीर्तन करत ही सब भावोदय आहि । कंप जाड्य पुलकाश्रु यों गदगद प्रलय सु ताहि ॥
वार वार प्रभु धरनि जब गिरें पछारनि खाय । देखि सची माता कहैं करि रोदन अधिकाय ॥
भई निमाई की अबै दैया चूरण देह । हा हा करि तव विष्णु पै मार्गें यह देह ॥
सेवा बालक काल तें कियौ तुम्हरो जोय । हो नारायण देहु मम यहै सुफल तिहि सोय ॥
गिरैं निमाई जिह समें धरौं करहि निज सोय । अहो निमाई देह में जैसैं व्यथा न होय ॥
सचि देवी वत्सल कहैं ऐसैं विहवल सोय । हर्ष दैन्य भय भाव करि भई विकल अति जोय ॥
श्री निवास आदिक जिते विप्र भक्तगण आहि । प्रभु कौ भिन्ना देन हित सब कौ मन भौ ताहि ॥
करैं जु सुनि माता सची सब की विनती जोइ । मोकों कहा जु और ठां दरस निमाई होइ ॥
तुम सब कौ अन्यत्र हूँ हूँ है मिलनौ आहि । हों अभागिनी कौ यहै दरस मात्र है आहि ॥
जौ लौं श्री आचार्य गृह वास निमाई होय । मोहि देहु भिन्ना सबै मार्गों दान जु सोइ ॥
नमस्कार करि कैं कहैं सुनि कैं जन गन ताहि । जोई इच्छा मात की सब की सनमति आहि ॥
माता कौ अति व्यग्र लखि भयौ व्यग्र मन ताहि । इकठां करिकें भक्तगण कहैं वचन यों आहि ॥
तुम सब आज्ञा विन चलो हों वृन्दावन जोइ । विघ्न जु लायो फेरि कैं जाय सकैं नहिं सोइ ॥
यद्यपि सहसा ही जु हम कीनौ है जु सन्यास । तऊ जु हूँ तुम सबन सौ सकौं न होय उदास ॥

तुम सबकौं नहिं तजौं हौं जौ लौं जीयौ जाहि । तव लगि छाडि सकौं न हौं माता हूँ कौ आहि ॥
सन्यासी कौ धर्म नहिं ऐ पै करि सन्यास । जन्म भूमि के मधि रहै निज कुटुंब के पास ॥
ऐसैं याही बात करि करैं न निन्दा कोय । कहो युक्ति सोई जु तुम रहै धर्म जिहिं दोय ॥
प्रभु जू के ऐसे तवै मधुर वचन सुनि सोय । सची पास कीनौ गमन आचारज दिक् जोय ॥
प्रभु जू कौ सब ही जु सौ कद्यौ निवेदन ताहि । जग माता सुनि सची जू कहन लगी यों आहि ॥
रहै निमाई जौ इहां तवै मोहि सुख आहि । सो दुख हमकौं दुसह जो निन्दा करै जु ताहि ॥
युक्ति यहै तातें भली मम हिय कहै जु सोय । दोऊ कारज होहि जो रहैं नीलगिरि जोय ॥
नीलाचल नवद्वीप में दोऊ घर जिमि आहि । लोग गतागत है सदा सुधि हम पै है ताहि ॥
गमनागमन सकौं जु करि तुम सब तहां जु आहि । आवौ गंगास्नान हित कवहुं हूँ है ताहि ॥
अपनौ जो दुखसुख महा गन्यौ नही तिहि आहि । निज सुख मानै हूँ वही जो सुख है गो ताहि ॥
सुनि कैं सबही भक्तगण करैं वड़ाई ताहि । माता ऐसे वचन तुय आज्ञा वेदसु आहि ॥
कद्यौ सवन सब हि जु सौं प्रभु के आगें आहि । सो सुनि कैं प्रभु के हियें मधि आनंद समाय ॥
नवद्वीप वासी जु लै जिते लोक समुदाय । सब कौ करि सनमान प्रभु कहैं वचन इहि भाय ॥
परम बन्धु मेरे जु तुम सबै लोक सुनि लेहु । मार्गों भिन्ना एक सो मोहि सबै मिलि देहु ॥
सदा कृष्ण संकीर्तन जु करौ मेह निज जाय । कृष्ण नाम अरु कथा तिनि आराधन में चाय ॥
आज्ञा दीजै जाहु हौं लीलाचल कौ धाय । तुम कौ दरसन देउंगौ बीच बीच में आय ॥
ऐसैं कही सब सौं प्रभु मंद मंद मुसिकाय । करि सबकौ सनमान प्रभु विदा किये हिय लाय ॥
प्रभु चलिबे कौ मन कियौ करि कैं विदा जु आय । कहैं रोय हरिदास जू करुणा वचन सु ताहि ॥
लीलाचल कौ चले प्रभु मेरी गति है कौन । लीलाचल निज सक्ति करि हौं तौ जाय सकौं ॥
दरसन ही पै हौं जु तुम हौं अति अधम जु सोय । यहि पापी कहि जीव कौं काहें धरि हौं सोय ॥
करौ दैन्य तुम संवरन यों प्रभु कहैं जु ताहि । होय हमारौ विकल मन देखि दैन्य तुव आहि ॥
जगन्नाथ सौं बीनती हम करि हैं तुम हेत । तुम कौ हम लै आय है श्री पुरुषोत्तम खेत ॥
तव तौ श्री आचार्य जू कहैं विनय करि जोय । रहौ दिना द्वै चारि प्रभु करि कैं कृपा जु सोय ॥
प्रभु जु कवहुं नहिं करैं वचन अवज्ञा ताहि । रहे गेह आचार्य कैं कियौ गमन नहिं आहि ॥
आनन्दित आचार्य भौ सची भक्त सर्व सोय । प्रतिदिन आचारज करें महा महोत्सव जोय ॥
दिन में कृष्ण कथा सुरस करें भक्तगण संग । महामहोत्सव रैन में प्रभु संकीर्तन रंग ॥
करैं रसोई शची जू अति आनन्दित होय । सुख सौं भोजन प्रभु करैं भक्त गनन लै सोय ॥
गृह संपद धन भक्त यों श्रद्धादिक जे ताहि । प्रभु के आराधन किये सकल सफल भौ आहि ॥
देखि पुत्रमुख सची कैं आनन्द उर न समाय । पूर्ण कीयौ निज सुख सबै भोजन तिन्हें कराय ॥
इहि विधि श्री अद्वैत घर भक्तगनन के संग । वितये कितेक दिन प्रभु नाना कौतुक रंग ॥

कहैं और दिन महाप्रभु सब भक्तन सौं जोय । निजनिज गृह कौं सबै तुम करौ गमन अब सोय ॥
 करौ कृष्ण संकीर्तन सब अपने घर जाय । मिलन तुम्हारौ फेरि हूँ हूँ है हम संग आहि ॥
 कब हूँ करि हो गमन तुम लीलाचल सुख खेत । कबहूँ हम हूँ आय है स्नान सुरधुनी हेत ॥
 नित्यानन्द गोस्वामी जू पंडित जगदानन्द । रामोदर पंडित तृतीय अरु श्रीदत्त मुकुन्द ॥
 प्रभु संग दिय आचार्य जू एई चार जन जोय । माता कौं समभाय कें किय पद बंदन सोय ॥
 तिनकी करी जु परिक्रमा कियौ गमन प्रभु जोय । इहां गेह आचार्य कें क्रंदन उठ्यौ जु सोय ॥
 चले महाप्रभु वेग ही निरपेक्षा सौं पागि । क्रन्दन करि आचार्य जू लीने पाछें लागि ॥
 हाथ जोरि कें महाप्रभु केतिक दूरहि जाय । मिष्टवात आचार्य कौं कहैं कलू समभाय ॥
 करो जननि समभाय जन समाधान है जोय । ज्यों तुम ही व्यग्रजु भये जीवेंगे नहि कोय ॥
 ऐसैं कहि कें महाप्रभु किय आलिंगन ताहि । इहिविधि फेरि विदा जु करि गमन कियौ तब आहि ॥
 गंगातीर हि तीर प्रभु संग चारि जन सोय । लीलाचल कौं चले प्रभु छत्र-भोग पथ होय ॥
 प्रभु कौ लीलाचल गमन तिहि भागवत प्रकास । किय वर्णन विस्तार करि श्री वृन्दावन दास ॥
 प्रभु विलास अद्वैत कौ घर जो जन सुनि जाहि । कृष्ण प्रेमधन वेगही निहचैं मिलि है ताहि ॥
 रूप सनातन पद कमल रज की करि हैं आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहैं कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ कहैं वृज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां सन्यास ग्रहणं नाम तृतीय परिच्छेदः ॥

चतुर्थ परिच्छेद

तथाहि—यस्मैदातुं चोरयन् क्षीरभांडं गोपीनाथः क्षीरचोरः अभिधोभूत् ।

श्रीगोपाकः प्रादुरासीद्वसः सन् यत् प्रेम्णा माधवेन्द्रं नतोऽस्मि ॥

जय जय जय प्रभु गौर समि जय श्रीनित्यानन्द । जय जय श्री अद्वैत ससि जय प्रभु भक्तनवृन्द ॥
 लीलाचल कौ गमन भो दरसन श्री जगन्नाथ । श्री प्रभु जू कौ मिलन पुनि सर्वभौम के साथ ॥
 ए सब लीला अति मधुर श्री वृन्दावन दास । नीकें वर्णन करी सब करि तिनकौं बहु व्यास ॥
 मधुर विचित्र हि सहज ही श्री चैतन्य विहार । पुनि वृन्दावन दास मुख मधुर अमृत की धार ॥
 याही तें वर्णन जु तिहि किये होय पुनरुक्ति । तऊ दम्भ करि वर्णियै तैसी नाहि न सक्ति ॥
 श्री प्रभु मंगल ग्रंथ मधि वर्णन कियौ जु ताहि । सूत्ररूप सूचक करैं तिहि लीला कौ आहि ॥
 जो नीकें वर्णन कियौ नहि न सूत्र मधि ताहि । यथा तथा सोई करैं लीला वर्णन ताहि ॥

याही तें तिन चरणमधि प्रणत कोटि करि आहि । ज्यों होय न अपराध मम पदपंकज मधि ताहि ॥
 ऐसैं श्री प्रभु जू चलै लीलाचल भरि रंग । कृष्ण कीरतन हरप हिय चारि भक्त तिन संग ॥
 भिक्षा हित इक द्योस प्रभु एक ग्राम मधि जाय । आपु न लाये मांगि कें बहुत अन्न समुदाय ॥
 विधन करें नही पथ बड़े बड़े जगाती जोय । आये तिन पै कृपा करि ग्राम रेमुना सोय ॥
 सुन्दर गोपीनाथ ह्यां प्रगट विराजै आहि । श्रीप्रभु जू अति भक्ति करि कीनौ दरसन ताहि ॥
 तिनके चरणकमल सुढिंग करत प्रणामहि आहि । परचौ सु जूडा कुसुम कौ प्रभु माथें पर ताहि ॥
 जूडा पाय महा प्रभू अति आनन्दित होय । कियौ भक्तगण संग लै नृत्य गान बहु सोय ॥
 प्रम रूप लखि गौर के अरु प्रभाव लखि ताहि । सेवक गोपीनाथ के विस्मित भये जु आहि ॥
 कियौ जु प्रभु कौ प्रीति करि सेवक नाना रीति । सोई निसि श्री प्रभु तहां ऐसैं करी वितीति ॥
 महा प्रसाद जु क्षीर तहां लोभ रहै प्रभु आहि । पहिलैं ईश्वर पुरी जू कही कथा है जाहि ॥
 गोपीनाथ प्रसिद्ध यह क्षीर चोर जिहि नाम । भक्त गनन सौं प्रभु कहैं सो प्रसंग सुखधाम ॥
 पहिलैं माधवपुरी हित क्षीर चुराई जोय । क्षीरचोर यह नाम सब यातें कहैं जु सोय ॥

कवित्त

पहिलैं श्री माधवेन्द्रपुरी आये वृन्दावन देखि वन सोभा दृग छके भाव छये हैं ।
 मत्त भये फिरें सब रैन दिन नाही सुध कभूँ गिरें मूरछा है कभूँ उठि धाये हैं ।
 अपथ औ पथ ऊँचे नीचे कौ विचार नाहि ऐसैं ही भ्रमत गिरि गोवर्धन आये हैं ।
 करिकें प्रदक्षिण सु बैठे श्री गौर्विंद कुंड स्नान करि वृत्त तरें ध्यान मन लाये हैं ॥
 तहां गोप बालक सु आयौ दूध पात्र लैकें धरि इन आगें हंसि बोल्यौ मृदु वैन है ।
 अहो यती दूध इह पियौ किनि मांगि खावौ भूखे करौ ध्यान कहौ यामें कहा चैन है ।
 सुनि कें वचन हिये बड़ौई जु विस्मै भयौ देखी रूप माधुरी सु कहन वनैं न है ।
 वैन सुधा प्याय सब तृषा चुधा लीनी हरि दूध दें आयौ किधौं आयौ मन लैन है ॥
 पूछी सब बात इन्हौ कौन के कुमार तुम रहौ कहां बास कैसे जान्यौ उपवास है ।
 बोल्यौ तब बालक सु गोपसुत मोकौ जानौ रहौ सदा वन याही ग्राम में निवास है ।
 रहें जे विरक्त सब मांगि खांय अन्न दूध भूखौ न रहै हमारे ग्राम आसपास है ।
 ताकौ मैं अहार देंहार भार मेरे सिर रहै जो विरक्त भूखौ भिक्षा सौं उदास है ॥
 आई जल भरिबे कौं बैछ्यौ तुम्हें देखि गई तिन्हौ मेरे हाथ दूध दियौ है पठाय कें ।
 मेरौ गाय दुहिवे कौ समै ताते बैंगि जैवो लेहु तुम पीवौ पात्र लैहौ फेरि आय कें ।
 ऐसैं कहि गये उठि जात जान्यौ नाहि इन भयौ बड़ौ चमत्कार हियें गयौ छायेकें ।
 पी कें पयपात्र धोय धरचौ वह आवै कब बालक के पथ नैन राखे हैं विछाय कें ॥

भई बड़ी बेर तऊ आयो सो न फेरि तब लगी है औसेर नींद गई है पलाय कें ।
 बाही रूप पगे लगे नाम धुनि करिवे कौं चैन कौन लेस रेन डारी है विताय कें ।
 रही निसि सेस कछु तामें निद्रा लेस भयौ स्वप्न में दरस दियौ बालक ने आयकें ।
 हाथ धरि हाथ इन्हें ले गये निकुंज मध्य बोले मृदु वैन घन कुंज कौं दिखाइ कें ॥
 रहौ याही ठौर घाम वर्षा सीत सहौ सब कष्ट बहु सह्यौ कहौ कौन सौं पुकार है ।
 ग्राम के मनुष्य लाय हम कौं कटावौ ह्यां तें पर्वत पै राखौ करौ मंदिर सवार है ।
 सीतल सुगंध जल सौ न्हाय मोहि करौ अभिषेक मेरौ अब ऐसैं ही विचार है ।
 बहु दिन बीते मोहि तेरौ मग जोवत ही तो बिन न नींद लगी तेरी ये संभार है ॥
 तवै नही आज्ञा दीनी कीनी निठुराई मेंने दियौ तुमें कष्ट ताकीगास सुनि लीजियै ।
 जैसे एक रैन बीती तोहि मोहि दिन रैन बीतें ऐसैं हूँ हमारी पीर कौं पतीजियै ।
 जैसे दियै पट पुट खुलै रंग सौ गुणौ त्यों आरति के बड़े प्रिय मिलै रस भीजियै ।
 तेरे प्रेम वस है कें सेवा कीनी अंगीकार दियौ दरसन जग भव पार कीजियै ॥
 नाम श्री गुपाल गिरीधारी मेरौ वज्र नाभ प्रगटत जानौ मोकौं ह्या कौ अधिकारियै ।
 सेवक है मेरे ते छिपाय गिरि कुंज मध्य गये भाजि भयौ जब म्लेच्छ डर भारियै ।
 रह्यौ यातें याही कुंज जन कौ बैठावौ बैठ्यौ जन ही उठावै तब उठौं जिय धारियै ।
 बांध्यौ जसुमति तब नंद बिन छोड़ै कौन भक्त ही के वस भक्त बसता जियारियै ।
 हुतौ अभिलाष यहै माधवेंद्र पुरी आवैं करें वे प्रकट तुम आये भली भई है ।
 करौ अब सावधान है कें मेरी सेवा आप कहि अंतरीक्ष भये नींद छुटि गई है ।
 तवै जागि परे खरे अर बरे अरे उर लाल भरे नैन नीर चिंता अति दर्ई है ।
 अहो कृष्ण देखे हम तऊ पहिचानें नाहि कभू भूमि गिरें भई मूरछा सुनई है ॥
 छिन एक रोय उठै धरैं छिन धीरताई आज्ञा बलवान प्रभु धीर तिन कियौ है ।
 भोर भये न्हाय तब गये ग्राम बीच पुरी लोक इक ठौरै करि बोले भीजे हिये हैं ।
 अधिकारी या ग्रामके नाम गिरिधारी ते विराजै या निकुंज तिन्हें काढौ हम जीजि है ।
 कुंज है सघन तहां द्वारन प्रवेस कौ हैं लीजिये कुल्हारे सो जतन कहि दाये है ॥
 सुनि सब लोक सुख सिंधु में मगन हैं कें चले इन संग उहां जाय कुंज देख्यौ है ।
 घनौ काटि द्वार करि कियौ है प्रवेस तामें तहां तृण माटी ढक्यौ प्रभु रूप देख्यौ है ।
 देखि हियें हर्ष भयौ आवरण दूर कियौ सबनि प्रणाम करि निज भाग्य लेख्यौ है ।
 गिरिधारी रूप भारी कैसैं कें उठावै ताहि सब रहे हारि तब जल अब देख्यौ है ॥

बड़े बड़े बलवान भये इक ठौरै सब लै गये उठाय सैल सिला पै बिठाये हैं ।
 और एक सिला ही कौ दीनौ अवलंब पाछै आछे हैं विराजै देखि नैन चैन पाये हैं ।
 जिते सब ग्राम द्विज माथें लै लै नव घट श्रीगोविन्द कुंड नीर छानि स्वच्छ लाये हैं ।
 नव सत घट भरे धरे आनि आगें तब नाना वाद्य बजै नाद चहुं दिस छाये हैं ॥
 नारी गण गावैं गीत कोऊ नाचैं रंगे प्रीति कीनी है उछाह रीति सुख कौन पार है ।
 दधि दूध घृत सब जितौ ग्राम बीच हुतौ और अभिषेक द्रव्य लाये ये संभार है ।
 घृत पकवान भोग योग सब आनि धरे तुनसी कुसुम वास सुगन्ध अपार है ।
 नाना द्विज मंत्र पढ़ैं आप माधवेंद्र पुरी कीनौ विधि पूर्व अभिषेक कौ विचार है ॥
 प्रथम न्हाय अंग सैल दूर कियौ सब सरस सुगंध तेल अंग चिकनायौ है ।
 पंचगव्य पंचामृत सौं न्हाय पुनि घट सत लै कें तब महा स्नान हूँ करावौ है ।
 सरस फुलेल लैकें पुनि चिकनाय अंग गंगाजल संखोदक फेरि अंग नायौ है ।
 अंग अंगुछाय वस्त्र नीकें पहिराय आछें तुलसी कुसुम हार पाछे पहिरायौ है ॥
 धूप दीप नाना भांति दूध दधि मिश्री आदि भोग सब लाय नव जलपात्र धर्यौ है ।
 आचमन दै कें दीनी वीरी हूँ बनाय तब आरती उतारि बहु विधि स्तव कर्यौ है ।
 करिकें प्रणाम कीनों आत्मा समर्पन तब जितौ ग्राम अन्न हुतौ लाय गिरि भर्यौ है ।
 गृह में न सीधौ रह्यौ न कुलाल गृह पात्र रहै आये प्राण सबै स्याम मन हर्यौ है ॥
 भये प्रात पाक चढ्यौ द्विज दस भात करें पांच विप्र दाल कैऊ कीनी तरकारी है ।
 नाना भांति विंजन यौ वरा कढ़ी कीनै नीकें पांच सात रोटी रासि कीनी अति भारी है ।
 वसन बिछाय नव पातरि सुधारि तापै रांधि रांधि भात सैल रचे सुखकारी है ।
 आसपास रोटी उपसैल कीनौ चहु और विंजन औ सूप पात्र धरे मनुहारी है ॥
 दूध दधि मठा चीर फैना और शालापात्र पांति कीनी आस पास अन्नकूट कीनौ है ।
 पुरी गोस्वामि जू गुपाल कौं समर्पन करि सीतल सुगंध जल घट बहु दीनौ है ।
 बहु दिन रहे भूखे पायो श्रीगुपाल सब जान्यौ नही काहूँ एक इन्हौ जानि लीन्हौ है ।
 जैयौं सब तऊ तहां रह्यौ ज्यों कौ त्यों हीं करको प्रताप यहै बड़े पै न होय हीनौ है ॥
 अनुभव कीनों सब श्री गुसाई पुरी जू नें दास ते न दुरै प्रभु प्रभु ते न दास है ।
 एक दिन उद्यम में ऐतौ भयौ उछव सो हरि कौ प्रताप यह काहूँ न प्रकास है ।
 आचमन वीरी दै कें आरती करन लागे करें लोक जै जै कार मन में हुलास है ।
 ल्याय नव सज्या वस्त्र तकिया सुधारि उचैं प्रभु खाय दीनैं तृण टाटी आसपास है ॥

द्विजनि कौं आज्ञा दीनी श्री गुसाई पुरीजू नें भोजन करायौ जिते बालवृद्ध जन हैं ।
आज्ञा पाय बैठे सब भोजन करण लागे आंगें द्विज पांति ज्याय सुखी भये मन हैं ।
सुनि सुनि ग्रामनिते आये सब लोक जिते तिन्हों भात खायौ और देखे स्याम धन हैं ।
देखिके पुरी प्रभाव चमत्कार भयौ कहैं सुन्यौ अन्नकूट सोई देख्यौ हम धन हैं ॥

कीने द्विज भक्त जिते सेवा पै नियुक्त करें रहैं दिन सेस में उठाये प्रभु फेर हैं ।
भोग पुनि लगाय जल शीतल अचवाय हीयें चैन पाय मुख माधुरी रंगे रहैं ।
प्रगटे गुपाल धुनि धाई देस देसनि में आये देखवे कौं ग्राम आस पास जे रहैं ।
एक एक ग्राम जन लीनों मांगि एक दिन करें अन्नकूट अन्न लाये बहु ढेर हैं ॥
देखन कौं भीर भई आधी रैन बीति गई पौढ़े गिरिधारी इन्हों दूध कछु लीनौ हैं ।
भोर भये सेवा करी एक ग्रामजन सीधौ ल्यायौ वाही रीति भांति अन्नकूट कीनौ हैं ।
अति ही प्रसन्नता सौं जैं गिरिधारी वृजवासीनि की साहजिक प्रीति सुख दीनौ हैं ।
पाय के महाप्रसाद देखि कें गुपाल रूप सब कें आनंद बढ़्यौ हिये रंग भीन्हों हैं ॥

देस देस बात गई आये लोक प्रीति छई ल्याये बहु भेट धन वसन अपार हैं ।
मथुरा के बड़े बड़े धनी भक्ति पूर्व लाये नाना स्वर्ण रौप्य पात्र द्रव्य के भंडार हैं ।
एक बड़ा धनी छत्री मंदिर करायो तिन काहु नें भंडार रचे खरिक सुधार हैं ।
वृजवासी एक एक धेनु भेट दीनी भई श्री गुपाल धाम धेनु संख्या न सम्हार हैं ॥

दिन दिन याही भांति सेवाकौ प्रचार बढ़्यो तवें गौड देससौं जु दोय द्विज आये हैं ।
जन्म करि राखौ तिन्हें श्रीपुरी गुसाई जीनें सिष्य करि सेवा दीनी भये मन भायें हैं ।
तव तौ विस्तार राज सेवा कौ अपार देखि वृद्धि सुख सिन्धु ऐसैं वर्ष द्वै विताये हैं ।
स्वप्न बीच स्याम कछौ ताप मेरौ जाय नाहि मलय कपूर लाय कीजिये जुड़ाये हैं ॥
सोतौ हैगौ लीलाचल वेगि जाय लावौ तुम और कौन काम ऐसैं बोले सुखकारी हैं ।
सुनत ही बेंन नैन खुले चैन भयौ प्रेम सिन्धु बढ़ि गयौ तामें बृद्ध अति भारी हैं ।
आज्ञा बलवान प्रभु ताके पालि वे कें लियें चले देश पूरव कौं बात न विचारी हैं ।
आज्ञा मांगि चले आपु सबनि कौं सावधान कीनौ सेवा बीच तीन्हों हुते अधिकारी हैं ॥

चले चले गौड देस आये पुनि सांति पुर रहे आय श्री अद्वैताचार्य जू के धाम हैं ।
देखि पुरी प्रेम श्री आचार्य सुख मग्न भये जन्म करि मंत्र लीनौ पूजे हिय काम हैं ।
दिवा तिन्हें दै कें पुनि चलि कें तहां ते आये रंमना में देखे प्रभु गोपीनाथ नाम हैं ।
देखि रूप प्रेमावेश हैं कें तृत्य गान करि बैठे जगमोहन में अति अभिराम हैं ॥

देखि सेवा रीति अति मन में मग्न भये कियौ अनुमान इहां भोग लगै नीके हैं ।
जे जे इहां लागे तिन्हें सुनिकें गुपालजू कौं तैसैं ही लगावैं भोग प्यारें जेई जीके हैं ।
मन में विचार यह पूछन पुजारी लगे कहैं भोग सब जिते प्यारें हरि ही के हैं ।
सध्या भोग लगै खीर अमृत केलि नाम मधुर तें मधुर अति देव भोग फीके हैं ॥

दोय दस अटका सु भरे भोग लागे नित ऐसौ भोग लोक में न ताकौ समौ आयौ हैं ।
सुनि कें विचार कियौ मन में गुसाई जी नें मागे विन मिले जो पै थोरोई सुहायो हैं ।
स्वाद जानि तैसैं भोग लावैं श्रीगुपाल जूकौं पाछे हिय लही लाज विष्णु नाम गायौ हैं ।
ताही समें भोग लायौ आरती दरस करि प्रनाम आये वचन कछु न सुनायौ हैं ॥

यामें लोक सिद्धा यहै हैं विरक्त धर्म विना भायौ नहीं खाय नहीं करें उपवास हैं ।
प्रेमामृत तृप्ति ताहि तृषा छुधा बाधै नाहि काहु की न चाह रहै जग सौं उदास हैं ।
इच्छा प्रभु हेत भई तऊ अपराध मान्यौ यहै दास धर्म या में और हू विलास हैं ।
भक्ति अभिलाष होय ताकौ प्रभु जानि लें हि ताहि प्रतिपालें विनु किये ही प्रकास हैं ॥

आय ग्राम बीच तहां एक सूनी हाट बैठे नाम धुनि करिवे कौं नित्य नेम वही हैं ।
वहां तौ पुजारी प्रभु स्वाय निज कृत्य करि सोयौ स्वप्न बीच ऐसैं गोपीनाथ कही हैं ।
उठौहौ पुजारी द्वार खोलौ वेगि राख्यौ एक अटका संन्यासी हेत जाकौ प्रेम सही हैं ।
राख्यौ तक्रियासौं ढांकि जान्यौ नही तुम्हों यातें जातें मेरी मायानें तुम्हारी मति लही हैं ॥

माधवेन्द्र पुरी जती वैद्यौ एक हाट बीच यहै क्षीर लैंके तिन्हें देहु वेगि जाय कें ।
स्वप्न देखि जाग्यौ सो विचारकरि न्हायौ खोल द्वार ताहीतर क्षीरपात्र देख्यौ आय कें ।
लीयौहैं उठायताही चौका दैकें द्वार मूढ़ि आयौ चलयौ वेगि ग्राम हिये भर्यौ चाय कें ।
हाट हाट टेरें लेहु माधवेन्द्र पुरी क्षीर तें हित गोपीनाथ राख्यौ हैं चुरायकें ॥

दियौ हैं प्रसाद आय लेहु पुरी पावै तुम सम भाग्यवान तीन लोक में न कोय हैं ।
सुनि कें यौ पुरी मिले आय हियें रंग झिले करिकें प्रणाम तिनि दियौ क्षीर सोई हैं ।
कही सब रीति सुनि पुरी प्रेमावस भयौ देखि कें पुजारी मति अचिरज भोई हैं ।
कहैं बार बार नेह अधिक अपार इतौ तिनकें जो स्याम वस होय जोग्य जोई हैं ॥

कहि यौ पुजारी गयौ करिकें प्रणाम तव इन्हों प्रेमावस हीयें सो प्रसाद पायौ हैं ।
धोय हू कें पियौ पात्र फोरि टूक टूक करि राख्यौ बांधि बहिर्वास हियौ रंग छायौ हैं ।
प्रति दिन एक खंड खाय प्रेम वृद्धि जाय अंग न समाय भाव कापें जात गायौ हैं ।
दीनी हैं चुराय क्षीर हमें गोपीनाथ सुनि हैं हैं भोर भीर तातें चलिवाँ सुहायौ हैं ।

चलैहँ प्रतिष्ठा स्वपचीसों भय भीत हूँकैं ह्राई ते प्रणाम गोपीनाथ जू कौं करिकैं ।
 चले चले लीलाचल आये देखि जगन्नाथ रूप प्रेम मत्त भये नैन नीर भरि कैं ।
 कभूँ गिरें कभूँ उठैं हसै नाचैं गावैं कभूँ रूप माधुरी तें सब लीनी सुधि हरि कैं ।
 आये माधवेन्द्र पुरी यहै लोक ख्याति भई देखि वे कौं भक्ति पूर्व आये सब दरि कैं ॥
 प्रतिष्ठा की नीति है जोईन चाहै ताहि चहै भजै यासों जोई ताहि भजै रीति नई है ।
 याके भय पुरी भजै तजै कैसेँ भक्ति दासी एनौ इहां छाड़ि गये आगें वह गई है ।
 डरै तब तहां कहां जाहि भांजि तासौ बंधे प्रभु काज है तब हूं सुख रूप मई है ।
 आये लै महांत वृन्द सभा मधि बोले तब चंदन गुपाल मागै रीति कहि दई है ॥
 सुनि सब हर्ष पाय लगें जल करि वे कौं निज निज द्वार हूँ कैं जाच्यौ राज द्वार है ।
 जाकौ जहां पर चैंहौ तहां तहां मागि लाभ कीनौ सबनि सबै मलय घनसार है ।
 एक मन बीस तोला दोऊ दिये एक द्विज एक दास संग दियौ खरच सभार है ।
 घाट घाट लागै कर राजपत्र हूं लिखाय तातें दीनौ पुरी हाथ करि के विचार है ॥
 चले लै गुसाई ताहि आये पुनि रेमुना में देखि गोपीनाथ पर कीनौ नमस्कार है ।
 प्रेमावेश हूँ कैं नृत्य गान बहु कीनौ सब देखि कैं पुजारी कीनौ आदर अपार है ।
 दीनौ है प्रसाद क्षीर पाय ताहि मंदिर में सोये स्वप्न देख्यौ निसि रहे घटि चार है ।
 आय कैं गुपाल कछौ सुनौ माधवेन्द्र पुरी पायौ हम चंदन औ सबै घरसार है ॥
 चंदन कपूर घसि लावौ गोपीनाथ अंग दोऊ हम एक रूप ताप मेरौ जाय है ।
 हठ मति ठानौ अब दुख मन में न मानौ विसवास हिये आनौ कछौ में सुनाय कैं ।
 ऐसैं कहि अंतरीक्ष भये प्रभु जागे पुरी टेरि कैं पुजारिन सौं कछौ वेगि आइकैं ।
 कही सब स्वप्न रीति प्रभु है स्वतन्त्र सदा आज्ञा बलवान तासों कछु न वसाय है ॥
 ग्रीसम की रितु गोपीनाथ अंग लेप हूँ है सुनि यौ पुजारी बात हरपित भये हैं ।
 पुरी कहैं दोय जन संग है हमारे और दोय जन देहु तुम हमें करि नये हैं ।
 दैंहैं तिहैं द्रव्य घसें चारों जन ऐमें प्रतिदिन चढ़ाय मलय इष्ट सुख दये हैं ।
 चंदन सहित रितु ग्रीष्म विताय ऐसैं अति सुख पाय फेरि लीलाचल गये हैं ॥

दो०

चातुर्मास रहे पुरी लीलाचल मधि जाय । आनंद में भीजे रहैं सो बरनौ नहि जाय ॥
 श्री मुख माधव पुरीकौ चरित अमृत अधिकाय । आस्वादन प्रभु करें सब भक्तनकौं जु सुनाय ॥
 क०—प्रभु कहैं नित्यानंद पुरी सस नाहिं कोऊ दूध देन मिस कृष्ण जाहि दर्श दिये हैं ।
 तीन बेर स्वप्न माझ आज्ञा प्रभु दई जाहि प्रगटे सु प्रेम बस देखि जीव जीये हैं ।

सेवा अंगीकार करी अति रिझवार स्याम जगत उधार नीकी भांति करि कीये हैं ।
 दूध दधि चोर मन माखन के चोर हुते पायस के चोर गोपीनाथ जिन्हों किये हैं ॥

घसि घसि मलय कपूर जिहिं ग्रीष्म रितु जु अभंग । लायौ अपने करनि करि श्री गुपाल के अंग ॥
 जवन देस तैं ल्याय बौ तिनकौं है जंजाल । पुरी दुखी हूँ है यहै जानी श्री गोपाल ॥
 महादयामय प्रभु जु सो भक्त बल्लल है आहि । निज अंग चंदन पहिरि कैं कियौ सफल श्रम नाहि ॥
 पराकाष्ठासु प्रेम की तिहि जु विचारों जोय । प्रेम अलौकिक तैं हिये चमत्कार अति होय ॥
 मौनी परम विरक्त जो उदासीन सब ठौर । ग्राम वार्त्ता के जु डरनि संग नहीं जन और ॥
 इमि जन जो गोपाल की आज्ञा अमृत हि पाय । सहस कोस लौं धाय कैं चंदन माग्यौ जाय ॥
 भूखे रहें तऊ नही भिक्षा मांगि जु खाय । ऐसैं जन जौ मलय कौ भार वहैं मग जाय ॥
 यह चंदन मण एक जौ तोला बीस कपूर । श्री गुपाल कैं लाय हौं यौ हिय आनंद पूर ॥
 दानी उत्कल देस के गहि चंदन लखि ताहि । छैंडायल नप-पत्र तब खोलि दिखावौ ताहि ॥
 जवन देस पुनि दूर पथ दानी तहां अपार । कैसेँ कैं लै जाहिंगे चंदन यह न विचार ॥
 दानिन कौं कर दैं हित एक दाम संग नाहि । चंदन के लै जान हित तऊ उछाह हिय मांहि ॥
 है जु प्रगट हिय प्रेम कौ यह सुभाव आचार । निज दुख विघ्नादिकनि कौ करै नहीं जु विचार ॥
 प्रगट लोक में करण कौं तिहि प्रेमा जु विसाल । चंदन लावन हित दई आज्ञा तिन्है गुपाल ॥
 ल्याये चंदन रेमुना बहु श्रम हूं कैं जोय । अति आनंद मन बढ़्यौ गन्यौ नहि दुख सोय ॥
 करण परीक्षा हेत प्रभु कीनौ आज्ञा दान । करि जु परीक्षा हृदय की भौ फिरि दया जु वान ॥
 भक्ति भक्त प्रिय कृष्ण को यह सहज व्यवहार । हम सब कौ तिहिं समुझिहैं है नाहिन अधिकार ॥
 घसत घसत जैसेँ मलय बढ़ै सुगंध अपार । त्यों नाना भाव जु बढ़ै याके किये विचार ॥
 रतन गननि के बीच ज्यों मनि कौस्तुभ है जोय । तैसेँ ही रस काव्य मधि श्लोक गनौ है सोय ॥
 राधा ठकुरानी कछौ है श्लोक यह जोय । माधवेन्द्र वाणी फुर्यौ तिहीं कृपा करि सोय ॥
 कै इहिं जाने गौरससि करै आस्वादन ताहि । चौथे को अधिकार नहि आस्वादन कौ याहि ॥
 पढ़त पढ़त या श्लोक कौं शेष काल मधि जोय । श्लोक सहित भई पुरी कौ सिद्धि प्राप्ति तहैं सोय ॥

तथाहि पद्यावल्यां—

अधि दीनदर्याद्रि नाथ हे मथुरानाथ कदावलोक्यसे । हृदयं त्वदलोककातरं दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम् ॥२॥
 याही कौं प्रभु पढ़त ही भये मूरझित जोय । परे तहां तब भूमि मधि प्रेम विवस अति होय ॥
 अस्त व्यस्त तब अंक मधि करि लिय नित्यानन्द । क्रन्दन करि कैं उठैं तब गौर चंद्र रस कंद ॥
 भयौ प्रेम उनमाद तिहि चलें जु इत उत धाय । हसैं कबहुं हुंकार करि कबहुं नाचैं गाय ॥
 कहैं जु अयि अयि दीन पुनि प्रभु जू बारंवार । बानी कंठ न उच्चरें रोके असुवन धार ॥

पुलक अंग वैवर्ण्य और स्थंभ कंप प्रस्वेद । जाह्नव दैन्य कवहं गरव और विषाद निर्वेद ॥
इंहीं श्लोक करि महाप्रभु खोले प्रेम कपाट । सेवक गोपीनाथ के लखै प्रेम कौं नाट ॥
लखि लोकनि की भीर कौं भयौ बाह्य प्रभु सोय । श्री ठाकुर कौं भोग सरि वजी आरती जोय ॥
भये पुजारी बाहिरे प्रभु कौं भोग लगाय । द्वादस खीर प्रसाद दिय प्रभु के आगे आय ॥
ठाकुर कौं लखि खीर सो भौ हिय आनंद सोय । सब भक्तन के हेत प्रभु पंच क्षीर लिय जोय ॥
दिये पुजारी कौं बहुरि सात खीर प्रभु जोय । पांच खीर मिलि पंच जन पाये बांट जु सोय ॥
गोपीनाथ स्वरूप करि जद्यपि पायौ ताहि । किय प्रसाद भक्षण प्रभु भक्त दिखावन आहि ॥
नाम कीर्तन करि प्रभु वितई रैन जु सोय । मंगल आरति देखि कैं चले प्रभात हि जोय ॥
महिमा कही दुहुन की आख्यान जु मधि आहि । प्रेम जु सेवा भक्ति की भक्त बल्ललता ताहि ॥
गोपीनाथ गुपाल के पुरी जु गुण गण जोय । भक्तनि संग प्रभु श्री मुखहि करें स्वाद तिहि सोय ॥
इहि प्रसंग कौं जो सुने जन श्रद्धा जुत होय । कृष्ण चरण मधि प्रेम धन निहचै पावै सोय ॥

क०—भक्त कृत प्रगटताई हरि की भक्ति वस्यताई दास प्रेम सरसाई यामें गाई है ।

जन मन जान ताई अभिलाष सफलताई स्वरूप एकताई कही सुख दायी है ।

विवेकहरताई प्रकृति नेह की दिखाई करि कैं परीक्षा पाछे कृपा अधिकाई है ।

श्री मुख सुनाई प्रभु लीला मन भाई कविराज राज दरसाई नातें सुखपाई है ॥

रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । प्रभु चरितामृत कौं कहैं कृष्ण दास तिहि दास ॥

रूप सनातन जगत हित सुवलस्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं कहैं व्रजभाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां श्री माधवेन्द्रपुरीक्षीरअमृतवर्णनं नाम चतुर्थ परिच्छेदः

पञ्चमपरिच्छेदः

तथाहि—पद्भ्यां चलन यः प्रतिमास्वरूपो ब्रह्मण्यदेवो हि शताहगम्यं ।

देशं ययौ विप्रकृतेद्भुतेहं श्री साक्षिगोपालममुं नतोऽस्मि ॥

जय जय श्री चैतन्य जय जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैताचार्य जय गौर भक्त के वृन्द ॥

इही भांति आये चले प्रभु जाजपुर ग्राम । प्रभु वराह कौं देखि कैं किय तिनकां जु प्रणाम ॥

नृत्य गान किय प्रेम करि बहु स्तुति पुनि ताहि । रहिकें तिहिनिस जाजपुर कियो गमन तब आहि ॥

नृत्य गान आवेस में कितिक बार लौं जोये । कियो स्तवन गोपाल कौ प्रेमाविष्ट जु होय ॥

तहां तिही निसि प्रभु रहे भक्त गनन के संग । पूर्व कथा गोपाल की सुनी भरे बहु रंग ॥

गमन कियो जब तीर्थ हित श्री नित्यानन्द जोय । श्री गुपाल के दरस ही आये कटकहि सोय ॥
सुनि साक्षि गोपाल की कथा लोक मुख जोय । प्रभु आगे आनन्द सौं कहैं नित्यानन्द सोय ॥

कवित्त-

दोय द्विज वासी विद्यानगर के चले तिन्हैं तीर्थ के करिवे की हीयें चाह धारी है ।
गया कासीऔ प्रयाग करि आये मथुरामें देखि दोऊ भीजे हीये आनन्द में भारी है ।
करि वन जात्रा देखे गोवर्द्धन सबै वन पाछे आये वृन्दावन जीवन जियारी है ।
वृन्दावन धाम जहां श्री गोविन्द मन्दिर है राजें श्री गुपाल तामें सेवा सुख कारी है ॥
केशीतीर्थ कालीदह आदि सब न्हाय तब श्री गुपाल देखि तहां वसे दोऊ आय कैं ।
श्री गुपाल सुन्दरता हरयौ मन दोऊ न कौं रहे दिन दोय चारि तहां सुख पाय कैं ।
दोऊ द्विज बीच एक विप्र वृद्धि पाय और दूजौ द्विज जुवा रहै ताही कौ सहाय कैं ।
छोटै द्विज सेवा ताकी कीनी सवनीकी भांति तासौ तुष्ट हैकैं वडौ बोल्यौ यौ सुनायकैं ॥
कहैं वडौ विप्र तुम कीनी वडी सेवा मेरी तेरौ ही सहाय पाय तीर्थ बहु कीये हैं ।
पुत्र हू न पिता की जु करै ऐसी सेवा कोऊ तेरी कृपा सौं न कछू पायौ श्रम जिये हैं ।
हूजियै कृतघ्नी तुव कीजिये न सनमान दैहौं कन्यादान तोहि मोहि सुख दिये हैं ।
छोटौ द्विज कहैं सुनौ महायश विप्र काहे कहौ भौ अयुक्त वात आवें जे न हिये हैं ॥
तुम तौ महाकुलीन धनी विद्या में प्रवीन हो तौं सब हीन दीन नाही कुलाचार है ।
हौं तौ तुम कन्यादान कौ न पात्र कृष्ण प्रीति कियो मैं तुम्हारौ यहै सेवा व्यवहार है ।
विप्र सेवा किये होय हरि कैं संतोष तिहि तुष्ट भयें वाढ़ें भक्ति संपति अपार है ।
कहैं वडौ विप्र तुम संसै जिनि करौ यामें दैहैं तुम्है कन्या हम कियो निरधार है ॥
कहैं लघु विप्र अहो है तुम्हारें नारी पुत्र ज्ञाति बहु बंधु सभा सजन अपार हैं ।
तिनके विचार विना होय नही कन्यादान रुक्मिणी के पिता यामें साखि निरधार हैं ।
भीषम कैं चाह कन्या कृष्ण कौं समर्पिये जू पुत्र के विरोध राजी रहै बैठि हार है ।
कहैं वडौ विप्र कन्या मेरौ निज धन ताहि देत मनें करैं कौन जन अविचार है ॥
दै हौं तोहि कन्या सब ही कौ करि तिरस्कार संसै जिनि हियें आनौं करौ अंगीकार हैं ।
छोटौ विप्र कहैं जौपें कन्या दियो चाहौ कहौ श्रीगुपाल आगे सत्य वचन संभार हैं ।
श्रीगुपाल आगे विप्र लाग्यौ कहिवेकौं प्रभु जानौ निज कन्या याहि दीनी मैं विचार है ।
कहैं लघु विप्र मेरे श्री गुपाल साखी तुम कौं बुलैहौं जौ पै यह हरयौ और हार है ।
ऐसैं कहि दोऊ जन चले निज देश छोटी करैं बहु सेवा हियें गुरु बुद्धि भोई हैं ।
आय देस बीच दोऊ निज निज गेह गयो कछू दिना बीतें द्विज भई चिंता जोई हैं ॥

तीरथ में विप्रवाक्य दियौ कैसें साचौ होय नारी पुत्र बंधुनतें कैसें बात गोई है ।
 एक दिन लोक निज करि इक ठौर सब तिनहू के आगें द्विज कही बात सोई है ॥
 सुनि तब सभा सब करै हा हा कार ऐसी बात जिनि फेरि कहौ मुख में प्रकास है ।
 नीच कौ सु कन्या देवें जाय कुलनास है कैं सुनि सब लोक करै महा उपहास है ।
 विप्र कहै तीर्थ वाक्य कैसें हिय और आनौं होइ सोइ होय कन्यादान दै हौं तास है ।
 ज्ञाति सब कहैं हम तुम्हें छाडि दें हैं नारी पुत्र कहैं खाय विस करै प्राण नास है ॥
 विप्र कहैं धर्म मेरौ जै है वृथा न्याय करि लैहै वह कन्या जीति साखी कौं बुलाय कैं ।
 पुत्र कहैं साखी प्रतिमा है सोऊ दूर देस चिंता जिनि करौ कौन दै है साखि आय कैं ।
 नाहि कहि मिथ्या जिनि कहौ अहौ नाहिकछू मोहि सुधि ऐसैं भाखौ सवनि सुनायकैं ।
 तुम जब कही हम जानैं नही कछू तब लैहैं हम जीति द्विज पंचनि बुलाय कैं ॥
 ऐसैं सुनि विप्र मन भई बड़ी चिंता कियौ हिये में गुपाल जू कौ कीनों नीकैं ध्यान हैं ।
 धर्म मेरौ जाय नाही मेरे निज लोक दोऊ रक्षा प्रभु करौ तुव सरण निदान है ।
 ऐसैं हिय करै चिंता और दिन सोई विप्र आय तिहि गेह बोल्यौ विनै कौ निधान है ।
 कहै कर जोरि तुम मोहि कन्या दें कही रहे अब मौन धरि कहा तुम ज्ञान है ॥
 ऐसैं सुनि विप्र सोई रह्यौ धरि मौन तिहि पुत्र लै कैं लाठी लग्यौ मारवे कौं जोई है ।
 अरे तू अधम चहै मेरी स्वसा व्याहिवे कौ जैसैं बौना चांद कर गछ्यौ चाहै कोई है ।
 देखि लाठी गयौ भजि और दिन ग्राम लोक सभा करि सवनि बुलायौ विप्र सोई है ।
 तबई सौं छोटी विप्र कहै इन मोहि कन्या दें कही पूछ्यौ याही हिये कहा गोई है ॥
 मिलि सबलोक तब पूछ्यौ वाही विप्र सौं जु जौपैं कियौ बोल कन्या देहु काहे नही है ।
 विप्र कहै सुनौ पंच मेरी एक विनती जू मोहि सुधि नाहि कछू कवै कहा कहौ है ।
 एतौ सुनि पुत्र ताहि वाकछत्र पाय आय सामुहै कहन लाग्यौ धृष्टता सु गही है ।
 तीरथ के जात्रा हेत पिता संग हुतौ धन देखि इहि दुष्ट मन लोभ भयौ सही है ॥
 और कोऊ संग नाहि एकलोई साथ इहै बावरौ कियौ है तात कनक खराय कैं ।
 सब धन लै कैं कछौ लियौ धन चोरन ने कन्या दें कही भूटै कहैं इहाँ आइ कैं ।
 कही तुम पंच सब करिकैं विचार यहै मेरे तात सुता कहाँ पाहि दें लाय कैं ।
 ऐसैं सुनि लोक हिय संकैं भयौ संभवैलु लोक छाडै धर्म भय धन लोभ पाय कैं ॥
 कहैं तब छोटी विप्र महाजन सब सुनौ कछौ यहै मिथ्य न्याय जीति वे कौ चाय कैं ।
 यहै द्विज मेरी सेवा सौं संतुष्ट भयौ जब तोहि कन्या दैहौ ऐसैं कह्यौ निज भाय कैं ।

कियौ मैं निषेध तब सुनौ द्विज मुख्य तुम हौं तुम्हारी सुता कौ जु नाहीं घर लाय कैं ।
 कहाँ तुम पंडित औ धनी बड़ेई कुलीन कहाँ हौं कुलादि हीन देख्यौ अनुमाय कैं ॥
 तऊ इन विप्र फेरि कह्यौ मो सौं बार बार दर्द कन्या तोहि तुम करो अंगीकार है ।
 मैं तौ पुन कह्यौ तुम सुनौ द्विज महा मति तेरे नारी पुत्र ज्ञाति करेगे विचार है ।
 दै न सकि हौं जु कन्या वचन असत्य है है मो सौं इन विप्र कछौ वचन संभार है ।
 कन्या तोहि दर्द करौ द्विविधा न हीय मनै सकै करि कौन धन निज निरधार है ॥
 कछौ तब यासौं तब तेरे दृढ़ यहै बात कहौ श्री गुपाल आगें वचन सुनाय कैं ।
 मैं तौ कन्या दर्द याहि जानौ तुम साखि ऐसैं कहाँ इनि प्रिय श्री गुपाल आगें जायकैं ।
 हौं तब श्रीगुपाल जूकौं करि साखी तहां बोल्यौ तिहीं पाद पद्म माथै निज नायकैं ।
 जो पै यह विप्र मोहि कन्यादान दै है नही साखि कौं बुलें हौं तुम्है तब अकुलाय कैं ॥
 या में मेरे साखी है जु बड़ेई प्रमान जग तीनों लोक जाकौ वाक्य मानें सत्य सार है ।
 कहै बडौ विप्र पुत्र यहै जो पै साखि देहैं प्रभु आय कन्या याही दै हैं निरधार है ।
 विप्र जानें कृष्ण दयावान करि है प्रमान प्रतिमा न ऐहै ऐसैं पुत्र कैं विचार है ॥
 याही बुद्धि दोऊ जन भलैं मानी सोई बात छोटी विप्र कहै हिये आनन्द अपार है ॥
 सुनौ सब लोक एक पत्र कौ लिखन करौ जैसैं फेरि चलैं नाहि वचन प्रकाश है ।
 तब तौ सवनि एक पत्र लिख्यौ तामें साखि दोऊ पै लिखाय राख्यौ आपनै पास है ।
 कहै छोटी विप्र सब सुनौ महाजन द्विज सत्य वादी धर्म रूप हरि विसवास है ।
 वाक्य निज फेरिवे कौं नाही कभू याकौ मन तऊ कछौ यौ सुजन करिवे कैं त्रास है ॥
 याहीके प्रताप पुण्य कृष्ण लाय साखि धाय द्विजकी प्रतिज्ञा सांची करिहौं वजाय कैं ।
 इतनौ सुनि विमुख जन करै उपहास कहैं कोऊ कृष्ण दयावान सकै ल्याय कैं ।
 तबै सोई छोटी विप्र गयौ छिप्र वृन्दावन करि कैं प्रणाम कछौ सबही बनाय कैं ।
 तुम हौं ब्रह्मण्य देव बड़े दया रूप दोऊ द्विजनि कौ राखौ धर्म दया निज छाय कैं ॥
 पाऊ द्विज सुता यह नाहीं सुख मेरे मन द्विज की प्रतिज्ञा जाय इहै दुख कारी है ।
 यहै जानि देहु साखि धाय तुम दयामय जानि साखि देय नाहि ताय पाय भारी है ।
 कृष्ण कहै विप्र तुम जाहु निज गेह तहां सभा करि कीजौ सुधि मन में हमारी है ।
 है कैं तहां प्रगट हौं दैहौ साखि प्रतिमा के रूप कहं गयौ नहि अब लौ हौं धारी है ।
 विप्र कहै जो जु तुम चतुर्भुज रूप होहु तब तुम वेंन की प्रतीत होय कोई है ।
 इही रूप जाय जौ पै याहि मुख साखि देहु तौ पै सब लोक मानें बात साच सोई है ।

कृष्ण कहै प्रतिमासु चलै कहै सुनी नाहि कहै द्विज बोल्यो क्यौं जु याही रूप जोई है ।
 प्रतिमा न होहु आप ब्रजेंद्रनन्दन तुम कौं हो । अकाज द्विज काज मेंह खोई है ।
 हंस के गुपाल कहै सुनी द्विज मेरी बात करि हो गमन तुम पाछे पाछे चाय के ।
 फिरि के न हमें तुम देखियो जो देख्यो मोहि रखी ताही ठौर यह कहत सुनाय के ।
 पुनि मग्न नृपूर की परि है तुम्हारे कान ताही सौ प्रतीत कीजौ आवैं प्रभु भाय के ।
 एक मेर अन्न राशि कीजियो समर्पन हो ताही पाय संग तुव चलि हो अघाय के ॥
 और दिन आज्ञा मांगि चली द्विज ताके संग चले लगि भक्तिवस आय श्री गुपाल है ।
 पुनि पुनि नृपूर की हरषित हिये महां भोग लायौ पाक करि उत्तम रसाल है ।
 ऐसे चलि विप्र निज देस ग्राम आय पास मन में विचारें जाकी आसय बिसाल है ।
 होतौ अब ग्राम आयौ जे हो निजगेह तिन्हें कहींगी जु आये साखि देनकौ कृपाल है ॥
 देखें नहीं आप नैन ताते भूटे हैं हैं वैन एक बार देख्यो रहेंगे तो कहा डर है ।
 यौ विचारि चाखी फिरि हसिकें तहाई रहे द्विजसौं कही है तुम जावौ निज घर है ।
 रहि हो इहां ही हो तो चली नाहि छां तें पैड तवै तिनि विप्र कही जायकें नगर है ।
 पुनि सब लोक आये साम्नी प्रभु देखि वे कौं छाया दिय जीवकें अचिरज कौ भर है ॥
 देखि के गुपाल जू कौं करे सब दंडवत देखि तिहि सुन्दरता हर्षि मन मोई है ।
 प्रतिमा सु आई चलि पुनि के चकित भये आनन्द में वृद्धौ तवै बहौ विप्र सोई है ।
 आय के गुपाल आगे दंडवत गिर्यौ भूमि सब जन आगे प्रभु दई साखि जोई है ।
 ताकीं तिहि कन्य दई रोम रोम भक्ति भई तब कही द्विजनि सौं प्रभु बात गोई है ॥
 जन्म जन्म मेरे तुम दास दोऊ सत्यता सौं भयो हो प्रसन्न तानें मागौ दिय काम है ।
 दोऊ द्विज मांगे वर आनंद कौ हिये भर जो पै वर देहु तो पै रहौ याही धाम है ।
 दासनि पै दया तुव देखें सब लोक ऐसे पुनि के तहां रहै भक्ति वस स्याम है ।
 श्री गुपाल जू की सेवा करें वैंद दोऊ द्विज देखि वे कौं देस जन आये पुनि नाम है ॥
 पुनि अचिरज आयौ तिही देस कौ नरेस देखि श्री गुपालजो कौ हिये हर्ष छाया है ।
 मंदिर सुकरवायो राजसेवा चिचलायो तिहि देस ख्याति भई साखीनाम पायो है ।
 ऐसे विद्यानगर में साखी श्री गुपाल सेवा करि अंगीकार समें बहुत बितायो है ।
 उत्कल कौ राजा पुरुषोत्तम देव नाम तंदी देस जीतिवे कौ एक समें आयौ है ॥
 करिकें संग्राम सोई देस जीति लीनी कीनी नृप हू अधीनता कौ सिंहासन लियो है ।
 नाम है मानिक्य तिहि लागे हैं अनेक रत्न भक्तराज राजा ऐसी और नाहि बीयो है ।

मांगी सो गुपाल जू सौं चली मेरे राज ताहि दसिकें गुपाल जू नैं सो निदेश दियो है ।
 तिहि लैके आयौ नृप कटक में सेवा थापी जगन्नाथ जू कौ सोई न्याय भेंट दियो है ॥
 आई तिहि रानी श्री गुपाल जू के देखि वे कौं भक्ति पूर्व भेंट बहु अलंकार किये हैं ।
 ताके एक नासिका में मोती सो अमोल रहै ताहि दीयो चाई सोच उपजे सुनिये हैं ।
 सोचै प्रभु नासिका में जो पै हो तो वेह यह दासी पहिरावती जु इन्हें देखि जिये हैं ।
 यौ विचार नमस्कार करिकें भवन गई रैन सेस स्वप्न आय प्रभु कहि दिये हैं ॥
 बाल समें नासा मेरी छेदि के जसोदा जू ने मोती पहिरायो हुतो बहुजन करिकें ।
 सोई छिद्र अजहूं लौ हैगी मेरी नासा मधि करौ अभिलाष जोई हिये राख्यो धरिकें ।
 स्वप्न देखि रानी सोई नृप सौं कही है जोई राजा संग मोती लैके आये तहां टरिकें ।
 देखि नासा वेह वेगि मोती पहिरायो तिन्हें कीनी है उछाह दिय आनंद में भरिकें ॥

दोहा

तब ही तें गोपाल कौ कटक वास सौं जोय । यौ साखी गोपाल की नाम ख्याति भई सोय ॥
 सुचरित श्री गोपाल कौ नित्यानंद मुख आहि । पुनि के तुष्ट भये प्रभु संग भक्त गण ताहि ॥
 आगे जब गोपाल के प्रभु जू की स्थिति होय । देखें सब ही भक्त गण एक मूर्ति है सोय ॥
 गौर वरण है दुहुन कौं विवै प्रकांड शरीर । अरुण वसन है दुहिन के औ सुभाव गंभीर ॥
 महातेजमय रूप दुहु नैन कमल है जोई । भावावेस दुहुन मन चंद वदन है दोई ॥
 नित्यानंद प्रभु दुहुनि कौं देखि भरे अति रंग । सेना वेनी करि हमें भक्तगणनि के संग ॥
 वितई सोई निस तहां भरे रंग हमि दीय । मंगल आरति देखि के प्रात गमन प्रभु कीय ॥
 श्रवणेश्वर के मार्ग में जो दरसन किय आहि । श्री वृन्दावन दास जू कही व्यास करि ताहि ॥
 स्नान कियो भार्गी नदी प्रभु कमल पुर आय । सौ यौ नित्यानंद कर दंड हिये भरि भाय ॥
 गये कपोतेश्वर दरस हित प्रभु गन जन संग । छां ही नित्यानंद प्रभु कियो दंड कौ भंग ॥
 तीन टूक करि दंड कौ दियो वहाय जु ताहि । भक्तनि संग आये प्रभु देखि महेशहि आहि ॥
 जगन्नाथ मंदिर सुलखि प्रेमाविष्ट जु होइ । प्रभु जू करिकें दंडवत नाचन लागे जोइ ॥
 प्रेम मगन सब भक्तगण नाचैं गावैं सोय । प्रेमावेशित प्रभु जु संग जाय राजपथ सोय ॥
 हमें नाचैं रोवैं प्रभु गर्जन करें हुंकार । तीन कोस जो पथ भयो जोजन सहस अपार ॥
 चलत चलत आये प्रभु खार अठारह पास । तहां आय के कछु प्रभु कीनी वाह्य प्रकास ॥
 कहै जु नित्यानंद सौं दीजै मेरी दंड । नित्यानन्द कहै भये ताके तीन जु खंड ॥
 तुम्हें प्रेम भौ गिरत में हो राखत हो जोइ । गिर्यौ जु तिरछै दंड पर हो तुम सहित जु सोइ ॥
 हम दोऊन के भार सौं टूक टूक भौ दंड । सोऊ हम जानें नहीं कहां गिरे वे खंड ॥

खंड खंड भौ दंड तुव मम अपराध हि जोइ । जैसौ उचित जु होय मम देहि दंड जिहि सोइ ॥
 सुनि कें प्रभु मन में कछू दुख प्रकास्यौ ताथ । रंचक कोपहि प्रगट करि कहै सवनि सौं आय ॥
 कीनौ मेरौ हित सवनि लीलाचल मधि आय । सब धन दंड हुतौ वहू राखौ नहि मन लाय ॥
 कै तुम सब आगें चलौ प्रभु दरसन के काज । कै हम आगें जाय तुम चलै संग समाज ॥
 आगें तुमही चलौ प्रभु कहै मुकुंद यौ ताहि । हम सब पाछें जाहिंगे चलै न तुव संग आहि ॥
 ऐसैं कहि आगें प्रभु चले वेगि गति धाय । दोऊ प्रभु हिय को कोउ समझि सकै नहि भाय ॥
 इन्हौं दंड तोरयौ जु क्यौं तिन्हौं तुरायौं काहि । कुपित भये जु तुराय क्यौं इन्हौं दुरायौ ताहि ॥
 दंड भंग लीला यहै परम अगाध जु सोइ । सोई समझै दुहुनि कौ चरण भक्ति दृढ होइ ॥
 विप्र भक्त गोपाल की यह महिमा अति धन्य । वक्ता नित्यानंद जिहि श्रोता श्री चैतन्य ॥
 श्रद्धा जुत है कें सबै सुनौ भक्तगण याहि । श्री चैतन्य गुपाल पद वेगि हियें हौं आहि ॥
 रूप सनातन पद कमल रजकी है जिहि आस । प्रभु चरितामृत कौ कहै कृष्ण दास तिहि दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥
 इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां साखीगोपाल चरित्र वर्णनं नाम पंचम परिच्छेदः ॥

षष्ठ परिच्छेदः

नौमि तं गौरचंद्रयः कुतर्ककं शशयं । सार्वभौमं सार्वभूया भक्ति भूमानमाचरत् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्रीनित्यानन्द । जय जय श्री अद्वैत जू जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
 गये जु चलि आवे समें मंदिर प्रभु जगन्नाथ । जगन्नाथ लखि प्रेमवस सरयौ न तन मन हाथ ॥
 जगन्नाथ के मिलन हित चलै धाम प्रभु जोय । परे जु प्रेमाविष्ट है मंदिर के मधि सोय ॥
 सार्वभौम तहां दैव गति करै जु दरसन ताहि । प्रतीहार मारत तिन्है कियौ निवारण आहि ॥
 प्रभु की सुन्दरता निरखि अरु तिहि प्रेम विकार । सार्वभौम जू कें भयौ अचिरज हियै अपार ॥
 बहु छिन बीतै सुधि नही भोग समय जु विचार । प्रतीहार निज द्वारहैं ल्याये भरि अंक वारि ॥
 राखे स्वाय पुनीत ठां निज गृह प्रभु कौ लाय । स्वास चलै नहि नैंक हू उदर न चलत लखाय ॥
 चिंता जुत भौ देखि कें आचारज मन आहि । रंचक तूल जब धर्यौ नासा आगें ताहि ॥
 कछुक कंप जुत तूल लखि मन में करें विचार । ए श्री कृष्ण जु प्रेम के हैं सात्विक सुविकार ॥
 वर सुदीप्त सात्विक यहै प्रलय नाम कहि जोय । नित्य सिद्ध हरि भक्त कें भाव सुदीप्तसु होय ॥
 है अधिरूढ़ जु भाव सो ताकी यहै विकार । लखिये मानुष देह में अचिरज यहै अपार ॥

महाचारज रहै यौ बैठि सु मनैं विचार । नित्यानन्दादिक रहै आय जु सिंह सु द्वार ॥
 वात कहै सब लोक तहैं सुनी परस पर जोय । आयौ सन्यासी जु इक जगन्नाथ लखि सोय ॥
 भयौ मूरछित देह में रही चेतना नाहि । सार्वभौम तैसैं जु तिहिं गौ लैं कै घर माँहि ॥
 सुनिकें जानी सवनि यह श्री प्रभु ही कौ कार्य्य । तिही समें आये तहां गोपीनाथाचार्य ॥

कवित्त

नदीया के निवासी श्री विसारद के जामात भक्त महाप्रभु जू के तत्व ज्ञाता सोई है ।
 श्री मुकुंद जू सौं जिहि नीकें पहिचान आगें तातें तिन्हैं देखि मति अचिरज मोई है ।
 देखिकें मुकुंद जू नैं कियौ नमस्कार तिन्है तिन्हौं हिय लाय पूछी प्रभु वात सोई है ।
 तिन्हौं क्यौं प्रभु जू कौ भयौ इहां आगमन हम सब आये तिनहीं के संग होई है ॥
 नित्यानंद जू कौं कियौ गोपीनाथ नमस्कार मिलि सबही सौं पूछी प्रभुज की गाथ हैं ।
 कहै श्री मुकुंद महाप्रभु जू संन्यास करि आये अब लीलाचल हमें लैं के साथ हैं ।
 पाछें हम आये तिनहीं के हेत हमें छाड़ि प्रभु आगें आये देखिवेकौं जगन्नाथ हैं ।
 सुनी कथा लोक मुख तातें अनुमान कियौ सार्वभौम गेह प्रभु गये धरें हाथ हैं ॥

भये अचेतन प्रेम प्रभु जगन्नाथ लखि आहि । सार्वभौम लैं कें गये भवन आपनैं ताहि ॥
 भयौ तिहारे मिलनकौ जबही हम हिय जोय । दैव योग करि तिही छिन लखौ दरसतुव सोय ॥
 सार्वभौम जू के सदन चलौ सबै हम जाहि । करि हैं प्रभु कौं देखि कें पीछें दरसन आहि ॥
 इतनौ सुनि सब संग लैं गोपीनाथ जु सोइ । सार्वभौम जू के सदन गौ अति हरषित होइ ॥
 तिनके गृह सब जायकें प्रभुकौ दरसतुव कीय । प्रभु कौं लखि आचार्य कें सुख दुख विव भौ हीय ॥
 सब कौं लैं भीतर गये पहिलैं तिन्है जताय । नित्यानंद जु कौं तिन्हौं नमस्कार किय आय ॥
 सार्वभौम सबसौं कियौ मिलन यथोचित जोय । प्रभुकौं लखि सबके भये हियमें दुख सुख सोय ॥
 तिन्हौं पठाये सवनि कौं दरसन हित जगन्नाथ । चंदनेश्वर पुत्र निज दीनौं तिन के साथ ॥
 जगन्नाथ लखि सवनि कें भौ अति ही आनंद । आवेसित भौ भाव में प्रभु श्री नित्यानंद ॥
 मिलि कें सबही भक्त गण सुस्थिर कीनौ ताहि । दिय प्रसाद माला जु लैं ईश्वर सेवक आहि ॥
 आनंदित मन सवनि कें भये प्रसाद जु पाय । आये वेगि तहां जहां हैं प्रभु भरे जु भाय ॥
 कियौ सवनि मिलि उच्चसुर नाम कीरतन जोय । प्रभु जू कें चेतन भयौ पहर तीसरें सोय ॥
 हरी हरी कहि उठे प्रभु करि हुंकार जु आहि । सार्वभौम आनंद करि लई पाद रज ताहि ॥
 करौ वेगि मध्यान्ह तुव प्रभु सौ कहैं जु सोय । दैहौं भिन्ना आजु हौं महाप्रसाद दहि जोय ॥
 प्रभु जू आये वेगि ही उदधि न्हाय कें जोय । सार्वभौम परसाद प्रभु करैं जु भोजन सोय ॥
 भात जु सुवरन थार कौ उत्तम व्यंजन सोय । भक्त गनन के संग प्रभु कौ जु भोजन जोय ॥

सार्वभौम आपुन करें परिवेशन सुख भोग । कहैं प्रभु जु मुहि देहु तुम सकरा व्यंजन सोय ॥
 इनि सब कौं तुम देहु जो पीठा पणा जु आहि । जोरि होइ कर कहैं तब भट्टाचारज ताहि ॥
 जगन्नाथ भोजन किये कौन कौन विधि जोय । महाप्रसाद जु आजु सब आस्वादौ तुम सोय ॥
 ऐसैं कहि पीठा पना सबहि खवायौ चाय । करवायौ तब आचमन यौ भिच्छाजु कराय ॥
 गोपीनाथाचार्य गौ आज्ञा लै कैं जोय । आये प्रभु जू के निकट भोजन करिकैं सोय ॥
 नमस्कार कीनौ नमौ नारायन कहि ताहि । मति रति होहु जु कृष्ण में कलौ महा प्रभु आहि ॥
 सुनिकैं भट्टाचारज मन में कियौ विचार । जान्यौ वैष्णव यती यह इहि बोलनि निरधार ॥
 गोपीनाथाचार्य सौं सार्वभौम कह जोय । जान्यौ चहै कहौ इनहि पूर्वाश्रम है सोय ॥
 कहैं जु गोपीनाथ जू नवद्वीप घर आहि । जगन्नाथ द्विज खाति है मिश्र पुरंदर ताहि ॥
 जान्यौ तिन के तनय ए विश्वभर यह नाम । नीलाम्बर के दोहिने दया रूप गुण धाम ॥

कहैं तब सार्वभौम नीलाम्बर चक्रवर्ती विसारद के साध्याई ख्याति यह तास है ।

तिनके हैं मान्य मिश्र पुरंदर जाने हम पिता नाते हैं हमारे मान्य मति जास है ॥

नदिया संवन्ध सार्वभौम हरपित भये श्री गुसाई जू कों कहैं वचन प्रकाश हैं ।

सहज ही पूज्य हो हमारे तुम तामें जती यातें हमें जानौं आपु करि निज दास हैं ॥

कियौ जु विष्णु स्मरन तहां श्री प्रभु सुनि के सोय । भट्टाचारज सौं कहैं विनय वचन कछु जोय ॥
 तुम तौ हो सब जगत गुरु हितकारी अधिकाय । संन्यसिनि कों हित करौ तिनु वेदांत सुनाय ॥
 संन्यासी बालक जु हौं भलौ बुरौ नहि जान । लियौ तिहारौ आसरो करि गुरु कौ अभिमान ॥
 भयौ तिहारौ संग हित ह्यं ऐवौ मम जोय । पालन मेरौ करौ तुम सब प्रकार करि सोय ॥
 भई हमारें आजु ही बड़ी विपति जो आहि । तुम ही मो पै कृपा करि कीनी रक्षा ताहि ॥
 सार्वभौम कहैं जाहु जिनि इकले दरसन सोइ । जावौ मेरे संग कैं मेरौ जन लै कोइ ॥
 मंदिर बीच न हौं कभू जैहौ कहौं जु सोय । रहि कैं पाछें गरुड़ के दरसन करि हौं जोय ॥
 गोपीनाथाचार्य जू सार्वभौम कहि जोय । करवावो दरसन जु तुम इनकौं लैकैं सोय ॥
 वहन हमारी मात की निर्जन गृह में ताहि । करौ तहाँ जु निवास दै समाधान सब आहि ॥
 प्रभु कौं गोपीनाथ लैं तहाँ वास दै सोय । जल जलपात्रादिकनि कौ समाधान क्रिय जोय ॥
 गोपीनाथ जु और दिन गये जु प्रभु के पास । दरसन सज्या उठनिकौं करवायौ लै तास ॥
 आये संग मुकुन्द लैं सार्वभौम के गेह । तिनसौं भट्टाचार्य जू कहैं वचन तब एह ॥
 सुंदर आकृति जती ए अरु है प्रकृति पुनीति । इनके ऊपर अधिक ही बड़ै हमारी प्रीति ॥
 संप्रदाय कहु कौन में कियौ ग्रहन संन्यास । कहा नाम इनकौं हियें सुनिवै कौ जु हुलास ॥
 गोपीनाथ कहैं जु इन नाम कृष्ण चैतन्य । गुरु हैं केशव भारती इन के अति ही धन्य ॥

ते बोले यह नाम जो सर्वोत्तम है याहि । संप्रदाय जो भारती इह मध्यम है आहि ॥
 गोपीनाथ कहैं न इह लोकापेक्षा जोय । संप्रदाय यौ अधिक की करी उपेक्षा सोय ॥
 भट्टाचारज कहैं इह यौवन प्रौढ़ जु आहि । कैसैं जती जु धर्म की है है रक्षा याहि ॥
 इनकौं सदा सुनाय हैं हम वेदांत असेस । पथ वैराग्य कराय हैं औ अद्वैत प्रवेस ॥
 कहैं जु जो हम फेरि कैं जोग्य पट्ट दै आहि । संस्कार करि आनंद संप्रदाय बड़ याहि ॥
 गोपीनाथ मुकुंद यौ दुखी भये सुनि आहि । गोपीनाथाचार्य कछु कहन लगे तब ताहि ॥
 इनकी महिमा कौं तुम्हैं सार्वभौम नहि ज्ञान । भगवत्ता लक्षणनि कौ ह्यं सीमा जु प्रमान ॥
 ताही तें विख्यात ये परमेश्वर हैं सोय । गोचर कछु सर्वज्ञ कौ अज्ञ पास नहि होय ॥
 कहैं सिष्य गन कहौं जु तुम ईश्वर कौन प्रमान । कहैं जु अनुभव सिद्ध ये ईश्वर लक्षण जान ॥
 सु कहैं ईश्वर तत्त्व तुम साधौं करि अनुमान । तिनतें होइ न एक जों ईश्वर तत्त्व हि ज्ञान ॥
 जा जन पर श्री कृष्ण कौ कृपा लेस जो होय । ईश्वर के निज तत्त्व कौं जान सकैं भल सोय ॥
 तथाहि श्रमद्भागवते दशमस्कन्धे ।—

तथापि ते देव पदाम्बुजद्वय प्रसादलेशानुग्रहीत एव हि ।

जानाति तत्त्वं भगवन्महिम्नो न चान्य एकोऽपि चिरं विचिन्वन् ॥

जद्यपि तुम हौ जगदगुरु छहो शास्त्र मधि ज्ञान । पृथिवी में नाहिन कछु पंडित तुम जु समान ॥
 तुम पर ईश्वर कौ नहै कृपा लेस कौ भांन । याही तें प्रभु तत्त्व कौ सकैं न क्यौ हूं जानि ॥
 यामें तुम्हारौ दोस नहि कहैं शास्त्र यह जोइ । ईस तत्व पांडित्य करि कबहुं जानि न होइ ॥
 आचारज तिहि कहैं तुम कहौं सभरिकैं जोय । तुम पर तिन की कृपा है को प्रमान ह्यं सोय ॥
 ये तब कहैं जु वस्तु में होय वस्तु कौ ज्ञान । होय कृपा तें तत्व कौ ज्ञान इहै सु प्रमान ॥
 इनके वपु में सर्व हैं ईश्वर लक्षण जोइ । महा सु प्रेमावेस तुम पायौ दरसन सोइ ॥
 तऊ तुम्हारें होय नहि ईस ज्ञान निरधार । देवी माया जवनिका कौ जु यहै व्यवहार ॥
 देखें ऊ देखें नहीं लोक बहिर्मुख ताहि । सार्वभौम यौ सुनि कहैं हसि कैं वचन जु आहि ॥
 इष्ट गोष्ठी जु वास्ता करैं करौ जिनि रोस । शास्त्र दृष्टि सौं कलौ कछु नहीं हमारौ दोस ॥
 गोस्वामी चैतन्य जू महा भागवत सोइ । होय विष्णु अवतार नहि इहि कलि कालहि जोय ॥
 सुनि जु मन दुखी है कहैं जु आचार्य सुजान । शास्त्रज्ञ करि सु आपकौं करौ जु तुम अभिमान ॥
 भारत पुनि भागवत ए दोऊ शास्त्र प्रधान । तिन दोऊ के वाक्य में नही तुम्हैं अवधान ॥
 विष्णु नाम त्रियुगी कहैं याही तें सतु कोय । कलि जुग में अवतार नहि शास्त्र ज्ञान इस सोय ॥
 ते दोऊ कलि काल में कहैं प्रगट अवतार । यातें त्रियुगी नाम करि है तिनकौ जु प्रचार ॥
 प्रति जुग ही श्री कृष्ण जू करैं जु जुग अवतार । तर्क निष्ठ है हृदय तुम तातें नहीं विचार ॥

तथाहि तत्रैव ।—

आसन् वर्णाश्रयो ह्यस्य गृहतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥ ३ ॥
तत्रैव एकादशस्कन्धे ।—

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं । यज्ञैः संकीर्तनप्रायै र्यजन्ति हि सुमेधसः ॥ ४ ॥
तथाहि महाभारते दानधर्मम् ।—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरागंश्चन्दनांगदी । सन्धासकृत् समः शान्तो निष्ठा शान्तिपरायणः ॥ ५ ॥
तुम आगे इह कथा कौ नहि प्रयोजन कोय । जैसे ऊपर भूमि मधि बीज बोय बो होय ॥
तुम पै तिन ही की जवै है है कृपा जु सोय । ए सब ही सिद्धांत तव तुम ही कहि हो जोय ॥
कहै सबै ये शिष्य तुम जो कुतर्क बहु वाद । इनहं कौ कछु दोष नहीं एह माया जु प्रसाद ॥
तथाहि भागवते षष्ठस्कन्धे ।—

यच्छक्तयो वदतां वादिनां वै विवादसंवादभुवो भवन्ति ।

कुर्वन्ति चैषां मुहुरात्ममोहं तस्मै नमोऽनन्तगुणाय भूम्ने ॥ ६ ॥

भट्टाचारज कहै तव जाहु गुसाई धाम । करौ निमंत्रण गण सहित लेय हमारौ नाम ॥
मिच्छा करवायौ प्रथम ल्याय प्रसाद हि ताहि । हमैं भक्ति सिद्धा सु ये पाछें करियौ आहि ॥
सार्वभौम सारे जु तिहि भगनी पति हैं सोय । स्तुति निन्दा अरु हास्य करि सिद्धा करैं जु जोय ॥
आचारज सिद्धांत करि भौ मुकुंद संतोष । सार्वभौम के वचन करि भौ हिय में दुख रोष ॥
आचारज किय आगमन गोस्वामी दिग आहि । सार्वभौम के नाम लै कियौ निमंत्रण ताहि ॥
सार्वभौम की कथा ते कहै मुकुंद संग आय । निन्दा भट्टाचार्य की करैं विथा हिय पाय ॥
सुनि कें श्री प्रभु जू कहै ऐसैं जिनि कहु सोय । हम पर भट्टाचार्य कौ है जु अनुग्रह जोय ॥
धर्म हमारौ जती कौ राख्यौ चाहै आहि । दया करैं वात्सल्य करि कहा दोस ह्यां ताहि ॥
श्री जु महाप्रभु और दिन भट्टाचारज संग । जगन्नाथ कौ दरस किय हिय आनंद अभंग ॥
भट्टाचारज संग प्रभु आये मंदिर ताही । प्रभु जू कौ आसन दियौ आपुन बैठे आहि ॥
तव वेदांत पढाय वे कौ आरंभ जु कीय । लगे कहन कछु प्रभु जु सौं नेह भक्ति करि हीय ॥
श्रवन सदा वेदांत कौ जती धर्म यह आहि । तुम जु श्रवन वेदांत कौ करौ निरंतर ताहि ॥
प्रभु जु कहै मो पै करौ परम अनुग्रह सोय । जोई कछु तुम कहौ मम है कर्तव्य जु सोइ ॥
सात दिवस लौं श्रवण किय ऐसैं तिहि गृह मांदि । बैठे सुनिबोई करैं भलौ बुरौ कहि नाहि ॥
सार्वभौम सातें दिवस प्रभु सौं कही जताय । सात दिवस लौं तुम सुन्यौ मत वेदांत बनाय ॥
भलौ बुरौ नाही कछौ रहे मौन धरि जोय । जान्यौ नही जान्यौ किधौ जानी परत न सोय ॥
मूरख हम प्रभु कहै नहि पढ़्यौ ग्रंथ जो कोय । इक तुम आज्ञा मात्र करि कियौ श्रवण मधि सोय ॥
संन्यासी के धर्म हित श्रवन मात्र किय ताहि । तुम जे अर्थ कहे तिनैं समझि सकैं नहि आहि ॥

भट्टाचार्य कहै नहीं समझौ जिहि यह ज्ञान । सो फिर वृक्ष समझि हित तिहि आगे जु अयान ॥
तुम तौ सुनि सुनि कें रहे मौन मात्र करि जोय । हियें तुम्हारे है कहां समझि सकैं नहि सोय ॥
अर्थ सूत्र कौ प्रभु कहै निर्मल समुझ्यौ जाय । तुम व्याख्या के सुनत मन होइ विकल अधिकाय ॥
व्यास सूत्र के अर्थ कौ कहै जु भाष्य प्रकास । अर्थ हि ठाकि कें सूत्र कें भाष्य कछौ तुम तास ॥
मुख्य अर्थ जो सूत्र कौ सो न करौ विख्यान । तिहि किय कल्पित अर्थ अरु आछादन सुनिदान ॥
सबै उपनिषद ए जु हैं मुख्य अर्थ जो जान । व्यास सूत्र करि कहै सो मुख्य अर्थ परमान ॥
मुख्य अर्थ तजि कल्पना जौ न अर्थ कौ धारि । तजि अमिधा कौ शब्द की लक्षण वृत्ति विचारि ॥
सबै प्रमाननि के जु मधि वेद प्रमान प्रधान । मुख्य अर्थ जे श्रुति कहै तेई अर्थ प्रमान ॥
विष्ठा अस्थि जु जीव के गोमय संख जु दोय । वेद वचन करिकें भये महा पवित्र सु सोय ॥
वेद प्रमान जु सहज ही कहै सत्य सो जान । कियें लक्षणा वृत्ति सो निज प्रमानता हानि ॥
व्यास सूत्र के अर्थ जे सूरज किरण समान । तुम करि कल्पित भाष्य घन ते छाये जु प्रमान ॥
वेद पुराणनि में कियौ ब्रह्म निरूपन जोय । बृहद वस्तु जो ब्रह्म है ईश्वर लक्षण सोय ॥
परि पूरण ऐश्वर्य सब एक स्वयं भगवान । निराकार करि कें जु तिहि करौ आप व्याख्यान ॥
निर्विशेष ताकौ कहै श्रुति समूह ते जानि । प्राकृति कौ जु निषेध करि अप्राकृति थिति मानि ॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

या या श्रुतिर्जल्पति निर्विशेषं सा साभिधत्ते सविशेषमेव ।

विचारयोगे सति हन्त तासां प्रायो बलीयः सविशेषमेव ॥

जन्म ब्रह्म ते विश्व को ज्याव तु ब्रह्म निदान । ब्रह्म बीच पुनि जाय कें होत लीन यह जान ॥
अपादान अधिकरण पुनि करण कारकें तीनि । भगवान जु सविशेष कें एई तीनौ चीन ॥
बहुत होहु भगवान में जवै कियौ मन आहि । तव ही प्राकृति शक्तिकौ कियौ विलोकन ताहि ॥
जात प्राकृत नैन मन जनम तास में है न । याही तें अप्राकृतें पर ब्रह्म मन नैन ॥
ब्रह्म शब्द जो कहत हैं पूर्ण स्वयं भगवान । सो जु स्वयं भगवान है कृष्ण शास्त्र परमान ॥
गूढ़ अर्थ है वेद कौ जो समझ्यौ नहि जाय । सो पुरान वचनि कछौ निहचै अर्थ बनाय ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

अहो भाग्यमहोभाग्यं नन्दगोप ब्रजौकसां । यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥

परजै प्राकृति पानि पद कहि अपान पद वेद । फेरि कहै सीध हि चलै सब ही गहै अस्वेद ॥
जिनकौ पट ऐश्वर्य में पूर्णानंद शरीर । तुम ऐसे भगवान कौ निराकार कहु धीर ॥
कहै ब्रह्म सविशेष कौ याही ते श्रुति आहि । निर्विशेष करि लक्षणा मानत तजि मुख्याहि ॥
सामाविकि जो ब्रह्मकी तीनि शक्ति है आहि । तुम पांडित्य निशक्ति करि निश्चै करौ तु ताहि ॥

तथाहि विष्णुपुराणे—

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षत्रज्ञाख्या तथापरा । अविद्या कर्मसंज्ञान्या तृतीया शक्तिरिष्यते ॥
यया क्षेत्रज्ञशक्तिः सा वेष्टिता नृप सर्वगा । संसारतापानखिलानवाप्नोत्यत्र सन्ततान् ॥
तया तिरोहितत्वाच्च शक्तिः क्षेत्रज्ञसंज्ञिता । सर्वभूतेषु भूपाल ! तारतम्येन वर्तते ॥

तथाहि तत्रैव—

लहादिनी सन्धिनी सन्धिवत् त्वय्येका सर्वसंश्रये । लहादतापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्जिते ॥

सत चित अरु आनंद मय है ईश्वर जु स्वरूप । तीन अंस चित शक्ति ही धरै तीन ये रूप ॥
हर्ष अंस आल्हादिनी संधिन है सत अंस । चित अंसै संवित भई ज्ञान कहै जु प्रसंस ॥
अंतरंग चिछक्ति है जीव तटस्था शक्ति । वहि रंग माया शक्ति तीन करै प्रभु भक्ति ॥
पट विधि है ऐश्वर्य प्रभु तिहि चितशक्ति विलास । नहि मानौ ऐसी सकृति साहस परम प्रकास ॥
मायाधिप मायावस हि ईश्वर जीवहि भेद । ऐसैं जीवहि ईश्वर हि तुम जो कहत अभेद ॥
जीवरूप गीता हि मधि कहाँ शक्ति करि ताहि । कहाँ अभेद जु जीव इम ईश्वर के संग आहि ॥

तथाहि गीतांश—

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृति विद्धि मे परां । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥

प्रभु कौ श्री विग्रह जु सतचिदानंद आकार । तिहि विग्रह कौं तुम कहाँ सतगुण कौं जु विकार ॥
श्री विग्रह मानत न जे हैं पाखंडी सोय । ते अस्पृश्य अदृश्य हैं यम दंडी वे होय ॥
वेद न मानत बौद्ध जे ते नास्तीक बखानि । वेद आसरे नास्तिक जु वाद बौध बढ़ि जानि ॥
जीवनि के निस्तार हित किये सूत्र पुनि व्यास । मायावादी भाष्य सुनि भयौ सबनि कौ नास ॥
मत परिणाम सुवाद जौ व्यास सूत्र अनुरूप । प्रभु अर्चित्य शक्ति जु भयौ परिणत हैं जगरूप ॥
मनि जैसैं अविकृति रहै प्रसवै सुवरन भार । जगत रूप ईश्वर भये तऊ सदा अविकार ॥
व्यास आंति करि दोसदिय ताही सूत्र मभार । मत वितर्क स्थापन कियौ करि कल्पित सुविचार ॥
आत्म बुद्धि तब मानिकें सोई मिथ्या जानि । जगत यहै मिथ्या नही नस्वर मात्र बखानि ॥
महावाक्य जो प्रणव है ईश्वर मूरति सोय । सकल वेद अरु जगत की उत्पति तातें होय ॥
जो प्रादेशिक वाक्य हैं तत्वमसी जिय हेत । प्रणव न मानत ताहि करि महावाक्य ही लेत ॥
इहि विधि कल्पित भाष्य मधि दिय सत दोस सभारि । भटाचारज पूर्वपछ किये अपार विचारि ॥
उठे वितंडा लछ तहां निग्रह आदि अनेक । प्रभु ने सब खंडन किये निज मन थापी टेक ॥
भगवानहि संबंध अभिधेय भक्ति कौं जानि । प्रेम प्रयोजन वस्तु तिहि वेदन कही बखानि ॥
और कछु जो जो कहाँ कल्पित हैं सब सोइ । सहज प्रमान जु श्रुति वचन कल्पित लछता जोइ ॥
आचारज कौ दोस नहि प्रभु आजा भई जानि । याही ते करि कल्पना नास्तिक शास्त्र बखानि ॥



Sarbhng Gauranga

तथाहिपद्मपुराणे—

स्वागमैः कल्पितैस्त्वञ्च जनान् मद्विमुखान् कुरु । माञ्च गोपय येन स्यात् सृष्टिरेषोत्तरोत्तरा ॥

तथाहि तत्रैव—

मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्धमुच्यते । मयैव विहितं देवि कलौ ब्राह्मणमूर्तिना ॥

भट्टाचारज सुनि भये विस्मित परम वनाय । स्तंभित है कै रहे सो मुख बोल्यौ नहि जाय ॥
कहै जु प्रभु आचार्यसों करौ न अचिरज सोय । श्री प्रभु जू की भक्ति है पर पुरुषारथ जोय ॥
अवधि आत्माराम लौं करत भक्ति प्रभु जोय । अस अचिंत्य कल्याण गुण गण प्रभु के हैं सोय ॥

श्री मद्भागवते—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥

सुनि भट्टाचारज कहैं सुनौ महाशय ताहि । अर्थ सुनन कौ चाव मुहि इही पद्य कौ आहि ॥
प्रभु बोले तुम अर्थ इहि कहा करौ सुनि ताहि । पाछे करि हैं हम अरथ जो जानत हैं आहि ॥
सुनि भट्टाचारज तवै कर्यौ पद्य विख्यान । लै लै ते ते शास्त्र मत कीनों विविध विधान ॥
लै कै ते ते शास्त्र मत नव विधि अर्थ बखानि । सुनिकें प्रभु बोलै कछू तिन सों करि मुसक्यान ॥
भट्टाचारज तुम गनें गुरु साक्षात जु सोय । करत शास्त्र विख्यान अस काहू सकति न होय ॥
ऐ पै कह्यौ तुम अर्थहि पांडित्य प्रतिभाय । अभिप्राय या पद्य कौ इन विन और लखाय ॥
भट्टाचार्य प्रार्थन सों प्रभु कियौ विख्यान । मधि तिनके नव अर्थ के एकौ छुयौ न जान ॥
आत्मारामहि आदि दै पद एकादस जान । पृथक पृथक पद के करें निहचै अर्थ विख्यान ॥
सो सो पदहि प्रधान करि और मिलाय मिलाय । अष्टादस अरथ जु करै अभिप्राय लै आय ॥
प्रभुके अरु तिहिभक्तिके पुनि तिहि गुणगण जोय । तीन अचिंत्य प्रभावहै कहे जाय नहि सोय ॥
अन्य साध्य साधन जिते करि आछादन ताहि । सिध्य साधकनि के मनहि हरे तीनि ये आहि ॥
सनकादिक सुकदेव जू ये ई तहा प्रमान । इनही मत नाना अरथ करैं जु प्रभु विख्यान ॥
सुनिके भट्टाचार्य के चमत्कार भौ हीय । प्रभु कौ कृष्णहि जानि कै धिक सु अपनपौ कीय ॥
प्रभु साक्षात सु कृष्ण हैं मैं यह जानी नाहि । अपराध जु बहुत कर्यौ गर्वित है मन मांहि ॥
लई जु प्रभुकी सरण तव निज दिंदा करि आहि । प्रभुजु कौ मन भयौ तव कृपा सुकरिये ताहि ॥
तिन आगें जु दिखाय यौ चारु चतुर्भुज रूप । पाछे वंशीवदन निज कियौ जु स्याम स्वरूप ॥
देखि सार्वभौम सु परे करी दण्डवत जोय । फिरि उठिकें स्तुति करी युग हाथ जोरि कै सोय ॥
प्रभु की कृपा प्रताप तें फुरें सकल तिहि तत्व । नाम प्रेम दानादि दै वरन्यौ सकल महत्व ॥
तुरत पद्य शत करि लिये एक घरी जु विताय । सुरगुरु इमि सुपद्यन कौ सकैं न किहू वनाय ॥
सुनि प्रभु सुखसों कियौ तिहि आलिंगन करि हेत । भट्टाचारज भये तब प्रेमावेस अचेत ॥
अथ पुलक अरु स्वेद अंग कंप थरथरी ताहि । नाचि गाय कंदन कियौ परे जु प्रभु पद अहि ॥

गोपीनाथाचार्य कौ लखि हरपित भौ हीय । भट्टाचारज नृत्य लखि प्रभुगण हास्य जु कीय ॥
 गोपीनाथाचार्य जू प्रभु प्रति कहैं सुनाय । तिहीं जु भट्टाचार्य की यह गति किय तुम आय ॥
 बड़े भक्त तुम प्रभु कहैं तुम संगहि तैं आहि । जगन्नाथ जू की कृपा मति नीकी किय ताहि ॥
 तवै जु भट्टाचार्य कौ प्रभु जु सुस्थिर कीन । भट्टाचारज थिर भये स्तुति बहु करी नवीन ॥
 जग निस्तार्यौ आप तुम सोऊ कारज अल्प । हों जु उधार्यौ आप ये अचिरज शक्ति अनल्प ॥
 तर्क शास्त्र करि जड जु हम जैसें आयस पिंड । हमैं द्रवायौ आप कौ यहै प्रताप प्रचंड ॥
 स्तुति सुनि प्रभु आये जु उठि निज निवास करि कार्य । आचारज द्वारा दर्ई भीक्षा भट्टाचार्य ॥
 जगन्नाथ के दरस हित गये जु प्रभु दिन आन । जगन्नाथ के दरस किय समयौ सज्योत्थान ॥
 माला अन्न प्रसाद दिय तिन्हैं पुजारी आय । प्रसादान्न माला लहैं भौ प्रभु सुख अधिकाय ॥
 प्रसादान्न माला सु प्रभु बांध्यौ आंचर जोय । आवैं भट्टाचार्य गृह त्वरायुक्त हैं सोय ॥
 अरुणोदय के समय में भौ प्रभु आगम जोय । जागे ताही काल मधि भट्टाचारज सोय ॥
 जागे भट्टाचार्य जू कृष्ण कृष्ण कहि आहि । बाह्यौ आनंद प्रभु हिये कृष्ण नाम सुनि ताहि ॥
 बाहिर प्रभु जू कौ तिन्हौ पायौ दरसन आहि । अस्त व्यस्त ही आय कें पद वंदन किय ताहि ॥
 बैठन कौ आसन दियौ बैठे दोऊ आय । प्रसादान्न प्रभु खोलि कैं कर मधि दीयौ ताय ॥
 पाय प्रसाद हि मुद भयौ सार्वभौम हिय माहि । जद्यपि संध्या न्हायवौ दांतुनि कीनी नाहि ॥

पद्मपुराणे ।— प्रातःमात्रेण भोक्तव्यं नात्रकाल विचारणा ॥ १७ ॥

यही पद्य पढ़ि कै कियौ भजन अन्न जु आहि । आनंदित लखि कैं भयौ प्रभु जू कौ मन ताहि ॥
 हैं करि प्रेमावेश में आलिंगन किय ताय । दोऊ जन धरि कैं दुहुनि कीनौ नृत्य सु आय ॥
 स्वेद कंप अरु अश्रु दुहुं आनंद उमग्यौ जोय । श्री प्रभु जू लागे कहन प्रेमावेशित होय ॥
 आजु मैं जु अनयास ही त्रिभुवन जीत्यौ जोय । आजु हि हम वैकुण्ठ पद आरोहन किय सोय ॥
 पूरण सब अभिलाष मम भये आजु निरधार । सार्वभौम विश्वास भौ महाप्रसाद मंभार ॥
 आजु भये निसकपट करि कृष्णाश्रय तुम जोय । कृष्ण भये निसकपट करि तुम पर सदय जु सोय ॥
 देहादिक बंधन कटे आजु तुम्हारे जोय । माया कौ बंधन जु तुम काढ़्यौ आजु ही सोय ॥
 कृपन प्राप्ति कौ जोग भौ तुम मन आजु हि सोय । किय भक्षण सु प्रसाद कौ वेद धर्मलंघि सोय ॥

श्रीमद्भागवते—येषां स एव भगवान् दययेदनन्तः सर्व्वात्मनाश्रितपदो यदि निर्व्यलीकं ।

ते दुस्तरामतितरन्ति च देवमायां नैषां ममाहमिति धीः स्वशृंगालभक्ष्ये ॥ १८ ॥

ऐसैं कहि कैं महाप्रभु आये निज घर जानि । तव ही तैं खंडन भयौ सार्वभौम अभिमान ॥
 बिना जु श्री चैतन्य पद नाही जानैं आन । भक्ति बिना नहि शास्त्र मधि करत और व्याख्यान ॥

गोपीनाथाचार्य जू लखि वैष्णवता ताहि । हरी हरी कहि नृत्य किय दै कर ताली आहि ॥
 भट्टाचारज और दिन चले जु दरसन हेत । जगन्नाथ देखे नहीं आये प्रभु जु निकेत ॥
 करी दंडवत बहुत करि स्तुति फिरि बहुविधि ताहि । निज पहली दुरमति कही करि जु दैन्य बहुआदि ॥
 साधन मुख्य जु भक्ति कौ सुनि वे मन भौ ताहि । प्रभु उपदेश क्यौ तिन्हैं नाम कीरतन आहि ॥

श्री हरिभक्तिविलास धृत बृहन्नारदीये ।—

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवल । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ १६ ॥

प्रभु जु करी विस्तार इंहि अर्थ सुनायौ ताहि । सुनि भट्टाचारज मन हि चमत्कार भौ आहि ॥
 कहैं जु गोपीनाथ जू कही प्रथम हम जोड़ । भट्टाचारज जू सुनौ भई तुम्हारे सोड़ ॥
 भट्टाचारज जू कहैं नमस्कार करि ताहि । आपुही के संबंध मुहि कृपा करी प्रभु आहि ॥
 महाभागवत तुम जु हौ हौं तर्कनि करि अंध । प्रभु कीनी मो पै कृपा आपुही के संबन्ध ॥
 विनय सुनत संतुष्ट प्रभु आलिंगन किय ताहि । कही जाय दरसन करौ जगन्नाथ के आहि ॥
 दामोदर जगदानन्द लैं करि कैं सँग दोय । आये भट्टाचार्य घर जगन्नाथ लखि सोय ॥
 ताल पत्र के बीच में लिखि निज पद्य जु दोय । प्रभु कौ दीजौ कहि दियौ जगदानंद कर सोय ॥
 आये पत्र प्रसाद लैं दोऊ प्रभु जु निवास । मुकुंद दत्त पत्रि पढ़ी लहि करि तिनके पास ॥
 लिखि राखे विवि पद्य कैं बाहिर भीत मभार । जगदानंद जु पत्र लैं प्रभु कौ दिय तिहि वार ॥
 प्रभु पढ़ि पद्य हि पत्र कौ फारि फेंकि तिहि दीन । सब भक्तनि लखि भीत मधि कंठ पद्य करि लीन ॥

श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटके ।—

वैराग्यविदयानिजभक्तियोगशिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः ।

श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी कृपाम्बुधि र्यस्तमहं प्रपद्ये ॥ २० ॥

कालान्नष्टं भक्तियोगं निजं यः प्रादुर्कर्त्तुं कृष्णचैतन्यनामा ।

आविर्भूतस्तस्य पादारविन्दे गाढं गाढं लीयतां चित्तभृंगः ॥ २१ ॥

येई दोऊ पद्य हैं भक्ति कंठ मनिहार । सार्वभौम जस घोषकौ ढुका बाघाकार ॥
 भट्टाचारज जू भये प्रभु के भक्त अनन्य । सेव्य महाप्रभु जू बिना जानत नाही अन्य ॥
 श्री चैतन्य सची तनय गौर धाम अभिराम । इहैं ध्यान औ जय यहै लेत यहै नित नाम ॥
 भट्टाचारज एक दिन आये प्रभु के पास । नमस्कार करि पद्य कौ लागे पढ़न प्रकास ॥
 मध्य भागवत ब्रह्मनुति पद्य पढ़्यौ इक ताहि । पद्य सेस द्वै अक्षर हि पढ़ैं फिराय जु ताहि ॥

श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे ।—

तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्ष्यमाणो भुञ्जान एवात्मकृतं विपाकं ।

हृद्भागवपुभिर्विदधन्नमस्ते जीवेत यो भक्तिपदे स दायभाक् ॥ २२ ॥

श्री प्रभु जू बोले इहां मुक्ति पदे यह पाठ । भक्ति पदे क्यौ पढ़ौ तुम कहा जु आसय ठाठ ॥

सार्वभौम कहि मुक्ति जौ नही भक्ति फल सोय । भगवत विमुखनीकै यहै केवल दंडै जोय ॥
जे विग्रह श्री कृष्ण कौ सत्य न मानै ताहि । एई निंदा करत हैं बोद्ध तुल्य ते आहि ॥
तिनि द्वै ही कौ दंड है यह साजुज्य जु मुक्ति । ताकौ भल नहि मुक्ति सौं करत रहै जे भक्ति ॥
यद्यपि मुक्ति जु पंचधा इक सालोक्य जु आहि । सामीप्य जु सारूप्य पुनि साष्टि एकता ताहि ॥
सालोक्यादिक चारि जो होय जु सेवाद्वार । तवै कदाचित भक्त जन करै जु अंगीकार ॥
सुनि साजुज्य हि भक्ति कें होत ग्लानि भय आहि । चाहै कबहुं नरक कौ तऊ लेय नहि ताहि ॥
ब्रह्म सु ईश्वर में भये साजुज्य दोय प्रकार । करत ईस साजुज्य कौ तातें जन अधिकार ॥

श्री मद्भागवते तृतीयस्कन्धे ।—

सालोक्य साष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानं न गुह्यन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥२३॥

अरथ और है प्रभु कहै मुक्तिपदे कौ आहि । साक्षात् ईश्वर जू हैं मुक्ति पदे कहि ताहि ॥
मुक्ति पदहि जाकै रहै वहै मुक्ति पद होय । नवम पदारथ मुक्ति कौ कें जु समाश्रय होय ॥
कहै अथ विवि कृष्ण कौ कही जु पाठ पिराय । सार्वभौम कहि शब्द यह तऊ कछौ न जाय ॥
जद्यपि अरथजु आपकै शब्द कहै यह ताहि । तदपि दोस असलीलकरि कछौ जाय नही आहि ॥
यदपि मुक्ति या शब्द की पंच मुक्ति मधि वृत्ति । रुढ़ वृत्ति तौऊ करै साजुज भान प्रसक्ति ॥
मुक्ति शब्द के कहतही होति ग्लानि अरु त्रास । भक्ति शब्द के कहत ही होत जु हियें हुलास ॥
यह सुनिकें प्रभु जू हँसे आनंदित मन होय । भट्टचारज कौ कर्यौ दृढ़ आलिंगन सोय ॥
जिहि भट्टाचारज पद सिखये मायावाद । तन के ऐसे वचन यह श्री चैतन्य प्रसाद ॥
लखि कें भट्टाचार्य की सब जन वैष्णवताहि । प्रभु कौ जान्यौ आपु ए नंद नंदन है आहि ॥
काशोमिश्रहि आदि दै लीलाचल जन आहि । सब ही प्रभु पद आय कें सरन लई तव ताहि ॥
आगें सब ऐही कथा वर्णन करि हैं जोड़ । सार्वभौम जैसें करें प्रभु कौ सेवन सोड़ ॥
भिच्चा परपाटी करै ज्यों निरवाह जु आहि । सोई जन करि है श्रवन श्रद्धा करि कें याहि ॥
ज्ञान कर्म के पास तें होय विमोचन ताहि । सोई श्री चैतन्य पद वेगि हियै है आहि ॥
श्री जु रूपगुनाथ के चरण कमल जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत कहै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां सार्वभौमोद्धारो नाम षष्ठपरिच्छेदः ॥

सप्तमपरिच्छेदः

धन्यं तं नौमि चैतन्यं वासुदेवं दयार्द्रधीः । नष्टकुण्डं रूपपुण्डं भक्तितुण्डं चकार यः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय जय श्री अद्वैत शशि जय प्रभु भक्तनिवृन्द ॥
इही भांति कें प्रभु कियौ सार्वभौम निस्तार । दक्षिण दिस के गमन कौ उपज्यौ प्रभुहि विचार ॥
माघ शुक्लपक्ष में कियौ श्री प्रभु जू संन्यास । फागुण में किय आय कें लीलाचल मधि वास ॥
दोल सु जात्रा प्रभु लखी तहां फागुण के सेस । नृत्य गीत बहु किय तहां ह्वै करि प्रमावेस ॥
सार्वभौम मोचन कर्यौ प्रभु रहि चैत्र सुमास । किय वैशाख हि लगत मन जैवै दक्षिण आस ॥
कहै महाप्रभु विनय करिनिज जन बोलि संभारि । करि आलिंगन सबनिकौं श्रीकर कमलजु धारि ॥
तुम सब कौं जानें जु हम प्राणनि तें अधिकाय । छाड़ि सकत नहि तुम हि हम प्राण तज्यौउ जाय ॥
तुम सब मेरे बंधु हौ बंधु कृत्य किय आहि । जगन्नाथ मधि आनि मुहि दरस दिखायौ ताहि ॥
हौं सांगत इकदान कौं अब सबहिन के पास । आज्ञा सब मिलि देहु मुहि जैवै दक्षिण आस ॥
निहिचैं हम कौं जायवौ विश्वरूप के काज । एकाकी ही जांहिगे काहू संग न साज ॥
सेत बंध ते आगमन जब लगि मेरौ होय । तब लगि तुम सबही रहौ लीलाचल मधि जोय ॥
सिद्धि प्राप्ति जानें सकल विश्वरूप की आहि । दक्षिण देस उद्धारि वे यह छल कीनौ ताहि ॥
सुनि सब ही के हृदय में भयौ महादुख जोय । वज्र परचौ मानौ सिर सूकि गये मुख सोय ॥
नित्यानंद प्रभु जु कहै ऐसैं कैसे होय । एकाकी तुम जायवौ यह सहि सकि है कोय ॥
एक दोय संगहि चलै नाहि परौ हठ रंग । जाहि कहौ सो एक द्वै आवै प्रभु के संग ॥
दक्षिण पथ के तीर्थ जे हम सब जानें सोय । आवै हम ही संग प्रभु जौ तुम आज्ञा होय ॥
हम नर्तक प्रभु जू कहै सूत्रधार तुम सांच । जैसें तुम जु नचाय है सोई नचि है नाच ॥
करि संन्यास जु हम चले वृन्दावन अभिराम । लै हम कौं आये जु तुम श्री अद्वैत जु धाम ॥
लीलाचल पथ आवतें दंड भंग किय सोय । तुम सब के दृढ़ नेहसौं कार्य भंग मम होय ॥
जगदानंद चाहै विषय भुगतायौ हम पास । जो कहै सोइ हम कियौ चाहै उनके त्रास ॥
कबहुं जौ उनकौ वचन करियै और प्रकार । तीन दिवस लौं कथा मम कहत न कोप अपार ॥
हम तौं संन्यासी जु है दामोदर बहु सोय । रहै जु शिखा दंड धरि मम ऊपर नित जोय ॥
इनकें आगें हम कछू जानत नहीं व्यौहार । मेरौ नहि भावते इन्हें चरित स्वतंत्र अपार ॥
कृष्ण कृपा तें नहि इन्हें लोक उपेक्षा आहि । लोक अपेक्षा हम कभू छाड़ि सकै नहि ताहि ॥
देखि धर्म संन्यास के दुखी मुकुंद जु होय । जाड़े न्हैवौ बार त्रय भूमि सयन हूं जोय ॥
अंतर दुख ज्वाला कछू मुख ते कहत जु नाहि । इनकौ दुख कौ देखिकें हम दुगुनौ जु दुखाहि ॥

ताते तुम सब ह्यो रहौ लीलाचल के माहि । दिन केतिक हम तीरथनि एकाकी जु भ्रमाहि ॥
 जेते गुण इन सबनि के प्रभु तिनके बस होय । छल करि दोषारोप सौं आस्वाद गुण सोय ॥
 अकथ कथन चैतन्यकौ है जु भक्ति वात्सल्य । आप सहत वैराग्य करि निसिदिन दुख प्राबल्य ॥
 सोई दुख कौ देखि कै भक्त रहत दुख पाय । सोई दुख तिनकौं तनक सखौ न प्रभु पै जाय ॥
 उनि दोसनि उद्धार छल वरजि सबनि कौं आहि । तीरथ भ्रमवे एकले किय वैराग्य जु ताहि ॥
 तब चारि जन बहुत कछु विनती तिनसौ कीन । है स्वतंत्र ईश्वर प्रभु सो कवहुं मानी न ॥
 नित्यानंद कहै तबै जो आज्ञा तुम होय । दुख सुख नित ह्वैवै करौ करि वै हमें जु सोय ॥
 एक निवेदन ही करौ ऐयें और जु वार । प्रभु जू ताहि विचारि कै करौ जु अंगीकार ॥
 बहिर्वास कौपीन है जो जलपात्र जु सोय । इतनौई जैवै जु संग और कछु नहि सोय ॥
 नाम गणन के बीच तुम हाथ बंधे हैं दोय । बहिर्वास जलपात्र औ कैसैं रहिवै सोय ॥
 पथ में प्रेमावेस करि है हो तुम जु अचेत । बहिर्वास जलपात्र कौ को धरि है करि हेत ॥
 कृष्णदास इह नाम है सरल ब्राह्मण आहि । हम विनती कौ धारि कै लेहु संग करि याहि ॥
 बहिर्वास जलपात्र धरि चहै तुम्हरे साथ । जो तुम इच्छा करौ सो नहि कहि है कछु गाथ ॥
 अंगीकृत प्रभु जु कर्यौ तब तिहि वचन जु सोय । तिनि सब कौं लैकें गये सार्वभौम घर जोय ॥
 करि प्रणाम आसन दियौ सार्वभौम जु ताहि । बैठारे सब कौ जु मिलि तब ही आसन आहि ॥
 नाना कृष्ण कथाहि करि प्रभु जु बोले ताहि । हम आये तुम पास हैं आज्ञा मागन जाहि ॥
 विश्वरूप संन्यास करि गये जु दक्षिण आहि । करि हैं हम जु अवस्य करि अन्वेषण अब ताहि ॥
 निहचै दक्षिण चलेंगे आज्ञा दीजें सोय । सुभ पूर्व ऐवौ ऊलटि तुम आज्ञा ते होय ॥
 सार्वभौम सुनिके भये कातर बहुते आहि । धरि कै चरण विसाद सौं कहै जु उत्तर ताहि ॥
 बहु जन्मनि के पुण्य सौ पायौ प्रभु तुम संग । मोकौ ऐसे संग सौं विधि करि हैं जु विभंग ॥
 वज्र परै जो सीस पै और पुत्र मरि जाय । ताहि सखो जाहि नही तुम विछोह अधिकाय ॥
 तुव स्वतंत्र ईश्वर गमन करिवैं निहचै जोय । दिन केतिक रहियै लखैं चरण कमल तुम सोय ॥
 सिथल भयौ तिहि विनय करि प्रभु जु कौ मन सोय । रहे दिवस केतिग तहां गमन कियौ नहि जोय ॥
 सार्वभौम आग्रह जु करि करै निमंत्रण ताहि । करवावैं भोजन तिन्हें करि घर पाकहि आहि ॥
 साठी माता नाम जिहि है जु ब्राह्मणी ताहि । रांधि देहि भिन्ना जु तिहि अचिरज कथा जु आहि ॥
 आगे तिनकी कथा कौ कहि हैं करि विस्तार । अब प्रभु कौ दक्षिण गमन ताकौ कहैं विचार ॥
 दिवस पांच रहि कै जु प्रभु सार्वभौम घर आहि । चलिवे के हित आपु प्रभु मांगी आज्ञा ताहि ॥
 सार्वभौम संमत भयौ प्रभु के आग्रह आहि । जगन्नाथ मंदिर गये प्रभु जू लै करि ताहि ॥
 दरसन करि ठाकुर निकट मांगी आज्ञा ताहि । प्रसादान्न माला प्रभुहि दियौ पुजारी आहि ॥

आज्ञा माला पाइ कै कीने हरषि प्रणाम । आनंदित श्री गौरहरि चले जु दक्षिण धाम ॥
 भट्टाचारज संग अरु निज गन जितनौ आहि । जगन्नाथ परिदक्षिणा करि किय गमन जु ताहि ॥
 पथ आलालनाथ चले उदधि तीर ही तीर । कहैं जु गोपीनाथ सौं सार्वभौम मति धीर ॥
 बहिर्वास कौपीन के गेह धरे जुग दोय । लै आवौ द्विज द्वारते और प्रसाद हुं सोय ॥
 सार्वभौम जू तब कहैं प्रभु के चरननि जोय । करि हौं तुम निरधार मम इहै निवेदन सोय ॥
 है गोदावरि तीर मधि राय जु रामानन्द । ते हैं विद्यानगर के अधिकारी सुख कन्द ॥
 नाहि उपेक्षा करौंगे विषयी सुद्र जु जानि । मिलि हौं तिनहि अवश्य करि मेरे वचनहि मानि ॥
 तेई है तुव संग कौ जोग्य एक जन जोइ । रसिक भक्त तिहि सम नही धरणी तल में कोइ ॥
 पांडित्य अरु भक्ति रस है सीमा इन दोइ । बतराये तुम जानि हैं तिनकी महिमा जोइ ॥
 चेष्टा वचन अलौकिक जु तिहि नहि वृक्षें आहि । कीनो है परिहास हम वैष्णव कहि कहि ताहि ॥
 अब प्रभु के जु प्रसाद करि जान्यौ है तिहि तत्व । संभाषन करि जानि हैं तिनकौ जितक महत्व ॥
 अंगीकार कर्यौ जु प्रभु तिनकौ वचन जु आहि । विदा जु तिनकौ दें हित आलिंगन किय ताहि ॥
 गेह कृष्ण भजि करौ मम आसिर्वाद हि ताहि । लीलाचल आवैं जु हम जिमि तुम आसिस पाहि ॥
 गमन महाप्रभु जु कर्यौ इतनौ कहि कै ताहि । होय मूर्छित तहां परे सार्वभौम जु आहि ॥
 गमन कियौ प्रभु वेग ही करि जु उपेक्षा ताहि । श्री प्रभु जू कौ चित्त मन कौन सकै अवगाहि ॥
 महानुभाव कौ चित्त कौ यहै सुभाव जु होय । कोमल है बहु कुसुम तें कठिन वज्र तें सोय ॥

तथाहि भवभूतिवाक्यं—

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि । लोकोत्तराणां चेतांसि कोनु विज्ञातुमीश्वरः ॥

वेगि भक्तगण आयकै लीनौ प्रभु कौ साथ । तब लगि वस्त्र प्रसाद लै आये गोपीनाथ ॥
 तब आलालनाथहि महाप्रभु आये सब संग । नसस्कार करि कै जु तिहि बहु करी सरंग ॥
 प्रेम विवस है कितिक छिन नृत्य गीत किय आहि । तहां वसत जन जितिक जे देखन आये ताहि ॥
 चहुं दिस लोग सबै कहैं हरी हरी यह नाम । करें जु प्रेमावेस मधि नृत्य गौर अभिराम ॥
 अरुण वसन कंचन सदृश देह महाप्रभु आहि । स्वेद कंप पुलकाश्रु औ भूषण ते हौं ताहि ॥
 देखत सिंगरे लोक मन चमत्कार भो सोय । जितिक लोक आये तहां घर नहि जात जु कोय ॥
 नाचत कोऊ गावत जु कहैं कृष्ण गोपाल । प्रेम प्रवाह वहे जु नर त्रिया वृद्ध औ बाल ॥
 कहत भक्तगण सौं जु लखि नित्यानंद अभिराम । आगैं नृत्य जु भांति इहि ह्वै है ग्रामहि ग्राम ॥
 भयौ तहाँ अति कालहै लोक छाडि नहि जाहि । नित्यानंद गोस्वामि जू सृज्यौ तहां जु उपाय ॥
 लै कै श्री प्रभु कौ गये करिवे कौ जु मध्यान । धाये आये दरस हित चहुं दिसतें नर जान ॥
 देव सदन आये तहां करि कै प्रभु मध्यान । निज गण कौ जु प्रवेस दिय द्वार कपाट निदान ॥

करवाई द्वै प्रभुनि कौ भीक्षा गोपीनाथ । प्रभु कौ शेष प्रसाद जौ लियौ बाटि सब साथ ॥
 सुनि सुनि लोक सबै तहां आये बाहिर द्वार । करै कुलाहल लोक सब हरी हरी जु पुकार ॥
 तव महाप्रभु जू तहां द्वार दियौ खुलवाय । आनन्दित आये जु नर दरसन करि हिय चाय ॥
 संध्या लौं इहि भांति सौं लोक जु आवै जाय । भये जु वैष्णव लोक सब नाचत कृष्ण हि गाय ॥
 इही भांति उहि ठौर प्रभु भक्त गननि के संग । सोई राति वितीति किय कृष्ण कथा के रंग ॥
 स्नान प्रात समये जु करि कियौ गमन प्रभु आहि । भक्तवृन्द कौ दिय विदा करि आलिंगन ताहि ॥
 होय मूरछित धरणि पर परे सबै जन जोइ । भक्त वृन्द की ओर प्रभु उलटि न चाहौ सोइ ॥
 प्रभु व्याकुल विछेद करि चले दुखित मन सोय । कृष्णदास पाछे चलै पात्र वसन लै जोय ॥
 भक्त वृन्द उपवास करि रहे जु ताही ठौर दुखित होय लीलाचल हि आये ते दिन ओर ॥
 मत्त सिंह ज्यों महाप्रभु गमन कियौ पथ मांहि । करत नाम संकीरतन प्रेमावेसित जाहि ॥

तथाहि श्रीकृष्ण चैतन्यवाक्य—

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे । कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ॥

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रत्न मां । कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहि माम् ॥

राम राघव राम राघव राम राघव रत्न मां । कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ॥

यही पद्य पढ़ि कै चलै गौर हरी अभिराम । लखि लोकहि पथ में कहै हरी हरी कहूं नाम ॥
 प्रेम मत्त ते लोक हैं बोलत हरि हरि कृष्ण । प्रभु के पाछे संग चलत दरसन के जु सत्पुण ॥
 कितक दूर हरि प्रभु तिनहि आलिंगन किय धारि । करी विदा तिनकौं तिनहि बीच भक्ति संचारि ॥
 कर्यौ गमन चित चायसौं तेई जन निज ग्राम । छिन छिन क्रंदन नचत हसि बोलत कृष्ण जुनाम ॥
 जाकौं देखें तिहि कहै कहाँ कृष्ण कौ नाम । इनि भांतिनि वैष्णव कियौ तिन्हौं सबै निज ग्राम ॥
 ग्रामांतर तें देव करि आवैं जे जन आहि । तिनके दरसन कृपा करि होय समान जु ताहि ॥
 जाहि वहै निज ग्राम में करै सु वैष्णव आहि । अन्य ग्राम के आय कें भये भक्त लखि ताहि ॥
 ग्राम ग्राम मधि जन वहै करत जाय उपदेस । इनि भांतिनि वैष्णव भयौ सब दक्षिण कौ देस ॥
 इनि भांतिनि पथ चलतमें सत सत जनकौं आहि । करत वैष्णव महाप्रभु करि आलिंगन ताहि ॥
 जिहि ग्राम जु जाके घरहि भिक्षा प्रभु किय आय । तिही ग्राम के लोक सब देखन आये ताय ॥
 भये महाप्रभु की कृपा महाभागवत सोय । ते सब आचारज भये तार्यौ जग सब जोय ॥
 इही भांति जब लौं गये सेतुबंध प्रभु सोय । प्रभु नातें नातौ भयौ भयै भक्त सब जोय ॥
 किय प्रकास नहि सक्ति जिहि प्रभु नवदीप मझार । सोई शक्ति प्रकासकें दक्षिण किय निस्तार ॥
 जो प्रभु जू कौ भजतहै जिहि तिहि कृपा जु सोय । इनही सब लीलानि कौ सत्य मानि हैं सोय ॥
 लोक रहित लीलानि तें जौ उपजै न बिस्वासु । इही लोक परलोक कौ नास होय है तासु ॥

कहौ प्रथमहि रीति जिहि प्रभुकौ गमनजु आहि । इही भांति सब जानिहौ दक्षिण भ्रमनजु आहि ॥
 चलत चलत इहि भांति प्रभु गयेजु कूर्म स्थान । देखि कूर्मजु कौ करी स्तुति प्रणाम सनमान ॥
 प्रेम विवस क्रंदन हसन नृत्य गीत किय आहि । सब लोकन के चित्तभौ चमत्कार लखि ताहि ॥
 दरसन करि वैष्णव भये कहैं कृष्ण हरि सोय । प्रेम विवस नाचै जु नर उर्द्ध बाहु करि जोय ॥
 सुनि जु निरंतर लोक मुख कृष्ण नाम अभिराम । तिही लोक नै वैष्णवजु किये अन्य सब ग्राम ॥
 इहि विधि सौं जु परंपरा देस भक्त भौ सोय । कृष्ण नाम पीयूषनदि लोक बहाये जोय ॥
 जब प्रभु जू ने कितक छिन बाह्य कियौ जु प्रकास । तब कूरम सेवक हुते किय सनमान जु तास ॥
 जिहि जिहि क्षेत्रन जात प्रभु तहां यहै व्योहार । एक ठांव वर्णन कियौ कहै नही बहु बार ॥
 कूर्म नाम तिहि ग्रामकौ वैदिक द्विज इक जोइ । बहु श्रद्धाजुत भक्ति करि किय प्रभुन्योतौ सोइ ॥
 प्रभु कौं गृह मधि लाय कैं पद प्रक्षालन कीन । सहित वंस सोई जु जल कीनौ पान प्रवीन ॥
 बहु प्रकार करि नेह सौं भिक्षा दई प्रसंस । प्रसादान्न प्रभु कौ रखौ सो पायौ सु सवंस ॥
 जिनि तुव पद पंकजनिकौ ध्यान करत विधि जोय । साक्षात पद कमल जुग आये मम गृह सोय ॥
 सीमा मेरे भाग्य की क्यौहं कही न जाय । श्लाघ्य भयौ मेरे जनम कुल धन आजु बनाय ॥
 प्रभु बोले अस बात नहिं कबहुं कहिहौ आहि । कृष्ण नाम लै बौ सदा गृह मधि रहि निरवाहि ॥
 जाकौं देखौ ताहि तुम करौ कृष्ण उपदेस । मम आज्ञा करि गुरु भये तारौ याही देस ॥
 कबहुं नाहीं बाधि है तुम कौ विषय तरंग । फेरि जु याही ठौर में लहिहौ मेरौ संग ॥
 इही भांति भिक्षा करै प्रभु याके गृह आहि । सोई ऐसैं कहत अस सिद्धा करै जु ताहि ॥
 पथहि चलत देवालये जिही ग्राम मधि वास । जाके गृह भिक्षा करै सोई महाजन रास ॥
 जैसी रीति जु कूर्म में ऐसी किय सब ठाम । प्रभु जौ लौं आये जु फिरि श्री लीलाचल धाम ॥
 याही तें ह्यां ही सबै कहौ जु करि विस्तार । जानौगे इहि भांति सौं सब ठां प्रभु व्योहार ॥
 इही भांति तिही रैन में रहे तहां ही सोय । स्नान तहां करि कें चले प्रात समय प्रभु सोय ॥
 आये कूरम दूरि बहु पहुँचावन प्रभु आहि । श्री प्रभु जू ने जतन करि घर कौं पठ्यौ ताहि ॥
 एक महाशय द्विज तहां वासुदेव अभिधान । गलित कुण्ड सब अंग में सोऊ कीट प्रधान ॥
 जोई कीट जु अंग तें भूमि गिरि परे ताहि । तिहिं ठौर ता कीट कौं राखै सो जु उठाय ॥
 तिहिं द्विजने प्रभु आगमन सुन्यौं रैन मधि जोइ । प्रातहि आयौ दरस हित भवन कूर्म कैं सोइ ॥
 कूरम के मुख ते सुन्यौ तिहि प्रभु गमन जु सोइ । दुखित होइ धरणी पर्यौ हैं जु मूरछित जोइ ॥
 लाग्यौ करण विलाप सो बहु प्रकार करि आहि । ताही छिनमें आय प्रभु किय आलिंगन ताहि ॥
 कुण्ड दूर गौ दुख सहित प्रभु के परसैं आहि । सुन्दर भौ आनंद सहित तब हि अंग सब ताहि ॥
 देखि महाप्रभुकी कृपा भौ विस्मय मन ताहि । पद सिर मधि धरि पदुय पढ़ि स्तुति बहु करी जु आहि ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

कथाहं दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः । ब्रह्मबन्धुरिति स्माह वाहुभ्यां परिःस्मितः ॥

स्तुति बहु करि प्रभु सौ कहै सुनौ दयामयताहि । येई गुण नहि लोक में तेई तुम मधि आहि ॥
मोहि देखि मम गंध तें भाजत पामर जोय । तुम स्वतंत्र ईश्वर बड़े अस हम परसत सोय ॥
ऐपैं अति उत्तम भयौ भलौ अधम हौं जोय । अहंकार यह जारि है मो कौं उठि कै सोय ॥
प्रभु बोले तुम कौ कभू नहि है है अभिमान । कहौ निरंतर तुम सदा कृष्ण कृष्ण अभिधान ॥
कृष्ण कृष्ण उपदेस करि करौ जीव निस्तार । कृष्ण जु तुम कौ वेगही करि है अंगीकार ॥
कहि कै इतनौ ताहि प्रभु कियौ अंतर ध्यान । किय दोऊ द्विज गरें लगि क्रंदन प्रभु गुणगान ॥
वासुदेव उद्धार कौ याही कहौ आख्यान । वासुदेव अमृत पद जू भौ श्री प्रभु अभिधान ॥
गमन महाप्रभु कौ कहयौ यही प्रथम है जोय । वासुदेव मोचन कियौ कूरम दरसन सोय ॥
जोई श्रद्धा करि करै श्रवन हि लीला याहि । चरण कमल चैतन्य के वेगि ही मिलि है ताहि ॥
जान्यौ लीला गौर कौ आदि अंत नहि जोय । सुनि महंतनि के मुखनि लिखी वहे मम सोय ॥
भक्त वृन्द अपराध मम याते लीजौ नाहि । मो कौं एकहि सरण है तुम चरणन के माहि ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के चरण कमल जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ कहैं वृज भाषाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे वासुदेवोद्धारो नाम सप्तम परिच्छेदः ॥

अष्टम परिच्छेदः

संचार्य रामाभिधमक्तमेवे स्वभक्तिसिद्धान्तचयामृतानि ।

गौराङ्गिरेतैरमुना वितीर्णै स्तब्धत्वरत्नालयतां विभर्त्ति ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय जय नित्यानन्द । श्री अद्वैत हिमांशु जय जय भक्तनि के वृन्द ॥
पूर्व रीति सौ प्रभु गमन आगें कीनौ जोइ । जियड नरसिंह क्षेत्र कौं गये कितिक दिन सोइ ॥
किय नृसिंह लखि दंडवत स्तुति श्रीप्रभु जूआहि । गीत नृत्य बहु स्तुति करी प्रेम विवसहै ताहि ॥
श्री नृसिंह नरसिंह जय जय नृसिंह भय भंग । जय जय प्रह्लादेश श्री वदनकंज के भृंग ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

उग्रोऽप्यनुग्र एवायं स्वभक्तानां नृकेशरी । केशरीव स्वपोतानामन्येषामुग्रचक्रमः ॥

नाना विधिके पद्य पढ़ि कीनी स्तुति इहि भाय । श्री नृसिंह सेवक दियौ सुक प्रसाद प्रभुआय ॥
पूर्व रीति प्रभु कौं कियौ किहू निमन्त्रण विप्र । वाही रीति तहां रहे गमन प्रात किय छिप्र ॥
पूर्व रीति किय वैष्णवजु सब नर गन प्रभु धीर । आये चलिकें कितक दिन श्री गोदावरि तीर ॥
लखि गोदावरि कौं भइ सुधि यमुना अभिराम । सुरत भयौ लखि तीर वन श्री वृन्दावन धाम ॥
केतिक छिन तिहिवन कियौ नृत्य गीत सुख सार । स्नान तहां कीनौ जु प्रभु है गोदावरि पार ॥
घाट छाडि जल के निकट केतक दूर जु आहि । कृष्ण नाम संकीर्तन जु बैठि करत तट ताहि ॥
तिही समें दोला चहें श्री रामानन्द राय । स्नान करन आये तहां वाजे बहुत वजाय ॥
वैदिक द्विज तिहि संगलै आये हैं अधिकाय । स्नानजु तर्पन विधि सहित निति सब यौ बनाय ॥
एई रामानंद हैं जान्यौ प्रभु लखि ताहि । प्रभु कौ मन उठि धाय कै तिहि मिलिवे कौं आहि ॥
तऊ धैर्य करि कें रहे बैठि महाप्रभु चंद । लखि श्री पाद अपूरवहि आये रामानन्द ॥
रवि सत सम सोभा सरस अरुण वसन प्रभु आहि । देह सुवलित प्रकांडहै कमल सुलोचन ताहि ॥
प्रभु कौं देखत तिहि मन हि चमत्कार भौ आहि । किये आयकें दंडवत नमस्कार तिन ताहि ॥
उठि कै बोले महाप्रभु उठौ कृष्ण कहु कृष्ण । तिहिं आलिंगण करणकौं प्रभुकौ हियौ सतृष्ण ॥
तुम रामानंद राय हौ इमि तउ पूछ्यौ ताहि । बोले सो सोई जु हो दास सूद्र मद आहि ॥
उदय भयौ स्वाभाविकजु प्रेम दुहुनि कौ जोय । दोऊ आलिंगनहि करि परे धरणि मधि दोय ॥
स्तंभ स्वेद औ असु है कंप पुलक वैवर्ण । सुनि यें दोऊनि के मुखनि गद्गद कृष्ण जु वर्ण ॥
विप्र गननि के मन भयौ चमत्कार लखि ताहि । वैदिक सब विप्रजु तहां करत विचार जु आहि ॥
यह संन्यासी तेज करि लखियतु ब्रह्म समान । क्यौं सूद्रहि आलिंग करि क्रंदन करत निदान ॥
महाराज पंडित महा यह परम गंभीर । संन्यासी के परस सौं मत्त भयौ जु अधीर ॥
इहिविधि द्विजगन मनहि मन करत भावना जोय । देखि विजाती लोक प्रभु आछादन भौ सोय ॥
बैठे दोऊ स्वस्थ है तिही नदी तट आहि । महाप्रभू हसिकें तवै कहन लगे यौ ताहि ॥
हम सौ भट्टाचार्य जू कहे जु तुव गुण आहि । तुम मिलिवे के हेत किय हमसौं जतन जु ताहि ॥
मिलन हेत तुव हम भयौ इहां आगमन सोय । भली भई अनयास ही पायौ दरसन जोय ॥
राय कहैं आचार्य मम करें भृत्य कौ ज्ञान । मम हित में जु परोक्ष हूं सावधान सुनिधान ॥
पाये हैं तिनकी कृपा तुम पद दरसन सोय । आजु सफल मेरौ भयौ मानस जन्म सु जोय ॥
सार्वभौम पर जो कृपा येई चिह्न जु ताहि । परस्यो भो अस्पृश्य तिहिं कृपाधीन है आहि ॥
कहां स्वयं भगवान तुम नारायण हौ जोय । नृप सेवक विषई अधम सूद्र कहां हों सोय ॥
तुम कौं मेरौ देखिवौ वेद निषेधै आहि । परस कियौ मेरौ नहीं करी घृणा भय ताहि ॥
तुम हि करायौ तुम कृपा निंद्य कर्म है जोय । ह्यां मेरे निस्तार हित तुव आगमन जु सोय ॥
यह महंत स्वभाव है दीन हि तारण हेत । नहीं प्रयोजन निज तऊ चलि तिहि जाहि निकेत ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसां । निः श्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा कचित् ॥ ३ ॥

विप्रादिक जन सहस्र इक है जु हमारे संग । तुम दरसन सब कौ भयौ द्रवीभूत मन रंग ॥
सुनि ये सब के वदन मधि कृष्ण कृष्ण इह नाम । सब के अंग पुलकित नयन अश्रु धार अभिराम ॥
अप्राकृति तुव प्रकृति सो ईश्वर लक्षण जोय । नही संभवै जीव के अप्राकृति गुण सोय ॥
महा भागवत मुख्य तुम प्रभु जू कहै जु ताय । तुव दरसन भौ सवन कौ द्रवीभूत मन आहि ॥
गाथा कहा पर की जु हौं सायावादी हंस । तुव परसैं हम हूं चहै कृष्ण प्रेम परसंस ॥
जानत यही कठोर मम हिय सोधन हित जोय । तुम सौं मिलिवे कौ कहाँ सार्वभौम जू सोय ॥
दोऊ गुण दोऊनिके स्तुति जु करैं इहि भाँइ । आनंदित मन दुहुनि के दरस परस पर पाइ ॥
तिही समैं वैदिक जु इक वैष्णव ब्राह्मण जोइ । प्रभु कौ करि कै दंडवत कियौ निमंत्रण सोइ ॥
न्यौतौ मानौ महाप्रभु जानि वैष्णव ताहि । रामानन्द जू सौं कहैं कछु मृदु हँसि कै आहि ॥
कृष्ण कथा तुव वदन तें सुनिवे कौ मन जोय । पांवहिगे हम फेरि कै तुम्हारौ दरसन सोय ॥
राय कहैं आये सु तुम पावर सुद्धि निमित्त । दरस मात्र हूँ है नहीं शुद्ध दुष्ट मम चित्त ॥
पांच सात दिन रहि इहां सोधन करि हौ याहि । तव ही हूँ है शुद्ध मम यहै दुष्ट मन आहि ॥
जदपि वियोग दुहुनि कौ सखौ न कगौह जाय । तऊ दंडवत करि चले श्री रामानंद राय ॥
तिही विप्र के गेह में किय भीक्षा प्रभु आय । विवि उत्कंठा सांभ हूँ लीनौ भान दुराय ॥
स्नान कृत्य करि महाप्रभु बैठे हैं भरि रंग । मिले राय जू आय केँ एक भृत्य लै संग ॥
नमस्कार किय राय प्रभु आलिंगन किय ताय । कहैं जु दोऊ जन कथा बैठि निवास हि आय ॥
श्लोक पढ़ौ प्रभु जू कहैं निर्णय साध्य जु ताहि । राय कहैं निज धर्म किय यहै भक्ति हरि आहि ॥

तथाहि श्री विष्णुपुराणे—

वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान् । विष्णुराराध्यते पन्था नान्यत्तत्तोपकारणम् ॥ ४ ॥

कहैं जु प्रभु यह बाह्य है आगे कहाँ विचार । राय कहैं हरि अर्पिये कर्म साध्य है सार ॥

तथाहिगीतायां—यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ १५ ॥

बाह्य यह प्रभु जु कहैं आगे कहाँ विचार । राय कहैं तजि कर्म सब भक्ति साध्य कौ सार ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

आज्ञायैवं गुणान्दोषान्मयादिष्टानपि स्वकाम् । धर्मान् सन्त्यज्य यः सर्वान् मां भजेत् स च सत्तमः ॥ ६ ॥

तथाहि श्रीगीतायां—

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज । अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ ७ ॥

बाह्य यह प्रभु जू कहैं आगे कहाँ जु ओर । राय कहैं ज्ञानहि मिली भक्ति साध्य सिरमौर ॥
तथाहि तत्रैव—

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काञ्चति । समः सर्वेषु भूतेषु सद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ८ ॥

यह बाह्य प्रभु जू कहैं आगे कहाँ विचार । ज्ञान अनावृत भक्ति जो राय कहैं तिही सार ॥
तथाहि श्री मद्भागवते—

ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्त्ता ।

स्थानस्थिताः श्रुतिगतां तनु बाढ्मनोभि र्ये प्रायशोऽजित जितोऽप्यसितैस्त्रिलोक्याम् ॥ ९ ॥

प्रभु जू कहैं एहु जु है आगे कहाँ जु और । राय कहैं प्रेमा भक्ति है साध्य सार सब सोर ॥
तथाहि पद्यावल्यां—

नानोपचारकृतपूजनमार्त्तवन्धोः प्रेम्नैव भक्त हृदयं सुखविद्रुतं स्यात् ।

यावत् लुदस्ति जठरे जरठा पिपासा तावत् सुखाय भवतो ननु भक्ष्यपेये ॥ १० ॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्णभक्तिरसभाविता मतिः क्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते ।

तत्र लौल्यमपि मूल्यमेकलं जन्मकोटिसुकृतैर्न लभ्यते ॥ ११ ॥

प्रभु जू कहैं यह जु है आगे कहाँ विचार । दास्य प्रेम राय जु कहैं सर्व साध्य कौ सार ॥
तथाहि श्री मद्भागवते—

यन्नामश्रुति मात्रेण पुमान्भवति निर्मलः । तस्य तीर्थपदः किंवा दासानामवशिष्यते ॥ १२ ॥

तथाहि यामुनमुनिविरचित स्तोत्ररत्ने—

भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरः प्रशान्तनिःशेषमनोरथान्तरः ।

कदाहमैकान्तिकनित्यकिकरः प्रहर्षयिष्यामि सनाथ जीवितं ॥ १३ ॥

प्रभु जू कहैं यह जु है कछु है अरु निरधार । सख्य प्रेम राय जु कहैं सर्व साध्य कौ सार ॥
तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

इत्थं सतां ब्रह्मसुखानुभूत्या दास्यं गतानां परदैवतेन ।

मायाश्रितानां नरदारकेण सार्द्धं विजहुः कृत पुण्यपुञ्जाः ॥ १४ ॥

प्रभु जू कहैं यह जु है आगे कहाँ सु और । राय कहैं वात्सल्य प्रीति सर्व साध्य कौ सार ॥
दशमस्कन्धे—

नन्दः किमकरोद्ब्रह्मन् श्रेय एवं महोदयं । यशोदा वा महाभागा पपौ यस्याः स्तनं हरिः ॥ १५ ॥

तथाहि तत्रैव—

नेमं विरिञ्चो न भवो न श्रीरप्यंगसंश्रया । प्रसादं लेभिरे गोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ॥ १६ ॥

प्रभु जू कहैं उत्तम यह आगे और विचार । कांत भाव राय जु कहैं सर्व साध्य कौ सार ॥

तथाहि तत्रैव—नायं श्रियोऽगं व नितान्तरतेः प्रसादः, स्वयंवितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः ।
 रासोत्सवेऽस्य भुजदण्डगृहीत कण्ठ लब्धाशिपां य उदगाद् व्रजसुन्दरीणां ॥ १७ ॥
 तत्रैव—तासामाविरभू च्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः । पीताम्बरधरः स्रग्वी सात्तान्मन्मथमन्मथः ॥ १८ ॥

बहुत प्रकार उपाय है कृष्ण प्राप्ति को जोय । तारतम्य बहुते जु हैं कृष्ण प्राप्ति को सोय ॥
 ऐसैं जिहि जोई जु रस सर्वोत्तम है सोय । किये विचार तटस्थ हैं तारतम्य है जोय ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

यद्योत्तरमसौ स्वादविशेषोल्लासमयपि । रति वासनया स्वाद्वी भासते कापि कस्यचित् ॥ १६ ॥

पूर्व पूर्व रस को जु गुण पर पर रस मधि होय । एक दोय यों पांच लौ क्रम करि बाढ़ै सोय ॥
 गुणाधिक्य करि बढ़तुहै प्रतिरस स्वाद उजास । सांतादिक रस गुनिनिकौ कांत भाव मधि वास ॥
 जैसे आकासादि गुण पर पर भूतहि होय । दोय तीन इहि क्रमजु बढि पांच धरनि मधि सोय ॥
 परिपूरण श्री कृष्ण की प्राप्ति इही रस होय । इहीं प्रेम के कृष्ण वस कहै भागवत सोय ॥

तथाहि श्रीमद्भागवते—

मयि भक्ति हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मस्तेहो भवतीनां मदापनः ॥ २० ॥
 सुदृढ प्रतिज्ञा कृष्ण की सर्व काल यह आहि । जो जैसे कृष्णहि भजै कृष्ण भजै त्यौ ताहि ॥

तथाहि गीतायां—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ २१ ॥

इही प्रेम अनुरूप जौ सकै न भजि कै सोय । याही ते है सो ऋणी कहै भागवत जोय ॥

श्रीमद्भागवते—

न पारयेऽहं निरवयसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विविधायुषापि वः ।

या मा भजन दुर्जयगेहशृङ्खलाः संवृश्य तद्वः प्रतियातु साधुना ॥ २२ ॥

जदपि कृष्ण सौंदर्य हैं सर्वे साधुरी धूर्य । वृजदेवीनु के संग तिहि बाढ़ै अति साधूर्य ॥

तथाहि तत्रैव—

तत्राति शुशुभे तामि भगवान् देवकीसुतः । मध्ये मणीनां हैमानां महामारकतो यथा ॥ २३ ॥

साध्यावधि निःश्रेय है कहै महाप्रभु सोइ । कहौ कृपा करि राय तुम जौ कछु आगें होय ॥

राय कहै यातें परे पूछैं इमि जन जोय । जान्यौ नहीं इतिक दिननि है त्रिभुवन में सोइ ॥

राधा प्रेम इही जु मधि साध्य सिरोमनि आहि । कही जु सब ही शास्त्र मधि महिमा अद्भुत याहि ॥

तथाहि पद्मपुराणे—

यथा राधा प्रिया विष्णोस्तन्याः कुण्डं प्रिय तथा । सर्वगोपीषु सर्वैका विष्णोरत्यन्तवल्लभा ॥ २४ ॥

कहैं जु प्रभु आगें कहौ सुनत महासुख होय । सुधानदी अद्भुत बहै तुव श्री मुख तें जोय ॥
 चोरी करि श्री कृष्ण जू श्री राधा लै सोय । गोपीगण के डर जु करि गये इकौसे जोय ॥
 तथाहि दशमे—

अनया राधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः । यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रदः ॥ २५ ॥

जहां जु प्रीतम के हियें अन्यापेक्षा होइ । स्फुरै नही तहां प्रेम की अति सुगाढ़ता जोइ ॥
 राधा हित गोपीन कौ करै प्रगट जो त्याग । राधा मधि तव कृष्ण कौ जातैं दृढ़ अनुराग ॥
 राय कहैं सोऊ सुनौ प्रेमहि महिमा ताहि । उपमा त्रिभुवन में नहीं राधा प्रेमहि आहि ॥
 गोपी गण मधि रास सुख नृत्य मंडली त्यागि । राधा हित बन बन फिरे करि विलाप दुख पागि ॥

तथाहि गीतगोविन्दे—

कंसारिरपि संसारवासनावद्धृत्खलां । राधामायाय हृदये तस्याज व्रजसुन्दरीः ॥

तथाहि तत्रैव—

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनंगंवाणव्रणस्त्रिन्न मानसः ।

कृतानुतापः स कलिन्दनन्दिनीतटान्तकुञ्जे विपसाद माधवः ॥

अर्थ सुइनि विवि पद्य कौ जानै किये विचार । किये विचार उठे मनौ अमृतखानि रस सार ॥
 सत कोटिक गोपीन संग करैं जु रास विलास । तिनि मधि एक जु मूर्ति तिहि रहै जु राधा पास ॥
 साधारण प्रेमा सु लखि सब ठां समता जोय । कुटिल प्रेम राधा जु कौ भयौ वक्र अति सोय ॥

तथाहि उज्ज्वलनीलमणौ—

अहेरिवगतिः प्रेम्णः स्वभावकुटिला भवेत् । अतोहेतोरेहेतोश्च यूनोर्मान उदञ्चति ॥

गई रास तजि क्रोध करि प्रेम मान धरि हीय । तिन्हें न देख्यौ ह्यां भये हरि अति व्याकुल जीय ॥
 सम्पक सार सुवासना रास जु इच्छा ताहि । एक राधिका शृङ्खला तिही चाहि की आहि ॥
 तिन विन लीला रास जो भावै नहि चित चेत । रास मंडली तजि गये राधा दूढ़न हेत ॥
 जहां तहां कीनो भ्रमण कहूँ न पायौ ताहि । मदन वान करि खौन है करै विषाद जु आहि ॥
 शत कोटिक गोपीन करि सांत होय नहि काम । याही तें अनुमानियै राधागुण अति वाम ॥
 कहैं जु प्रभु याही लियें हों आयौ तुम पास । सबै वस्तु कौ तत्व जो सब जान्यौ अनयास ॥
 अब ही जान्यौ है हमनि सेव्य साध्य निरधार । औ आगै कछु सुनन कौ मम हिय चाह अपार ॥
 कहौ स्वरूप जु कृष्ण कौ औ राधाहि स्वरूप । कौन तत्व रस प्रेम कौ कौन तत्व है रूप ॥
 एई तत्व कृपाहि करि कहौ जु हम सौ आहि । तुम विन कोऊ कहन कौ नहि समर्थ है याहि ॥
 राय कहै जाने जु हम रंचक हू नहि याहि । जो जू तुम कहवाय हौ कहैं वाक मम ताहि ॥

तुम सिच्छा करि हौं पदों ज्यों सुरु पाठ जु होय । ईश्वर तुम साक्षात् हौ लहै नाख्य तुव कोय ॥
 हृदय प्रेरि करि जीभ हूँ वचन कहावौं जोय । कहियै कहा भलौं बुरौं कछु नहि जानत सोय ॥
 हम संन्यासी प्रभु कहै मायावाद प्रधान । मायावाद बहैन हम भक्ति तत्व कौ ज्ञान ॥
 सार्वभौम के संग मम मन निर्मल भो आहि । कृष्ण भक्ति तत्वहि कहौ यों हम पूछ्यौ ताहि ॥
 कृष्ण कथा जानें न हम कहौ तिन्हौं जोय । रामानंद जानैं सबै इहां नाहि है सोय ॥
 तुम महिमा सुनि कै जु हौं तुम पै आयौ जोइ । स्तुति मेरी तुम करौ श्रीपाद जानि कै सोइ ॥
 कहा विप्र दंडी कहा सूद्र होहु किन जोय । जोई कृष्ण जु तत्व कौ ज्ञाता है गुरु सोय ॥
 संन्यासी करि कै जु मम करौ न बंचन सोइ । राधा कृष्ण जु तत्व करि पूर्ण करौ हिय जोइ ॥
 यदपि राय प्रेमी बडे महा भागवत आहि । सकैं न माया कृष्ण की आवृत करि मन ताहि ॥
 तऊ जु इच्छा कृष्ण की परम प्रबल है जोय । जानन हित मन राय कौ चंचल भयौ जु सोय ॥
 राय कहैं हम नट जु हौं सूत्रधार तुम सांच । ज्यों जाकौ जु नचाय हौं सो नचि है तिहि नाच ॥
 यहै जोय मम वीन तुम वीणाधारी याहि । जोई कछु तुम हृदय मधि उठि है गाय जु ताहि ॥
 परम ईश्वर जु कृष्ण हैं आप स्वयं भगवान । अवतारी हैं सवनि के औ कारण जु प्रधान ॥
 श्री वैकुण्ठ अमृत अरु जे अनन्त अवतार । औ अनंत ब्रह्मांड इन सब के हैं आधार ॥
 सत चित आनंद तनु सु हैं श्री वृजराज कुमार । सर्वेश्वर्य सु शक्ति सब पूरण सब रससार ॥
 तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः । अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥२६॥

वृन्दावन के नवमदन अप्राकृत जो आहि । स्मरण गायत्री वीज तिहि है जु उपासन ताहि ॥
 पुरुष और युवती तथा धावर जंगम जोइ । सब चित्ताकर्षक प्रगट मन्मथमन्मथ सोइ ॥
 तथाहि श्री भागवते—सात्त्वान्मन्मथमन्मथः ॥३०॥

नाना भक्तनि रस अमृत नाना विधि है जोय । तिन सब ही रस अमृत के विषय आश्रय सोय ॥
 तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

अखिलरसामृतमूर्तिः प्रसृमरुचिरुद्धतारकापालिः । कलितश्यामाललितो राधाप्रेयान् विधुर्जयति ॥३१॥

है रस राज शृंगार मय मूरति धरै जु सोय । याही तें सब चित हरे आपुन हनौं जोय ॥

तथाहि गीत गोविंदे—शृंगारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥३२॥

लक्ष्मीकांत हि आदि दै है अवतार जु जोय । तिन सब ही कौ मन हरै कछौ भागवत सोय ॥

तथाहि दशमे—

द्विजात्मजा मे युवयोर्दिदृच्छुणा मयोपनीता भुवि धर्मगुप्त्रये ।

कलावतीर्णाविवनेर्भरासुरान् हत्वेह भूयस्तरयेतमन्ति मे ॥ ३३ ॥

विष्णुकांता आदि दै नारी गण है जोय । करें जु निज माधुर्य करि आकर्षण सब सोय ॥
 तथाहि तत्रैव—यद्वाञ्छया श्रीललनाचरत्तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥ ३४ ॥
 हरे जु निज माधुर्य करि अपनों ही मन जोय । आलिंगन चाहै कियौ अपनौ आपुहि सोय ॥
 तथाहिललितमाधवे—

अपरिकलितपूर्वः कश्चमत्कारकारी स्फुरति मम गरीयानेष माधुर्यपूरः ।

अयमहमपि हन्त प्रेक्ष्य यं लुब्धचेताः सरभसमुपभोक्तुं कामये राधिकेव ॥३५॥

यही कछौ श्रीकृष्ण कौ करि संक्षेप स्वरूप । सुनौ कहैं संक्षेप करि राधा तत्व अनूप ॥
 शक्ति अनंत जु कृष्ण की तिनमें तीनि प्रधान । चिच्छक्ति जु माया सकृति जीव शक्ति इक जान ॥
 अंतरंग बहिरंग पुनि औ तटस्था सोइ । इन तीनन के कहत है तीन नाम ये जोइ ॥
 अंतरंग जिहि नाम है सो है सक्ति स्वरूप । सब शक्तिन की मुकुटमणि जो है परम अनूप ॥
 तथाहि विष्णुपुराणे

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा । अविद्या कर्मसंज्ञान्या तृतीया शक्तिरीष्यते ॥३६॥

है स्वरूप श्री कृष्ण कौ सतचित आनंद जोय । है स्वरूप शक्ति हि जु के तीन रूप यौ सोय ॥
 हर्ष अंस आल्हादिनी संधिनि है सत अंस । चित अंस संवितु सु जिहि होय ज्ञान परसंस ॥
 तथाहि तत्रैव—

ल्हादिनी सन्धिनी सन्वित् त्वय्येका सर्वसंश्रये । ल्हाद तापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्जिते ॥३७॥

आल्हाद है श्री कृष्ण कौ नाम ल्हादिनी ताहि । आस्वाद सुख आप हरि तिही सक्ति है आहि ॥
 सुख स्वरूप श्री कृष्ण जू आस्वाद सुख ताहि । भक्तनि के सुख दें कौ ल्हादिनि कारण आहि ॥
 ल्हादिनि कौ सारांस जो प्रेम नाम तिहि जान । आनंद चिन्मय रस जु है प्रेमा कौ आख्यान ॥
 परम सार जो प्रेम कौ महाभाव तिहि जान । श्री राधा सोई महाभाव रूप गुण खान ॥
 तथाहि उज्ज्वलनीलमणौ—

तयोरप्युभयोर्मध्ये राधिका सर्वथाधिका । महाभावस्वरूपेयं गुणैरति वरीयसी ॥ ३८ ॥

प्रेमा कौ जु स्वरूप वपु प्रेम विभावित ताहि । कृष्णप्रेयसी श्रेष्ठ सब जगत विदित है आहि ॥
 तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

आनन्दचिन्मयरस प्रतिभाविताभिस्ताभि र्य एव निजरूपतया कलाभिः ।

गोलक एव निवसत्यखिलात्मभूतो गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ ३९ ॥

महाभाव सोई जु है चिंतामणि गण राज । पूरण ईछा कृष्ण की करें यही जिहि काज ॥
 महाभाव चिंतामणि सु राधा कौ जु स्वरूप । ललितादिक सहचरी तिहि कायव्यूह जु रूप ॥
 कृष्ण नेह राधा जु प्रति उवटन अंग सु बास । प्रति सुगंध तातें जु वपु उज्ज्वल किरण प्रकास ॥

कारुण्यामृत धार कौ स्नान प्रथम किय आहि । तारुण्यामृत नदी कौ स्नान द्वितीय निज ताहि ॥
लावण्यामृत पूर मधि ताऊ पर सुस्नान । निज लज्जा स्यामहि करण पट सारी परिधान ॥
श्री अनुराग जु कृष्ण कौ अरुण वसन विवि सोइ । प्रणयमान उर कंचु की आछादन है जोइ ॥
सौन्दर्य सुकुंकुम सखी प्रणय सु चंदन आहि । स्मित सोभा व कर्पूर त्रय अंग विलेपन ताहि ॥
उज्ज्वल रस श्री कृष्णकौ मृग मद भरहै सोय । सबै विचित्रित अंग तिहिं तिही सु मृग मद होय ॥
बाम्भमान प्रच्छन्न है केश पास विन्यास । धीराधीरात्महि जु गुण वहै अंग पटवास ॥
रागहि धीरा रंग करि अधर मधुर अति लाल । प्रेम कुटिलता नेत्र युग अंजन परम रसाल ॥

कवित्त—

सुदीप्त सात्विक भाव हर्षादि संचारी येई सब भाव अंग सबै भूषण उजास है ।
किलिकिंचितादि भाव विंशति भूषित सदा गुण गन फूल माला अंगनि प्रकास है ।
अलक तिलक चारु उज्ज्वल सौभाग्य प्रेमवैचित्य रत्न तरल हिये छवि रास है ।
मध्यावय धितिसोई सखी स्कंध करन्यास कृष्णलीला मनोवृत्ति आली आसपास है ॥
सौरभ निवास निज अंगनि सौभाग्य गर्व पलका विराजि सदा चाहै कृष्ण संग है ।
कृष्णनाम गुण जस तेई श्रवणावतंस कृष्ण नाम गुण यश वचन तरंग है ।
कृष्ण कौ करावै स्याम रस मधु पान सदा पूर्ण करै कृष्ण के जु सबै काम रंग है ।
कृष्ण कौ विशुद्ध प्रेम रतन तिहिं आकर है अनुप गुणगण पूर्ण सर्व अंग है ॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

का कृष्णस्य प्रणयजनिभूः श्रीमती राधिकैः, कास्य प्रेयस्यनुपमगुणा राधिकैका न चान्या ॥
जैह्वयं केशे दृशि तरलता निष्ठुरत्वं कुचेऽप्या, वाञ्छापूत्र्यं प्रभवति हरे राधिकैका न चान्या ॥

जिनके गुण सौभाग्यकौ सत्यभामा हिय काम । जिनपै कला विलास सब सीखैं ब्रज की वाम ॥
बांछै श्री गिरिजा गुणहि सौन्दर्यादिक जाहि । बांछै सदा अरुंधती धर्म पतिव्रत ताहि ॥
जिनके सद्गुण गुणनि कौ कृष्ण न पावै पार । कैसें तिहि गुणगणि सकैं जीव तुच्छ अतिसार ॥
बोले प्रभु जान्यौ जु हरि राधा प्रेमहि तत्व । चाहैं सुन्यौ दुहुनि कौ है जु विलास महत्त्व ॥
राय कहैं श्री कृष्ण जू धीर ललित हैं आहि । क्रीडा काम निरंतर हि यहै चरित है ताहि ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

विदग्धो नवतारुण्यः परिहासविशारदः । निश्चिन्तो धीरललितः स्यात्प्रायः प्रेयसीवशः ॥

कुंजनि क्रीडा रेन दिन श्री राधा के संग । सफल करैं कैशोर बय विविध विलासनि रंग ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

वाचा सूचितशब्दवरी रतिकला प्रागल्भ्यया राधिकां, व्रीडाकुञ्चितलोचनां धिरचयन्तप्रे सखीनामसौ ॥
तद्वत्तोरुहचित्रकेलिमकरीपाण्डित्यपारं गतः, कैशोरं सफली करोति कलयन् कुञ्जे विहारं हरिः ॥

कहैं महा प्रभु है यही आगें कहौ जु सोय । राय कहैं याते परें मम बुधि गति नहि जोय ॥
अरु है प्रेम विलास कौ इक विवर्त्त जो आहि । हर्ष होय कै होय नहि तुम्हरे सुनै जु ताहि ॥
ऐसैं कहि अपनौ कियौ गायौ इक पद जोय । प्रभु निज कर तिहि मुख ढकौ प्रेमावेशित होय ॥
प्रथमहि राग भयौ दग सेन ।

सो अनुदिन बाढ्यौ री सजनी अवधि न गो दुख दैन ॥
सो न रमन अरु हम नहि रमनी दुहुं मन मनसिज पीस्यौ आहि ।

हे सखी ये सब प्रेम कहानी भूले हरि अब कहियौ ताहि ॥
नही जतन कीनौ दूती कौ नहि जान्यौ अरु कोये ।

यहूँ मिलन मध्यस्त भयौ इक पंच वाण ही सोय ॥
तुहूँ मिली दूती अब जब तिन्हौं तजी हियें तैं प्रीति ।

उत्तम पुरुष प्रेम की सजनी है कहा ऐसी रीति ॥

तथाहि उज्ज्वल नीलभणौ—

राधाया भवतश्च चित्तजतुनी स्वैर्देर्विलाप्य क्रमाद्, युञ्जन्नद्रिनि कुञ्जकुञ्जरपते निर्धूतभेद भ्रमं ।

चित्राय स्वयमन्वरञ्जयदिह ब्रह्माण्डहर्म्योदरे, भूयोभिर्नवरागहिगुलभरैः शृंगारकारुः कृती ॥

साध्य वस्तुकौ अवधि यह है प्रभु कहैं जु आहि । जान्यौ हमतुम कृपा करि निहिचैं करि कै ताहि ॥
साध्य वस्तु साधन विना नाहिन पावै कोय । इहि पैवै जु उपाय तुम करौ कृपा करि जोय ॥
राय कहैं जु कहा यहाँ कहि हैं बाणी सोय । कहिये कहायहै जु हम जानत नहि कछु जोय ॥
ऐसौ धीर महा बडौ त्रिभुवन में है कोय । तुम माया के नाख मधि होइ न चंचल जोय ॥
मेरे मुख वक्ता जु तुम तुम ही श्रोता जोय । साधन की जु सुनौ कथा अति रहस्य है सोय ॥
लीला राधाकृष्ण की अति निगूढ तर सोय । वात्सल्यादिक भाव कहि नहि गोचर है जोय ॥
एक सखीगण कौ जु है सब में ह्यां अधिकार । होत सखी ही तैं जु इह लीला कौ जु विस्तार ॥
एक सखीगण विन जु यह लीला पुष्ट न होय । विस्तारै लीला सखी आस्वादैं ऊ सोय ॥
तिहि लिला मधि सखी विन नही अन्य गति जोय । तिनहीकी अनुगति करैं सखी भाव जो होय ॥
दंपति सेवा कुंज की साध्य पाय है सोय । पैवै कौ तिहि साध्य के नहि उपाय अरु कोय ॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

विभुरपि सुखरूपः स्वप्रकाशोऽपि भावः, क्षणमपि नहि राधाकृष्णयो र्या ऋते स्वाः ।

प्रवहति रसपुष्टिं चिद्विभूती विवेश, श्रयति न पदमासां कः सखीनां रसज्ञः ॥

एक स्वभाव सखीनको अकथ कथा तिहि आहि । निज लीला श्रीकृष्ण संग सखि मन चहै न ताहि ॥
करवावैं जो कृष्ण संग राधा लीला आहि । निज लीला हूं ते लहै कोटि गुणो सुख ताहि ॥
कल्पलता हरि प्रेम की राधा कौ जु स्वरूप । सखि गण तिहि पल्लव सुवन ऐहैं पत्र अनूप ॥
लीलामृत करि जव तिन्हैं सीचै लता जु सोय । निज सींचन हूं ते तिन्हैं कोटि गुणो सुख होय ॥
तथाहि तत्रैव—

सख्यः श्री राधिकाया ब्रजकुमुदविधोर्हार्दिनी नाम शक्तेः ।
सारांशप्रेमवल्लयाः किसलयदल पुष्पादितुल्याः स्वतुल्याः ।
सिक्तायां कृष्णलीलामृतरसनिचयैरुल्लसन्त्याममुष्यां
जातोल्लासाः स्वसेकाच्छतगुणमधिकं सन्ति यत्तन् चित्रम् ॥

जदपि सखिन कौ कृष्ण के संगम मधि नहि रंग । तऊ जतन करि राधिका करवावैं तिहि संग ॥
हरि हि प्रेरि नाना छलहि करवावैं तिहि संग । होय जु निज हरी संगतें कोटि कोटि सुख रंग ॥
सुद्ध प्रेम करि परसपर करैं जु रस कौ पुष्ट । तिन सबके प्रेमहिलखि जु कृष्ण होय अति तुष्ट ॥
सहज प्रेम गोपीनको है नहि प्राकृत काम । काम क्रिया सम ताहि करि कहैं काम तिहि नाम ॥
तथाहि गोतमी तन्त्रे—

प्रेमैव गोपरामाणां काम इत्यगमत्प्रथां । इत्युद्धवादयोऽप्येतं वाञ्छन्ति भगवत्प्रियाः ॥
तात्पर्य है काम कौ निज इंद्रिय सुख हेत । अभिप्राय कृष्ण सुख कौ गोपिन भाव अहेत ॥
निज इंद्रिय सुख चाह नहि गोपिनको निरधार । श्री कृष्ण हि सुख देन हित करैं जु संग विहार ॥
तथाहि दशमे—

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधिमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्वयथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषांतः ॥

लोभ जु ताही गोपिका भावामृत कौ जाहि । वेद धर्म सब छाडि सो कृष्ण हि भजि है आहि ॥
रागानुगा जु मार्ग करि तिन्हैं भजै जन जोड़ । श्री ब्रजराज कुवार कौ ब्रज में पैहैं सोय ॥
भजै सु जो ब्रजलोक कौ लैकैं कोऊ भाइ । ब्रज में पावैं कृष्ण सो भाव जोग्य वपु आइ ॥
तथाहि भागवते—

निश्चुतमरुन्मनोऽज्जहदयोगयुजो हृदि यन्मुनय उपासते तदरयोऽपि ययुः स्मरणान् ।

स्त्रिय उरुगेन्द्रमोगभुजदण्डविपक्तधियो वयमपि तेऽसमाः समदृशोऽग्निसरोजमुधाः ॥४७॥

सम दृश शब्द कहैं जु तिहि भावजु अनुगत आहि । गोपीगण प्रापति कहैं समा शब्द श्रुति ताहि ॥
अग्नि सरोज मुधा कहैं कृष्ण संग आनन्द । विधि मारग पैये नहीं ब्रज में श्री नन्दनंद ॥
तथाहि तत्रैव दशमे—

नाथं सुखायो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः । ज्ञानितान्वात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥

यातें गोपीभाव कौ करि कै अंगीकार । करैं चितवन रैन दिन राधा कृष्ण विहार ॥
सिद्ध देह निज चित करि करैं जु सेवन ताहि । सखी भाव करि पायहैं जुगल चरण सो आहि ॥
गोपिन की अनुगति बिना करि जु ईशता ज्ञान । भजन किये हुं ना मिले ब्रजनृपसुत रस खानि ॥
है लक्ष्मी दृष्टांत तिहि कियौ भजन बहु आहि । ब्रज में श्री ब्रजराज सुत पाये तऊ न ताहि ॥
तथाहि तत्रैव—

नाथं श्रियोऽगुत नितान्तरतेः प्रसाद इति ॥

यह सुनि कें प्रभु जू कियौ तब आलिंगन ताहि । दोऊ जन हिय लागि कैं कंदन कियौ जु आहि ॥
इहि विधि प्रेमावेश करि करी विनीति जु राति । निज निज कारजकौ गये दोऊ भये प्रभाति ॥
विदा समैं प्रभु के चरण धरि कैं भरे जु भाय । कहैं जु करि कैं वीनती श्री रामानंद राय ॥
मो पै करिवैं कृपा प्रभु किय आगमन सोय । दिन दस रहि सोधौ जु मम यहै दुष्ट मन जोय ॥
तुम बिन जीव उधार हित और नहीं जग मांहि । कृष्ण प्रेम निज देंकौ तुम बिन और जु नाहि ॥
गौर कहै आयौ जु हौं सुनि तुम गुण अभिराम । सुनि कें कृष्ण कथा मनहि सुद्ध करैव काम ॥
जैसी तुव महिमा सुनी तैसी लखी जु आहि । जुगल प्रेम रस ज्ञान जो सीमा तुम हौ ताहि ॥
कहा कथा दस द्यौस की जव लगि जीवौ होय । तब लगि तुम्हरो संगहौं छाडि सकौं नहि सोय ॥
लीलाचल मधि रहेंगे हम तुम एकहि संग । करिहैं काल वितीति मिलि कृष्ण कथा के रंग ॥
ऐसै कहि दोऊ गये अपने अपने काज । संध्या समय जु आय फिरि मिले राय सुख साज ॥
दोऊ वैठि एकांत मधि मिलि जु परस्पर सोइ । प्रश्नोत्तर वार्ता करैं अति आनन्दित होइ ॥
प्रभु पूछें उत्तर करैं रामानंद जु आहि । कथा परस्पर रस मई इंदी भांति निसि ताहि ॥
गौर कहैं विद्यानि में विद्या सार जु कोय । राय कहैं हरि भक्ति बिन विद्या और न होय ॥
कीरति गण मधि जीवकी कौन कीर्ति बड आहि । कृष्णहि प्रेमी भक्त कहि यहै ख्यात है जाहि ॥
सब सम्पति मधि जीव कैं संपति गणियै काहि । बडौ धनी कहियैं वही जुगल प्रेम धन जाहि ॥
दुःखनि मधि को दुःख है महा बडौ निरधार । कृष्ण भक्त के विरह बिन और न दुःख अपार ॥
मुक्तिनि मधिको मुक्ति करि गणिए जनसो कोइ । जिहि प्रेमा श्रीकृष्ण मधि मुक्ति सिरोमणिसोइ ॥
सो०—गाननि मधि है गान कौन धर्म निजजीव कौ । सोई गान प्रधान प्रेम केलि जो युगल की ॥
श्रेयनि के मधि जीव कौ कौन श्रेय है सार । कृष्ण भक्त संग बिनु नहीं और श्रेय निरधार ॥
सुमिरन करैजु कौन कौ अनुलिन जीव अजान । कृष्ण नाम लीलागणनि सुमिरण है जु प्रधान ॥
धेयनि मधि को जीव कौ हौ कर्त्तव्य जु ध्यान । जुगल चरण पंकजनि कौ ध्यान वही जु प्रधान ॥
सब तजि कैं कर्त्तव्य है कहां जीव कौ वास । श्री ब्रज वृन्दावन जहां है निज लीला रास ॥
सब ही श्रवनिनि के जु मधि मुख्य श्रवन है कोय । प्रेम जु लीला जुगलकी कर्ण रसायन होय ॥
कहौ उपास्यनि मध्य है कौन उपास्य प्रधान । नाम जु राधाकृष्ण जुग मुख्य उपास्य निदान ॥

मुक्ति भुक्ति चाहै सु जे गतिजु दुहुनि की कोइ । थावर देव सु देह की ज्यों जु अवस्थिति होइ ॥
नीरस वायस चाखई ज्ञान नीव फल भाइ । प्रेम रसालहि मुकुल कौ रसिक सुकोकिल खाय ॥
सुस्क ज्ञान आस्वादई ज्ञानी नर बिन भाग । कृष्ण जु प्रेमाभूत पिये भाग्यवान करि राग ॥
इही भांति दोऊ जनहि कृष्णकथा आवेस । नृत्य गीत रोदन जु करि भयौ रेनि कौ सेस ॥
अपने अपने काज हित दोऊ चले विहान । संध्या समय जु राय जू मिले आप दिन आन ॥
प्रिय चर्चा कृष्णहि कथा करि कोऊ छिन आहि । प्रभु के पद धरि राय जू करै निवेदन ताहि ॥
तत्व जु राधा कृष्ण कौ प्रेम तत्व कौ सार । रस तत्व जु लीलानिकौ तत्व अनेक अपार ॥
इते तत्व मम हृदय मधि कीने तुमहि प्रकास । वेद पढ़ाये अजहि ज्यौ नारायण प्रभु तास ॥
अंतर्यामी ईस ज्यौ यहै रीति हैं तास । बाहिर कहै न वस्तु कौ हिय मधि करै प्रकास ॥
तथाहि भागवते—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरत आर्थेष्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ।
तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृता धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यंपरं धीमहि ॥

बडौ एक अचिरज भयौ मेरे हिय मधि आहि । कहौ कृपा करि कै जु तुम मोसौं निहचै आहि ॥
पहिले देख्यौ प्रभु तुमै सन्यासी के रूप । अब तुम कौ देख्यौ जु हौं स्याम गोप के रूप ॥
तुम सन मुख लखियै जु इक सुवरन प्रतिमा आहि । तुम स्वरूप महिमा ढकी गौर कांति करि ताहि ॥
वदन सु बंसी मात्र इक लखियै तिनकौं आहि । चंचल नाना भाव करि कमल नयन पुनि ताहि ॥
इही भांति तुम कौ निरखि चमत्कार भौ आहि । कपट छाडि प्रभु जु कहौ जो है कारण याहि ॥
कहै जु प्रभु तुव कृष्ण मधि गाढ़सु प्रेमा आहि । यहै सुभाव सु प्रेम कौ जानौं निहचै ताहि ॥
महाभागवत ज्यौं लखै थावर जंगम मांदि । इष्ट देव अपनौ फुरै सब ठां ताकौ आहि ॥
तथाहि तत्रैव—

सर्वभूतेषु यः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः । भूतानि भगवत्प्राप्त्यात्मन्येव भागवतोत्तमः ॥

तथाहि तत्रैवदशमे—

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यख्ययन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।

प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवो ववृषुः स्म ॥

श्रीयुत राधाकृष्ण मधि महाप्रेम तुव जोइ । राधाकृष्ण फुरै तुमै देखौ जोई सोइ ॥
राय कहै प्रभु तजौ तुम टारी टोरी याहि । मम आगे निज रूप की करौ न चोरी आहि ॥
श्री राधा कौ भाव द्युति करि कै अंगीकार । निज रस के आस्वाद हित कीनौ है अवतार ॥
निज निगूढ़ है कार्य तुव प्रेमास्वादन जोय । अनुसंगिक सब प्रेम मय कीनौ त्रिभुवन सोय ॥
प्रभु आपुन आये जु तुम मम करिवे उद्धार । करौ कपट अब कौन यह है तुम्हरो व्यहार ॥
तिन्है दिखायौ तबहि प्रभु हसि अपनौ जु स्वरूप । महाभाव रसराज विवि मिलि कै एकहि रूप ॥

भये सु आनंद मूरछित लखि रामानंद जोय । सकै न धरि वै देह कौ परे भूमि मधि सोय ॥
प्रभु तिनकौं करसौं परसि कीनौं चेतन आहि । तव संन्यासी वेप लखि विस्मित भौ मन ताहि ॥
आस्वासन प्रभु जू कियौ करि आलिंगन ताहि । तुम बिन कोऊ जन नही देखै रूपहि याहि ॥
लीला रस कौ तत्व मम तुव गोचर सब जोय । याही तें यह रूप हम तुम्हें दिखायौ सोय ॥
राधा अंगस्पर्श मम गौर देह नहि जोय । तेऊ ब्रज नृप सुत बिना नहि देखै जन कोय ॥
भावित करि तिहि भाव कौ हौं आत्मा मन जोय । करौ कृष्ण माधुर्यरस तव आस्वादन सोय ॥
तुम सौं नहि कछु ही दुर्यौ है जु हमारौ कर्म । कियौ गोप्य हूँ प्रेम बल जानत तुव सब मर्म ॥
यहै राखियौ गुप्त करि कीजौ कहूँ न प्रकास । हम वौरनि की क्रिया कौं करै लोक उपहास ॥
हम इक वौरा और तुम दूजौं वौरा जोय । याही ते सम तूलता है हम सौं तुव सोय ॥
इही भांति रजनी जु दस श्री रामानंद संग । सुख सौं करी वितीति प्रभु कृष्ण कथा के रंग ॥
अति निगूढ़ ब्रज कौ जु रस लीला कौ जु विचार । किय अनेक ते कौं तऊ पायौ नही जु पार ॥
तांम्र कांस्य रु रजत रतन चिंतामणि सुख दानि । कोऊ जन जैसैं कहूँ गडी लहै इक खानि ॥
क्रम करि खोदत ज्यौं लहै उत्तम वस्तु हि जोय । तैसैं प्रश्नोत्तर कियौ प्रभु रामानंद सोय ॥
राय पास तें और दिन विदा जु मागी आहि । विदा समै प्रभु जू यहै आज्ञा दीनी ताहि ॥
विषय छाडि कै तुम चलौ श्री लीलाचल ताहि । हम तीरथ करिकें तहां वेगहि ऐहैं आहि ॥
दोऊ जन लीलाचलहि रहि हैं एक हि संग । सुख सौं समै विताय हैं कृष्ण कथा के रंग ॥
एतक कहि रामानंदहि करि आलिंगन आहि । कियौ गमन प्रभु जू तव घर पठाय कै ताहि ॥
प्रात समैं उठि कै जु प्रभु लखि कै श्री हनुमान । नमस्कार करि कै तिन्है दक्षिण कियौ प्रयाण ॥
नाना मत जन जन बसै विद्यापुर मधि जोय । प्रभु दरसन भौ वैष्णवनि निज निज मत जिहि सोय ॥
विहवल भौ प्रभु के विरह श्री रामानंद जोय । रहे जु प्रभु के ध्यान मधि सकल विषय तजि सोय ॥
मिलनजु रामानंदकौ कहौ कछु करि सार । सहस वदन कहि सके नहि करिकें तिहि विस्तार ॥
चरित महाप्रभु सहजहि धन पय पूर सु आहि । भाग्यवान सोई करै जो आस्वादन ताहि ॥
श्रवण द्वार हैं पिये जो एक बार जिहि आहि । श्रवणजु ताके लोभ करि छाडिसकै नहि ताहि ॥
सब तत्त्वनि कौ ज्ञान सो याके सुने जु होय । चरण कमल मधि जुगलकें प्रेम भक्ति तिहि होय ॥
गूढ़ तत्व चैतन्य कौ यातैं जानै जोय । करि विश्वास सुनौ करै नही तर्क हिय होय ॥
लीला परम निगूढ़ यह है जु अलौकिक सोय । यह विश्वास हि पाइयै दूर तर्क करि जोय ॥
नित्यानंद चैतन्य जू श्री अद्वैत जु आहि । जाकौ ए सर्वस्व है इह धन मिलै जु ताहि ॥
श्री रामानंद राय कौ कोटि प्रणति मम आहि । रस कौ किय विस्तार प्रभु वदन कमल करि ताहि ॥
दामोदर जु स्वरूप के पत्रन के अनुसार । लीला रामानंद मिलन ताकौ कियौ प्रचार ॥

श्री जु रूप रघुनाथ के चरणन की जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सो लिखै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां श्रीरामानन्द संगमो नामोऽष्टमोऽध्यायः ॥

नवम परिच्छेदः

नानामतग्रहस्तान् दक्षिण्यात्यजनद्विपान् । कृपारिणा विमुच्यैतान् गौरश्चक्रे सर्वैष्णवान् ॥

जय जय जय श्री गौर विभु जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांशु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ॥
श्री प्रभु कौ दक्षिण गमन अति सु विलक्षण सोय । सहस्र सहस्र तीर्थ कौ की जै दरसन जोय ॥
जे ई सब तीर्थ परसि महातीर्थ किय सोय । तिहि छल करि तिहि देस के जन निस्तारे जोय ॥
तिन सब तीर्थकौ जु क्रम कहत सकौहौं नाहि । दक्षिण दिस तीर्थनि तिहि गमन गतागत माहि ॥
नाम मात्र याही जु तैं करियै लिखन सु आहि । करिये नाहि समर्थ हो यथा अनुक्रम ताहि ॥
पूर्व रीति पथ चलत जे पावै दरसन ताहि । जाही ग्राम रहैं प्रभु वही ग्राम जन आहि ॥
बासी दक्षिण देस के लोक अनेक प्रकार । कहीं कोउ ज्ञानी दृढ़ पाखंडी जु अपार ॥
प्रभु के दरस प्रभाव करि तेई सब जन आहि । निज निज मत कौ छाड़ि कैं भये जु वैष्णव ताहि ॥
वैष्णव मधि रघुनाथ के सबै उपासक जोइ । श्री वैष्णव कोऊ कहैं तत्व हि बादी कोइ ॥
श्री प्रभु दरस प्रताप तैं भक्त सबै अभिराम । भये उपासक कृष्ण के लेत कृष्ण कौ नाम ॥

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम् । कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव रक्त माम् ॥२॥
इही पद्वय कौ पढ़त पथ किय पयान प्रभु जोय । जाय जु गंगा गौतमी स्नान करयौ प्रभु सोय ॥
मल्लिकार्जुन तीर्थ में देखे जाय महेस । नाम लिवायौ कृष्ण कौ तहां जु लोक असेस ॥
दास राम त्रिपुरारि कैं करिकें दरसन ताहि । अहोवल नरसिंह कौ कीनीं गमन जु आहि ॥
लखि के श्री नरसिंहकौ नुति स्तुति करीजु ताहि । गये सिद्ध बटकौ तहां श्री सीतापति आहि ॥
लखिकें श्री रघुनाथकौ करी प्रणति स्तुति ताहि । तहां एक द्विज ने कियौ प्रभुकौ न्यौतौ आहि ॥
सोई विप्र निरंतर हि लेत राम कौ नाम । बानी अन्य कहै न विन राम नाम अभिराम ॥
सोई दिन तिहि घर रहे भिन्ना करि कैं आहि । गौर हरि आगे सु चले करि कैं कृपा जु ताहि ॥
स्कन्दचेत्र तीर्थ तही स्कन्द दरस किय सोय । त्रिमठ तीर्थ मधि जायकें लखैं त्रिविक्रम जोय ॥
आये फेरि जु सिद्ध बट तिही विप्र के गेह । सोई विप्र सु कृष्ण कौ नाम हि लेत अछेह ॥
भिन्ना करिकें महाप्रभु कीनीं प्रश्न जु ताहि । कहाँ विप्र इह तुव दसा भई कहा पुनि आहि ॥
प्रथम निरंतर कहत हे राम नाम तुम वाम । अब काहे तैं लेत हो सदा कृष्ण कौ नाम ॥

विप्र कहै हेगौ यही तुम दरसन हि प्रभाव । तुमहि देखि मेरो गयौ सब आजन्म स्वभाव ॥
बाल्यावधि मेरे ग्रहण रघुवर नाम अपार । कृष्ण नाम तुम कौ लखैं आयौ एकहि वार ॥
तब ही ते या जीभ मधि वस्यौ कृष्ण कौ नाम । स्फुरत कृष्ण कौ नाम है दुरि गौ नाम सुराम ॥
बाल्य समय ही तैं जु मम है स्वभाव इक सोइ । नामहि महिमा शास्त्र कौ करियै संचै जोइ ॥
तथाहि पद्मपुराणे —

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । इति रामपेदनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥

परब्रह्म ही है जु ये दोऊ नाम समान । और शास्त्र मधि फेरि कछु लखौ विशेष प्रमान ॥
महाभारते—

कृपि भूवाचकः शब्दो एव निवृत्तिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्याभिधीयते ॥

कृष्ण नाम महिमा अतुल यही वाक्य करि आहि । तऊ जु लेय सकौ नहीं सुनौ हेतु अवताहि ॥
इष्ट देव श्री राम जू सुख पायौ तिहि नाम । सुख लहि सोई नाम निसि दिन गायौ अभिराम ॥
स्वयं कृष्ण सोई जु तुम यहै कियौ निरधार । यह कहि विप्र परचौ तहां प्रभु के पद सुख सार ॥
चले महा प्रभु और दिन करिकें कृपा जु ताहि । वृद्ध सुकामी आयकें किय शिव दरसन आहि ॥
चले महाप्रभु तहां तैं गये अग्र इक ग्राम । विप्र समाज हि आय प्रभु तहां करयौ विश्राम ॥
प्रभु प्रभाव करि लोक सब आये दरसन ताहि । लक्षावुद गणना नहीं आवै लोक जु आहि ॥
श्री प्रभु कौ सौन्दर्य लखि अरु तिहि प्रेमावेस । कृष्ण कृष्ण सबही कहैं भौ वैष्णव सब देस ॥
ताकिंक मीमांसक जु गण मायावादी जोय । स्मृति पुराण पातंजलहि संख्यागामी जु सोय ॥
निज निज सास्त्रहि मत सबनि किय उद्ग्राह प्रचंड । सबही मतकौ दूषि प्रभु करै खंड ही खंड ॥
प्रभु वैष्णव सिद्धान्त कौ सब ठां थाप्यौ सोइ । श्री प्रभु के सिद्धान्त कौ सकैं खंडन हि कोइ ॥
हारि हारि सब हि करयौ प्रभु के मतहि प्रवेस । श्रीप्रभु ने इहि भांति सौं किय वैष्णव सबदेस ॥
धाये सुनि पांडित्य प्रभु पाखंडी गण सोय । आये करि कैं गर्व लै संग सिष्य गण जोय ॥
पंडित बौद्धाचार्य अति निज नव मत में जोय । प्रभु आगे उद्ग्राह करि लाग्यौ बोलन सोय ॥
अंस भाष्य बौध सु जदपि दरस अयुक्त जु ताहि । तऊ जु बोले आप प्रभु गर्व खंडिबै आहि ॥
बौध शास्त्र नव मत जिते सब ही तर्क प्रधान । प्रभु ने खंडे तर्क करि सकैं न थापि निदान ॥
बौद्धाचार्य नये जु मत सबै उठाये आहि । तर्क मध्य दृढ़ युक्त प्रभु खंड खंड किय ताहि ॥
पंडित सब ही दार्शनिक लखौ पराजय सोय । लोक हसत सब बौद्ध कैं भई लाज भय जोय ॥
प्रभु कौ वैष्णव जानिकें गयौ बौध घर जोय । सद बौद्धनि मिलि कैं तवै कियौ कुमंत्र जु सोय ॥
महा असुच जो अन्न इकथार माहि करि आहि । प्रभु आगे आन्यौजु कहि विष्णु प्रसाद हि ताहि ॥
महाकाल पत्नी जु इक आयौ तिहि सुकाल । चोंच बीच करि लै गयौ सहित अन्न सो थाल ॥

बौद्ध वृन्द ऊपर परचौ अन्न अमेध्य जु होइ । सिर पर बौद्धाचार्य के परचौ थार वजि सोइ ॥
 तिरछौ परचौ सु थार वह कटि गौ माथौ ताहि । भूमि परचौ है मूरछित बौद्धाचारज आहि ॥
 रोवत हा हा कार करि सबै सिध्यगन ताहि । श्री प्रभु पद कौ शरण लिय सवनि आयकें जाहि ॥
 ईश्वर तुम साक्षात हौ क्षमा करौ अपराध । गुरु जीवै हम सवनि कौ करौ प्रसाद आगाध ॥
 कहैं जु प्रभु सब ही कहौ कृष्ण कृष्ण हरिनाम । गुरु के कान पुकारि कैं कहौ कृष्ण श्री राम ॥
 तब तुम सब कौ गुरु यही है चेतन सोय । सबै बौद्ध मिलि कैं करैं कृष्ण कीरतन जोय ॥
 गुरु के कान कहैं कहौ कृष्ण हरी श्री राम । आचारज चेतन लखौ उद्यौ बोहि हरिनाम ॥
 आचारज मिनती करै प्रभुहि कृष्ण कहि जोय । सकल लोक के देखतें भयौ जु विस्मित सोय ॥
 करि कौतुक इहि भांति सौ सची सनु जु आहि । अंतर्धान करचौ किहू लखौ न दरसन ताहि ॥
 तब त्रिमल्ल त्रिपदी प्रभु चलिकें आये सोय । विष्णु चतुर्भुज जू लखे विकटाद्रि में जोय ॥
 श्री त्रिपदी मधि आय कैं किय दरसन श्री राम । आगै श्री रघुनाथकें किय स्तुति औरु प्रणाम ॥
 करिकें विस्मित लोक सब निज प्रभाव अभिराम । प्रभु पाना नरसिंह तब आये करुणा धाम ॥
 किय नति नुति नरसिंह की प्रेम विवसहैं सोय । प्रभु प्रभाव करि लोककौ चमत्कार भो जोय ॥
 शिवकांचीमें आय किय शिवहि वंदना आहि । निज प्रभाव वैष्णव करैं सबै सैव गण ताहि ॥
 लक्ष्मी नारायण लखे विष्णुसु कांची आय । श्री प्रभुजू करिकें प्रणति कीनी स्तुति बहु भाय ॥
 प्रेम विवसहैं प्रभु करचौ नृत्य गीत बहु सोय । दिनद्वै ही रहि वैष्णवनि कृष्ण भक्त किय जोय ॥
 गौ त्रिकाल हस्ती तलहि तृणामल्ल कौ देखि । महादेव जू कौ निरखि करी प्रणाम विशेषि ॥
 पची तीरथ जाय किय शिव के दरसन जोय । वृद्ध काली तीरथ हि तब किय गमन जु सोय ॥
 लखि कैं स्वेत बराह कौ नमस्कार किय ताहि । शिवस्थान श्वेतांबर हि गए गौर हरि आहि ॥
 भैरव देखि शिवालई कीनौ दरसन ताहि । आये कावेरी तटहि सची सनु जु आहि ॥
 आये वेदारण तहां गो सभाज शिव देखि । महादेव जू कौ लखि तिन किय प्रगति विशेषि ॥
 अमृत लिंग शिव आय कैं करी वन्दना ताहि । सबै शिवालय शैवगण वैष्णव कीनैं आहि ॥
 देवस्थान जु आयकें विष्णु दरस किय जोइ । श्री वैष्णव गण सह तहीं गोष्ठी अनुछिन जोइ ॥
 कुंभ करन की खोपरी लख्यौ सरोवर सोइ । शिव के क्षेत्र हि आय प्रभु निरखे शिव जू जोइ ॥
 पापहि नासक विष्णु के कीनैं दरसन जोइ । श्री रंग क्षेत्रहि तब प्रभु कियौ आगमन जोइ ॥
 कावेरी में न्हाय करि रंगनाथ कौ देखि । मान्यौ आप कृतार्थ प्रभु नुति नति करी विशेषि ॥
 वैकट भट्ट जु नाम है श्री वैष्णव इक जान । तिन प्रभु कौ न्याता कियौ करि कैं बहु सनमान ॥
 भिक्षा तिन्हें कशाय कछु कियौ निवेदन चाय । प्रभु अब चातुर्मास यह पहुच्यौ निकटसु आय ॥
 चातुर्मास रहौ जु मम गेह कृपा विस्तार । कृष्ण कथा कहि करि कृपा करौ मोहि निस्तार ॥

कृष्ण कथा रस करि प्रभु जु रहे गेहमें ताहि । चारि मास प्रभु भट्ट संग सुखसौं वितये आहि ॥
 श्री रंग के दरसन करैं कावेरी में न्हाय । प्रति दिन प्रेमावेस सौं करैं नृत्य बहु भाय ॥
 प्रेमावेस स्वरूप ता लखि कैं सिंगरे लोक । आवैं देखन काज जौ नासै तिहि दुख सोक ॥
 आवैं नाना देस तें लाख लाख नर जोइ । कृष्ण नाम सब ही कहैं श्री प्रभु कौ लखि सोइ ॥
 कृष्ण नाम विन और कछु बोलत नाही कोइ । कृष्ण भक्त सब ही भये लोक चमत्कृत सोइ ॥
 जितेक श्री रंग क्षेत्र मधि वसै विप्रगण आहि । एक एक दिन सवन ही कियौ निमंत्रण ताहि ॥
 एक एक दिन करि भयौ पूरन चातुर्मास । केतिक विप्रनि नहि लखौ भिक्षा कौ दिन तास ॥
 रहै एक तिहि क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मण सोइ । देवालय के मधि करैं गीता पाठहि जोइ ॥
 अष्टादस अध्याय कौ पढ़ै हर्ष आवेस । लोक करैं परिहास कौ पढ़ै असुद्र विसेस ॥
 कोऊ हँसि निन्दा करै तिन हि न मानै सोय । तन्मय हैं गीता पढ़ै आनन्दित मन जोय ॥
 स्वेद कंप पुलकाश्रु तनु जब लगि पठन जु आहि । भयौ महाप्रभु कौ हियौ आनन्दित लखि ताहि ॥
 कहौ महासय विप्र जु श्री प्रभु पूछ्यौ ताहि । कौन अर्थ कौ जानि तुव सुख इतनौ है आहि ॥
 विप्र कहैं मूरख जु मैं सन्द अर्थ नहि ज्ञान । सुद्रासुद्र पढ़ौ तिहि गुरु की आज्ञा मानि ॥
 अर्जुन के रथ के भये कृष्ण सारथी सोय । बैठे सुन्दर स्याम जू कर गहि तोत्रहि जोइ ॥
 करि वो कौ श्री कृष्ण जू अर्जुन हित उपदेस । तितिनही कौ लखि होत है मम आनन्द विशेष ॥
 जब लगि पढ़ौ जु तब लगहि पांऊ दरसन ताहि । याही तें तिहि पाठ कौ तजै न मम मन आहि ॥
 कहैं जु प्रभु तिहि पठन में तुम्हारौ ई अधिकार । तुम ही जान्यौ है यही गीता अर्थ सुसार ॥
 एतिक कहि तिहि विप्र कौ किय आलिंगन सोय । प्रभु के पद धरि सीस मधि विप्र करी स्तुति जोय ॥
 तुम्है देखि दुगुणित भयौ तिनहूँ ते सुख सोइ । तुम प्रभु सोई कृष्ण यौ मम हिय भासै जोइ ॥
 तिहि हिय कृष्ण स्फूर्ति करि निरमल भयौ जु आहि । याही तें प्रभु तत्व सब जान्यौ द्विजवर ताहि ॥
 तबहि महाप्रभु प्रीत सौं कीनौ वरजन ताहि । यही बात नाहिन करौ कहं प्रकास जू आहि ॥
 महाभक्त प्रभु कौ भयौ सोई विप्र जु आहि । चारि मास छाड्यौ नही प्रभु कौ संगनिवाहि ॥
 इही भांति तिहि भट्ट गृह रहे गौर सुख कंद । हांत निरंतर भट्ट संग कृष्ण कथा आनन्द ॥
 लक्ष्मी नारायण भजै श्री वैष्णव भट्ट आहि । प्रभु मन तुष्ट भयौ जु लखि भक्ति निष्ठासु ताहि ॥
 सदा निरंतर संग तिहि भयौ सख्य रस भाव । करैं हास्य परिहास्य कौ दोऊ सख्य सुभाव ॥
 कहैं महाप्रभु भट्ट तुम श्री ठकुरानी सोइ । प्रिय के निति वक्षस्थिती सती सिरोमनि जोइ ॥
 मम प्रभु कृष्ण सु गोप हैं गाय चरावन हार । साध्वी हैं चाहै जु क्यौं तिहि संगम सुख सार ॥
 इही हेत सुख भोग तजि बहुत काल निरधार । लक्ष्मी जू व्रत नेम धरि कीनौ तप सु अपार ॥

श्री भागवते—कस्यानुभावोऽस्य न देव विदमहे तवाग्निरेणु स्पर्शाधिकारः ।

यद्वाञ्छया श्रीलैलना चरत्तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥

भट्ट कहै नारायण जू कृष्ण सु एक स्वरूप । लीला औ वैदग्ध्य पुनि अधिक कृष्ण में रूप ॥
तिहि परमें नहि जात है पाति व्रत कौ धर्म । कौतुक करि लक्ष्मी चहै कृष्ण संग कौ मर्म ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ

सिद्धान्ततत्त्वभेदेऽपि श्रीकृष्ण स्वरूपयोः । रसेनोत्कृष्यते कृष्ण रूप मेवा रसस्थितिः ॥

कृष्ण संग करि पतिव्रतता धर्म नास नहि होइ । अधिक लाभ पुनि पाइयै रास विलास जू सोइ ॥
श्री लक्ष्मी जू विनोदिनी तिहि कृष्णहि अभिलास । याकौ दोस कदा प्रभु करौ क्यौ जू परिहास ॥
कहै जू प्रभु तिहि दोस नहि यह हम जानै जोइ । लक्ष्मी पायौ रास नहि सास्र सुनी यौ सोइ ॥

श्री भागवते—नार्यं श्रियोऽंग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्धोपितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः ।

रामोत्सवेऽप्य भुजदण्डगृहीतकण्ठ कञ्चा शिषां य उद्गात्रजमुन्दरीणाम् ॥

क्यो लक्ष्मी रास न लखौ को इहि कारण आदि । तप करि कैसें कृष्ण कौ पायौ श्रुतिगण ताहि ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

निमृत्तमरुन्मनोचटदयोगयुजो हृदि यन्मुनय उपासते तदरयोऽपि ययुः स्मरणान् ।

मित्रय उरगेन्द्रभोग भुजदण्ड विपक्षधियो वयमपि ते समाः समदृशोऽपि सरोजमुखाः ॥

श्रुति पायौ लक्ष्मी नही ह्यो कारण कहि कोइ । भट्ट कहै ह्यो मम हियौ पैठि सकै नहि सोइ ॥
सुद बुद्धि हम जीव है सहज हि आदि अधीर । ईश्वर की लीला अपार कोटि समुद्र गंभीर ॥
साक्षात् ते कृष्ण तुम जानत हो नित कर्म । जाहि जनावौ सो लखै तुव लीला कौ मर्म ॥
अद्वैत कृष्ण सुभाव इक कहै जू प्रभु जू सोय । करै सदा मायुर्य करि सर्व आकर्षण जोय ॥
ब्रज लोकनि के भाव करि पै है चरण जू ताहि । तिन कौ ईश्वर करि नहीं जानै ब्रज जनआदि ॥
कोऊ तिहि सुत ज्ञान करि करै उलूखल बंध । कोऊ सम्राट् जू ज्ञान करि जीति चहै तिहि कंध ॥
श्री ब्रजेन्द्र नंदन जू करि जानै ब्रज जन ताहि । मनन इही संबंध कौ ईस ज्ञान करि आदि ॥
करै मजन ब्रज लोक के भावहि करिके जोइ । सोई ब्रज में पाई है सुद नंद सुत सोइ ॥

तथाहि तत्रैव—

नार्यं सुखाय भगवान् देहिनां गोपिकामुतः । ज्ञानिनां चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥

श्रुति सबही गोपीन के अनुगत निहचै होय । श्री ब्रज रानी सुत मजै लै तिहि भावहि सोय ॥
व्यूहांतर मधि गोपिका देह लही ब्रज सोय । कृष्ण संग तिहि देह किय रास क्रीड़ा सु जोय ॥
गोप जात श्री कृष्ण जू गोपी प्रेयसी ताहि । देवी अथवा और त्रिय कृष्ण न चाहै आदि ॥
निही देह लक्ष्मी चहै कृष्ण संगमहि सोइ । गोपीरागानुग जू चहै कियौ भजन नहि जोइ ॥
अन्य देह करि नहीं कहै पै यै रास विलास । याने नार्य पदय यह क्यौ जू वेद व्यास ॥
मन में पहिले मट्ट के हुतो एक अभिमान । जानै श्री नारायणहि है जू स्वयं भगवान् ॥

सर्वोपर कचा जू है करियै भजन जू ताहि । श्री वैष्णव कौ भजन यह है सर्वोपरि आदि ॥
यही गर्व ताकौ जू प्रभु करिये खंडन सोइ । परिहास द्वारा इतिक वचन उटाये जोइ ॥
कहै जू प्रभु जू भट्ट तुम करौ न संसय सोइ । कृष्ण स्वयं भगवान् कौ यही स्वभाव जू जोय ॥
है विलास श्री कृष्ण कौ श्री नारायण सोइ । याही तें लक्ष्मी प्रभृति मनाई हरे ते जोइ ॥
तथाहि तत्रैव—

एते चांराकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं । इन्द्रारिच्युतलं लोकं मृदयन्ति कुगे कुगे ॥

कृष्ण असाधारण गुण जू नारायण हू तें जू । याने श्री के कृष्ण मधि तृष्णा अनुजिन में जू ॥
तुम जो पट्ट्यौ जू पय है सोई परम प्रमान । आवे ताही पय में कृष्ण स्वयं भगवान् ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—“सिद्धान्ततत्त्वभेदेऽपि” इत्यादि

कृष्ण स्वयं भगवत्त्व करि हरे रमा मन जोइ । गोपिनु कौ मन हरि सकै नहि नारायण सोइ ॥
दरसाई गोपी गणहि मृति चतुर्भुज जोइ । गोपीनकौ अनुराग नाई तिहि कृष्ण मधि होइ ॥

तथाहि ललित माधव नाटके—गोपीनां पशुपेन्द्रनन्दनजुषो भावस्य कस्तां कुती

विज्ञातुं क्षमते दुरुहपदवी सञ्चारिणः प्रक्रियाम् ।

आविष्कुर्वन्ति वैष्णवीमपि तनुं तस्मिन्मुजैर्जिष्णुभि

शौसां हन्त चतुर्भिरदभुतकचि रागोदयः कुञ्चति ॥

एतिक कहि प्रभु तिहि गरव कीनों चूर्ण बनाय । कहै ताहि सुख देन हित सो सिद्धांत फिराय ॥
दुख नाई मानौ पट्ट जू कीनों हरि परिहास । सुनी शास्त्र सिद्धांत जिहि वैष्णव कौ विश्वास ॥
कृष्ण और नारायण जू ज्यों इक ही जू स्वरूप । गोपी लक्ष्मी भेद नाई है जू एक हि रूप ॥
कृष्ण संग आस्वाद श्री करै गोपिका द्वार । भेद गणत प्रभु तत्व में है अपराध अपार ॥
इक ईश्वर ही भक्त के ध्यानहि के अनुरूप । इक ही विग्रह ते करै नाना आकृति रूप ॥

तथाहि लघुभागवतामृतधृत नारदपञ्चरात्रवचन—

मणिर्यथा विभागेन नील पीतादिभिर्युतः । रूप भेदमवाप्नोति ध्यानभेदात्तथाच्युतः ॥

भट्ट कहै यों हों कहां जीव जू पामर सोइ । कहां जू तुम साक्षात् ही ईश्वर कृष्ण सु जोइ ॥
प्रभुलीला जू अगाध है कछु नाई जानी सोइ । तुम प्रभु नें जोई कही सांची मानी सोइ ॥
मो कौ पूर्ण कृपा करी श्री नारायण आदि । तुव चरणन पायौ दरस कृपा जू करिके ताहि ॥
कही कृपा करि कृष्ण की महिमा मो सों सोइ । जिहि ऐश्वर्य स्वरूप गुण सीमा लहै न कोइ ॥
कृष्ण भक्ति सर्वोपरि जू अब जानी निरधार । किय कृतार्थ मो कौ क्यौ करिके कृपा अपार ॥
एतक कहि भट्ट जू परे श्री प्रभु के पद आदि । श्री प्रभु जू करिके कृपा किय आलिंगन ताहि ॥
चातुर्मास्य जू पूर्ण मो भट्ट हि आज्ञा पाय । श्री प्रभु दक्षिण कौ चले लखिके श्री रंग राय ॥

संग चल्यो सो भट्ट है भवन जात नहिं आहि । प्रभु अनेक करिकें जतन दीनी विदा जु ताहि ॥
 प्रभु वियोग में भट्ट भौ तवै अचेतन सोइ । इही रंग लीला करे शची सुनुजू सोइ ॥
 चलि आये ऋषभाद्रि कौ गौर हरी जु आहि । नारायण कौ देखि कै नुतिनति करी जु ताहि ॥
 परमानंद पुरी तहां रहे जु चातुर्मास । सुनि के श्री प्रभु जू गये पुरी गुसाईं पास ॥
 पुरी गुसाईं के चरण प्रणत करी प्रभु आहि । पुरी गुसाईं प्रेम सौं किय आलिंगन ताहि ॥
 दिन त्रय दोऊ प्रेम मधि कृष्ण कथा के रंग । तिही विप्र गृह में रहे दोऊ एकै संग ॥
 पुरी कहै जैवौ हमें श्री पुरुषोत्तम सोइ । लखि तिहिं जैवौ गौड़ कौ न्हैवौ गंगा जोइ ॥
 कहै जु प्रभु तुम आय हौ फिरि लीलाचल सोइ । सेतुबंध ही तें जु हम वेगि आइ हैं जोइ ॥
 रहौ तिहारे निकट में यह बांछा है सोइ । श्री लीलाचल आय हौ मो पै सदय जु होइ ।
 एतक कहि तिहि पास तें आज्ञा लीनी जोइ । चले जु दक्षिण देश कौ प्रभु जू हरसित होइ ॥
 परमानन्द पुरी तवै चले नीलगिरि धाम । चले चले आये प्रभु श्री शैलहि अभिराम ॥
 तहां रहे द्विज भेष धरि शिव दुर्गा जू सोइ । लखि प्रभु कौ दोऊ न कैं भौ उल्लास जु जोइ ॥
 तीन दिवस भिक्षा दई करि जु निमंत्रण ताहि । दुरि बैठे वार्ता गुप्त कहैं दोऊ जन आहि ॥
 तिन सौं गोष्ठी इष्ट की करी महाप्रभु सोइ । आज्ञा लै आये जु तिहिं काम कोष्ण पुरि जोइ ॥
 आये श्री प्रभु जू जहां दक्षिण मथुरा जोइ । तहां देखि वौ भयौ प्रभु एक विप्र सँग सोइ ॥
 श्री प्रभु कौं तिहिं विप्रनें कियौ निमंत्रण जोय । विप्र विरक्त महाजन जु रामभक्त है सोइ ॥
 कृत माला नदि न्हाय कैं आये घर मधि ताहि । भिक्षाकरिहौं कहा द्विज पाक करौ नहिं आहि ॥
 कहैं महाप्रभु विप्र जू सुनौ महाशय जोय । भौ मध्याह्न जु पाक क्यों भयौ नहीं है जोय ॥
 विप्र कहैं श्री गौर हरि मम बसिबौ वन मांहि । पाक सौंज वन बीच में संप्रति मिलै जु नाहि ॥
 वन्य अन्नफल शाक कछु लै है लक्ष्मण जोय । तब करि हैं श्री जानकी पाक प्रयोजन सोय ॥
 श्री प्रभु तुष्ट भये तहां सुनि उपामना ताहि । अस्त व्यस्त तिहि विप्र नें करी रसोई आहि ॥
 दिन के तीजे प्रहर में प्रभु भिक्षा किय जोय । करैं तहां उपवास कौं है उदास द्विज सोइ ॥
 कहैं महाप्रभु विप्र क्यों तें जु कर्यौ उपवास । काहे एतक दुखित हैं तुम दीसत जु उदास ॥
 कहैं विप्र नहिं काज मम जीवै कौ है सोय । अग्नि अंबु परि वेस करि तजि हौं जीवन जोय ॥
 सीता ठकुराणी महालक्ष्मी जग माता हि । राक्षस ने परस्यो तिहि कान सुनी यह आहि ॥
 ईहिं शरीर के धरण कौं नहिं समर्थ अकुलाय । यही दुख करि जरति है देह प्राण नहिं जाय ॥
 कहैं जु प्रभु इहि भावना करि हौ और न वार । पंडित हैं कैं करत नहिं कहैं तु मंजु विचार ॥
 सीता ईश्वर प्रेयसी चिदानंद तनु आहि । प्राकृति इंद्रिय देखि वे समर्थ नाही ताहि ॥
 रही कार्य तिहि परस कौ लहै न दरसन कोय । माया आकृति सिय हरी दस कंधर नें सोय ॥

रावण आवत जानकी कीनौ अंतर्धान । माया सिय पठई तहां रावण अग्र निदान ॥
 अप्राकृत जो वस्तु है प्राकृत गोचर नाहि । यही निरंतर है कही वेद पुराणन मांहि ॥
 करि कैं तुम विश्वास कौं वचन हमारे माहि । कवहुं फेरि कुभावना मन में करि हौ नाहि ॥
 श्री प्रभु जू के वचन तें कियौ विप्र विश्वास । हैं प्रसन्न भोजन कर्यौ भौ जीवन की आस ॥
 श्री प्रभु जू ने गमन किय करि आस्वासन ताहि । दुर्वसन आये तहा हूँ कैं कृतमाला हि ॥
 दरसन कर्यौ रघुनाथ कौं दुर्वसन मधि सोइ । परसराम कौं प्रणत किय गिरि महेन्द्र मधि जोइ ॥
 स्नान धनुष तीरथ कियौ सेतबंध में आय । तहां कियौ विश्राम प्रभु रामेश्वर लखि भाय ॥
 विप्र समाज तहां सुनै श्री कूरम जु पुराण । आयौ ताके मध्य में पतिव्रता आख्यान ॥
 माया सिय रावण लई तहां सुन्यौ विख्यान । भयौ महाप्रभु कौ हियौ आनंदित सुनि कान ॥
 पतिव्रतानि सिरोमनी जनक नंदिनी सोइ । गृहिणी श्री रघुनाथ की जग माता सिय जोइ ॥
 रावण लखिकैं अग्निकी सरण लई सिय सोय । अग्नि कियौ आवरण सिय रावण हीतें जोय ॥
 लै राखी जनकात्मजा गिरिजा के जु निवास । माया सिय दै अग्नि नें करी बंचना तास ॥
 आये श्री रघुनाथ जब रावण मारि जु आहि । दैन परीक्षा अग्नि मधि तब आन्यौ सीताहि ॥
 तब माया सिय अग्नि नें करी जु अंतरध्यान । सत्य सिया दिय आनि कैं रघुवर के विदिमान ॥
 ए सिंगरे सिद्धांत सुनि प्रभु आनंद भौ जोइ । विप्र पास तें मांगि कैं लीनौ पत्र जु सोइ ॥
 नयौ पत्र लिखि पुस्तक हि दै आये प्रभु सोय । पत्र पुरातन आप लिय तिहि प्रतीत हित जोइ ॥
 आये लैकैं पत्र पुनि दक्षिण मथुरा जोइ । रामदास द्विज कौं दियौ पत्र आनि कैं सोइ ॥
 तथाहि कूर्मपुराणे—

सीतयाराधितो बन्दिहृद्धायासीतामजीजनत् । तां जहार दशग्रीवः सीता बन्दिपुरं गता ॥१६॥

परीक्षा समये बन्दिहृद्धायासीता विवेश सा । बन्दिः सीतां समानीय तत्पुरस्तादनीनयत् ॥१७॥

पत्र पाय द्विज के हियें भयौ जु परमानन्द । प्रभु चरणनि मधि सीस धरि रोदन करे अमंद ॥
 विप्र कहैं साक्षात् तुम श्री रघुनंदन नाम । संन्यासी के वेस मुनि दियौ दरस अभिराम ॥
 महादुख ही तें कर्यौ मेरौ तुम निस्तार । मम घर भिक्षा आजु प्रभु करौ जु अंगीकार ॥
 मन दुख करि भिक्षा भलै दीनी नहि दिन सोइ । मम भाग्यनि करि फेरिहू पायौ दरसन जोइ ॥
 एतक कहि सुख पूर्व द्विज तुरत पाक किय जोइ । करवाई भिक्षा प्रभुहि उत्तम रीतिन सोइ ॥
 तिहीं रात्रि रहि कैं तहां कीनी कृपा जु ताहि । पांड्य देस आये जु प्रभु ताम्र पर्णि नदि आहि ॥
 स्नान ताम्र पर्णि कियौ ताम्रपर्ण कैं तीर । नय त्रिपदी लखि कैं प्रभु जु बोले कौतुक धीर ॥
 तीर्थ चियर ताला लखे राम सुलक्ष्मण सोय । विष्णु कांचि में आय कैं शिव कौ देख्यौ जोय ॥
 गजमोचन तीरथ लखे विष्णु मूर्ति जू सोय । आय तीर्थ पानागडी लखे सियापति सोय ॥

आये चामडानुर मधि लखे जु लक्ष्मण राम । श्री बैकुण्ठहि आय किय विष्णु दरस अभिराम ॥
मलयाचल मधि बंदना करी अगस्त्य हि सोय । तहां कुमारी कन्य कौ दरसन कीनी जोय ॥
धाम आमली तल लखे राम गौर हरि सोय । आये देस मलार मधि जिहि भटमारी होय ॥
श्रीतमाल कार्तिकहि लखि आये तारा पानि । श्री रघुनाथहि लखि तहां बितई निसि सुखसानि ॥
श्री गोस्वामी संग मधि कृष्णदास द्विज आहि । भटमारी के संग सौ भयो जु दरसन ताहि ॥
उपजायौ हिय लोभ तिहि त्रिय धन कौ दरसाय । आरज सरल जु विप्र मति कीनी नास बनाय ॥
आयो विप्र जु प्रात उठि भटमारी घर आहि । श्री प्रभु आपुन वेगि ही आये देखन ताहि ॥
प्रभु जु आय कबौ सबनि भटमारी गण जोय । तुम जु हमारौ विप्र कयौ राख्यौ कारण कोय ॥
तुम हौ संन्यासी लखौ हमहुं संन्यासी सोय । हम कौ दुख क्यौ देत हौ तुम्हरे न्याय न होय ॥
सुनि के भटमारी सकल उठे शस्त्र लै सोय । आये मारण कौ सकल दौरि चारि दिस जोय ॥
तिन के शस्त्र जु तिहि अंगनि परे हाथ तें सोय । खंड खंड तेई भये भजे चारि दिस जोय ॥
हा हा कार उठ्यौ जु तब भटमारिनि के गेह । कियौ गमन प्रभु केस धरि लैद्विज कौ करि नेह ॥
तिहि दिन चलि आये जु प्रभु तीर पयस्विनि सोय । आदि केशव सु मंदिर हि गये न्हाय प्रभु जोय ॥
श्री केशव कौ निरखिके प्रेम विवस भौ सोय । नति नुति नृत्यजु गीत तब कीनी प्रभुजु जोय ॥
निरखि प्रेमकौ लोक सब चमत्कार भौ सोय । सकल लोक प्रभु कौ कर्यौ अति सतकार जु जोय ॥
श्री प्रभु सौ गोष्ठी भयो महामक्त गण संग । ब्रह्म संहिता ध्याय इक लखौ तहां रंग ॥
पुस्तक लखि श्री प्रभु हिये भौ आनंद अपार । भयो पुलक कंठाश्रु औ स्तंभ स्वेद विकार ॥
ब्रह्म संहिता सम नहीं सकल सास्त्र मत सार । गोविंद महिम ज्ञान कौ कारण पर निरधार ॥
थोरें आंकनि मधि कह्यौ है सिद्धांत अपार । सकल सु वैष्णव शास्त्र मधि येही है अति सार ॥
पोथी लई लिखाय के बहु जतननि करि सोय । अनंत पद्मनाभहि प्रभु आये हरषित होइ ॥
पद्मनाभ कौ देखि करि श्री प्रभु जू दिन दोय । संकर नारायण लखे आय पयस्विनि सोय ॥
आचारज संकर घरहि सिहारी मठ आय । स्नान तुंगभद्रा कियौ मत्स्य तीर्थ लखि सोय ॥
आये मध्वाचार्य गृह जहां जु वादी तत्व । उडुपि कृष्ण कौ लखि तहां भये प्रेम उनमत्त ॥
श्री नत्तक गोपाल जू कृष्ण परम अभिराम । मध्वाचार्य हि स्वप्न दै आये तिन के धाम ॥
गोपी चंदन डेल मधि है नौका में जोय । मध्वाचार्य निकट हरि आये इच्छा कोय ॥
मध्वाचारज न्याय तिहि कीनी आपन आहि । तत्व हि वादी गण सबे अबहुं सेवत ताहि ॥
कृष्ण मूर्ति लखि सुख महाप्रभुके भयो जु सोइ । प्रेम विवसहुं बहुत छिन नृत्य गीत किय जोय ॥
तत्व वादी गण श्री प्रभु हि मायावादी जान । प्रथम दरस मधि नहि कियौ संभाषण सनमान ॥
पाछे प्रेमावेश लखि चमत्कार भौ जोय । कीनी वैष्णव ज्ञान करि बहु सतकार जु सोय ॥
गौर चंद्र जू जानि के गर्व सबनि के हीय । गोष्ठी करिबे सबनि संग आरंभ जु तब कीय ॥

तत्व वादिनु आचार्य सौ शास्त्रनि में जु प्रवीन । तिन सो प्रस्न करीनु प्रभु है करि जैसे दीन ॥
भली भांति जानें न हम साध्य जु साधन भाइ । श्रेष्ठ साध्य साधन जु तुम हमकौ देहु जनाइ ॥
करि निज धर्म समर्पिये हरि कौ कहै जु सोइ । यही कृष्ण की भक्ति की साधन श्रेष्ठ जु होइ ॥
गमन होय बैकुण्ठ कौ मुक्ति पंच विधि पाय । साध्य श्रेष्ठ है गौ यही कहै जु शास्त्र सुनाय ॥
गौर कहै शास्त्र जु कहै श्रवण कीर्त्तन जोय । हरि रति सेवाफल जु कौ साधन परम जु सोय ॥
तथाहि श्री मद्भागवते—

श्रवणं कीर्त्तनं धिष्णोः स्मरणं पादसेवनं । अर्चनं वन्दनं दास्यं सकृदमात्मनिवेदनम् ॥

इति पुंसापिता धिष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा । क्रियेत भगवत्यङ्गा तन्मन्येऽधीतमुत्तमम् ॥

श्रवण कीर्त्तन ही जु है कृष्ण प्रेम की नींव । पंचम पुरुषार्थ वही पुरुषार्थ की सींव ॥
तथाहि एकादश स्कन्धे—

एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्त उच्चैः ।

हस्त्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादयन्नृत्यति लोकवाद्यः ॥

कर्म त्याग निंदा जु तिहि कही सास्त्र सब माहि । कबहुं प्रेमा कृष्ण मधि होय कर्म तें नाहि ॥
तथाहि श्री भागवते—

आज्ञायैव गुणान् दोषानितिश्लोकं

तथाहि भगवद्गीतायां—

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकमतिश्लोकं ॥

मुक्ति पंच विधि भक्तगण त्याग करै जु निदान । जानें मुक्ति हि तुच्छ करि देखें नरक समान ॥
तथाहि श्रीमद्भागवते एकादश स्कन्धे—

तावत् कर्माणि कुर्वीत न भिर्बिभ्येत यावता । मत्कथाश्रवणदौ वा श्रद्धा यावन्न जायते ॥

तथाहि तत्रैव तृतीयस्कन्धे—

सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानं न गृह्णन्ति बिना मत्सेवनं जनाः ॥

कर्म मुक्ति द्वै वस्तु ये तजें भक्तगण जानि । सोई द्वै थापे तुमनि साधन साध्य बखानि ॥
यही सकल वैष्णवन कौ साधन साध्य न होय । संन्यासी लखि वंचना करौ हमारी जोय ॥
सुनि तत्वाचारज भये अंतर लज्जित आहि । लखिके अति विस्मित भये प्रभुकी वैष्णवता हि ॥
तत्वाचारज कहै तुम जु कह्यौ सत्य है सोइ । सकल सास्त्र वैष्णवनि के यही सुनिश्चै होय ॥
तऊ जु मध्वाचार्य जू जैसे कर्यौ निबंध । सोई सब आचरण है संप्रदाय संबन्ध ॥
भक्ति हीन विव प्रभु कहै कर्मी ज्ञानी दोय । संप्रदाय मधि आय के चिन्ह लखै द्वै सोय ॥
सब मधि लखिये एक गुण संप्रदाय तुव जोइ । करौ जु विग्रह सत्य करि ईश्वर निश्चै सोइ ॥
इहि विधि तिहि घर रहि कर्यौ गर्व चूर्ण प्रभु सोइ । आये फाल्गुण तीर्थ तब कृष्ण गौर हरि जोइ ॥
करि जु विशाला दरस पुनि लखि के तहँवित कूप । तीर्थ पंचाप्सर तब आये प्रभु सुख रूप ॥

लखि आर्या द्वैपायिनी सिवगोर्ण हि चाहि । सूर्यारक आये तवै जती सिरोमनि आहि ॥
 कोला पुर लक्ष्मी लखी खीर भगवती चाहि । लखि गणेश नांगा लखी चोर भगवती आहि ॥
 पांडुर पुर तिहि ठौर ते आये प्रभु सुख चंद । विठ्ठल ठाकुर देखि कैं हिय पायौ आनंद ॥
 प्रभु जु प्रेमावेस मधि नृत्य गान बहु कीय । प्रभु प्रेमा लखि लोग सब चमत्कार भौ हीय ॥
 तहां एक द्विज भक्त सो कियो निमग्न ताहि । भिन्ना करि सुभ वात इक पाई तहां जु आहि ॥
 सिष्य जु माधव पुरी कौ श्री रंगपुरी जु नाम । तिही ग्राम मधि विप्र घर करैं आय विश्राम ॥
 सुनि कैं चले प्रसन्न मन प्रभु दरसन हित ताहि । विप्र गेह बैठे तहां देख्यौ तिनकौ आहि ॥
 प्रेम विवस हूँ कैं कर्यौ तिनकौ दंड प्रणाम । अश्रु पुलक औ कंप भौ अंग स्वेद अभिराम ॥
 लखि विस्मित मन में भये श्री रंग पुरी जु नाम । उठौ उठौ श्रीपाद कहि कहे बचन अभिराम ॥
 तुम श्री पाद धरौ जु मम गोस्वामी संबंध । तिन विन और कहूँ नही यही प्रेम कौ गंध ॥
 एतक कहि परि रंभ करि पुरी जु प्रभु हि उठाय । रुदन करैं दोऊ तहां कंठहि कंठ लगाय ॥
 छिनक छाडि आवेस कौ दुहुनि धैर्य भौ सोय । नातौ ईश्वर पुरी कौ प्रभु जु जनायौ जोइ ॥
 निसि दिन दोऊ जन कहैं कृष्ण कथा चित लाय । पांच सात वासर तहां किय वितीत इहिं भाय ॥
 करि कौतुक श्री पुरी तिहिं पूछ्यौ जन्म स्थान । प्रभु कौतुक करि कैं कछौ नवद्वीप अभिधान ॥
 माधवेन्द्र पुरी संग करि श्री रंग पुरी जु सोइ । ते आये आगें हु ते नदिया नगरी जोइ ॥
 जगन्नाथ मिश्र जु घरहि भीक्षा कीनी जोइ । केरा की भाजी तहां पाई अद्भुत सोइ ॥
 जगन्नाथ की ब्राह्मणी पतिव्रता अति जोइ । वात्सल्य करि कैं जू हैं जगमाता जिमि सोइ ॥
 तिहि सम निपुन जु पाकमधि नहि त्रिभुवनमें कोइ । दै भिन्ना श्रीपाद कौ सुत सम हितकरि जोइ ॥
 तिनके इक सुत जोग्य बहु किय संन्यास जु आहि । नाम संकरारण्य तिहि अलप वैसे हौ ताहि ॥
 सिद्धि प्राप्ति तिनकौ भई इंद्री तीर्थ मधि आहि । पूर्व वृत्त श्री रंग पुरी एतक कछौ जु ताहि ॥
 गौर कहैं पूर्वाश्रम ही ते हमरे हे आत । जगन्नाथ मिश्र जु हु ते मम पूर्वाश्रम तात ॥
 करी इष्ट गोष्ठी दुहुनिजन मिलि कैं इहि भाय । श्री रंगपुरी जु द्वारका चले देखिवैं चाय ॥
 राख्यौ प्रभुकौ चारि दिन तहां विप्र तिहि जोय । भीमरथी मधि न्हाय किय विठ्ठल दरसन सोय ॥
 तव जु कृष्ण वेनातट हि आये प्रभु रस रूप । नाना तीर्थ लखि तहां मंदिर देव अनूप ॥
 सदा वैष्णवाचरण हैं सकल सु द्विजन समाज । पढ़ैं कृष्ण करणामृतहि वैष्णव सब सुख साज ॥
 करणामृत सुनि गौरकैं हिय सरस्यौ आनंद । लिय लिखाय आग्रह जु करि पुस्तक सो सुखकंद ॥
 करणामृत सम वस्तु नहिं तीन भुवन मधि आन । यही ते है कृष्ण कौ सुद्ध प्रेम कौ ज्ञान ॥
 हरि लीला माधुर्य औ सुंदरतावधि आहि । कर्णामृत निरवधि पढ़ै सो जानैगौ ताहि ॥
 कर्णामृत ब्रह्मसंहिता पोथी पाई दोय । दोऊ महा जु रत्न सम लै आये संग सोय ॥
 आये पुरि माहिष्मती तापी न्हाय जु सोय । नाना तीर्थ लखे तहां तीर नर्मदा जोय ॥

न्हाय निर्विध्या नदी मधि मनु तीर्थ कौ देखि । आये दंडक वन तवै ऋष्य मूक गिरि देखि ॥
 सप्तलाल इक वृक्ष है कानन भीतर सोय । महावृक्ष अति स्थूल है बहुत उच्चतर जोय ॥
 सप्तलाल लखि कैं प्रभु जु किय आलिंगन ताहि । सप्तताल ससरीर भौ अंतरध्यान जु आहि ॥
 सून्य स्थल लखि लोक कैं अचिरज भयौ अपार । लोक कहैं श्री पाद ये रघुवर के अवतार ॥
 गयौ ताल तनु सहित सौं श्री वैकुण्ठ जु धाम । काहि होय ऐसी सकति विना एक श्रीराम ॥
 न्हाये पंपासश्वरहिं आय गौर अभिराम । पंचवटी मधि आयकें कर्यौ तहां विश्राम ॥
 नासिक त्रंवक लखि गये ब्रह्मगिरि जु अभिराम । कुशावर्त आये तहां भव गोदावरि नाम ॥
 निरखि तप्त गोदावरी तीर्थ बहुतर जोइ । प्रभु जू आये फेरि हूँ विद्यानगर सु सोइ ॥
 श्री प्रभु कौ आगमन सुनि श्री रामानंद राय । प्रभु कौ मिलन कर्यौ तिनहौं आनंदित हूँ आय ॥
 पर्यौ दंड ज्यौं राय जू चरण कमल धरि आहि । प्रभु जू नैं जु उठाय कैं किय आलिंगन ताहि ॥
 तहां जु प्रेमावेस मधि रुदन करत जन दोय । प्रेमानन्द भये सिथल विव जन के मन सोय ॥
 दोऊ जन केतिक छिनहि मन में सुस्थिर होय । विविध इष्ट गोष्ठी करी बैठि एक ठां सोय ॥
 तीर्थ जात्रा की कथा प्रभु सब कही जु सोइ । करणामृत ब्रह्मसंहिता पोथी दीनी दोइ ॥
 पुस्तक लखि आनंद भौ श्री रामानंद राय । प्रभु संग आस्वादन कियो राखी तें जु लिखाय ॥
 आये प्रभु जू ग्राम मधि भौ कोलाहल सोइ । प्रभु दरसन हित लोक ते सब ही आये जोइ ॥
 लोकहि लखि रामानंद जु गौ निज घर मधि जोय । उठे गौर मध्यान्ह में भिन्ना करिवैं जोय ॥
 फेरि राय जू निसि समैं आगम कीनौ सोय । कृष्ण कथा करि जागरण करैं तहीं जन दोय ॥
 दोऊ जन कैं राति दिन कृष्ण कथा ही होय । परमानंद करि कैं गये पांच सात दिन सोय ॥
 रामानन्द कहैं प्रभु तुमरी आज्ञा पाय । नृप कौ हम जु लिखीं हुती करि विनती चित चाय ॥
 जैवैं लीलाचल हमें दिय निदेस नृप ताहि । चलिवे कौं उद्यम जु हम करिवे लागे आहि ॥
 कहैं जु प्रभु ह्यां आगमन हमरौ यही निमित्त । लै तुम कौ लीला चलहि करि हैं गमन सुचित ॥
 राय कहैं आगें प्रभु जु चलौ नीलगिरि सोइ । मेरे संग हाथी तुरंग सैन्य कुलाहल जोइ ॥
 दिन दस इन सब के जु करि समाधान सनमान । तुम पाछे पाछे जु हम करि हैं वेगि पयान ॥
 तव प्रभु जू नैं आय वैं तिहिं आज्ञा दिय सोइ । श्री लीलाचल कौं चले परमानंदित होइ ॥
 जिहीं गैल हूँ पूर्व प्रभु कियौ आगमन सोइ । चले तिही पथ में लखैं सब वैष्णव जन जोइ ॥
 जहां जाय जन करि उठैं कृष्ण कृष्ण धुनि वाम । लखि कैं बहु आनंद लखौ गौर हरी अभिराम ॥
 नाथ अलालहि आय कैं पठ्यौ कृष्ण जु दास । नित्यानंदहि आदि निज गण बुलवाये पास ॥
 श्री प्रभु कौ आगमन सुनि श्री नित्यानंद राय । उठि कैं चले उछाह सौं आनंद अंग न माय ॥
 जगदानंद दामोदर पंडित श्री जु मुकुंद । नाचत चले जु भाय सौं मातं न अंग आनंद ॥
 गोपीनाथाचार्य जू चले जु हरसित होय । सब ही श्री प्रभु कौं मिले मग में आये जोय ॥

भट्टाचारज जू चले मन में करि आनंद । उदधि तीर में आयकें मिले प्रभु सुख कंद ॥
 सार्वभौम प्रभु के चरण परे प्रीत सौं आय । प्रभु नें आलिंगन कियौ तवै उठाय जु ताय ॥
 प्रेमावेश करै रुदन सार्वभौम जू सोय । प्रभु ईश्वर के दरस हित सब सँग आये जोय ॥
 जगन्नाथ कौं लखि प्रभुहि भयौ जु प्रेमावेश । कंप स्वेद पुलकाश्रु में मग्न सरीर असेस ॥
 गीत नृत्य तव तें कियौ प्रेमाविष्ट जु होय । सब आये पसुपाल हैं लै प्रसाद सृक सोय ॥
 सृक प्रसाद लखि कें भये सुस्थिर प्रभु रस कंद । जगन्नाथ सेवक सकल मिले जू करि आनंद ॥
 काशी मिश्र जु आयकें परे गौर पद आहि । श्री प्रभु जू नें मान्य करि किय आलिंगन ताहि ॥
 पूजक श्री जगन्नाथ कौ प्रभु कौं मिल्यौ आय । सार्वभौम निज घर गये श्री प्रभु कौं जु लिवाय ॥
 मेरे घर भिन्ना कही कियौ निमंत्रण जोय । दिव्य दिव्य परसाद बहु ल्याये तव ही सोय ॥
 करि मध्यान्ह शची तनय लै करि निज गन जोय । भिन्ना करी जु बैठि करि सार्वभौम गृह सोय ॥
 भिन्ना तिनहि कराय पुनि सयन करायौ ताहि । सार्वभौम अपने करनि पायनि दावत आहि ॥
 प्रभु जू तिहि पठ्यौ तवै भोजन करिवे आहि । तिही राति ताके घरहि रहे प्रीत करि ताहि ॥
 सार्वभौम कौ संग लै औ निज गण कौं जोय । तीरथ जात्रा कथा कहि किय जागरण जु सोय ॥
 इतने तीरथ प्रभु कहे किय पर्यटन जु सोय । तुम सम वैष्णव नहि लखे कहूं एक जन जोय ॥
 इक रामानंद राय जू बहुत दियौ सुख आहि । भट्ट कहैं याही लिये कछौ मिलन हित ताहि ॥
 तीरथ जात्रा कथा इह पूर्ण भई इहि भाय । कही कछू संक्षेप करि विस्तर कही न जाय ॥
 तीरथ जात्रा गौर की कथा सुनें जन जोय । पावै पद चैतन्य मधि गाढ़ प्रेम धन सोय ॥
 सुनें चरित चैतन्य कौ श्रद्धा करिकें जोय । मत्सरता तजि वदन मधि कहैं हरी हरि सोय ॥
 यही जानि कलिकाल में अरु नाही औ कर्म । वैष्णव वैष्णवशास्त्र मधि यही कह्यौ है मर्म ॥
 लीला गौर हिमांशु की है अगाध गंभीर । पैठन कौं समर्थ नही रहै परसि कें तीर ॥
 श्रद्धा करि चैतन्य कौ चरित सुनें जन जोय । जितिक विचारें तितिक ही लहै महाधन सोइ ॥
 श्री जु रूप रघुनाथ के चरनन की जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहैं कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे ब्रजभाषायां दक्षिण देस तीर्थ भ्रमणं नाम नवमः परिच्छेदः ॥

दशम परिच्छेदः

तं वंदे गौरजलदं स्वस्य यो दर्शनामृतैः । विच्छेदावग्रहप्रस्तान् भक्तसस्यान्यजीवयन् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
 पूर्व जबै दक्षिण चले श्री प्रभु जू सुखदाय । नृप प्रतापरुद्र जु तवै भट्टाचार्य बुलाय ॥
 बैठन कौं आसन दियौ नमस्कार करि ताहि । श्री प्रभु की वार्त्ता तवै राजा पूछी आहि ॥
 सुन्यौ तुम्हारे गेह में एक महासय जोय । आये गौड देस तें महाकृपामय सोय ॥
 तुम पर बहुत कृपा करी कहत सकल जन आहि । मो कौं अब करि हैं कृपा दरस करावौ ताहि ॥
 भट्टाचार्य कहैं सुनी सबै सत्य है जोय । तिहि दरसन कौं आप को जोग बनें नहिं सोय ॥
 वे विरक्त श्री पाद जू रहें विपिन के मांहि । ते प्रभु दरसन नृपति कौ करैं स्वप्न हूं नाहि ॥
 किहू भांति तो ऊ तुमहि दरस करैं हैं ताहि । अब तौ प्रभु जु ने कर्यौ दक्षिण गमन जु आहि ॥
 नृपति कहैं काहें गये जगन्नाथ तजि सोइ । भट्ट कहैं लीला यहू इक महंत की सोइ ॥
 पावन करिवैं तीरथनि भ्रमैं तीरथनि सोइ । ताही मिस निस्तार सब संसारिक जन होइ ॥

तथाहि श्री मद्भागवते प्रथमस्कन्धे—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थीभूताः स्वयं प्रभो । तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तः स्थेन गदाभृता ॥ २ ॥

निहचैं श्री वैष्णवनि कौ यही स्वभाव जु होइ । है स्वतंत्र ईश्वर सदा जीव नाहिने सोइ ॥
 नृपति कहैं काहे तुमनि जैवै दीयौ ताहि । पायनि परिकें जतन करि राखे क्यौं नहि आहि ॥
 भट्टाचारज जू कहैं ते ईश्वर जु स्वतंत्र । साक्षात श्री कृष्ण हैं ते जु नाहिं परतंत्र ॥
 तौ ऊ बहुतें राखिवैं कीनौ जल जु ताहि । ईस स्वतंत्र स्वभाव है राखि सकैं नहि आहि ॥
 नृपति कहैं तुम भट्ट जू विज्ञ सिरोमनि आहि । तातें मानी सांच हम कृष्ण कहत तुम ताहि ॥
 इहां आगमन फेरि हूं हूं है कवहूं ताहि । एक बार तिहि देखि करि करैं सफल चख आहि ॥
 भट्टाचारज जू कहैं वेगि आय हैं सोइ । रहिवे कौं इक धाम तिहि चहियै निर्जन जोइ ॥
 होय जु ठाकुर कें निकट निर्जन पुनि वह होय । ऐसौ निर्णय करि जु तुम देहु धाम इक सोय ॥
 ऐसैं कासी मिश्र कौ नृपति कहैं हैं जोय । जगन्नाथ जू कें निकट है अति निर्जन सोय ॥
 यौं कहि राजा रहे हैं उतकंठित अधिकाइ । भट्टाचार्य सबै कह्यौ काशीमिश्रहि जाइ ॥
 काशी मिश्र कहैं जु हम भाग्यवान बहु जोइ । प्रभु पद कौ जु निवास मम घर मधि है है सोइ ॥
 पुरुषोत्तम वासी सकल जन जितनें इहि भाय । प्रभु के मिलिवे कौ सकल उतकंठित मन चाय ॥
 उत्कंठा सब लोक कें जब अति वाढी सोय । दक्षिण ही तें श्री प्रभु जु तव ही आये जोय ॥

सुनि के आनंदित तब मरी सबजि की दीप । सार्वभौम जू सी सबजि आनि निवेदन कीय ॥
 प्रभु के संग हम सबजि की मिलन करायी सीह । तुम प्रसाद करि के लई प्रभु की दरसन जोह ॥
 महापराज जू कई कायि मिय पर सीह । प्रभु जई तब तुम सबजि निम्नै मिले है जोह ॥
 आज दिवस मीन श्री प्रभु जू महापराज संग । जगन्नाथ दरस कियो करि के मरा जू रंग ॥
 महापराज जिगी मरी मिले जू सेवक कुन्द । सब की आनिमग्न करायी सची तनय सुख कंद ॥
 दरसन करि वादिर मले श्री प्रभु जू अमिराम । महापराज ले निम्नै काशी मिय दि वास ॥
 काशी मिय जू आय के प्रभु पर परे जू आदि । मर संहित सब आलसा कियो समर्थन ताहि ॥
 श्री प्रभु जू मे चतुर्दश मीन दिवसि ताहि । प्रभु निम्नै अजनाय के किय आनिमग्न आदि ॥
 अजनाय मीन के मरी श्री प्रभु जू सुख रासि । जियानन्द दि आदि जनमग्न के मरु पाय ॥
 सुखी मने प्रभु दोष के बगिये की जू निवास । सभावाज प्रभु की सुखल ईही मर सुख रास ॥
 महापराज कई जू प्रभु है तुम जोय निवास । तुम स्वीकार करी अरे यही मिय की आस ॥
 कई जू प्रभु पर देह मय तुम सब ही की जान । जोह तुम सब ही करी हम की सीह प्रमान ॥
 सार्वभौम के मरी प्रभु दायन दिय जोय । पुनरीनय वासी सबजि लगे मिलान सौय ॥
 प्रभु जू मरे लोक सब मरे नीलमणि वास । उलकित है म सरे तुम मिलने अमिराम ॥
 मरे चालक मीन है मर की चाल अपार । मरे मरे सब निम्नै करी जू अंगीकार ॥
 जगन्नाथ की सेवक जू इही जनार्दन नाम । श्रीपार विज प्रभु की कई अंग सेवा अमिराम ॥
 कनक नेत्र वाली यही कृष्णदास अमिराम । अधिकारी है निम्न की मिथी वाहिनी नाम ॥
 श्री प्रभुसुख जू मिय म वैष्णव मय प्रवास । जगन्नाथ के पाक कुत म जू दास अमिराम ॥
 यही सुरारि जू मारती मिथी मारती आन । तुम परमान विज मनि इन्ने नहि आज दिज रास ॥
 कंदजिपार इमिपार जू डिज सुरारि जू नाम । विन्नु दास पर तुम परमा प्यान करत अमिराम ॥
 प्रभु राज परमानन्द जू महापराज म दीह । परम महामति है प्रथम निनके संगी सीह ॥
 आनन्द हरे मरे के मरे वैष्णव कुन्द । मरे निरन्तर वास सब तुम्हरे पर सुख कंद ॥
 तब सब ही परमाज पर मरी दंडन सीह । सब की आनिमग्न करायी प्रभु प्रसाद करि सीह ॥
 अति मरे समय में मरी परमानन्द रास । चारि पुत्र की संग करि परे जू प्रभु के पाय ॥
 महापराज जू कई म परमानन्द रास । इनके जेठ पुत्र है रामानन्द सुख दास ॥
 तबहु महापराज करि किय आनिमग्न ताहि । सुनि करि रामानन्द की विवरन कई जू आदि ॥
 रामानन्द जू सी रत्न जिह के तनय सु आदि । कल मने नहि लोक मिय जैयी महिमा ताहि ॥
 साधार जू तुम सीह ही तुम मिय कुती जोय । सीह मरी पुत्र तुम है जू महापति सीय ॥
 रास की हम मरु श्री मिय अजनाय जू आदि । ईश्वर की लक्षण यही परम कियो तुम ताहि ॥
 निज मरु मरु जन मरे मरु इनके संग चित्तपाय । किय हम आनन्दमय जू तुम्हरे पर सुख दास ॥

रहि है वार्त्ताजाय पर प्रभु के परमानि जोह । जेह आजा जब करी करि है वेदन सीह ॥
 करि ही नहि संधीय कहु कई महाप्रभु ताहि । मरे तुम विद्वत मरुत जन जन के आदि ॥
 मरे सात दि दिवस मिय मरे रामानन्द । निदि मरे पूरन सीय मी मरी जो आनन्द ॥
 एनिक कहि के श्री प्रभु जू किय आनिमग्न ताहि । परमानन्द के सुनि के मिय पर की जू आदि ॥
 पर दि पटायी निजरी तब मरी महाप्रभु सीय । पर नायक रास निदर वार्त्ताजाय जू सीय ॥
 महापराज जू सर्व विदा करायी सीय । कृष्णदास काला तब प्रभु जू कृष्णसी सीय ॥
 कई जू प्रभु सब ही सुनी ईहि चरित्र की माय । इही विप्र दायन दियदि मरी हमर साय ॥
 मरुमारी के संग मरी सीह आदि के आदि । आननी जू हम उवाचि के मरुमार ने ताहि ॥
 अब हम याकी आनि के कीनी विदाय सुनाय । जहाँ मरी उठि जाहु पर हम संग नही दाय ॥
 कृष्णदास एनिक जू सुनि रावन लागी सीह । मरुमान जू करिने मरे उठि श्री प्रभु जू जोह ॥
 निरमानन्द जगदानन्द जू दासीदर जू सुन्द । चारि जननि दिय में करी मुक्ति तब सुख कंद ॥
 सीह देस की मजिने चहिये एक जन जोय । कहिये जाय सु मान सी प्रभु आनन्द सीय ॥
 श्री अद्वैत निवास जू आदि मरु के कुन्द । आदिने सुनि के सर्व प्रभु आनन्द सुख कंद ॥
 दीजे सीह पटाय के कृष्णदास पर आदि । एनिक कहि रासगी तब समावान करि ताहि ॥
 आज दिवस श्री प्रभु निदर कियो निवेदन आदि । आजा दीजे सीहकी एक जन दीहि पटाय ॥
 सुन्दरी दायन दिय मयन सुनि के मरी जू माय । अद्वैतादिक वैष्णव जू सर्व रई दुख पाय ॥
 समाचार सुख सब कई एक जन जाह जू सीय । कई जू प्रभु सीह करी तुम इच्छा है जोय ॥
 सीह देस परयी तब कृष्णदास दिज सीह । देवे सब ही जननि की दिपी प्रसाद सु सीह ॥
 सीह देस आयी तब काला कृष्ण जू दास । नवद्वीप में मी मरी मरी मात के पास ॥
 महाप्रसाद दिपी तब नमस्कार करि ताहि । दायन तब आये प्रभु समाचार दिय जाहि ॥
 सुनि आनंदित मरी श्री सची मान की सीय । श्री निवास जू आदि श्री जितिक मरुमग्न जोय ॥
 मरी जू सुनिके मरुनि के तब परम उल्लास । मी अद्वैताचार्य मरु कृष्णदास सुख रास ॥
 दिय प्रसाद आचार्य की नमस्कार किय ताहि । मली मीनि प्रभु के कई समाचार सब आदि ॥
 सीधवापी आचार्य के मरी जू परमानन्द । हूँ कृति प्रभावस किय गीत नृत्य सुख कंद ॥
 टाकुर श्री हरिदास के परमानन्द मी जोय । गुप्त सुरारि मिवानन्द जू वासुदेव दत सीय ॥
 रत्नाचार्य श्री पंडित जू बकेश्वर अमिराम । आचारज निधि और पुनि पंडित मदाचर नाम ॥
 पंडित श्री दासीदर जू श्री पंडित श्री राम । पुनि पंडित श्री मान श्री विजय जू श्रीचर नाम ॥
 आचारज नंदन जू श्री राधव पंडित नाम । केनिक कहिये श्री जिते प्रभु के मग्न अमिराम ॥
 सुनि सब मरुनि के दिने मरी परम उल्लास । सब मिलि के आये तब श्री अद्वैत दि पास ॥

आचारज के चरण कौं प्रनत करी सब आय । आचारज गोस्वामी किय सब परि रंभण चाय ॥
 आचारज दिन दोय त्रय कियौ महोत्सव सोय । जगन्नाथ जैवें सबनि भई जुक्ति दृढ जोय ॥
 सब मिलि नदिया ग्राम तें तवै जु इक ठां होय । लीलाचल चलिवे लई आज्ञा सचि सौं सोय ॥
 बासी ग्राम कुलीन के सुनि प्रभु आगम चाय । सत्यराज रामानंद जु मिले जु सब ही आय ॥
 रघुनंदन नरहरि मुकुंद खंड देस तें धीर । आये जैवे नीलगिरि आचारज के तीर ॥
 दक्षिण तें ताही समें पुरी जु परमानंद । आये नदिया सुर सरित तीर तीर सुख कन्द ॥
 सचीमात के सदन में सुख करि किय विश्राम । मात तिन्है भीक्षा दई किय आदर अभिराम ॥
 श्री प्रभु जू के आगमन सुन्यौ तहां तिहि आहि । शीघ्र नीलगिरि जाइवें इच्छा भई जु ताहि ॥
 श्री प्रभु कौ इक भक्त द्विज कमलानंद अभिधान । तिहिं लै लीलाचलहि तव कीनौ बेग पयान ॥
 बेगि तहां आये जु ते मिले जु प्रभु कौं आहि । श्री प्रभु कौं आनंद भौ तवै जु पायें ताहि ॥
 कीनी प्रेमावेस मधि चरण बंदना ताहि । तिन हूँ प्रेमावेस किय प्रभु आलिंगन आहि ॥
 कहै जु प्रभु तुम संग में रहिवें बांछा सोय । मेरे ऊपर करि कृपा वसौ नील गिरि जोय ॥
 रहिवे की बांछा जु करि पुरी कहै तुम संग । आये चलि के गौड तें नीलाचल बहु रंग ॥
 सुनि कैं दक्षिण देस तें तुम आगम सुख कंद । आनंद भौ सचि कैं जु औ जेतिक भक्तनि वृन्द ॥
 सबहि आवतहैं तुम्हें देखन हित चित चाय । तिन सबकौं जु विलंब लखि हमआये चलिधाय ॥
 श्री स्वरूप दामोदर जु आये वासर आन । प्रभु के अति ही मर्म रससागर परम सुजान ॥
 काशीमिश्र निवास में एक निभृत घर आहि । सेवा कौं किकर दियौ श्री प्रभु जू ने ताहि ॥
 पुरुषोत्तम आचार्य जू पूर्वाश्रम तिहि नाम । नवद्वीप में ते जु हैं प्रभु चरननि अभिराम ॥
 प्रभु जू कौ संन्यास लखि तव उन्मत्त जु होय । कियौ ग्रहण संन्यास कौं काशी जाय जु सोय ॥
 चैतन्यानंदहि गुरु आज्ञा दीनी ताहि । पढ़ि वेदांत पढ़ाय पुनि सकल लोक कौं आहि ॥
 परम विरक्त जु ते सदा पंडित परम विचित्र । मन वच क्रम करि आसरो हैं श्री कृष्ण चरित्र ॥
 निहिचै कृष्णहि भजेंगे यही जु कारण जोइ । कियौ ग्रहण संन्यास कौं करि उन्माद जु सोय ॥
 सिखा सत्र के त्याग मय किय संन्यास अनूप । योग पट्ट नाहीं लियौ नाम भयौ जु स्वरूप ॥
 आये श्री लीलाचलहि आज्ञा लै गुरु पास । आनंद विहवल रैन दिन कृष्ण प्रेम रस रास ॥
 अवधि महापांडित्य की बात न किहि संग आहि । निर्जन माहि रहैं जु सब लोक न जानें ताहि ॥
 तब वेता श्री कृष्ण रस देह प्रेम कौ रूप । श्री प्रभु कौ साक्षात ये हेंगे दुतिय स्वरूप ॥
 न्यायें प्रभु तट ग्रंथ औ पद्यों गीत कौं कोइ । करैं परीक्षा ते जु प्रभु पाछें सुनें जु सोय ॥
 बिरुद्ध भक्ति सिद्धांत औ और जु रस आभास । सुनत होत कवहूँ नहीं प्रभु कैं हिय उल्लास ॥
 याही तें जु स्वरूप जू करैं परिचय आहि । सुद्ध होय तौ श्री प्रभुहि श्रवण करावै ताहि ॥
 चंडीदास विद्यापति और गीतगोविन्द । इनही तीनों गाय कैं करैं जु प्रभु आनंद ॥

गान माहि गांधर्व सम सास्त्र हि सुरगुरु रूप । दामोदर सम और नहिं महा सुवृद्धि अनूप ॥
 नित्यानंद अद्वैत के परम पियारे प्राण । श्री निवास जू प्रभृति जन गण के प्राण समान ॥
 सो दामोदर जू तहां भये दंडवत आइ । चरणनि परि कैं पद्यों कौं लगे पठन सुख दाइ ॥
 तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

हेलोद्धृतितखेदया विशदया प्रोन्मीलदामोदया, शाम्यच्छास्त्रविवादया रसदया चित्तार्पितोन्मादया ।
 शश्वद्धक्तिविनोदया समदया माधुर्यमर्यादया, श्रीचैतन्यदयानिधे तव दया भूयादमन्दोदया ॥३॥

प्रभु जू तवै उठाय कैं किय आलिंगन ताहि । विविजन प्रेमावेस करि भये अचेतन आहि ॥
 केतिक छिन में थिर भये दोऊ जन तव आहि । तवै महाप्रभु जू तहां लागे कहन जु ताहि ॥
 तुम आगम जौ आजु हम लख्यौ स्वप्नमें सोय । भली भई अब अंध जिमि द्वै चख पाये जोय ॥
 कहै स्वरूप जु गौर जू क्षमि मेरौ अपराध । तुम तजि और हि ठौर गौं कर्यौ प्रसाद अगाध ॥
 मेरे श्री प्रभु पंदनि भधिनही प्रेम कौ लेस । तुम्है छाडि पापी जु हौं गयौ और ही देस ॥
 मैं तुम कौं छाड्यौ तुमनि मो कौं छाड्यौ नाहि । नित्यानंद प्रभु जू कियौ प्रेमालिंगन ताहि ॥
 सार्वभौम जगदानंद जु संकर और मुकुंद । यथा योग्य सब सौं कियौ तिन्हौ मिलन सुख कंद ॥
 परमानंद पुरी चरण करी बंदना आहि । पुरी गुसाईं जू कियौ प्रेमालिंगन ताहि ॥
 प्रभु जू नैं एकांत घर बसिवे कौं दिय ताहि । जल आदिक सेवा टहल हित इक किकर आहि ॥
 सार्वभौम जू आदि जन संग और दिन सोइ । बैठे हैं श्री प्रभु तहां कृष्ण कथा रंग जोय ॥
 इही समें गोविंद कौ भयौ आगमन जोय । कहैं वचन करैं विनय करि जु दंडवत सोय ॥
 पुरी जु ईश्वर कौ अनुग गोविंद मेरौ नाम । तिनकी आज्ञा तें जु मैं आयौ तुम्हारे धाम ॥
 सिद्धि प्राप्ति के समय तिहिं आज्ञा किय मुहि आहि । निकट कृष्ण चैतन्य के रहि सेवौ जे ताहि ॥
 आवेंगे काशीश्वर जु तीरथ देखि सु भाय । प्रभु की आज्ञा पाय मैं तुम पद आयौ धाय ॥
 कहैं जु प्रभु ईश्वर पुरी वात्सल्य किय मोहि । कृपा करी मो पास अब तिहिं पठ्यौ है तोहि ॥
 सार्वभौम जु एतक सुनि प्रभु कौं पूछ्यौ सोइ । पुरी गुसाईं शूद्र जन किततें राख्यौ जोइ ॥
 कहैं जु प्रभु ईश्वर सदा हेंगे परम स्वतंत्र । ईश्वर की जु कृपा नही वेदनि के परतंत्र ॥
 ईश कृपा कुल जाति कौं नैंक हूँ मानत नाहि । कृष्ण कियौ भोजन रुचिर विदुर गेह के मांहि ॥
 नेह लेह की चाह इक ईस कृपा को सोइ । करैं स्वतन्त्र जु आचरण नेह लेस वस होइ ॥
 मर्यादा तें कोटि सुख नेह आचरण माहि । परम आनंद जु होत है श्रवन सुनें तें ताहि ॥
 गोविंदकौं श्रीप्रभु कियौ आलिंगन चित चाय । गोविंद ने सबकौं करी चरण प्रणति सुख पाय ॥
 सार्वभौम मन में करौ प्रभु जू कहैं विचार । गुरु कौ किकर है हमें मान्य सदा निरधार ॥
 समर्थ नहिं करवाइवें अपनी सेवा ताहि । गुरु दीनी आज्ञा यहै कहा उपाय जु याहि ॥
 भट्टाचारज जू कहैं गुरु आज्ञा बलवान । गुरु आज्ञा नहिं लंघिये शास्त्र यहै जु प्रमान ॥

तथाहि रघुवंशे—

स शुभ्रवान्मातरि भार्गवेण पितुर्नियोगात् प्रहृतं द्विषद्वत् ।

प्रत्यमहीदमजशासनं तत् आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया ॥ ४ ॥

तबै महाप्रभु जू कियौ तिहि कौ अंगीकार । सेवा अपने अंग की ताकौं दिय अधिकार ॥
 प्रभु जू कौ प्रिय भक्त करि सब ही करै जु मान । सब जन कौं गोविंद करै समाधान है मान ॥
 कीर्त्तनिया छोटे बड़े दोऊ ए हरिदास । रामाई नन्दाई पुनि रहै जु गोविंद पास ॥
 श्री प्रभु कौ सेवन करै गोविंद जू के संग । सीमा वरनी जात नहि गोविंद भाग्य अभंग ॥
 और दिवस प्रभु के निकट कहै जु दत्त मुकुंद । आये तुम्हरे दरस हित भारति ब्रह्मानन्द ॥
 श्री प्रभु आज्ञा दीजियै जो ह्यं ल्यावै ताहि । कहै जु प्रभु गुरु ते जु तिहि पास जायवै आहि ॥
 सब भक्तनि कौ संग करि एतक कहि प्रभु धीर । चलि आये ब्रह्मानंद जु भारति जू के तीर ॥
 पहिरै ब्रह्मानंद जू मृग चर्माम्बर आहि । दुखित भये अंतर महा प्रभु जू लखि के ताहि ॥
 लखि के हूँ कीनौ छल जु जानौ लख्यौ न ताहि । गोस्वामि भारती कहाँ पूछे मुकुंद हि आहि ॥
 कहै मुकुंद लखो इन्हें आगे हैं विदमान । कहै जु प्रभु ते नाहिने तुम्हरे है अज्ञान ॥
 नहीं ज्ञान तुव और कौ कहाँ और ही नाम । गोस्वामी श्री भारती क्यौं पहिरेंगे चाम ॥
 सुनि के ब्रह्मानन्द जू करै हिये जु विचार । मेरौ चर्माम्बर यही नहि इनकौ सुख सार ॥
 भलै कहै चर्माम्बर जु पहिर्यौ दंभ विचार । चर्माम्बर के पहिरवै तरि हैं नहि संसार ॥
 पहिरौं नहि आजु ते यह चर्माम्बर सोय । मगवायौ हिय जानि प्रभु बहिर्वास तव जोय ॥
 चर्म छाडि ब्रह्मानंद पहिर्यौ बसनजु आहि । श्रीप्रभु जू ने आय किय चरण वन्दना ताहि ॥
 कहै भारती तुव चरित लोक सीख कौ जोइ । फेरि न करिहौ नति हमें चित्त लहै भय सोइ ॥
 इहां चलाचल जु श्री प्रभु संप्रति ब्रह्म जु दोय । जगन्नाथ जू अचल तुम सचल ब्रह्म हौ सोइ ॥
 गौर ब्रह्म हौ तुम प्रभु ते जु वरण है स्याम । दोऊ ब्रह्म किय सब जगत तारण अति अभिराम ॥
 कहै प्रभु सत्य जु कहाँ तुमरौ आगम सोइ । श्री पुरुषोत्तम धाम में प्रगट ब्रह्म जु दोइ ॥
 गौर ब्रह्म तुम प्रभु जु चल ब्रह्मानंद जु नाम । जगन्नाथ बैठे अचल ब्रह्म है जु अंग स्याम ॥
 सार्वभौम सौ भारती कहै बीच तुम होय । इन संग मेरौ न्याय तुम मम दे वृद्धौ सोय ॥
 व्याप्य जु व्यापक भाव मधिजीव ब्रह्म है जानि । जीव व्याप व्यापक दुतिय कहै जुशास्त्र वखानि ॥
 कियौ जु चर्म छुडाय के सोधन मेरौ जोइ । व्याप जु व्यापक दुहुनि कौ यहै जु कारण सोइ ॥

तथाहि महाभारते दानधर्म—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्द्रनागदी । सन्यासकृच्छ्रमः शान्तो निष्ठा शान्तिपरायणः ॥ ५ ॥

इन सब नामनि के जु ये निज निवास है जोय । चंदन मिन्यौ प्रसाद गुण श्री भुज अंगद सोय ॥
 महाचार्य कहै जु तुम भारति लखियै जीति । कहै जु प्रभु जोई कहाँ सो जु सत्य इह नीति ॥

है गुरु शिष्य जु न्याय मधि सत्य सिष्य की हार । कहै भारती यही नहीं हेतु और निरधार ॥
 भक्त पास हेरौ जु तुम यह तुमरौ जु स्वभाव । औरौ एक सुनौ जु तुम आपन कौ जु स्वभाव ॥
 हम आजन्म करौं सदा निराकार कौ ध्यान । तुम देखे तें कृष्ण कौ भौ मो कौ विदिमान ॥
 कृष्ण नाम मुख में फुरै मन नैननि श्री कृष्ण । तुम प्रभु कौ तद्रूप लखि मेरौ हृदय सत्पुण ॥
 कही विल्व मंगल जु जिमि दसा आपनी जोय । इन्हें देखि करिके भई मेरी दशा जु सोइ ॥
 तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धुधृतविल्वमंगल कृत श्लोक—

अद्वैतवीथीपथिकै रुपास्याः स्वानन्दसिंहासन लब्धदीप्ताः ।

हठेन केनापि वयं शठेन दासीकृता गोपवधूविटेन ॥ ६ ॥

कहै जु प्रभु श्री कृष्ण मधि तुव दृढ़ प्रेम जु सोइ । परै नयन जितही तहां कृष्ण स्फूर्ति जू होइ ॥
 भट्टाचारज जू कहै विवि के सांचे बें । आगे जो साक्षात दिय दरस कृष्ण रस ऐन ॥
 प्रेम विना तब हूं नही प्रगट दस तिहि जोय । इन ही की इक कृपा तें इनकौ दरसन होय ॥
 कहै जु प्रभु हरि हरि कहाँ सार्वभौम जू सोय । अति स्तुति है जानौ यही निंदा लक्षण जोय ॥
 एतक कहि लै भारती आये अपने धाम । रहै भारती गौर के निकट तहां अभिराम ॥
 राम भद्र आचार्य औ आचारज भगवान । प्रभु पद में दोऊ रहै तजि के काशज आन ॥
 काशीश्वर गोस्वामि जू आये वासर आन । प्रभु राखे निज धाम में करि के बहु सनमान ॥
 श्री प्रभु कौ करवाय लिय ईश्वर दरसन सोइ । आगे लोक जु भीर सब करि जु निवारण जोइ ॥
 जैसे जेतिक नदनदी मिलत समुद्र हि जाय । तैसे प्रभु कौ भक्त सब जहां तहां ते आय ॥
 सब ही आय मिले तहां श्री प्रभु पद अभिराम । श्री प्रभु जू करिके कृपा सब राखे निज धाम ॥
 श्री प्रभु कौ यही कहाँ वैष्णव मिलन जु आहि । पावै श्री चैतन्य पद जोई सुने जु याहि ॥
 श्री जुरूप रघुनाथ के चरणन की जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत प्रभु कौ लिखै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां वैष्णव मिलनं नामो दशमोऽध्यायः ॥

एकादश परिच्छेदः

अत्युद्धंडं तांडवं गौरचंद्रः कूर्चन् भक्तैः श्रीजगन्नाथगेहे ।

नानाभावालंकृताङ्गः स्वधाम्ना चक्रे विश्वं प्रेमबन्यानिमग्नं ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
 सार्वभौम प्रभु के निकट कहै और दिन जोय । अभै दान मम देहु तव करौ निवेदन सोय ॥

कहैं जु प्रभु तुम कहौ कहु भय न करौ हिय माहि । करिहैं हम जो जोग्य है करैं आजोग्य जु नाहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं यह गजपति नृप सोय । तुम सौ मिलवैं कौ चहैं उत्कंठित है सोय ॥
दै कर्णन कर प्रभु रहत नारायण अभिराम । सार्वभौम काहे कहौ बचन अजोग्य अकाम ॥
संन्यासी जु विरक्त हम तिहि नृप दरसन सोइ । त्रिय दरसन सम है यहै विष कौ भछन जोइ ॥
श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटके —

निष्किञ्चनस्य भगवद्भजनोन्मुखस्य, पारं परं जिगमिषोर्भवसागरस्य ।

सन्दर्शनं विषयिणामथ योषिताञ्च, हाहन्त ! हन्त ! विषभक्षणतोऽप्यसाधु ॥२॥

भट्टाचार्य कहैं जु तुम सत्य बचन यह जोय । जगन्नाथ सेवग तऊ नृप भक्तोत्तम सोय ॥
कहैं जु प्रभु तौऊ नृपति काल सर्प आकार । दारमयी नारी परसि जिमि उपजतु जु विकार ॥
तथाहि तत्रैव—

आकारादपि भेतव्यं स्त्रीणां विषयिणामपि । यथाहेर्मनसः क्षोभस्तथा तस्याकृतेरपि ॥३॥

ऐसी बात हि फेरि हूं न्यावौ नहि सुख माहि । कहि हौ तुम जौ तव हमें इहां देखि हौ नाहि ॥
सार्वभौम भय पाय कैं गौ निज घर अभिराम । इही समैं आयौ नृपति श्री पुरुषोत्तम धाम ॥
श्री रामानंद राय जू आये गजपति संग । आय प्रथम हि श्री प्रभु हि मिले जु करि बहु रंग ॥
राय प्रणति कीनी प्रभुहि किय आलिंगण ताहि । विवि जन प्रेमावेस मधि क्रंदन करैं जु आहि ॥
श्री प्रभु जू कौ राय संग निरखि नेह व्यवहार । सकल भक्तगन मन भयौ चमत्कार सुख सार ॥
राय कहैं आज्ञा जु तुव नृप कौ कही जु सोइ । तुम इछा करि नृपति मम विषय छुडायौ जोइ ॥
कहौ जु हम हम तैं जु अब विषय होत है नाहि । तुव आज्ञा जौ होय तौ रहौ गौर पद माहि ॥
राजा आनन्दित भयौ सुनि कैं तुम्हारौ नाम । आसन तैं उठि मम कियौ आलिंगण अभिराम ॥
अति ही प्रेमावेस मधि भौ सुनिकैं तुव नाम । मम मस्तक कर धरि कहैं हित विशेष अभिराम ॥
तुम्हरी जो है जीवका तुम ही खावौ सोइ । सेवौ श्री प्रभु के चरण तुम निश्चिंत जु होइ ॥
हम हैं छार जु जोग्य नहि तिनके दरसन आहि । जीवौ ताकौ सफल है जोई सेवै ताहि ॥
प्रभु जु परम कृपाल तैं हैं ब्रजराज कुमार । देहैं दरसन अवसि मम काहू जन्म मभार ॥
जो तिहि की प्रेमार्ति हम देखी तुम में आहि । सो हम में नहि प्रीति है एक लेस हूं ताहि ॥
कहैं महाप्रभु जू तवै तुम हरि भक्त प्रधान । तुम सौ जो प्रीति हि करै भाग्यवान सो जान ॥
तुम सौ एतिग प्रीति जो भई नृपति कैं आहि । करि हैं अंगीकार हरि याही गुण करि ताहि ॥
तथाहि आदिपुराणे—

ये मे भक्तजनाः पार्थ नमे भक्ताश्च ते जनाः । मद्भक्तस्य च ये भक्ता स्ते मे भक्तमामताः ॥४॥

पुरी गुसाई भारती नित्यानन्द स्वरूप । चार गुसाई के चरण नुति किय राय अनूप ॥
जगदानन्द सुकन्दज आदि जितिक जनवृन्द । यथा जोग्य सब सौ कियौ मिलन महा सुखकन्द ॥

कहैं जु प्रभु तुम राय जू कौन कर्म किय सोइ । ईश्वर नहीं देखे प्रथम क्यौ ह्यौ आये जोय ॥
हृदय सारथी चरण रथ कहैं तहां यौ राय । जहां जाय लैं कैं तहां जीव रथी पहिराय ॥
करियै कहां जु मन इहां लैं आयौ सुख सार । जगन्नाथ के दरस मधि कीनी नाहि विचार ॥
वेगि जाव प्रभुजू कहैं करौ जु दरसन ताहि । करौ कुटुम्ब मिलाय ज्यौ घरमधि जाय जु आहि ॥
चले राय जू दरस हित आज्ञा ले कैं ताहि । प्रेम भक्ति की रीति तिहि को जन समुझै आहि ॥
बुलये भट्टाचार्य जू क्षेत्र आय नृप आहि । नुति करि भट्टाचार्य की पूछ्यौ तिति पुनि ताहि ॥
प्रभु पद मधि विनती करी मम हित लागि निरधार । भट्टाचारज जू कहैं कीनैं जतन अपार ॥
तेऊ नाहि करैं जु ते नृप कौ दरसन आहि । छाड़ै क्षेत्र जु फेरि कैं करिये विनती ताहि ॥
सुनि कैं राजाके मनहि उपज्यौ अति दुख सोय । करि विषाद तवही कहु लाग्यौ कहिवैं जोय ॥
पापी नीच उधार हित कीनी तिति अवतार । सुने जगाई तिन करैं माधवाई उद्धार ॥
तजि प्रताप रुद्र जु सकल करि है जग उद्धार । यही प्रतिज्ञा करि कियौ जान्यौ है अवतार ॥
तथाहि श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

अदर्शनीयानपि नीचजातीन् स वीक्षते हन्त तथापि नो मां ।

मदेकवज्जर्ज कृपयिष्यतीति निर्णय किं सोऽवततार देवः ॥५॥

करि हैं मेरौ दरस नहि यही प्रतिज्ञा ताहि । तिन विन छाड़ौ जीव मम यहै प्रतिज्ञा आहि ॥
श्री प्रभु जू कौ जो नही लहौ कृपाधन सोइ । कहा राज देह सु कहा सबै अकारण जोइ ॥
भट्टाचारज इतिक सुनि चिंता जुत भौ जोइ । राजा कौ अनुराग लखि भये जु विस्मित सोइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं देव करौ न विषाद । तुम पर निहचैं होयगौ श्री प्रभु कौ जु प्रसाद ॥
ते आधीन जु प्रेम कैं तुम्हरे प्रेम अपार । कृपा करावैगौ यहै तुम ऊपर निरधार ॥
रथ जात्रा के दिवस प्रभु सकल भक्त लैं सोइ । रथ आगैं नृत्य हि करैं प्रेमाविष्ट जु होइ ॥
प्रेम विवस करि पुष्पवन करैं जु प्रभु परिवेस । तिही काल तुम एकले तजि कैं नृप कौ वेस ॥
कृष्ण नाम कौ रटत पुनि पंचाध्याई चाय । श्री प्रभु जू के चरण सिर धरौ एक लैं जाय ॥
वाद्यज्ञान नहि तिहि समैं सुनत कृष्ण कौ नाम । आलिंगन करि हैं तुम हि जानि भक्त अभिराम ॥
आजु तिहारे प्रेम गुण श्री रामानंद राय । प्रभु जु कौ मन है फिर्यौ प्रभु सौ कहौ बनाय ॥
सुख उपज्यौ अतिही सबै सुनिकैं गजपति हीय । श्री प्रभु जू के मिलन हित यही मंत्र दइ कीय ॥
स्नान जु जात्रा होय कब पूछी भट्ट हि जोय । जात्रा के दिन तीन हैं भट्ट कहैं यौ सोय ॥
स्नानजु जात्रा देखि प्रभु पायौ अति सुख सोय । प्रभुजू कौ अनसमयमें भयौ विरह दुख जोय ॥
विरह गोपिका भाव करि प्रभु जू बिहवल होय । गये जु नाथ अलाल कौ सब कौ तजि कैं सोय ॥
पाछें जनगण सब गये प्रभु के चरणनि सोय । भक्त जु आये गौड तैं कियौ निवेदन जोय ॥

सार्वभौम लीलाचल हि आये प्रभु लै जोइ । प्रभु आये राजा निकट कछौ जाय कें सोइ ॥
 इही समें आये तहां गोपीनाथाचार्य । नृप कौ आसिप करि कहैं सुनौ जु भट्टाचार्य ॥
 गौड देस तें वंष्णव जू आये हैं सत दोय । श्री प्रभु जू के भक्त महा भागवत सोय ॥
 कहैं नृपति अति कृतहि हम करि हैं आज्ञा जोय । गेह आदि जो चाहिये दै हैं अधिकृत सोय ॥
 प्रभु के गण आये जितिक गौड देस तें जोय । इक इक भट्टाचार्य जू मोहि दिखावौ सोय ॥
 भट्ट कहैं अटालिका चहि कैं सब कौं चाहि । चिन्हत गोपीनाथ सब दरस करावैं आहि ॥
 हम काहु जानत न हैं जान्यौ चाहत जोय । गोपीनाथाचार्य जू सब हि चिन्हावैं सोय ॥
 एतिक कहि तीनौ जने चढ़े अटारी जाय । इही समें सब भक्तगण निकटहि निकसे आय ॥
 दामोदर जु स्वरूप जू औ गोविन्द जन दोय । सूक प्रसाद लै जात हैं जहां भक्तगण सोय ॥
 श्री प्रभु जू नें प्रथमहि दुहुनि पठायौ सोइ । नृपति कहैं चिनबौं हमें ए जु कोन हैं दोइ ॥
 भट्टाचार्य कहैं जु ए दामोदर जु स्वरूप । श्री प्रभु जू के ए जु हैं दुतिय रूप अनरूप ॥
 दुतीय गोविंद भृत्य ये सब कौं दे कैं आहि । माला पठइ है जु प्रभु गौरव करि कैं याहि ॥
 प्रथमहि सूक अद्वैत कौं पहराई जु स्वरूप । पाछें गोविंद दुतिय सूक तिहिं दिय आनि अनूप ॥
 आचारज कौं प्रणति तब किय गोविंद अनूप । जानत नहि अद्वैत तिहिं पूछ्यौ तब जु स्वरूप ॥
 श्री दामोदर जू कहैं ए गोविन्द अभिधान । श्री जुत ईश्वर पुरी के सेवग अति गुणवान ॥
 प्रभु सेवा करिवे दई पुरी जु आज्ञा याहि । याही ते प्रभु जू इन्हें निकट हि राख्यौ आहि ॥
 नृपति कहैं जिन कौं दई माला सो जन दोय । कहि आचारज है जु ये महामहंत जु कोय ॥
 कही आचारज नाम यहू श्री अद्वैताचार्य । पूज्यपात्र श्री गौर के सब ही के सिर धार्य ॥
 वक्रेश्वर श्री वास ए पंडित नामा दोय । विद्या निधि आचार्य ए पंडित गदाधर सोय ॥
 श्री युत रत्न पुरंदर जु आचरज ए दोय । ए श्री गंगादास ए पंडित संकर सोय ॥
 पंडित गुप्त मुरारि ए श्री नारायण नाम । ठाकुर श्री हरिदास ए पावन तीनौ धाम ॥
 है गे ये हरि भट्ट ए श्री नरसिंहानंद । वासुदेव दत्त ये जु हैं सिवानंद सुख कंद ॥
 गोविंद माथौ और श्री वासुदेव जु घोष । इन तीननि के कीरतन प्रभु पावत संतोष ॥
 आचारज नंदन जु ए राघव पंडित जान । नारायण श्री कांत ए पंडित हैं श्री मान ॥
 ए शुक्लावर ए जु हैं श्रीधर विजय जु दोय । पुरुषोत्तम संजय जु ए वल्लभ सेन जु सोय ॥
 वासी ग्राम कुलीन के सत्यराज श्री खान । रामानंद जु आदि सब ए देखौ विदिमान ॥
 मुहं द दास नरहरि जु श्री रघुनंदन अभिराम । चिरंजीव वासी खंड और मुलोचन नाम ॥
 केतिक कहिये देखिये जेतिक जन हैं जोय । सब ही श्री प्रभु गणनि के श्री प्रभु जीवन सोय ॥
 नृपति कहैं लखि कैं भयौ अचिरज मो हिय माहि । जिनकौ ऐसौ तेज औ देख्यौ कहैं जु नाहि ॥
 कोटि सूर्य सम सबनि कौं उज्ज्वल बरन जु सोय । कबहुं नहि देख्यौ जु यह मधुर कीरतन जोय ॥

ऐसो प्रेम जु नृत्य औ अस हरि धुनि जग माहि । कहैं नही देखी जु अस सुनी कहैं पुनि नाहि ॥
 भट्टाचारज जू कहैं ए सत तुम्हरे वैन । गौर सृष्टि यह प्रेम मय संकीर्तन रस ऐन ॥
 श्री प्रभु जू अवतार करि कीनों धर्म प्रचार । कृष्णनाम संकीर्तन जु कलि जुग धर्म सुसार ॥
 जग्य कीरतन करि करें आराधन पुनि ताहि । वहै सुमेधा साधु जन औ कलिहत जन आहि ॥

तथाहि श्रीमद्भागवते एकादशस्कन्धे—कृष्णवर्णं त्विपाकृष्णमिति श्लोकः ॥

नृपति कहैं सब शास्त्र करि गौर हैं जु श्री कृष्ण । तब काहे पंडित जु सब तिनतें हैं जु वितृष्ण ॥
 भट्ट कहैं तिनकी कृपा लेस होत है जाहि । सोई तिनकौं कृष्ण करि जानि सकैं जन आहि ॥
 तिनकी कृपाजु नाहि जिहिं पंडितही किन होय । लखिकें सुनिकें तिन्हें नहि ईश्वर मानें सोय ॥

तथाहि तत्रैव दशम स्कन्धे—तथापि ते देव पदाम्बुजद्वयमितिश्लोकः ॥

कहैं जु नृप सब विन लखें जगन्नाथ कौं जाइ । शची तनय के वासगृह सब ही चले जु धाय ॥
 भट्ट कहैं यह प्रेम की स्वाभाविक है रीति । सब प्रभु जू के मिलन हित उत्कंठित हिय प्रीति ॥
 पहिलें तिनकौं मिलि सबै आगे लै कैं ताहि । तिहि सँग श्री जगन्नाथ कौं लखिवे ऐहें आहि ॥
 कहैं नृप भवानंद के पुत्र जु वाणीनाथ । महाप्रसाद हि हाथ लै नर संग पांच जु साथ ॥
 श्री जु महाप्रभु के सदन कीनों गमन जु सोय । इतनौ महाप्रसाद यह चाखौ कारण कोय ॥
 भट्ट कहैं बहु भक्तगण आये जानें आहि । प्रभु इछा जु प्रसाद कौं लै जात जु ताहि ॥
 नृपति कहैं वृत्त छोर विधि तीरथ कौं जु विधान । ताहि नाहि काहे करें करें अन्न कौ पान ॥
 भट्ट कहैं तुम जो कहौ सोई है विधि धर्म । यही राग मग कौं जु है सूक्ष्म धर्म कौ मर्म ॥
 प्रभु परोक्ष आज्ञा जु है छोर उपोषण सोइ । आज्ञा प्रभु आगे यहै लेहु प्रसाद हि जोय ॥
 तहां आहि उपवास विधि जहां नही परसाद । प्रभु आज्ञा तिहिं त्याग मधि है अपराध विषाद ॥
 अधिक यहै श्री हस्त करि प्रभु जू परोसत सोय । एतिक लाभ हि छाड़ि कैं करें उपोषण जोय ॥
 पहिलें प्रभु मो कौं दियौ आनि प्रसाद हि जोय । प्रात सेज तें उठि कियौ अन्न पान मैं सोय ॥
 श्री प्रभु जु करि कैं कृपा प्रेरें हियौ जु जाहि । वेद लोक तजि धर्म सौं कृष्ण आसरें आहि ॥

तथाहि श्री मद्भागवते चतुर्थस्कन्धे—

यदा यस्थानुगृह्णाति भगवानात्मभावितः । स जहाति मति लोके वेदे च परिनिष्ठिताम् ॥८॥

उतरि अटारी तें तवें तब आये नृप सोय । काशी मिश्र हि अधिकृत हि दुहुनि बुलायौ जोय ॥
 गजपति जू आज्ञा दई तिनहि दुहुनि जन सोइ । आये श्री प्रभु के निकट श्री प्रभु के गण जोय ॥
 सब ही कौं स्वच्छंद गृह और प्रसाद जु सोइ । करवायौ दरसन स्वच्छंद जैसैं अटक न होय ॥
 श्री प्रभु की आज्ञा करी सावधान हैं दोइ । नहि आज्ञा तवहुं करें इंगित जानि जु सोइ ॥

तिन दोऊन कौं किय विदा एतिक कहि नृप आहि । सार्वभौम आये तहां देखन भक्त मिलाहि ॥
 गोपीनाथचार्य जू सार्वभौम जू सोइ । देखैं ठाढ़े दूर तें प्रभु जन संगम जोइ ॥
 सिंहद्वार के दाहिनें तजि सब वैष्णव वृन्द । गृह पथ काशी मिश्र कें कियौ गमन सुख कंद ॥
 इंदी समें श्री गौर जू निजगण जन के संग । मिले आय कें वैष्णवनि मारग मधि बहु रंग ॥
 कीनौ तब अद्वैत जू प्रभु पद वंदन आहि । कियौ महाप्रभु जू तव प्रेमालिंगन ताहि ॥
 दोऊ प्रेमानंद करि भये जु परम अधीर । समय देखि कें गौर जू भये कछू चित धीर ॥
 श्री निवास जू आदि किय प्रभु पद वंदन जोय । एक एक कौं प्रभु कियौ प्रेमालिंगन सोइ ॥
 एक एक सब भक्त कौं किय संभाषण जोइ । सब कौं लै कें गेह मधि कीनौ गमन जु सोइ ॥
 गेह जू काशी मिश्र कौ लघुस्थान है सोइ । तहां जु अनगन भक्त गण भये प्रमान हि जोइ ॥
 श्री प्रभु अपने निकट में सब कौं दीनौ वास । आपुन श्री कर सबनि दिय चंदन कुसुम सुवास ॥
 आये भट्टाचार्य औ आचारज प्रभु पास । जथा जोग्य सब सौं कियौ मिलन महासुख रास ॥
 गौर कहैं अद्वैत सौं मीठे वचन जु सोइ । पूरण भये जु आजु हम तुव आगम करि जोइ ॥
 श्री अद्वैत कहैं यहै ईस सुभाव निदान । यद्यपि पूरण आप हैं सब ऐश्वर्य प्रधान ॥
 भक्त संग करि तिहि तदपि है सुख कौ उल्लास । भक्त संग मधि नित्य प्रभु करें जु विवध विलास ॥
 वासुदेव कौ देखि प्रभु आनंदित है आहि । कहैं कछू तासौं तव अंग हाथ दै ताहि ॥
 सिसु हीतें जु मुकुंद जू यदपि हमारे संग । ताहू तें तुमकौं लखैं हमरे सुख जु अभंग ॥
 वासुकहैं जु मुकुंद तुव प्रथम लह्यौ संग जोय । तुव पद पंकज प्राप्ति जो पुनर्जन्म है सोय ॥
 छोटी हौं जु मुकुंद अब भौ मम जेठौ सोय । कृपापात्र तुव सब गुणनि तातें उत्तम जोय ॥
 फेरि कहैं श्री गौर जू हम जु तिहारे काज । ल्याये दक्षिण देस तें पुस्तक द्वै सुख साज ॥
 श्री स्वरूप के पास हैं लीजें लिखि कें ताहि । वासुदेव कें हरष भौ लखि जुग पुस्तक आहि ॥
 एक एक सब वैष्णवनि लिखि कें लीनी जोइ । क्रम क्रम करि पुस्तक जगत व्यापि गई द्वै सोइ ॥
 श्री वासादिक कौं कहैं प्रभु करि बहु हित जोय । तुम चारों भाइन जु कर हम जु विकाये सोय ॥
 कहैं तहां श्री वास जू क्यौ जु कह्यौ विपरीति । कृपा मोल करि भ्रात सब हैं जु तुम्हारे क्रीति ॥
 संकर लखि दामोदर हि श्री प्रभु कहैं दयाल । मेरी गौरव सहित हैं तुम पर प्रीति रसाल ॥
 संकर ऊपर प्रेम है केवल सुद्ध अभंग । राखौगे संकर सुखद याही तें मो संग ॥
 हम तें लघु संकर कहैं दामोदर जु स्वरूप । अब मेरो भाई बड़ौ तुमरी कृपा अनूप ॥
 सिवानन्द सौं ते कहैं प्रभु कौं तुम पर आहि । हम हूं तें अनुराग दृढ़ है जानत है ताहि ॥
 सिवानंद सेन जू सुनि प्रेमावेस जु होय । परि धरणी मधि दंडवत पढ़त पद्य रस भोय ॥

श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटक—निमज्जतोऽनन्त भवार्णवान्तरिचराय मे कूलमिवासि लब्धः ।

व्यापि लब्धं भगवन्निदानीमनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः ॥ ६ ॥

गुप्त मुरारि जू प्रथम ही प्रभु कौं मिल्यौं न सोय । मंदिर ते बाहिर पर्यौं है जु दंडवत होय ॥
 देखत नाहि मुरारि कौं दूढ़त प्रभु सुख साज । दौरे लैन मुरारि कौं आये साधु समाज ॥
 श्री मुरारि जू दसन मधि धरि तृण गुछा दोय । गयौ महाप्रभु जू के निकट दीन दैन्य करि होय ॥
 लखि मुरारि कौं गौर जू आये मिलि बें चाय । लागे कहन मुरारि जू भजि पाछें कौं धाय ॥
 महा अधम औ नीच हौं मम न छुवौ प्रभु धीर । तुव छुववे के जोग्य नहि यह पापीष्ट सरीर ॥
 गौर कहैं जु मुरारि जू ढाकौं दैन्य जु सोय । तुम्हरो दैन्य लखैं जु मम हीय विदीरण होय ॥
 एतिक कहि कें श्री प्रभु जू किय आलिंगण ताहि । करत अंग संमारजन निकट वसाइ जु सोइ ॥
 रत्नाचारज गदाधर औ पुरंदराचार्य । विद्यानिधि हरि भट्ट पुनि गंगा दासाचार्य ॥
 एक एक प्रति सबनि कौं प्रभु कीनौ गुणगान । फेरि फेरि आलिंगि करि कर्यौ बहुत सनमान ॥
 सब जन कौ सनमान करि प्रभु कें भौ उल्लास । देख्यौ नहि हरिदास कौं कहत कहाँ हरिदास ॥
 सची तनय जू दूर तें लखि हरिदास हि जोय । राजमार्ग के एक दिस पर्यौ दंडवत होय ॥
 मिलन धाम में आय कें प्रभु कौं मिले न जोय । प्रांत राज पथ के परे रहै दूरि ही सोय ॥
 आये तिनके लैन कौं सबै भक्त गण धाय । प्रभु तुम कौं चाहैं मिल्यौ चलौ वेगि चित चाय ॥
 श्री हरिदास कहैं जु मम नीच जात हौं छार । मंदर के तट गमन कौं मो कौं नहि अधिकार ॥
 जगन्नाथ सेवक परस मो कौं नाही सोय । पर्यौ तहां ही हौं रहौं यह मम बांछा होय ॥
 यहै कथा प्रभुकौं कही सब लोकनि तव जाय । सुनिकें श्रीप्रभु जू तव हि पायो सुख अधिकाय ॥
 काशी मिश्र तिही समें औ अधिकृत ये दोय । तहां आय कीनौं जु श्री प्रभु पद वंदन सोइ ॥
 सब वैष्णव कौं देखि कें सुखी बहुत भौ हीय । यथा जोग्य सबसौं मिलन आनंद करिकें कीय ॥
 कीयौ निवेदन गौर कें पायन मधि जन दोय । समाधान जन कौं करैं आज्ञा दीजै सोइ ॥
 सब साधन कौं है कर्यौ गृह निवास सुस्थान । सब कौं कर्यौ प्रसाद करि समाधान मनमान ॥
 प्रभु कहैं गोपीनाथ जू वैष्णव वृन्द मिलाय । जहां जहां बसिवे कहैं तहां तहां जाय ॥
 प्रसादान दीजै निकट बाणीनाथ हि जोय । करि है ए सब जननि कौ समाधान है सोय ॥
 यही जु मेरे निकट है पुष्पन कौ उद्यान । एक और में गेह है निर्जन परम निदान ॥
 कछु प्रयोजन है हमें दीजै गेह जु सोय । निभृति तहां बसि कें जु हम करि हैं सुमिरण जोय ॥
 मिश्र कहैं सब आप कौ मागौ कारण कोय । अपनी इछा लीजिये चाहौगे हैं जोय ॥
 आज्ञाकारी दास हैं तुम्हरे हम जन दोय । आज्ञा देहु जु करि कृपा जोई चाहौ सोय ॥
 तहां तव कीनी विदा एतिक कहि जन दोय । संग लै गोपीनाथ औ बाणीनाथहि सोय ॥
 दिखये गोपीनाथ कौं सब निवास के धाम । दीनौ गोपीनाथ कौं प्रसादान अभिराम ॥
 आये बाणीनाथ अन्न पिठा पनो लै धाय । आये गोपीनाथ गृह संस्कार करवाय ॥
 कहैं महाप्रभु जू तव सुनौ सकल जन वृन्द । सब ही निज निज वास कौं करिहौ गमन स्वर्णद ॥

करो जु चूड़ा दरस कौ जलनिधि बीच जु न्हाय । करि हौ भोजन आज सो तवै इहां ही आय ॥
नमस्कार करि प्रभु हि सब चले गेह अभिराम । गोपीनाथाचार्य जू सब निवास दिय धाम ॥
आये श्री हरिदास तब मिलिवे प्रभु सुखरास । करत नाम संकीर्तन हि हित करि श्री हरि दास ॥
प्रभु लखि कैं आगें परे दंडरीति है आहि । प्रभु जू आलिंगण कियौ तब उठाय कैं ताहि ॥
रोवत प्रेमावेस मधि तवै तहां जन दोय । प्रभु गुण सेवक विकल है प्रभु सेवक गुण सोय ॥
कहैं जु श्री हरिदास जू प्रभु न छुवौ मम देह । मैं अस परस जु नीच हौं पामर परम अछेह ॥
कहैं जु प्रभु तुमकौं छुवै पावन है वैं जोय । तुम्है पवित्र करैं जु जिहि धर्म न हम मधि सोय ॥
छिन छिन माहि करौजु तुम सर्वतीर्थ मधि न्हाय । छिन छिन माहि करौजु तुम जज्ञ और तप दान ॥
पहौ निरंतर रैन दिन चारचौ वेद निदान । द्विज संन्यासी से जु तुम पावन परम सुजान ॥

श्री मद्भागवते तृतीयस्कन्धे—

अहो वत ! श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्त्तते नाम तुभ्यं ।

तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्तुरार्याः ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥

गये पुण्य उद्यान मधि एतिक कहि लै ताहि । सोई गृह दिय अति निभृति वसिवै स्थानजु आहि ॥
करो नाम संकीर्तन रहिकैं धामजु याहि । हमकौ प्रति दिन आय कैं करि हौ मिलनजु आहि ॥
मंदिर के लखि चक्र कौ करि हौ तुम जु प्रणाम । इंही ठौर ऐ है तुम्है प्रसादान्न अभिराम ॥
नित्यानंद जगदानन्द दामोदर जु मुकुन्द । मिलि कैं सब हरिदास कौं पायौ बहु आनंद ॥
उदधि न्हाय कैं श्री प्रभु आये अपने धाम । अद्वैतादि गए जु सब उदधि न्हाय अभिराम ॥
जगन्नाथ जू कौ कियौ चूड़ा दरसन आय । आये श्री प्रभु के घरहि भोजन कर्यौ बनाय ॥
बैठार्यौ सबकौ प्रभु जु जोग्य क्रम धरि धाम । परि वेषन किय श्री करजु गौर हरी अभिराम ॥
अन्य अन्न आवै नहीं देत जु प्रभु कर सोय । इक इक पातर मधि दियौ भोजन त्रय जन दोय ॥
श्री प्रभु जू पायौ नहीं भोजन करत न कोय । उर्द्ध हस्त बैठे रहै सबै भक्त गण सोय ॥
श्री स्वरूप जू ने कियौ प्रभु हि निवेदन सोय । तुम नहि बैठौ गौर जू भोजन करैं न कोय ॥
तुम सँग जेतक रहत है संन्यासी जन सोय । गोपीनाथ आचार्य तिहि कियौ निमंत्रण जोय ॥
मिठा हेत प्रसाद लै बैठे हैं आचार्य । बैठि रहे तुम हेत करि पुरी भारती आर्य ॥
मीठा नित्यानंद लै करौ बैठि तुव सोय । जन परि वेषण करिहिगे हम तब लगि ह्यां जोय ॥
प्रसादान्न तब गौर दिय गौविंद के कर लाय । ठाकुर श्री हरिदास कौं पठ्यौ जतन बनाय ॥
लै करि सब श्री पाद कौं बैठे आपुन सोय । हरषित है आचार्य जू सब ही परोसत जोय ॥
श्री स्वरूप दामोदर जु श्री श्री जगदानंद । जन परिवेषण कौं करैं त्रय जन ए सुख कंद ॥
बहु विधि पीठा श्री पना किय भोजन भरि कंठ । हरि हरि बोले उच्च करि बीच बीच उत्कंठ ॥
भयो समापन भोजन जु कियौ आचमन चाय । पहिरायौ सब कौं प्रभु जु चंदन माल्य बनाय ॥

करिवैं सब विश्रामकौ गये जु अपने धाम । संध्या समय जु आय फिरि प्रभुहि मिले अभिराम ॥
लै करि सब कौं प्रभु गये जगन्नाथ के धाम । तहां महाशय कीरतन किय आरंभ अभिराम ॥
संकीर्तन आरंभ किय लखि कैं संध्या धूप । अधिकृत सब कौं आनि दिय चंदन माल्य अनूप ॥
करत कीरतन चारि दिस संप्रदाय जे चारि । शची तनय प्रभु गौर जू विच नाचत सुखधार ॥
द्वात्रिंशत करताल औ वाजत अष्ट मृदंग । भलैं भलैं कहि हरि धुनि हि करैं भक्त भरि रंग ॥
उठी कीरतन की महा मंगल धुनि तब जोय । ब्रह्म अंड भेद्यों जु भरि लोक चतुरदस सोय ॥
आये देखन हित सबै लीलाचल के लोय । अचिरज भौ उडिया नरनि निरखि कीरतन सोय ॥
बैठे तब श्री गौर जू जगन्नाथ के धाम । करि जु प्रदक्षिण नृत्य करि बोले अति अभिराम ॥
संप्रदाय चारों करैं आगै पाछे गान । गिरत समैं प्रभु कौं धरैं नित्यानंद सुजान ॥
अश्रु पुलक सब अंग में कंप स्वेद हुंकार । चमतकार सब लोक कैं लखि कैं प्रेम विकार ॥
जिमि पिचका धारा चलै नयन अश्रु की धार । स्नान कराये लोक सब चारि दिसा सुख सार ॥
नृत्य चक्रवत गौर जू करि केतिक छिन जोय । मंदिर के पाछे जु रहि करैं कीरतन सोय ॥
संप्रदाय चारचौ दिसा चारि उच्च स्वर गाय । तांडव नृत्य करैं जु विच नवद्वीप के राय ॥
करि कैं बहु छिन नृत्य कौं भौ थिर प्रभु सुख रूप । चारि महंतनि नृत्य कौं आज्ञा दर्ई अनूप ॥
संप्रदाय एक हि नचैं श्री अद्वैताचार्य । संप्रदाय दूजैं नचैं श्री नित्यानंद आर्य ॥
पंडित वक्रेश्वर नचैं संप्रदाय मधि आन । श्री निवास नाचत और संप्रदाय मधि जान ॥
करैं महाप्रभु दरस तब रहि कैं बीच जु आहि । तवै तहां ऐश्वर्य इक भयो प्रगट ही ताहि ॥
नृत्य गीत दिस चारि में करैं जितिक जन जोय । सबै लखैं हमरौ करैं प्रभु जू दरसन सोय ॥
नृत्य देखिवैं चारि जन प्रभु जू कैं अभिलास । बहु अभिलाष करैं तहां सो ऐश्वर्य प्रकास ॥
दरसन मधि आवेस लखि जानत केवल ताहि । काहे तैं चहुदिस लखैं यह नहि जानत आहि ॥
जैसैं भोजन पुलिन मधि करत कृष्ण सुख रूप । चहु दिस सखा कहैं चहैं हम ही ओर अनूप ॥
नृत्य करन हित जो सुजन आये निकट जु आहि । सबै महाप्रभु जू करैं दृढ़ आलिंगण ताहि ॥
महानृत्य संकीर्तन महा प्रेम पुनि सोय । लखि प्रेमानंद में वहै लीलाचल के लोय ॥
सुनि महिमा संकीर्तन गज पति धरणी पाल । चढ़्यौ अटारी तैं लखै सेवक सहित रसाल ॥
देखि कीरतन नृपति कैं अचिरज भौ सुखसार । उत्कंठा प्रभु मिलन हित वाढ़ी सबनि अपार ॥
नृत्य पूर्ण करि प्रभु लखे पुण्यांजलि अभिराम । आये चलि सब जननि लै श्री प्रभु जू निजधाम ॥
अधिकारी दिय आनि कैं बहु प्रसाद ततकाल । दियौ सबनि कौं बाटि कैं तहां जु ईस रसाल ॥
सब ही कौं दीनी विदा करिवे सयन जु आहि । करैं शचीनंदन सदा इही भांति लीलाहि ॥
जब लगि सब जन गण रहैं श्री जु महाप्रभु संग । प्रति दिन याही भांति करि करैं कीरतन रंग ॥
एतिक कह्यौ सु गौर कौ नृत्य सुगीत विलास । जोइ याकौ नर सुनै होय गौर कौ दास ॥

श्री जु रूप रघुनाथ के पायन की करि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सो लिखे ब्रज भाषाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे वेङ्ग कीर्तन विलासो नाम एकादस परिच्छेदः ॥

द्वादश परिच्छेद

श्रीगुडिचामंदिरमात्मवृंदै संमार्जनचालनतः सगौरः ।

स्वचित्तवच्छीतलमुज्ज्वलं श्रीकृष्णवेसोपयिकंचकार ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अन्दैत हिमांसु जय दास वर्ग सुखकंद ॥
पहिले दक्षिण देस तें जब प्रभु आये सोय । गजपति तिनके मिलन हित उतकंठित भो सोय ॥
पत्री दीनी कटक तें सार्वभौम के ठांह । जौ प्रभु आज्ञा होय तौ दरसन के हित जांह ॥
भट्टाचार्य लिख्यौ प्रभु आज्ञा भई न जोड़ । राजा तिनकौं फेरि कै पत्री पठई सोड़ ॥
श्री प्रभु जू के निकट हैं जिते भक्तगण ताहि । तिन सब सौं विनती करौ मेरे हित तुम चाहि ॥
तेई मोपै सद्य है सब दयाल अधिकाय । मेरे हित प्रभु के चरण करि हैं विनय वनाय ॥
तिन सब के जु प्रसाद करि मिलि हैं प्रभु पद सोय । विन प्रभु कृपा न भावही मोहि राज्य इहजोय ॥
जौ मोपै करि हैं नही कृपा गौर हरि सोय । प्राननि देहौं राज तजि हैहौं भिक्षुक सोय ॥
सार्वभौम पत्रीहि लिखि हिय अति चिंतित होय । गये भक्तगण के निकट लैकें पत्री सोय ॥
पहिले सब सौं मिलि कछौ विवरण नृपहिय आहि । पाछें कें पत्री वही सबकौं दई दिखाहि ॥
सबके मन विस्मय भयौ लिखिकें पत्री ताहि । गजपति नृप के भक्ति है इतीक प्रभु पद आहि ॥
सब ही भक्त कहैं जु प्रभु क्यौ न मिलि हैं ताहि । जो हम सबही कहेंगे दुख मानेंगे जाहि ॥
भट्टाचार्य जू कहैं चलौ जु सब इक वार । मिलिवे कौं कहियौ सुजनि कहियौ नृप व्यवहार ॥
ऐसै कहि लै सबनि कौं गये जु प्रभु के पास । कहिवे कौं सन्मुख सबै करै न वचन प्रकास ॥
गौर कहैं कहिवे कहा भौ सब आगम जोड़ । दीसत कछु चाखौ कछौ कहौ न कारण कोड़ ॥
नित्यानंद कहैं कछौ चाहैं तुमसौं जोय । सकैं न रहि विन कहैं पुनि कहैं हिये भय होय ॥
किये निवेद चहैं तुव जोग्य अजोग्य जु होय । जोगी भयौ चहैं नृपति विना मिलैं तुव सोय ॥
प्रभु कौ कोमल मन भयौ जद्यपि सुनि कें ताहि । तऊ कहैं बाहिर कछुक निठुर वचन पुनि आहि ॥
तुम सब कौ इच्छा यहै हम सब कौ लै सोय । एऊ राजा कौ मिले कटक जाय कें जोय ॥
परमारथ जाबौ जगत निर्दन करि है जोय । जगहं रह दामोदर-जु करि है भर्त्सन सोय ॥
हौं तुम सब आज्ञा जु करि नृपसौं मिलौं न आहि । दामोदर जब कहैं तब हौं मिलि हौं नृप ताहि ॥

दामोदर तब कहैं प्रभु ईस स्वतन्त्र सु होय । करिवौ अन करिवौ सबै गोचर तुम्हरे जोय ॥
कौन छुद्र हौं जीव तुम देहूँ आज्ञा आहि । देखैंहिगे हम सौं वह जु आपन मिलि हौं ताहि ॥
तुम सौं करैं सनेह नृप तुम सनेह बस आहि । तिहि सनेह करवाय है तुमकौं पर बस ताहि ॥
ईश्वर सब के तुम जु हौं जद्यपि परम स्वतन्त्र । हौं अपने जु सुभाव करि तऊ प्रेम परतन्त्र ॥
कहैं जु नित्यानंद जू ऐसौ जन है कोय । नृप सौं मिलन करौ कहैं तुम सौं ऐसैं जोय ॥
ऐसैं एक स्वभाव है अनुरागी जन जान । विन पायें निज इष्ट कें तजै सु अपने प्राण ॥
जाज्ञिक द्विज पतनी तहां है ताकौं जु प्रभान । पति आगे तिहिं कृष्ण हित छाड़े अपने प्राण ॥
तैसें ही कछु युक्ति करि करौ कछु जु विचार । तुम हूँ मिलौं न ताहि तिहिं रहै प्राण निरधार ॥
वहिर्वास इक देहु जो हिय कृपाल अति होय । प्राननि राखै पाय तिहिं तुम आसा करिजोय ॥
कहैं महाप्रभु तुम सबै परम विवेकी सोय । समाधान सोई करौ जोई भलै जु होय ॥
तब गोविन्द के पास तें प्रभु नित्यानंद आहि । एक जु लीनों मांगि कें वहिर्वास प्रभु ताहि ॥
वहिर्वास सोप्यो वहै सार्वभौम के पास । नृप कौं दियौ पठाय कें सार्वभौम वह वास ॥
नृप कौ मन हरषित भयौ वसन पाय के ताहि । पूजन करै जु वस्त्र कौ प्रभुस्वरूप करि आहि ॥
दक्षिण ते आये जबै श्री रामानंद राय । प्रभु संग रहिवे हित जबै नृपसौं कछौ वनाय ॥
नृप निदेस तिनकौं दियौ करि सन्तोष अपार । तबै कही मिलन हित की जौ प्रभु मनुहार ॥
श्री प्रभु-जू तुम पर करैं कृपा महाअधिकाय । मोहि मिलावनहित अवसि कहि हो हियहि दवाय ॥
प्रेम भक्ति प्रभु चरण मधि नृप की दई जनाय । बार बार ऐसैं कहैं समय प्रसंग हि पाय ॥
दोऊ जन आये जबै क्षेत्र एक ही संग । श्री रामानंद राय तब प्रभु सौं मिले सरंग ॥
महा निपुन व्यौहार मधि नृप मन्त्री श्री राय । नृप की कहि कहि प्रीति दिय प्रभु कौ हियौ दवाय ॥
रुद्रप्रताप न रहि सकै उत्कंठा करि आहि । रामानंद साधे प्रभु हि मिलिवे के हित ताहि ॥
रामानंद प्रभु चरण मधि कियौ निवेदन सोय । एक बार गजपति नृपहि चरण दिखाओ जोय ॥
रामानंद विचारि तुम कहौ कहैं प्रभु ताहि । नृप सौं कैसैं मिलि सकत है सन्यासी आहि ॥
नृप के मिले विरुक्त के दुहूँ लोक कौ नास । रहौ बात पर लोक की करै लोक उपहास ॥
रामानंद कहैं जु प्रभु तुम होई स्वतन्त्र । तुम कौ भय है कौन कौ तुम नही परतन्त्र ॥
प्रभु जू कहैं मनुष्य हौं है आश्रम संन्यास । मन बच क्रम व्यौहार मधि भै कौ हिये निवास ॥
मसी बिन्दु उज्ज्वल वसन दुरै न जैसैं सोय । अल्प छिद्र हूँ जती कौ गावैं सब ही लोय ॥
राय कहैं पापी किते किये शुद्ध तुम जोय । ईश्वर सेवक भक्त तुम गजपति राजा सोय ॥
कहैं जु प्रभु ज्यौं पूरण कलस दुग्ध कौ सोड़ । सुराविंद के गिरत ही करै परस नहि कोय ॥
है प्रताप रुद्र सु जद्यपि सकल गुणनि कौ धाम । ताकौं कीनौ मलिन है एक राज इहि नाम ॥
है जु तुम्हरे तऊ जो महा आग्रह याहि । मिलिबौ हम सौं आनि कै तौ तुम तनय जु ताहि ॥

आपु ही उपजै पुत्र हूँ वेद वचन यह जोइ । जानौ आपुन नृप मिल्यौ मिलै पुत्र कै सोय ॥
 तब तौ सब श्री राय जू कह्यौ जु नृप सो जाय । लै कें आये तनय तिहि प्रभु की आज्ञा पाय ॥
 नृपकौ सुत सुन्दर महा स्याम वरण छविऐन । बय किशोर दीरघ चपल अरुण कमल छलनेन ॥
 पीत वसन धारै जु अंग रत्न अलंकृत जोय । प्रभु कौ कृष्ण समरण कौ उद्दीपन भौ सोय ॥
 श्रीप्रभु जू कौ कृष्णकी भई जु सुधि लखि ताहि । तिहि मिलि प्रेमावेसमें कहन लागे प्रभु आहि ॥
 परम भागवत है यही दरसन देखें जाहि । ब्रज नृप सुत की होय सुध सकल जननि कें आहि ॥
 भये कृतार्थ हम अब कीनै दरसन आहि । ऐसैं कहि कें फेरि तब आलिंगन किय ताहि ॥
 नृप सुतकौ प्रभु परसि करि भयौ जु प्रेमावेस । जाड्य स्वेद कंपाश्रु पुनि अरु सात्विक जुविशेस ॥
 कृष्ण कृष्ण कहि नाचई करै जु रोदन आहि । श्लाघा करै जु भक्तगण देखि भाग्य बड़ ताहि ॥
 घेरे करायौ श्री महाप्रभु जू तबै जु ताहि । नित्य आय मिलि हौ हमें आज्ञा दीनी जाहि ॥
 विदा दई आये तवै नृप सुत लै कें राय । सुत चेष्टा राजा निरखि सुख पायौ अधिकाय ॥
 करि आलिंगन पुत्र कौ प्रेम मगन भौ जोय । साक्षात जु प्रभु कौ परस मनु तिहि पायौ सोय ॥
 तबही तें नृपकौ तनय भाग्यवान बड़ जोय । प्रभु जू के जन गणनि मधि भयौ एकजन सोय ॥
 इही भांति श्री महाप्रभु भक्त गणनि के संग । क्रीडा करै निरंतर हि संकीर्तन के रंग ॥
 प्रभु कौ करै निमंत्रणहि आचार्यादिक जोय । तिन तिन की भिक्षा करै भक्त गणनि लै सोय ॥
 इही भांति नाना रंगनि गये कितिक दिन सोय । आयौ श्री जगन्नाथ कौ रथ जात्रा दिन जोय ॥
 प्रभु जू काशी मिश्र कौ पहिले ई जु बुलाय । अधिकृत भट्टाचार्य औ वोलि लिये अति चाय ॥
 हसि कें श्री प्रभु जू कह्यौ तीन जननि सौं एह । गुंडिचा मंदिर मार्जन सेवा मांगी देहु ॥
 कहै जु अधिकारी सबै हम तुम सेवक जोय । हम कौ करनौ है वही जो तुम इच्छा होय ॥
 भयौ निदेस विशेष करि नृप कौ हम कौ जोय । प्रभु की इच्छा होय जौ वेगि ही कीजै सोय ॥
 सेवा मंदिर मारजन नहीं जोग्य तुव सोय । यह एक लीला करौ है मन में तुम जोय ॥
 अयें घट औ मार्जनी चाहिये बहुते ताहि । आनि देहु सब आजि ह्यां आज्ञा दीजै आहि ॥
 तब इक सत घट मार्जनी इक सत नूतन जोइ । अधिकृत दीनीं आनि कें प्रभु जु आगें सोइ ॥
 प्रभु प्रमात हि और दिन लै करि निज गण संग । श्री निज करिकें सबनिकें लेप्यौ चंदन अंग ॥
 दई सबनि कौ मार्जनी एक एक निज हाथ । आपुन श्री प्रभु जू चले लै निज गण सब साथ ॥
 गये जु मंदिर गुंडिचा करिवे मार्जन ताहि । लै करि पहिले मार्जनी कीनौ सोधन जाहि ॥
 मंदिर मधि ऊपर सकल कीनौ मार्जन जोय । सिंहासन कौ मार्ज पुनि भीति चहुंधा सोय ॥
 भीतर मंदिर के कियो मार्जन सोधन जोय । तैसें फिरि सोधन कियो श्री जगमोहन सोय ॥
 लोय चहुंधा भक्त सत करनि मार्जनी जाहि । आपुन प्रभु सोधन करै सबनि सिखावै आहि ॥

सौधें प्रेम हुलास करि गृह लै कृष्णहि नाम । कहै कृष्ण सब भक्तगण करै सु निज निज काम ॥
 रज धूसर तनु देखि ये अति ही सोभित आहि । कहं कहं जल अश्रु कौं करै सुमार्जन ताहि ॥
 कांकर कूरौ धूलि सब करि एकत्र बनाय । वहिर्वास मधि लेय कें वाहिर डारै जाय ॥
 इही भांति सब भक्तगण करि कें निज निज वास । वाहिर डारै धूरि वन हूँ कें परम हुलास ॥
 प्रभु जू कहै कितौ कियो किन्ही मार्जन जोय । तृण रज के परिमाण करि जानै परिश्रम सोय ॥
 सब के कूरे के किये बोझ एक ठां जोय । बोझ सबनि के तें भयौ प्रभु कौ अधिक जु सोय ॥
 अभ्यंतर इहि भांति करि कियो मार्जन सोय । दयौ सबनि कौं फेरि कें करि कें वांछि जु जोय ॥
 सूक्ष्म रज तृण कांकरी सबै दूरि करि जोय । प्रभु कौ अंतर पुर सबै सोध्यौ भलै जु सोय ॥
 सब जन संग लै दूसरें जब फिरि सोध्यौ आहि । मन में अति संतोष भौ प्रभु जु लै लखि ताहि ॥
 और भक्त शत नीर के शत घट भरि कें आहि । लै आये हैं प्रथम ही रहे समें को चाहि ॥
 ल्यावौ जल जबही कह्यौ श्री प्रभु जू सुख भोइ । तबही शत घट आनि प्रभु आगें धरै जु सोइ ॥
 प्रभु जू मंदिर कौ प्रथम किय प्रक्षालन जोय । ऊपर नीचै भीत गृह मधि सिंहासन जोय ॥
 खपग भरि भरि नीर के ऊपर कौ जु चलाय । तिहि जल करि उचै सबै धोई भीत बनाय ॥
 प्रक्षालन आपुन करै सिंहासन कौ आहि । श्री निज करि कें महाप्रभु करै मारजन ताहि ॥
 करै भक्तगण गेह मधि कौ प्रक्षालन जोय । करै मारजन मंदिरहि निज निज करि कें लोय ॥
 दैं हि महाप्रभु कें करहि केऊ जल घट आहि । कें ऊ छल करि देत हैं चरणनि ऊपर ताहि ॥
 कें ऊ दुरि करि करत हैं ताही जल कौ पान । मांगि लैं हि कें ऊ करै कें ऊ और निदान ॥
 गेह धोय जल छोडि दिय मोरी हूँ कें जोय । रखौ जु ताहि नीर करि भरि कें आंगण सोय ॥
 कियो मारजन गेहकौ निजनिज वसनहि ताहि । माज्यौ प्रभु निज वसन करि सो सिंहासन आहि ॥
 सत घट जल करि धोयवौ भयौ जु मंदिर ताहि । कीनौ मंदिर धोय कें मानौ निज मन आहि ॥
 नीर्मल सीतल चीकनौ कीनौ मंदिर जोय । जानौ हृदय स्व आपनौ वाहिर धर्यौ जु सोय ॥
 आवैं पूरण कुंभ लै इक शत जन जू ताहि । रीते घट लै जाहि इक और भक्त शत आहि ॥

कवित्त

नित्यानन्द औ अद्वैत भारती पुरी स्वरूप विना इन और सब नीर भरि लावई ।
 धका धकी भीर लागि गये किते फूटि घट नये घट लैं कें सत और जन आवई ।
 जल भरै धोवै गृह करै हरिनाम धुनि सुनि ये न आन कछु कृष्ण नाम गावई ॥
 मागें घट कृष्ण कहि दैंहि कृष्ण कृष्ण कहि प्रेम में मगन सब प्रभु मन भावई ॥

जोई जोई कहै सो कहै कृष्ण अभिराम । सब कामनि मधि भौ तहा संकेत जु हरिनाम ॥
 कहै जु प्रेमावेस मधि कृष्ण कृष्ण प्रभु नाम । करै एक ले प्रेम करि प्रभु सत जन कौ काम ॥

प्रचालन मार्जन करै मनु सत हाथनि सोइ । करै जाय प्रति जन निकट सिद्धा नीकें जोइ ॥
 भलौ काम देखें सु जिहि करै प्रसंसा ताहि । मन मानै नहि करै तिहि पंडित भर्जन आहि ॥
 भलौ कियो है तुम जु यह और हि सिखवौ जोय । भलौ काम याही सु विधि जैसे करै जु सोय ॥
 यह बात सुनि कै तवै सबै ससंकित होय । मन दै कर्म करै सबै भली भांति करि जोय ॥
 प्रच्छालन कीनौ तवै श्री जग मोहन जोइ । कियो भोग मंडप जु कौ पुनि प्रच्छालन सोइ ॥
 धोय नाट साला जु पुनि धौयौ आंगन चौक । विंजन साला आदि दै धोये सब लै ओक ॥
 चहुंघां मंदिर कै कियो प्रचालन प्रभु जोय । सब अंत पुर भली विधि धोयौ सब मिलि सोय ॥
 तिहीं समैं इक गौडिया सरल बुद्धि अति आहि । प्रभु जू के पद जुगल मधि दीनौ घट जलताहि ॥
 सोई जल लैकें जु तिहि आपु न पान जु कीय । प्रभु जू के तिहि देखिकें भयौ क्रोध दुखहीय ॥
 प्रभु कै यद्यपि भयौ है सब ही पर संतोष । सिद्धा हित कीनौ तऊ वाहिर तापर रोष ॥
 श्री स्वरूप गोस्वामी जू आनि कलौ प्रभु ताहि । यह देखौ तुव गौडिया कौ व्यौहार जु आहि ॥
 प्रभु के मंदिर बीच मम चरण धोय कै जोय । आपुन पान कियो जु इन लै करि कै जल सोय ॥
 है है मेरी कौन गति यही पाप करि जोय । एतिक करै विडंब मम तुम गौडिया जु सोय ॥
 तव स्वरूप गोस्वामि जू ग्रीव हाथ दै ताहि । राख्यौ मंदिर वाहरे दै करि धका जु ताहि ॥
 फेरि आय प्रभु चरण मधि कीनौ विनय अगाध । क्षमा सु करिवैं जोग्य है मूरख कौ अपराध ॥
 तव तौ प्रभु जू के मन हि भौ संतोष जु सोय । पंकती करि कै दुहुंघा वैठाये सब जोय ॥
 आपुन प्रभु वसी मधि कै अपने करि कै आहि । तृण कांटौ कूरौ जु सब वीनन लागे ताहि ॥
 कौन कितौ कूरौ सु सब करि है इक ठौ आहि । लैहै पेठापना रस तापैं थोरौ जाहि ॥
 इही भांति सब पुरी प्रभु कीनी सोधन जोय । सीतल निर्मल अति करी जानौ निजमन सोय ॥
 जब ही छोडि प्रनालिका पानी दियो वहाय । मानौ एक नई नदी मिली उदधि कौ आहि ॥
 इही भांति पुर द्वार औ जितौ अग्रपथ आहि । सब ही सोधैं कौन करि सकै जु वरनन ताहि ॥
 सीतर बाहिर सुद्ध किय श्री नृसिंह कौ धाम । कीनौ नृत्यारंभ तव छिन इक करि विश्राम ॥
 करै कीरतन चहुंघां भक्त वृन्द जे ताहि । मध्य नृत्य श्री प्रभु करै मत्तसिंह सम आहि ॥
 स्वेद कंप वैवर्ण्य पुनि पुलकि और हुंकार । निज अंग ध्वं आगैं चलै महा अश्रु की धार ॥
 चहुं ओर जे भक्तगण धोये तिनके अंग । जानौ सावन मास मधि वरपैं मेह अभंग ॥
 महा उच्च संकीरतन पूरित नभ किय ताहि । प्रभु के उद्धट नृत्य करि भूमि कंप भौ आहि ॥
 श्री स्वरूप कौ गान अति उच्च सदा प्रभु भाय । नृत्य करै उदंड अति गौर राय सुख छांय ॥
 इही भांति कै कितिक छिन नृत्य जु करिकैं जोय । प्रभु जू ने विश्राम किय समय जानिकैं सोय ॥
 प्रभु जू श्री आचार्यकौ श्री गुपाल अभिधान । नृत्य करण हित ताहि दिय आज्ञा श्रीभगवान ॥
 नाचत प्रेमावेश मधि भयौ मूरछित जोय । गिरथौ भूमि मधि ता समैं होय अचेतन सोय ॥

हरवराय आचार्य जू लियो अंक भरि ताहि । स्वास विना तिहि देखि कै भये विकल अति आहि ॥
 पडि कै मंत्र नृसिंह कौ जल छीटें दै सोय । फाटि जाहि ब्रम्हांड जिहि शब्द सुहुंकुत होय ॥
 कीनै जतन अनेक हूं भई तउ न संभार । आचारज कंदन करै अरु सब भक्त अपार ॥
 तवहि महाप्रभु तिहि हियें दीनौ हाथ जु आहि । उठि गुपाल यौ उच्च सुर करि कै बोले ताहि ॥
 भौ गोपालदास जु तवै चेतन सुनत ही सोय । हरि हरि कहि नृत्यहि करै सबै भक्तगण जोय ॥
 यह लीला वरणी सुबहु श्री वृंदावन दास । याहीतें संछेप करि कियो कथन हम तास ॥
 छिन इक करि विश्राम प्रभु हियें भरे रस रंग । जाय सरोवर करी जल क्रीडा भक्तनि संग ॥
 तीर आय पहिरे सबनि सूके वसन जु सोय । करि प्रणाम नरसिंह कौ गये जु उपवन जोय ॥
 बैठे प्रभु उद्यान मधि लै भक्तनि की पांति । आये वानीनाथ तव लै प्रसाद बहु भांति ॥
 तुलसी कासी मिश्र पुनि एजन दोय प्रधान । जितनौ भक्षण करि सकैं जन सै पांच प्रमान ॥
 अन्न तितौ पेठा पना सब ही दियो पठाय । ताहि देखि संतोष भौ प्रभु के हिय अधिकाय ॥
 पुरी गुंसाई महाप्रभु भारति ब्रह्मानन्द । आचारज अब्दैत औ प्रभु श्री नित्यानंद ॥
 रत्नाचारज गदाधर निधि श्री वासाचार्य । राघव वक्रेश्वर जु पुनि संकर न्यायचार्य ॥
 बैठे भट्टाचार्य जू प्रभु की आज्ञा पाय । प्रभु ऊंचे बैठे इतौ लै करि जन समुदाय ॥
 ताके तर ताकें तरैं इही अनुक्रम जोय । बैठे जन उद्यान भरि भोजन करिवैं सोय ॥
 प्रभु जू कहि हरिदास तव छिन छिन टेरें ताहि । रहि सुदूर हरिदासयों करै निवेदन आहि ॥
 प्रभु प्रसाद भक्तनि सहित करौ जु अंगीकार । जोग्य नय न संग बैठिवैं हौं जु तुच्छ अतिछार ॥
 पाछैं मोहि प्रसादलै दैंहैं गोविंद आहि । फिरि न बुलायौ ताहि प्रभु जानि हिये कौ भाय ॥
 श्री स्वरूप गोस्वामि जू पुनि जगदानंद साथ । दामोदर काशीश्वर जु अरु पुनि गोपीनाथ ॥
 संकर वाणीनाथ जे परसे सातहि भक्त । बीच बीच हरि धुनि करै भक्त जूथ अनुरक्त ॥
 पहिलैं कृष्ण कियो पुलिन भोजन जैसे आहि । प्रभु के मन में सुधि भई सोई लीला ताहि ॥
 जद्यपि प्रेमावेश करि भौ अधीर प्रभु सोय । कीनौ थिर प्रभु मन तऊ समय जानि कै सोय ॥
 हमैं देहु प्रभु कहैं यौ लफरा व्यंजन जोय । पिठापना गुटिका अमृत जनगण देहु सोय ॥
 जानैं प्रभु सर्वज्ञ जिहि जाही में रुचि जोय । श्री स्वरूप द्वारा जु तिहि घावैं तिहिं तिहिं सोय ॥
 चहुंघा जगदानंद फिरै सबनि परोसत जोय । प्रभु पातर मधि जौ भलौ देय अचानक सोय ॥
 देवें मधि यद्यपि करै प्रभु जू तापर रोस । तौऊ छल करि देंन मधि दियें तिन्हैं संतोस ॥
 फेरि आय तिहिं द्रव्य कौ करै निरीक्षण सोय । तिहिं भयकरि प्रभु जू करै भजन कछु इक सोय ॥
 विन पाये करि है जु यह जगदानंद उपवास । ताकें आगें खाय कछु मन में यही जु वास ॥
 श्री स्वरूप मीठौ भलौ लै प्रसाद करि जोय । आगें करिकें दंडवत करै निवेदन सोय ॥
 थोरो आस्वादन करौ यह प्रसाद जो आहि । जगन्नाथ कैसें कियो देखौ भोजन याहि ॥

ऐसे कहि आगे करै कहुक समर्पन जोय । तिहि सनेह करि प्रभु कछु करै जु भोजन सोय ॥
 इही भांति दोऊ जन करै जु बारवार । अचिरज दुहुँ जु भक्त की यह सनेह व्योहार ॥
 प्रभु जू महाचार्य की बैठायो निजपास । लखि सनेह दुहुँ भक्त की सार्वभौम हिय हास ॥
 ले उत्तम जु प्रसाद प्रभु सार्वभौम की जोय । भोजन करिचार्य जु फिरि फिरि सनेह करि सोय ॥
 गोपीनाथचार्य जू ले प्रसाद रस ऐन । दैके महाचार्य की कहै जु मधुर बेन ॥
 कहाँ जु महाचार्य की पहिले जड व्योहार । कहाँ यहै आनंद परम करि देखौ जु विचार ॥
 महाचार्य कहै जु ही ताकिंक महा कुपुडि । तुव प्रसाद करि भई मम इहि संपति की सुद्धि ॥
 एक महाप्रभु विन कहं नही दयामय कोय । ऐसी कौन जु है करै काकहिं गरुड़ जु सोय ॥
 संग सुखाल ताकिंकनि के हाव हाव किय याहि । कहि ये कृष्ण हरी सदा ताही मुख अब आहि ॥
 कहाँ बहिरुख ताकिंक जु सिष्य गणनि के संग । कहाँ यहै सत संग सुख सुधा समुद्र तरंग ॥
 कहैहु प्रभु तुव कृष्ण मधि प्रीति सदा की जोय । हम सबके तुव संग करि भई कृष्ण मति सोय ॥
 महिमा भक्त वदायये अरु भक्तनि सुख दें । और महाप्रभु की जु सम है जु त्रिलोकी में न ॥
 एक एक सब भक्त के तब प्रभु ले ले नाम । धावीं पिठापना सबनि करि प्रसाद अभिराम ॥
 नित्यानंद अद्वैत जू बैठे एक ठां जोय । दोऊ जन क्रीडा कलह लागे करवें सोय ॥
 श्री अद्वैत कहै जु अवभूत संग इह पाति । भोजन किये जु कौन गति है ही जानि न जाति ॥
 प्रभु ती संन्यासी तिन्हें हानि नाहि नें कोय । अन्न दोस करि जती की दोस नाहि कछु होय ॥
 अन्न दोस नहि जती की कहें न यहै प्रमान । हीं गृहस्त द्विज मोहि यह दोसस्थान निदान ॥
 सीलाचार सु जन्म कुल नहि जानिये जाहि । एक पंकति ताके जु संग अनाचार बड़ आहि ॥
 नित्यानंद कहै जु तुम ही अद्वैताचार्य । सो अद्वैत जु बाधई सुद्धि भक्ति की कार्य ॥
 ताते तुव सिद्धान्त की संग करै जन कोय । एक वस्तु विन दुतिय की माने नाहिन सोय ॥
 ऐसे तुम संग मम मयी एक ठां भोजन जोय । नहि न जानिये इह जु मम तुम संग कैसे होय ॥
 दोहं जन इहि विधि करै बोला बोली जोय । मारा मारी जिमि करै व्याज स्तुति ही होय ॥
 तब प्रभु सब वैष्णवनि की ले ले नाम जु जाहि । दयाव प्रसाद कृपा अमृत सींचे सबही आहि ॥
 हरि हरि धुनि करिके सबे डटे प्रसाद जु पाय । मर्त्य लोक अरु स्वर्गहं गयेहु तिहि धुनि छाव ॥
 तब महाप्रभु सबे निज भक्तनि की गण जोय । निज करिके दीनी सबनि चंदन माला सोय ॥
 तब स्वरूप जू आदि दे परसैया जन सात । गृह मधि बैठि प्रसाद किय भोजन आनंद सात ॥
 प्रभु जू की अवसेस धरि राख्यो गोविंद जोय । दीनी ले हरिदास की तामें ते कछु सोय ॥
 गोविंद ये ते मागि लिय सब भक्तगण जोय । पायो गोविंद आप तब अज प्रसाद जु सोय ॥
 प्रभु स्वर्ग ईश्वर करै नाना लीला वाम । घोषा पखाला सु कीय इही लीला की नाम ॥
 जगन्नाथकी और दिन नयनोत्सव जिहि नाम । मयी महोत्सव जननि की प्राननि सम अभिराम ॥

प्रभु विन देखे दुखी जन पल दिवस सीं सोय । जगन्नाथ दरसन मये आनंद मयी जु जोय ॥
 ले के प्रभु सब भक्तगण हिय आनंद अधिकाय । जगन्नाथ दरसन हि हित चले वेगि अकुलाय ॥
 आगे काशीश्वर चले भीर निवारन सोय । पाछे गोविंद पात्र जल ले के चले जु सोय ॥
 पुरी भारती विवि चले प्रभु के आगे सोय । श्री स्वरूप अद्वैत जू आय पास जन दोष ॥
 चले जाय पाछे निकट और भक्त समुदाय । जगन्नाथ के भवन मधि मये मरे हिय चाय ॥
 सरजादा लंपन करे दरसन लोभी होय । करे भोग मंडप हि जे श्री मुख दरसन सोय ॥
 प्रभु जू के आतुर तृपित नयन भ्रमर जुग जोय । पीवे अति आसक्ति सीं हरि मुख पंकज सोय ॥
 सोभित प्रफुलित कमल से मैन ऐन जुग नैन । मणि दर्पनलीं भलमली गंडनि दूति छवि ऐन ॥
 जानौ कुसुम बंधूक ये सुन्दर अधर सुरंग । मंद हसनि दूति की लसनि तामें अमृत तरंग ॥
 श्री मुख सुन्दर माधुरी छिन छिन बढ़ै जु सोय । कोटि कोटि जन नैन अलि करे पान रस जोय ॥
 ज्यों ज्यों पीवे त्रिपासीं वाढ़े छिनछिन आहि । अनतन जाहि नैन अली तजि मुख अम्बुज ताहि ॥
 इही भांति श्री महाप्रभु ले के जन गण संग । कीन्हो है मध्यान्ह लीं श्री मुख दरसन रंग ॥
 स्वेद कम्प अरु अश्रुजल यहै निरंतर आहि । करे सु दरसन लोभ करि प्रभु संवरन सु ताहि ॥
 मधि मधि लागे भोग जब मधि मधि दरसन होय । करे प्रभु संकीरत समै भोग के जोय ॥
 दरसन के आनंद मधि प्रभु सब विसरै आहि । ले आये मध्यान्ह लखि प्रभु कीं जन गण ताहि ॥
 हूँ है प्रातः काल हीं रथयात्रा निज सोय । भोगलगायीं सेवकनि करि के दूनी जोय ॥
 कक्षी गुंडिचा मार्जनहि करि संक्षेप जु आहि । कृष्ण भक्ति की अधम हूं पावे लखि सुनि ताहि ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण रज आस । चरितामृत चैतन्य की कहै कृष्ण की दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखे ब्रजभासाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे वृजभाषायां गुंडिचागृहभाजनं नाम द्वादश परिच्छेदः ॥

त्रयोदश परिच्छेदः

सजीवात् कृष्णचैतन्यः श्रीरथामे नतर्त्त यः । येनासीजगतां चित्रं जगन्नाथोऽपि विस्मितः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांशु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ॥
 जय सब सोता गण सुनीं करिके एक मन सोय । रथयात्रा की नृत्य प्रभु परम मनोहर जोय ॥
 महा प्रभु जू और दिन सावधान हिय होय । गण संग उठि किय रैन मधि कृत्य स्नान सुजोय ॥
 पांडु विजे के देखिबे कीनीं गमन सु जोय । जगन्नाथ जात्रा करी तजि सिंहासन सोय ॥

आपुन रुद्रप्रताप नृप सेवक गण लै आय । करवायौ दरसन विजय प्रभु के जन समुदाय ॥
 नित्यानन्द अद्वैत जू सँग सब जन समुदाय । देखें ईश्वर गमन प्रभु हिये महा सुख पाय ॥
 पंडा गण सुबलिष्ठ अति जानौ मद गज सोय । करें विजय जगनाथ जू कर सौं कर गहि सोय ॥
 तिहि अंस अवलंबन करें कितेक पंडा आहि । कितेक पंडा धरत हैं श्री पद पंकज ताहि ॥
 मोटी दृढ़ कटि तट बंधि डोरी रेसम आहि । दुहुं दिसि तें जु उठावही धरि पंडा गण ताहि ॥
 ऊंचे दृढ़ तकिया सुसब ठांव ठांव धरि जोय । तकिया तें तकिया जु इक गमन करावैं सोय ॥
 तकिया प्रभु पद घात करि टूक टूक है सोय । जाय तहां उडि रुई तिहि सन्द चंड अति होय ॥
 विश्वंभर जगनाथ तिहि सकै चलाय जु कोय । अपनी इच्छा सौं चलैं करत विहार जु सोय ॥
 महा प्रभो जय जय सुकहि कहैं भक्त धुनि जोय । कोलाहल वाजे नवहु कछु नहि सुनियें सोय ॥
 तब प्रताप रुद्र जु करें आपन सेवन जोय । लै सुवर्ण मार्जन करें पथि सो मार्जन सोय ॥
 पुनि मारग कौ छिर कई लै चन्दन जल आहि । राज्यासन बैठे करें घटि सेवा इमि ताहि ॥
 करें सुसेवन तुच्छ यह हूँ कैं उत्तम जोय । याहि तें जगन्नाथ की कृपा हि भाजन होय ॥
 पायौ सुख श्री महाप्रभु सो सेवा लखि ताहि । ताही सेवा करि लही तिहि प्रभु कृपा सु आहि ॥
 अचिरज लोकनिकौ भयौ लखि रथ रचना ताहि । रथ आकार सुमेर की सवै हेम मय आहि ॥
 सत सत लागे चौर जिहि दर्पन उज्ज्वल आहि । उपर पताका सत लगी विमल चदौवा ताहि ॥
 बाजें किंकिनि घृघूरु घंटा नाद सुहोय । नाना चित्रित पटवसन रथ जु विभूषित होय ॥
 रथ ऊपर लीलाहि करि चढ़े जु ईश्वर सोय । चढ़े सुभद्रा हलधर सु ओर दिव्य रथ दोय ॥
 पंद्रह दिन ईश्वर महा लक्ष्मी लै कैं संग । तिहि सँग रहि एकान्त मधि करें सुक्रीड़ा रंग ॥
 श्री संमति लै भक्त सुख देवैं कौं जु अपार । रथ चढ़ि आये बाहिरें करिवे कौं जु विहार ॥
 सुच्छिम उज्ज्वल बालुका मारग पुलिन समान । दुहुंघा पंकति सघन तरु जनु वृन्दावन भान ॥
 जगन्नाथ कीनौ गमन रथ पर चढ़ि कै जोय । दुहुं ओर देखत चलैं आनन्दित मन होय ॥
 रथहि चलावे गौड सब करिके अति आनन्द । चलैं वेगि रथ एक छिन चलैं एक छिन मंद ॥
 ठाढ़ौ हूँ कैं रहै नहि चलैं चलायैं सोय । प्रभु ईच्छा सौं रथ चलैं चलैं न बल करि कोय ॥
 तब महाप्रभु आय सब लै निज गण समुदाय । श्री कर पहिराई सवनि माला चंदन लाय ॥
 परमानन्द पूरी जु श्री भारति ब्रह्मानन्द । श्री कर के चन्दन हि लागि बाढ्यौ अति आनन्द ॥
 आचारज अद्वैत जू अरु प्रभु नित्यानन्द । श्री कर पंकज परस रस भये दुहुं आनन्द ॥
 कीरतनीया गण दर्ई माला चन्दन जोय । श्री स्वरूप श्री वास जू जहां मुख्य जन दोय ॥
 संप्रदाय भौ चारि चौबीस गवैया जोय । द्वै द्वै तहां मृदंगिया भये आठ जन जोय ॥
 तब महाप्रभु जू तहां करि मन में जु विचार । मुख्य गवैया बांटिकें संप्रदाय किय चारि ॥

नित्यानन्द अद्वैत औ वक्रेश्वर हरिदास । चारि जननि आज्ञा दर्ई करिवैं नृत्य विलास ॥
 संप्रदाय पहिलौ तहां कियौ स्वरूप प्रधान । और पांच जन पास तिहि गायन दिये सुजान ॥
 श्री नारायण दत्त तहां दामोदर गोविन्द । राघव पंडित और पुनि श्री गोविन्दानन्द ॥
 आज्ञा दी तब नृत्य हित श्री अद्वैतहि जान । संप्रदाय कीनौ दुतिय अरु श्री वास प्रधान ॥

कवित्त

गंगादास हरीदास श्री मान औ शुभानन्द श्री राम पंडित तहां नाचैं नित्यानन्द हैं ।
 वासुदेव गोपीनाथ गावैं है मुरारि जहां कियौ है मुकुन्द मुख्य तीजौ सो अमंद हैं ।
 श्री कान्त वल्लभ सेन और जन दोय तहां नाचैं ब्रह्म हरिदास नाम सुख कंद हैं ।
 गोविन्द घोष प्रधान कियौ और संप्रदाय हरिदास विष्णुदास राघव सो चंद हैं ॥
 माधव औ वासु दोऊ भाई और तहां नाचैं पंडित वक्रेश्वर जू भक्त रस कन्द हैं ।
 कुलीन ग्राम के गवैया तिनकौ है समाज एक न्यारौ नाचैं तहां राय रामानन्द हैं ।
 और एक सम्प्रदाय सांति पुर वासिनि कौ तहां मुख्य श्री आचार्य भक्त उद्भूत हैं ।
 तहां श्री अचुतानन्द नृत्य करें और सब गावैं सुख सिंधु भीजे सुरनि अमंद हैं ॥

दोहा

संप्रदाय जो खंड कौ न्यारौ कीर्तन ताहि । नरहरि तहां जु नाचैं श्री रघुनन्दन आहि ॥
 संप्रदाय जगनाथ कैं आगैं गावैं चारि । संप्रदाय द्वै दुहुंघा इक पीछे रस सार ॥
 संप्रदाय संतनि सुमधि चौदह वजै मृदंग । जिहि धुनि सुनि सब वैष्णव भये मत्त रस रंग ॥
 भक्त वादरनि मिलि भई मेघ घटा रससार । वरसैं कीरतन अमृत संग नैन जल धार ॥
 उठी कीरतन धुनि महा त्रिभुवन छाया जाहि । बाद्यादिक जौ और धुनि कछु न सुनियें आहि ॥
 हरि हरि कहि बोलैं जु प्रभु कीनी सक्ति प्रकास । एक समें ही में करें सातौ ठां जु विलास ॥
 संप्रदाय मधि इही प्रभु हैं सब कहैं विचार । और ठौर जाय जु नहीं हम पर दया अपार ॥
 प्रभु की शक्ति अचिन्त्य करि सकैं न लखि तिहि कोइ । अंतरंग जानैं भगत सुद्ध भक्ति जिहिहोय ॥
 जगन्नाथ हरषित महा देखि कीरतन ताहि । रथ राख्यौ ठाढ़ौ सुकरि लखि संकीर्तन आहि ॥
 श्री प्रतापरुद्रहि भयौ अचिरज परम सुजोय । देखत ही राजा विवश भयौ प्रेम मय सोय ॥
 काशी मिश्रहि नृप कहैं प्रभु की महिमा ताहि । काशी मिश्र कहैं जु तुव भाग्य सीम नहि आहि ॥
 सार्वभौम सँग नृप करें सेंना बेनी जोय । चोरी श्री चैतन्य की और न जानैं कोय ॥
 जाके ऊपर कृपा तिहि जानि सकैं सो ताहि । ब्रह्मादिक हूँ कृपा बिन जानि सकैं नहि जाहि ॥
 नृप कैं सेवा तुच्छ लखि प्रभु मन हरषित जोय । पायौ तिही प्रसाद करि दुरौ जु दरसन सोय ॥
 प्रगट मिलैं न करें इती पीछे कृपा जु सोय । यह माया चैतन्य की वृत्ति सकैंसौ कोय ॥

सर्ववीर काशी भिन्न दोऊ महाशय राजा ये प्रसाद देखि भये चकित निदान हैं ।
 इही मांति लीला प्रगटार्ह कोऊ छिन निज सक्तनि नचावैं तहाँ करें आप गान हैं ।
 कबू एक सुनि होय कबू बहुसुनि प्रभु शक्ति की प्रकारैं करि कार्य अनुमान हैं ।
 लीला रस भाँक रहै प्रभु की न आप सुनि जानि इच्छा लीला शक्ति करें समाधान हैं ॥
 पहिले जो रागादिक लीला करी वृन्दावन यी अपूर्व लीला करें सौर बार बार हैं ।
 वक्त गण देखें ताहि जानें नहीं और यारें हैं प्रमान सागवन शास्त्र वेद सार हैं ।
 याही मांति महाप्रभु करि नृत्य रस सब दिये हैं बहाय लोक प्रेम रस थार हैं ।
 यह कही कृष्ण रस चढ़िबो सु आगे जिहि प्रभु जू नचावैं वक्त गण ये अपार हैं ॥

रोहा

जगज्जय सुहिचा गमन आगे सुनी सुआदि । नृत्य कियो जिहि मांति के प्रभु जू आगे ताहि ॥
 जब प्रभु जू की मज भयो आप नृत्य हिन जोय । संगदाय सानी तब किये एक ठाँ सोय ॥
 श्री जियाय रामाद रघु गोविंद और सुहृद । गोविंदानंददास हरि साधव अरु गोविंद ॥
 श्री हरद जू नृत्यहिन जब प्रभु जू की दीय । श्री स्वरूप जू के जू सँग तब ये भव जन दीय ॥
 यह मांति दर्शो जन प्रभु जू के सँग पाय । अरु चहुँ दिशि गारें खरे संगदाय भरि साय ॥
 करि दंडवत जोरि के प्रभु जू दोऊ हाथ । स्तुति करें ऊँचे वदन देखें श्री जगनाथ ॥

समाधि—जही प्रह्लाद देवाय गोप्रासाद दिनाय च । जगदिनाय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२॥

जयति जयति देवी देवकीमन्दोदरी जयति जयति कृष्णो वृष्णवर्षाप्रदीपः ।

जयति जयति मेघरासमलः कोमलोगी जयति जयति पृथ्वीमागमाशो मुकुन्दः ॥

जयति जन निवासी देवकी जन्मवासी यदुवरपरिकल्पितोमिरस्यजयम् ।

शिवरघुचिन्मलः सुखिन श्री सुखिन प्रजपुत्रनिवासो बडोयन्कासवेव ॥

समाधि—जहाँ भियो मय जयति मांति बैरयो न शूद्रो नाई बगौ न च गृहपति नो जनस्त्री यमिनी ।

चिदु दीप्तिप्रसिद्धपरमानन्दपुण्योभूतायै गोपीमर्तुः पदकमलयो योगदासानुवासः ॥

इसी यदि है चरि हूँ किय प्रणाम रसवान । हाथ जोरि के मजगण वन्दे श्री मगवान ॥
 कबु हरद सुनृत्य मांति करिके अलि रुंकार । फेरी फिरें जू यावली जिमि आलान अकार ॥
 नृत्य भये जरे जरे पर प्रभु की पद तल जोय । उम मग ही जू करें तहाँ सागर गिरि जुन सोय ॥
 कबु कबु देवकीना कय पुलक हम नीर । सर्व हय श्री देव्य इन नाजा भाव अचीर ॥
 भिरे चहलै भाव है जाय भूमि गदि जोय । जानी लोटे भूमि मधि सुवरन परवन सोय ॥
 कबु की कियानन्द जू हाथ पसरि दीय । आस पास दीरे फिरें प्रभु की चरिबे सोय ॥



पार्षदगणों के बीच संगीतनृत्योत्सव रत्नाञ्जली श्रीगोरोचरेव

जु आटा अलपण की बड़े कपडाल खोप ।
 सब के लीजे सब सकल काख पाछ जे सोच ॥

प्रभु पाछें अद्वैत जू फिरें जु करि हुंकार । हरि बोलो बोलो हरी कहैं जु बारंवार ॥
 लोक निवारण हित भये मंडल तीन प्रमान । एक प्रथम मंडल भये ये नित्यानंद बलवान ॥
 काशीश्वर गोविंद दै आदि भक्त गण जोय । कर सौं कर गहि भये द्वितिय आवरण सोय ॥
 बाहिर रुद्र प्रताप नृप लै अधिकृत गण जोय । करैं निवारण जननि कौं करिकें मंडल सोय ॥
 हरि चंदन के अंस करि करि आलंवन सोय । देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप अति आवेसित होय ॥
 श्री निवास ताही समैं प्रेम मगन मन सोय । देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप आगैं ठाढ़ी होय ॥
 नृप के आगैं देखि तिहिं तव हरि चंदन सोय । कर सौ परसि तिन्हें कहैं एक ओर किनि होय ॥
 श्री निवास जानें न कछु मगन तिही सुख आहि । बार बार पेलै सुकरि भयौ क्रोध मन ताहि ॥
 ताहि थपेरहि मारि तिहि किये निवारन जोय । खाय तमाचौ क्रोध भौ तव हरिचंदन सोय ॥
 क्रोध होय तव कछु तिन्हें चाहै कछौ जु आहि । आपुन रुद्रप्रताप तिहिं कियौ निवारण ताहि ॥
 पायौ इनकौ कर परस भाग्यवान तुम सयो । नही हमारौ भाग्य तुम भये कृतारथ जोय ॥
 लखि प्रभु जू के नृत्य कौं अचिरज भयौ जु लोय । और रहौ जगन्नाथ के आनंद अमित जु होय ॥
 रथ ठाढ़ी करि अगमनें गमन करैं नहिं सोय । दरसन करैं जु नृत्य कौं अनमिष अखियन होय ॥
 हृदय सुभद्रा राम के वाढ़्यौ अति उल्लास । नृत्य देखि केँ दुहुनिकैं श्री सुख पंकज हास ॥
 प्रभु के उद्धट नृत्य मधि अद्भुत आहि विकार । आठौं सात्विक भाव जे उदै भयौ इकवार ॥
 मांस छिद्र सह रोम के वृद्धं सुपुलकित सोई । जानौं सेहड़ कौ सुतरु कंटक आवृत होय ॥
 एक एक रद कंप लखि लागै हिय भय जोय । खसि परिहैं सब रदन यौं जानैं सबही लोय ॥
 सबै अंग प्रस्वेद करि चलै रक्त की धार । जज कृकृ जज ज गग दगद सुबचन जु कंठ मझार ॥
 जनु धारा जल जंत्र की बहै अश्रु जल सोय । सबके भीजें अंग सकल आस पास जे लोय ॥
 गौर कांति वपु देखियै कवहुँ अरुण निदान । कवहुँ कान्ति सुदेखिये मल्ली कुसुम समान ॥
 स्तब्ध होय कवहुँ सुप्रभु परे भूमि पर सोय । हाथ पांव नाहिन चलै सुष्क काष्ठ सम जोय ॥
 कवहुँ परिकैं भूमि प्रभु होय स्वास विन आहि । प्राण छीन सब जननि के होय देखि करि जाहि ॥
 कवहुँ नासा नेत्र जल परै वदन तैं फैन । अमृत धार मानौ वहै चन्द्रविम्ब तैं ऐन ॥
 सुभानन्द तव पान किय लैकैं फैन जु सोय । कृष्ण सुप्रेमावेस मधि भाग्यवान बड़ जोय ॥
 नृत्य जु तांडव इंही विधि किती बार लौं कीय । प्रभु कौ भाव विशेष मधि भयौ प्रवेसित हीय ॥
 नृत्य जु तांडव छाड़िकैं आज्ञा दई स्वरूप । श्री स्वरूप गावन लगे जानि हृदय अनरूप ॥
 तथाहि :—

पाये प्राणनाथ मैं सोय । जिहिं हित मनमथ वान करि गई पजरि हों जोय ॥ध्रु०॥

प्रभु पाछें अद्वैत जू फिरैं जु करि हुंकार । हरि बोलो बोलो हरी कहैं जु बारंवार ॥
 लोक निवारण हित भये मंडल तीन प्रमान । एक प्रथम मंडल भये ये नित्यानंद वलवान ॥
 काशीश्वर गोविंद दै आदि भक्त गण जोय । कर सौं कर गहि भये द्वितिय आवरण सोय ॥
 बाहिर रुद्र प्रताप नृप लै अधिकृत गण जोय । करैं निवारण जननि कौं करिकें मंडल सोय ॥
 हरि चंदन के अंस करि करि आलंवन सोय । देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप अति आवेसित होय ॥
 श्री निवास ताही समैं प्रेम मगन मन सोय । देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप आगैं ठाढ़ी होय ॥
 नृप के आगैं देखि तिहिं तव हरि चंदन सोय । कर सौ परसि तिन्हें कहैं एक ओर किनि होय ॥
 श्री निवास जानें न कछु मगन तिही सुख आहि । बार बार पेलैं सुकरि भयौ क्रोध मन ताहि ॥
 ताहि थपेरहि मारि तिहि किये निवारन जोय । खाय तमाचौ क्रोध भौ तव हरिचंदन सोय ॥
 क्रोध होय तव कछु तिन्हें चाहै कह्यौ जु आहि । आपुन रुद्रप्रताप तिहिं कियौ निवारण ताहि ॥
 पायौ इनकौ कर परस भाग्यवान तुम सयो । नही हमारौ भाग्य तुम भये कृतारथ जोय ॥
 लखि प्रभु जू के नृत्य कौं अचिरज भयौ जु लोय । और रहौ जगन्नाथ कें आनंद अमित जु होय ॥
 रथ ठाढ़ी करि अगमनें गमन करैं नहिं सोय । दरसन करैं जु नृत्य कौं अनमिष अंखियन होय ॥
 हृदय सुभद्रा राम कें वाढ़्यौ अति उल्लास । नृत्य देखि कें दुहुनिकें श्री सुख पंकज हास ॥
 प्रभु के उद्धट नृत्य मधि अद्भुत आहि विकार । आठौं सात्विक भाव जे उदै भयौ इकवार ॥
 मांस छिद्र सह रोम के वृदं सुपुलकित सोई । जानौं सेहड़ कौ सुतरु कंटक आवृत होय ॥
 एक एक रद कंप लखि लागै हिय भय जोय । खसि परिहैं सब रदन यौ जानैं सबही लोय ॥
 सबै अंग प्रस्वेद करि चलै रक्त की धार । जज कृकृ जज ज गग दगद सुवचन जु कंठ मभार ॥
 जनु धारा जल जंत्र की बहै अश्रु जल सोय । सबके भीजें अंग सकल आस पास जे लोय ॥
 गौर कांति वपु देखियै कबहुं अरुण निदान । कबहुं कान्ति सुदेखिये मल्ली कुसुम समान ॥
 स्तब्ध होय कबहुं सुप्रभु परे भूमि पर सोय । हाथ पांव नाहिन चलै सुष्क काष्ठ सम जोय ॥
 कबहुं परिकैं भूमि प्रभु होय स्वास विन आहि । प्राण छीन सब जननि के होय देखि करि जाहि ॥
 कबहुं नासा नेत्र जल परै वदन तैं फैन । अमृत धार मानौ बहै चन्द्रविम्ब तैं ऐन ॥
 सुभानन्द तव पान किय लैकैं फैन जु सोय । कृष्ण सुप्रेमावेस मधि भाग्यवान बड़ जोय ॥
 नृत्य जु तांडव इंही विधि किती बार लौं कीय । प्रभु कौ भाव विशेष मधि भयौ प्रवेसित हीय ॥
 नृत्य जु तांडव छाड़िकैं आज्ञा दर्ई स्वरूप । श्री स्वरूप गावन लगे जानि हृदय अनरूप ॥
 तथाहि :—

पाये प्राणनाथ मैं सोय । जिहिं हित मनमथ वान करि गई पजरि हों जोय ॥ध्रु०॥

गावें दामोदर यहै ध्रुवा मात्र अति टेरि । मधुर नृत्य ईश्वर करैं हिय आनन्द सकेरि ॥
धीरैं धीरैं गभन किय जगन्नाथ मधि जोय । नृत्य करत आगें चलैं शची जु नंदन सोय ॥
गावें नाचैं मन दियें नैन रूप मधि ताहि । सहित गवैयनि प्रभु चलैं पीछें पीछें आहि ॥
आगें आवैं गौर जब होय श्याम थिर वाम । चलैं गोर आगें चलैं धीरे धीरे श्याम ॥
गौर श्याम प्रभु कें जु यौ खैंचातानी होय । राखैं रथ जुत श्याम कौ गौर वली अति सोय ॥
भावन्तर प्रभु कें भयौ नाचत नाचत चाय । पद्य पढ़ै सुर उच्च करि दोऊ भुजा उठाय ॥

तथाहि—

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा स्तेचोन्मीलित मालती सुरभयः प्रौढाःकदम्बानिलाः ।
साचैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ रेवारोधसि वेतसी तरुतले चेतःसमुत्कराठते ॥

बारंबार यहै पढ़ै पद्य महा प्रभु जोय । सभुझै याकें तत्व कौं बिन स्वरूप नहि कोय ॥
पहिलैं याके अर्थ कौ करि आये विस्तार । करिये अब संचेप करि इहि भावारथ सार ॥
पहिलैं ज्यौं कुरुखेत मधि सब गोपीगण आहि । पाय जु दरसन कृष्ण कौ आनन्दित मन ताहि ॥
जगन्नाथ कौं लखि उठ्यो प्रभु कें भाव जु जोय । ताही भावाविष्ट है ध्रुवा गवायौ सोय ॥
करैं निवेदन कृष्ण कौं राधा पीछे ताहि । सोई तुम सोई जु हम सो नव संगम आहि ॥
तऊ हमारौ मन हरै वृन्दावन निज धाम । तातैं तहीं उदै करौ अपने चरण सुवाम ॥
ह्यो लोकनि कौ वन सुगज रथ घोरनि धुनि सोय । तहां कुसुम वन भृंग पिक नाद सुसुनियैं सोय ॥
राज वेस ह्यो और पुनि क्षत्री गण सब संग । तहां गोप गण संग औ मुरली वदन सुरंग ॥
ब्रज मधि तुम संग सरस सुख आस्वादन किय जोय । ह्यो ताही सुख उदधि कौ नही एक कण कोय ॥
हम कौं लै लीला करौ फिरि वृन्दावन ताहि । मन बांछा पूरण तबै होय हमारी आहि ॥
ऐसैं हैं मधि भागवत वचन राधिका आहि । पहिलैं वर्णन सूत्र मधि करि आये हैं ताहि ॥
श्लोक यहै प्रभु जू पढ़ै भावावेस जु ताहि । अर्थ सुइन सब पद्य को लोक न जानैं आहि ॥
जानैं एक स्वरूप जू कहैं न अर्थ हि ताहि । रूप गुसाई जू कियौ अर्थ प्रचारहि याहि ॥
आस्वादन जिहि अर्थ कौ करै स्वरूप जु संग । करै पठन इहि पद्य कौं नृत्य मध्य करि रंग ॥

तथाहि—आहुश्चते नलिननाभ पदारविन्दं, योगेश्वरै हृदि विचिन्त्यमगाध बोधैः ।

संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं, गेह जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ॥

सूही रागे—

प्राणपति कृष्ण तुम सुनौ अब कांन दै कैं करैं हम विनती सांच यौहीं ।

ब्रज हमारौ सदन तहां तुव संग सुख लहै बिन जीवन हि रहै क्यों हीं ॥ध्रु०

आन मन हृदय आन मम मन सु वृन्दाविपिन मन बनहि दुहुनि करि एक जानें ।

तहां तुम पद जुगल करौ जौ उदै अब तौ तुम्हारी पूर्ण दया मानैं ॥
प्रथम ऊढो द्वार अब हमारे प्रगट जोग औ ज्ञान साधन बताये ।

तुम चतुर कृपामय जानि मम हृदय की हमैं ऐसैं कहत लजायें ॥
काढ़ि चित तुमहि ते विपैलायौ यहै जतन करि करि सकत तिहि न न्यारौ ।

ध्यान सिखवौ तिन्है लोक मारत हँसे स्थान अस्थान नहि हिय विचारौ ॥
नहीं जोगेस गोपी जु संतोष हिय लहै तुव पद कमल ध्यान कीयें ।

तुव वचन रीति मधि ताहि छल छिद्र बहु सुनै तिन अरु बढ़ै रोस हीयें ॥
देह सुधि नाहि जिहि कूप संसार कहां तहां तें लैन चाहै उधारा ।

विरह के उदधि मनमथ तिमिगिलि गिलै तहां तें पिया गण करौ पारा ॥
गिरि सुवृन्दाविपिन वन सु जमुना पुलिन कुंज रासादि लीला जु वेई ।

वहै ब्रज ब्रज सुजन मात पित मित्र गण वडौ अचिरज मनहि विसरे तेई ॥
चतुर मृदु सदगुण सुसील नेही करुण तुम जु कछु दोस नही है हमारौ ।

तऊ तुव हृदय सुमिरें नहि ब्रज जन हिय है दुदैंव विलसित हमारौ ॥
गनैं नहि निज दुखहि देखि जसुधा मुखहि फटै ब्रज जन हृदय वे आवौ ।

कै हतौ ब्रज जनहि कै जिवावौ आय दुखनि सहिवै इन्हें क्यों जिवावो ॥
और जो वेस तुव और संग देस औ ब्रज जनहि कभूँ सो नहिन भावैं ।

तजि सकैं नाहि ब्रज भूमि तुव लखैं बिन मरै को जतन जिहि जीय आवैं ॥
तुम सुजीवन ब्रजहि प्राणधन ताहि तुम सकल संपति ब्रजहि प्राणप्यारे ।

दया इव तुव हृदय ब्रज जन ज्याय करौ निज पद उदय ब्रज हमारैं ॥
सुनि प्रिया वचन ब्रज प्रेम मन में सुमिर भयौ व्याकुल हियौ भाव सानैं ।

ब्रज जनहि प्रेम सुनि मानि आपुन रिणी कृष्ण जू करैं तिहि समाधानैं ॥
प्राण प्यारी प्रिये सुनौ मम वचन तुम कहौ हौं सांच करि तेरि आनैं ।

तुम सबनि कौं सुमरिहौं भुरौं रेन दिन मम हृदय दुखहि जन कौन जानैं ॥
जिते ब्रज वासि जन मात पित मित्र गण सबै मम प्राण सम देह धारी ।

तिही मधि गोपी गण मम सुजीवन प्रगट तुम सु मेरी जीवन जियारी ॥
तुम सबनि प्रेम रस कियौ मोकौं जु बस हौं तुम्हारौ सदा वचन कारी ।

तुम सबनि सौं छुटै मोहि दिस दूरि लै बस्यौ दुदैंव अति प्रबल भारी ॥
प्रिया प्रिय संग बिन प्रिया संग हीन प्रिय नहीं जीवै सांच इह प्रमाना ।

सुनि है जब मम दसा यहै है है जु तिहिं इहिं भाय दुहुं जन धरै प्राणा ॥

वहै तिय प्रेम वति प्रेम जु तव है पति विछुरें ही प्रिय हित हि चहै जोयी ।
 गनै नहि निज दुखहि चहै प्रिय जन सुखहि वेगिही मिलिहिगे दुहुँ सोई ॥
 राखिवें जीव तुव सेय में रमापति अति सुदुर्घट शक्ति ताहि जानै ।
 करौ क्रीड़ा जु तुव संग निति प्रतिहि ये स्फूर्ति मेरी ताहि तुम जु मानौ ॥
 भाग्य मेरें जु करि सम जु मधि प्रेम तुव है जु सोयी परम प्रबल जोही ।
 ल्याय मोकों दुरें तुव मिलावै वही प्रगट हूं ल्याय हैं वेगि मोही ॥
 जादबनि के विपन्न दुष्ट जन कंस पक्ष किये संदेय सबै हों जु तेई ।
 रहै द्वै चारि जन हति तिन्है विपन कौ आय हों जानौ निरधार येई ॥
 तिन जु अरिगणनि तें ब्रज जनहि त्राण हित रहौ वाहिर सदा हूँ उदासी ।
 जे त्रिया तनय धन वाहिरें संग्रहे जदुगणहि तोस हित भौ विलासी ॥
 सो जु तुम प्रेम गुण ऐं चि मम ल्यायहै बीस दस द्यौस मधि करिजु विवसे ।
 आय वृन्दावनहि फिरि ब्रज बंधु तुम संग विलसि हौं रेन दिवसें ॥
 इतौ कहि कृष्ण तिहि ब्रज गमन तृष्णा जुत एक तव पद्य पढ़िकें सुनायौ ।
 ताहि सुनि राधिका सकल बाधा नसी कृष्ण की प्राप्ति विश्वास आयौ ॥

तथाहि—

मयि भक्ति हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मत्सनेहो भवतीनां मदापनः ॥

कहै जु एई सब अथर प्रभु स्वरूप के संग । करैं स्वाद घर बैठिकें रैन द्यौस भरि रंग ॥
 नृत्य समें प्रभु जू तिहीं भावाविष्ट जु होय । जगन्नाथ कौ मुख निरखि नाचैं पढ़ि कै सोय ॥
 श्री स्वरूपजू कौ सरस भाग न वरन्यौ जाय । प्रभुजू मधि आविष्ट जिहि मनऔ वाक्य सुकाय ॥
 प्रभु स्वरूप इन्द्रियनि मधि निज इंद्रियगण जोय । एक मेक करिकें करैं गानास्वादन सोय ॥
 कबहुं भावावेस मधि वैठि भूमि मधि सोय । भूमि तर्जनी सौं लिखैं प्रभु नीचैं मुख होय ॥
 जब अंगुरी मधि होय छत जानि स्वरूप जु सोइ । भय करि निजकर प्रभु करहि करै निवारण सोइ ॥
 प्रभु हि भाव अनुरूप है श्री स्वरूप कौ गान । जब ही जोई रस तिही करैं सु मूरति मान ॥
 जगन्नाथ कौ निरखि कै श्री मुख पंकज जोइ । ता ऊपर सुन्दर सरस नयन जुगल अलि सोइ ॥
 रविकीकिरन सुमुखकरैभिलिभिलिभिलिभिलि आहि । अलंकार परिमल वसन माल दिव्य सब ताहि ॥
 उमंग्यौ आनंद सिंधु अति प्रभु के हिय मधि जोय । ताही छिन उन्माद की उठी सुआंधी सोय ॥
 तव आनंद उन्माद नैं उठये भाव तरंग । नाना भावनि सैन्य मधि उपज्यौ जुद्ध सुरंग ॥
 भावोदय पुनि सांति तिहि और संख्य सावल्य । संचारी सात्विक जु पुनि स्थाई सब प्रावल्य ॥
 प्रभु शरीर जानौ महा सुद्ध हेम गिरि आहि । भाव कुसुम तरु सकल ही प्रफुल्लि भये जुताहि ॥
 देखत लोकनि के जु मन चित आकरपै जोय । सीचैं प्रेमामृत सुकरि प्रभु सब कौ मन सोय ॥

जगन्नाथ सेवक सुगण नृप अधिकृत गण ताहि । जन जात्री लीला चलहि बासी जनजन आहि ॥
 नृत्य प्रेम प्रभुको जु लखि अचिरज रहैजु सोय । कृष्ण प्रेम उपज्यौ तहां सबके हिय मधि जोय ॥
 भावें नाचैं जन करैं कोलाहल भरि भाय । यात्रा मंगल नृत्य प्रभु किय चौगुण अधिकाय ॥
 कहा चली है और की जगन्नाथ बलराम । प्रभु नृत्यहि लखि हरख सौं चलैं मंद गति वाम ॥
 कबहुं सुख सौं नृत्य रंग लखै राखि रथ आहि । सो कौतुक देख्यौ जु जिहि सोई साखी ताहि ॥
 यही भांति नृत्यहि करत भ्रमत भ्रमत प्रभु जोय । आगें रुद्र प्रताप कैं लगे गिरन तव सोय ॥
 तिहि नृप संभ्रम सौं तव धार्यौ प्रभु कौ आहि । बाह्य भयें श्री महाप्रभु देखत ही तव ताहि ॥
 तव राजा कौ देखिकें करै जु प्रभु धिकार । छी छी विपई कौ परस भयौ हमें निरधार ॥
 नित्यानंद आवेस करि सावधान भौ नाहि । काशीश्वर गोविन्द प्रभु हूं ते और हि ठाहि ॥
 यद्यपि नृप कौ देखिकें सेवन नीचहि आहि । हूँ प्रसन्न अति भयौ है मिलिवे कौ मन ताहि ॥
 सावधान करिवे तऊ निज गण प्रभु सुखरास । कीनौ श्री भगवान कछु वाहिर रोसा भास ॥
 नृप कैं प्रभु के वचन करि भयौ हियें भय आहि । भट्टाचारज कहै तुम करौ न संसै याहि ॥
 प्रभु कौ मन सु प्रसन्न है तुम्हरे ऊपर जोय । सिखवैं हैं निज भक्त गण तुम्है लक्ष करि सोय ॥
 हमजु निवेदन करहिगे समय जानिकें ताहि । करियौ प्रभुको मिलन तुम जाय समैं तिहि आहि ॥
 तवहि महाप्रभु रथहि कैं होय दाहिनैं आहि । माथौ दै तिहि पेलई रथ के पाछें जाहि ॥
 पेलत ही रथ तव चलयौ खरखराय कै सोय । उठे लोक तव चहुं दिसहि हरि हरि कहि कैं जोय ॥
 तव प्रभु जू निज भक्त गण लै करि कैं सब संग । अग्र सुभद्रा राम के करै नृत्य भरि रंग ॥
 तहां नाचि जगन्नाथकें आगें आये सोय । नृत्य करत आगें चलै जगन्नाथ कैं जोय ॥
 चलिकें आयौ रथ तवै बल गंडी इक धाम । जगन्नाथ रथ राखि कैं देखै दक्षिण वाम ॥
 द्विज सासन वायें तहां नारिकेलिवन जोय । सुमन वाग दायें सबै वृन्दावन सम होय ॥
 गौर नृत्य आगें करैं लै भक्तनि गण आहि । जगन्नाथ रथ राखि कैं करै जु दरसन ताहि ॥
 लगे भोग तिहि ठाम मधि यहै नियम है जोय । कोटि भोग जगन्नाथ जू स्वादन करैं जु सोइ ॥
 जगन्नाथ के लघु बड़े जिते दास गण आहि । निज निज उत्तम भोग सब करैं समर्पण ताहि ॥
 नृप महिषी गण अधि कृत जु और मित्र गण जोय । लीलाचल वसी जिते छोटे बड़े जु लोय ॥
 और जु नाना देश के यात्री गण समुदाय । तिन कौ निज निज भोग सब करैं समर्पण आय ॥
 आगे पाछें दुहुँघा वन उद्यानहि आहि । लहैं जिही जे लावहीं गणना नही सुताहि ॥
 समय भोग के जनन की भीर महा अति होय । प्रभु जु नृत्य हि छाड़िके गये सु उपवन सोय ॥
 प्रभु जू प्रेमावेस करि उपवन के मधि जाय । कुसुम वाग के चौतरहि रहे जु गिरि भरि भाय ॥
 नृत्य परिश्रम करि भये घन श्रम कन प्रभु देह । सीतन अनिल सुगंध अति सेवन करैं अछेह ॥
 कीर्तनिया जे भक्त गन सबै आय आराम । एक एक तरु कैं तरें किय जु सबनि विश्राम ॥

यह कष्टों प्रभु कौ महा संकीर्तन रस जोय । जगन्नाथ रथ अग्र जो किय जु नृत्य रस भोय ॥
लहै पास चैतन्य कौ यहै सुनै जन जोय । प्रेम भक्ति पावै सुदृढ़ सँग विश्वास हि सोय ॥
विवरण प्रभु के नृत्य कौ रथ के आगें आहि । प्रभु अष्टक मधि रूप जू वर्णन कियौ जु ताहि ॥

तथाहि—

रथारूढास्थारादधिपदविनीलाचलपते रदभ्रप्रेमोर्मिस्फुरितनटनोल्लासविचशः ।

सहर्षं गायद्भिः परिवृततनुवैष्णवजनैः स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥

रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूपसनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां रथाग्रतर्तनं नाम त्रयोदश परिच्छेदः ॥

चतुर्दश परिच्छेदः

गौरः पत्न्यन्तात्मवृद्धैः श्री लक्ष्मीविजयोत्सवं । श्रुत्वा गोपीरसोल्लासं हृष्टः प्रेम्णा ननर्त्र सः ॥

जय जय जय श्री कृष्ण जू गौर चन्द्र चैतन्य । जय जय नित्यानंद जू जय अद्वैत सु धन्य ॥
जय जय श्रीवासादि जय गौर भक्त गण आहि । जय स्रोता समुदाय सब गौर प्राण धन ताहि ॥
हैं प्रेमहि आवेश में इहीं भांति प्रभु जोय । तिहीं समें गजपति नृपति किय प्रवेश तब सोय ॥
सार्वभौम उपदेश सौं तजि कें नृप कौ वेस । इक लौ वैष्णव वेस सौं आयो ताही देस ॥
जोरि हाथ आझा लई सब भक्तनि की ताहि । पर्यौ जु प्रभुके चरण गहि साहस करिकें आहि ॥
आंखि मूँदि प्रभु प्रेम सौं रहे धरणि मधि सोय । परम निपुणता सौं करै पद सुमर्दन जोय ॥
पद्यु लीला रासकौ पदि जु करै स्तुति ठाट । जयति तेधि अध्याय कौ करण लग्यौ नृप पाठ ॥
सुनि सुनि कें प्रभु हृदय मधि भौ संतोष अपार । कहौ कहौ यौ उच्च स्वर कहै जु वारंवार ॥
श्लोक यह तब कथामृतं नृपनें पढ्यौ सु आहि । उठि कें प्रभु जु प्रेम करि दिय आलिंगण ताहि ॥
तुम मोकों बहुत दिये रतन अमोलहि जोय । दैवै कौ मेरें न कछु दिय आलिंगण सोय ॥
इतनौ कहि ताही पदै पदै सु बारम्बार । अंग कंप दोऊनिके चलै नैन जल धार ॥

तथाहि—

तब कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहं ।

श्रवणमंगलं श्री मदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥

कहि सुभूरिदा भूरिदा हिय हि लगावै ताहि । अरु नाही जाने सु यह है जु कौन जन आहि ॥

पहिलें सेवा देखि तिहिं उपजी कृपा जु सोय । तिही कृपा जु प्रसाद किय विनु सुधि प्रभुकों सोय ॥
देखौ यह चैतन्य कौ कृपा महावल जोय । विनु अनुसन्धानहि करें कारज सबही सोय ॥
कहै जु प्रभु तुम कौन हौ कीनौ मोहित जोय । प्यायौ हरि लीला अमृत आय अचानक सोय ॥
नृप प्रताप रुद्र जु कहै हों तुव दासानुदास । करै भृत्य निज नित्य कौ मोहि यहै हिय आस ॥
निज ऐश्वर्य महाप्रभु तब जु दिखायौ ताहि । यह काहुं कहियौ सु जिनि मनैं कियौ तिहिं आहि ॥
नृप बाहिर इहि ग्यान कौ कीनौ नाहि प्रकाश । अंतर हिय जानै सबै बाहिर रहे उदास ॥
गजपति नृप के भाग्य कौ देखि भक्त गण जोय । नृप कौ सबै प्रसंसई आनन्दित मन होय ॥
करिकें राजा दंडवत बाहिर चन्चौ जु सोय । सब भक्तनि कौ दंडवत करी जोरि कर दोय ॥
किये मध्याह्न महाप्रभु लै भक्तनि गण साथ । लै प्रसाद तब आगमन कीनौ वाणी नाथ ॥
सार्वभौम रामानंद जु अरु दै वाणीनाथ । पठ्यौ राजा बहुत करि सो प्रसाद जगनाथ ॥
वल गंडी प्रभु भोग कौ सहज प्रसाद अनंत । प्रभु प्रसाद निखरौ जु सो आयौ जिहिं नहि अंत ॥
छना पना श्रीफल सुपय आंव नारियर जोय । कटहर नाना विधि कदलि ताल वीज पुनि सोय ॥
छौला नारंगी मधुर धरे विजोरा आय । अमृत फल मीठ सरस नीबू नाना भाय ॥
किसमिसि दाख वादाम पुनि मेवा बहु विधि सोय । सुमधुर पिंड खजूर बहु धरै आनरस भोय ॥
नाम मनोहर आदि दै लाडू सतक प्रकार । अमृत गुटिका आदिलै खोवा मधुर अपार ॥
अमृत मँडा अरु सेवती पुनि कुपी कुपूर । दूध मलाई बहुत विधि रस पूपी रस पूर ॥
इक हरिवल्लभ सेवती पुनि मालती कपूर । लाडू मरिचा डालिमा अस पुनि मोती चूर ॥
कंद अमरती खांड के खाजे धरे बनाय । साबुनी तिल सर्करी तिल खाजा बहु भाय ॥
और खिलौना खांड के फल फूलनि आकार । तक्र रसाला सिखिरणी बंध्यौ दही रस सार ॥
और रस लौनें मूंग के अंकुर धरे सुधारि । नीबू परम रसाल पुनि अदरख मिंदी बनारि ॥
आंव बेर फल आदि दै बहु प्रकार आचार । लिखे न जाय प्रसाद के तहां जितेक प्रकार ॥
पूरित भौ जु प्रसाद करि आधौ उपवन जोय । देखि महाप्रभु के मनहि भो संतोष जु सोय ॥
इही भांति जगन्नाथ जू करै सुभोजन आहि । प्रभु जू के सीतल नयन भये देखि सुख याहि ॥
दौना कदली पत्र के पांच सात औ भार । इक इक जन दौना दिये दस इक पात संभार ॥
कीरतनयनिकौ जु प्रभु जानि परिश्रम आहि । चन्चौ जिवावन कौ जु मन प्रभुकौ सबहि नु ताहि ॥
बैठाये सब भक्तगण पांति पांति करि जोय । लगै परसनि आप प्रभु अति आनन्दित होय ॥
प्रभु के विन पायें नहीं करै जु भोजन कोय । तब गोस्वामि स्वरूप जू कियौ निवेदन सोय ॥
भोजन करिवे तुम जु प्रभु आपुन बैठो आय । जब लौं तुम पायो नहीं सकै न कोऊ पाय ॥
बैठे तब श्री महाप्रभु निज गण सँग लै सोय । भोजन करवायौ सबनि भरि सुकंठ लौ जोय ॥
भोजन करि बैठे सु प्रभु करि सु आचमन आहि । पायौ चन्चौ प्रसाद प्रभु सहस एक जन ताहि ॥

गोविन्द प्रभु जू निदेशते दीन हीन जन लाय । भोजन करवायी दुखनि पाय रंक अधिकाय ॥
 रंकन की प्रभु जू लख भोजन रंग विशेष । हरि हरि बोली थीं तिन्हें करे जू हित उपदेश ॥
 हरि हरि बोले दीन वे भगव प्रेम के सिंधु । इमि अद्भुत लीला करे गौर दीन जन बंधु ॥
 जगन्नाथ के रथ चल न समे यहाँ सु जोय । पंडा सके न टारि रथ दियो छाड़ि के सोय ॥
 पंडा रथ टारे सबे आगे चले न सोय । आयो अधिकृत मित्र ले राजा व्याकुल होय ॥
 महा मल्लगण संग ले रथहि चलावन आहि । आपुन लाग्यो सुप रथहि टारि सकी नहि ताहि ॥
 दुचिती हूँ सुप आनि के मत्त करी गण जोय । रथहि चलावन हेत तिहि दिये जोरि तब सोय ॥
 मत्त करी गण टारिहें जितनीं चल कछु ताहि । एक पंड रथ नहि चले भयो अबल सम आहि ॥
 सुनि के आये महाप्रभु ले संग निज गण जोय । रथहि चलावें मत्त गज देखें ठाढ़े सोय ॥
 करी अंकुस निषाय करि मारे अति विचार । चले वही रथ सबनि के भयो जू हा हा कार ॥
 तब महाप्रभु जू सब हाथी दिये छुटाय । रथ दुहुंघाते टारिबें दिय निज जन समुदाय ॥
 रथ के पाछे आपु प्रभु पेलें देक माथ । खर खराय के दौरि रथ चली थी जगन्नाथ ॥
 हाथ देत ही जन गणहि ताहि दुहुंघा आय । पेलन पाये ताहि नहि चली आपुहि भाय ॥
 करे लोक आनंद सी धुनि जे जे भगवान । जगन्नाथ जय जय बिना नाहीं सुनिये आन ॥
 भयो जू रथ इक पलक में द्वार गुंड़िया सोय । लख प्रभाव चैतन्य की चमत्कार भी लोय ॥
 जय जू कृष्ण चैतन्य जू गौर चंद्र जय सोय । कोलाहल इहि विधि करे धन्य लोक सब जोय ॥
 लखि प्रताप रुद्र जू तब अधिकृत मित्रन संग । लखि प्रभु महिमा प्रेम करि भये जू प्रफुलित अंग ॥
 पांडु विजय कीनीं सबे सप सेवक गण साथ । निज सिंहासन जाय के बैठे थी जगन्नाथ ॥
 आये सिंहासन जू बलदेव सुभद्रा दोय । स्नानभोग हीनें लाग्यो जगन्नाथ की सोय ॥
 आंगण मधि थी महाप्रभु ले भक्तनि गण संग । आनंद सीं प्रारम्भ किय सत्य कीरतन रंग ॥
 प्रभु के अति आनंद करि उल्लस्यो प्रेम तरंग । लखि सब जन प्रेमहि उदधि बहे नहीं सुधि अंग ॥
 सी करि संख्या समय की लखी आरती ताहि । जाय बाग मधि बैठि प्रभु किये विश्राम जू आहि ॥
 अष्टौतादिक भक्त किय प्रभु की श्रवती जोय । मुख्य मुख्य कीनीं जननि पाये नी दिन सोय ॥
 श्रीमाले के दिन जिते और भक्त गण आहि । करिके एकहि एक दिन परे बांट मधि ताहि ॥
 मुख्य जनन लिय बाटिके चारि मास दिन सोय । अवसर पायो नाहिने और भक्तगण जोय ॥
 करे निमज्जन एक दिन दोय तीन मिलि ताहि । थी प्रभु जूकी इंदी विधि केलि निमज्जन आहि ॥
 घात काल ही स्नान करि देखे थी जगन्नाथ । करे सत्य संकीर्तन ले भक्तनि गण साथ ॥
 प्रभु जू अष्टौतादि कभू नित्यानंदहि जोय । कयहूँ हरिदास हि कभूँ अच्युतानन्द हि सोय ॥
 बकेश्वर जू की कभूँ आन भक्तगण ताहि । प्रभु आगे जू नचावहीं भरे प्रेम रस आहि ॥
 तहाँ गुंड़िया आंगणहि मधि प्रभु जू भरि भाइ । करे दुहूँ संख्यानि मधि कीरतन अति चाय ॥

चुन्दावन आये जू हरि यह थी प्रभु कीं ज्ञान । विरह स्फुटि थी कृष्ण की ताकी भी अवसान ॥
 चुन्दावन लीला करे जन संग बहुवन सोय । इन्द्रधनु सरोवरहि मधि जल क्रीड़ा होय ॥
 सब भक्तनि कीं आप प्रभु सींचे जल करि सोय । सब गण जल सींचे तिन्हें चहूँ और धिरि जोय ॥
 कयहूँ मंडल एक हूँ कभूँ अनेक जू सोय । जल मंडूक बजावई सबही करतल जोय ॥
 हूँ हूँ जन मिल के करे जल क्रीड़ा गण आहि । हारे कोई जीतई प्रभु जू देखे ताहि ॥
 नित्यानंद अद्वैत जल छीटा छीटी आहि । करे हारि आचार्य फिर मारा मारी ताहि ॥
 विद्यानिधि स्वरूप संग करे युद्ध जल सोय । गुप्तदत्त जू मिलि करे जल युद्धहि जन दोय ॥
 खेलहि जलहि गदाधर जू थी निवास के संग । राघव पंडित संग करे बकेश्वर जल रंग ॥
 सार्वभौम संग खेलई थी रामानंद राय । गइ दुहुंघाते गंभीरता भये प्राय सिमु भाय ॥
 थी प्रभु जू तिन दुहुनि की देखि चपलता सोय । गोपीनाथाचार्यहि कहें जू कछु हँसि जोय ॥
 दोऊ प्रामाणिक सुजन बहु पंडित गंभीर । बाल चपलता करे कवीं मनें करी तुम धीर ॥
 गोपीनाथ कहें जू तुम कृपा सिंधु अति आहि । प्रभु जू जब उल्लसित करी एक विदह ताहि ॥
 मंदरगिरि जू सुमेरुहें तिहि दुवाय दिय सोय । कहा बात इनकी जू ये गंड सैल सम दोय ॥
 सुष्कतके खल खात ही भयो जन्म ही जाहि । प्यायो ताकीं तब कृपा लीला अमृत जू आहि ॥
 आपुन प्रभु जू तब सयन कीनीं ऊपर ताहि । सेस सथी लीला जू प्रभु कीनीं प्रगट सुआहि ॥
 थी अद्वैत जू शक्ति निज करिके प्रगट जू ताहि । डोलत बहै जू नीर मधि ले प्रभु जू कीं आहि ॥
 इंदी भांति कोऊक छिन करि जल क्रीड़ा रंग । आये प्रभु जू बाग मधि ले भक्तनि गण संग ॥
 पुरी भारती आदिये जिते मुख्य गण ताहि । न्यौते मधि आचार्य के कीनीं भोजन आहि ॥
 न्यायो और प्रसाद जब बानीनाथ जू सोय । पायो बहै प्रसाद सब प्रभु जू के गण जोय ॥
 कियो आप अपरान्ध मधि दर्शन नर्तन चाय । निसा भये उद्यान मधि कीनीं सयन जू आय ॥
 कीनीं आय जू और दिन ईश्वर दर्शन जोय । सत्य गीत आंगण जू मधि कियो कोउ छिन सोय ॥
 प्रभु उद्यानहि आयके भक्त संग भू अपार । ले तिनकीं प्रभु जू करे चुंदा विपिन बिहार ॥
 प्रफुलित प्रभु के दरस करि तरु बल्ली बनतीर । गान करे पिक भुंग अति सीतल बहै समीर ॥
 प्रति तरु तर प्रभु जू करे सत्य हिये अति चाय । वासुदेवदत्त एक ले करे गान भरि भाय ॥
 एक एक तरु के तरे एक एक पद गान । नाचें परमावेश सीं एक एक रस खान ॥
 तब बकेश्वर सीं कभी सत्य हेत भगवान । बकेश्वर नाचन लगे करण लगे प्रभु गान ॥
 प्रभु संग दामोदर प्रमुख करे गवैया गान । प्रेम धार के नाहिने दिसि अस विदिसा ज्ञान ॥
 इंदी भांति कोऊक छिन करि वन केलि समाज । भये नरेन्द्र सरोवरहि जल क्रीड़ा के साज ॥
 जल बिहार करिके जू तब आये प्रभु उद्यान । भोजन लीला करी ले संग जन गण भगवान ॥

नव दिन लौं ऐसे रहैं गुंडिया मधि जगनाथ । यौं प्रभु जू लीला करैं निज भक्तनि के साथ ॥
जगन्नाथ बल्लभ सुतिहि नाम कुसुम आराम । अति विलास तिहिं प्रभुकरैं नव दिनलौं विश्राम ॥
राजा हेरा पंचमी कौ दिन आयौ जानि । कहैं जु काशीमिश्र सौं हिय उछाह सौं सानि ॥
कालि जु हेरा पंचमी लक्ष्मी विजय सु आहि । कवहुं नही भयौ सुइमि उच्छव करौ सु ताहि ॥
उच्छव मधि तैसैं करौ अधिक सौंज सब जोय । देखि महाप्रभु जू हियें चमत्कार अति होय ॥
ठाकुर के भंडार अरु हमरे भरे भंडार । किंकिणि चामर छत्र सौं चित्रित बसन अपार ॥
धुजि पताक घंटानि लैं रचना करी अपार । बहु विधि बाजे नृत्य पुनि दोला सजो संवार ॥
करौ सब उपहार अव करिकैं दूनें जोय । रथ यात्रा हूं ते अधिक चमत्कार हिय होय ॥
सोई कीजौ ज्यों प्रभु लैं निज भक्तनि वृन्द । जिही भांति ह्यां आय कैं दरसन करैं सुखंद ॥
प्रात समें श्री महाप्रभु लैं निज जन समुदाय । जगन्नाथ दरसन कियौ सुन्दर गिरिवर जाय ॥
लीलाचल आये जु पुनि निज जन गण लैं संग । लखिवे उत्कंठा हियें हेरा पंचमि रंग ॥
प्रभु कौं काशीमिश्र जू करि बहु आदर जोय । भली ठौर सब गण सहित लैं बैठाये सोय ॥
रस विसेस सुनिवें भयौ प्रभु जु को मन चाय । पूछ्यो श्री जु स्वरूप सौं तवें मंद मुसिकाय ॥
करैं द्वारका कौ जदपि जगन्नाथ जु विहार । करैं प्रगट निज सहजहीं उत्छव बडौ अपार ॥
तऊ जु तिनके वरस मधि होय हिये इक वार । वृन्दावन के दरस हित उत्कंठा जु अपार ॥
समहैं वृन्दाविपिन की यह उपवन गण आहि । उत्कंठित हिय होय अति दरसनके हित ताहि ॥
बाहिर निकसन मिस करैं रथयात्रा मिस जोय । सुन्दर गिरिकौं जाय प्रभु तजि लीलाचल सोय ॥
रैन दथौस खेलें तहां नाना कुसुम उद्यान । लक्ष्मी देवी संग नहि लैं किहि कारण जान ॥
कहैं स्वरूप सुनौ जु प्रभु इहि कारण निरधार । वृन्दावन क्रीड़ाहि मधि नहि लक्ष्मी अधिकार ॥
गोपी गणजु सहाय इक वन लीला मधि ताहि । गोपी विन नहीं कृष्ण मन और हरि सकैं आहि ॥
कहैं जु प्रभु जात्रा छल हि गमन कृष्ण कौ सोय । बहिनि सुभद्रा राम जू लैं ये सँग जन दोय ॥
गोपी सँग लीला जितौ करैं जु उपवन सोय । गूढ़ भाव अति कृष्ण के सो नहि जानें कोय ॥
याही तें श्री कृष्ण को प्रगट नहीं कछु दोस । लक्ष्मी देवी क्यौं तऊ करैं जु इतनौ रोस ॥
कहैं स्वरूप यहै जु है प्रेम वतीन सुभाव । प्रिय उदासता लेस लखि होय क्रोधमय भाव ॥
तिहीं समय अद्भुत विविध रत्न लखैं हैं जाहि । सुवर्ण कौ डोला परम करि आरोहन ताहि ॥
ध्वजा पताका छत्र पुनि चारु चमर समुदाय । अग्रदेव दासी नचैं नाना वाद्य वजाय ॥
तांबूल संपुट विजन अरु चामर डारी हाथ । दिव्य बसन भूषण रुचिर सत दासी जिहि साथ ॥
इश्वरता जु अनेक जिहि संग बहुत परिवार । लक्ष्मी देवी क्रोध हूँ आई सिंह जु द्वार ॥
जगन्नाथ जू कैं जितैं मुख्य भृत्य गण जोय । लक्ष्मी दासी गण करैं बन्धन तिनकौं सोय ॥
द्वार लक्ष्मी चरण तर तिन्हैं बाधि कैं लाय । नाना धन लैं दंडकरि चोरण कौ सौं भाय ॥

काष्ठ अचेतन रथ जु तिहिं करैजु ताडन ताहि । नाना विधि गारीनिदैं मंड वचन कहैं आहि ॥
लक्ष्मी दासी गणनि की लखि प्रगल्भता जोय । हसैं महाप्रभु जू तवें सब निज गण लैं सोय ॥
श्री स्वरूप जू कहैं हम तीनौ लोक मभार । देख्यौ सुन्यौ न अरु कहूं ऐसो मान प्रकार ॥
विन उछाह हूँ मानिनी तजै विभूषण रंग । लिखै चरण नख सौं धरणि मलिन वसन सब अंग ॥
कैं सतभामाकौ सुनौ पहिलैं इहि विधि मान । व्रज मधि सब गोपीनकौ मान जु रसहि निधान ॥
एऊ निज संपति सबै करिकैं प्रगट जु ताहि । सजिकैं सेना जांय चढ़ि प्रिय के ऊपर आहि ॥
प्रभु जू कहैं कहौ जु तुम व्रज कौ मान प्रकार । कहैं स्वरूप जु मान तिन है जु नदी सम धार ॥
प्रेम वृत्ति बहु भेद है अरु नायिका स्वभाव । तिन भेदनि नाना विधिहि होय मान उदभाव ॥
भली भांति गोपीन कौ मान कह्यौ नहि जाय । एक दोय भेदनि कहैं दिग दरसन हि कराय ॥
कोऊ धीरा मान मधि होय अधीरा कोय । धीराधीरा होय पुनि तीन भेद ये जोय ॥
धीरा पियकौ दूरि तें लखि उठि ठाढ़ी होय । आसन देय विछाय कैं निकट हि आवत सोय ॥
हियें कोप मुखसौं कहैं मधुर वचन मुसिकाय । मिल्यौ चहैं प्रिय तिहि करैं आलिंगन हूँ धाय ॥
पोषन करैं जु मान कौ सहज सरल व्यौहार । के प्रिय कौ निरसन करैं वक्र वचन अनुभार ॥
खिजै अधीरा नायका कहि कटु वचन अपार । माला कर बंधन करैं कर्णोत्पल हि प्रहार ॥
पुनि धीराधीरा करैं वक्र वचन उपहास । स्तुति कवहुं निंदा कभूँ कवहुं कहैं उदास ॥
मुग्धा मध्या नायका और प्रगल्भा होय । मुग्धा नहि जाने कछु मान चतुरई जोय ॥
निज मुख कौं ढपिकैं करैं केवल रोदन सोय । विनय वचन प्रियके सु सुनि वेगि प्रसन्न सु होय ॥
धीरादिक भेदनि धरै मध्यादिक अरु दोय । तिन मधि सवनि सुभाव के तीन भेद ये सोय ॥
प्रखरा कोऊ मृदु समा ये तिनके जु सुभाव । रसकी सीव बढ़ावहीं प्रियके निज निज भाव ॥
प्रखर मार्दव साम्य पुनि सब सुभाव निर्दोष । तिहीं तिहीं जु सुभाव करि करैं प्रिय हि संतोष ॥
सुनत कथा एई भयो प्रभु कैं हर्ष अपार । कहौ कहौ दामोदर जु कहैं जु बारंवार ॥
कहैं स्वरूप जु कृष्ण जू रसिक मुकुट मणि आहि । रस आस्वादकरसहि मय है सुकलेवर ताहि ॥
प्रेमहि मय वपु कृष्ण कौ भक्त प्रेम आधीन । सुद्ध प्रेम रस गुणहि मधि है गोपिका प्रवीन ॥
गोपिनु के रस मधि नहीं रसाभास जो दोष । याही तें श्री कृष्ण के करैं परम संतोष ॥
तथाहि श्री भागवते—

एवं शशांकांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरतावलागणः ।

सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः सरत्काव्यकथाः रसाश्रयाः ॥

इक गोपी गण दक्षिणा इक वामागण ताहि । प्रियहि करावै भाव बहु रस आस्वादन जाहि ॥
राधा ठकुराणी अधिक गोपीगण मनि जानि । निर्मल उज्ज्वल मुख्य रस प्रेम रतन की खानि ॥
है जु मध्यमा वयस मधि समा सुभाव हि सोय । गाढ़ जू प्रेम सुभाव करि वास्य निरंतर जोय ॥

तिन के बाम्य सुभाव करि उठै निरन्तर मान । तातैं वादै कृष्ण केँ आनंद सिंधु निदान ॥

तथाहि—
अहेरिव गतिः प्रेम्णः स्वभावकुटिला भवेत् । अतो हेतोरहेतोश्च यूनो र्मान उदञ्चति ॥

इतनी सुनि प्रभु को बहौ आनंद सिंधु अपार । कहौ कहौ अरु कहौ तव कहै स्वरूप विचार ॥
महाभाव अति गूढ़ है दशा जु राधा प्रेम । अति विशुद्ध निर्मल सु ज्यो वारहवानी हेम ॥
जबै अचानक कृष्ण को पावैं दरसन जोय । नाना भाव विभूषननि होय विभूषित सोय ॥
अष्ट सात्विक हर्षमुख संचारी ता मांहि । भाव अलंकृत वीश पुनि सहज प्रेम उपजांहि ॥
किलकिंचित अरु कुटमित ललित विलासजुसोय । मोटायित विव्वोक पुनि मौग्ध चकित अरुजोय ॥
इनि भावनि भूषनिनिकरि भूषित राधा अंग । सुख सागर की कृष्ण केँ लखिकैं उठे तरंग ॥
किलकिंचितजु अलंकृतहि सुनौ जु विवरण ताहि । जिहिं भूषण भूषित हरै राधा हरि हिय आहि ॥
जबहि कृष्ण राधाहि लखि चाहै छुयौ जु ताहि । दान घाट पथ जाति जब मनैकरैं गति आहि ॥
मनै करैं जब आय केँ फूलन वीनत जोय । चाहैं आगैं सखिनु जब हिय कर धरिवैं सोय ॥
इनहि ठोर ही उपजई किलकिंचित जो आहि । संचारी हरष सु प्रथम कारण मूल जु ताहि ॥

तथाहि—
गर्वाभिलाषरुदितस्मितासूयाभयक्रुधाम् । संकरीकरणं हर्षादुच्यते किलकिंचितम् ॥

सात भाव अरु आयकैं सहजहि मिलैं जु सोय । तव इन आठौं भाव केँ मिलैं महारस होय ॥
गर्व और अभिलाष भय वृथा रुदन पुनि जानि । क्रोध असूया संग अरु होय मंद मुसकानि ॥
आठ भाव स्वाद जु पृथक इकठां मिलैं जु सोय । ताही के आस्वाद हित तृप्त कृष्णमन होय ॥
दधि मिथि घृत मधुर मिरच और कपूरजु सोय । एलादिकके मिलैं ज्यों मधुर सिखरणी होय ॥
इन भावन जुत जब लखैं प्रिया वदन अरु नैन । संगम हू तें कोटि गुण लहैं कोटि सुख ऐन ॥

तथाहि—
अंतः स्मेरतयोज्वला जलकणव्याधीर्णपद्मांकुरा ,
किञ्चित् पाटलिताञ्जला रसिकतोत्सिक्ता पुरः कुञ्चति ।
रुद्धायाः पथि माधवेन मधुरख्याभुग्नतारोत्तरा
राधायाः किलकिञ्चित्तस्तवकिनी दृष्टिः प्रियं वः क्रियान् ॥

तथाहि—
वाष्पव्याकुलितारुणाञ्जलचलन्नेत्रं रसोल्लासितं,
हेलोल्लासचलाधरकुटलितं भ्रूयुग्ममुद्यत्स्मितम् ।
कान्तायाः किलकिञ्चित्ताञ्चित्तमसौ वीक्षाननं संगमा
दानन्दं तमवाप कोटिगुणितं योभून्नगीर्गोचरः ॥

इतनी सुनि प्रभुको भयौ आनन्दित मन जोय । आलिंगिण जु स्वरूप कौं कियौ हर्षमय होय ॥
भूषण भाव विलास मुख कहौ सु लक्षण ताहि । जिहीं भाव राधा हरै गोविंद कौं मन आहि ॥
तव स्वरूप गोस्वामिजू लागे कहनजु ताहि । सुनि प्रभुके सब भक्त गण लखो महासुख आहि ॥
राधावैठी होय केँ विपन हि आवै सोय । दरसन पावैं कृष्ण कौं तहां अचानक जोय ॥
देखत नाना भाव करि होय विलक्षण जोय । ताही सु वैलक्षण कौं नाम विलास जु होय ॥

तथाहि—

गतिस्थानासनादीनां मुखनेत्रादि कर्मणां । तात्कालिकं तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रियसंगजम् ॥
लाज हर्ष अभिलाष भय संभ्रम बाम्य जु होय । ए मिलि भाव जु राधिकहि करैं जु चंचलजोय ॥

तथाहि—

पुरः कृष्णालोकात् स्थगितकुटिलास्या गतिरभूत् तिरश्चीनं कृष्णाम्बरदरवृत्तं श्री मुखमपि ।
चलत्तारं स्फारं नयन युगमाभुग्नमिति सा, विलासाख्यस्वालंकरणवलितासीत् प्रियमुदे ॥
हरि आगैं राधा जबै रहै जु ठाड़ी होय । तीन अंग भंगी जु है भोंह नचाय जु सोय ॥
बहु भावनि उद्गारई मुख नैननि मधि वाम । को ताके इहि भाव कौं ललित अलंकृत नाम ॥

तथाहि तल्लक्षण—

विन्यास भंगिरंगाणां भ्रूविलासमनोहरा । सुकुमारा भवेद् यत्र ललितं तदुदाहृतम् ॥
ललित सु भूषित राधिकहि देखैं जब ही कृष्ण । मिलिवै कौं तव परसपर दोऊ होय सतृष्ण ॥

तथाहि—

हिया तीर्यग् श्रीवा चरण कटि भंगी सुमधुरा, चलच्चिल्लीवल्लीदलितरतिनार्थेज्जितधनुः ।
प्रिय प्रेमोल्लासोल्लसितललितालालिततनुः प्रियप्रीत्यै सासीदुदित ललितालंकृति युता ॥
कंचुकि आकर्षन करे कृष्ण लोभ करि आहि । बाहिर मनै करैं प्रिया हियें चाह अधिकाहि ॥
हिय केँ भीतर सुख महा बाहिर क्रोध जु वाम । अलंकार कुटमित कहि इहीं भावकौं नाम ॥

तथाहि तल्लक्षण—

स्तनाधरदि ग्रहणे हृत्प्रीतावपि संभ्रमात् । वहिः क्रोधो व्यथितवन् प्रोक्तं कुटमितं बुधैः ॥
कृष्ण चाह पूरण सु जिहिं करैं पान अवरोध । राधा केँ आनंद हिय बाहिर बाम्य सु क्रोध ॥
करैं वृथा रोदन प्रिया जानौ विथा सु पाय । करैं कृष्ण की भर्त्सना कलुक मंद मुसकाय ॥

तथाहि—

पाणिरोधमवरोधितवाङ्मं भर्त्सनाश्च मधुरस्मितगर्भाः ।
माधवस्य कुरुते करभोरु हारि शुष्करुदितञ्च मुखेऽपि ॥
इही भांति सब और हूं भाव विभूषन आहि । हरैं कृष्ण के हीय कौं राधा भूषित आहि ॥
हरि लीला जु अनंत है वरणन करी न जाहि । आपुन जो वरनन करैं सहस वदन हूं आहि ॥

श्री निवास हसि कैं कहैं सुनि दामोदर जोय । लखौ हमारी रमाकी संपति विस्मृत सोय ॥
 वृन्दावन लखिबैं गये जगन्नाथ करि चाय । सुनि लछमी देवी मनहि भयौ जु कछु दुख आय ॥
 इतनी संपति तजि गये क्यौं वृन्दावन ऐन । तिनकी हासी करण हित लछमी सजै जु सैन ॥
 देख्यौ तुम्हरे प्रभु इती तजि संपति अभिराम । पात फूल फल लोभ करि गये कुसुम आराम ॥
 चतुरणि जु कहाय कैं करैं कर्म यह जोय । लछमी आगें निज प्रभु हि देंहि लाय कैं सोय ॥
 इतनौ कहि लछमी जु कैं सब दासी गण सोय । बांधि वसन कटि आनई प्रभु के परिजन जोय ॥
 न्याय रमा के चरणमधि प्रणति करावैं आहि । करवावैं विनती जु अरु लेहि भृत्यगण ताहि ॥
 तिहिं रथ के ऊपर करैं दंड प्रहार हि आहि । जगन्नाथ के भृत्य सब करैं चौर सम ताहि ॥
 सबै भृत्य गण कहैं तव जोरि हाथ इहिं भाय । जगन्नाथ कौं काल्हि तुम आगें देंहैं लाय ॥
 लछमी जू निज गेह कौं जाय सांत तव होय । विभौ हमारी रमा की वचन अगोचर सोय ॥
 पय औटावैं दधि मथें तुम गोपीगण आहि । बैठे ठकुराणी जु हम रतन सिंहासन ताहि ॥
 श्री निवास नारद प्रकृति करैं जु बहु परिहास । सुनि कैं हसैं जिते महाप्रभु जू के निजदास ॥
 कहैं जु प्रभु श्रीवास तुव नारद कौं जु सुभाव । तुम कौं भावै ईसता यह ईश्वर जु प्रभाव ॥
 दामोदर जु स्वरूप ये शुद्ध ब्रजवासि जान । रहैं शुद्ध प्रेमहि मगन नहि ईश्वरता ज्ञान ॥
 सावधान श्री वास सुनि कहैं स्वरूप जु ताहि । वृन्दावन संपति जु तुव कान परी नहि आहि ॥
 वृन्दावन कौं साहजिक संपति सिंधु जु आहि । द्वारावति वैकुण्ठ श्री एक बिंदु है ताहि ॥
 है पुरुषोत्तम परम जौ आप स्वयं भगवान । कृष्ण धनी जिहिं धाम सौं वृन्दावन रस खान ॥
 चिंतामणि मय भूमि जिहिं चिंतामणि गृह ताहि । दासिनुके भूषण चरण चिंता मणि गणआहि ॥
 जहां साहजिक विपिन जिहिं लता कलपतरु ताहि । मार्गें नहि फल फूल विन अरु कोऊ धन आहि ॥
 कामधेनु वन वन चरैं जहां अनंत जु सोय । देंहि एक पय मात्र अरु धन नहि मार्गें कोय ॥
 सहज कथा जो लोक ही वही दिव्य जिहि गीत । सहज गमन हूं जहां कौं करैं नृत्य पर तीत ॥
 जहां नीर जो सर्वठां सोहैं अमृत समान । चिदानंद रस स्वाद जौ जहा सुमूरति मान ॥
 लछमी सम जिनके जु गुण सब लछमीजु समाज । करैं कृष्ण मुरली जहां प्रियजु सखीकौ काज ॥
 तथाहि ब्रह्म संहितायां—

श्रियः कांता कान्तः परम पुरुषः कल्पतरुः द्रुमाः भूमिश्चिन्तामणि गण मयी तोयममृतं ।

कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखी चिदानन्दज्योतिः परमपितृदा स्वाद्यमपिच ॥

चिन्तामणि श्रचरण भूषणमंगनानां—शृंगार पुष्पतरुस्तख सुराणां ।

वृन्दावनं ब्रजधनं ननु कामधेनु वृन्दानि चेति सुखसिन्धु रहो विभूतिः ॥

सुनि कैं प्रेमावेश मधि नाचैं श्री निजुवास । काख ताल जु वजाय कैं करैं अट्ट अट हास ॥
 प्रभु राधा कौं सुद्ध रस सुनि जु भयो आवेश । तव आरभ्यौ नृत्य तिहिं रसावेस सुविशेष ॥

रसावेस मधि नृत्य प्रभु श्रीस्वरूप कौ गान । कहौ कहौ प्रभु कहैं पुनि दियेंजु निज मन कान ॥
 उमडौ ब्रजरस गान सुनि प्रेमसिंधु अधिकाय । प्रभु जू पुरुषोत्तम नगर दीनौ प्रेम वदाय ॥
 लछमी देवी निज समै गई जु अपने धाम । प्रभु जू कौं नृत्यहि करत भयौ तीसरां जाम ॥
 गान करत स्रम जुत भये संप्रदाय तव चारि । प्रभु जू कौं दूनों बढ़ौ प्रेमावेस अपार ॥
 राधा प्रेमावेस प्रभु भये जु मूरति सोय । नित्यानंद लखि कैं तिही करी दूर थिति जोय ॥
 नित्यानंद जू जानि कैं प्रभु कौं भावावेस । आवैं नहिन निकट तव रहैं दूर कछु देस ॥
 प्रभु कौं नित्यानंद विन धारि सकैं जन कोय । प्रभु आवेस जु जाय नहि रहे कीरतन सोय ॥
 स्रम जु जनायौ सवनिकौ करि रचनाजु स्वरूप । जन गणकौ श्रम देखि प्रभु भये बाह्य रसरूप ॥
 सब भक्तन कौं लै प्रभु गये कुसुम उदयान । करि कैं कछु विश्राम प्रभु किय मध्यान्हस्नान ॥
 तव प्रसाद जगन्नाथ कौ आयौ बहु उपहार । लछमी कौं जु प्रसाद पुनि आयौ विविध प्रकार ॥
 लै सबकौं नाना रंगनि किय भोजन भगवान । जगन्नाथ कौं दरस किय करि कैं संध्या स्नान ॥
 जगन्नाथ कौं लखि कियौ नृत्य कीरतन रंग । जलक्रीडा जु नरेंद्र सर करैं भक्त गण संग ॥
 वन भोजन प्रभु जू करैं उदयान हि जव आय । आठ द्यौस लौं प्रभु करी क्रीडा यही सुभाय ॥
 जगन्नाथ कौं और दिन भीतर विजय सु होय । जगन्नाथ रथ चढ़ि चलैं निज आलय कौं सोय ॥
 पहिलैं हीं जो महाप्रभु लै सब जन मण संग । करैं जु परमानंद करि नृत्य कीरतन रंग ॥
 फेरि भयौ जगन्नाथ कौ पांडु विजय हूं जोय । इक कटि पट डोरी तहां गई टूटि कैं सोय ॥
 पांडु विजय की तूलिका टूटि टूक भई सोय । जगन्नाथ के बोझ करि उडि भजि गई जु सोय ॥
 बासी कुलिया गाम के सत्यराज अरु राय । करि सनमान तिन्हें दई आज्ञा प्रभु इहि भाय ॥
 या पट डोरी के जु तुम हो अब तें जुजमान । प्रति वत्सर ही न्याय हौ डोरी करि निरमान ॥
 टूटी पट डोरी दई ऐसैं कहि कैं ताहि । करि हौ याकौं देखिकें डोरी अति दृढ़ आहि ॥
 अधिष्ठान है शेष कौ यह पट डोरी जोय । सेवें श्री भगवान कौं दस मूरति धरि सोय ॥
 सत्यराज बड़ भाग हैं अरु श्री रामानंद । सेवा आज्ञा पाय कैं भयौ जु परमानंद ॥
 गुंडिचा तें प्रति वरस ते सब भक्तनि लैं संग । पट डोरी लै आवई हिये भरे अतिरंग ॥
 जाय सिंहासन पै तवै बैठे श्री जगनाथ । घर आये तव महाप्रभु भक्तगणनि लैं साथ ॥
 जात्रा दरसाई जु सो भक्त गणनि इहिं भाय । वृन्दावन क्रीडा करी पुनि लैं जन समुदाय ॥
 लीला प्रभु चैतन्य की है जु अनंत अपार । सहस बदन हूं करि नहीं पावै जाकौ पार ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगतहित सुबल श्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे हेरा पंचमी यात्रा वर्णनं नाम चतुर्दशपरिच्छेदः ॥

पञ्चदसपरिच्छेद

सार्वभौम-गृहे भुञ्जन् स्वनिन्दकममोघकम् ।
अङ्गीकुर्वन्स्फुटं चक्रे गौरः स्वां भक्तवश्यताम् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांसु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ॥
जय श्री प्रभु जू के चरित श्रोता जनके वृन्द । श्री प्रभु चरितामृत जिनहि प्राण वित्त सुखकन्द ॥
इही भाँति श्री गौर जू भक्तगणनि के संग । लीलाचल रहिकैं करैं नृत्य गीत भरि रंग ॥
करैं दरस प्रथमावसर जगन्नाथ अभिराम । करैं गीत नुति नृत्य औ दंडरीति परणाम ॥
उपल भोग लागत करें वाहिर विजय जु नाम । श्री प्रभु मिलि हरिदास कौ आवैं अपने धाम ॥
करत नाम संकीर्तन घर बसि प्रभु सुख रूप । करैं आय अद्वैत जू प्रभु पूजन अनुरूप ॥
देत सुगंधित सलिल करि पाद्य आचमन सोय । लेप्यौ सब अंग गौर कैं सुगंधित चंदन जोइ ॥
माथें तुलसी मंजरी दै गल माल विसाल । चरण प्रणति कर जोरि कैं करैं जुनुति रसाल ॥
पूजा भाजन कुसुम श्री तुलसी सेस हौ जोय । किय पूजन अद्वैत कौ प्रभु जू सब लै सोय ॥
जो हो सो हो नम तुम्हें बैठि मंत्र इहि आहि । श्रीप्रभुजु मुख वादय करि कहैं हास्य बहु ताहि ॥
इहि भाँतिनि सौ परसपर करैं प्रणति सुखसार । करैं निमन्त्रण गौर कौ आचारज बहुवार ॥
न्यौतौ श्री आचार्य कौ अचिरज कहिबौ तास । बरनों है विस्तार करि श्री वृंदावन दास ॥
ताते ह्यो पुनरुक्ति भय कर्यौ न वर्णन ताहि । करैं निमन्त्रण गौर कौ और भक्तगण आहि ॥
इक इक दिन इक भक्त घर होत महोत्सव रंग । तहां भक्त भोजन करें सबै महाप्रभु संग ॥
चारि मास भरिकैं रहैं सबै महाप्रभु संग । जगन्नाथ जात्रा विविध देखैं करि बहु रंग ॥
कृष्ण जन्मजात्रा दिवस नंदमहोत्सव रंग । गोपवेस भौ गौर जू सबभक्तनि लै संग ॥
भार दुग्ध दधि कौ सबनि निज निज अंसनि धारि । आये जु धाम महोत्सव हरि हरि कहैं पुकारि ॥
कानाई खुटिया तहां बैठे धरि वपु नंद । भई जसोदा माहिती जगन्नाथ सुख कंद ॥
आपुन रुद्र प्रताप पुनि कासी मिश्र जु आहि । सार्वभौम पुनि वाजपय तुलसी अधिकृत ताहि ॥
इन सब कौ लै गौर जू करैं नृत्य बहु रंग । हरद दुग्ध दधि सलिल करि भरे सबनि के अंग ॥
श्री आचार्य कहैं कहत सांच न करि हौ कोप । लकुट फिराय सकौ तवै जानि परौगे गोप ॥
प्रभु तिनही की लकुट लै लगे फिरावन ताहि । बार बार आकाश मधि फेंकि लपकि लै आहि ॥
सिरपर सन मुख पीठ पर इत उत ओर न दोय । लकुट फिराई संधि पद लखि जु हसैं सब लोय ॥
प्रभु ने चक्र अलात जौ लकुट फिराई सोय । चमत्कार भौ चितन मधि लखि कैं सिंगरे लोय ॥
इहि विधि नित्यानंद जू लकुट फिराई चाय । को जानैगो तिहिं दुहुनि गूढ़ गोप कौ भाय ॥

१५ श परिः]

मध्यलीला

[१२७

गजपति की आज्ञा जु करि अधिकृत तुलसी लाय । जगन्नाथ परसादि इक बख्ति लैकैं आय ॥
श्री प्रभु जू के मस्तकहि बांध्यौ वस्त्र अमोल । आचार्यादिक गोपगण पहिराये जु अतोल ॥
कान्हाई खुटिया जु पुनि जगन्नाथ जन दोय । दिय लुटाय आवेस करि हुतो गेह धन जोय ॥
देखि महाप्रभु कैं भयौ बहु संतोष जु सोय । मात तात के ग्यान करि दुहुनि प्रणति किय जोय ॥
तवै परम आवेस मधि प्रभु आये निज धाम । इहीं भाति लीला करैं गौर अंग अभिराम ॥
विजय दसमि लंका विजय तिहिं कौ दिवस जु सोय । प्रभु लीनौ निज गणनि कौ बानर सैन्य जु होय ॥
हनुमान आवेस प्रभु जु भौ तरु साखानि वाहि । चढ़ि लंकागढ़ कौ दई फारि तोरि कैं ताहि ॥
कितरे रावण प्रभु कहैं क्रोधावेश प्रशंस । हरी जगत माता अधम मारौ तोहि संवस ॥
गोस्वामी आवेस लखि अचिरज लोक अपार । जय जय लोक सबै कहैं तवै वारही वार ॥
दीपमाल जात्रा जु औ रासादिक इहि भाय । जात्रा लखि उत्थान की द्वादसि सकल बनाय ॥
एक दिवस श्री गौर जू नित्यानंद लै सोय । करैं जुक्ति एकांत मधि बैठि सहोदर दोय ॥
कहा जुक्ति दोऊ करैं तिहिं नहि जानै कोय । अनुमानहिगे फलहि करि पीछें जन गण सोय ॥
तवै महाप्रभु जु तहां सगरे जनहि बुलाय । गौड देस कौ सब चलौ विदा करी सुख पाय ॥
श्री प्रभु जु सबसौं कछौ प्रति वत्सर ह्यो आय । जैहौं लखि कैं गुंडिचा हमकौं मिलि सुख पाय ॥
आज्ञा दी आचारजहि करिकैं बहु सनमान । आचाण्डालजु तिहि करौ कृष्ण भक्ति कौ दान ॥
आज्ञा दी नित्यानंदहि जाहु गौड सुख रास । प्रेम भक्ति अर्गल रहित करिहौ तहां प्रकास ॥
आदि गदाधर कितिक जन रामदास सुख रूप । तुव सहाय करिहैं सदा दिय तुव साथ अनूप ॥
पंडित श्रीवासहि कर्यौ आलिंगन प्रभु आय । कहैं कंठ लगि कैं तवै मीठे वचन सु ताहि ॥
बीच बीच तुमरे निकट आय हमजु निरधार । छिपि करि लखिहैं आपुनौ नृत्य महासुख सार ॥
तुमरे गृहमधि कीरतन हम निति नचि हैं सोय । तुमही देखौ गेह में औ लखि हैं नहि कोय ॥
वहै बसन दैहौ जननि सब प्रसाद जो आहि । छमा करैयौं प्रणति करि मम अपराध हि ताहि ॥
तिहिं सेवा तजि कैं हम जु आय कर्यौ संन्यास । धर्म नहींहैं हमजु निज कर्यौ धर्म कौ नास ॥
हम हैं तिन के प्रेमवस तिन की सेवा धर्म । तिन कौ तजि कैं हम जु यह कीनौ वौरे कर्म ॥
मातकृपाल लहै नहीं वौरे सिसु के दोस । यही जानि कैं मात मम मानैगी संतोष ॥
कहा काज संन्यास सौ हमरें प्रेम जु वित्त । जिहीं समैं संन्यास किय भयौ छीन मम चित्त ॥
मैं लीलाचल में रहौं तिनकी आज्ञा आहि । विच विच आवैंगे जु हम चरण देखिवे ताहि ॥
देखौं तिन के चरण हौं नित्य जाय कैं आहि । मानैं नाहीं सांच ते स्फूर्ति ज्ञान करि ताहि ॥
भाजी कदली मूल की कीनी सरस सुधार । अरु पुनि करी पटोल की नीवपात सुखसार ॥
नीबू आदौ खंड दधि दुग्ध खण्ड कौ सार । सालग्राम समर्पि दिय तवै बहुत उपहार ॥

लै प्रसाद कौ गोद में क्रन्दन करै जु सोय । एसि गरे व्यंजन सु प्रिय लगै निमाई जोय ॥
 मैं कैसैं भोजन करौं इहां निमाई नाहि । आंख जल मम व्यान करि भर्यौ जु नैननि मांहि ॥
 सब कर्यौ भक्षण जु मैं तहां सिघ्र ही जाय । रीती पातरि कौ निरखि पूछैं अश्रु बनाय ॥
 खाये व्यंजन अन्न किन काहे शून्य सुपात । कही बाल गोपाल नें खायौ सिंगरौ भात ॥
 कै मेरौ मन गाथ करि भ्रम है गयौ जु सोय । खायौ काहू जंतुनैं किधौ आय सब जोय ॥
 कैहौं भ्रम करि पात्रमधि अन्न परोस्यौ नाहि । जाय पाक पाकहि लख्यौ औचिचार हिय माहि ॥
 देख्यौ व्यंजन अन्न करि पूरण भाजन सोय । संसय भौ अचिरज कछू शचीमात मन जोय ॥
 फिरि सेवक के हाथ करि चौकौ दयायौ ताहि । श्री गोपाल हि फेरि कै अन्न समप्यौ आहि ॥
 इहीं भांति जब ही करै उत्तम पाकहि जोय । मोहि खवावैं कौ करै रुदन चाव करि सोय ॥
 तहां जाय भोजन करौं मैं वस प्रेमहि ताहि । वेऊ सुख मानैं हियें बाहिर नाहीं आहि ॥
 इहीं विजय दशमी दिवस यहै भई है रीति । करवावौगे पूछि करि तिन कौ यहै प्रतीति ॥
 एतक कहि विहवल भये श्रीप्रभुजू रस भोय । किय धीरज हिय मांहि तब करिवैं विदा जु लोय ॥
 राघव पण्डित कौ कहैं वचन जु सरस अनूप । हम हैं तुम्हरे वस जु तुव कृष्णप्रेम अनुरूप ॥
 इनकी हरि सेवा कथा सुनौ जु सिंगरे लोय । सेवा परम पवित्र है अति सर्वोत्तम सोय ॥
 रहै कथा औ द्रव्य शुनि नारिकेलि की सोय । पंच गंडा करिकैं विकैं जैसौ तैसौ जोय ॥
 बारी में सत कितिक तरु लल लल फल ताहि । तऊ सुनैं मीठे जहां नारिकेलि फल आहि ॥
 इक इक फल कौ मोल दिय चारि चारि पण सोय । मगवावैं दस कोस तें करिकैं जतनहि जोय ॥
 प्रतिवासर में पांच छे फल छुलवाय बनाय । राखें सीतल करण कौ जल के बीच डुवाय ॥
 भोग समैं दै संख जल फिरि छोल्यौ फल जोय । करैं समर्पन कृष्ण कौ वदन छिद्र करि सोय ॥
 नारिकेलि जल कौ करैं पान कृष्ण जू सोय । राख कवहुं फल रितै कवहुं जल भरि जोय ॥
 जल रीतौ फल देखिकैं पण्डित हरषित होय । पूरन किय सत पात्र मधि अन्न फेरि फल सोय ॥
 करै जु पाक समर्पिकैं बाहिर बैठे ध्यान । पाक खाय कै हरि करैं भाजन शून्य निदान ॥
 कवहुं अन्न हि खाय पुनि भरैं अन्न सौं ताहि । पण्डित कैं श्रद्धा बढ़ै मगन सिंधु हित आहि ॥
 एक दिवस मधि दस फल जु संस्कार करि जोय । लै आयौ सेवग तहां भोग लगावन सोय ॥
 भौ विलम्ब कछु भोग कौ हुतैं जु औसर नाहि । रखा द्वार ही सेवक फल भाजन कर मांहि ॥
 द्वारें ऊपर भीत मधि दियौ हाथ तिहि जोय । तिहीं हाथ करि फल छियौ पंडित देख्यौ सोय ॥
 पण्डित कहै जु द्वार मधि करैं गतागति लोय । लागैं ऊपर भीत कैं तिहि पद रज उड़ि सोय ॥
 फल परसौ तिहि हाथ सौ दियौ भीत के मांहि । भये अपावन हैं जु ये कृष्ण जोग्य फल नांहि ॥
 इतनौ कहि फल फेकिदिय लाधिकैं भीत हि ताहि । इमि पवित्र इमि सेव करि जगतहि जीत्यौ आहि ॥
 संस्कार कौनो जु तब नारिकेलि औ जोय । करि कै पावन परम हौं भोग लगायौ सोय ॥

इहीं भांति कटहर कदलि नारंगी सु रसाल । दूनें दूरि हूँ गाम जिहि है नीके जु विसाल ॥
 आनें ते बहु मोल दै करिकैं जतननि आहि । संस्कार पावन जु करि करे निवेदन ताहि ॥
 विंजन के हित इहीं विधि साक मूल फल सोय । ऐसैं चिरवा मुरमुरा खांड खील कछु सोय ॥
 इनि भांतिनि पीठा पना ओदन सुंदर क्षीर । पावन परम जु और के सर्वोत्तमनि धीर ॥
 आंव कसौदी आदि दै बहुत प्रकार अचार । गंध वसन भूषण बहुनि दिव्य सब सुखसार ॥
 हित सेवा इहि भांति सौं करैं जु अनुपम आहि । सब लोकनि के सीतल जु नैन होत लखिताहि ॥
 एतक कहि श्रीराघव हि किय आलिंगन सोय । इन भांतिनि सनमान किय सबै भक्तगण जोड ॥
 सिवानंद सेनहि कहैं प्रभु करिके सनमान । वासुदेव दत्त कौ जु तुम करि हौ तोष निदान ॥
 ऐ तो परम उदार है जिहि दिन आवै जोय । तिहीं दिवस खरचै जु तिहिं सेस न राखे कोय ॥
 है जु कुटुंबी यें तिन्है चाहियै संचय जोय । संचय किये विना किहू कुटुम्ब भरण सु होय ॥
 इनके घर कौ लाभ व्यय सब तुमही तें आहि । लिख धर है कैं करौगे समाधान तुम ताहि ॥
 लै कैं मेरे प्रति वरस सब भक्तनि के वृंद । गुंडिचा आवौगे सबनि करि पालन स्वच्छंद ॥
 कुलिया वासिन सौं कहैं करि सनमान हि आहि । जा ता ऐहौ प्रति वरस पट डोरी लै ताहि ॥
 श्री गुणराज सुखान जू कृष्ण विजय किय आहि । जहां ये कहैं प्रेममय सरस वचन अति आहि ॥
 कृष्ण नंद नंदन जु मम प्राणनाथ जू सोय । इंद्री वचन करि हम विके तिहिं कुटुंब कर जोय ॥
 कहा कथा तुवारी जु तुव ग्राम स्वान है सोय । सोऊ मोकौं प्रिय महा रहौ दूरि औ लोय ॥
 सत्यराज खान तवै और जु रामानंद । प्रभु के चरणनि माहि कछु किय विनती सुख कंद ॥
 हम गृहस्थ विसयी जु हैं हमकौं साधन कोय । श्री मुख सौं आज्ञा करौ किय पद विनती सोय ॥
 गौर कहैं श्रीकृष्ण औ जन सेवन निस काम । करौ निरन्तर कीरतन कृष्णनाम अभिराम ॥
 सत्यराज जू तब कहैं करिकैं विनती ताहि । जानहिंगे हम कौन विधि है वैष्णव इह आहि ॥
 कौन वैष्णव हैजू प्रभु कीजै सेवन जाहि । तिहिं लक्षण सामान्य जे कहौ कृपा करि ताहि ॥
 कहैं प्रभु जिहि मुख सुनौ कृष्णनाम इकवार । वहै पूज्य हरिनाम करि श्रेष्ठ सबनि निरधार ॥
 वहै करै हरिनाम करि सब पापनिछय ताहि । होत नाम हीतें सकल नवधा भक्ति जु आहि ॥
 पुरश्चरण दीक्षा विधिहि करै न नाम विचार । करैं सबनि रसना परस आचांडाल उधार ॥
 करैं जु छय संसार कौ आनुसंगिक फल तास । चित खेंचै श्रीकृष्ण मधि करै प्रेम परकास ॥

तथाहि—

आकृष्टिः कृतचेतसां सुमहतामुच्चादनं चाहंसा
 माचाण्डाल ममूक लोक सुलभो वश्यश्च मोक्षश्रियः ।
 नो दीक्षां न च सत्क्रियां न च पुरश्चर्यां मनागीक्षते
 मन्त्रोऽयं रसनास्पृगेव फलति श्रीकृष्णनामात्मकः ॥ २ ॥

याही ते जाके बदन एक कृष्ण अभिधान । सोई है वैष्णव जु तिहि करौ परम सनमान ॥
 दास मुकुंद जु खण्ड के औ रघुनंदन नाम । श्री नरहरि जू मुख्य ये तीनों जन अभिराम ॥
 पूछत दास मुकुंद कौ सचीसुनु अभिराम । तुमहौ पिता जु पुत्र तुव कै रघुनंदन नाम ॥
 के रघुनंदन तुव पिता तुम हौ तनय कि ताहि । निहिचै करि मोसौ कहौ जाय जु संसे आहि ॥
 रघुनंदन हमरे पिता कहै मुकुंद जु दास । है मेरें निहचै यहै हम हैं पुत्र जु तास ॥
 कृष्ण भक्ति हम सबनि कै रघुनंदन हीतैं जु । याही तैं सब के पिता रघु निश्चै किय मैं जु ॥
 हरपैं सुनि कै प्रभु कहैं कहैं जु प्रभु निरधार । याही तैं हरि भक्ति करि लघु हूं गुरु सुखसार ॥
 कहैं जु महिमा भक्त की प्रभु पावै सुखसार । कहत भक्त महिमा भये पांच वदन निरधार ॥
 सुनौ कहैं जन गननि सौं श्री मुकुंद कौ प्रेम । गूढ़ प्रेम निरमल जु अति जैसें सुद्ध जु हेम ॥
 राजवैद्य बाहिर जु ये करैं जु सेवा ताहि । कृष्ण प्रेम अंतरं जु इहि जानि सकै को आहि ॥
 एक दिना नृप जवन की उच्च अटारी आहि । वात चिकित्सा की कहै आगें बैठे ताहि ॥
 मोर पखनि कौ पंखा इक तिहीं समैं अति आहि । राजा के सिर पर धरौ लै इक सेवक ताहि ॥
 प्रेमावेश मुकुंद भौ मोर पखा लखि चाय । अति जु अटारी उच्च ते परे भूमि मधि आय ॥
 राजवैद्य कौ मरण भौ राजा कौ यह ज्ञान । करवायौ चेतन तिन्ह जु उतरि आय भय मानि ॥
 राजा कहै व्यथा तुमनि पाई किहि अंग माहि । मुकुंद कहैं अति बहु व्यथा मैंतौ पाई नाहि ॥
 राजा कहै मुकुन्द क्यों गिरे अटा तें जोय । मुकुंद कहै मोकों व्यथा घू कह मिरगी सोय ॥
 सबै बात जानैं नृपति वह है महासुजान । भौ मुकुंद मधि नृपति कै महा सिद्धि कौ ज्ञान ॥
 हरिमन्दिर सेवा करै रघुनन्दन जू सोय । द्वारें एक सरोवरी तिहीं घाट पै जोय ॥
 फूल बारह मास की कदंब वृक्ष इक सोय । हौहि कृष्ण अवतंस तैं फूल नित्य ही दोय ॥
 फिरि कै कहैं मुकुन्द सौं मधुर वचन सुख साज । करैं उपार्जन धर्म करि धन तुम्हरौ यह काज ॥
 रघुनंदन कौ कार्य यह हरि सेवन कौ आहि । विना कृष्ण सेवा नहीं और ठौर मन आहि ॥
 श्री नरहरि जू तुम रहौ मेरे जन गण संग । ये त्रय कारज तीन जन सदा करौ भरि रंग ॥
 विद्या वाचस्पति जु औ सार्वभौम जुग आत । दोऊ जन पर कृपाकरि कहैं गौर जू वात ॥
 कृष्ण प्रगटे इहि समैं दारु नीर वपु धारि । दरसन और जु स्नान करि करैं जीव निस्तार ॥
 दारु ब्रह्म साक्षात हैं श्री पुरुषोत्तम नाम । हैं सु प्रगट भागीरथी जल ब्रह्महि अभिराम ॥
 दारु ब्रह्म सेवन करैं सार्वभौम जू सोय । नीर ब्रह्म सेवन करैं वाचस्पति जू जोय ॥
 प्रभु जू गुप्त मुरारि सौं करि आलिंगण आहि । कहैं भक्तगण सब सुनौ भक्ति निष्ठता याहि ॥
 इन्हें लुभायौ मैं प्रथम औ कहि वारंवार । परम मधुर हैं गुप्त जू श्री ब्रजराज कुमार ॥
 सर्वासी सर्वाश्रय जु और स्वयं भगवान । निर्मल प्रेम विशुद्ध जो तिहि सरवसमय जानि ॥
 सब सदगुण इंद सुरतन रतनाकर हैं ताहि । चतुर विदग्ध सुधीर हैं रसिक मुकुटमणि आहि ॥

मधुर चरित श्रीकृष्ण कौ औ पुनि मधुर विलास । चतुरता जु वेदग्ध करि करैं जु लीलारास ॥
 तिन ही कृष्ण हि तुम भजौकृष्ण आश्रय होय । कृष्णविना जु उपासना मन जिनि आनौ कोय ॥
 बार बार इहि भांति सौं सुनि कै वचन विलास । मेरे गौरव करि कछु मन फिरि गयौ रसाल ॥
 हम सौं बोले गुप्त तव हौं तुव किंकर आहि । हूं आज्ञा कारी जु तुव नहि स्वतंत्रता याहि ॥
 यों कहि कै निज घर गयौ निसिमैं करै विचार । भौ विहवल रघुनाथकौ त्याग हिये मधि धार ॥
 छाड़ौगौ रघुनाथ कौ कैसे पद सुख साज । राम करौ मेरौ मरण याही निसि मधि आज ॥
 इंहि भाति क्रंदन करै सिगरी निसि के माहि । कियों रात कौ जागरण मधि चेतना जु नाहि ॥
 आय भोर ही मम चरण मधि निज सिर कौ धारि । रोवत रोवत ही कछु विनती किय सुखसार ॥
 मैं रघुपतिके चरण मधि वेंचि सीस निज दीय । छाडि सकौ नहीं रामकौ लहौं व्यथा अतिहीय ॥
 चरण कमल रघुनाथ के छाड़े नैकु न जाय । तुव आज्ञा भंग होय है कहा करौं जु उपाय ॥
 तातें मो पै दयामय करौ कृपा तुम एह । तुमरें आगें मृत्यु मम होय न सो सन्देह ॥
 एतिक सुनि कै सुख भयौ बहुतें मेरें हीय । तव तौ इनहि उठाय कै मैं आलिंगन कीय ॥
 साधु साधु श्री गुप्त जू तुव दृढ़ भजन निदान । तुमरौ मेरे वचन करि चलौ नहीं चित आन ॥
 ऐसी ही प्रभु चरण मधि चहियै जन कै प्रीति । चरण छुटावैं प्रभु तऊ सकै न तजि इहि रीति ॥
 भाव सु निष्ठा यहै तुव जानन हित निरधार । मैं तुम सौं आग्रह बहुत कीनौ वारंवार ॥
 हनुमान साक्षात तुम रघुवर किंकर आहि । छाड़ौगे कैसें जु तुम चरण सरोरुह ताहि ॥
 सोई गुप्त मुरारि ए मेरे प्राण समान । सुनि लखि इन कौ दैन्य मम फाटै हीय निदान ॥
 वासुदेव कौ तव प्रभू करि अलिंगण आहि । हूँ करिकें जु सहस मुख कहैं सु गुण गण ताहि ॥
 निज गुण सुनिकैं दत्त जू हिय अति लज्जित होय । धरिकें प्रभु जू के चरण करैं निवेदन सोय ॥
 जगत तारिवे हेत प्रभु है तुम्हरौ अवतार । मेरै एक निवेदन हि करौ जु अंगीकार ॥
 करिवे कौं जु समर्थ तुम महादयामय जोय । तुव मन करौ तवें प्रभू अनायास ही होय ॥
 जीवन कौ दुख देखि मम टूक टूक हिय होय । सब जीवन कौ पाप प्रभु देहु सीस मम सोय ॥
 हौं जीवन कौ पाप लै करौं नरक कौ भोग । सब जीवनि कौ तुम प्रभू दूरि करौ भव रोग ॥
 यह सुनि श्री चैतन्य कौ द्रवौ हियौ भरि रंग । लागे श्री प्रभु जू कहन अश्रु कंप भरि भंग ॥
 तुमरें अचिरज यह नहीं हौ तुम तौ प्रह्लाद । तुम पर है श्री कृष्ण कौ परिपूरण जु प्रसाद ॥
 कृष्ण सत्य सोई कर जोयी मागैं दास । निज जन की इच्छा विना और कृत्य नहि तास ॥
 सकल जगत के जीव कौ तुम चाहौ निरतार । पाप भोग विन होय गौ सब ही कौ उद्धार ॥
 नहीं कृष्ण असमर्थ हैं धरैं सबै बल जोय । क्यों भुगतैं और कौ तुम्है पाप फल सोय ॥
 जाकौ हित चाहौ जु तुम भयौ वैष्णव सोय । पाप वैष्णव कौ जु हरि दूरि करैं सब जोय ॥

तथाहि— यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहोस्वकर्म बन्धानुरूपफलभाजनमाननोति ।

कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजाभि ॥

तुम इच्छा ही मात्र करि है है जग उद्धार । मुक्त करत ब्रह्मांड सब नहि प्रभु के कछु भार ॥
एक उदंबर तरु लगे कोटिक फल जिहि भाहि । भासै विरजा तीर मधि कोटि अंड समुदाय ॥
होय नास परिके जवै कबहुं इक फल ताहि । तऊ न हानि जानै नहीं कछु वृक्ष निज आहि ॥
तेसैं ही ब्रह्माण्ड इक होय मुक्त जो आहि । तऊ हानि कछु कृष्ण जू मन में धरें न आहि ॥
अमित ईसता कृष्ण के वैकुण्ठादिक धाम । खाई ताके कोट की कारणाब्धि जिहि नाम ॥
माया लै भासै तहां जे अनन्त ब्रह्माण्ड । गढ़खाई भासै सु यों राई पूरण भांड ॥
इक राई नासै जु तिहि हानि न मानै सोय । नहीं हानि यों कृष्ण के नसै अंड इक होय ॥
जो सब ही ब्रह्माण्ड सह होय आज्ञा कौ नास । तऊ कृष्ण जू मानई नहीं हानि कछु तास ॥
कामधेनु कोटिक पति हि ज्यों इक छेरी नास । षड गुण पति श्री कृष्ण के कौन काम है तास ॥
तथाहि—

जय जय जह्नुजामजित दोषगृभीत गुणां त्वमसि यदात्मना समवरुद्धसमस्तभगः ॥ इति ॥

सब भक्तनि के यों कहै जे जे गुण हैं जाहि । सब कौ विदा दई जु प्रभु करि आलिंगण ताहि ॥
प्रभु वियोग करि भक्त सब रोदन करै अपार । प्रभु के भक्त वियोग करि खेद हिये जु मभार ॥
रहै गदाधर पण्डित जु श्री प्रभु जू के पास । वाग जमेश्वर बीच प्रभु करवायौ तिहि वास ॥
पुरी गुसाई जू सरस अरु श्री जगदानंद । श्री स्वरूप दामोदर जु प्रभु स्वरूप सुख कंद ॥
दामोदर पण्डित निपुन काशीश्वर गोविंद । ये सब लीला चल वसैं प्रभु के संग आनंद ॥
जगन्नाथ कौ दरस सब निति प्रति प्रातः काल । करैं महाप्रभु संग मिलि हिय आनंद विसाल ॥
एक द्यौस प्रभु के निकट सार्वभौम जू आय । हाथ जोरि के कछु करैं प्रभु हि निवेदन चाय ॥
गये वैष्णव अब सबै गौडदेस कौ जोय । भयौ निमन्त्रण कौ अवै प्रभु कौ औसर सोय ॥
करौ जु भीक्षा मास भरि प्रभु जू मेरें गेह । प्रभु जू कहैं न करि सकैं नही धर्म है एह ॥
भीक्षा दिन बीसहि करौ कहैं फेरि करि प्रीति । प्रभु जू कहैं यह नहीं हंस धर्म की रीति ॥
भट्टाचारज तब चरण प्रभु के धरि के सोय । करौ दिवस दस ही कहैं करि के विनती जोय ॥
दिवस घटाये पांच प्रभु क्रम क्रम करिके आहि । नियम भयौ दिन पांच कौ भीक्षा करिवे ताहि ॥
सार्वभौम जू तब करैं और निवेदन ताहि । संन्यासी दस जन जु हैं प्रभु तुमरे संग आहि ॥
पुरी गुसाई पांच दिन भीक्षा मेरें गेह । पहिले कीनी है प्रभु तुम जानत हो एह ॥
मम स्वरूप दामोदर जु बांधव ईश्वर सोय । ऐहैं कबहुं संग तुम कभू एक ले जोय ॥
अरु संन्यासी आठ कौ दोय दोय दिन होय । इक इक दिन इक इक जती पूर्ण मास भौ सोय ॥
जो इकटे ही आय है बहु संन्यासी जान । पावेंगे अपराध तिहि कर न सकैं सनमान ॥

निज छाया संग गेह मम ऐहौ तुम रस रूप । कबहुं ऐहैं संग तुव दामोदरजु स्वरूप ॥
प्रभु के हिय की जानि के आनंदित भौ हीय । ताही दिन प्रभु कौ तहां तिन्हें निमंत्रण कीय ॥
पतिनी भट्टाचार्य की साठी माता नाम । जननी है जे नेह की प्रभु भक्ता अभिराम ॥
भट्टाचार्य आय घर आज्ञा दीनी ताहि । साठी माता हरषि करि पाक चढ़ायौ आहि ॥
पाक गेह तें दाहिनें है भोगालय दोइ । इक घर सालग्राम कौ भोग लगै है सोइ ॥
भीक्षा हित श्री गौर के अरु दूजौ गृह जान । कीनीं है एकांत इक आचारज निर्मान ॥
वाहिर कौ इक द्वार तिहि प्रभु प्रवेस हित साज । द्वार रसोई और इक पाक आयवे काज ॥
इक वत्तीसा कदलि कौ कोमल विपुल सुपात । परस्यौ मानी तीन मित ता मधि तंदुल भात ॥
पीत सुगंधित घीव करि सींच्यौ अन्न सुधार । पातरिके चारौ दिसा घृत वहि चलो सुधार ॥
खोत्सा कदली के बरापात सुदौना पांति । नाना व्यंजन भरि धरें चहुंधा नीकी भांति ॥
दस विध साकसु निव पुनि तिक्तजु सुक्ता भोल । मिरच भाल छेनासु पुनि बड़ी वडा अरु घोर ॥
घीया पेठा दूध मधि लफला और विसार । केरा की भाजी विविध सकरा बहुत प्रकार ॥
पक्व सुपेठा वरिनु के विंजन किये अपार । फल वडी फल मूल की भई सु विविध प्रकार ॥
नींव पत्र नव भुंज के वेंगन किय मिलि ताहि । करी मानचाकी सुपुनि पलवल भाजी आहि ॥
भुंज उरद औ मूंगकी कीनी दारि सुधारि । बरा मधुर पाठे सुपुनि अंवल बहु परकार ॥
मुंग उरद के बरा पुनि मधुर कदलि के सोय । दूध नारियर पिष्ट की कीनी पूरी जोय ॥
दूध चिडा कांची वडा दुध लकलकी जु आहि । और जिते पेठा किये कह न सकैं सब ताहि ॥
घृत जुत पायस सघन अति भरि कुंडनि मधि ताहि । अद्भुत केरा दूध मधि करैं अमृत सम आहि ॥
मठा सिखरणि दधि बंध्यौ दूरी मधुर अपार । गौडदेस उत्कल जु के भोजन जितक प्रकार ॥
श्रद्धा करि आचार्य जू सबे कराये सोय । सुन्दर चौकी पर मिही वसन विछायौ जोय ॥
सीतल वासित जल भरी दुहुं दिसि भारी दोय । पाक व्यंजननि पर धरी तुलसी मंजरी सोय ॥
पिठा पना गुटिका अमृत ते सब लिये मंगाय । सब साद जगनाथ को न्यारौ धर्यौ बनाय ॥
तिही समैं श्री गौर प्रभु करि मध्यान हि आहि । इकले ही आये तहां जानि हिये की ताहि ॥
भट्टाचार्य जू कियौ पद परछालन ताहि । घर भीतर प्रभु जू गये भोजन करिवे आहि ॥
पाकादिक सब देखि के प्रभु जू विसमित होय । पूछें भट्टाचार्य सौं करि कछु भंगी सोय ॥
विंजन पाक जिते जु ए सबे अलौकिक आहि । दोय पहर भीतर भये कैसें करिके याहि ॥
सौ चूल्है पर सौ जनें करै रसोई जोय । तऊ पाक वेगहि इते रांधि सकैं नहि कोय ॥
भोग लगायौ कृष्ण कौ यों कीजत अनुमान । तुलसी मंजरी देखि यै सब पै धरी सु आन ॥
भागवान तुम सफल हुब तुमरौ उदयम हेत । जातें राधा कृष्ण कौ भोग लगायौ एत ॥
वरण सु सौरभ अन्न कौ अति हि मनोहर मान । भोजन कीनी प्रगट ही राधाकृष्ण सु जान ॥

जो तुम्हरो यह भाग्य बड़ कहा प्रससैं ताहि । पावैगे अब सेस इन भाग्यवान हम आहि ॥
 आसन चौकी कृष्ण की राख्यौ याहि उठाय । न्यारौ करिकें देहु मम प्रभु प्रसाद कछु लाय ॥
 भट्टाचार्य कहैजु प्रभु करौ न अचिरज याहि । जिनि जेयौ तिहि शक्ति करि भोग सिद्ध हुव आहि ॥
 नहि घरणी के रांधि के नहि मम उदयम जान । पाक सिद्धि जिहि सक्ति करि हुव तिहि ताकौ ज्ञान ॥
 याही आसन बैठिकें भोजन करौ सुसार । कहै गौर यह कृष्ण कौ आसन पूज्य हमार ॥
 आसन अन्न प्रसाद सम कहै भट्ट यों साध । अन्न पाइयै पटा पर बैठत क्यों अपराध ॥
 कहै गौर नीकें कही शास्त्र सु आज्ञा आहि । सबै वैष्णव कौ सेसहि दास भोगवै ताहि ॥

तथाहि—

त्वयोपभुक्त सगन्ध वासोऽलंकारचर्चिताः । उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेमहि ॥

तऊ जु खाय सकैं नही अन्न इतेक प्रमान । भट्ट कहैं जानत जितौ खाय सकौ भगवान ॥
 लीलाचल मधि तुम करौ भोजन वावन वार । एक एक ही भोग मधि अन्न जु दश दश भार ॥
 द्वारावति सोरह सहस महसिन घर अभिराम । मैया अठारह के घरनि अरु यादों के धाम ॥
 ब्रज में जितने गोपगण ताऊ चाचा तात । सखा वृन्द सब के घरनि जेवौ सांभ प्रभात ॥
 गोवर्द्धन के यज्ञ मधि खाई अन्ननि रासि । ताके लेखें अन्न मम है नहि एकौ ग्रास ॥
 तुम ईश्वर में दास दी छुद्राकार सुधार । एक ग्रास माधुकरी करौ जु अंगीकार ॥
 यह सुनि हसिकें गौर जू बैठे भोजन काज । भट्ट देहि जगन्नाथ कौ सेस हरसि हिय साज ॥
 जामाता आचार्य कौ सो अमोघ तिहि काल । कन्या साठी पति वहै निंदक कुलहि विसाल ॥
 सो भोजन देख्यौ चहै आवन पावै नाहि । भट्टाचारज लै छरी बैठे द्वारे मांहि ॥
 ते जब भये प्रसाद के देत आनमन चाय । आय अमोघ सु अन्न लखि निंदा करै वनाय ॥
 वृषति होय इहि अन्न करि दसवारह जन सोय । एक लौ संन्यासी करै एतिक भोजन जोय ॥
 सुनि भट्टाचार्य तव देख्यौ फिरि कैं आहि । भाज्यौ तवै अमोघ सो देखि सभारन ताहि ॥
 भट्टाचारज लै छरी मारण दौरे आहि । सो अमोघ भजि कैं गयौ सुधि पाई नहि ताहि ॥
 आये भट्टाचार्य तिहि देत गालि औ साप । निंदा सुनि लागे हसनि गौर महाप्रभु आप ॥
 सुनि पीटै छाती सिरहि साठी माता सोय । रांड हो हु साठी कहैं वारवार ही जोय ॥
 दोऊन के दुख देखि प्रभु दोऊन कौ समझाय । भोजन कीनौ तुष्ट हूँ दुहुँ इच्छा करि चाय ॥
 अन्नबन तिनहि कराय कैं दियौ भट्ट मुख वास । तुलसि मंजरी लौंग पुनि एला और सुवास ॥
 चंदन लेख्यौ अंग सब प्रभु माला पहिराय । होय दंडवत दैन्य मय कहैं वचन भरि भाय ॥
 तुम निंदा करवायवै लायौ तुम कौं गेह । छमा करौ श्री कृष्ण प्रभु मम अपराध जु एह ॥
 कहै गौर निंदा नहीं सहज कहीं तिहि आय । यामें को अपराध हुव तुमरे औ पुनि ताहि ॥

अपनी निंदा बहुत किय परि प्रभु जु के पाय । तिनकौं सांति कराय प्रभु घरकौं दियौ पठाय ॥
 भट्टाचारज आय घर साठी माता संग । करि अपनी निंदा कछु कहै वचन इहि रंग ॥
 गोस्वामि चैतन्य की सुनी जु निंदा जाहि । सोधन याही पाप कौ होय किये वध ताहि ॥
 अथवा अपने प्राण कौ करिये मोचन जोय । दोऊ नाही जोग्य ये ब्राह्मण तन है दोय ॥
 तिहि निंदक कौ फेरि मुख नहीं देखि है आहि । परित्याग कीनौ अथ नाम न लैं है ताहि ॥
 पुनि साठी सौं कहैं तिहि तजौ पतित भौ सोय । पतित भयें पति कौ जु है उचित त्याग ही जोय ॥

तथाहि—पतिश्च पतितं त्यजेत् । इति ॥

सो अमोघ भजि कैं कहैं रख्यौ तिहीं निसि आहि । भई जु व्याधि विमूचिका प्रात भयें ही ताहि ॥
 सुनिकें मरण अमोघ कौ कहैं जु भट्टाचार्य । मार्यौ सहज ही देव नें कियौ हमारौ कार्य ॥

तथाहि—

महताहि प्रयत्नेन सन्नद्यगजवाजिभिः । अस्माभि र्यदनुष्ठेयं गन्धर्वैस्तदनुष्ठितम् ॥

दशमे—

आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एवच । हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥

गोपीनाथाचार्य गौ प्रभु दरसन हित आहि । व्यौरौ भट्टाचार्य कौ प्रभु जू पूछौ ताहि ॥
 गोपीनाथ कहैं कियौ दोऊजन उपवास । छोडे प्राण अमोघ ने भौ विमूचिका तास ॥
 धाये आये सुनत हीं प्रभु करुणामय जोय । प्रभु जू कहैं अमोघ कौ हियें हाथ धरि सोय ॥
 अति ही निर्मल सहज ही हृदय विप्र कौ एह । बसिवे कौं श्री कृष्ण कौ यहै जोग्य है गेह ॥
 मात्सर्य चांडालहि किति इहां बसायौ आन । कीनौं हौ अपवित्र यह महापवित्र स्थान ॥
 सार्वभौम के संग करि नास भये तुव पाप । करै जीव पापनि नसै कृष्ण नाम आलाप ॥
 उठौ अमोघ कहो जु तुम कृष्ण नाम रसखान । करि हैं तुमपै वेगही कृपा आप भगवान ॥
 सुनत हि उठ्यौ अमोघ तव कृष्ण नाम करि जोय । मत्त प्रेम उन्माद करि नांचन लाग्यौ सोय ॥
 कंप अश्रु अरु जाडय अंग पुलक स्वेद सुरभंग । हसैं महाप्रभु देखिकें ताकें प्रेम तरंग ॥
 श्री प्रभु जू के चरण धरि करै विनती सोय । मम अपराध क्षमा करौ प्रभु करुणामय जोय ॥
 यही छार मुख करि कियौ तुमरौ निंदन जोय । यह कहि निजहि कपोल मधि मारै निज कर सोय ॥
 मारत मारत गल्ल निज दिये अमोघ फुलाय । कर गहि गोपीनाथ जू मनैं कियौ तव आय ॥
 समाधान प्रभु जू करैं तवै परस अंग तास । सार्वभौम संबंध तुम मम नेह निवास ॥
 जे आचारज गेह में दासी दास जु स्वान । तेऊ मेरे परम प्रिय रहौ दूर जन आन ॥
 नाहिन तुव अपराध कछु लेहु सदा हरिनाम । इतनौ कहि आये प्रभु सार्वभौम के धाम ॥

सार्वभौम लखि गौर कौ परे चरण मधि आय । प्रभु आलिंगन करि तिन्है बैठे आसन माँय ॥
 कहैं जु गौर अमोघ सिसु कहा दोस तिहि आय । काहे कौ तुम व्रत करौ करत रोस क्यों ताय ॥
 उठौ न्हाय देखौ अबे जगन्नाथ मुख जाय । वेगि आय भोजन करौ तब मम सुख अधिकाय ॥
 तबलौं ह्यां रहि हौं जु हौं बैठौई इहि चाय । पावौगे परसाद तुम जितनें लौ ह्यां आय ॥
 भट्ट तवै प्रभु चरण धरि कहन लगे इहि भाय । मरौ अमोघ जु ताहि तुम काहै लियौ जिवाय ॥
 कहैं गौर बालक जु तुव है अमोघ वह आहि । बालक दोस न लेय पित जातें पालक ताहि ॥
 भयौ वैष्णव अब गयौ तिहि अपराध विचार । अब ताके ऊपर करौ तुम प्रसाद निरधार ॥
 भट्ट कहैं चलियै प्रभु ईश्वर दरसन चाय । आवत मैहू वेगही तहां इहीं छिन न्हाय ॥
 प्रभु कहि गौपीनाथ ह्यां बैठे रहियौ चाय । इनौ प्रसाद लियौ यहै हमसौं कहियौ आय ॥
 इतनौ कहि प्रभु जू गये ईस दरस हित धाय । भट्ट न्हाय दरसनहि करि किय भोजन घर आय ॥
 उही अमोघ भयौ महाप्रभु को भक्त एकांत । लेय नाम हरि प्रेमसौं नाचै महासु सांत ॥
 ऐसै लीला चित्र अति करैं सची सुत सोय । जेई देखैं सुनें जे तिन हिय अचिरज होय ॥
 ऐसै कीनें भट्टगृह प्रभु भोजन जु विलास । ताही मधि नाना किये चित्र चरित्र प्रकास ॥
 सार्वभौम घर कौ यहै भोजन चरित्र बखान । भयौ प्रेम आचार्य कौ जामें विदित निधान ॥
 साठी माता की भगति प्रभु जु प्रसाद अगाध । जहां भक्ति सनबंध करि छमा कियौ अपराध ॥
 सुनि है प्रभु लीला यहै श्रद्धा करि जन जोय । चरण कमल चैतन्य के वेगहि पैहै सोय ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे ब्रज भाषायां सार्वभौम घर भोजनं नाम पंचदश परिच्छेदः ॥

षोडशपरिच्छेदः

गोडोद्यानं गौरमेघः सिञ्चन्स्वालोकनामृतैः । भवाग्निदग्धजनतावीरुधः समजीवयत् ॥

गौरचंद जय जय सदा जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
 वृन्दावन के गमन हित भई चाह प्रभु जान । नृप प्रताप रुद्र जु भयौ सुनिकैं विमन निदान ॥
 सार्वभौम अरु राय जू इन दोऊनि बुलाय । राजा दोऊन सौं कहै वचन विनय अधिकाय ॥
 लीलाचल तजिऔर ठां चलियै प्रभु मन चाय । तिन के राखन हेत तुम करौ जतन बहु भाय ॥
 मोहि सुहाय न तिन बिना यहै राज अधिकाय । प्रभु के राखन के लिये करौ अनेक उपाय ॥
 राय जु भट्टाचार्य श्री हैं इकठे जन दोय । करै जुगत जब ही प्रभु चलिवे कौं मन होय ॥

दोऊ कहैं करौ दरस रथजात्रा रस ऐन । आये कातिक मास के करियौ गमन सुखेन ॥
 कातिक आयें फिरि कहैं है अब हीं अति सीत । दोल जात्रा देखि प्रभु जै हौ भक्त यह रीति ॥
 विविध उपाय उठावहीं आज काल्हि कहि जोय । संमत देहन चलन कौ विरह भीत जन दोय ॥
 ईश्वर जदपि स्वतंत्र है नहि परवसता जाहि । तऊ भक्त इच्छा सु करि गमन करै नहि आय ॥
 वर्ष तीसरें गोंड के सबै भक्तगण जोय । लीलाचल के चलन हित सब कौ मन भौ सोय ॥
 श्री अद्वैताचार्य के गये सबै मिलि पास । सो प्रभु प्रभु के दरस हित चले जु परम हुलास ॥
 प्रभु की आज्ञा है जदपि रहिवैं गोंड निकेत । अरु श्री नित्यानंद कौ प्रेम प्रकाशन हेत ॥
 तऊ चले श्री गौर के दरस हेत प्रभु दोय । नित्यानंद के प्रेम की चेष्टा जानें कोय ॥
 श्री आचार्य रत्न जू विद्यानिधि रस राज । श्री रामाई भक्त प्रभु प्रभु प्यारे श्री वास ॥
 वासदेव जू भक्त वड श्री मुरारि जू सोय । अरु श्री गोविंद घोष ए तीनों भाई जोय ॥
 निज भाली भरि लै चलै राघौ परम प्रवीन । पट डोरी लै चलै वैं वासी ग्राम कुलीन ॥
 नरहरि वासी खण्ड के श्री रघुनन्दन सोय । गणना को करि सकैं तिन चले भक्तगणजोय ॥
 समाधान घाटिन करैं सिवानंद जू सैन । सबही कौ पालन करैं लैकैं चलै सुखेन ॥
 सब के सब कारज करैं देहवास घरजान । सिवानंद जानें सबै जे उडिया जु प्रधान ॥
 प्रभु दरसन हित तिहि वरस सब ठकुराणी जात । चली संग आचार्य कें और सची प्रभु मात ॥
 शनिवास पण्डित हि संग चली मालिनी आय । श्री आचार्य रत्न संग चली जु पत्नी ताहि ॥
 सब ठकुरानी गौर कें भीचा देवैं काज । प्रभु प्रिय नाना द्रव्य जे लिय निज घरतें साज ॥
 समाधान सब ही करैं सिवानंद रस ऐन । घटवारन सौं कहि करहिं देहि वास हि सपेन ॥
 किय दरसन गोपाल कौ तिन्हौ रेगुना आय । आचारज कीनौ तहां नृत्य कीरतन भाय ॥
 परचै नित्यानंद कौ सब सेवक संग जान । तिन सेवक गण आय कें कीनौ बहु सनमान ॥
 रहे तहां हीं तिहि निशा सब महंत सुखमान । बारह अटका खीर के सेवक धरे जु आन ॥
 क्षीर वाटि सब कौं दई प्रभु श्री नित्यानंद । क्षीर प्रसादहि पाय कें बढौ सबनि आनंद ॥
 माधवेन्द्र जू की कथा स्थापन श्री गोपाल । जो माग्यौ तिन सौ मलय श्रीगोपाल रसाल ॥
 तिन हित गोपीनाथ नें खीर चुराई सोय । प्रभु के मुख तें जो कथा प्रथम सुनी है जोय ॥
 सभा बीच सोई कथा कहैं जु नित्यानंद । सुनि कें श्री आचार्य कें हियें बढौ आनंद ॥
 चले चले इहि भाति ही आये कटकहि माहि । लखि साखी गोपाल कौं रहें तहां दिन ताहि ॥
 कथा साखीगोपाल की कहैं जु नित्यानंद । सुनि कें भक्तनि कें हियें बाढ़्यौ अति आनंद ॥
 उत्कण्ठा सब के हिये प्रभु के मिलवे काज । आय सब मिलवेगिही लीलाचल सुखसाज ॥
 नला अठारहि सुनि प्रभु आये जन के साथ । द्वै माला पठई तिन्है दै गोविंद के हाथ ॥
 गोविंद विव माला जु लै पहिराई जन दोय । आचारज अवधूत जू सुख पायौ हिय सोय ॥

किय आरम्भ तिन्हौ तहां कृष्ण कीरतन सोय । नाचत नाचत चलै तहां आए ते जन दोय ॥
 जे स्वरूप मुख जूथ निज दिय माला फिरि ताय । पठये आगे लैन कौ शचीसुनु जु आय ॥
 मिले सबनि सौं भाय करि ते नरेन्द्र मधि आय । माला पहिराई सबनि दई महाप्रभु भाय ॥
 प्रभु जू नें आए सुनें सिंह द्वार दिग जोड़ । मिले सबनि सौं आय कें आप महाप्रभु सोय ॥
 लै सब कौं जगन्नाथ कौ किय दरसन अभिराम । पुनि सब कौं लैके प्रभु आए अपने धाम ॥
 आन्यौ काशीमिश्र औ वाणीनाथ प्रसाद । निज कर सौं प्रभु सबनि कौं करवायौ आस्वाद ॥
 जो जाकौं पहिले वरस हो वसिवे को धाम । सब कौं तहां पठाय कें करवायौ विसराम ॥
 इहीं भांति सब भक्त गण रहे जु चातुर्मास । करें कृष्ण संकीर्तन प्रभु के संग विलास ॥
 रथ जात्रा कौ समय जब आयौ प्रथमहि रीति । धोयो मंदिर गुंडिचा लै सब कौं करि प्रीति ॥
 पट डोरी जगन्नाथ की दिय आनी जु कुलीन । रथ आगे प्रभु नृत्य किय प्रथम रीति रसलीन ॥
 करि कें प्रभु बहु नृत्य हू चले बहुरि उद्यान । जहाँ जाय वापी तटहि किय विश्राम सुजान ॥
 राढ़ी द्विज इक है वहै नित्यानंद कौ दास । महा भाग जुत नाम तिहि कृष्णदास सुख रास ॥
 प्रभु जू कौ अभिषेक तिन घट भरि भरिकें कीय । प्रभु कौं तिहि अभिषेक करि महातृप्त भौ हीय ॥
 बलगंडी के भोग कौ आयौ तहां प्रसाद । पायौ महा प्रसाद प्रभु सबके संग अति स्वाद ॥
 रथ जात्रा कौ दरस किय प्रथम रीति भरि रंग । जात्रा हेरा पंचमी देखी लै जन संग ॥
 कियौ निमंत्रन गौर कौ आचारज जू सोइ । ताही मधि जैसे कियौ पवन महा भर जोइ ॥
 वरनन किय विस्तार कें तिहि वृन्दावनदास । प्रभु जू कौ न्यौतो तवै कीनौ है श्रीवास ॥
 नाना विंजन मालिनी कीनौ प्रभु पिय जोय । दासी भाव है भक्ति करि वत्सल जननी सोय ॥
 रत्नाचारज आदि जन मुख्य भक्त गण ताहि । बीच बीच श्री गौर कौ करें निमंत्रण आहि ॥
 बीते चातुर्मास प्रभु लै संग नित्यानंद । कछु विचार दुरि बैठि कें करें नित्य सुख कंद ॥
 आचारज प्रभु सौं कहै सैना बेनी सोय । श्री अद्वैत प्रहेलिका पढ़ें न बूझे कोय ॥
 तिनके मुख कौं लखि हँसै शची सुनु रस खान । आचारज नृत्तहि करें अंगी कृत किय जान ॥
 कहा विनति आज्ञा कहा समझौ काहु न जोइ । आलिंगन करिकें प्रभु विदा दई तिहि सोइ ॥
 कहै जु प्रभु नित्यानंद हि अहो सुनो श्री पाद । हौं मांगत हौं यहै तुम करौ बडौ परसाद ॥
 लोलाचलकौ प्रति वरस ऐहौ नहि तुम जोइ । करि हौं इच्छा मम सफल गौड़हिरहिकें सोइ ॥
 और न ऐसौ देखिये करे सिद्धि तिहि जोइ । हम सौं होय न काम जो सो तुम ही तें होइ ॥
 नित्यानंद कहे जु प्रभु हौं हम देह तुम प्राण । देह प्राण न्यारै रहे यह नाही जु प्रमाण ॥
 करौ अर्चितहि शक्ति करि तुम ही घटना ताहि । जो कराय हौं करेंगे सोई निज मन आहि ॥
 तिन कौ विदा दई प्रभु करि आलिंगन ताय । सब जन गण कौं दिय विदा इहीं भांति प्रभु आय ॥
 कुलिया वासिन प्रथम ज्यों किय निवेदन सोय । आज्ञा करौ प्रभु हमें करिवें साधन कोय ॥

कहै जु प्रभु वैष्णवन कौ सेवन कीर्तन नाम । वेगहि पैहौ यह किये कृष्ण चरन अभिराम ॥
 ते पूछें तिहि साधु कौ लच्छन कहा प्रमान । तव हंसिकें प्रभु जू कहै तिनके मन की जान ॥
 कृष्ण नाम नित ही वसे जाके मुख में आहि । वहै वैष्णव मुख्य है भजो चरन तुम ताहि ॥
 बहुरि तिन्हौ अगिले वरस प्रश्न करी यौ ताहि । तार तम्य वैष्णवनि कौ सिखयौ प्रभु जू ताहि ॥
 कृष्ण नाम आवै मुखहि जिहि देखतहि प्रमान । ताही कौ जानौ जु तुम हैं वैष्णव जु प्रधान ॥
 क्रम करि प्रभु जू ने कहे वैष्णव लच्छन जोइ । वैष्णव वैष्णवतर जु पुनि वैष्णवतम हैं सोइ ॥
 इही भांति वैष्णव सबै चलै गौड़ को आहि । विद्यानिधि लीलाचलहि रहे वरस मधि ताहि ॥
 है तिनकें जु स्वरूप संग सख्य प्रीति अभिराम । दोऊ जन हरि कथा रस करें एक ही ठाम ॥
 तिन्हो गदाधर पंडितहि मंत्र दियौ पुनि जोइ । ओढ़न पंठी के दिवस देखी जात्रा सोइ ॥
 जगन्नाथ कोरे वसन पहिरे जात्रा ताहि । घृणा भई तिहि देखकें विद्याधर मन आहि ॥
 ताही निस मधि आय कें जगन्नाथ बलराम । तिनहि थपेरयौ भ्रात विवहंसि हंसिकें अभिराम ॥
 फूले जुगल कपोल तिहि हिय में भयौ हुलास । वर्णन कीय विस्तार करि यह वृन्दावन दास ॥
 आवैं जन गन गौड़तें वरस वरस यहि भाय । प्रभु के संग रहैं करैं जात्रा दरसन चाय ॥
 ताही मधि जिहि जिहि वरस है विशेष कछु जोइ । तिहि विचारि विस्तार करि करिहैं आगे सोय ॥
 चारि वरस प्रभु के गए इहीं प्रकारहि जोइ । दक्षिण जात्रा मधि लगे दोय वरस तिहि सोइ ॥
 चाहे वृन्दावन चलौ औरै वर्ष जु दोय । हठ करि रामानंद कें चलि न सके प्रभु सोय ॥
 तव प्रभु रामानंद औ सार्वभौम के पास । आलिंगन करिकें करैं मधुर वचन सुखरास ॥
 मेरे उत्कंठा अधिक विपिन गमन हित आइ । तुमरे हठ करि द्वै वरस कियौ गमन नहिं ताइ ॥
 अब समंति दोऊ करौ हौं चलिहौं निरधार । तुम दोऊ विन और नहिं गति मेरे सुविचार ॥
 गौड़ देश के बीच हैं मेरे आश्रम दोय । ईई दोऊ दयामय जननि जान्हवी सोय ॥
 जितने गौड़ जू देश है देखि सबनिकौं जाहि । दोऊ आज्ञा देहु तुम हैं प्रसन्न मन माहि ॥
 दोऊ प्रभु के वचन सुनि मन में करें विचार । प्रभु संग अति हठ भलौ कभू नहिं निरधार ॥
 अब वरसा नहिं चलि सकौ दोऊ कहै विचार । आए दशमी विजया कें तव चलिहौं निरधार ॥
 आनंदित है गौर प्रभु समाधान किय जान । कीनौ दशमी विजय दिन श्री प्रभु तवै पयान ॥
 प्रभु प्रसाद जगन्नाथ कौ पायौ जेतिक जोइ । डोरी मलय करार सब लियौ संग निज सोय ॥
 आज्ञा लै जगन्नाथ की चले प्रभात सुचाय । पाछें उड़िया भक्त गण सब आए चलि चाय ॥
 आए निज गण संग प्रभु पुरहि भवानी आय । रामानंद डोला चढ़ि आए पाछें ताहि ॥
 दीनौ वाणीनाथ नें बहुत प्रसाद पठाय । सो प्रसाद भोजन जु करि रहे तहां सुख पाइ ॥
 प्रात भए भुवनेश्वरहि चलि कें आए चाय । दरसन श्री गोपाल कौ कीन्हौ कटकहि आय ॥
 स्वपनेश्वर द्विज ने कियौ प्रभु कौ न्यौतौ चाय । न्यौते प्रभु जन गण सबै श्री रामानंद राय ॥

प्रभु बाहिर उद्यान मधि वासा कीनौ आय । भये कोलाहल जननि कौ कीनौ वारण राय ॥
 भिच्चा करिकें वकुलतर किय विश्राम सुजान । नृप प्रताप रुद्रहि निकट कीन्हौ राय पयान ॥
 सुनि आनन्दित नृप भयो आयौ वेगहि सोइ । प्रभु कौ लखि कें दंडवत परौ भूमि मधि जोय ॥
 पुनि पुनि उठै गिरैजु पुनि प्रणय विकल अति आहि । पुलक अंग अंसुवा परै करै बहुत नुति ताहि ॥
 प्रभु कौ मन संतुष्ट भो देखि भक्ति तिहि आहि । उठिकें श्री प्रभु ने कियौ आलिंगन तब ताहि ॥
 फेर स्तुति राजा करे करै प्रणामहि आहि । गौर कृपा अंसुवान करि किय स्नान वपु आहि ॥
 बैठायौ नृप सुस्थ करि श्री रामानंद आहि । ऐसैं मन वच कर्म करि करी कृपा पुनि ताहि ॥
 ऐसे तिहि ऊपर करी कृपा गौर सुख धाम । रत्नक रुद्रप्रताप के भौ याही तें नाम ॥
 राज लोक गण ने कियौ प्रभु कौ वंदन जोय । राजा को दीनी विदा शचीसुनु जू सोइ ॥
 राजा बाहिर आइके आज्ञा पत्र लिखाय । जिते राजसी राज मधि दीनौ तिन्है पठाय ॥
 ग्राम ग्राम मधि करौगे नये निवासु जु ठाम । भरि हौ सामग्रीन सों पांच सात नव धाम ॥
 प्रभु कौ तहां उतारि हौ आपुन आय लिवाय । धरै नेत्र करि रैन दिन करिहौ सेवा भाय ॥
 मंगराज हरिचंदन जु महापात्र ए दोय । तिन को नृप आज्ञा दई करो काज सब जोइ ॥
 इक नवीन नौका नदी तीर राखिहौ आनि । नदी पार जैहें जहां करिहैं प्रभु जू स्नान ॥
 तहां थंव रोपन करौ महातीर्थ धरि नाम । करिहौ नित्य स्नान तिहि जो मरिये तिहि ठाम ॥
 चतुर्द्वार मधि तुम करौ उतरण हित नव वास । जावो रामानंद तुम श्री प्रभु जू के पास ॥
 सन्ध्या करि प्रभु हैं चले सुनिकें नृप इहिं भाय । गज ऊपर पट ग्रहन मधि नारी गणहि चढाय ॥
 प्रभु के चलिवें मार्ग मधि ठाडे पंगति वान । निज गण लै सन्ध्या समय चले गौर रस खान ॥
 आय नदी चित्रोत्पला न्हाए घाटहि ताहि । देखत हीं जु प्रणाम किय सब महिषीगण आय ॥
 प्रभु के दरसन करि सवै भए प्रेम के ऐन । कृष्ण कृष्ण सबहीं कहें आंसू बरसैं नैन ॥
 ऐसैं परम कृपालु औ सुनें न त्रिभुवन में जु । कृष्ण प्रेमा होय जिन दशसे दूरहिं ते जु ॥
 भये नदी के पार प्रभु चढ़िकें नौका आहि । चतुर्द्वार आए जु चलि रैन चांदनी तांहि ॥
 तहां रैन रहि प्रात ही नित्य कृत्य करि जोय । पायौ महा प्रसाद प्रभु तिहीं समै ही सोइ ॥
 अधिकारी दिन दिन हि प्रति नृपकी आज्ञा पाय । देहि बहुत जन हाथ करि अधिक प्रसाद पठाय ॥
 प्रभु प्रसाद निज गण सहित करिकें अंगीकार । चलै महाप्रभु उठि तवै हरि हरि बोलि पुकार ॥
 मंगराज श्री राय जू श्री हरिचंदन सोइ । चले जु एइ तीन जन संग सेवा हित जोइ ॥
 पुरी गुसाई गौर संग श्री स्वरूप सुख कंद । जगदानंद मुकुंद औ काशीश्वर गोविंद ॥
 ठाकुर श्री हरिदास पुनि ब्रह्मेश्वर निधि आर्य । अरु पंडित दामोदर जु गोपीनाथाचार्य ॥
 रामाई नंदाई पुनि बहुत भृत्य गण आहि । सब गणना को करि सकै कहे मुख्य गण ताहि ॥
 श्री युत पंडित गदाधर चले संग जब आहि । तजौ क्षेत्र संन्यास जिनि मनै कियौ प्रभु ताहि ॥

पंडित कहे जहां तुम लीलाचल है सोय । जाहु क्षेत्र संन्यास मम अवै रसातल जोय ॥
 कहैं महाप्रभु ह्यां करौ सेवन गोपीनाथ । ते बोले कोटिक हमें सेवा तुम पद साथ ॥
 कहैं गौर सेवा तजौ हमें लागि है दोस । ह्यां ही रहि सेवा करौ हमें यहै सन्तोष ॥
 पंडित कहे जु दोष सब मेरे सिर पै सोइ । तुमरे संग जैहों नही जैहों इकलौ सोय ॥
 मात दरस हित जात है नहि तुमरे हित आहि । सेव प्रतिज्ञा त्यागने दोष पात्र हौं ताहि ॥
 इहि कहि आगेई चले पंडित जू करि चाय । आय कटक मधि प्रभु तिन्हें लीन्हों संग बुलाय ॥
 पंडित कौ जो गौर मधि प्रेम न समझौ जाय । निजहि प्रतिज्ञा सेव हरित्याग दई तन प्राय ॥
 प्रभुकौ तिनके चरित मधि हियमें अति संतोष । बोलौ तिनकौ हाथ गहि करि कछु प्रणय सुरोप ॥
 सेव प्रतिज्ञा छाडिबो यहै जु तुव उदेस । भयौ सिद्ध सो छाडिकें अए दूरहि देश ॥
 चाहौ मेरे संग रहौ निज सुख चाहत सोइ । यहै हमारे दुख हिये जाय धर्म तुव दोइ ॥
 जो चाहौ मेरे सुखै चलौ नीलगिरि ताहि । जौ फिरि बोलौ और कछु शपथ हमारी आहि ॥
 इतनौ कहि कैं गौर प्रभु चढ़े नाव मधि जोइ । परे तंहाई मूरछित हूँ पंडित जू सोय ॥
 सार्वभौम कौ दिय विदा पंडित के संग हेत । भट्टाचारज कहैं उठौ यों प्रभु लीला चेत ॥
 कृष्ण प्रतिज्ञा निज तजी तुम जानत हौं सोइ । भक्त कृपा भीषम करी धरी प्रतिज्ञा जोइ ॥
 तथाहि श्री भागवते—

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवलपुतो रथस्थः ।

धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गुह्रिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः ॥

ऐसैं हीं तुव विरह दुख सखौ महा प्रभु जान । तब सु प्रतिज्ञा की करी रक्षा जतन हि वान ॥
 यों कहि तिन्हें प्रबोधी सार्वभौम बड़ धीर । दोऊ जन लीलाचल हि आये शोक अधीर ॥
 धर्म कर्म प्रभु के लिये तजै भक्त गण भाय । धर्म हानि जो भक्त कें प्रभु पै सहौ न जाय ॥
 यहै प्रकार जो प्रेम कौ जोई सुने जु याहि । चरन कमल चैतन्य कौ वेगहि मिलि है ताहि ॥
 राजपात्र दोऊ चले भावत जे प्रभु संग । रामानंद संग रैन दिन कृष्ण कथा भरि रंग ॥
 विदा देंहि प्रभु राय कौ तजे न ते प्रभु संग । रामानंद संग रैन दिन कृष्ण कथा भरि रंग ॥
 नृप आज्ञा करि भृत्यगण ग्राम ग्राम प्रति आहि । नव घर नाना द्रव्य करि करै जु सेवन ताहि ॥
 आये चलिकें रेमुना ऐसैं प्रभु सुख हीय । श्री रामानंद राय कौ विदा तहां तें दीय ॥
 परे भूमि मधि राय जू नहि चेतना ताहि । प्रभु भरि अंक हि राय कौ क्रंदन करै जु आहि ॥
 कथा राय कें विदा की कही जाइ नहि जोइ । ताकौ वर्णन जो कछू कहि न सकै जन कोइ ॥
 औड़ देस की सींव तब आये चलि प्रभु जोय । अधिकारी नृप के तहां मिले जु प्रभु सों सोय ॥
 तिन्हों दिना द्वै चारि प्रभु सेवा करी अपार । आगे चलिवे कौं तिन्हों विवरण कहौ विचार ॥
 एक जवन मदिप महा आगे तिहि अधिकार । तिहिं भय कोऊ न पंथ हि जाय सकै निरधार ॥

है ताकौ पिछलदा लौं सब ठाई अधिकार । तिहिं भय कोऊ नदी के होय सकै नहि पार ॥
 रहौ दिनन कछु करहिगे संध्य तिहीं ढिग जाइ । तव करिवे हैं गमन तुम सुख सौं नौका न्याय ॥
 तिही समैं तिहि जवन कौ सेवक इक चर जोइ । आयौ उडिया कटक मधि करि वेसांतर सोइ ॥
 प्रभु कौ अद्भुत चरित सो देखि वहै फिरि जाइ । हिंदू चर सोई कहै तिहीं जवन ढिग आइ ॥
 आयौ है जगन्नाथ तें इक संन्यासी आहि । सिद्ध सु पुरुष अनेक ही लोक साथ हैं ताहि ॥
 सबै कृष्ण संकीर्तन करैं निरंतर जोइ । सब ही गावैं नाचै रोवैं हसैं जु सोइ ॥
 लक्ष लक्ष जन आवही देखन के हित ताहि । ताही देखि फिरि कै नही जाय सकै घर आहि ॥
 है गे तेई लोक सब संग बावरे प्राय । नाचै रोवैं कृष्ण कहि लोटें धर मुरझाय ॥
 कहिवे की नही कथा सो लखैं जानिहौ आहि । ईश्वर करि कै मान हौं तिहिं प्रताप करि ताहि ॥
 इतनों कहि कै चर वहै हरे कृष्ण हीं गाय । नाचै रोवैं हसैं पुनि भयो बावरे प्राय ॥
 वंदे प्रभु के पद कमल तिहि अधिकारी आइ । कृष्ण कृष्ण कहि प्रेम करि भौ विहवल अधिकाय ॥
 कहि उडिया सौ धीर धरि नमस्कार करि ताहि । पठ्यौ तुमरे निकट हौं जवन अधिपने आहि ॥
 जो तुम आज्ञा देहु तौ इहां आयकैं सोइ । प्रभु कौ दरसन देखिकैं जैहैं नृप जब सोइ ॥
 कीनीं है विनती अधिक अति उत्कंठा ताहि । यहै संध्य तुम संग हू अनही जुध्य भय आहि ॥
 महापात्र सुनि कै कहै हिय अति विस्मित होय । ऐसौ मदयप जवन कौ हियौ करै सो कोय ॥
 महाप्रभु हि प्रताप नें हियौ फिरायौ ताहि । जिनके दरमन श्रवण करि जगत तरौ सब आहि ॥
 वचन कहे नृप दूत सौं औ विचार हिय आहि । प्रभु के दरसन आय कैं करौ भाग्य है ताहि ॥
 ह्यौ आवौ विन अस्त्र है जो चह करै प्रतीति । पांच सात ही भृत्य संग लै ऐहै इहि रीति ॥
 कछौ तवै तासौं सकल तिही अधिकारी जाय । आयौ तव ही सो जवन हिंदु वेष बनाय ॥
 देखि दूर हीते प्रभुहि परौ भूमि मधि धाय । करै दण्डवत अश्रुजुत है पुलकित अधिकाय ॥
 महापात्र लायौ तवै ताकौ करि सनमान । प्रभु आगें कर जोरि कै लेय कृष्ण अभिधान ॥
 अधम जवन की जाति मैं जन्म भयौ क्यों दीन । काहे हिंदू जात मधि विधि मुहि जन्मन कीन ॥
 हिंदू भयें जु पाइये तुम पद कौ ढिग जान । वृथा देह मेरौ यहै छूटि जाहु अव प्राण ॥
 महापात्र सुनि कै इतौ प्रेमावेसित होय । प्रभु जू की अति स्तुति करै गहि कै चरणनि सोय ॥
 होय सुद्ध चांडाल हू नाम श्रवन करि जाहि । ऐसे तुम तिनकौ जु इन पायौ दरसन आहि ॥
 याकी जो यह गति भई यामें अचरज कोइ । ऐसौ ही सुप्रभाव तुव है दरसन कौ जोइ ॥

तथाहि श्रीभागवते—यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्यत्प्रहृणायन् स्मरणादपि कचिन् ।

स्वाद्योऽपि सद्यः सबनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनान् ॥

कृपा दृष्टि करिकैं प्रभु समाधान करि ताहि । कहैं तवै श्रीकृष्ण हरि कहौ निरंतर आहि ॥

बोल्याँ वह जो मोहि तुम कीनीं अंगीकार । देहु आज्ञा यह जु इक करौं जु मैं निरधार ॥
 गो द्विज साधुन की करी है हिंसा अपराध । तिहीं पाप तें होहु मम जैसे प्रभु निस्तार ॥
 तव मुकुंद दत्त जु कहैं सुनौ महाशय जोइ । गंगा के तट जायवे है प्रभु कौ मन सोइ ॥
 तहां जायवे हेत तुम करौ सहाय प्रकार । यहै आज्ञा बड़ी तुव यहै बड़ी उपकार ॥
 तवै महाप्रभु के चरण वंदन करिकैं सोइ । पुनि सब कौं करि वंदना चल्याँ हरपित होइ ॥
 महापात्र तासौ करी भेटाभेटी आहि । सामग्री दै कै बहुत करी मित्रता ताहि ॥
 प्रात समैं तिनही तवै नौका बहुत सजाय । आन्यौ प्रभुकौ आपनैं अधिकारी हि पठाय ॥
 महापात्र आयौ सुचलि श्री प्रभु जू के संग । प्रभु कौ पद वंदन किये आय म्लेच्छ भरि रंग ॥
 नौका एक नवीन जो ताकैं मधि घर ताहि । ताके ऊपर गौर कौं सगण चढ़ायौ आहि ॥
 महापात्र कौं गौर प्रभु विदा करी यों जोइ । रोवत रोवत तीर मधि देख रहि गयौ सोइ ॥
 चोरन के भय नीर मधि चल्याँ जवन हूँ सोइ । लई संग सेना बहुत दस नौका भरि जोइ ॥
 मन्त्रेश्वर इक दुष्ट नद करि राखे तिहिं पार । जवन पिछलदा ग्राम लौं आयौ सो निरधार ॥
 प्रभु जु ताही ग्राम तें विदा दई तिहि आहि । कह न सकैं तिहिं समै की प्रेम सु चेष्टा ताहि ॥
 करैं अलौकिक ही सबै लीला प्रभु चैतन्य । जोई याहि सुनै जु तिहि जन्म देह अति धन्य ॥
 आये पानीघाट प्रभु चढ़ि कै नौका ताहि । नावक कौं निज सवन दिय करिकैं कृपा सु आहि ॥
 प्रभु आये कहि लोक मधि भौ कोलाहल जोय । भरे मनुष्यन करि सबै जल अरु थल है सोय ॥
 राघव पंडित आय लै गये प्रभु हि लिवाय । लोक भीर करि पथ चलत आये जिहिं तिहिं भाय ॥
 एक दिना ही मात्र प्रभु कीनीं तहां निवास । प्रभु कुमारहाटहि गये प्रात जहां श्रीवास ॥
 शिवानंद के घर गये आगें तैसैं जोय । वासुदेव के घर प्रभु पीछैं आये सोय ॥
 वाचस्पति के गेह प्रभु रहे प्रकार जु जाहि । जैसे लोकनि भीर भय आये कुलिया आहि ॥
 तहां जु माधवदास गृह रहे सचीसुत आहि । लक्ष कोटि लोकनि तहां आये दरसन ताहि ॥
 सात दिना रहि प्रभु तहां किये लोक निस्तार । सब अपराधी जननि कौं तार्यौ जिहीं प्रकार ॥
 आचारज के गेह जो गये सांतिपुर आहि । शची मात सौं मिलि तहां दुःख दूर किय ताहि ॥
 रामकेलि ग्रामहि प्रभु गये तवै ज्यों सोइ । रूप समातन कौं तहां मिलै जु जैसे सोइ ॥
 सूत्र हि मधि ताकौं अधिक कीनीं वर्नन आहि । फेरि नाटसाला हि तें जैसे ऐवौ ताहि ॥
 फेरि सांतिपुर बीच प्रभु कीनीं दस दिन वास । वरन्यौ है विस्तार करि इह वृंदावन दास ॥
 याही तें ताकौं इहां नहि कीनीं विस्तार । होय दोष पुनरुक्त है बाढ़े ग्रंथ अपार ॥
 ताही मधि तैसैं मिलै रूप सनातन दोय । करी नृसिंहानंद ज्यों पथ की रचना सोय ॥

सूत्र मध्य लीला वहै में हूं बरणी आहि । याही तैं फिरि कै इहां कियो लिखन नहि ताहि ॥

क०—हिररायदास आरज अनुज गोवर्धन है दोऊ भाई धनी अति बडौ अधिकार हैं ।
सप्त ग्राम दोय दस लाख मुद्रा के अधीस दाता दिज भक्त मुख्य धर्म सदाचार हैं ।
नदिया निवासी भूमि देव तिन्हौ पोषें सदा भूमि धन अन्न दै कै करें उपगार हैं ।
नीलांबर चक्रवर्ति हैं आराध्य दुहुनि कै चक्रवर्ती तिन्हौ करें भातृ व्यवहार हैं ॥

दोहा

मिश्र पुरंदर कौ कियो पहिलैं सेवन जोय । याही तैं प्रभु दुहुनि कौ नीकैं जानै सोइ ॥

कवित्त

तिन ही गोवर्धन के पुत्र रघुनाथदास वाल काल हीतें सो तो विषय उदास हैं ॥
करि कै सन्यास जब सांतिपुर आये प्रभु तिन्हौ तब मिले आय रघुनाथ दास हैं ।
प्रभु के चरण गिरे प्रेमाविष्ट हैं कै इन्है निज पद छायौ प्रभु करुणा की रास हैं ।
तातहि हिरण्य सदा करयौ सेवा आचार्यकौ याहीतें आचार्य भये हरषित तास हैं ॥

पायौ तिनकी कृपा करि प्रभु अवसेस जु सोइ । पांच सात दिना लौं तहां देखे प्रभु पद जोइ ॥
प्रभु तिनकौं दैकैं विदा गये नीलगिरि चाय । भये प्रेम करि मत्त अति तेऊ निज घर आय ॥
लीलाचल के गमन हित पुनि पुनि भाजै सोय । राखे पथतें आनि कै बांधि पिता तिहिं जोइ ॥
रखवारे जन पांच निशि दिन राखे ढिग ताहि । द्वै द्विज सेवक चार औ रहैं संग तिहिं आहि ॥
सदा सरवदा राखई एकादस जन ताहि । जान न पावै नीलगिरि लहै न अंतर ताहि ॥
अब जब आये सांतिपुर महाप्रभु भर भाय । सुनि रघुनाथ पिता निकट करौ निवेदन आय ॥
देह जु आज्ञा जाय कै देखौ प्रभु पद चाय । नाही तौ रहि है नहीं मम जीवन इहि काय ॥
सुनि कै तिनके तातनैं बहु धन जन दै ताहि । विदा कियो कहि कै तिन्है वेगि आय हौ आहि ॥
सात दिना लौं सांतिपुर रहे महाप्रभु साथ । रैन दिना रघुनाथ जू कहैं यहै मन गाथ ॥
रखवारनि के हाथ तें हौं छुटि हौं किहिं भाय । जैहौं कैसैं लीलगिरि प्रभु जू के संग चाय ॥
तिन के मन की जानि प्रभु सर्वहि ज्ञाता आहि । सिच्यारूप कहे वचन समाधान करि ताहि ॥
बारे तौ तुम होहु जिनि जाहु गेह थिरि होय । कूल लहै भव जलधिकौ क्रम क्रमही जन जोय ॥

ववित्त

मर्कट बैराग्य छाडौ लोकनि दिखायवे कौं जथा जोग्य विषे भोग करौ धिन प्रीतिसौं ।
अंतर बैराग्य धरौ बाह्य व्यवहार करौ वेगि हौं करेंगे कृष्ण अंगीकार रीति सौं ।
बृंदावन हूँ कै जब लीलाचल ऐहैं हम पास तुम ऐहौ तब काहु छल नीति सौं ।
ताही समैं कृष्ण तुम्है सो छल फुरैहैं आप प्रभु बिना कौन राखै काल व्याल भीत सौं ॥

कृष्ण कृपा करै तब तिन्हौ कौन राखि सकै ऐसैं कहि महाप्रभु इन्हौ विदा कियो है ।
आये निज गेह प्रभु कही सोई रीति गही मर्कट बैराग्य छाडि गेह काज लियो है ।
तत पर भये व्यवहार बीच जान्यौ जब देखि पिता माता भये हरषित हियो है ।
छाडि रखवारी दई लई इन्हौ रीति नई भये प्राय विपई से यौ दिखाय दियो है ॥

हौं महाप्रभु इक ठां जु करि सब जन गन हैं सोइ । नित्यानंद अद्वैत मुख जिते भक्तगन जोय ॥
करि आलिंगन सवन सौं कहैं महाप्रभु सोइ । देहु जु आज्ञा सब हमें जाहि नीलगिरि जोइ ॥
भयौ इहाई सवनि सौं मिलन हमारौ जोय । लीलाचल अब कै वरष की जौ गमन न कोय ॥
हौं जु तहां तैं जाहु गौ बृंदावन निरधार । देहु जु आज्ञा सब तवै ऐहौं विघ्न निवार ॥
शचीमातके चरण धरि बहुत विनय किय आहि । बृंदावनके गमन हित प्रभु आज्ञा लियताहि ॥
प्रभु जू तब नवद्वीप कौं दीनौ तिन्हौ पठाय । लै करि भक्तनि संग के चले नीलगिरि चाय ॥
पथ महि तेई लोक सब करैं जु सेवन ताहि । सुख सौं आये नीलगिरि शचीमुख जु आहि ॥
किय दरसन जगनाथ कौ तहां महाप्रभु आय । प्रभु आये सुनि ग्राम भौ कोलाहल अधिकाय ॥
मिले आयके भक्तगण हिये न हरष समाय । आलिंगन सबकौं कियो श्री प्रभु जू भरि भाय ॥
आये काशी मिश्र जू पुनि श्री रामानन्द । परम भक्त प्रद्युम्न जू सार्वभौम रस कन्द ॥
वाणीनाथ प्रवीण अति प्रभु के प्यारे जोय । सिखी माहती आदि दै जिते भक्तगण सोय ॥
मिले गदाधर पण्डित जु श्री प्रभु जू सौं आय । तिन सब के आगें प्रभु कहन लगे इंहि भाय ॥
हौं बृंदावन जाउंगौ गौडदेस दिस होय । निजमाता अरु सुरधुनी तिनके पद लखि जोय ॥
गमन कियो हौं गौड कौं मन में करि इंहि भाय । संग भये निज भक्तगण सहस एक अधिकाय ॥
लछ लछ जन आवैं कौतिग देखन चाय । लोगन की अति भीर करि पथ मधि चलौ न जाय ॥
जहां रहैं चहुँघा तहीं भीत चूर हैं जाय । जितही नैन परै तितै लखियै जन समुदाय ॥
कष्ट कल्पना करि गये रामकेलि हम ग्राम । आये हमरे निकट तब रूप सनातन नाम ॥
कृष्णकृपा के पात्र विव भाई भक्तनि भूष । राजपात्र व्यवहार मधि मंत्री बडे अनूप ॥
विद्या भक्ति सुबुद्धि के बलकरि परम प्रवीन । तई आप कौं मानई तृण हूतें अति दीन ॥
होय विदीर्न पखान हूं दैन्य देखि सुनि ताहि । हौं अतिही सन्तुष्ट हूँ कहौ तिनैं तब आहि ॥
उत्तम हूँकैं आप कौं मानें करिकैं हीन । वेगहि अब उद्धार तुम करिहैं कृष्ण प्रवीन ॥
इतनौ कहिकैं हौं तिनौं विदा दई जब जोइ । गमन समैं सुप्रहेलिका पढ़ी सनातन जोइ ॥
हैंगे जिनके संग ही लछ कोटि ए लोइ । नहीं बृंदावन गमन की इहि परिपाटी जोइ ॥
हौं न विचारयौ ताहि तब श्रवण मात्र किय आहि । कान्हाई नटसाल इक ग्राम प्रात गौ ताहि ॥
मन में कियो विचार हम रैन समैं इंहि भाय । हम सौं कहा पहेलिका कही सनातन आय ॥

लक्षकोटि जन भीर यह है जिनके संग मांदि । वृंदावन के गमन की यह परिपाटी नाहि ॥
 भली बात है सो कही इते लोक मरु संग । कहि है मोसों लोक लखि यह किये इक दंग ॥
 निर्जन वृंदाविपिन है दुर्लभ दुर्गम सोय । इकलेई जैयै तहाँ के इक जन सँग जोय ॥
 माधवेन्द्र जू एक ले गये तहाँ सुविचार । चले तहाँ हम कुहक कौ इन्द्र जाल विस्तार ॥
 धिक धिक हमकौ कहिय है प्रभु जु भये अधीर । है निवर्त्त हम फेरि कैं आये गंगा तीर ॥
 आयो जनगण राखि कैं तिन तिनके निज वास । आये जन सब पांच छय हमरै सँग सुखरास ॥
 अब कैसै निरविघ्न हम वृंदावन कौ जाहि । देहु जुक्ति मिलकैं सबै है प्रसन्न मन मांदि ॥
 हौं तजि गयो गदाधरहि इन लहौ दुख जोइ । तिहीं हेत करि विपिन कौ जाय सकौ नहि सोइ ॥
 तव गदाधर पण्डित जु प्रेमावेसित होय । श्री प्रभु पद धरि कैं कहै करिकैं विनती सोय ॥
 बह श्री वृन्दाविपिन है रहौ जहाँ तुम चाह । गंगा जमुना सब तहाँ तहाँ तीर्थ समुदाइ ॥
 जायौ वृन्दावन तऊ जन सिच्छा हित सोइ । जो है तुम्हरे हीय में करि हौ प्रभु जू सोइ ॥
 यह आगे आयौ प्रभु वर्षा चातुर्मास । इनहिं चारौ मास मधि करौ लीलगिरि वास ॥
 पाछे आचरि हौ उहै है तुम्हरे मन जोइ । चला रहौ इच्छा हि निज करै निवारण कोइ ॥
 सुनि सब भक्त कहै तवै प्रभु पद मधि करि नेह । पण्डित किय जू निवेदन सबके इच्छा एह ॥
 सबकी इच्छा करि प्रभु रहे महीना चारि । सुनि प्रतापरुद्रहि हियें भयो मुहरप अपार ॥
 कियो गदाधर तिहि दिवस प्रभु कौ न्याता चाय । करी तहाँ भिन्ना प्रभु लै सब जन समुदाय ॥
 पण्डित के भिन्ना हि मधि नेह स्वाद प्रभु ताहि । दोऊ मानुष शक्ति करि वरणे जाइ न आहि ॥
 इहौ मांति चैतन्य की लीला अनंत अपार । कही इन्हें संक्षेप करि कहि न जाय विस्तार ॥
 सहस बदन हं करि कहै जौपै आप अनंत । इक लीला हू कौ तऊ पावै नाहीं अंत ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै वृज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे - ब्रजभाषायां पुन गौड गमनागमनं नाम षोडश परिच्छेदः ॥

सप्तदश परिच्छेदः

गच्छन्वृन्दावनं गोरो व्याघ्रभैरवखगान् वने ।

प्रेमोन्मत्तान् सहोन्नतान् विदधे कृष्ण जल्पिनः ॥ १ ॥

गौरचंद्र जय जय सदा जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौरभक्त के वृंद ॥
 सरद समे आप भई चलिबे प्रभु मति जोय । रामानंद स्वरूप संग करै जुगति दुरि सोय ॥

जो मेरौ जु सहाय अब करौ जु तुम जन दोय । तव हम देखे जायकैं श्री वृन्दावन सोय ॥
 हम तौ उठिके रैन मधि चलि है वन पथ धाय । इकले चलिहैं लेहिंगे काहु को न सहाय ॥
 जे कोऊ हम संग हित पाछे चले जु धाय । तिन सबकौ तुम राखि हौ जो कोऊ नहि जाय ॥
 आज्ञा देहु प्रसन्न है मानेंगे दुख नाहि । तुम सब के सुख सें जु सुख है है सुख पथ मांदि ॥
 तव ते दोऊ जन कहैं तुम ईश्वर जु स्वतंत्र । जो इच्छा करि हौ जु सो हो नाहिन परतंत्र ॥
 ऐसे मुनो दुहैं कौ एक निवेदन सोइ । हमरे सुख तुम सुख जु करि आप कहैं सो सोइ ॥
 तव हिय में हम दुहैं के होय महासुख आहि । करें वीनती एक जो धरौ सहाय हि ताहि ॥
 संग चाहिये सर्वथा इक उत्तम द्विज सोय । भिन्ना करि भिन्ना हि दे पात्र ले चले जोइ ॥
 नाहीं वन पथ जात द्विज भोज्य अन्न दै ताहि । आज्ञा करौ चलेसु द्विज संग एक जन आहि ॥
 कहैं जु प्रभु लहैं नहीं निज संगी जन कोय । इक जन लिए सु और कौ दुख है है हिय सोय ॥
 संगी तौ तन ही भलौ स्निग्ध होय मन जाहि । जो ऐसी पैये तव लैहै इक जन ताहि ॥
 कहैं स्वरूप यह जु बलभद्र जु भट्टाचार्य । तुम में है सुस्निग्ध अति पंडित साधु सु आर्य ॥
 प्रथमहि आयौ गौड ते यह जु तिहारे संग । सब ही तीरथ करन हित याके हिय में रंग ॥
 है गो याकौ संग मधि एक विप्र एक भृत्य । सोऊ पथ में रहि गयो सेवा भिन्ना कृत्य ॥
 इनको जो सँग लेहुगे तौ सब के सुख होय । तुम कौ वन पथ जात में दुख नहि है है कोय ॥
 यह द्विज लै चलि है वसन अरु जल भाजन जोइ । भट्टाचारज देहिंगे भिन्ना करिकैं सोय ॥
 प्रभु जू तिनके वचन कौ कीनौ अंगीकार । भट्टाचारज कौ जु सँग करि लीनौ निरधार ॥
 प्रथम निशा जगनाथ की रहे जु आज्ञा पाय । रैन शेष उठि के प्रभु दुरिके चले जु धाय ॥
 भए प्रात सब भक्तगण प्रभु नहि देखे जोइ । प्रभु को दूहौं चहे सब हिय अति व्याकुल होय ॥
 किए निवारन सबन कौ तव स्वरूप जू सोइ । प्रभु के मन की जान सब रहे बैठि सब गोइ ॥
 प्रभु तजि कैं जु प्रसिद्ध पथ चले जु ऊवर होय । करिकैं कटक हि दाहिने वन में पैठे सोय ॥
 निर्जन वन में चले प्रभु लेत कृष्ण कौ नाम । हाथी केहरि पथ तजें लखिकैं प्रभु अभिराम ॥
 पास पास केहरि द्विरद गेंडा सूकर जोइ । तिनके मधि आवेस में करें गमन प्रभु सोइ ॥
 लखिकैं भट्टाचार कैं होय महाभय सोय । तिनकी प्रभुहि प्रताप करि एकहि पंगति होय ॥
 कीनौ है पथ में शयन इक दिन केहरि आइ । लाग्यौ है आवेस मधि प्रभु जू कौ पद ताइ ॥
 कृष्ण कृष्ण कह प्रभु कहैं उठौ जु केहरि सोय । कृष्ण कृष्ण मुखते कहै नांचन लाग्यौ सोय ॥
 इक दिन वन में महाप्रभु करैं नदी मधि स्नान । आयो मत्त गजेन्द्र गण करिवे को जलपान ॥
 कृत्य करैं प्रभु नीर में आगे आये सोय । प्रभु जल मार्यौ फैंकिकैं कृष्ण कृष्ण कहि जोय ॥
 सोई जल कौ बिंदु कन लाग्यौ जाके गाय । कृष्ण कृष्ण कहि नाचई सोई भरौ सुभाय ॥
 चीत्कार कोऊ करें परें धरनि में कोय । लखि लखि भट्टाचार्य कौ चमत्कार हिय होय ॥

करैं महाप्रभु पथ चलत उच्च कीरतन जोय । मधुर कंठ ध्वनि श्रवन करि आवैं मृगगन सोय ॥

तथाहि श्री भागवते—

धन्याःस्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता, यानन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेशां ।

आकर्ण्य वेणुरणितं सह कृष्णसाराः पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः ॥

सिंह जु आए तिहि समें पांच सात मिलि जोइ । प्रभु जू के संगहि चलें सिंह मिरग मिलि दोय ॥

तथाहि—

यत्र नैसर्गदुर्वैराः सहासन्मृगादयः । मित्राणीवाजिता वास द्रुतरुद्वर्षणादिके ॥

कृष्ण कृष्ण तुम कहौ यौ जव वोले प्रभु ताहि । कृष्ण कृष्ण कहि व्याघ्र मृग नाचन लागे आहि ॥
नाचें कूदें मिरगगण सिंह जूथ मिलि संग । देखै भट्टाचार्य सो श्री प्रभु जू कौ रंग ॥
करें परस्पर व्याघ्र मृग आलिंगन भरि भाय । दोऊ मिलि चुंबन करें मुखसौं मुखहि लगाय ॥
प्रभु जू कौतुक देखिके लगे करन तव हास । आगे चले महा प्रभु तिन सब कौ तजि पास ॥
शिखी आदि सब पक्षि गण प्रभु कौ लखि कें जोय । कहैं कृष्ण सब संग चलें नाचें मत्त सु होय ॥
हरि वोले कहि के चलें महा उच्च धुनि जोय । वृत्त लता प्रफुलित सब तिहि धुनि को सुनि सोय ॥
भार खंड पथ में जिते थावर जंगम आहि । किए प्रेम उन्मत्त सब कृष्ण नाम दे ताहि ॥
जिहीं ग्राम हैं जाहि प्रभु करें वास जिहि ग्राम । होय तहां सब जननि के प्रेम भक्ति अभिराम ॥
कोऊ तिहि मुख लखि सुनें प्रभु के नामहि आहि । ताके मुख से और सुनि और सुनें मुख ताहि ॥
सबै कृष्ण कहि कहि हंसें नाचें कान्दें जोय । परंपरा संबंध सब देश भक्त भौ सोय ॥
यद्यपि श्री गौरांग जू जन समूह के त्रास । प्रेम छिपावें करें नहि बाहिर ताहि प्रकाश ॥
तऊ जु तिनके दरस औ श्रवन प्रभावन आहि । सकल देश कौ लोक सब भए वैष्णव आहि ॥
गौड़ बंग उत्कल जु पुनि दक्षिन देसहि जाय । किय निस्तार जु लोक कौ आपन अमि इहि भाय ॥
मथुरा जैवे छल जु करि भार खंड मधि जाय । तहां परम पाखंड जन सब ही भील जु प्राय ॥
तिन सब कौ उद्धार किय नाम प्रेम दे सोय । गूढ़ चरित चैतन्य कौ वृक्ष सकै तिहि कोय ॥
वन लखि प्रभु के होय भ्रम इह वृन्दावन जोय । जिहि लखि प्रभु मानें यही गिरि गोवर्धन सोय ॥
जहां नदी देखे जु तिहि माने जमुना सोय । नाचें गिरें पुकारई तहां प्रेम बस होय ॥
भट्टाचारज पथ चलत साक मूल फल सोय । जोई जहां लहै तहां लेय सकल ही सोय ॥
ताही ग्राम रहें जहां जे जे द्विज समुदाय । पांच सात मिलि द्विज करें प्रभु हि निमंत्रन आय ॥
कोऊ अन्नहि आनि के बलभद्रहि दें सोय । कोऊ दधि पय खांड पुनि आनि देइ घृत कोय ॥
जहां विप्र नाहीं तहां शुद्ध महाजन सोय । भट्टाचारज कौ करें आनि निमंत्रन जोय ॥
पाक करें बलभद्र जू वन के व्यंजन जोय । वन व्यंजन करि प्रभु जू कौ आनंदित मन होय ॥



आदिखण्ड (वनमार्ग) में वृन्दावनगमनीसुक सिंहयात्राप्रवेमोन्मत्तकारी श्री गौरांग

अन्न दिना द्वै चार कौ राखें धारिकें ताहि । जहां शून्य वन जनन कौ होय निवास न आहि ॥
 तहां अन्न सोई करें भट्टाचारज पाक । फल मूलन के विजंन ही करें वन्य बहु शाक ॥
 प्रभु जू के संतोष अति वन विजंन मधि होय । लहें महा सुख तादिना रहें सु निर्जन सोय ॥
 सेवा करें सनेह करि बलभद्र जु जिमि दास । बहिर्वास जल पात्र औ लिए चलें द्विज तास ॥
 निर्भर को जल उस्न करि न्हाय जु तीनों वार । दोऊ संध्या में अगनि तापें काष्ठ अपार ॥
 निर्जन गमन निरंतर हि प्रेमावेश सुनाय । कहें वचन श्री महाप्रभु हिये सु अति सुख पाय ॥
 भट्टाचार्य सुनो जु हम फिरें जु नाना देश । वन पथ के सुख को कहूं पायौ नहिं लव लेश ॥
 कृष्ण कृपालु कृपा बड़ी करौ जु हम पै जोय । मोकों वनपथ लायकें दियौ इतौ सुख सोय ॥
 वृन्दावन के चलन को पहिले कियौ विचार । माता को हम अवस करि देखेंगे इकवार ॥
 करि हैं मिलन अवश्य हम भक्त गनन संग जाय । वृन्दावन जैहें जु हम लै भक्तन समुदाय ॥
 गौड़ देश कौ गमन किये यह विचार के जोय । माता गंगा भक्त मिल पायौ आनंद सोय ॥
 तव हों लेके भक्तगण चलयौ हिये करि रंग । कोटि लक्ष जन ता समें भये हमारे संग ॥
 कृष्ण हमें शिखा करी वदन सनातन सोय । तहां विघन करि पथहि में ले आये अब सोय ॥
 दीन होनपै दयाभय उदधि कृपा के जोय । तिन हरि जू की कृपा बिन नहीं कहूं सुख होय ॥
 बलभद्र हि हिय लायके कह्यौ महाप्रभु ताहि । पायौ तुम्हरी कृपा करि हम इतनौ सुख आहि ॥
 भट्टाचारज कहें तुम कृष्ण दयामय सोय । अधम जीव हौं ता विपैं भये सदय तुम जोय ॥
 कौन छार में तुच्छ जन संग लै आए ताहि । कृपा करी मेरे करहि भिक्षा कीनी आहि ॥
 अधम काक कौ तुम कियौ छिन में गरुड समान । तुम ईश्वर जु स्वतंत्र हो आप स्वयं भगवान ॥

तथाहि—मूकं करोति वाचालं पंगुं लघंयते गेरिम् । यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्दमाधवम् ॥

इहि विधि बलभद्र जु करें स्तुति प्रभु जू की चाय । तुष्ट कियौ प्रभु कौ जु हिय करि सेवा भरिभाय ॥
 यों बहु सुख सों प्रभु चले आए काशी सोय । न्हाये तव मणि कर्णिका प्रभु मध्य दिन जोय ॥
 तपन मिश्र ताही समय न्हाय सुरधुनी जोय । अचिरज ज्ञान भयौ कछू प्रभु कों लखिकें सोय ॥
 प्रथम सुनी है प्रभु जु ने कीनौ है संन्यास । निहचै कियो भयौ तव बिनके हियहि हुलास ॥
 प्रभु जू के पद जुगल धरि करें जु रोदन आहि । कीनौ आलिंगन तव प्रभु उठाय के ताहि ॥
 विश्वेश्वर के दरस हित गए जु प्रभु लै सोइ । चरण बिंदु माधव जु के लखे आप तव जोय ॥
 लै आए प्रभु को घरहि हिय आनंदित होय । सेवा करि नाचन लगे बसन फेरिकें सोय ॥
 प्रभु कौ चरणोदक तव कियौ वंस जुत पान । पूजे भट्टाचार्य जू करि के बहु सम्मान ॥
 प्रभु न्याता करि गेह निज भिक्षा दीनी ताहि । भट्टाचार्य पास तव पाक कर्यौ है आहि ॥
 करि के भिक्षा महाप्रभु रहे नेक तव सोय । मिश्र पुत्र रघु जू करें पद संवाहन जोय ॥
 प्रभु जू कौ अवशेष सो पायो मिश्र सवंश । शशि शेखर आए जु प्रभु आये सुने प्रसंश ॥

ते हैं सखा जु मिश्र के प्रभु के पहले दास । वैद्य जाति लेखक विरति वारानसी सुवास ॥
 आप चरण गिरि प्रभु जू के करेंसु रोदन आहि । प्रभु उठायके कृपा करि किय आलिंगन ताहि ॥
 कहै चन्द्र शेखर प्रभो कृपा करी बहु जोय । आय आप ही दास कौ दीनौ दरसन सोय ॥
 हम अपने प्रारब्ध करि काशी वसे अजान । माया ब्रह्म सुशब्द विन और न सुनिये कान ॥
 पट दरसन व्याख्या विना कथा नहीं ह्यां कोय । मिश्र कृपा करि हरि कथा मोहि सुनाई सोय ॥
 सदा दुहुनि के चित्त में तुम्हरे पद जुग आहि । तुम ईश्वर सर्वज्ञ हो दीनौ दरसन ताहि ॥
 सुनी महाप्रभु चलहिगे श्री वृन्दावन जोय । तारौ कोऊ दिन रही ए जु भृत्य जन दोय ॥
 मिश्र कहें जब लौं रहों प्रभु तुम कासी मांहि । मम न्यौते विन और कौ मानौगे तुम नांहि ॥
 इही भांति श्री गुरु प्रभु दुइ दासन बस होय । इच्छा नहि तौऊ रहे काशी दिन दिस सोय ॥
 महाराष्ट्र आयौजु द्विज प्रभु दरसन हित आहि । प्रभुकौ प्रेम स्वरूप लखि भयौजु अचरज ताहि ॥
 सबै विप्र न्यौतौ करें प्रभु नहि मानत ताहि । आज निमंत्रण भयौ है प्रभु यों कहें जु आहि ॥
 याही भांति निति प्रति करें वंचन न्यौते मांहि । सन्यासिन के संग भय न्यौता मानै नाहि ॥
 जती प्रकाशानंद इक बैठि सभा मधि जोय । नित वेदान्त पढ़ावही बहु शिष्यन लै सोय ॥
 सोई इक द्विज गौर कौ लखि आयौ व्योहार । कहे प्रकाशानंद दिग तिनकौ चरित अपार ॥
 आयौ सन्यासी जु इक जगन्नाथ ते आहि । महिमा बडौ प्रताप जिहि बरनि सके नहि ताहि ॥
 महा प्रचंड शरीर जिहि सुवरन वरन जु एन । लंघित भुज आजानु अरु कमल अरुन दल नैन ॥
 जितने ईश्वर के कछू सबै सुलच्छन आहि । ते तिन में सब देखिए कथन सु अद्भुत ताहि ॥
 ये नारायण जू अहैं होय ज्ञान लखि ताहि । जोई तिहि देखे करै कृष्ण कीरतन आहि ॥
 महा भागवत लक्षन जो सुने भागवत जोइ । ते सब लक्षन प्रगटई तिन में लखिए सोइ ॥
 रसना जिनकी कृष्ण कौ लेत निरंतर नाम । नयन अश्रु जल है मनौ गंगा धार भिराम ॥
 छिन नाचै गावै हंस रोदन करे अपार । छिन हुंकार करे जनौ केहरि की हुंकार ॥
 नाम कृष्ण चैतन्य जिहि जगत सुमंगलु आहि । नाम रूप गुण माधुरी है सब अनुपम ताहि ॥
 सुनत प्रकाशानंद वह कियो हास परकाश । लाग्यौ ताकौ कहन तव करि द्विज कौ उपहास ॥
 गौड देश मधि सुन्यो है भावुक जती जु सोय । केशव भारति कौ जु शिष्य लोक प्रतारक सोय ॥
 नाम ताहि चैतन्य लै भावुक गण संग आहि । गायक नचवैया कहे दिशि दिशि ग्रामजु आहि ॥
 जोई तिहि देखे बही कहे जु ईश्वर आहि । इमि मोहन विद्या लखै जोई मोहित ताहि ॥
 सार्वभौम पंडित प्रबल भट्टाचारज आहि । सोऊ मंत वौरौ भयौ सुनी संग करि ताहि ॥
 महा इन्द्रजाली जती नाम मात्र है जोइ । काशी में विकि है नहीं तिहि भावुकता सोइ ॥
 करि श्रवन वेदान्त कौ जिनि जैये तिहि पास । उच्छृंखल जन संग करि दुहु लोक कौ नाश ॥
 यह सुनि तिहि द्विजन महा दुख पायौ हिय जोय । कृष्ण कृष्ण कहि तहां ते उठिके गयौ जु सोय ॥

प्रभु के दरशन करि भयौ है जु शुद्ध मन ताहि । प्रभु आगे है अति दुखी कहै जु विवरन आहि ॥
 यह सुनि के तव महाप्रभु रहे कछू मुसकाय । प्रभु सों पूछें फेरि हूं सोऊ द्विज करि भाय ॥
 तिहि आगे जब मैं लियौ तुमरौ नाम जु आहि । सोऊ जाने नाम तव आपन कयौ जु ताहि ॥
 कहत हेत तव दोष कै करेउ नाम उच्चार । कयौ जु फिरि चैतन्य पुनि ऐसे तीनहु वार ॥
 आयौ तीनों वार नहि कृष्ण नाम मुख ताहि । नाम अवज्ञा करि कहे सुनि पायौ दुख आहि ॥
 याकौ कारण कृपा करि कहौ जु मोसों जाहि । तुमैं देखि मेरौ वदन कहै कृष्ण हरि सोय ॥
 यह सुनि के तव महाप्रभु लागे कहन जु ताहि । मायावादी कृष्ण के अपराधी हैं आहि ॥
 ब्रह्म कहें चैतन्य पुनि कहें आत्मा जोइ । मायावादी नाम ये भाँसैं निरवधि सोइ ॥
 कृष्ण नाम आवै नहीं याही ते मुख ताहि । कृष्ण स्वरूप जु नाम तिहि दोऊ इक सम आहि ॥
 विग्रह नाम स्वरूप तिहि तीनों एकहि रूप । तीनों में नहि भेद ये चिदानंद सुख रूप ॥
 हरि के देही देह अरु नामी नाम न भेद । जीव धर्म यह नाम वपु और स्वरूप विभेद ॥
 तथाहि—

नाम चिन्तामणिः कृष्णश्चैतन्यरसविग्रहः । पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नात्मा नाम नामिनोः ॥५॥
 याही ते श्री कृष्ण के नाम देही प्रकाश । प्राकृत इन्द्रिय ग्राह्य नहि अहै स्वयं परकाश ॥
 कृष्ण नाम गुण कृष्ण के लीला वृन्द जु ताहि । सम हैं कृष्ण स्वरूप के चिदानंद सब आहि ॥

तथाहि—

अतः श्रीकृष्णनामादि न भवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः । सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः ॥६॥
 ब्रह्मानंद हुते अधिक सुख लीला रस जोय । ब्रह्म सु ज्ञानी कौ करैं खेंचि आप बस सोय ॥

तथाहि—स्वमुखनिभृतचेता स्तद्व्युदस्तान्यभावोऽप्यजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयं ।

व्यतनुत कृपया यस्तत्त्वदीपं पुराणं तमखिलवृजिनधनं व्याससूनुं नतोस्मि ॥७॥

तथाहि—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अद्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थं भूतगुणो हरिः ॥८॥
 यह रहो सब कृष्ण के चरणन कौ संबंध । हरे जु आत्माराम कौ मन तुलसी कौ गंध ॥

तथाहि—तस्यारविन्द नयनस्य पदारविन्द किञ्चलक मिश्र तुलसी मकरन्दवायुः ।

अन्तर्गतः स्वाविवरेण चकार तेषां संतोभमक्षरजुषामपि चित्त तन्वोः ॥९॥

कृष्ण नाम आयौ नहीं याही ते मुख ताहि । याते मायावादि गण सदा बहिर्मुख आहि ॥
 भावुकता वेंचन जु हों आयौ काशी आहि । गाहक विन न विकाय है जैहों घर लै ताहि ॥
 आए भारी बोझ लै कैसे तिहि लै जाँय । ताकौ ह्याँही बेचि है मोल अल्प ह पाय ॥
 इतनौ कहिके महाप्रभु ता द्विज कौ अपनाय । श्री मथुरा कौ प्रात उठि चले गौर हरिधाय ॥
 ते तीनों जन संग लै मनै किए प्रभु जोइ । वे तीनों जन दूर ते घरहि पठाए सोइ ॥

तीनों जन प्रभु विरह करि इकठे मिलि कै जोइ । गान करें प्रभु गुणन कौ बैठि एकठां सोइ ॥
 प्रभु जू आय प्रयाग में कीनौ बेनी स्नान । लखि के माधव प्रेम करि कियौ नृत्य अरु गान ॥
 जमुना को लखि प्रेम करि परे कूदि अकुलाय । अस्त व्यस्त बलभद्र जू लीनौ तिन्हें उठाय ॥
 इहीं भांति दिन तीन लौं रहे प्रयागहि जोय । कृष्ण नाम प्रेमादि दे जन निस्तारे सोय ॥
 मथुरा चले जू मार्ग में रहैं जहाँ जाइ । कृष्ण नाम अरु प्रेम दे लोक नचाए भाय ॥
 पहले दक्षिण जाय ज्यों जन निस्तारे जोइ । तैसे पच्छिम देश सब कीए वैष्णव सोइ ॥
 जहाँ तहाँ पथि जात में जमुना दरसन होय । तहाँ कूदि तामें गिरें प्रेम अचेतन सोय ॥
 आए मथुरा निकट जब दगनि मधुपुरी जोइ । परे दंडवत होय के प्रेम मगन अति होइ ॥
 कीनौ मथुरा आईकै प्रभु विश्रांत जू स्नान । किए दंडवत देखिके केशव जन्म स्थान ॥
 नाचें गामें प्रेम बस करें सघन हुँकार । प्रभु कौ प्रेमावेश लखि अचिरज लोग अपार ॥
 पर्यौ एक द्विज आयके धरि प्रभु के पद जोय । नृत्य करें प्रभु के जू संग प्रेम मगन अति होय ॥
 दोऊ नाचें प्रेम करि हिय सों हिय लिपटाय । बोलैं हरि हरि कृष्ण कहि दोऊ भुजा उठाय ॥
 हरि हरि बोलैं लोग सब भौ कौलाहल सोइ । माला पहिराई प्रभुहि केशव सेवक सोइ ॥
 लोक कहै प्रभु को जू लखि लहि अचरज हिय मांहि । यह प्रेमा यह रूप सो लौकिक कहिए नाहि ॥
 प्रेम मत्त जन होत है जिहि दरसन अभिराम । नाचें गावें हँसे बहु रोवें लै हरिनाम ॥
 तब तौ श्रीयुत महाप्रभु लै तिहि द्विजकौ आहि । न्यारे हो एकान्त मधि पूछ्यौ कलूक ताहि ॥
 तुम तो आरज सरल हिय वृद्ध विप्र हो सोइ । पायौ है तुम कहाँते यह प्रेम धन जोइ ॥
 विप्र कहै श्रीपाद श्री माधवेन्द्र पुरि जोइ । भ्रमत भ्रमत आए यहाँ मथुरा नगरी सोय ॥
 मेरे घर मधि कृपा करि ते प्रभु रहे रसाल । मोहि शिष्य करि हाथ मम भिन्ना करी कृपाल ॥
 कीनौ सेवा महाशय करि के प्रगट गुपाल । गोवर्धन में है अजौ सेवा कहै रसाल ॥
 सुनि के प्रभु जू ने करी चरन वंदना ताहि । प्रभु के पद सो द्विज पर्यौ पाय महाभय आहि ॥
 कहै महाप्रभु गुरु जू तुम शिष्य प्राय हौं जोइ । नमस्कार गुरु हँ करौ शिष्य हि जो जन सोइ ॥
 सुनिके विस्मित द्विज भयो हिए भावमय जोइ । ऐसे बात कहै जू क्यों तुम संन्यासी होय ॥
 ऐसी तुमरो प्रेम लखि करौ हिय अनुमान । माधवेन्द्र संबंध तुम धरो जू मो मन ज्ञान ॥
 जहाँ प्रेम श्री कृष्ण कौ तहाँ जू तिहीं संबंध । तिहिं विना ही प्रेम कौ कहैं नहीं है गंध ॥
 मट्टाचारज तब कहीं तिहि संबंध जू ताय । सुनि आनंदित द्विज लभ्यौ नाचत हिय भरिभाय ॥
 प्रभु कौ संग लै विप्र तब आयौ निज घर जोय । प्रभु की बहु सेवा करे निज इच्छा करि सोय ॥
 भिन्ना हित बलभद्र सों पाक करायौ आहि । तब हँसि के श्री महाप्रभु बोले वचन जू ताहि ॥
 तुम कर भिन्ना है करी पुरी गुसाई जोइ । हम कौ भिन्ना देहु तुम हमरे शिवा सोइ ॥

तथाहि—

यद्यदाचरते श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥१०॥
 यद्यपि जाति सनोडिया हुतौ जू ब्राह्मण सोय । संन्यासी तिहि विप्र घर करें न भोजन जोइ ॥
 तापै जब श्री महाप्रभु भिन्ना मांगी जोइ । तिहि द्विज ने प्रभु कौ कहाँ यह दैन्य करि सोइ ॥
 भिन्ना तुम कौ दीजिए भाग्य हमारी जोइ । तुम ईश्वर तुमरे नहीं विधि व्यवहार जू सोइ ॥
 करि हैं दुर्मुख लोग जे तुमरो निंदन आहि । सो दुष्टनको वचन हम सहि नहि सकि हैं ताहि ॥
 कहै महाप्रभु है जिति ते श्रुति स्मृति ऋषिगण जोइ । सबै भिन्न मत है नहीं एक धर्म मत सोय ॥
 धर्म स्थापन हेत एक है जू साधु व्यवहार । पुरी गुसाई आचरण सोई धर्म जू सार ॥
 तथाहि—

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः नासावृषिर्यस्य मतं न भिन्नं ।

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महोजनो येन गतः स पन्था ॥११॥

भिन्ना करवाई तबै तिहि द्विज प्रभु को जोय । आए जन मधुपुरी के प्रभु कौ देखन सोय ॥
 हरी हरी बोलौ कहै प्रभु निज बाहु उठाय । प्रेम मत्त नाचें जू जन हरि हरि धुनि करि चाय ॥
 जमुनाघाट चौबीस जे स्नान कियौ प्रभु ताहि । स्नान तीर्थ सब विप्र तिन प्रभुहि दिखायौ आहि ॥
 दीर्घ विष्णु भूतेश्वर जू स्वयंभू जू विश्राम । महाविद्या गोकर्ण मुख सबै दिखाए धाम ॥
 द्वादश वन के देखिवे जब प्रभु मन भौ रंग । तब ही सोई विप्र प्रभु लीनौ अपने संग ॥
 गये जू मधुवन तालवन कुमुद सुबहुला जोइ । जहाँ जहाँ प्रभु न्हाय करि प्रेम विवस भो सोइ ॥
 प्रभु कौ लखि पथ में चरित धेनु घटा जू अपार । प्रभु चहुंघा आईजु धिरि सब करिके हुँकार ॥
 धेनु घटा लखि थकि रहैं प्रभु जू प्रेम तरंग । धेनु सबै वात्सल्य करि चाटैं प्रभु के अंग ॥
 स्वस्थ होय प्रभु जू करैं कंडू तिन के अंग । छाड़ें नाहिन धेनुगण चलै जू प्रभु के संग ॥
 राखी ग्वालनि धेनु सब करिके बहुत प्रयास । आई सुनि के कंठ धुनि मृगीमाल प्रभु पास ॥
 देखैं मुख हरिणी हरिन प्रभु कौ चाटैं अंग । करैं नहीं भय मार्ग मधि चली जाहिं तिहि संग ॥
 पंचम गावें भृंगि पिक प्रभुकौ लखि सुख पाय । नृत्य करैंजु मयूर गण प्रभुकौ लखि २ आहि ॥
 वृन्दावनके तरु लता गण प्रभुकौ लखि आहि । मधु मिय वरपैं अश्रु जल पुलकसु अंकुर ताहि ॥
 फल फूलनि के भार भरि परे डार प्रभु पाय । बंधु भेट लै आंवही बंधु हि लखि जिहि भाय ॥
 थावर जंगम विपिन के प्रभु जू कौ लखि जोइ । देखि बंधुगण बंधु कौ ज्यों आनन्दित होय ॥
 तिन सब की प्रभु प्रीति लखि भावावेशित होय । सब के संग क्रीडा करें हैं तिन के बस सोय ॥
 आलिंगन प्रभु जू करैं प्रति तरुलता सु जान । करैं समर्पण कृष्ण कौ सुमनादिक करि ध्यान ॥
 अश्रु कंप्यौ पुलक प्रभु प्रेम अधीर शरीर । कृष्ण कृष्ण बोलौ कहैं ऊंचे सुर गंभीर ॥
 थावर जंगम मिलि सबै करैं कृष्ण धुनि जोइ । प्रभु के स्वर गंभीर की जानौं प्रतिधुनि होइ ॥
 प्रभु जू मृग कौ कंठ धरि रोदन करैं अपार । मृग के अंग में पुलक औ नयन अश्रु जलधार ॥

सुक सारी तरु डार पर बैठे दरसन दीय । तिन कौं लखि प्रभु कौ भयौ कछु सुनिवे कौं हीय ॥
सुक सारी प्रभु हाथ पर उड़िकै बैठे आइ । श्लोक पढ़ै सुक कृष्ण गुण प्रभु जू कौं जु सुनाय ॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

सोन्दर्यं ललनालिधैर्यं दलनं लीलारमास्तम्भिनी वीर्यं कन्दुकिताद्विवर्यममलाः पारे पराद्धं गुणाः ।

शीलं सर्वजनानुरञ्जनमहो यस्यायमस्मत्प्रभुर्विश्वं विश्वजनीनकीर्तिरवतात् कृष्णो जगन्मोहनः ॥१२॥

तव सुनिकै सुक कौ वचन सारी करिकें रोस । राधा जू के वर्णनहि करै हियै लहि तोस ॥

तथाहि तत्रैव—

श्री राधिकायाः प्रियता सुरुपता सुशीलता नर्तनगान चातुरी ।

गुणालिसम्पत् कविता च राजते जगन्मनोमोहनचित्तमोहिनी ॥१३॥

वचन सारिका को जु सुनि सो सुक परम सुजान । कहै कृष्ण है मदन कै मोहन रूप निधान ॥

तथाहि तत्रैव—

वंशीधारी जगन्नारीचित्तहारी स शारिके । विहारी ब्रजनारीभिर्जीयान्मदनमोहनः ॥१४॥

फेरि कहै सारी सुक हि करिकें रस परिहास । यह सुनि प्रभु जू कैं भयौ अचिरज प्रेम हुलाम ॥

तथाहि तत्रैव—

राधा संगे यदा भाति तदा मदनमोहनः । अन्यथा विश्वमोहोऽपि स्वयं मदनमोहितः ॥१५॥

सुक सारी उड़िकें गये फिरि ता तरु की डार । देखें नृत्य मयूर कौ प्रभु कौतुक जु अपार ॥

भई शिखी के कंठ लखि कृष्णकांति सुधि जोइ । परे भूमि मधि महाप्रभु प्रेमावेशित होइ ॥

तव प्रभु जी कौं मूरछित देखि ब्राह्मण जोइ । भट्टाचारज सँग करै प्रभु संतर्पण सोय ॥

अस्त व्यस्त श्री प्रभु जु कौं वहिर्वास लै जोय । जल सौं छिरकैं अंग करै पवन वसन करिजोय ॥

प्रभु श्रवननि में उच्च करि कहैं कृष्ण कौ नाम । एक वेर लहि चेतना फेरि गिरे तिहि ठाम ॥

कंटक दुर्गम वन हि मधि भये अंग चत ताहि । भट्टाचारज अंग धरि प्रभुहि स्वस्थ किय आहि ॥

प्रभु कैं कृष्णावेश करि प्रेम मगन मन जोइ । कहाँ कहाँ यों कहि उठि जु करै नृत्य तव सोइ ॥

भट्टाचारज विप्र सो गावैं कृष्णकौ नाम । नाचत नाचत पथ चले जाहि गौर रसधाम ॥

प्रभु कौ प्रेमावेश लखि अति विस्मित द्विजसोय । भट्टाचार्य विचार किय प्रभु इच्छाहित जोय ॥

जैसो प्रेमावेश मन लीलाचल हो जोय । वृन्दावन पथ जात में भयौ सो गुणो सोय ॥

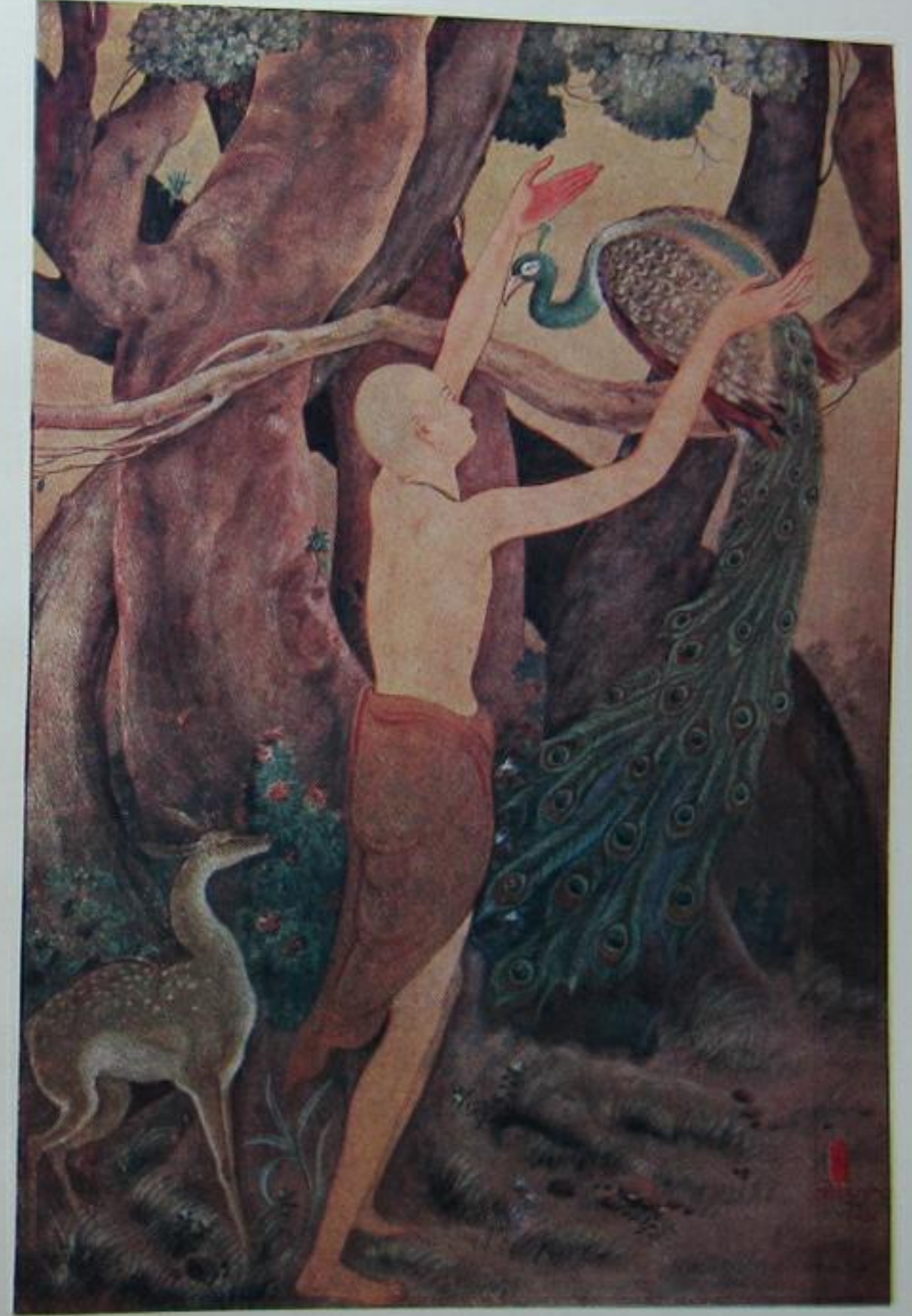
सहस गुणो प्रेमा बढ़यो देखें मथुरा ताहि । लाख गुणो प्रेमा भयौ जब वन भ्रमैं जु आहि ॥

रहै मगन रैन दिन कृष्ण प्रेम रसरास । हँ वो अरु भीचादिकनि निर्वाहैं अभ्यास ॥

जब लौं द्वादस वन भ्रमैं प्रेमा इहाँ जु भाय । लिख्यो जु ताकौ एक ठां सब ठां कछौ न जाय ॥

वृन्दावन मधि भौं जितौ प्रभु कैं प्रेम विकार । कोटि ग्रंथ करि शेषजो लिखैं जु तिहि विस्तार ॥

लिखिवे कौं नाहिन सकैं तऊ एक कन ताहि । करिवेकौं उद्देस तिहि दिग दरसन किय आहि ॥



वृन्दावन में मयूरालिंगनकारी राधाभावाविष्ट श्री गौरांग

प्रभु लीला के उदधिनें दीनौ जगत बहाय । जाकी जितनी शक्ति सो तरै उदधि में जाय ॥
 रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकास ॥
 इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां वृन्दावन गमनं नाम सप्तदशपरिच्छेदः ॥

अष्टादस परिच्छेदः

वृन्दावने स्थिरचरानन्दयन्स्वावलोकनैः । आत्मानञ्च तदालोकाद्गौरांगः परितोऽभ्रमत् ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
 इही भांति श्री महाप्रभु नाचत नाचत भाय । भये अचानक बाह्य तव आरिठ ग्राम हि आय ॥
 राधाकुंड अरिष्ट की पूछी लोकन वात । कोऊ कहे न जानई सोउ संग द्विज जात ॥
 तीरथ लोपहि जानि प्रभु सब के ज्ञाता आहि । दोय धान के खेत में कछु जल न्हाए ताहि ॥
 लखि कें ग्रामी जननि के मन अचिरज अधिकाय । स्तवन जु राधाकुंडकौ करैसु प्रभु भरि भाय ॥
 सब गोपिन तें कृष्ण की राधा प्रेयसि आहि । तैसैं राधाकुंड प्रिय सरसी प्रेयसि ताहि ॥

तथाहि पादमे—

यथा राधा प्रिया विष्णो स्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा । सर्व गोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्त वल्लभा ॥२॥
 जिहीं कुंड श्री कृष्ण नित श्री राधा के संग । जल क्रीडा जल में करै तट मधि रास जु रंग ॥
 तिहीं कुंड मधि जो करै एकहि वार स्नान । राधा के सम प्रेम तिहिं देहि कृष्ण जू दान ॥
 जैसी राधा मधुरिमा कुंड माधुरी सोय । महिमा राधा की सु तिमि महिमा कुंडहि जोय ॥

तथाहि—

श्रीराधेव हरेस्तदीय सरसी प्रेष्ठाद्भुतैः स्वैर्गुणैर्यस्यां श्रीयुत माधेवन्दुमनिशं प्रीत्या तथा क्रीडति ।
 प्रेमास्मिन् वत राधिकेव लभते यस्यां सकृत्स्नानकृत् तस्या वै महिमा तथा मधुरिमा केनास्तु वर्ण्यः क्षितौ ॥
 इहीं भांति नुति करें प्रभु प्रेम मगन हिय आहि । कुंड तीर नृत्यहि करै लीला सुधि करि ताहि ॥
 लै जु मृत्तिका कुंड की कियो तिलक भरि रंग । भट्टाचारज द्वार कछु लई मृत्तिका संग ॥
 तव चलिकें आए प्रभु कुसुमोखर ढिंग जोड़ । तहाँ देखि गोवर्द्धनहि भए जु विह्वल सोइ ॥
 गोवर्द्धन कों देखि कें करी दंडवत ताहि । एक सिला आलिंग कें महामत्त भौ आहि ॥
 प्रेम मत्त आये जु चलि श्री गोवर्द्धन ग्राम । श्री हरिदेवहि देखि के करै तिन्हें परणाम ॥
 हैजु मधुरिमा पद्म के पच्छिम दल जिहि वास । नारायण हरिदेव जू है सो आदि प्रकाश ॥
 प्रेम मत्त है कें जु प्रभु नाचें आगें ताहि । आए देखन लोग सब सुनि के अचिरज आहि ॥

प्रभु कौ प्रेम स्वरूप लखि जन अचिरज विस्तार । किय हरिदेव जु पूजकनि प्रभु कौ बहु सतकार ॥
मट्टाचारज पाक किय ब्रह्मकुंड पर जाय । ब्रह्म कुंड प्रभु न्हाय कें भिक्षा कीनी आय ॥
मंदिर श्री हरिदेव के रहे जु ताही रैन । मन में करैं विचार प्रभु निशि में रस के ऐन ॥
हम गोवर्धन पै कभू चढ़ि हैं नाहीं जोय । दरसन श्री गोपाल कौ कैसें पैहैं सोय ॥
इतनौ मन में सुमिरि प्रभु रहे मौन धरि सोय । जानि गुपाल तवै कछू जुगति उठाई सोय ॥
तथाहि—

अनारुरुच्ये शैल स्वस्मै भक्ताभिमानिने । अवरुह्य गिरेः कृष्णो गौराय समदर्शयत् ॥४॥

गोधन नाम जु ग्राम में श्री गोपाल निवास । जन रजपूतन कौ जु हो तिहीं ग्राम में वास ॥
इह जन ग्रामी जननि सौं कहाँ आय तिहि रैन । मारन हित तव ग्राम के तुरक सजी है सैन ॥
आज भजौ निशि ग्राम में रहौ न इक जन कोइ । ठाकुर लै भाजौ जवन काल म्लेच्छ है सोइ ॥
सुनिकें जन सब ग्राम के चिंतित भौ अधिकाय । रहे प्रथम गोपाल लै गाँठोली मधि आय ॥
दुरि कें सेवन विप्र घर श्री गुपाल कौ होय । ऊजर ग्राम भयौ गए भजि के सबजन सोय ॥
बार बार यों म्लेच्छभय करि कें भजें गुपाल । कुंज रहे कै ग्राम अरु तजि मंदिर करि ख्याल ॥
प्रात भए श्री महाप्रभु मानसगंगा न्हाय । गोवर्धन परिदक्षिण हि गमन कियौ भरिमाय ॥
गोवर्धन कौ देखि प्रभु प्रेमावेशित होय । आनंद में नाचत चले श्लोक पढत यह जोय ॥
तथाहि—

हन्तायमद्रिवला हरिदासवर्यो यद्रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ।

मानं तनोति सहगोगणयोस्तथोर्थत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥५॥

तीरथ गोविंद कुंड मुख प्रभु जु नहाए सोय । गाँठोली गोपाल हैं सुनी तहाँई जोय ॥
किय दरसन गोपाल कौं तिही गाम में जाइ । करें नृत्य औ कीरतन महा भक्त भरि भाय ॥
सुन्दरता गोपाल की लखि प्रभु को आवेश । नाचत याही पद्य पढ़ि भयौ तहां दिन शेष ॥
तथाहि—

वामस्तामरसानस्य मुजदण्डः स पातु वः । क्रीडाकन्दुकतां येन नीतो गोवर्द्धनो गिरिः ॥६॥

इहीं भांति दिन तीन लौं देखे प्रभु गोपाल । चौथे दिन गोपाल जू मंदिर चले कृपाल ॥
मंदिर चले गुपाल संग नृत्य करत प्रभु जोइ । आनंद कोलाहल भयौ बोलें हरि हरि लोय ॥
मंदिर गए गुपाल जू तरे रहे प्रभु ताहि । प्रभु इच्छा ही सब पूर्ण करी गुपाल जु आहि ॥
इहि विधि श्री गोपालकौ करुणानिधि जु सुभाव । जब ही जाही भक्तकौ होय दरस हित भाव ॥
होय लालसा दरस की चढ़ें न गिरिवर सोइ । तव गुपाल काहू छलहि आपुन उतरे जोइ ॥
कवहुं रहैं निकुंज में कवहुं औरहि ग्राम । देखें तिनकौं आयकें सोइ जन तिहि ठाम ॥
गोवर्धन पर ना चढ़ें रूप सनातन दोय । दीनौ है दरसन तिन्हें इहीं भांति तिहि सोइ ॥

वृद्ध समें श्री रूप जू जाइ सकें नहि दूर । गिरिधर छल करि दरस हित भई लालसा भूरि ॥
आए करिकें मेल्ल भय मथुरा नगर गुपाल । विठलेश्वर के गेह इक मास रहे जु कृपाल ॥
रूप गुसाई तवै सब निज गण लै कें संग । मथुरा रहि दरसन कियौ एक मास भरि रंग ॥
कवित्त

संग श्री गुपाल भट्ट और रघुनाथ दास भट्ट रघुनाथ लोकनाथ रस रास ॥
भृगुभर्म गुसाई और श्री जुत गुसाई जीव श्री यादवाचार्य स्वामी गोविंद प्रकाश ॥
ऊधोदास और माधोदास श्री गुपाल दास और दास नारायण कीरत उदास ॥
गोविंद भगत और बाणी कृष्ण दास पुंडरीकाक्ष ईशान और लघु हरि दास ॥

भक्त मुख्य एई जु सब लैकें अपने संग । दरसन श्री गोपाल कौ कियो हिये बहु रंग ॥
निज स्थान गोपाल जू गए जु रहि इक मास । आए रूप गुसाई जू वृन्दावन रस रास ॥
कियौ गुपाल कृपा जु कौ वरणन पाय प्रसंग । तवै महाप्रभु काम बन गए भरे हिय रंग ॥
गमन रीति श्री गौर की लिखी जु पहिलें जोय । तिहीं भांति वृन्दाविपिन जब लौं देख्यौ सोय ॥
देखि तहां लीला थली गए जु प्रभु नंद गाम । भए जु विह्वल प्रेम करि लखि नंदीस्वर धाम ॥
पावन आदि जु कुंड सब तिन मधि प्रभु जू न्हाय । लोकनि कौं पूछ्यौ तवै परवत ऊपर जाय ॥
फोऊ दैवत मूर्ति है परवत ऊपर जोय । लोक कहें मूर्ति जु है मध्य कंदरा सोय ॥
दुहुं ओर माता पिता पुष्ट कलेवर ताहि । बीच एक बालक परम ललित त्रिभंगी आहि ॥
सुनिकें मन में महाप्रभु आनंद पायौ जोय । तिन मूर्ति के दरस हित गुफा उधारी सोय ॥
ब्रज नृप ब्रज रानी जु के पद वंदन प्रभु कीय । हरिकौं सब अंग परस किय प्रेमावेशित होय ॥
सब दिन प्रेमावेश मधि नृत्य गीत किय जोय । चलि जु तहां ते खादिरवन आए प्रभु जू सोय ॥
गए सेस सायी तवै लखि लखि लीला ठौर । लक्ष्मी जू कौं देखि यह पद्य पढ़े प्रभु गौर ॥
तथाहि—

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेसु ।

तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भेवदायुषां नः ॥

आए वन भांडीर लखि खेलातीरथ सोय । गए भद्रवन फेरि प्रभु जमुना पार जु होय ॥
श्री वन देखि गए प्रभु फेरि लोहवन जोइ । जाय महावन लख्यौ हरि जन्म स्थान जु सोइ ॥
जमला अर्जुन भंग मुख लखि लीलाथल ताहि । प्रभुकौ प्रेमावेश करि भयौ विकल मन आहि ॥
आए गोकुल देखि पुनि मथुरा नगरी आहि । हरि कौ जन्म स्थान लखि रहे गेह द्विज ताहि ॥

सोरठा

देखि जननि समुदाय, तजिकें मथुरा महाप्रभु । रहे इकौसे आय, तवै तीर्थ अकूर मधि ॥

दोहा

वृन्दावन के दरस हित आए प्रभु दिन आन । कालियदह प्रस्कंदनहि कीनौ आप जु स्नान ॥
 द्वादस आदित तीर्थ ते केशी तीर्थ आय । रासस्थली निहारि प्रभु भये मूरखित भाय ॥
 फेरि धरनि मधि लोटई प्रभु चेतना पाय । नाचें हँसें जु रोवई परे उच्चस्वर गाय ॥
 सो दिन तहां वितीत किय याही रंग प्रवाह । आय सांभ अक्रूर मधि किय भिक्षा निर्वाह ॥
 प्रात भए वृन्दाविपिन चीर घाट मधि न्हाय । श्री प्रभु जू विश्राम किय अवंरी तरै जु आय ॥
 हरि लीला के समय कौ वृत्त पुरातन सोय । तिहि तरु बंध सु चौतरी परम चीकनी जोय ॥
 चले निकट जमुना सुरभि शीतल मंद समीर । वृन्दावन शोभा लखी मधि यमुना के नीर ॥
 करैं बैठ अमली तरै नाम कीरतन भाय । भोजन अक्रूरहि करैं करि मध्यान्हहि आय ॥
 आवें प्रभु के दरस हित अक्रूरहि जन वृन्द । लोक भीर करि कीरतन सकै न करि स्वछंद ॥
 प्रभु वृन्दावन आयकें बैठि इकौसे सोय । करैं तहां मध्यान्ह लौं नाम कीरतन सोय ॥
 पहर तीसरे दरस प्रभु पावें लोक अशेष । करैं कृष्ण संकीरतन करैं सवनि उपदेश ॥
 आयौ वैष्णव तिहि समय कृष्ण दास तिहि नाम । गृही जात रजपूत तिहि जमुना पार जु गाम ॥
 काली दह को जात सो केशी तीर्थ न्हाय । देखे प्रभु अंजली तरहिं तिहि जु अचानक आय ॥
 प्रभु कौ रूप रु प्रेम लखि चमत्कार भौ ताहि । नमस्कार प्रभु कौं करैं होय दंडवत आहि ॥
 कहैं जु प्रभु तुम कौन हो कहां तुम्हारौ गेह । कृष्णदास तव कहै हौं विषयी पामर देह ॥
 राजपूत हौं जाति कौ मेरौ पार निवास । मेरे हिय इच्छा यहै हौं हूँ वैष्णव दास ॥
 आलिंगन करिकें जु तिहि कृपा करी प्रभु जोय । प्रेममत्त भौ नाचई हरि हरि कहि के सोय ॥
 प्रभु के संग मध्यान्ह में आयो सो अक्रूर । प्रभु की पातर कौ लखौं तिन प्रसाद सुख मूर ॥
 आवैं जल कौ पात्रलै नित प्रति प्रभु सँग जोय । प्रभु सँग रहे जु गेह औ नारी सुत तजि सोय ॥
 प्रगठ भये श्री कृष्ण जू वृन्दावन फिरि आय । जहां तहां सब लोग यों कहन लगे भरि चाय ॥
 मथुरा के जन एक दिन भये प्रात ही सोइ । वृन्दावन तें आवई करत कुलाहल जोय ॥
 प्रभु कौ लखि लोकन करी चरन वंदना जोइ । कहैं जु प्रभु तुम कहां ते कियौ आगमन सोइ ॥
 कृष्ण प्रगटभौ जन कहैं काली दह जल जोय । अहि फन मनिगन रंग धरि नृत्य करतहै सोइ ॥
 साक्षात हि देखे सवनि नहिं यामें संदेह । सुनि हंसिकें प्रभु जू कहैं सबै सांच है एह ॥
 इही भांति निशि तीन लौ लोक गमन भौ जोय । कहैं आय सब कृष्ण कौ पायौ दरसन सोय ॥
 देखे कृष्ण कहैं सबे प्रभु आये जन आहि । सत्य कहायौ सरस्वती यहै बचन मुख ताहि ॥
 सांच कृष्ण दरसन महाप्रभु जू देखे जोय । निज आज्ञा नहिं सत्य तजि असति सत्य भ्रम सोय ॥
 भट्टाचारज तव कहैं प्रभु चरनन मधि आय । देहु आज्ञा कृष्ण कौ करे जु दरसन जाइ ॥
 मारि तमांचे की कहैं प्रभु तासों रिस भोइ । बचन मूरखन के भयौ मूरख पंडित होय ॥

कृष्ण कौन कौं देहि इहि अब दरसन कलि काल । मूरख कौलाहल करें परि निज भ्रम के जाल ॥
 वौरो जिनि हो रह्यु यहाँ बैठि गेह निज आय । दरसन कीजौ कृष्ण कौ कान्हि निशाकौं जाय ॥
 प्रात समें जो शिष्ट जन आए प्रभुठां सोय । कृष्ण देखि आए तिनहै प्रभु जू पूछौ जोय ॥
 लोग कहें धीवर जु निशि चढि कें नाव मझार । कालिय दह में मीन वे मारें दीवट वारि ॥
 नौका में कालिय जु भ्रम दीपन रतन जु जान । मूढ़ लोक धीवर विपै करें कृष्ण अनुमान ॥
 यह सांच श्री-कृष्ण जू आये या वन माँहि । लोकनि देख्यौ कृष्ण कौं यह जु मिथ्या नाहि ॥
 आए निरखें हरि कहैं कहैं जु भ्रम अभिमान । होय दूढ़ औ पुरुष मधि ज्यों विपरीत जु ज्ञान ॥
 कहैं जु प्रभु पाए कहौ कृष्ण जु दरसन जोय । लोग कहें तुम हँस हो चर नारायन सोय ॥
 वृन्दावन में भए तुम आप कृष्ण अवतार । भयौ जु तुम कौं देखिकें लोकनि को निस्तार ॥
 विष्णु विष्णु प्रभु जू कहैं इमि कहिए नहिं जोय । जीवाधम में ज्ञान हरि कभू न करिए सोय ॥
 संन्यासी चित्करण जु सौं जीव किरण कन तूल । पडभग पूरण कृष्ण हैं रवि प्रकाश के मूल ॥
 जीव ईश जे तत्व विवि कबहुं नहीं समान । ज्वलित अगनिजु पतंग कन जैसें हीयें जान ॥
 तथाहि—

लहादिन्या सम्बिदाश्लिष्टः सच्चिदानन्द ईश्वरः । स्वाविद्यासंवृतो जीवः संक्लेशानिकराकरः ॥

जोई मूढ़ कहे जु है जीव ईश सम आहि । सोई पाखंडी जु है देय दंड जम ताहि ॥

तथाहि—यस्तुनारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादिदेवतैः । समत्वेनैव वीक्षेत सपापण्डी भवेद्भुवम् ॥

लोग कहें तुममें नहै कभू जीव मति जोय । सदृश कृष्ण की हौं जु तुम आकृति प्रकृति जु सोय ॥
 आकृति करि देखें तुम्हें व्रजपति नंदन जोय । पीत वसन करि वपुछटा ढकि राखी है सोय ॥
 ज्यों कस्तूरी वसन सों बांधे दुरे न सोय । यों ईश्वर जु स्वभाव तुम ढकौ जाय नहिं जोय ॥
 है जु अलौकिक प्रकृति तुम बुद्धि अगोचर जोय । तुम्हें देखि जग मत्त भौ कृष्ण प्रेम करि सोय ॥
 नारी वालक वृद्ध औ कहा जवन चांडाल । एक बार जोई लहै दरसन तुव जु रसात् ॥
 कृष्ण नाम लै नाचई सो उन्मत्त जु होय । है आचारज जगत कौ करै कृतार्थ सोय ॥
 दरसन की बातें रहें सुनै जु तुम्हारौ नाम । कहैं कृष्ण रस मत्त है तारे तीनौ धाम ॥
 सुनि कें तुम्हरे नाम कौ सुपच सु पावन होय । है जु अलौकिक शक्ति तव कही जाय नहिं सोय ॥
 तथाहि—

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनात् यत्प्रहणान् यद्स्मरणान् अपि क्वचित् ।

स्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते-कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥

तथाहि—

नमेभक्त श्रुतुर्वेदी मद्भक्तः स्वपचः प्रियः । तस्मै देयं ततोप्राह्यं सच पूज्यो यथाह्वयम् ॥

है लच्छन जु तटस्थ तव यह जु महिमा जोय । करि स्वरूप लच्छन तव व्रजपति नंदन सोय ॥

तिन सब लोकनि पर कियौ प्रभु प्रसाद अभिराम । प्रेम नाम करि मत्त हूँ लोग गए निज धाम ॥
 इहीं भांति अक्रूर मधि रहै कितिक दिन सोय । कृष्ण नाम औ प्रेम दे निस्तारे सब लोय ॥
 पुरी गुसाई कौ जु सिष वहै विप्र जो आहि । न्यौतौ करवायौ जु तिहि मथुरा घर घर आहि ॥
 जितने मथुरा पुरी के द्विजवर सज्जन सोइ । आवैं भट्टाचार्य द्विग मिलि दस बीसक सोइ ॥
 एक द्यौस मधि बीस दस न्यौते आवैं ताहि । भट्टाचार्य एक ही न्यौतौ मानै आहि ॥
 अवसर पावत ताहि नें न्यौते करिवें लोय । वहै विप्र साधे जु नित लोक निमंत्रन जोय ॥
 कान्यकुब्ज वैदिक जु द्विज दाक्षिणात्य पुनि जोइ । आय करें करि दीनता गौर निमंत्रन सोय ॥
 प्रात समैं अक्रूर मधि करें पाक ते आय । सालग्रामदि अपि प्रभु भिक्षा देहि बनाय ॥
 एक दिना अक्रूर के घाटहि पर सुख सार । बैठि महाप्रभु जू करें ऐसे कछू विचार ॥
 देख्यौ श्री वैकुण्ठ कौ यही घाट अक्रूर । दरस लखौ गोलोक कौ व्रज वासी रस पूर ॥
 परैं कूदि इतनौ जु कहि जल पर प्रेम अधीर । कितिक बार लौं महाप्रभु रहे बूढ़ि मधि नीर ॥
 कृष्णदास लखि रोयकें करी पुकार सुनाय । प्रभु जु उठाए वेगहीं भट्टाचार्य आय ॥
 तवतौ भट्टाचार्य जू लैकरि द्विजवर सोय । करें जुक्ति मिलि कें कछू बैठि इकौसे जोय ॥
 हुतौ आजतौ मैं यहाँ प्रभुहि उठायौ आहि । वृन्दावन में जो गिरें कौन उठावे ताहि ॥
 न्यौते को जंजाल नित लोकनि कें समुदाय । प्रभु आवेस रहे सदा भलौ न सो दरसाय ॥
 वृन्दावन ते काटिए जव प्रभु जू कौ जोय । तव हीं मंगल होय गौ है अस जुक्ति जु कोय ॥
 विप्र कहैं जु प्रयाग कौ चलिए प्रभु लै सोय । जैयें गंगा तीर पथ तवें महा सुख होय ॥
 पहिले गंगा न्हाइए सोरों तीरथ जाय । प्रभु कौ लै करिए गमन ताही पथ हूँ धाय ॥
 माघ मास आय जु लग्यौ अवही जैये जोय । स्नान जु मकर प्रयाग कौ पैयै वासर कोय ॥
 अपने कछु दुख कौ कहैं प्रथम निवेदन ताहि । पहुचें मकर प्रयाग कौ करिए सूचना ताहि ॥
 गंगा तट पथ कौ जु सुख दीजैं तिन्हें जनाय । होड़ा होडी जन करैं न्योते हित भरि भाय ॥
 प्रात समैं आवैं जु जन तुम कौ पावैं नाहि । तुम विन सबही लोग ये मेरे प्राननि खाहि ॥
 जो जैयें गंगा पथहि तौ सुख होय निदान । अब चलिए तौ पाइयै मकर प्रयाग स्नान ॥
 भयौ चित्त उद्विग्न सो हमपै सहौ न जाय । आज्ञा प्रभु की होय जो सो सिर लेंहि चढ़ाय ॥
 नहि प्रभु मन तजिबै जदपि वृन्दावन सुख ऐन । करिवैं जन इच्छा तऊ कहैं सु मथुरे वैन ॥
 दरसायौ वृन्दावन जु तुम हम कौ ह्यौ लाइ । इहिं दिन कौ हमपै कछू पलटौ कियौ न जाइ ॥
 जो इच्छा तुमरे जु हिय हम करिहैं अब सोय । जहां हमें लै जाहु हम जैहैं ह्वाइ जोय ॥
 प्रात समैं श्री प्रभु कियौ प्रात स्नान जु नेम । वृन्दावन तजि हैं सुमिरि भौ आवेस जु प्रेम ॥
 प्रभु कौ प्रेमाविष्ट मन है नहि बाह्य विचार । भट्टाचार्य कहैं चलौ जाइ महावन पार ॥
 इतनौ कहिकें नाव पै बैठायौ प्रभु जोय । लैकें चले जु पार करि भट्टाचार्य सोय ॥

कृष्णदास प्रेमी जु औ मथुरा कौ द्विज सोय । गंगा जैयें मार्ग के भेदी ये जन दोय ॥
 चले जात इक तरु तरैं प्रभु सब कौ लै आहि । बैठे तहां जु सबनि कें पथ कौ भ्रम अब गाहि ॥
 ताही तरु के निकट बहु चरें धेनु समुदाय । देखि तिन्हें प्रभु कौ भयौ हुलसित मन अवगाय ॥
 तहां अचानक मुरलि इक गोप बजाई आहि । प्रेमावेश महा भयौ प्रभु कौ सुनि के ताहि ॥
 होय अचेतन प्रभु गिरे धरनी पर रसरास । गिरै फेन मुख नासिका भौ अवरुद्ध जु स्वास ॥
 जहाजु तब ताही समैं आयो दस असवार । उतरे जवन पठान वे घोरनि तैं तिहिं वार ॥
 प्रभु कौ लखि कें म्लेच्छ वे मन में करें विचार । हुतौ पास या जती कें सुवरन धन जु अपार ॥
 ये पांचो बटपार हैं याहि धतूरो खवाय । जती मारि डारौ जु है सब धन लियौ छिनाय ॥
 बांध्यौ पांचौ जननि कौ तवै पठाननि जोय । सिर काट्यौ जु चहै लगे सबै कांपिबैं सोय ॥
 राजपूत निर्भय महा कृष्णदास वह जोय । माथुर द्विज निर्भय महा वचन महा दृढ़ सोय ॥
 विप्र कहैजु पठान तुम नृपहि दुहाई आहि । चलौ जाहि हम तुम निकट अधिकृत मंडल याहि ॥
 हौं माथुर द्विज ए जती गुरु जु हमारे होय । पृथ्वीपति आगे सत कहै जु हमारे लोय ॥
 है जु व्याधि इहिं जती कें कभू मूरछा होय । पैहैं अब ही चेतना है है ज्ञान सु जोय ॥
 छिन इक ह्यौ बैठो सबनि राख्यौ बांधि संभार । इन्हें पूछि कें तुम तवै हमें डारियो मार ॥
 कहै पठान जु पछिमा तुम जु साधु जन दोय । ठग तीनों जन गौडिया ए कांपत हैं सोय ॥
 कृष्ण दास तब कहै मम घर इहि ग्रामहि जोइ । कमनेतीसत दोय ह्यौ असवार जु सत दोय ॥
 ऐसैं सबहीं इही छिन जैहौं करौं पुकार । लूटि लैहिगे तुम सबनि और डारि हैं मार ॥
 नहीं गौडिया ठग तुही है बटमार जु सोय । लूटौ पुनि मारन चहौ तीरथ वासिन जोइ ॥
 सुनि तिनके मन में भयौ भय संकोच विचार । लही चेतना देह की श्री प्रभु जू तिहिं वार ॥
 उठे जु हरि हरि बोलिकें प्रभु जु करि हुंकार । नाचें ऊंचे भुजा करि प्रेमावेश अपार ॥
 प्रभु जू प्रेमावेश करि करें जवै चिंघार । लागें जवननि कें हियें जनौ सेल की धार ॥
 छोड़े पांचौ जन तवै जवननि भय जुत होय । प्रभु जू देख्यौ नाहिने निज गण बंधन जोय ॥
 प्रभु बैठाए गहि तवै भट्टाचार्य आय । प्रभु कें बाह्य भयौ निकट लखि जवननि समुदाय ॥
 आय जवन सब दूरितें पद वंदन किय ताहि । प्रभु के आगें कहै ये ठग पांचौ जन आहि ॥
 तुम कौं इन पांचौं जु मिलि कनक खवायौ सोय । करि कें मतवारौ तुम लीनौ तब धन जोय ॥
 कहैं जु प्रभु ए ठग नहीं हैं मम संगी लोय । भिक्षुक सन्यासी नहीं कछुधन हमरें जोय ॥
 मृगी रोग मेरें कभू होय अचेतन ताहि । येई पांचो दया करि करें जु पालन आहि ॥
 तिनही जवननि के जु मधि एक परमगंभीर । पहिरें कारे वसन तन लोग कहैं तिहि पीर ॥
 भीजौ ताकौ हृदय श्री प्रभु कौ दरसन पाय । निराकार थापै बृहत मत निज शास्त्र उठाय ॥
 तानें अद्वय वाद सो थापन कीनौ जोइ । तिहीं शास्त्र की जुक्ति करि प्रभु किय खण्डन सोइ ॥

जोई जोई कह्यो तिहिं प्रभु सब खंड्यो आहि । भयौ महाजड उत्तर जु आवै नहि मुख ताहि ॥
 कहैं जु प्रभु तुव शास्त्र मधि निर्विशेष जो आहि । थाप्यो है सविशेष करि खण्डन करिकें ताहि ॥
 अन्त तुम्हारे शास्त्र कौ कह्यो एक प्रभु जोय । पूरण सब ऐश्वर्य करि स्याम कलेवर सोय ॥
 सतचित आनंद देह तिहिं पूरण ब्रह्म जु रूप । सर्वात्मा सर्वज्ञ नित है सर्वादि स्वरूप ॥
 सृष्टि स्थिति और प्रलय पुनि होई तिहीं तें जोई । स्थूल सूक्ष्म सब जगत कौ है जु आश्रय सोई ॥
 कारण कौ कारण जु हैं श्रेष्ठ सर्व आराध्य । है भव तरिबौ जीव कें तिहीं भक्ति करि साध्य ॥
 तिहि सेवा विन जीव कें जाय नही संसार । तिन के पद मधि प्रीति जो है पुरुसारथ सार ॥
 आनंद मोक्षादिक जिते है जु एक कण जाहि । पूरण आनंद प्राप्ति पद पकंज सेवन ताहि ॥
 कर्म ज्ञान अरु जोग करि आगें थापन जोई । थाप्यो फिरि सब खण्डि कें तिहि प्रभु सेवन सोई ॥
 तुमरे सब ही पण्डितनि नहीं शास्त्र कौ ज्ञान । पूरव अरु पर विधि जु मधि है पर विधि बलवान ॥
 देखौ अपने शास्त्र में तुम करिकें जु विचार । निरने करिकें अन्त में कहा लिखौ है सार ॥
 कहैं जवन जो तुम कह्यो है जु सांच ही सोई । लिखौ शास्त्र में है तऊ जानि सकै नहि कोई ॥
 निराकार गोसांइयां लये करैं व्याख्यान । सेव्य गुसांइयां रूप जुत नहि काहु तिहिं ज्ञान ॥
 हो जु गुसैया ईस बड तुम साक्षात् ही सोई । मोपै कृपा करौ जु तुम दीन अजोग्य हि जोई ॥
 जवनशास्त्र में बहुत ही देखे करि जु विचार । वस्तु साध्य साधन जु कौ सकौ न करि निरधार ॥
 कहैं तुम्हें लखि जीभ मम कृष्ण नाम रसखान । हौं सब में ज्ञानी वडौ गयौ यहै अभिमान ॥
 मो सौं साधन साध्य तुम कहौ कृपा करि जोई । प्रभु जू के चरननि गिर्यो इतनौ कहिकें सोई ॥
 कहैं जु प्रभु उठि तें लियौ कृष्ण नाम करि चाय । कोटि जन्म कौ पाप गौ भयौ पवित्र बनाय ॥
 कृष्ण कृष्ण कहु कृष्ण कहु कियौ तिन्हें उपदेस । सब ही कृष्ण कहैं सवनि भयौ जु प्रेम विशेष ॥
 रामदास कहिकें प्रभु किय ताकौ अभिधान । एक पठान जु आय तिहिं विजुरी खान सुनाम ॥
 राजा कौ जु कुमार सो अल्प वयस है जोहि । हैं पठान पीरादि दै सब ही सेवक ताहि ॥
 पर्यो जु प्रभु के चरण मधि कृष्ण कृष्ण कहि सोई । श्रीप्रभु जू श्रीचरण दिय तिहि माथे पर सोई ॥
 करि जु कृपा तिन सवनि पर चले गौर अभिराम । वे पठान सबही भये बैरागी तजि धाम ॥
 तिहि पठान वैष्णव जु कहि भई ख्याति जग जोय । कहैं जु सबठां गाय कें भभु की कीरति सोय ॥
 सोई विजुरी खान हुब महा भागवत आहि । सब तीरथ कीने महंत सब ठां भयौ जु ताहि ॥
 ऐसैं लीला करत हैं प्रभु श्री हरि चैतन्य । कीनें पछिम आय कें जवनादिक सब धन्य ॥
 स्नान कियौ गंगाहि मधि प्रभु जु सोरों आय । गंगा तट पथ हैं कियौ गमन प्रयागहि धाय ॥
 कृष्णदास अरु तिहि द्विज हि दइ विदा प्रभु जोई । जोरि हाथ दोऊ जनें कहन लगे यों सोय ॥
 हम दोऊ जु प्रयाग लौं जैहें तुमरे संग । तुम पद संग सुख जु यहै कहां पाइयै रंग ॥
 म्लेच्छ देस कोऊ कहूं करै कभूँ उतपात । भट्टाचारज सरल अति कहि नहि जानें वात ॥

सुनि कें श्री प्रभु जू कछू लागे हसिबे जोई । आये चलि श्री गौर कें संग सोय जन दोय ॥
 जिन हीं जिन हीं जन लख्यो प्रभु कौ दरसन जोई । प्रेम भरे नाचैं करैं कृष्ण कीरतन सोई ॥
 तिन के संग करि और अरु आन संग करि ताहि । भये वैष्णव इंदी विधि देस ग्राम सब आहि ॥
 ज्यों प्रभु दक्षिण जात किय शक्ति प्रकासजु भाय । इहि विधि पछिम देससब प्रेमहि दिये बहाय ॥
 इहि भांति आये जु चलि प्रभु प्रयाग के तीर । मकर स्नान कियौ तहां दस दिन गंगातीर ॥
 वृंदावन कौ गमन जो प्रभु कौ चरित अनंत । सहस वदन हूं जा सकौ पावै नाहिन अंत ॥
 बुद्ध जीव हूं कें कहा हौं कहि सकौ जु ताहि । करिकें दिग दरसन कछू कह्यो खूब करि आहि ॥
 लीला प्रभु हि अलौकिकी लोक रीति नहि जोई । भाग्य हीन कें सुनैं हूं तिहिं प्रतीत नहि होय ॥
 आदि अंत लौं गौर कौ चरित अलौकिक जान । श्रद्धा करिकें सुनौं जन याहि सत्य करि मान ॥
 जोई तर्क करै इहां मूरख नृप है सोई । अपनैं शिर मधि आप हीं डारै वज्र हि जोय ॥
 चरित सिरीचैतन्य कौ अमृत सिंधु यह आहि । जगत मगन आनंद निधि करै एक कन जाहि ॥
 श्री जु रूप रघुनाथ के चरण कमल जिहिं आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
 रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । सोप्रभु चरितामृत लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे श्रीवृन्दावनदर्शनं नाम अष्टादस परिच्छेदः

उनविंशपरिच्छेदः

वृन्दावनीयां रसकेलिवार्त्ता कालेन लुप्तान्निजशक्तिमुत्कः ।

संचार्य रूपे व्यतनोत्पुनः सः प्रभु विंधौ प्रागिव लोकसृष्टि ॥

जय जय श्री चैतन्य जय जय श्रीनित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय प्रभु भक्तनि के वृंद ॥
 रामकेलि ग्रामहि जु मधि रूप सनातन दोय । श्रीप्रभुकौ मिलिकें गये भवन आपन सोय ॥
 विषय त्याग कौ जतन किय दोऊ भाइन जोय । दै बहुधन द्वै द्विजन कौ कीनौ वरन जु सोय ॥

कवित्त

कराये कृष्णमन्त्र के पुरश्चरन विवि जु तिन्हौ ताही मन्त्र कौ पुरश्चरन करयो है ।
 इहै अभिलाष वेगि प्रभु पद प्राप्ति होय देख्यो गौरचंद रूप सोई हियें अरयो है ।
 रूप श्री गुसांई तव कछु मिस करि आये निजगेह लैकें धन एक नौका भरयो है ।
 ताके द्वै विभाग किये दिये द्विज भक्तनि कौ दियो घर एक राज दंड हेत धरयो है ॥

दोहा

तिहि धन कौ तव रूप जू चौथो वांट जु सोय । भले भले विप्रन भवन धरी धरोहर जोय ॥

कवित्त

मुद्रा औ सहस्र दस सनातन के खरच हेत गौडदेस राखी करिकें विचार है ।
 गुसाईं श्री रूप सुनी लीलाचल गये प्रभु वनपथ हैं कै जैहैं व्रज रस सार है ।
 सुनी द्विज दोय तहां भेजे तव वन कौ पधारें प्रभु हमें तव दीजियै संभार है ।
 सुनिकें उचित जोई करि हैं व्योहार सोई तौ लौ श्री सनातन हूं ऐहैं निरधार है ॥
 इहां श्री सनातन जू मन में विचारें यहै बंधन हमारौ करै राजा नेह अति है ।
 कीजिये विचार सोई जामें याकें क्रोध होय तव तौ स्वतंत्र हैं कै करै निज गति है ।
 करि व्यवसाय यहै बैठे घर आय मिस रोग कौ बनाय छाड़ि राजद्वार कृति है ।
 कवहूं न नृप द्वार जाई और काज करें आप घर बैठे रहै हियें कृष्ण रति है ॥
 बीस तीस पण्डित लै शास्त्र कौ विचार करें धरैं हियें सोई कहौ श्री शुक विचार है ।
 और राजा एक जन संग आय कियौ तहां औचक प्रवेस इन सभा के मभार है ।
 देखि नृप संभ्रम सौं उठे श्रीगुसाईं दियौ आसन पै बैठो बोल्यो नीति अनुसार है ।
 भेजो हम वैद्य तुम पास तिन कही हमें रोग कौ न लेस कीनौ मिस निरधार है ॥
 जितौ राजकाज सब हाथ हौ तिहारौ तुम ताहि छाड़ि बैठि रहौ सो तौ नास भयौ है ।
 कहा है तिहारे मन ताहि क्यों कहौ वेगि पूछी जब राजा तिन्हौं ऐसैं कहि दयौ है ।
 अब तौ तिहारौ नेकु हम सौं न होय काज और सौं कराय लेहु सुनि क्रोध छयौ है ।
 कोप नृप फेरि कहै तेरो बड़ो भाई तिन देस धन नास कियौ चोर कर्म लियौ है ॥
 इहां तौ हमारौ तुम राजकाज खोयौ सब उहां बड़े भाई कियौ देस सब नास है ।
 बोले श्रीसनातन जू ईश्वर स्वतंत्र तुम जाकौ अपराध जैसो देहु फल तास है ।
 यह सुनि क्रोध छयौ राजा निज गेह गयौ जानि भजि जैहैं बांध्यौ राखे जन पास है ।
 मारण उडीसा देस जब चढ़्यौ तव कह्यौ इन्हैं संग लैकें चलैं तोपे सुख रास है ॥
 इन्हौं तव कही दुख देन देवतान चले तुम तौ तुम्हारे संग शक्ति न हमारी है ।
 तिन्हौं बांधि राजा चल्याइ इहां लीलाचलतें जु महाप्रभु व्रजके सु जैवे की विचारी है ।
 तव द्विज दोय वेई भेजे हैं श्रीरूप जेई आय तिन्हौं कही बात वहै सुख कारी है ।
 सुनत ही पत्र इन्हौं लिख्यौ श्री सनातन कौ वृन्दावन चले प्रभु भयौ चैन भारी है ॥
 चलैं हम दोनों भाई तिन के मिलन हेत ऐहो तुम जैसे तैसे आप कौं छुटाय कैं ।
 मुद्रा उहां अयुत मुदी धरी तिन्है दैकें ताहि जा ता भांति छूटि ऐहो वृन्दावन धाय कैं ।
 ऐसैं लिखि पत्र आप तीर्थराज आये श्रीवल्लभ हैं अनुज तिन्हैं संग लै सहाय कैं ।
 तहां मुनी महाप्रभु आये इहां हर्ष पाय कहैं धाय जाय देखें पद सीस नायकैं ॥

प्रभु चलि आये हैं तवै माधव दरसन काज । आवैं प्रभु के मिलन हित लाखन लाख समाज ॥
 रोवैं कोऊ हँसैं पुनि नाचैं गावैं कोय । कृष्ण कृष्ण कोऊ जु कहि लोटैं धरणी जोय ॥
 गंगा जमुना नहि सकी देस प्रयाग बुडाय । कृष्ण प्रेम धाराहि मधि प्रभु सब दिये बहाय ॥
 दोऊ भाई भीर लखि रहे इकौसे होय । प्रभु के प्रेमावेस भौ माधव दरसन जोय ॥
 नाचैं प्रेमावेस करि प्रभु हरि धुनि अधिकाय । हरी हरी बोलौ कहैं उचै बांह उठाय ॥
 प्रभु सहिमा लखि लोककैं चमत्कार अधिकाय । प्रभु लीलाजु प्रयाग मधि वरनन करीन जाय ॥
 दाक्षिणात्य इक विप्र संग हैं प्रभु परचैं जोय । प्रभुहि ले गयौ न्योतिकें अपने घर द्विज सोय ॥
 बैठे द्विज घर आय कैं प्रभु जु इको से होय । आय रूप वल्लभ तहां प्रभु कौ मिले जु दोय ॥
 दोऊ दसननि बीच धरि पुंज तृणनि के दोइ । प्रभु जू कौं लखि दूरतें परे दंडवत होइ ॥

कभूं भूमि गिरें कभूं उठें फेरि धीर धरि श्लोक नाना दीनता के पढ़ें वार वार हैं ।
 देखि प्रभु दयासिंधु हियें बडौ चैन पाय बोले मृदु वैन नैन भीजे जलधार हैं ।
 उठौ उठौ रूप तुम आये भली भई सकैं कहि कौन कृपा कृष्ण अति ही उदार हैं ।
 विपै कूप में तें काढ़े तुम दोऊ जन बांह गहि लाये प्रभु हियें ये तौ दवे भार हैं ॥
 पाछें कछू कृष्ण कथा करी मिलि दोऊन सौं ता में महाप्रभु जू के प्रेमावेस भयौ है ।
 ताही में कृपा कैं आप पाद पत्र सीस धर्यौ देखि प्रभु दया दोऊ हियें प्रेम छयौ है ।
 हाथ जोरी दीन हैं कै लागे स्तुति करिवे कौ बडे ई दयाल तुम प्रेम दान दीयौ है ।
 सहामोह मत्त जीव ताहि प्रेम मत्त कियौ निजरस प्यायौ जातें रोग मिटि गयौ है ॥

तथाहि—

नमो महावदान्धाय कृष्णप्रेमप्रदायिने । कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विने नमः ॥

तथाहि—

जोऽज्ञान मत्तं भुवनं दयालुरुल्लाघ्यन्नप्यकरोत् प्रमत्तं ।

स्वप्रेमसम्पत् सुधयाद्भुतेऽहं श्रीकृष्णचैतन्यममुं प्रपद्ये ॥

कृपा करि प्रभु जू बेठाये ये समीप दोऊ तव श्री सनातन की पूछी सब बात है ।
 इनौ तव कही वेतौ बंधे राजा कारागृह आप ही उधारौ तवैं हैं है कुशरात है ।
 कहें प्रभु छूटें वे तौ वेग ही हमारे पास ऐहैं रस भीजै दै कैं विघ्न सिस लात है ।
 सुनि यह बात दुख लेस सोऊ दूर भयौ आनंद बढ़्यौ है सोतौ गात में न मात है ॥

भट्टाचारज दुहुनि कौं कियौ निसन्नन जोय । प्रभु कौ सेस प्रसाद विव भाइन पायौ सोय ॥
 करिवे कौं मध्यान द्विज प्रभु सौं कह्यौ जु आहि । रूप गुसाईं तिहिं ठां रहैं द्यौस जो ताहि ॥
 प्रभु वसिवे की ठौर जो वेंनी ऊपर सोय । किय निवास भाई दुहुनि प्रभु समीप ही जोय ॥
 रहे अड़ैला ग्राम में वल्लभ भट तिहि काल । प्रभु आये सुनि ठांव तिहिं आये सो ततकाल ॥

कियौ दंडवत भट्ट किय प्रभु आलिंगन ताहि । कृष्ण कथा दुहुं जन जु मधि भई कछुक छिन आहि ॥
 कृष्ण कथा कहि गौर कैं उमग्यौ प्रेम सु हीय । करि संकोच हि भट्ट कैं प्रभु संवरन जु कीय ॥
 अंतर उमगनि प्रेम की दुरें न कयौ ह आहि । भयौ जु बल्लभभट्ट मन चमत्कार लखि ताहि ॥
 श्री प्रभु कौं तव भट्ट ने कियौ निमन्त्रण जोय । ताहि मिलाये महाप्रभु तव ये भाई दोय ॥
 दोऊ भाई भूमि पर परे दूरितें जोय । भट्ट हिं कीनैं दंडवत अति हीं दीन जु होय ॥
 जाहि भट्ट तिन मिलन हित भजें दूरि ये दोइ । मैं पामर अस्पृश्य हौं छुबो न मोकों जोइ ॥
 अचिरज भयौ जु भट्ट कैं प्रभु कैं आनंद हीय । तव तौ प्रभु जू भट्ट सौं तिनकौं विवरन कीय ॥
 परसों जिनि इन कौं जु ये हैं जु जाति अतिहीन । वैदिक जाज्ञिक हौं जु तुम और कुलीन प्रवीन ॥
 वदन निरंतर दुहुनि कैं कृष्णनाम सुनि आहि । भट्ट कहैं प्रभु की कछू हिय भंगी अवगाहि ॥
 कृष्णनाम इन के वदन नृत्य करत हैं जोय । ये तो अधम न ही जु हैं सब में उत्तम सोय ॥

तथाहि—

अहो वत श्वपचतो गरीयान् यजिह्वावेवर्तते नाम तुभ्यं ।

तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्तु राध्याः ब्रह्मानुचु नाम गृणन्ति ये ते ॥४॥

सुनि कैं प्रभु जू ने करी बहुत प्रसंसा ताहि । प्रेम मगन हैं कैं लगे पठन पद्य यह आहि ॥

तथाहि—

शुचिसङ्गिदीपान्ति दग्ध दुर्जातिकल्मषः । श्वपाकोऽपि बुधैः श्लाघ्यो न वेदज्ञोऽपि नास्तिकः ॥५॥

भगवद्भक्तिहीनस्य जातिः शास्त्रं जपस्तपः । अप्राणस्यैव देहस्य मरणं लोकरञ्जनम् ॥ ६ ॥

प्रभु कौं प्रेमावेस लखि भक्ति सार सु प्रभाव । रूपादिक लखि भट्ट कैं अचिरत हुव हिय भाव ॥
 प्रभु कौं गणपुत भट्ट तव नौका पर जु चढ़ाय । लैकें निज घर कौं चले भीला हित करि चाय ॥
 यमुना जू कौं जल निरखि स्याम चीकनीं जोय । प्रभु जू प्रेमावेस करि भये मत्त अति सोय ॥
 जमुना के जल में गिरे प्रभु जू करि हुंकार । प्रभु कौं लखि सब कौं भयौ हिय भय कंप अपार ॥
 जैसे तैसें सबनि मिलि प्रभु जू लिये उठाय । नाचन लगे जु गौर हरि नौका पर भरि भाय ॥
 नौका प्रभु कैं भार करि ढगमगाय अधिकाय । डवन लागी नाव जल भरि आयौ छलकाय ॥
 जद्यपि आगे भट्ट कैं प्रभु धीरज मन होय । दुर्निवार उद्भट तऊ प्रेम दुरे नहीं सोय ॥
 देस पात्र लखि गौर कैं जब धीरज हुव जोय । नौका घाट अडैल कैं तव ही उतरी सोय ॥
 करवायौ मध्यान्ह इहि भय करि भट्टजु संग । आयौ प्रभु कौं संग लै निज घर हिय भरि रंग ॥
 दियौ भट्ट आसन परम अति आनंदित होय । आपन प्रभु जू कौं कियौ पद प्रछालन जोय ॥
 धारवाँ मस्तक जल वडै भट्ट वंस जुत आहि । बहिवास कौपीन तव पहिराई प्रभु ताहि ॥
 करी महापूजा कुसुम धूप दीप सुवास । पाक करायौ मान्य करि भट्टाचारज पास ॥
 भीचा करवाई प्रभु हि नेह जतन करि जोइ । भोजन करवायौ सु फिरि रूप अनूज तिहि सोइ ॥

भट्टाचारज रूप कौं दीयौ प्रभु अवसेस । कृष्णदास पायौ तवैं सो प्रसाद तिहि सेस ॥
 दे मुखवास महाप्रभु हि सयन करायौ सोय । संवाहन प्रभु चरन कौं करैं भट्ट निज जोय ॥
 तवहि पठायौ महाप्रभु भोजन करिवैं ताहि । प्रभु समीप आये जु सो भोजन करिकैं ताहि ॥
 तिहिं समैं जु उपाध्याय रघुपति आये जोय । पण्डित वडे तिरोहिती भक्त महासय सोय ॥
 तिन्हौं आय कीनौ तवैं प्रभु पद वंदन जोय । रहो कृष्ण रति कृष्ण मति कहैं जु प्रभु जू सोय ॥
 भयौ उपाध्या कौं हियौ सुनि आनंदित आहि । वर्णन करौ जु कृष्ण कौं यौं प्रभु कब्यौ जु ताहि ॥
 निजकृत हरिलीला जु कौं पद्य पद्यौ यह जोय । आगें कहु प्रभु वचन सुनि कब्यौ उपाध्याय सोइ ॥

तथाहि—

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः । अहमिह नन्दं वन्दे यस्यालिनन्दे परं वन्द्यम् ॥६॥

तथाहि—

कं प्रति कथायितुमीरो संप्रति कोश प्रतीतिमायातु । गोपतितनया कुंजे गोपवधूटी विटं व्रज ॥७॥

सुनि प्रभु जू कैं भौ महा प्रेमावेस जु हीय । तवैं उपाध्या रघुपति हि नमस्कार प्रभु कीय ॥
 कहैं जु प्रभु वोलो पडैं ते हरिलीला भाय । प्रभु कौं प्रेमावेस करि तन मन अति अकुलाय ॥
 रघुपति कैं प्रभु प्रेमलखि अचिरज भयौ अपार । नहि मनुष्य ए कृष्ण हैं कीनौ यह निरधार ॥
 गौर कहैं रघुपति जु तुम उत्तम मानौ काहि । परम रूप हैं स्याम की कहैं उपाध्या ताहि ॥
 स्याम भक्त के वासगृह उत्तम मानौ काहि । पुरी मधुपुरी श्रेष्ठ गृह कहैं उपाध्या ताहि ॥
 शिशु पौगण्ड किशोर वय उत्तम मानो काहि । ध्यान योग्य कैशोर वय कहैं उपाध्या ताहि ॥
 भलौ तत्व सिखयौ हमैं कहैं महाप्रभु सोय । पडैं प्रेम गद गद सुरहि पद्य इतौ कहि जोय ॥

तथाहि—

स्याममेव परं रूपं पुरी मधुपुरीवरा । वयःकैशोरकं ध्येयमाद्य एव परो रसः ॥८॥

कियौ महाप्रभु प्रेम करि आलिंगन तिहि धाइ । तेऊ नाचन लगे हैं प्रेम मत्त अधिकाइ ॥
 भयौ जु बल्लभ भट्ट हिय लखि अचिरज अधिकाय । डारे दोऊ तनय तव प्रभु के चरणनि न्याय ॥
 आय जन सब ग्राम के दरसन के हित चाय । प्रेममत्त सब ही भये प्रभु के दरसन पाय ॥
 करैं निमन्त्रण गौर कौं तहां सबैं द्विज सोइ । बल्लभ भट्ट तवैं तहां करैं निवारण जोइ ॥
 परैं प्रेम उन्माद करि प्रभु जमुना के माहि । इन्हैं प्रयाग चलाइहैं रहन दैहि ह्या नाहि ॥
 जिहिं इच्छा जु प्रयाग में कीजौ न्यौतौ जाय । इतनौ कहि प्रभु कौं जु ले गमन कियौ प्रभु धाय ॥
 प्रभु बैठाये नाव मधि गंगा पथ कौं जोय । आये भट्ट प्रयाग कौं लै प्रभु जू कौं सोय ॥
 दशाश्वमेध हि जाय प्रभु लोक भीर भय भार । शिखा करै जु रूप कौं करि जु शक्ति संचार ॥
 कृष्णतत्व औ भक्ति कौं तत्व भक्तिरस जोय । प्रेम भागवत फलित जो सब ही सिखयो सोय ॥

सुन्यौ जितौ सिद्धांत प्रभु रामानंद पै जोइ । करि जू कृपा श्री रूप पर सब संचारयौ सोइ ॥
प्रभु श्रीरूप हिये जु मधि करि जु शक्ति संचार । सबै तत्व के कथन मधि किये प्रवीन उदार ॥
शिवानंद के पुत्र कवि कर्ण पूर हैं जोय । दुहुनि मिलन निज ग्रंथ मधि प्रगट लिख्यौ है सोय ॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदय नाटके—

कालेन वृन्दावनकेलिवार्ता लुप्तेति तां ख्यापयितुं विशिष्य ।

कृपामृतेनाभिषिपेच देवस्तत्रैव रूपञ्च सनातनञ्च ॥६॥

तत्रैव श्रीरूप अनुग्रहोयथा—

यः प्रागेव प्रियगुणगणैर्गाढबद्धोऽपि मुक्तो, गेहाध्यासाद्रस इव परो मूर्त्त एवाप्य मूर्त्तः ।

प्रेमालापैर्दृढतरपरिष्वंगरंगैः प्रयागे तं श्रीरूपं सममनुपमेनानुजग्राह देवः ॥१०॥

तत्रैव शक्तिसंचारो यथा—

प्रियस्वरूपे दयितस्वरूपे प्रेमस्वरूपे सहजाभिरूपे ।

निजानुरूपे प्रभुरेकरूपे तनान रूपे स्वविलासरूपे ॥११॥

कर्णपूर कवि यौ लिख्यौ ठांव ठांव ही जोय । जैसे रूप सनातनहि करी कृपा प्रभु सोय ॥
तिन प्रभु के जु बड़े बड़े जितने भक्त जु मात्र । रूप सनातन सवनिके कृपासु गौरव पात्र ॥
कोऊ देशहि जाइ तौ लखि वृन्दावन आहि । पूछें प्रभु के पारषद गण सब ही मिलि ताहि ॥
कहौ तहां कैसें रहैं रूप सनातन दोइ । कैसें है वैराग्य औ कैसें भोजन होय ॥
अष्टयाम कैसें करैं भजन कृष्ण कौं जोय । तवै प्रशंसा करि कहैं वात भक्तजन सोय ॥

कवित्त—

वृन्दावन भूमि छवि देखि भूमि गिरैं कभूँ उठें फिरि प्रेममत्त सुधि न शरीर हैं ।
एक एक वृक्ष तर एक दिन वास करैं देखें कव राधाकृष्ण यहै जिय पीर हैं ।
करवा कौपीन एक बहिर्वास संग राखें भाखें हरिनाम सदा वहै नैन नीर हैं ।
जिते सुख भोग रोग तिनकौं न ठौर रही हियें अति भई कृष्णभक्ति रस भीर हैं ॥
द्विज गृह भीक्षा कभूँ माधुकरी चर्वन सौं उदरहि भरैं कभूँ करैं उपवास हैं ।
अष्टयाम नाम मुख कभूँ कृष्ण कथा कहैं भक्ति रस शास्त्र लिखैं कभूँ रस रास हैं ।
चारि दंड सैन करैं भाव पगें ताहुँ समें कृष्णलीला मानसी के हिय में प्रकास हैं ।
प्रिया प्रिय धाम जिते आंखिन निहारि तिते किये हैं प्रगट सब जुगल प्रकास हैं ॥

दोहा—

कहैं कथा चैतन्य की कभूँ हियें भरि भाय । करैं चितवन गौर कौ कहि प्रसंग करि चाय ॥
होय महन्तनि कौ यहै सुनिकें अति सुख सोइ । जिनपै कृपा सुगौर की तिनकें अचिरज कोइ ॥

आप लिखी है रूप जू कृपा गौर की सोइ । भक्ति रसामृत सिंधु के मंगल मुख ही जोइ ॥
तथाहि—

हृदि यस्य प्रेरणया प्रवर्तितोऽहं वराकरूपोऽपि । तस्य हरेः पदकमलं बन्दे चैतन्य देवस्य ॥१२॥
इही भांति दस द्यौस प्रभु रहि जु प्रयाग उदार । श्री रूपहि सीन्हा दई करि जु शक्ति संचार ॥
सुनौ रूप हरि भक्ति रस लक्षण कहैं उदार । सूत्र रूप कहि यै कियौ जाय नहीं विस्तार ॥
है अथाह रससिंधु सो पारावार न जाहि । कहियै तुम्हरे स्वाद हित कछुक एक कन ताहि ॥
भर्यौ अनंतनि जीवगण इह ब्रह्माण्ड विलास । चौरासी लक्ष जोनि मधि भ्रमै जीव कालवस ॥
केस अग्र सत भाग इक तिहिं शतांश फिरि जोय । तिहि सम सूक्ष्म जीव है भरि ब्रह्माण्डहि सोय ॥
तथाहि—

केशाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च । जीवः सूक्ष्मस्वरूपोऽयं संख्यातीतो हि चित्कणः ॥ १३ ॥

थावर जंगम तिहूं मधि दोय भेद ये आहि । निरजक जल थल चरजु ये भेद जंगमहि ताहि ॥
तिहूं मधि अति अलपतर जाति मानुषी जोइ । तिहि मधि आधे जवन पुनि बौद्ध भील है सोइ ॥
वेद निष्ठ मधि अर्द्ध इक वेद सूत्र करि मान । निगम निसिध्य जु पाप सब करैं धर्म नहि ज्ञान ॥
धर्माचारी मध्य बहु तप औ कर्म हि निष्ठ । कर्मनिष्ठ कोटिकनि मधि एक जु ज्ञानी सिष्ठ ॥
कोटिक ज्ञानी मध्य हूं एक मुक्तजन कोय । दुर्लभ कोटिक मुक्त मधि कृष्णभक्त इक सोय ॥
कृष्णभक्त निष्काम सो ताही तें है सांत । भुक्ति मुक्ति औ सिद्धि के काम सबै जु असांत ॥
तथाहि—

मुक्तानामपि सिद्धानां नारायणपरायणः । सुदुर्लभः प्रशान्तात्मा कोटिष्वपि महामुने ॥ १४ ॥

भ्रमत भ्रमत ब्रह्मांड मधि जीव भाग्य जुत कोय । भक्तिलता बीजहि लहै गुरु हरि कृपा जु कोय ॥
बोवे ताही बीज कौं है करि माली जोय । श्रवन कीरतन नीर करि सींचै ताही सोय ॥
उपजि लता वाढ़े जगत अंडभेदि सब जाय । ब्रह्मलोक विरजा उलंघि फिरि वैकुण्ठ हि जाय ॥
तब तिहि पर गोलोक पुनि वृन्दावन मधि जाइ । कृष्ण चरण युग कल्पतरु तिन पर सो लपटाय ॥
फलै प्रेमफल फलै सो तिह सुरतरु के तीर । ह्यां माली सींचै सदा श्रवण कीरतन नीर ॥
जो हरिजन अपराध पुनि उठे मत्त मातंग । खोदि तोरि डारे लतहि छूक जाइ तिहि अंग ॥
यातें माली जतन करि करै वारि चहुंधाहि । ज्यों अपराध मतंग कौ होय उठन ही नाहि ॥
जौ ताकौ अंग और हू उपशाखा उपजाहि । मुक्ति भुक्ति की चाह लागि है तिन संख्या नाहि ॥
छल छिद्र जु पापाचरण जीव विहंसनि आहि । लाभ प्रतिष्ठादिक जु औ उपसाखा गण जाहि ॥
सींचै जल कौ पान करि उपसाखा बढ़ि जाहि । थकित मूलसाखा जु है बढ़िबै पावै नाहि ॥
करिये उपसाखा प्रथम छेदन कौ जु उपाय । बढि जु मूल साखा तवै श्री वृन्दावन जाय ॥
परै प्रेम फल पक करि माली स्वादहि ताहि । माली लता अवलंब करि पावै सुरतरु आहि ॥
तहां कल्पतरु कौ करै सेवन नित प्रति सोय । करै जु सुख सौं प्रेम फल आस्वादन सब जोय ॥

तथाहि—

श्रद्धासिद्धिप्रजविजयिता सत्य धर्मा समाधि ब्रह्मानन्दो गुरुरपि चमत्कारयत्येव तावत् ।

यावत्प्रेम्णां मधुरिपुवशीकारसिद्धौषधीनां, गन्धोप्यन्तः करण सरणी पान्थतां न प्रयाति ॥ १५ ॥

सुद्ध भक्ति हीतें हियें प्रेम प्रकास जु होय । याही तें तिहिं भक्ति कौ करिये लक्षण जोय ॥
पूजा चाहसु औरकी तजिपुनि कर्म अरु ज्ञान । सब इन्दिय करि कृष्णकौ अनुसीलन हित जान ॥
सुद्ध भक्ति यह इही तें प्रेम भक्ति हिय होय । पंचरात्रि अरु भागवत किय लक्षण यह जोय ॥
तथाहि नारद पंचरात्रे—

सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्मलं । हृषीकेण हृषीकेशसेवनं भक्तिरुच्यते ॥ १६ ॥

तथाहि श्री भागवते—

अहैतुक्य व्यवहिता या भक्तिः पुरुषोत्तमे । सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत ॥

दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः । स एव भक्तियोगाख्य आत्यन्तिक उदाहृतः ॥ १७ ॥

तथाहि—

भुक्ति मुक्ति स्पृहा यावत् पिशाची हृदि वर्तते । तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयो भवेत् ॥ १८ ॥

भुक्ति और पुनि मुक्ति की हियें चाह जो होय । प्रेमा साधन किये हूं उपजै ताहि न सोय ॥
साधन भक्तिहि जो हियें उदै करै रति जोय । वहै गाढ़ रति होय जब प्रेम नाम तिहिं सोय ॥
वहै प्रेम ज्यों ज्यों वहै क्रम करियै तिहिं नाम । होय सनेह जु मान पुनि फेरि प्रणय अभिराम ॥
राग वहै अनुराग पुनि वहै भाव फिरि होय । वहै दशा आरुढ़ हूँ महाभाव पुनि सोय ॥
जैसे पहिले बीज हूँ वहै ईख पुनि होय । वहै होय रस गुड जु पुनि खंड सार हूं सोय ॥
वहै फेरिकें सर्करा सिता जु मिश्री आहि । सितापला सब ते अधिक होय नाम फिर ताहि ॥
येई सब हरिभक्ति रस कहै स्थाई भाव । स्थाई भाव हि मधि मिलै जो विभाव अनुभाव ॥
सात्विक संचारी जु पुनि भावनि सौ मिलि सोइ । परम अमृत आस्वाद सौं कृष्ण भक्ति रस होइ ॥
जैसे दधि मिश्री जु घृत सहित मिरच कर्पूर । मिलै रसाला होत हैं अमृत मधुर रस पूर ॥
भक्ति भेद तें भेद रति होय पंच विधि सोय । प्रथम सांत रति दास्य रति और सख्यरति जोय ॥
वत्सल रति अरु मधुर रति पंच भेद ये आहि । कृष्ण भक्ति रस पंच विधि होय भेद रति ताहि ॥
सांत दास्य पुनि सख्य रस वत्सल मधुर जु नाम । कृष्ण भक्ति रस मध्य ये पंच मुख्य अभिराम ॥
दास्य और अद्भुत जु रस वीर करुण पुनि सोय । रौद्र और वीरत्स रस फेरि भयानक जोय ॥
कहै जु पंच प्रकार के कृष्ण भक्ति रस जोय । तिनही मधि ये होत हैं गौण सप्त रस सोय ॥
रहै व्यापि रसभक्ति हिय पंच स्थाई भाव । सप्तम गुण आगंतुक जु होय सु कारण पाव ॥
सांत भक्त योगेन्द्र नव अरु सनकादिक चार । दास्य भक्त ये सर्व ठां सेवग गण जु अपार ॥
श्रीदामादिक सख्य जन पुनि भीमार्जुन सोइ । मात तात वात्सल्य जन गुरु जन जितने जोइ ॥
भक्त मधुर रस मुख्यहै गोपीगण जो आहि । महिषी गण लक्ष्मी जु गण गणनि असंख्या जाहि ॥

यहै कृष्ण रस फेरि कें होय प्रकार जु दोय । ईस ज्ञान मिश्रा जु इक और केवला सोय ॥
व्रज मधि रति है केवला हीन ईसता ज्ञान । पुर द्वै वैकुण्ठादि मधि है ऐश्वर्य प्रधान ॥
ईस ज्ञान मुख्या जु ते होय संकुचित प्रीति । मानें नहि लखि ईसता यहै केवला रीति ॥
सांत दास्य रस कौ कहै उदीपन प्रभुताहि । वत्सल सख्य जु मधुर कौ करै संकुचित आदि ॥
देव कि अरु वसुदेव के पदवंदन हरि कीय । ईस ज्ञान करि दुहुनि कें भयो जु भय तिन हीय ॥
तथाहि—

देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ । कृतसंवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शंकितौ ॥ २० ॥

विश्वरूप लखि कृष्ण कौ भौ अर्जुन भय आहि । सख्यभाव की ईपता क्षमा कराई ताहि ॥
तथाहि गीतायां—

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।

अजानता महिमानं तवेदं मया प्रसादात् प्रणयेन वापि ॥ २१ ॥

रुकमणी सौं श्रीकृष्ण जू कियौ जवै परिहास । कृष्ण छादि हैं जानि यह रुकमणि कें भौ त्रास ॥
तथाहि—

तस्याः सुदुःखमयशोक विनष्टबुद्धे हस्तात् श्लथद्वल्यतो व्यजनं पपात ।

देहश्च विकलवधियः सहसैव मुह्यन् रम्भेव वात विहता प्रविकीर्य केशान् ॥ २२ ॥

केवल सुद्ध जु प्रेमिजन जाने ईस न गंध । देखें ऊ ऐश्वर्य सो माने निज संवन्ध ॥
तथाहि—

त्रय्या चोपनिषद्भिश्च सांख्ययोगैश्च सात्वतैः । उपगीयमानमाहात्म्यं हरि सामान्यतात्मजम् ॥

तं मत्वात्मजमव्यक्तं मर्त्यलिङ्गमधोक्षजम् । गोपिकोलखले दाम्ना बबन्ध प्राकृतं यथा ॥ २३ ॥

कृष्ण निष्ठता बुद्धि की रूप सांत रस सोइ । सम जु बुद्धि में निष्ठता वचन कृष्ण यह जोइ ॥
तथाहि गीतायां—

समो मन्निष्ठता बुद्धेरिति श्रीभगवद्रचः । तन्निष्ठा दुर्घटा बुद्धेरतां शान्ति रति विना ॥ २४ ॥

तृष्णा त्याग जु कृष्ण विन मानि कार्य तिहि सोय । याही तें हरिभक्ति इक शान्त जानियें जोय ॥
स्वर्ग मोक्ष कौ नरक सम माने हरिजन जोय । हरि निष्ठा तृष्णा समित गुण जु सांत के दोय ॥
तथाहि—

नारायण पराः सर्वे न कुतश्चन विभ्यति । स्वर्गापवर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः ॥ २५ ॥

व्यापे सब ही भक्तजन मध्य ये जु गुण दोय । जैसे नभ कौ शब्द गुण और भूत गण होय ॥
सांतरस हि जु स्वभाव हरि मधि मसतो गंध हीन । परब्रह्म परमात्मा ज्ञान मध्य परवीन ॥
सुद्ध स्वरूप जु ज्ञान जो सांत रस हि मधि होय । पूर्ण ईस प्रभु ज्ञान जो अधिक दास्य मधि होय ॥
ईस ज्ञान करि अति प्रचुर संभ्रम गौरव होय । सेवा करि कें कृष्ण सुख देहि निरंतर सोय ॥
गुण जु सांत कौ दास्य मधि है सेवन अधिकाय । याही तें है दास्य रस मधि गुण विवि इहि भाय ॥

ममता गुण जो शान्त को दास हि सेवन जोइ । कृष्ण सख्य रस के जु मधि है ये ऊ गुण दोइ ॥
है सेवा रस दास्य मधि संभ्रम गौरव रूप । सो सेवा रस सख्य मधि है विश्वास स्वरूप ॥
चहै चढ़ावैं अंस पर करे युद्ध सुखरास । हरि सेवें निज सेवन हि करवावैं तिहि पास ॥
है विश्राम प्रधान सखि संभ्रव गौरव हीन । याही तें है सख्य रस मध्य चिन्ह गुण तीन ॥
ममता अधिक जु कृष्णमधि है अपने सम ज्ञान । याही तें रस सख्य के हैं अधीन भगवान ॥
है वत्सल मधि सांत गुण दास हि सेवन जोय । तिही जु सेवन कौ इहाँ नाम सु पालन होय ॥
असंकोच गुणसख्य कौ और अगौरव सार । ममताधिकता हु न करै और खिजन व्योहार ॥
जाने पालक आप कौ पान्य कृष्ण मधि ज्ञान । यामें चारों रसनि के गुण सो अमृत समान ॥
भक्त सहित आपन मगन तिहि अमृतानंद आहि । प्रभुता ज्ञानीगण कहैं गुण जु भक्त वस ताहि ॥
तथाहि—

इतीहक स्वलीलाभिरानंदकुण्डे स्वधोपनिमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।

तदीवेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं पुनः प्रेमवस्त्वां शतावृत्तिं वन्दे ॥

कृष्ण सुनिष्टा मधुर रस सेवा अतिसय आहि । असंकोच सखि लालन सु ममता अधिक सु ताहि ॥
ज्यों गुण आकासादि के पर पर भूतहि जोय । एक दोय त्रय क्रम जु करि भूमि जु पांचौ सोय ॥
समाहार सब भाव कौ इहि विधि मधुरहि होय । याहीतें आस्वाद अति करै जु अचिरज सोय ॥
यहै भक्तिरस कौ कियौ दिग दरसन हम आहि । करौ भावना हृदय मधि करि विस्तारहि याहि ॥

ऐसैं करि सिल्या प्रभु कहैं हम कर्यौ ताकी भावना करत कृष्ण वेगि हिय आय हैं ।

कृष्ण कृपा ऐसी जातैं अज्ञ रस पार पावैं ऐसैं कहि लिये रूप हिय सौं लगाय हैं ॥

प्रात प्रभु चले कासी विनै करि कहाँ इन्हौं चले हम संग निज आप आज्ञा पाय हैं ।

आपकौ बियोग पल एक हूं न सखी जाय जियौ जौलौ पिये मुख माधुरी अघाय हैं ॥

कहैं गौर करनौं तुम्हें वचन हमारौ जोय । जाओ वृंदाविपिन तुम हों समीप ही सोय ॥
वृन्दावन हूँ कैं लु तुम गौड देस मधि जाय । ऐहौं हम सौं मिलन हित लीलाचल मधि धाय ॥
तिनकौं आलिंगन जु करि चढ़े नाव प्रभु सोय । परे तहांई रूप जू धरनि मूरछित होय ॥
दाचिखान्य द्विज निज घरहि लैकैं गयौ जु ताहि । तब दोऊ भाई चले वृंदावन कौं आहि ॥
चले चले श्री गौर प्रभु आये कासी आहि । मिले आय ससिशेखर जु ग्रामहि बाहिर ताहि ॥
तिनहुं सुपन लखौं जु निमि आये प्रभु निज धाम । प्रात समैं हीं आय कैं रखौं बाहिर ग्राम ॥
देखि अचानक गौर कौ पर्यौ चरण मधि धाय । आनंदित हूँ निज घरहि लै आयौ करि भाय ॥
आय प्रभु के मिलन कौ तपन मिश्र सुनि सोय । इष्ट गोप्टी करि कियौ प्रभु कौ न्यौताँ जोय ॥
मीठा कलवाई तपन प्रभु कौ निज घर लाइ । न्यौताँ भट्टाचार्य कौ किय ससि सेखर बाँड ॥
मीठा मिश्र कराइ कैं कहैं लु धरि प्रभु पाय । भीचा मार्गौ एक मुहि देहु कृपा करि भाय ॥

जब लौं तुमरी गौर प्रभु कासी मधि थिति होय । भीचा मेरे गेह विन कहूं न करि हो सोय ॥
पांच सात रहि हैं दिवस जानि गौर हिय माहि । भीचा संग जतीनके कहूं जु करि है नाहि ॥
यहै जानि तिहि वचन कौ कीनौ अंगीकार । ससि सेखर के घर कियौ बसिबे कौ निरधार ॥
महाराष्ट्र द्विज आय कैं प्रभु कौ मिलौं जु आहि । नेह प्रकास्यौ गौरहरि करि कैं कृपा लु ताहि ॥
आये सुनि कैं गौर हरि सिष्ट सिष्ट जन जोय । द्विज छत्री सब आय कैं करै जु दरसन सोय ॥
प्रभु जैसे श्री रूप पर करी कृपा निरधार । लिखी जु यह संक्षेप करि कथा जु अति विस्तार ॥
यह लीला जो जन सुने श्रद्धा करि कैं कोइ । प्रेम भक्ति चैतन्य पद मधि पावैं जन सोइ ॥
रूप सनातन चरण की जाके हिय मधि वास । चरितामृत चैतन्य कौ कहैं कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सौं लिखैं ब्रज भाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे ब्रजभाषायां श्री रूपानुग्रहो नाम उनविंशति परिच्छेदः ॥

विंशति परिच्छेदः

वन्देऽनन्ताद्भुतैरवर्त्य श्रीचैतन्यमहाप्रभुं । नीचोऽपि यत्प्रसादात्स्यान् भक्तिशास्त्रप्रवर्त्तकः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांसु जय प्रभु भक्तति के वृंद ॥

हैं ह्यां श्री सनातन जू राजगृह बंधे तिहीं समैं रूप जू की चीठी पहुँची सु आय कैं ।

देखि कैं प्रसन्न भये गये ता जवन पास जाके हैं अधीनता सौ कही ऐसैं जाय कैं ।

तुम्हें निज धर्मशास्त्र देखे सबनी की भांति तहां ठौर ठौर लिखी यही समझाय कैं ।

कोऊ जन एक वंदी धन दै छुटावैं ताहि करै हैं गुसैया मुक्ति भवतें छुटाय कैं ॥

जब है समर्थ हम कीनें उपकार तुम छोड़ि हमें दीजें यहै अति उपकार है ।

मुद्रा ये सहस्र पांच लीजें पुन्य लाभ दोनौ कीजें सुनि कैं जवन बोल्यौ यौ विचार है ।

सुनौं महासय तुम्हें छोड़ें ऐपैं राजभय नातौ छोड़ि देते याही छिन निरधार हैं ।

इन्हौं कही भय जिन करौ गयौ दक्षिण कौं उलटि जाँ ऐहैं ताहि कहियौ सुधार है ॥

देह कृत्य हेत वह गंगा नीर गयौ हतौ वृद्धौ तहां दृढौ जल तऊ नहि पायौ है ।

भय जिन करौ इहाँ देस में न रहौं बेस दरवेस मकाहजु जाइवो सुहायौ है ।

तऊ न प्रसन्न देख्यौ मुद्रालै सहस्र सात आगे धरी बाके तब देखि लोभ आयौ है ।

बेरी पग काटि गंगा पार करि दिये निमि राजपथ छोड़ि चले भयौ मन भायौ है ॥

रैन दिन चले चले आये ए पतोडा गिरि रहै एक भूमिपाल तासौं कही जाय कैं ।

हुतौ सौनी वाकें तिन कान लागि कही इह पास स्वर्ण मुद्रा आठ ऐसैं समझाय कैं ।

पर्वत के पार करि देहु सुनि बोल्यौ वह करि सनमान हिये अति सुख पाय कै ।
 रहा आजु सीधौ लेहु राति तुम्हें पार करौ देहौ तुम संग लोक अपने उठाय कै ॥
 ऐसैं कहि अन्न दियौ बहु सनमान कीयौ नदी न्हाय आय पाक कीनौ जु सुधार है ।
 हुते ब्रती दो दिना के भोजन कौ बैठे जव एतो राज मंत्री तातैं कीनौ यों विचार हैं ।
 अति सनमान इन काहे कौ हमारौ कीयौ पूछी तव सेवक सौं करि निरधार हैं ।
 तोपै कछु है गौ धन ऐसैं सुनि बोल्यौ वह अचिरज तव भयौ भय हूं अपार हैं ॥
 मुद्रा सात पास कही लई तव जानि इन्हौ बोल्ये खिजि वासौं यह काल संग जानिये ।
 सातौ हाथ बीच लै कै गये वाके पास तव आगें धरी बोले सुनि विनती सु मानिये ।
 राजवंदी वाम तातैं सुधे मग जाहि कैसैं बडौ धर्म है है गिरि पार करौ छानिये ।
 मुहरें हमारे पास सात निन्हौ लेहु धर्म देखि हमें पार करौ यहै जिय आनिये ॥
 सुनि वह हस्यौ मैं तौ पहिलैं ही जानी हुती मुद्रा आठ बंधी तुव सेवक के पास है ।
 लेते तुम्हें मारि राति भली भई कही तुम पाप तें मैं छुट्यौ भयौ हिय में हुलास है ।
 लेहु नहीं द्रव्य पुन्य हेत पार करौ सुनि तव इन्हौ कीयौ जानि वचन प्रकास है ।
 जीव दान दै कै धन करौ अंगीकार तुम नही लैहै और कोऊ हमें करि नास है ॥
 तव उन भूमिपाल चारिजन संग दै कै वनपथ है कै करि दिये गिरि पार हैं ।
 पार भये पाछे इन्हौ पूछी उनि सेवक सौं कछु धन सेस तुव पास निरधार हैं ।
 कही उन एक मुद्रा रही तव कहै इन्हौ लै कै वाही देस जावौ मेरौ यों विचार है ।
 ऐसैं कहि विदा कीनौ चले इकलेई या में वृन्दावन जायवे कौ सिख्यौ प्रकार है ॥
 करवा लै हाथ एक फट्यौ वास निर्भय है चले चले हाजीपुर श्री गुसाईं आये हैं ।
 इन कौ वहिनोई तहां रहैं श्री कांत नाम करै राज काज तिन घोरा मगवाये हैं ।
 बैठौ सो अटा के पर जात हैं उद्यान बीच देखे श्री गुसाईं तिहिं यह सुख पायै हैं ।
 मन में कियो विचार अचिरज है कै पुनि कौन कारज के हित एसो वेश लयै है ॥

दोहा

आयौ इन के निकट सो निसि कौं इक जन संग । इष्ट जु गोष्ठी मिलि करी दोऊ जन करि रंग ॥
 करि कै बहु सनमान तिहिं पूछी सब जव आहि । छुटिवेकी सब ही कथा कही गुसाईं ताहि ॥

रहौ दिन दोय इहां करौ भद्र वेस नीकें मलिन वसन अंग सौं तो दूरि कीजिये ।
 इन्हौ तव कही एक छिन हूं न रहैं इहां चलै हम अवैं गंगा पार करि दीजिये ।
 तव तिन जलन करि दीनौ भोट एक भेट दीनौ करि पार तव चले रस भीजिये ।
 दथौस में कितेक कासी पहुंचे ये आय तहां सुनी प्रभु आये अब नैन फल लीजिये ॥

तव प्रभु सुने चंद्रसेखर के गेह बैठे तहां श्री सनातन जू बैठे द्वार आय कै ।
 जानि प्रभु गये तव चंद्रसेखर सौं बोले द्वारें भक्त बैठ्यौ ताहि लीजिये बुलाइ कै ।
 आये दौरि द्वार तहां भक्त कोऊ देख्यौ नाहि कही चंद्रसेखर जू प्रभु कौ सुनाइ कै ।
 कही प्रभु कोऊ बैठ्यौ कही दरवेस एक बोले प्रभु ताहि लावौ वेगि तुम भाइ कै ॥
 तिन्हौं तव कही जाय तुमकौं बुलावै प्रभु सुनि उठि चले बढ्यौ आनंद अपार है ।
 दूर ही तें इन्हें देखि आगें दौरि आये प्रभु हीये सौं लगायें रही नेकुन सम्हार है ।
 प्रभु के परस एऊ प्रेम बूढ़े कंठ सुर भंग अंग कंप नैन वहै नीर धार है ।
 बोले श्रीसनातन जू अंग मेरौ छियौ जिनि अति ही अशुचि याकौं नाहि अधिकार है ॥
 कण्ठ सौं लगाय कंठ मिले दोऊ रंग लैकें देखि चंद्रसेखर चकित अति भये हैं ।
 इनकौ पकर हाथ भीतर लै गये प्रभु बैठे निज पास लैकें हियें सुख छये हैं ।
 श्रीकर कमल करि अंग तिहिं पौछें जव छियौ जि न कहै ये जु दीनता सू नये हैं ।
 यातें हम मिलें तुम्हें हम हूं पवित्र हों हि कद्यौ प्रभु ऐसैं एतौ लाज दवि गये हैं ॥

तुम हौ जातें अति परम कृष्णभक्त बलवान । सब ब्रह्माण्ड पवित्र करि सकौ यहै जु प्रमान ॥

तथाहि—तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृतेति ॥२॥

तथाहि—

नमे भक्तश्रुतुर्वेदी मद्भक्तः स्वपच प्रियः । तस्मै देयं ततो ग्राह्यं सच पूज्यो यथाह्वयम् ॥३॥

तथाहि—

विप्राद्विषडगुणयुतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखान् स्वपचं वरिष्ठं इति ॥४॥

तुम्हें परिसियै देखियै करियै तुव गुणगान । सब इन्द्रिय कौ फल यहै कद्यौ शास्त्र परिमान ॥

तथाहि हरिभक्ति सुभोदये—

अदणोः फलं त्वाष्टशदर्शनं हि तन्वाः फलं त्वाष्टशशास्त्रसंगः ।

जिह्वाफलं त्वाष्टशकीर्त्तनं हि सुदुर्लभा भागवता हि लोके ॥ इति ॥५॥

इतनौ कहि प्रभु कहैं फिरि सुनौ सनातन जोय । बड़े कृपामय कृष्ण हैं पतित सु पावन सोय ॥
 जिन्हौं महा रौरव जु तें किय तुमरौ उद्धार । कृष्ण कृपा के उदधि हैं अति गंभीर अपार ॥
 कहै सनातन कृष्ण हम नहि जानत हैं आहि । मानें कारण तुव कृपा हमें उद्धार्यौ जाहि ॥
 कैसैं तुम छूटो जु कहु प्रभु जू पूछ्यो जोय । और छोरते सब कथा तिन्हौ सुनाई सोय ॥
 तपन मिश्र बड महाशय अरु शसि सेखर जोय । मिले सनातन दुहुन कौ प्रभु निश्चै मन सोय ॥
 तपन मिश्र जू ता समें कियौ निमन्त्रन सोइ । जाहु सनातन प्रभु कहैं छोर करावो जोइ ॥

चंद्रसेखर हि ता समैं प्रभु जु कछौ बुलाय । दूर करावौ बेस यह जाहु इन्हें लै धाय ॥
भद्र कराय तवैं कियो स्नान सुरधुनी आहि । शसिसेखर जू आनि कैं नयौ वसन दिय ताहि ॥
सो वह बसन सनातन जु कियो न अंगीकार । सुनिकें प्रभु जू कैं हिये भौ आनंद अपार ॥
भीचा हित मध्यान्ह करि गौर कृष्ण अभिराम । लैकें संग सनातनहि गये मिश्र के धाम ॥
चरण धोय बैठे जु प्रभु भीचा हित करि नेह । देहु प्रसाद सनातनहि कछौ मिश्र सौं यह ॥
मिश्र कहैं जु सनातनहि है सु कृत्य कछु आहि । भीचा करौ प्रसाद तुम पाछे देंहैं ताहि ॥

कवित्त

भीचा करि तवैं महाप्रभु जु विश्राम कियो मिश्र प्रभु जू कौ पात्र शेष इन्हें दीयौ है ।
और पाछे मिश्र एक नयौ वस्त्र भेट कियो लियौ नही इन्हों ताहि हाथ हूं न छियौ है ।
बिनै करी मिश्र सौं जु जांपे दियौ चाहौ मोहि अपनौ प्रसादी दीजै सुखी करौ हियौ है ।
दीनी निज धोती मिश्र लैकें श्रीगुसांई तव ताकी कौपीन ओ बहिर्वास जुग कियो है ॥
द्विज महाराष्ट्र सो जु इनकौ मिलायौ प्रभु बोल्यौ श्रीगुसांईजी सौं करि बिनै अति है ।
जौलौ तुम कासी रहौ भोजन हमारें करौ सुनिकें गुसांई बोले रंगी स्याम मति है ।
करि हैं मधुकरी न एक घर भिचा लेंहि हिये है हमारे यहैं और नाहीं रति हैं ।
देखि निरवेद इन आनंद अपार प्रभु भोट और चहैं कहैं हिये रोग हति है ॥
इन्हों तव जानी यह प्रभु मन मान्यौ नहिं लगे करिवे कौं ताको त्याग कौ उपाय है ।
गंगा न्हायवे कौं गये तहां ही विरक्त एक गूदरी कौं धोय तिन दीनी जु सुखाय है ।
तासौं इन कही भाई याहि हमें देहु लेहु भोट सुनि बोल्यौ वह मुख मुसिकाय है ।
हैं कैं वड़े प्रमानीक करौ तुम हांसी कोऊ दैकें अति तुछ बहु मूल्य कैसैं पाइ हैं ॥
इहों कही हास्य नाही तातें हमें देहु तुम ऐसैं कहि लीनी वह भोट ताहि दयौ है ।
मन में प्रसन्न हैंकें आये प्रभु पास तव पूछी भोट कहा भयौ कहां कैसैं गयौ है ।
कही सब इन्हों तव बोले महाप्रभु सुनौ पहिले हमारें हिये यहैं सोच भयौ है ।
इतौ रोग सेस ताहि सहिहैं वैं कृष्ण कैसैं दया करि जिन्हों तुम्हें विषै रोग हयौ है ॥
कोऊ रस वैद्यराज जैसैं रोग नास करै रहैं ताकौ लेस सेस ताकी ताकौं लाज है ।
भोट बहु मूल्य ओदि मार्गे जो मधुकरी कौं हसैं लोक धर्म नास होय यौ अकाज है ।
ये जु कहैं जिनौ विषै भोग रोग दूर कियो तिनही की इच्छा सौं जु गयौ सेस आज है ।
सुनि के प्रसन्न भये कृपा करि सक्ति दीनी कीनी प्रश्न जातें भयौ जीवन कौ काज है ॥
जैसैं पहिले राय सौं करी प्रश्न प्रभु आहि । रामानंद उतर दियौ तिन्हें शक्ति करि ताहि ॥

प्रश्न जु यौं प्रभु शक्ति करि करैं सनातन जोय । आपुन श्री प्रभु जू करैं तत्व निरूपन सोय ॥
तथाहि—

कृष्णस्वरूपमाधुर्यैश्वर्यमभक्तिरसाश्रयम् । तत्त्वं सनातनायेशः कृपयोपदिदेश सः ॥६॥

प्रभु जू के चरणनि परे तवैं सनातन धाय । करैं वीनती दैन्य करि लै तृण दंत उठाय ॥
नीच जाति संगी जु हिय तिन अधम हौं जोय । विषयकूप गिरि आजु लौं जन्म गँवायो सोय ॥
अपनौ हित औ अहित कछु नहि जानत हौं आहि । पण्डित जग व्यवहार मधि सांचौ मान्यौ ताहि ॥
जौ मेरौ तुम कृपा करि कीनौ है उद्धार । आप कृपा करि तौ कही मम कर्तव्य विचार ॥
कौन जु हम क्यौं हमें त्रय ताप जरावैं जोय । यह नांही जानौं हम कहा कियें हित होय ॥
साध्य जु साधन तत्व जो पूछि न जानौं ताहि । सबै तत्व आपुन कही करि कैं कृपा जु आहि ॥
कहैं जु प्रभु है हरि कृपा तुम पै पूरण जोय । सबै तत्व जानौं जु तुम नहि न ताप त्रय सोय ॥
कृष्ण शक्ति धरि कैं जु तुम जानौ तत्व जु भाव । जानें पूछैं दाख्य हित यह साधु जु सुभाव ॥

तथाहि—

सद्धर्मस्याधिरोधाय येषां निर्व्वन्धिनी मतिः । अचिरादेव सर्व्वार्थः सिध्यत्येषामभीप्सितः ॥७॥

जोग्यपात्र हौं तुम वड़े भक्ति प्रचारण काज । कहैं जु तुम सौं सुनौ सब क्रम करि तत्व समाज ॥
है स्वरूप यह जीव कौ सदा कृष्ण कौ दास । शक्ति तटस्था कृष्ण की भेदाभेद प्रकास ॥
तपन किरन कन ज्यौं अगनि ज्वाला माला जोय । स्वाभाविक प्रभु शक्ति जो शक्ति त्रय यह होय ॥

तथाहि विष्णुपुराणे—

एकदेशस्थितस्याग्ने ज्योत्स्ना विस्तारिणी यथा । परस्य ब्रह्मणः शक्तिस्तथेदमखिलं जगत् ॥८॥

तथाहि तत्रैव—

शक्तयः सर्व्वभावानामचिन्त्यज्ञानगोचराः ।

यतोऽतोब्रह्मणस्तास्तु सर्गाद्याभावशक्तयः । भवन्ति तपतां श्रेष्ठ पावकस्य यथोष्णता ॥९॥

तीन शक्ति परिणति जु ये स्वाभाविक प्रभु ताहि । चिच्छक्ति जु मायाशक्ति जीवशक्ति पुनि आहि ॥

तथाहि तत्रैव—

विष्णुशक्ति परा प्रोक्तेति श्लोकः ॥१०॥

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो यथेदं धार्यते जगत् ॥११॥

तदुक्तं—

यथाक्षेत्रज्ञशक्ति सा वेष्टिता नृप सर्व्वगा । संसारतापानखिलानवाप्नोत्यत्र सन्ततान् ।

तथा तिरोहितत्वाच्च शक्तिः क्षेत्रज्ञसंज्ञिता । सर्व्वभूतेषु भूपाल तारतम्येन वर्त्तते ॥१२॥

जीव अनादि बहिर्मुख जु कृष्ण भूलि सो जोय । याही तें माया जु तिहि दे भव कौ दुख सोय ॥
कभू चढ़ावैं स्वर्ग पुनि वोरैं नर्क मभार । दंड्य जन हि जैसैं नृपति डुबवैं नदी हि धार ॥

एकादशे—

भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादीशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः ।
तन्माययातो बुध आभजेत्तं भक्त्यैक्येशं गुरुदेवतात्मा ॥१३॥

शास्त्र साधु की कृपा करि जब हरि सनमुख होय । वहै जीव निस्तरे तिहि छोड़े माया सोय ॥
गीतायां च—

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरिन्त ते ॥१४॥

माया जड जीव हि नहीं आपु हि तें प्रभु ज्ञान । कीयें जीव पर कृपा करि कृष्ण जु वेद पुराण ॥
शास्त्र गुरु आत्मा रूप आप ही जनावैं कृष्ण त्राता प्रभु मेरे ज्ञान होय जीव के यहैं ।
वेद और शास्त्र सब संबंध औ अभिधेय पुनि औ प्रयोजन जो इन्हीं तीन की कहैं ।
संबंध प्राप्य कृष्ण औ पायवेकों द्वार भक्ति नाम अभिधेय प्रेम है प्रयोजन वहैं ।
सर्व पुरुषार्थ जिते तिन कौ सिरोमणि है प्रेम धन महा जीव कृष्ण की कृपा लहैं ॥

सेवानंद की प्राप्ति कौ हरि माधुर्य्य उपाय । करै कृष्ण वस कृष्ण रस आस्वादन अधिकाय ॥
याकौ है दृष्टांत ज्यौ गेह रंग के आहि । सर्वज्ञाता आय लखि दुखी जु पूछें ताहि ॥
तू काहे तें दुखित है धन घर मधि तुव तात । जीव तज्यौ तिहि औरठां कही न तोसौं वात ॥
कहैं वचन सर्वज्ञ कौ तिहि धन को उद्देश । जीव हि वेद पुराण यौ करै कृष्ण उपदेस ॥
सर्वज्ञाता वचन कौ मूल द्रव्य अनुबंध । सर्वशास्त्र उपदेस कौ श्री कृष्ण जु संबंध ॥
है धन पितु कौ जानि हौं नहि पावै धन चाय । तव सर्वज्ञ है जु तिहि पैवै को सु उपाय ॥
इही ठिकाने धन जु है खोदि है दक्षिण सोय । भ्रमराली उठि हैं तहां नहि धन पै है सोय ॥
पछिस खोदेगो तहां एक यच्छ है सोय । धन जु हाथ नहि परैगौ विधन करैगौ जोय ॥
उत्तर खोदेगौ जु है कारो अजगर जोय । धन नहि पैहैं खोदतें सब कौं डसि है सोय ॥
तिहि पूरव दिसि अलप लहैं माटी खोदत वार । धन की सब थैली जु तुव कर परि है निरधार ॥
कहैं शास्त्र यौ कर्म औ ज्ञान जोग तजि आहि । होय कृष्ण वस प्रेम करि भजौ भक्ति करि ताहि ॥
तथाहि श्री भागवते—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव । न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥१५॥
गीतायां—

भक्त्याहमेकया प्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम् ॥१६॥

याही तें हरि प्राप्ति कौ भक्ति उपाय जु आहि । वेद शास्त्र गावे सबै कहि अभिधेय जु ताहि ॥
धन पायें सुख भोग फल पावत हैं जिहि भाय । फल सुख भोग भये सहज दुःख आप भजि जाय ॥
तैसें फल है भक्ति कौ हरि मधि प्रेम प्रकास । कृष्णास्वाद जु प्रेम करि भये होय भवनास ॥
फल नाहिन धन प्रेम के दारिद छय भवनास । भोग प्रेम सुख मुख्य यै है सु प्रयोजन तास ॥
वेद शास्त्र सम्बन्ध अभिधेय प्रयोजन कीन । कृष्ण कृष्ण की भक्ति औ प्रेम महाधन तीन ॥

२० श परिः]

मध्यलीला

१७९

शैवादिक सब शास्त्र कौ कृष्ण मुख्य सम्बंध । तिहि ज्ञान हि अनुसंग करि जाय जु मायाबंध ॥
तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

व्यामोहाय चराचरस्य जगतस्ते ते पुराणागमा स्तां तामेव हि देवतां परमिकां जल्पन्तु कल्पावधि ।
सिद्धान्ते पुनरेक एव भगवान् विष्णुः समस्तागम व्यापारेषु विवेचनव्यतिकरं नीतेषु निर्धीयते ॥१७॥

गौण मुख्य विविधुक्ति करि कै अन्वय व्यतिरेक । यहै प्रतिज्ञा वेद के कहैं कृष्ण कौ एक ॥
तथाहि श्री भागवते—

किं विधत्ते किमाचष्टे किमनूय विकल्पयेत् । इत्यस्या हृदयं लोके नान्यो मद्देव कश्चन ॥ १८ ॥

तथाहि तत्रैव—

मां विधत्तेऽभिधत्ते मां विकल्प्यापोहते ह्यहम् ॥१९॥

हरि जु स्वरूप अनंत अति है वैभव जु अपार । चिच्छक्ति जु माया शक्ति जीव शक्ति विस्तार ॥
परमव्योम ब्रह्माण्डगण शक्ति काजहै सोय । निज शक्तिहि तिहि कार्यके हरि सब आश्रय जोय ॥
तथाहि—

दशमे दशमं लक्ष्यमाश्रिताश्रयविग्रहम् । क्रीडद् यदुकुलाम्भोधौ परानन्दमुदीर्यते ॥ २० ॥

सुनो सनातन कृष्ण कौ अब जु स्वरूप विचार । अद्वय ज्ञान जु तत्व सो श्री ब्रजराज कुमार ॥
सर्व आदि अंसी जु ह्यं वहै किशोर शिरमौर । चिदानंद वपु आश्रय सब के ईश्वर मौर ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः । अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥२१॥

कृष्ण स्वयं भगवान् को गोविंद दूजौ नाम । सर्व ईश्वरता पूर्ण जिहि गोलोक जु निज धाम ॥
तथाहि श्री भागवते—

एते चांश कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयं । इन्द्राख्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे ॥२२॥

ज्ञान जोग हरि भक्ति औ त्रय साधन वस आहि । ब्रह्म आत्मा ईश्वर जु त्रिविध प्रकास जु ताहि ॥
तथाहि श्रीभागवते—

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज् ज्ञानमद्वयम् । ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्दयते ॥२३॥

ब्रह्म कांति तिहि अंग की निराकार परकास । चर्म चक्षु कौ भानु कौ ज्यौ ज्योतिर्मय भास ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि कोटिष्वेकेष्वितिश्लोकः ॥२४॥

परमात्मा जोऊ वहू एक कृष्ण कौ अंस । आत्मा के आत्मा जु है कृष्ण सर्व अवतंस ॥
तथाहि श्री भागवते—

कृष्णमेतमवैहि त्वमात्मानमखिलात्मनां ॥२५॥

तथाहि गीतायां—

विष्टव्याहमिदं कृत्स्नमेकांशाने स्थितो जगत् ॥२६॥

भक्ति जु करि भगवान् कौ अनुभव पूरण रूप । एक हि विग्रह कृष्ण के है जु अनंत स्वरूप ॥

स्वयं रूप तदेकात्म रूप औ आवेस नाम प्रथमहीं तीन रूप रहे भगवान हैं ।
स्वयं रूप की स्वयं प्रकास दोय रूप थिति स्वयं रूप एक कृष्ण गोपवेश वान हैं ।
प्राभव वैभव रूप द्विविध प्रकास आहि लक्षण सुनौ जु अब कहियै बखान हैं ।
एक वपु बहु रूप रास मधि भये जैसे महिषी विवाह मधि भये जु प्रमान हैं ॥

सबै शास्त्र परि सिद्ध यह कीनौ लक्षण तास । दुहुँ ठौर श्री कृष्ण कौ हैं प्रभाव जु प्रकास ॥
सौम्यार्थिक लौ नहीं कायव्यूह जू सोय । कायव्यूह भये नहीं नारद विषमय होय ॥
तथाहि श्री भागवते—

चित्रं वर्ततेतदेकेन वपुषा युगायत् पृथक् । गृहेषु द्व्यष्टसाहस्रं स्त्रिय एक उदावहन् ॥२७॥

सोई वपु वह आकृतहि ज्यों न्यारौ तिहिं भास । भाव वेस करि भेद तिहि वैभव नाम प्रकास ॥
कृष्ण प्रकास अनंत तिहि नाहिन मूरति भेद । आकृति वर्ण जु अस्त्र के भेदहि नाम विभेद ॥

तथाहि तत्रैव—बहु मूर्त्यैक मूर्त्तिकमिति ॥२८॥

हैं वैभव जु प्रकास ज्यों हरि कौ श्री बलराम । वर्ण मात्र ही भेद सब कृष्णहि सम अभिराम ॥
हैं वैभव जु प्रकास ज्यों तनय देवकी जोय । कवहुँ द्विभुज स्वरूप सो कवहुँ चतुर्भुज होय ॥
जिहि समैं हैं द्विभुज सो वैभव नाम प्रकास । होय चतुर्भुज तिहि समैं प्राभव नाम विलास ॥
स्वयं रूप के गोप कौ वेश गोप अभिमान । वासुदेव के वेश हैं क्षत्रिय हौं यह ज्ञान ॥
सुन्दरता माधुर्य प्रभुता बँदग्ध्य विलास । श्री ब्रजराज कुमार मधि इन कौ अधिक प्रकास ॥
जिहि माधुरि लाख होत हिय वासुदेव केँ चोम । निज माधुरि के स्वाद हित हियमें उपजत लोभ ॥
जैसे चारन नृत्य लखि मथुरा के मधि सोय । द्वारावति मधि फेरि ज्यों चित्र विलोकन जोय ॥
तथाहि—

उद्गोष्ठाद्भुत माधुरीपरिमलस्याभीरलीलस्य मे, द्वैतं हन्त समक्षयन्मुहुरसौ चित्रीयते चारणः ।

चेतः केलिकृतलोचनलितं मयं सखे मामकं, यस्य प्रेक्ष्य सरूपतां ब्रजवधूसारूपमन्विच्छति ॥२९॥

अपारि कलिपर्व इत्यादि ॥३०॥

भासे आकृति कलु पृथक् बहै जु वपु अभिराम । भेद भाव वेशाकृति हि तदेकात्म तिहि नाम ॥
तदेकात्म रूप हि जु द्वै भेद स्वांस जु विलास । स्वांस विलासहि भेद करि विविध भेद परकास ॥
प्राभव वैभव भेदकरि दोय प्रकास विलास । भेद विलास विलास के हैं अनंत विधि तास ॥
वासुदेव संकर्षण जु हैं प्राभव जु विलास । प्रद्युम्न अनिरुद्ध औ मुख्य चारि जन तास ॥
गोप भाव ब्रज राजकेँ पुर मधि क्षत्रिय भान । वर्ण वेस कौ भेदयत तिहि विलास अभिधान ॥
हैं प्राभव जु प्रकास मधि अरु प्राभव जु विलास । एक मूर्ति बलदेव जू भाव भेद कौ भास ॥

चतुर्व्यूह सब आदि ये इन सब नाही कोइ । चतुर्व्यूह गण अभित के प्रागटि कारण सोइ ॥
येई चारौ कृष्ण के हैं प्राभव जु विलास । द्वारावति मथुरापुरी इन कौ सदा निवास ॥
इनहीं चारौ ते चतुर बीस मूर्ति परकास । अस्त्र नाम के भेद करि हैं प्राभव जु विलास ॥
चतुर्व्यूह कौ लोय फिरि कृष्ण जु पूर्ण स्वरूप । मधि वैकुण्ठ विराजई श्री नारायण रूप ॥
तिनि हीतें फिरि चारि औ चतुर्व्यूह परकास । हैं आवारण जु रूप करि चारौ दिसि जिहि वास ॥
तीन तीन मूरति पृथक् पुनि चारौ जन हैं जु । केशव आदि विलास की मूरति जिन ही तें जु ॥
कवित्त

चक्रादिक धारण के भेद करि न्यारे न्यारे न्यारे न्यारे नाम भेद होय अति वाम हैं ।
वासुदेव जू की मूर्ति केशव औ नारायण माधव जू येई तीनों जानौ अभिराम हैं ।
मूरति संकर्षण की गोविन्दजु और विष्णु पुनि श्री मधुसूदन सब गुण धाम हैं ।
कहैं ये गोविन्द औ नहीं हैं ब्रजेन्द्र सुत करौ जिनिसंका जिय सुनि तिहि नाम हैं ॥

प्रथम त्रिविक्रम वामन जु पुनि श्री धर जू सोय । ये हैं श्री प्रद्युम्न की तीनों मूरति जोय ॥
पद्मनाभ दामोदरजु हृषीकेश भगवान । मूरति श्री अनिरुद्ध की एई तीनों जान ॥
देवत वारह मास के ये द्वादस जन जोय । केशव नारायण अधिप मगसिर पूस हि सोय ॥
माध और फागुण जु में माधव गोविन्द देव । मधुमाधव में विष्णु औ श्री मधुसूदन सेव ॥
देव त्रिविक्रम वामन जु ज्येष्ठ असाढ़ हि दोय । श्री धर और हृषीक पति सावन भादों सोय ॥
पद्मनाभ दामोदर जु आश्विन कार्तिक मान । राधा दामोदर जु सो हैं ब्रज पति सुत आन ॥
मंत्र जु द्वादस तिलक के एई द्वादस नाम । समैं आचमन परसिये इन नामन तें धाम ॥
इन चारन जु विलास औ मूर्ति अष्ट जन सोय । कहैं नाम तिन सवनि के सुनौ सनातन जोय ॥
पुरुषोत्तम अच्युत नृहरि और जनार्दन जान । श्री हरि कृष्ण अधोक्षज उपेंद्र अष्ट जन मान ॥
वासुदेव जू के जुहैं ए दोऊ जु विलास । प्रथम अधोक्षज और पुनि पुरुषोत्तम सुखरास ॥
संकर्षण जू के जु हैं ए विलास जन दोय । श्री अच्युत जू और पुनि हैं उपेन्द्र जू सोय ॥
हैं विलास पद्युम्न के येई द्वै जन सोय । श्री नृसिंह जू दयामय और जनार्दन जोय ॥
हैं विलास अनिरुद्ध के श्री हरि कृष्ण जु दोय । आठ विलास कहे जु ये चतुर्व्यूह के जोय ॥
ये चौबीसौ मूर्ति मुख हैं प्राभव जु विलास । अस्त्र हि धारण भेद करि नाम प्रथक हैं तास ॥
इनहीं के मधि होय जिहि आकृति वेसहि भेद । हैं वैभव जु विलास कौ बहै बहै जु विभेद ॥
पद्मनाभ त्रिविक्रम जु नरहरि वामन जोय । हैं आकार विलक्षण जु हरि कृष्णादिक सोय ॥
प्राभव विलास जु कृष्ण कौ वासुदेव जन चार । इन चारौ जु विलास की गणना बीस प्रकार ॥
इन सब के न्यारे परम व्योम धाम मधि वास । पूर्वादिक आठौं दिसिनि तीन तीन क्रम तास ॥
परव्योम मधि जदपि हैं सब कौ नित्य जु धाम । तऊ किहू ब्रह्मांड मधि किहू धाम अभिराम ॥

परव्योम मधि नित्य है थिति लछमी पति जोय । परव्योम ऊपर विभौ कृष्ण लोक की सोय ॥
एक कृष्ण कौ लो कहै त्रिविध भांति अभिराम । सुरभिलोक मथुरा जु पुनि द्वारावति ये नाम ॥
मथुरा मधि केशव जु की नित्य थिति अभिराम । लीलाचल पुरुषोत्तम जु जगन्नाथ तिहि नाम ॥

तीरथ प्रयाग मधि माधव कौ वास और श्री मन्दार बीच मधुसूदन निवास हैं ।

आनन्दारण्य मांहि श्री वासुदेव आपु राजै पद्मनाभ जनार्दन जन सुख रास हैं ।

विष्णुकांची विष्णु हरि रहै मायापुरी ऐसैं और नाना मूर्ति अज अंड मधिवास है ।

ऐसैं ही ब्रह्मांड मधि सब के प्रकास सप्त दीय नव खंड बीच करत विलास है ॥

सब ठाही जु प्रकास तें सब भक्तनि सुख हेत । जगत अधर्म हि नास हित थपि वै धर्महि सेत ॥
अवतारनि हैं मधिगननि इनमें कहूं जु होय । विष्णु त्रिविक्रम श्री नृसिंह अरु ज्यों वामन सोय ॥
कारण नामहि भेद कौ भेद अस्त्र धृति सोइ । चक्रादिक धृत भेद जो सुनो सनातन सोइ ॥
दक्षिण करतल तें जु लै वास अधो परजंत । चक्रादिक के धरन की गणना कौ है अंत ॥
श्री सिद्धान्त जु संहिता आरस ग्रंथ प्रमान । चतुर्विंश मूर्ति गणन जिहि मधि करौ बखान ॥
कहियतु है ताही जु मत आगे करि जु विचार । चक्रादिक जे अस्त्र तिन धरिबे कौ जु प्रकार ॥
धरै गदाधर अरि पदम वासुदेव जू सोय । गदा संख राजीव अरि संकर्षण कर जोय ॥
अरि दर कौमोदकि पदम धर प्रद्युम्न बखानि । चक्र गदाधर पद्मकर श्री निरुद्ध हि जानि ॥
वासुदेव जू आदि सब निज निज अस्त्रहि धारि । परव्योम में रहतु है यह तुम लेहु विचारि ॥
पद्म संख अरि गदा पुनि श्री केशव के पाणि । श्री नारायण दर पदम गदा चक्र धर जानि ॥
गदा चक्र दर सरसिरुह श्री माधव के हस्त । अरि कौमोदकि पदम दर धर गोविंद प्रसस्त ॥
गदा पद्म दर चक्रकर विष्णु मूर्ति निरधार । मधुसूदन अरि दर पदम गदा धरै सुख सार ॥
पदम गदा अरि दर करनि धरै त्रिविक्रम जानि । दर अरि गदासु पद्म धर श्रीवामनजू मानि ॥
पद्म चक्र कौमोदकी दर कर श्री धर नाम । धरै गदा अरि पदम दर हृषीकेश अभिराम ॥
पद्मनाभ दर पदम अरि गदा हस्त हैं जोय । धरै पदम दर गदा अरि श्री दामोदर सोय ॥
पुरुषोत्तम अरि पद्म दर गदाहस्त धर जानि । अच्युत कौमोदकी पदम अरि दर धारें मानि ॥
पुनर्नृसिंह अरि तामरस कौमोदकि दर पानि । धरै जनार्दन पद्म अरि दर कौमोदकि जानि ॥
श्रीहरि दर तामरस कौमोदकि कर जोय । धारें हैं श्रीकृष्ण दर गदा पद्म अरि सोय ॥
धरै अधोक्षज कर पदम गदा संख अरि जोय । श्री उपेद्रु दर गदा अरि पद्म हस्त धर सोय ॥
पंचरात्रि हयशीर्ष जन षोडस कहै जु सोय । धारण अब चक्रादि कौ तिहि मत कहिये सोय ॥
केशव भेद सुकमल दर गदा चक्र कर जोय । माधव भेद जु अरि गदा संख पद्म धर सोय ॥
नारायण के भेद बहु भेद अस्त्र करि तेजु । इत्यादिक बहु भेद मधि सबै अस्त्र धर एजु ॥
श्री लीला पुरुषोत्तम जु और स्वयं भगवान । ए विव नाम धरें जु इक ब्रजपतिनंदन जान ॥

कियौ प्रकास विलास कौ यहै जु विवरण आहि । अब भेद जो स्वांस कौ सुनौ सनातन ताहि ॥
संकर्षण मत्स्यादिक जु और भेद ए दोय । जैसैं प्रभु जू करत हैं कहैं तिन्हैं अब जोय ॥
श्री संकर्षण आप हीं हैं जु पुरुष अवतार । मत्स्यादिक भगवान के हैं लीला अवतार ॥
अवतार जु श्री कृष्ण के हैं षडविध जु प्रकार । एक पुरुष अवतार पुनि इक लीला अवतार ॥
एक जु गुण अवतार अरु मन्वंतर अवतार । जुग अवतार जु एक अरु शक्त्यावेस विचार ॥
वाल्मी और पौगण्ड जे विग्रह धर्म विचार । इन रूपनि लीला करें श्रीब्रजराज कुमार ॥
है अनंत अवतार प्रभु नाहिन गनना आहि । साखा चंद्र जु न्याय करि किय दिगदरसन ताहि ॥
तथाहि श्रीभागवते—

अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्त्वनिधे द्विजाः । यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रराः ॥३१॥

पहिलैं हीं श्रीकृष्ण जू करें पुरुष अवतार । वहै पुरुष पुनि जानियैं है गो त्रिविध प्रकार ॥

तथाहि सात्वततन्त्रे—विष्णोस्तु त्रीणि रूपाणि पुरुषाख्यान्यथो विदुः ।

एकन्तु महतः स्रष्टुं द्वितीयं त्वण्डसंस्थितं ।

तृतीयं सबभूतस्थं तानि ज्ञात्वा विमुच्यते ॥३२॥

प्रभुकी शक्ति अनंत मधि तीन शक्ति सु प्रधान । इच्छा शक्ति जु ज्ञान पुनि क्रियाशक्ति इक जाना ॥

प्रभुकी अनंतशक्ति मध्य तीन शक्ति मुख्य ईच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति नाम हैं ।

इच्छा शक्ति मुख्य कृष्ण इच्छाही सौं सर्व करें ज्ञानशक्ति मुख्य वासुदेव चित्र धाम हैं ।

इच्छा ज्ञानक्रिया विना होय न सृजन तातें तीननिकी तीनशक्ति मिले सृष्टि काम हैं ।

क्रियाशक्ति है प्रधान संकर्षण बलराम प्राकृत औ आप्रकृत सृष्टि रचै भाम हैं ॥

अहंकार के अधिप वे कृष्ण सु इच्छा लोक । चिच्छक्ति द्वारा सृजे वैकुण्ठ जु गोलोक ॥
यद्यपि नित्य असृज्य तें हैं चिच्छक्ति विलास । संकर्षण इच्छा जु करि तिनकौ तदपि प्रकास ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

सहस्रपत्रं कमलं गोकुलाख्यं महत्पदं । तत्कर्णिकारं तद्भाम तदनन्तांशसम्भवम् ॥३३॥

ते माया द्वारा सृजैं गण ब्रह्माण्डनि जोय । जड़ रूपा जो प्रकृति नहिं जगत सु कारण सोय ॥
जड़तें सृष्टि न होय विन प्रभु की शक्ति सु आहि । तातें संकर्षण करें शक्त्याधान जु ताहि ॥
करैं जु प्रभुकी शक्ति करि सृष्टि प्रकृति बहु जोय । अग्निसक्ति करि लोह ज्यों दाहक शक्तिसु होय ॥
तथाहि भागवते—

एतौहि विश्वस्य च बीजयोनी रामो मुकुन्दः पुरुषः प्रधानं ।

अन्वीयभूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशात इमौ पुराणौ ॥३४॥

जेई मूर्ति अवतरें सृष्टि हेतु संसार । तेई प्रभु की मूर्ति सब धरे नाम अवतार ॥

परव्योम माया रहित तिहिं मधि सब को धाम । जग मधि अवतरि कैं धरैं ते अवतार जु नाम ॥
माया के अवलोक हित श्री संकर्षण जोय । प्रथम भये अवतीर्ण श्री पुरुष रूप करि सोय ॥
तथाहि श्रीभागवते -

जगृहे पौरुषं रूपं भगवान्महदादिभिः । सम्भूतं षोडशकलमादौ लोकसिम्बुत्तया ॥३५॥

सयन करैं सोई पुरुष विरजा के मधि जोय । कारणाधिशायी प्रथा जग कारण है सोय ॥
कारणाधि के पार इहि माया कौ नित वास । परव्योम विरजा परें तहां न गति है तास ॥
तथाहि श्रीभागवते -

न यत्र माया किमुता परे हरेरनुव्रता यत्र सुरासुरार्चिताः ॥३६॥

माया और प्रधान ये माया ही की वृत्ति । उपादान जग कौ प्रकृति माया हेतु निमित्त ॥
करैं पुरुष सोई जवैं माया दिस अवधान । करैं प्रकृतिकौं लुभित करि वीरज कौ आधान ॥
स्वांग विशेषाभास इक रूप प्रकृति छुवि ताहि । जीवरूप वीरज तहां करैं समर्पण आहि ॥
तथाहि श्रीभागवते -

दैवान्नुभितधर्मिण्यां स्वस्यां योनौ परः पुमान् । आधत्त वीर्यं सासूत महत्तत्त्वं हिरण्यम् ॥३७॥

महत्तत्त्वं तें तव त्रिविधि अहंकार विस्तार । दैवत इंद्रिय पंच तन्मात्रा भूत प्रचार ॥
सब तत्त्वनि के मिले तें ब्रह्मांडनि गण होय । है अनंत ब्रह्मांड तिहिं गणना केहूं न होय ॥
एई महत्स्रष्टा पुरुष महाविष्णु जिहि नाम । है अनंत ब्रह्माण्ड के रोम कृप तिहि धाम ॥
ज्यों गवाच मधि रेनु उडि आवैं औ फिरि जाय । यों इहि पुरुष निवास संग ब्रह्मांडजु निकसाय ॥
फिरि हूं तिहि निस्वास संग भीतर करैं प्रचार । है अनंत ऐश्वर्य तिहिं सब माया तें पार ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां - यत्कैकनिश्चितकालमथावलम्ब्येतिश्लोकः ॥३८॥

गण ब्रह्माण्ड समस्त के अन्तर्यामी जोय । कारणाधिशायी सब जगत हि स्वामी सोय ॥
इतनी यहै कबौ हम प्रथम पुरुष कौ तत्व । द्वितीय पुरुष कौ जो कछु सुनौ अरैं जु महत्व ॥
स्रज अनन्त ब्रह्माण्ड गण कोटिक पुरुष जु सोय । प्रविशे इकइक मूर्ति करि सो वह मूर्ति होय ॥
करि प्रवेश जो देख ई है केवल अधियार । रहिवेकौ न निवास कछु तिहि तव कियौ विचार ॥
निज अंग स्वेद जु नीर करि भर्यौ अर्द्ध अज अंड । सेसहि सज्या सयन किय ताही नीरप्रचंड ॥
भयौ जु ब्रह्मा कौ जनम नामि कमल तें ताहि । तिहीं पदमनालहि भये चौदह भवन सु आहि ॥
ब्रह्मा विष्णु जू रुद्र जू तिन के गुण अवतार । सृष्टि स्थिति औ प्रलय कौ तीननिकौ अधिकार ॥

एई हैं हिरण्यगर्भ अंतर्ग्यामी गर्भोदक साथी सहस शीर्षादि करि गावैं वेद चार ।
एई जु विवि पुरुष ईश्वर ब्रह्माण्ड के है माया के आधार तऊ रहैं सदा माया पार ।
तृतीय पुरुष विष्णु गुण अवतार तिहि दोऊ अवतारनि में गणना सु निरधार ।
विराट व्यष्टि जीवके तेई अंतर्ग्यामी क्षिरोदकशायी पालन के कर्ता स्वामी ते विचार ॥

यहै पुरुष अवतार कौ गणना कियौ जु आहि । अब लीला अवतार यह सुनौ सनातन ताहि ॥
कहियतु है जु प्रधान ये दिग दर्शन करि सोय । अब लीला अवतार की नाहिन गनना जोय ॥
मत्स्य कूर्म रघुनाथ श्री नरहरि वामन आहि । संख्या वाराहादि की सेव न जानैं ताहि ॥
तथाहि दशमे -

मत्स्याश्वकच्छपत्सिंह वराह हंसः राजन्य विप्र विबुधेषु कृतावतारः ।
त्वं पासि नम्रिभुवनञ्च तथाधुनेश भारं भुवो हर यदुत्तम वन्दनं ते ॥३९॥

इह लीला अवतार कौ कियौ दिगदर्शन जोय । अब प्रभु गुण अवतार ए सुनौ सनातन सोय ॥
ब्रह्मा विष्णु महेस ये तीनों गुण अवतार । करैं त्रिगुण लैंकें जु ये सृष्टादिक व्योहार ॥
भक्ति मिश्र कृत पुण्य जुत जो जीवोत्तम कोय । ताकौ राजस गुणाहि मधि मन जु विभावितहोय ॥
द्वितीय पुरुष द्वारा जु करि तहां सक्ति संचार । व्यष्ट सृष्टि श्री प्रभु करैं ब्रह्मा रूप हि पार ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां -

भास्वान्यथाशमसकलेषु निजेषु तेजः स्वीयं कियन् प्रकटयत्यपि तद्वद्व ।

ब्रह्मा य एव जगदण्डविधानकर्त्ता गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४०॥

किहूं कल्प नहि पाइयें योग्य जीव जो कोय । तव ईश्वर निज अंस करि आपुन ब्रह्मा होय ॥
तथाहि - ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कला कलायाः ॥ इतिश्लोकः ॥४१॥

कृष्ण निजांस कला सु करि तम गुण अंगीकार । प्रलय हेतु माया संगी रुद्र रूप कौ धारि ॥
रुद्र विकारी प्रकृति संग भिन्न अभिन्न रूप । जीव तत्व हूं नाहिने नहि कृष्णांस स्वरूप ॥
ज्यों दधि अम्ल दि जोग करि धारे दधि जु स्वरूप । पयतें और न वस्तु सो हूँ न सकैं पयरूप ॥
तथाहि ब्रह्मसंहितायां -

क्षीरं यथा दधि विकार विशेष योगात् संजायते ननु ततः पृथगस्ति हेतोः ।

यः शम्भूतामपि तथा समुपैति कार्यात् गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४२॥

सिव संगी माया सकति औ तम गुण आवेस । माया तीत जु गुण रहित आप विष्णु परमेस ॥
तथाहि श्रीभागवते -

शिवः शक्तियुतः शश्वत् त्रिलिंगो गुणसंयुतः । वैकारिकस्तैजसश्च तामसरचेत्यहं त्रिधा ॥

पालनार्थ निज रूप करि होय विष्णु अवतार । है दृष्टान्त जु सत्त्व गुण तमगुण माया पार ॥
पूर्ण स्वरूपैश्वर्य करि प्राय कृष्ण सम जोय । अंसी कृष्ण सु अंस सो गावे वेद सु सोय ॥
तथाहि ब्रह्म संहितायां -

दीपाच्छिरेव हि दशान्तरमभ्युपेत्य दीपायते विवृत हेतु समान धर्म्मा ।

यस्तादृगेव हि च विष्णुतया विभाति गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४४॥

आज्ञाकारी अज सिव जु तासु भक्त अवतार । पालनार्थ श्री विष्णु तिहिं है स्वरूप आकार ॥

तथाहि श्री भागवते—

सृजामि तन्निष्करोहं हरो हरति तद्वशः । विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक् ॥४५॥
मन्वन्तर अवतार अव सुनो सनातन जोय । है असंख्य गणना जु तिहि कारण सुनौ जु सोय ॥
ब्रह्मा के एक दिवस मधि मन्वन्तर दस चारि । तिन में ईश्वर करत है चौदह हीं अवतार ॥
ये चौदह एक दिवस मधि मास चार सै बीस । ब्रह्मा के एक दिवस मधि पंच सहस्र चालीस ॥
अज को एक सत वरस लौ है जीवन निरधार । चारि सहस्र लख पंच तहां मन्वन्तर अवतार ॥
है अनंत ब्रह्माण्ड इमि गणना करौ सु ताहि । महाविष्णु के स्वास एक अज कौ जीवन आहि ॥
महा विष्णु को स्वास जो नहि तिन के पर्यन्त । मन्वन्तर अवतार एक गणना कौ लहि अन्त ॥

कवित्त

स्वायंभुव मन्वन्तर यज्ञ भगवान जानि स्वरोचिष माहि धरै प्रभु विष्णु नाम है ।
उत्तम में सत्यसेन तामस में हरिनाम रैवत मनु नाम वैकुण्ठ अभिराम है ।
चाक्षुस में श्री अजित वैवस्वत वामन जू सार्वर्ण्य में सार्वभौम नाम अति वाम है ।
दक्षशावर्ण्य ऋषभ ब्रह्मसावर्ण्य मनु में विश्वक्सेन सोई प्रभु जन सुखधाम है ॥
धर्मसेतु नाम धर्मसावर्ण्य मन्वन्तर में रुद्रसावर्ण्य मनु सुधामा भगवान है ।
योगेश्वर भगवान देव सावर्ण्य में इन्द्र सावर्ण्य मनु में बृहद्भानु अभिधान है ।
चौदह मन्वन्तर ये चौदो अवतार नाम सुनौ सनातन अव जुग प्रभु ध्यान है ।
सत्य त्रेता द्वापर औ कलियुग की गनना सुकल रक्त कृष्ण पीत चारि वर्ण वान है ॥
क्रम करि इनि चारौ जुगनि धरै वर्ण ये चारि । चारिवर्ण धरि करै हरि युग के धर्म प्रचारि ॥
तथाहि श्रीभागवते—

आसन् वर्णा स्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥४६॥
शुक्ल मूर्ति धरि सत युगहि धर्म करावै ध्यान । कर्दम कौ वर दियौ जिहि कृपा जु करि भगवान ॥
अधिकारी सब ज्ञान के करै ध्यान हरि लोय । जज्ञ धर्म त्रेता करै रक्तवर्ण धरि सोय ॥
द्वापर युग कौ धर्म है हरि पादार्चन जोय । कृष्ण वर्ण प्रेरै करै जन कृष्णार्चन सोय ॥
तथाहि श्री भागवते—

द्वापरे भगवान् श्यामः पीतवासा निजायुधः । श्रीवत्सादिभिरंकैश्च लक्षणैरुपलक्षितः ॥४७॥
तथाहि तत्रैव—

नमस्ते वासुदेवाय नमः संकर्षणाय च । प्रद्युम्नायानिरुद्धाय तुभ्यं भगवते नमः ॥४८॥
इहीं मंत्र द्वापर करै कृष्ण समार्चन लोय । कृष्ण नाम संकीरतन कलि कौ धर्म सु सोय ॥
पीत वर्ण धरि कै जु हरि कियौ प्रवर्तन ताहि । प्रेमभक्ति लोकनि दर्ई भक्तगननि लै आहि ॥
श्री ब्रजेन्द्र नंदन करै धर्म प्रवर्तन जोय । नाचै गावै प्रेम बस करै कीरतन लोय ॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्णवर्णं त्विपाकृष्णं सांगोपांगस्त्रपार्षदं । यज्ञैः संकीर्तनप्रायै यजन्ति हि सुमेधसः ॥४९॥
और तीनजुग मध्यजो ध्यानादिक फल होय । कृष्णनाम करि पायहै कलि जुग फल सब सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

कृते यद्धवायते विष्णुं त्रेतायां यजतो मत्स्यैः । द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्वरिकीर्त्तनान् ॥५०॥
विष्णुपुराणे—

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन् ।

यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥५१॥

युग अवतार समूह अव लिखे प्रथम ज्यौ आहि । है असंख्य संख्या कथन नहै गनन है ताहि ॥
चारियुगनि अवतार कौ यह जु विवरण आहि । सुनि जु सनातन पूछई करिकै भंगी ताहि ॥
नृप मंत्री ते बुद्धि करि सुरगुरु की सम जोय । पूछै प्रभु की कृपा करि असंकोच मति होय ॥
जीव खुद्र अति नीच हौं पुनि अति नीचाचार । कैसें करि हौं जानि हौं कलि में कौ अवतार ॥
प्रभु कहि शास्त्र द्वार अवतार जानियै आन । तैसें कलि अवतार हूं सास्त्र वाक्य करि मान ॥
सर्वज्ञाता मुनि वचन सास्त्र वहै परमान । होय जीव हम सवनि कै सास्त्र हि द्वारा ज्ञान ॥
कहै नहीं अवतार यह हम हेंगे अवतार । मुनि ही ये सब जानई करि लखन जु विचार ॥
तथाहि—

यस्यावतारा ज्ञायन्ते शरीरिष्वशरीरिणः । तैस्तैरनुव्यातिशयैर्वीर्यैर्देहिष्वसंगतैः ॥५२॥

इन लक्षण करि वस्तु कौ जाने मुनिगण रूप । आकृति प्रकृति स्वरूप कौ यह लक्षण जु स्वरूप ॥
है तटस्थ लक्षण जु इन अरु लक्षण जु स्वरूप । कारज द्वारा जानिये यह तटस्थहि रूप ॥
श्रीभागवतारंभ मधि मंगल करि मुनि व्यास । इन विवि लक्षण करि कियौ प्रभु कौ रूप प्रकास ॥

तथाहि—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्,
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ।
तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा,
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥५३॥

इहि पद में पर शब्द किय कृष्ण निरूपण आहि । पुनि स्वरूप लक्षण कहाँ सत्य शब्द करि ताहि ॥
कियौ जिन्हौं या शब्द कौ सृष्ट्यादिक त्रय सोय । ब्रह्मा कौ हिय प्रेरि कै वेद पढ़ाये जोय ॥
कही जु अर्थाभिज्ञता जाकी जगत प्रसस्त । और स्वरूप जु शक्ति करि माया करी निरस्त ॥
है तटस्थ लक्षण जु ये सब ही कारज ताहि । ऐसैं अरु अवतार हू जाने मुनिगण आहि ॥
होय समैं अवतार के जगत सु गोचर सोय । इन ही सब लक्षण जु करि प्रभु कौ जानै कोय ॥

कहैं श्री सनातन जू जहां ईस लक्षण ये पीतवर्न कीरतन काज प्रेमदान हैं ।
सोई अवतार कृष्ण निहचें कलिकाल में दृढ़ करि कहौ जाय संसय निदान हैं ।
प्रभु कहैं चतुराई तजौ तुम सनातन सुनौ शक्त्यावेश अवतार भगवान हैं ।
कीजिये जो विवरन शक्त्यावेश अवतार कृष्ण के असंख्य नाही तिन कौ प्रमान हैं ॥
कहैं दिग दरसन करि मुख्य मुख्य जन शक्त्यावेश दीय रूप मुख्य गौण जानियें ।
साक्षात् शक्ति करि जु धरैं अवतार नाम होय जु अभाम केई विभूति ताहि मानियें ।
सनकादिक नारद पृथु औ परसराम जीव रूप अज आवेशावतार ठानियें ।
वैकुण्ठ में सेस धराधर श्री अनंत जेई जन मुख्यावेश अवतार सोई ठानियें ॥

ज्ञान शक्ति सनकादि मधि नारद शक्ति सु भक्ति । अजमें सृजन अनंत मधि भूधारणकी शक्ति ॥
शक्ति स्व सेवन सेस मधि पालन पृथु पृथ्वीस । दुष्टनि नासक वीर्य को संचारण भृगु ईस ॥
तथाहि भागवते—

ज्ञान शक्त्यादि कलया यत्राविष्टो जनार्दनः । तत्रावेशा निगद्यन्ते जीवा एव महत्तमाः ॥५४॥
ज्यों गीता एकादसहि कहौ विभूति जु सोय । कृष्णजु शक्त्याभास करि व्यापिरहौ जगजोय ॥
तथाहि गीतावां—

यद्यद्विभूतिमन् सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा । तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽशसम्भवम् ॥ ५५ ॥
तत्रैव—एकशतं स्थितो जगत् ॥५६॥

ये ई शक्त्यावेश करि कहैं जु प्रभु अवतार । सुनौ वाल्य पौगण्ड इनि धर्मनि कौ जु विचार ॥
धर्मी नित्य किशोर मनि श्री ब्रजराज कुमार । प्रगट सुलीला करन कौ जव मन करें विचार ॥
प्रगट करावै प्रथम जन तात मात गण जोय । जन्मादिक लीला करें पाछें प्रगट सु होय ॥
तथाहि रसामृतसिन्धौ—

वचसो विविधत्वेऽपि सर्वभक्तिरसाश्रयः । धर्मी किशोर एवात्र नित्यलीलाविलासवान् ॥
पुतनादि संहार ये लीला छिन छिन तास । करै अनुक्रम करि सबै लीला नित्य प्रकास ॥
हैं अनन्त ब्रह्माण्ड तिहिं नाहि न गणना जोय । कोऊ लीला कब प्रगट किहिं ब्रह्माण्डहि होय ॥
इहिं विधि सब लीला अखंड ज्यों सुरसरि की धार । ते ते सब लीला प्रगट करें ब्रजेन्द्रकुमार ॥
बाल्य और पौगण्ड पुनि बय किशोरता ताहि । प्राप्ति होय क्रम ही जु करि समें ममें मधि आहि ॥
रामादिक लीला करें नित्य विहारी सोय । नित्यस्थिति तिन की रहै बय किशोर मधि सोय ॥
नित्यमु लीला कृष्णकी कहैं शास्त्र सब आहि । बृम्ह सकै नहि कौन विधि लीला नित्य जु ताहि ॥
कहिये जव दृष्टांत दै तब सब जानें जान । कृष्ण नित्यलीला जु कौ ज्योतिचक्र उपमान ॥
ज्यों रवि ज्योतिचक्र मधि अमें रैन दिन जोय । सप्तदीप अम्बुधिनि लधि क्रम करि फिरै जु सोय ॥

होय रात्रि औ दिवस ये घटी जु साठि प्रमान । तीन सहस पटशत पल जु तिन के माही जान ॥
भानु उदैतें साठि पल क्रम करि उदै जु सोय । एक घरी सोई घरी अष्ट प्रहर इक जोय ॥
एक दीय त्रय चारि मधि प्रहर अस्त रवि होय । चारि प्रहर निमि गये फिरि रविकौ उदी जु सोय ॥
यों प्रभु लीला मंडल जु मन्वंतर दस चार । क्रम क्रम फिरै सुव्यापिकें ब्रह्माण्डनि जु अपार ॥
वरस सवास कृष्ण कौ रहै जु प्रगट प्रकास । ताही मधि तेई करें ब्रज पुर माहि विलास ॥
फिरै अलात जु चक्र ज्यों लीला चक्र जु सोय । सब लीला ब्रह्माण्ड सब क्रम करि उदै जु होय ॥
जन्म बाल्य पौगण्ड पुनि बय किशोर प्रकास । लीला बकी बधादिये मौशलांत जु विलास ॥
कोऊ लीला कब किहू ब्रह्माण्ड स्थिति जान । तातें लीला नित्य ही कहैं जु वेद पुरान ॥
गोकुल औ गोलोकमधि कृष्णजु विभु सम आहि । तिहि इच्छा करि अंडगण मधि संक्रमहै ताहि ॥
याहीतें गोलोक मधि तिनकौ नित्य विहार । ब्रह्माण्डनि गण क्रमजु करि तिहिं प्रागख्य विचार ॥
ब्रज के मधि श्री कृष्ण कौ सर्वेश्वर्य प्रकास । ताही तें हैं पूर्णतम तहां कृष्ण रस रास ॥
मथुरापुर द्वारावती परव्योम मधि जान । क्रम करिकें हैं पूर्ण तर जहां पूर्ण भगवान ॥
तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

हरिः पूर्णतमः पूर्णतरः पूर्ण इति त्रिधा । श्रेष्ठ मध्यादिभिः सर्वैर्नाट्ये यः परिकीर्तितः ।
प्रकाशिताखिलगुणः स्मृतः पूर्णतमो बुधैः । असर्वव्यञ्जकः पूर्णतरः पूर्णोऽल्पदर्शकः ॥
कृष्णस्व पूर्णतमता व्यक्ताभूत गोकुलान्तरे । पूर्णता पूर्णतरता द्वारका मथुरादिषु ॥

ब्रज ही मधि हैं पूर्णतम कृष्ण स्वयं भगवान । अरु स्वरूप सब पूर्णतर पूर्ण नाम जिहिं जान ॥
यहैं कहौ संक्षेप करि कृष्ण स्वरूप विचारि । कहन सकैं जु अनन्त हूं इन कौ करि विस्तारि ॥
कृष्ण स्वरूप अनंतहैं नाहिन गणना ताहि । साखा चंद्रजु न्याय करि दिग दरसन क्रिय आहि ॥
पढ़ै सुनै जोई जु इह भाग्यवान है सोय । कृष्ण स्वरूपसु तत्व कौ कछुक ग्यान तिहिं होय ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के पदरज की जिहिं आस । प्रभु चरितामृत कौ कहैं कृष्णदास तिहिं दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृतसो लिखै ब्रजभासाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे ब्रजभाषायां सम्बन्धतत्त्व भगवत्तत्त्व निरूपणं नाम विंशतिपरिच्छेदः ॥

एकविंशति परिच्छेदः

अगत्येकगतिं नत्वा हीनार्थाधिकसाधकं ।

श्रीचैतन्यं लिखाम्यस्य माधुर्यैरवर्च्यशीकरम् ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
परव्योम निज धाम में सब स्वरूप के धाम । पृथक पृथक वैकुण्ठ सब नहिं गणना कौ नाम ॥

सात सहस्रायुत लक्ष औ कोटिक जोजन आहि । एक एक बैकुण्ठ कौ विस्तृत वर्णन ताहि ॥
व्यापक आनन्द चिन्मय सब बैकुण्ठ सु आहि । पूरण पट ऐश्वर्य्य सब बहै जु पारपद ताहि ॥
एक एक तिहि देस मधि है बैकुण्ठ अपार । परव्योम ऐसो जु तिहि गनै जु को विस्तार ॥
है अनन्त बैकुण्ठ जे व्योम जाहि दल पांति । कृष्ण लोक सर्वोपरि जु है मधि कली सुकांति ॥
तथाहि—

को वेत्ति भूमन् भगवान् परात्मन्, योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोकां ।
काहो कथं वा कति वा कदेति, विस्तारयन् कीडसि योगमायाम् ॥२॥

ऐसै पट ऐश्वर्य्य जिहि और धाम अवतार । ब्रह्मा सिव अंत न लहै कौन जीव यह छार ॥
तथाहि—

गुणात्मनस्ते गुणान् विमांतु हितावतीर्णस्य क ईशिरेऽस्य ।
कालेन यैर्वा विमिताः सुकल्पैर्भूपांशवः खे मिहिका द्युभासः ॥३॥

ऐसौ है श्री कृष्ण कौ पट गुण दिव्य अनंत । ब्रह्मा शिव सनकादि ये नहि पावै तिहि अंत ॥
रहौ दूर ब्रह्मादिक जु बदन सहस्र अनंत । इतनें मुख गावै सदा लहै न गुणगण अंत ॥
तथाहि—

नान्तं विदाम्यहममी मुनयोऽग्रजाले मायावलस्य पुरुषस्य कुतोऽवरा ये ।
गायन् गुणान् दशशतानन आदिदेवः शेषोऽधुनापि समवस्यति नास्य पारम् ॥४॥

सोऊ सेस रहौ महा विज्ञ शिरोमनि कृष्ण । निज गुण को अन्त न लहै तिन में रहै सतृष्ण ॥
तदुक्तं श्रुतिभिः—

युपतय एव तेन ययुरन्तमनन्ततया त्वमपि यदन्तराण्डनिचया ननु सावरणाः ।
ख इव रजांसि भान्ति वयसा सह यन् श्रुतयस्त्वयि हि फलन्त्यतन्निरससेन भवन्निधनाः ॥५॥

सोऊ रहौ जु कृष्ण जब ब्रज में किय अवतार । तिनकौ चरित विचार तें मन नहि पावै पार ॥
अप्राकृत प्राकृत सृजन किय इक छिन मधि रंग । ये बैकुण्ठ अजाण्ड गण निजर नाथनि संग ॥
जैसौं सुन्यौं न और ठां अचिरत अद्भुत जानि । होय जु जाके सुनतही हिये बड़ी व्यौरानि ॥
वत्स असंख्य जु कृष्ण के शुक मुनि बानी आहि । कृष्ण संग कितने सखा संख्या नाहिन ताहि ॥
इक इक गोप करै सु जिन बछरन चारन आहि । कोटिसु अर्बुद संख पुनि पदम सुगणना ताहि ॥
वेत्र वेणु दल मृग पुनि ये वस्त्रालकार । गोप गननि के जिते तिन गनना को नहि पार ॥
सर्व भये बैकुण्ठ पति और चतुर्भुज आहि । इक इक सब ब्रह्माण्ड मधि अज नुति करै जु ताहि ॥
बपु हीते इक कृष्ण के तिन सब कौ जु प्रकास । छिन इक में तिन सबनि कौ भौ प्रवेस वपु तास ॥
यह लखि कै ब्रह्मा भयौ मोहित विस्मित सोय । नुति करकें पाछें कियौ यहें जु निश्चै सोय ॥
हौं जानौं सब कृष्ण कौ वैभव कहै जु कोय । सोई जानौं काय मन हौं नहि जानौं जोय ॥
वैभव सुधा समुद्र तुव यह जु अंत नहि आहि । मेरी बानी मनहि गनि नहीं बिंदु इक ताहि ॥

रहौ सुमहिमा कृष्ण की तिहि ज्ञाता है कोय । लखि वृन्दावन धाम की विभुता अचिरज सोय ॥
श्रीवृन्दावन धाम निज सोरह कोस जु सोय । सब शास्त्रनि के मधि कियौ तिहि प्रमान यह जोय ॥
बैकुण्ठ अजाण्ड ये जे इक प्रदेश मधि ताहि । बहे बहे अनगिन फिरै यह महिमा तिहि आहि ॥
है अपार श्री कृष्ण कौ प्रभुता सागर जोय । मन इर्दिय प्रभु के मगन भये जु व्याकुल सोय ॥
एक भागवत कौ जु पद कहिकें आपुन आहि । अर्थ स्वाद हित सुख सहित करें अर्थ यौं ताहि ॥
तथाहि—

स्वयं त्वसाम्पातिशयस्यधीशः स्वाराज्यलक्ष्म्याप्तसमस्तकामः ।
बलिं हरद्विधिरलोकपालैः किरीटकोटीक्षितपादपीठः ॥६॥

परम ईश्वर कृष्ण हैं आप स्वयं भगवान । तिन तें बडौ समान तिहि नाहीं कोऊ आन ॥
तथाहि—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहेति श्लोकः ॥ ८ ॥

ब्रह्मा हरि हर ये जु हैं सृष्ट्यादिक के ईस । आज्ञा कारी कृष्ण के तीनों कृष्ण अधीस ॥
तथाहि—

सृजामि तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः । विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक् ॥ ९ ॥

अर्थ सुनौ जु त्रिधीस कौ अरु सामान्य विचार । हैं कारण सब जगत के तीन पुरुष अवतार ॥
महाविष्णु नाभि जु पदम क्षीरोदक प्रभु चीन । स्थूल सूक्ष्म सब के जु ये अंतरजामी तीन ॥
सब के आश्रय तीन ये येई जग के ईस । तेऊ कला जु अस जिहिं सो श्री कृष्ण त्रिधीस ॥
तथाहि—

यस्यैकनिः श्वसितकालमथावलम्ब्येति श्लोकः ॥१०॥

यह अर्थ मध्यम जु है सुनौ अर्थ अरु सार । कृष्ण निवास स्थान ये तीन जु सास्त्र प्रचार ॥
अतंपुर गोलोक पुनि वृन्दावन रस सिंधु । जहां सु नित्य स्थिति करै तात मात गण वंधु ॥
परममधुर ऐश्वर्य्य जो पुनि माधुर्य्य अपार । सहज कृपादिक गुणनि के परि पूरण भंडार ॥
शक्ति योगमाया जहां जिहिं दासी है सोय । जहां सु लीला सरस है रासादि कही जोय ॥

तथाहि—

करुणानिकुरम्बकोमले मधुरैश्वर्य्यविशेषशालिनि । जयति ब्रजराजनन्दने नहि चिन्ताकणिकाभ्युद्योतिनः ॥
पर व्योम ताके तलें विष्णु लोक जिहि नाम । है नारायण आदि बहु जे स्वरूप तिहि धाम ॥
मध्यम पुर श्री कृष्ण कौ पडैश्वर्य्य भंडार । जहां अनंत स्वरूप तिहिं करै जु विविध बिहार ॥

सोरठा

जिहिं बैकुण्ठ अनंत है भण्डार सु कोठरी । गण जु पारपद संत सुपडैश्वर्य्य भरी रहै ॥
तथाहि—

प्रधानपरमव्योम्नोरन्तरे विरजा नदी । वेदांगस्वेदजनितैस्तोयैः प्रस्त्राविता शुभा ॥१२॥
तस्याः पारे परव्योम त्रिपाङ्गु तं सनातनं । अमृतं शाश्वतं नित्यमनन्तं परमं पदम् ॥१३॥

बाह्य निवास जु तिहि तलें है विरजा के पार । जहां अनंत अजांड की है कोठरी अपार ॥
 देवी धाम जु नाम तिहि जीव निवासी जाहि । जग लक्ष्मी जहां बसति है माया दासी ताहि ॥
 इन तीनों धाम निजु के कृष्ण अधीस्वर सोय । है जु धाम गोलोक परब्योम प्रकृति पर जोय ॥
 नाम त्रिपादैश्वर्य चित शक्ति विभूति जू धाम । औ मायिक जु विभूतिसो एक पाद तिहि नाम ॥
 तथाहि—

त्रियाद्विभूते धामत्वात् त्रिपाद्भूत हि तत्पदं । विभूतिर्मायिकी सर्वार्था प्रोक्ता पादात्मिका यतः ॥१४॥
 कृष्ण त्रिपाद विभूति जो वचन अगोचर आहि । है एक पाद विभूति प्रभु सुनि विस्तार जु ताहि ॥
 जिते अनंत अजांड मधि ब्रह्मा शिव गण आहि । लोक पाल बहु शब्द की गणना कहियत ताहि ॥
 द्वारावति मधि एक दिन कृष्ण देखिबे चाय । अज आयौ द्वाराधिप जु कबौ कृष्ण सों जाय ॥
 कृष्ण कहै अज कौन सौ कहा नाम है ताहि । द्वारपाल फिरि आय के अज कौं पूछ्यौ आहि ॥
 द्वारपाल सों जब कबौ ब्रह्मा विस्मित होय । कबौ जाय आयौ सनकपिता चतुर्मुख सोय ॥
 द्वारप कृष्ण जनाय के अजहि लै गयौ सोय । अज चरणन मधि कृष्ण के गिर्यौ दंडवत होय ॥
 कृष्ण अतिथि पूजा करी प्रसन्न करी पुनि ताहि । कौन हेतु तुमरौ इहां भयौ आगमन आहि ॥
 ब्रह्मा कहै निवेदन सु पाछे करि है ताहि । यह संसै मन में जु तिहि करौ सुखेदन ताहि ॥
 तुम पूछ्यौ अज कौन वह आशय कहा जु ताहि । मो विन ब्रह्मा जगतमधि और कौन सो आहि ॥
 सुनिके हंसै जु कृष्ण जू तबै कियौ कछु ध्यान । ब्रह्मा के गन अनगणत आये तिहि छिन जाना ॥
 दस औ बीस सहस्र पुनि अजुत लक्ष मुख सोय । कोटि सु अर्बुद वदन किहि नाहिन गणना जोय ॥
 तहां जु आये रुद्रगण लक्षकोटि मुख ऐन । और जु आये इंद्रगण लक्षकोटि जिहि नैन ॥
 देखि चतुर्मुख अज भयौ अति ही विस्मित जोय । गजराजनि के गनन मधि रखौ ससाज्यौ सोय ॥
 आप जु सब अज कृष्ण के पाद पीठ सौ लागि । करै दण्डवत गिरि जु के मुकुट चरण सों पागि ॥
 शक्ति अचिन्त्य जु कृष्ण की पाय सकै न कोय । जितने अज मूरति तिति एकहि वपु करि सोय ॥
 मुकुट अग्र पद पीठ सों घसै उठै धुनि जोय । पाद पीठ की नुति करै मुकुट जानिये सोय ॥
 ब्रह्मा रुद्रादिक जु नुति करै जोरि निज पानि । बड़ी कृपा कीनी जु प्रभु चरण दिखाये आनि ॥
 भागि हमारे सुधि किये दासननिके आहि । कौन सु आज्ञा है हमें सिर पर धरै जु ताहि ॥
 कृष्ण कहै तुम सबनि के लखिबे चित भौ जोय । ताके हित इकठे सब हम जु बुलाये सोय ॥
 सुखी होहु सब ही कछु नहीं दैत्य भय आहि । सबठां जय तुव कृपा करियौ सब कहै जु ताहि ॥
 संप्रति जो अब कछु हुतो या पृथिवी कौ भार । अवतीरण हूँ के कियौ तुम ताकौ संहार ॥
 इक पुर की जु विभूति जो ताकौ इतौ प्रमान । कृष्ण जु ममब्रह्माण्ड के यह सबकौ भौ ज्ञान ॥
 कृष्ण सहित पुर वैभव जु भौ अनभव सब काहि । काहुं काहुं कौं लखां इक ठां मिलन जु आहि ॥
 चारि वदन अज के भयौ चमत्कार लखि हीय । कृष्ण चरण मधि आयकै नमस्कार तिन कीया ॥

ब्रह्मा कहै जु प्रथम हीं मैं निश्चै किय जोय । ताको आजु उदाहरण प्रगटहि देख्यौ सोय ।
 तथाहि—

जानंतु एव जानन्तु किं बहुक्तया न मे प्रभो । मनसो वपुषो वाचो वैमर्शं तत्र गोचरम् ॥१५॥
 कृष्ण कहै ब्रह्माण्ड यह जोजन कोटि पचास । जातें अति ही छुद्र तुव वदन चारि परकास ॥
 कोऊ अज सत कोटि हैं लक्ष कोटि हैं कोय । कोऊ निर्युत कोटि पुनि कोटि कोटि किहि जोय ॥
 अज के वदन सरीर जो है अजांड अनुरूप । ब्रह्माण्डन के गण जु हौं पालो याही रूप ॥
 है विभूति इक पाद इह नहि प्रमान यह जान । त्रिपाद विभूतिसु व्योमकौ के करि सकै प्रमान ॥

तथाहि—त्रिपाद्भूतं सनातनमिति ॥१६॥

तब अज कौं श्रीकृष्ण जू विदा कियौ समुझाय । कृष्ण विभूति सरूप जो जान्यौ कबौहि न जाय ॥
 अर्थ अधीस सब्द कौ और गूढ़ है जोय । कहियत है जु त्रिशब्द करि तीन लोक प्रभु सोय ॥
 गोकुल गोलोक मधुपुरी द्वारावती सु आहि । इन ही तीनों लोकमधि सहज स्थिति नित ताहि ॥
 अन्तरंग ऐश्वर्य करि पूर्णधाम त्रय जान । तीनों धाम अधीश्वर जु कृष्ण स्वयं भगवान ॥
 पूर्व उक्त ब्रह्माण्ड के जितेक दिगपति जोय । अनन्त वैकुण्ठावरण लोकपाल बहु सोय ॥
 आगे हरि पद पीठ के मुकुट सबनि के आहि । तिहि मणि समै जु दंडवत पाद पीठ लगि ताहि ॥
 धकाधकी मनि पीठकी उठै सु भन भनकार । करै जु नुति पद पीठ कौं किय अनुमान विचार ॥
 कृष्ण जु निज चिच्छक्ति करि राजमान नितिधाम । चिच्छक्ति हि संपतिकौ पद ऐश्वर्यसु नाम ॥
 तिहीं स्वाराज्य श्री जु करि पूर्ण काम निति जाम । याही तें वेद जु कहै कृष्ण स्वयं भगवान ॥
 कृष्णैश्वर्य अपार यह अमृत सिंधु जो आहि । सकै नहीं अवगाह करि छियौ एक बिंदु याहि ॥
 कहत ईसता कृष्ण की भई स्फूर्ति तब ताहि । माधुरिमधि मन मगन भौ पढ़्यौ श्लोक इक ताहि ॥

तथाहि—

जन्मत्यलीलौपयिकं स्वयोगमायावलं दर्शयता गृहीतं ।
 विस्मापनं स्वस्थ च सौभगार्द्धः परं पदं भूषणभूषणंगम् ॥

भैरवराग

सुनि हौ सनातन कृष्ण कौ मधुर रूप ।

त्रिभुवन मगन करै हरे सब जीन मन परम मादक जा कौ एक कण अनूप ॥
 हरि लीला जिती धनी नर लीला मुकुटमनी नरवपु हूँ सदा निज स्वरूप ताहि ।

गोपबेस बेणु पाणि नव किशोर अति सुजान नटवर नरलीला है सोई अनुरूप आहि ॥
 जोगमाया शक्ति चित्र विमलसत्त्व ही की विकृति, लोकनि दिखायबेकौ ताके बलकौ प्रमान ।
 यहै रूप महारतन भक्तनिकौ गूढ़धन, कीनौ नरलोक प्रगट नित्यलीला हीतें आन ॥
 अपनों निज रूप देखि अचिरज हरिहिय विशेषि तासों भोग करिवेकौ उपजै तिहि हृदय काम ।

जाकौ सौभाग्य नाम सुन्दरतादि गुणनि ग्राम यह रूप तिन के हैं सहज नित्य धाम ॥
भूषण के भूषण अंग जहां ललित अति त्रिभंग तापर भू भंग धनुष जुग लरै लास ।
वान तिरछे नयन सुदृढ़ तिनकी चलन लक्ष हैं गोपिका गणनि मन जास ॥

कोटि ब्रह्माण्ड परव्योम मधि जिति है मनहर स्वरूप तिन मन हि हरई ।
वेदवानी कहै जाहि सति मुकुटमनि तिहीं लक्ष्मीगनाकर्ष करई ॥
चढ़ि गोपीगण मनरथै मनमथ हि मन मथै मदन मोहन धरै तवै निज नाम ।
जीति कंदर्प कौ दर्प नव काम वपु गोपीगण लै करै रास अभिराम ॥
अपने सब सखा संग धेनु चारण रंग मध्य वृन्दावन हि विहरें स्वछंद ।
वेणु धुनि जासु सुनि अश्रुधारा वहै कंप औ पुलक धरै चर अचर वृन्द ॥
हार वगपाति औ इन्द्र धनु पिछ तति बीजुरी पीत पट करै संचार ।
स्याम नव जलद वर जगत सस्य हि उपरि वरपई सुखद लीला अमृत धार ॥
माधुरी ईसता सार किय ब्रज प्रचुर ताहि सुक मुनि व्यास सुत ठांव ठांही ।
जीवन जनायवे कथन किय भागवत याहि सुनि भक्त मन मत्त हूँ जांही ॥
कहत श्रीकृष्ण रस पदय पढ़ि प्रेम बस नेह करि करि सनातनकें हीये धरिकें ।
गोपिका भाग्य गुण कृष्ण के जे कहे नगर नारि नु भाव हियें भरिकें ॥

तथाहि—गोप्यस्तपः किमचरनितिश्लोकः ॥

यथा पदय—सखि है गोपीगण कौन तप कीनों ।

कृष्ण रूप माधुरी नेत्र भरि भरि पीय श्लाघा करै जन्म तन मन रंग भीनों ॥
तारुण्यामृत सिंधुआहि लावण्यसार बीबी जाहि तामें काम भाव भौर उठत अपार ।
वंशी धुनि चक्र वात नारीमन तृणपात तिन्हें तहां वोरें फेर उठे न संभार ॥
नहि समान अधिक आन कोऊ तिहि माधुरीसौ वैकुण्ठ के स्वरूपगननि मांही ।
सब के अवतारी वैकुण्ठहि अधिकारी जे तिनहुँ नारायण में मधुरता सुनांही ॥
ताकी साखि वहै रमा नारायण प्रियतमा प्रतिव्रता गणन की उपास्य सदाई ।
तिनहुँ जिहि माधुरीके लोभ छाडि कामभोग करीहै तपस्या व्रत धरिकें अधिकारि ॥
सोतौ माधुर्य सो रतिन के नहि अन्य सिद्ध वेतो माधुर्य आदि गुणनकी खानि आही ।
और सब प्रकास आहि भाये गुण दिये ताहि जहां जितौ काज जानें प्रगट करें ताही ॥
गोपीभाव दर्पन जो छिनहीं छिन नयौ नयौ आगें तिहि कृष्ण जू की माधुरी अपारा ।
कोऊ करि होड़ाहोड़ी वाढ़ें नहि मौरैं मुख नव नव प्राचुर्य धरै माने नहीं हारा ॥
कर्म सुतप यज्ञ दान वैधीभक्ति जोग ज्ञान करि माधुर्य वहै दुर्लभ अति जानौ ।
शुद्ध राग पथहि भजै कृष्ण हि अनुराग पगि माधुरी श्री कृष्णजू की ताहि सुलभ मानौ ॥

वहै रूप ब्रज निवास प्रभुता माधुर्य रास दिव्य गुण समूहन कौ रत्नालय सोय ।
औरनि वैभव हि सत्ता कृष्णदत्त भगवत्ता सर्वासी सर्वाश्रय नंद सुवन जोय ॥
श्रीलज्जा दया कीर्ति धैर्य मति विसारदी सु येई गुण नित्य सदा कृष्ण में निवासी ।
मृदु सुसील औ वदान्य कृष्णकी न तुल्य अन्य जगतकौ हित करै कृष्ण विविध रस विलासी ॥
नाना जन हरिहि देखि कीनें निंदन निमेष ब्रजहि मधि विधिहि निंदे गोगण सनेही ।
तेई सब पदय पढ़ि कै करिकें अर्थ महाप्रभु करें वदन माधुरीकौ पान मगन जेही ॥

अथ तथाहि—

तस्याननं मकरकुण्डलाचारुकर्णभ्राजत्कपोलसुभगं सविलासहामं ।

नित्योत्सवं न तत्पुटशिभिः पिबन्त्यो नाय्यो नराश्च मुदिताः कुपिता निमेष ॥

पदय—जसनि कृष्ण वदन राजै द्विजराज राजरी ।

कृष्ण देह सिंहासन बैठि करै राज तेज तै सोई रंग भर्यौ संग ससि समाजरी ॥
मनसिज गायत्री मंत्ररूप है स्वरूप कृष्ण सादे चौबीस वरण ताके है जेई ॥
इन्दुनकौ रूप धरि कै कृष्ण देह उदै करिकें काममय त्रिलोक कीनौ छाये हृदय तेई ॥
चीकनें कपोल जुग जीतें मनि मुकुर विमल तेई विवि पूर्णचंद्र जानौ सुखदाई ।
अलिक अर्द्ध इंदु आहि चंदन कौ बिंदु ताहि सोऊ एक पूर्णचंद्र सीतल अधिकारि ॥
करनख रजनी सु ठाठ करै वंशी उपरि नाट तिनकौ है गान मधुर मुरली की तानरी ।
पद नख ससियूथ सोई तरें करै नृत्य जोई नूपुर की रुनक भुनक धुनि है तिनकौ गानरी ॥
नृत्य करै मकर कुण्डल नेत्र विमल नील कमल सदाई न चावें तिन्हें तृपति अति विलासी ।
भृकुटी धनु जैसैं वान ताके गुणजमल कान नारी मन लक्ष ताहि वेधे सुखरासी ॥
विधु कौ यह नृत्यधाट फैलाई ससिनि हाट अमृत निज लुटावै सबनि बिना लियें मोलहीं ।
मुसकि चन्द्रिका सुधाहि काहूकौ अधरामृत प्याये तृप्तकरै सबनि मधुर वचन बोल हीं ॥
आयत अनुराग ऐन घूमरी मद छकी सैन, यैसे जुग नैन जाके मंत्री लागे कानरी ।
क्रीड़ा लावण्य सदन रसके अयन नयन जहां सुखमय गोविंदवदन मधुररस निधानरी ॥
पुन्य पुंज फलै जाहि ताकौ दरस मिलै ताहि कहौ दोय नैन ही सौं कितौ करै पानरी ।
वहै दुनी तृषा लोभ पिय न सकै हियें चोभ, दुख करि तब निंदे कहैं विधिकौ नहि ज्ञानरी ॥
दिये नहि कोटि लक्ष सबसे किय दोय अक्ष, तिनहुँ में दिय निमेष ओट दुख अपारा ।
विधि जड़ धनसुतप जाहि रस के रहित हियो ताहि जानें नहि जोग्यसृजन कमल सुत विचारा ॥
दरसि हैं जे कृष्णवदन तिनके कहां दोय नयन हैं कै विधि अविधि करै ऐसौ अविचारा ।
मोहि जो बुलाय पूर्ण कोटि आंखिरचै तिन्हें हैं उचितसृष्टि ताकी तब जानें निरधारा ॥

हरितनु माधुर्यसिंधु है सुमधुर वदनइन्दु अतिही मधुर स्मितकरन मन प्रकासा ।
लागे ये तीन हियैं स्वादै तीन लोभ कियें पड़े हस्तचालन जुत पथ हिय हुलासा ॥

तथाहि

मधुरं मधुरं वपुरस्य विभो मधुरं मधुरं वदनं मधुरं । मधुगन्धि मृदु स्मितमेतदहो मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं ॥

यथाराग—

अहो हे सनातन कृष्ण मधुररस निधान ।

मेरो मन संनपाती सवही पियौ चाहै ताहि अपनौ दुहैं व वैद्य देय नही कन प्रमान ॥
हरितन लावण्यपूर मधुरहूँते अतिसुमधुर तामें जो वदन सुधानिधि है सुखकी रासरी ।
मधुरहूँते परममधुर ताहूँते है अतिसुमधुर ताकी जो मुसकनि पर चन्द्रिका प्रकासरी ॥
मधुरहूँते सृष्ट मधुर ताहूँते अधिकमधुर ताहूँते अतिसय है अति सुमधुर जोई ।
अपने इक कनहि करिकैं व्यापैं सब तीन लोक दसौदिसा वहै जाकौं पूर अकथ सोई ॥
हसनि किरनि सितकपूर अधरमधु प्रवाह पैठि त्रिभुवनकौ मत्त करैं वहै मधु सुवास जो ।
वंशीको छिद्र सुनभ ताके गुण सव्द प्रविस ध्वनि के स्वरूप हूँ कै तव पावै परिनाम सौ ॥
सो धुनि चहु ओर धाय भेद जग वैकुण्ठ जाइ बल करि सब जगत हीके पैठि जाय कानरी ।
सबकौं मतवारौ करिकैं आनें ऐं चि बलसौं धरिकैं धरिकैं ताहूँमें अतिविशेष जुवतिगण सुजानरी ॥
अतिही उद्धत धुनि है सोई सतिनुके व्रत तोरैं जोई, पतिनके निज अकहूँते काढ़ि लेत नारी ।
परव्योम लक्ष्मीगणहि जो करावैं आकर्षण, आगें दिहि गोपीगण कौन धौ विचारी ॥
पति दिग निर्वी खिसावैं गृहके काजनि छुटावैं बलसौं गहि कृष्ण निकट जुवतिनिकौं लावई ।
लोक धर्म लज्जा भय सवहि ज्ञान नास होय, नारीगण सबै जिती तिन्है ये नचावई ॥
श्रवननि में करै वास तहां सदा निज प्रकास, पैठन नहि देय जहां और सव्द कोई ।
और न कछु सुनें कान कहतें कछु कहै आन, यहै कृष्ण वंशी कौ चरित जगत भोई ॥
फेरि कहै बाछ ज्ञान आन कहतें कहै आन, तुम पर श्री कृष्ण जू की कृपा अधिक आही ।
मेर चित भ्रम कराय प्रभुता निज माधुरी पुनि, तुम ही श्रवन कराई मेरे मुख ताही ॥
मैं तौ अति बड़ौ वीर और कहत और कह्यौ हरि की माधुर्यपूर लखि गयो वहि कै ।
तव तौ प्रभु एक छिनहि मौन करिकैं रहे फेरि कहैं यौ सनातन सौं मनहि धैर्य गहिकैं ॥
कृष्ण माधुरी अपार पुनि किय प्रभु मुख प्रचार जोई सुनै लहै प्रेम सुख प्रकास ।
रूप श्री सनातन रघुनाथ चरण जाको वास, गौरचन्द्र चरितामृत कहै कृष्णदास ॥
कह्यौ गौरचंद्र चरित वृंदावन दास जोई फेरि कै उचार्यौ कविराज राज जाहि ।
इनहीं की चरण धूरि मूरि है सजीवन जिहि भाषा निज प्रगट कियौ वेंनी कृष्ण ताहि ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे श्रीकृष्ण पेशवर्ग्य माधुर्यवर्णनं नाम एकविंशति परिच्छेदः ॥

द्वाविंशति परिच्छेदः

वंदे श्रीकृष्णचैतन्यदेवं तं करुणार्णवं । कलावप्यति गूढेयं भक्तियेन प्रकाशिता ॥ १ ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृंद ॥
निज संबंध जु तत्व कौ यहै कह्यौ जु विचार । वेद शास्त्र उपदेस ई एक कृष्ण हैं सार ॥
कहियैं अब अभिधेय कौ लक्षण सुनौ जु सोय । याते पैयै कृष्ण औ कृष्ण प्रेम धन जोय ॥
कृष्ण भक्ति अभिधेय है कहै शास्त्र सब ताहि । याही तें मुनि गननि यह क्रियां जु निश्चै आहि ॥

तथाहि मुनिवाक्यं—

श्रुतिर्माता पृष्ठा दिशति भवदाराधनविधिं, यथा मातुर्वाणी स्मृतिरपि तथा भक्ति भगिनी ।
पुराणाद्या ये वा सहजनिवहास्ते तदनुगा, अतः सत्यं ज्ञातं मुरहर भवानेव शरणम् ॥ २ ॥

अद्वय ज्ञान जु तत्व जो कृष्ण स्वयं भगवान् । है स्वरूप शक्ति हि जु मधि अवस्थान तिहि जान ॥

स्वांस विभिन्नांस रूप करि द्वै कै विस्तार अनंत वैकुण्ठ ब्रह्माण्ड करैं जु विहार हैं ।

स्वांस विस्तार है चतुर्व्यूह अवतार गण विभिन्नांस जीव तिहिं सक्तितें अपार हैं ।

सोई विभिन्नांस जीव हैं प्रकार दोय एक नित्य मुक्त एक कै जु निति ही संसार हैं ।

नित्यमुक्ति नित्य कृष्ण चरण के उन्मुख जे कृष्णपार्षद जु भोगें सेवा सुखसार हैं ॥

नित्यवद्ध श्रीकृष्ण तें नित्य बहिर्मुख जोय । नित संसारी भोगई नरकादिक दुख सोय ॥

अजा पिसाची दंडई तिहीं दोष करि ताहि । मारैं ताहि जराय कै ताप त्रय करि आहि ॥

काम क्रोध कौ दास हूँ तिनकी लाठी खाय । साधु वैद्य जो पावई भ्रमत भ्रमत अकुलाय ॥

तिहिं मंत्र जु उपदेस करि भजै पिशाची जोय । कृष्ण भक्ति लहि कृष्ण के निकट जाय तव सोय ॥

तथाहि भः रः सिन्धौ—

कामादीनां कति न कतिधा पालिता दुर्निदेशास्तेषां जाता मयि न करुणा न त्रपा नोपशान्तिः ।

उत्सृज्यैतानथ यदुपते साम्प्रतं लब्धबुद्धिस्त्वामायातः शरणमभयं मां नियुक्तात्मदास्ये ॥ ३ ॥

कृष्णचन्द्र की भक्ति जो अभिधेय प्रधान । मुख जु निरीक्षक भक्ति कै कर्म जोग औ ज्ञान ॥

इन हीं सब साधननि कौ फल अतितुच्छ विचार । कृष्ण भक्ति विन तिनहुं कै दैवै कौ नहि सार ॥

तथाहि भागवते—

नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनं ।

कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे न चार्पितं कर्म यदप्यकारणम् ॥ ४ ॥

तथाहि तत्रैय—

क्षेमं न विदन्ति विना यदर्पणं तस्मै सुभद्रश्रवसे नमोनमः ॥ ५ ॥

केवल ज्ञान न दे सकैं मुक्ति भक्ति विन जोय । वहै जु मुक्ति हरि सनमुख विना ज्ञान ही होय ॥

तथाहि तत्रैव—

श्रेयः श्रुति भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये ।
तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद् यथा स्थूल तुषावघातिनाम् ॥६॥

तथाहि गीताया—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम मायादुरत्यया । मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥७॥

जीव दास नित कृष्ण कौ गयौ भूलि यह ताहि । तिही दोस माया जु तिहिं बांधै गरौ जु आहि ॥
ताते कृष्ण भजै करै गुरु कौ सेवन जोय । छुटै जु माया जाल तें लहै कृष्ण पद सोय ॥
चारि वर्ण औ आश्रमी कृष्ण हि भजै जु नाहि । ते स्वधर्म करि बूडई परि रौरव के मांहि ॥

तथाहि भागवते—

मुख बाहूरुपादेभ्यः पुरुषस्याश्रमैः सह । चत्वारो जज्ञिरे वर्णां गुणैर्विप्रादयः पृथक् ॥८॥
य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं । न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद् भ्रष्टाः पतन्त्यधः ॥९॥

ज्ञानी जीव दशा मुक्ति लहौ करै अभिमान । वस्तु बुद्धि नहि शुद्धि तिहिं भक्ति बिना नहि जाना ॥
तथाहि तत्रैव—

येऽन्येरेविन्दात् विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो ऽ नादृत्युष्मदं वयः ॥१०॥

रवि समान श्री कृष्ण जू है माया अंधकार । जहां कृष्ण तहां अजा कौ है नाहिन अधिकार ॥
तथाहि तत्रैव—

विलज्जमानया यस्य स्थातुमात्मीपते ऽ मुया । विमोहिता विकल्थन्ते ममाहमिति दुर्धियः ॥११॥

कृष्ण तुम्हरो हौं जु हौं जो भापे इक्वार । माया के बंधन जु तें कृष्ण करै तिहि पार ॥
तथाहि रामायणे—

सकृदेव प्रपन्नो यस्तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वदा तस्मै ददाम्येतद्व्रतं मम ॥१२॥

भुक्तिमुक्ति अरु भक्ति की चाह सुधी के होय । जो दृढभक्ति जु जोग करि हरि कौ भजै जु सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

अकामः सर्वकामी वा मोक्षकामो उदार धीः । तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ॥१३॥

अन्य विषय कामी कभू जो हरि भजन सुसार । नहि मांगै हरि तऊ तिहिं दै निज चरण विचार ॥
कृष्ण कहै मोकौ भजै चहै विषय सुख जोय । अमृत छाड़ि विष मागई बडौ मूर्ख यह जोय ॥
हौं प्रवीन या मूर्ख कौ कयौ विष दै हौं आहि । दैके निज चरणामृत हि विषय भुलै हौं याहि ॥
तथाहि तत्रैव—

स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ॥१४॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

स्थानाभिलाषी तपसि स्थितोऽहं त्वां प्राप्तवान् देवमुनीन्द्रगुहम् ।
कांच विचिन्वन्नपि दिव्यरत्नं स्वामिन कृतार्थो ऽस्मि वरं न याचे ॥१५॥

किहू भाग्य कौऊ तरै भ्रमत भ्रमत संसार । ज्यौ तीर हि लागै नृण जु नदी प्रवाह सुदार ॥
तथाहि तत्रैव—

हियमानः कालनद्यान् क्वचित्तरति कश्चन ॥१६॥

किहू भाग्य भव किहू के क्षय उन्मुख जब होय । साधु संग करि तब जु तिहिं हरि रति उपजै सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेत् जनस्य तं ह्यच्युत सत्समागमः ।

सत्संगमो यदि तदैव सद्गतौ परावरेण त्वयि जायते रतिः ॥१७॥

किहू भाग्य जुत पर कृपा कियौ चहै हरि जोय । गुरु अतर्यामी जु हूँ आपुन सिखवै सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

आचार्य्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥१८॥

जन संग करि हरिभक्ति मधि जब दृढश्रद्धा होय । होय प्रेम फल भक्तिकौ भव नासै तिहिं सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

यदृच्छया मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान् । न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगस्य सिद्धिदः ॥१९॥

साधु कृपा विन कर्म जुत तिनतें भक्ति न होय । कृष्ण प्राप्ति अति दूर है भव नासै नहि सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

रहुगणैतत्तपसा न याति न चेद्यया निर्व्वपणाद्गृहाद्वा ।

न च्छन्दसा नैव जलाग्निसूर्य्यैर्विना महत्पादरजोभिषेकं ॥२०॥

तथाहि तत्रैव—

महीयसां पादरजोऽभिषेकं निष्किञ्चनानां न वृणीत यावत् ॥२१॥

साधुसंग पुनि साधु संग कहै शास्त्र सब जोय । पलकमात्र जनसंग करि सबै सिद्धि तिहि होय ॥
तथाहि तत्रैव—

तुलायाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भव । भगवत् संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥२२॥

कृष्ण कृपानिधि अर्जुनहि करिकें लक्ष जु ताहि । राख्यौ है उपदेस दै सबै जगत कौ आहि ॥
तथाहि गीतायां—

सर्वं गुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः । इष्टोसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितं ॥२३॥

मन्मना भव मद्भक्तो मयाजी मां नमस्कुरु । मामेवेष्ट्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥२४॥

वेद कर्म आज्ञा प्रथम धर्म जोग कहि ज्ञान । सब सिद्धा करि अंत मधि यह निदेस बलवान ॥
इहिं निदेस बल भक्ति मधि जब श्रद्धा जिहि होय । वेद कर्म सब त्यागकरि कृष्णहि भजै जु सोय ॥
तथाहि भागवते—

धर्मान् संदयज्य यः सर्वान् मां भजेत्स च सत्तमः । आज्ञायैव गुणान्दोषान् मयादिष्टानपि स्वकान् ॥

तथाहि तत्रैव—

तावत्कर्माणि कुर्वीत न निर्व्विद्येत यावता । मत्कथा श्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते ॥ २६ ॥

कहियै श्रद्धा शब्द करि निश्चै दृढ विश्वास । भक्ति किये सब कर्म हूँ किये होत है तास ॥
तथाहि तत्रैव—

यथा तरोर्मूलनिषेवनेन तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः ।

प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां तत्रैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ॥ २७ ॥

अधिकारी हरिभक्तिमधि हैं जन श्रद्धा सोय । उत्तम मध्यम लघु जु ये हैं श्रद्धा अनुजोय ॥

शास्त्र युक्ति मधि निपुन अति जिहि दृढ़ श्रद्धा होय । उत्तम अधिकारी वहै भवकों तारें सोय ॥
शास्त्र युक्ति जानें नहीं हैं दृढ़ श्रद्धावान । मध्यम अधिकारी वहै भागवान अति जान ॥
सो कनिष्ठ जन जानिये कोमल श्रद्धा जाहि । कम कम सोऊ भक्ति मधि हैं हैं उत्तम आहि ॥
तारतम्य रति प्रेम के भक्त तारतम होइ । सब के लक्षण किये हैं एकादश मधि जोइ ॥
तथाहि तत्रैव—

सर्वभूतेषु यः पर्येद्भगवद्भावमात्मनः । भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥ २८ ॥

ईश्वरे तदर्थीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च । प्रेम मैत्री कृपापेक्षा यः करोति स मध्यमः ॥ २९ ॥

अर्चयामेव हरये रजां यः श्रद्धयंते । न तदभक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥ ३० ॥

सर्व महागुणगण जिते जन सरीर मधि सोय । जन मधि सब गुण संचरै कृष्ण भक्तिकरि जोय ॥
तथाहि तत्रैव—

यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्वैर्गुणैस्तत्र समासते सुराः ।

हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथेनासति धावतो बहिः ॥ ३१ ॥

जितने सब गुण गणजुहै जनके लक्षण आहि । सर्व जाय नहि कहैं दिग दरसन करियतु ताहि ॥
अद्भुत दोह कृपाल पुनि सत्य सार सम सोय । दोस रहित अरु दांत मृदु सुचिजु अकिंचन होय ॥
सब उपकारक शांतपुनि एकशरण दुरिजाहि । होय अकाम अनीह थिर विजित सुखदगुणआहि ॥
अप्रमत्त मितभुक्त सदा मानन मानद जाहि । करण मैत्र गंभीर कवि दत्ता सु मौनी आहि ॥
तृतीयस्कंधे—

तिनिचवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनां । अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः ॥

पञ्चम स्कंधे—

महत्सेवा द्वारमाहुर्विमुक्तेस्तमोदारं योषितां संगिसंगं ।

महान्तस्ते समचित्ताः प्रशान्ता विमन्यवः सुहृदः साधवो ये ॥ ३३ ॥

कृष्ण भक्ति के जन्म कौ मूल साधु संग होय । कृष्ण प्रेम के जन्म कौ पूर्ण मुख्य अंग सोय ॥
तथाहि तत्रैव—

सत्संगो यदि तदैव सद्गतौ परावरेण त्वयि जायते रतिः ॥ ३४ ॥

तत्रैव—

अत आत्यन्तिकं चेमं पृच्छामो भवतोऽनघाः ।

संसारेऽस्मिन् जगद्धर्षोऽपि सत्संगः सेवधिर्नृणाम् ॥ ३५ ॥

तथाहि तत्रैव—

सतां प्रसंगान्मम धीर्यसंविदो भवन्ति हृत्कर्णरसायनाः कथाः ।

तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धा रति भक्ति रनुक्रमिष्यति ॥ ३६ ॥

असत संग को त्यागिबौ यहै भक्त आचार । स्त्री संगी इक असत अरु कृष्ण अभक्त विचार ॥
तथाहि तत्रैव—

न तथास्य भवेन्मोहो बन्धश्चान्यप्रसंगतः । योषित्संगाद्यथा पुंसो यथा तत्संगिसंगतः ॥ ३७ ॥

तत्रैव—

सत्यं शौचं दया मौनं बुद्धिर्हीः श्री र्यशः क्षमा । शमो दमो भगश्चेति यत्संगाद्याति संचर्य ॥ ३८ ॥

तेष्वशान्तेषु मृदेषु स्खलिततामस्वसाधुषु । संगं न कुर्याच्छौच्येषु योषित्कीदामृगेषु च ॥ ३९ ॥

कात्यायन संहितायां

वरं हुतवद्द्वालापञ्जरान्तर्व्यवस्थितिः । न शौचिचिन्तायिमुखजनसंवासवैशम्यं ॥ ४० ॥
गोस्वामिवाक्यं—

माद्राज्ञीः क्षीणपुण्यान् क्वचिदपि भगवद्भक्तिहीनान् मनुष्यान् ॥ ४१ ॥

ए सब तजि अरु वर्ण पुनि आश्रम धर्मनि त्यागि । होइ अकिंचन लै रहै इक हरि शरणहि पांग ॥
तथाहि गीतायां—

सर्वं धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रजेति श्लोक ॥ ४२ ॥

भक्ति वत्सल कृतज्ञ पुनि समरथ वड़े वदान्य । ऐसैं कृष्ण हि छाडि कै पण्डित मत्रै न अन्य ॥
तथाहि भागवते—

कः पण्डितस्त्वदपरः शरणं समीयाद्भक्तप्रियादवगिरः सुहृदः कृतज्ञान् ।

सर्वान्दशानि सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न वस्य ॥ ४३ ॥

परम विज्ञ जन के जवै होय कृष्ण गुण ज्ञान । आनहि तजि हरि कौ मजै उद्व तहां प्रमान ॥
तथाहि तत्रैव—

अहो वकीर्यं स्तनकालकूटं जिघांसया पावदप्यसाध्वी ।

लेभे गतिं धातुचितां ततोऽन्यं कंवा दयालुं शरणं ब्रजेम ॥ ४४ ॥

शरणागति निस्पृह जु कौ एक जु लक्षण जोय । तिन के चरणनि मधि करै आत्म समर्पन सोय ॥
तथाहि वैष्णवतन्त्रे—

आनुकूल्यस्य ग्रहणं प्रातिकूल्यस्य वर्जनं । रक्षिष्यतीति विरवासो गोपृत्वे वरणं तथा ॥

आत्मनिक्षेप कार्पण्ये पडिबधा शरणागतिः ॥ ४५ ॥

तत्रैव—

तवास्मीति वदन् वाचा तथैव मनसा विदन् । तत्स्थानमाश्रितस्तत्त्वा मोदते शरणागतः ॥ ४६ ॥

आत्म समर्पण कृष्ण कौ करै शरण लै आहि । ताही छिन श्रीकृष्ण जू करै आत्म सम ताहि ॥
तथाहि भागवते—

मर्त्यो यदा त्यक्तसमस्तकर्मो निवेदितात्मा विचिकीर्षितो मे ।

तदामृतत्वं प्रतिपद्यमानो मयात्मभूयाय च कल्पते वै ॥ ४७ ॥

लक्षण साधन भक्ति कौ सुनो सनातन जोय । जिहि पैयै श्रीकृष्ण कौ प्रेम महाधन सोय ॥
तथाहि भ०२० सिन्धौ—

कृतिसाध्या भवेत्साध्याभावा सा साधनाभिधा ॥ ४८ ॥

तिहि स्वरूप लक्षण क्रिया श्रवणादिक है जोय । है तटस्थ लक्षण उपजि करै प्रेम धन सोय ॥
नित्य सिद्ध हरि प्रेमजो साध्य कभू नहि होय । श्रवणादिक करि शुद्ध मन उदै करै तिहि सोय ॥

सोई साधन भक्ति है कहिये दोय प्रकार । है इक वैधी भक्ति अरु रागानुगा विचारि ॥
भजै शास्त्र के भय हि करि राग हीन जन जोय । ताकौ वैधी भक्ति करि कहै शास्त्र सब सोइ ॥

तथाहि भागवते—

तस्माद्भारत सर्वोत्तमा भगवान् हरिरीश्वरः । भोक्तव्यः कीर्तितव्यश्च स्मत्तव्यश्चेच्छताभयम् ॥ ४९ ॥

तत्रैव—य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं । न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद्भ्रष्टाः पतन्त्यधः ॥ ५० ॥

पद्मपुराणे च—

स्मर्तव्यः सततं विष्णुर्विषमर्तव्यो न जातुचित् । सर्वे विधिनिषेधाः स्युरेतयोरेव किकराः ॥ ५१ ॥
 विविध अंग साधन भगति ताकौ बहु विस्तार । कहियै कछु संक्षेप करि साधनांग ये सार ॥
 गुरु पादाश्रय प्रथम पुनि मंत्र सुदीक्षा ताहि । गुरु चरननिकौ सेयवौ मुख्य अंग ये आहि ॥
 सुद्ध भक्ति कौ सीखिवौ और पूछिवौ ताहि । साधु मार्ग कै अनुगमन करिवैं निहचैं आहि ॥
 भोग त्याग हरि प्रीत हित हरि तीरथ मधि वास । उदर मात्र जु परिग्रहै एकादसि उपवास ॥
 धात्री अरु अश्वत्थ पुनि धेनु विप्र हैं जोय । और वैष्णव जननि कौ पूजन करिवौ सोय ॥
 हरि सेवा हरि नाम के अपराधादिक जोय । करैं दूरही तें सुबुधि तिन कौ वरजन सोय ॥
 संग अवैष्णव कौ नहीं करै सिष्य बहु जान । ग्रंथ कला अभ्यास बहु तजिवौ तिहि व्याख्यान ॥
 सोकादिक के होत बस हानि लाभ सम होय । अन्य देव अरु शास्त्र की निंदा करै न सोय ॥
 हरि हरि जन निंदा विपै वात न सुनियै आहि । जीव मात्र जे मन वचन नहि दुख दैवौ ताहि ॥
 श्रवण कीरतन है स्मरण पूजन वंदन ताहि । परिचर्या सख दास्य पुनि आत्म निवेदन आहि ॥
 नृत्य गीति विज्ञप्ति तिहि आगे दंड प्रणाम । अभुत्थान अनुव्रजन अरु गमन तीर्थ तिहि धाम ॥
 परिक्रमा स्तवपाठ पुनि जप संकीर्तन नाद । धूप माल्य के गंध तिहि भोजन महा प्रसाद ॥
 आरति उत्सव और श्री विग्रह दरसन जोय । ध्यान तदीय जन सेवन निज प्रिय अर्पण सोय ॥
 तुलसी वैष्णव मधुपुरी अरु भागवत तदीय । इन चारनि कौ सेयवौ हरि कै अभिमत हीय ॥
 अखिल चेष्टासु कृष्णहित कृपावलोकन ताहि । जन्मदिनादि महोत्सवजु हरिजन गण लै आहि ॥
 मरणापत्ति जु सर्वथा कात्तिकादि व्रत जान । चौपठि अंग जु भक्ति कै सोई परम प्रधान ॥
 नाम कीरतन साधु संग श्रवण भागवत तास । श्रद्धा करि सेवन जु श्री मूर्ति मथुरा वास ॥
 सब साधनि मधि श्रेष्ठ हैं एई पाँचौ अंग । उपजावे हरि प्रेम इन पांचन कौ कछु संग ॥
 तथाहि भ० २० सिन्धौ—

सजातीयाशये स्निग्धे साधौ संगः स्वतोवरे । श्रीमद्भागवतार्थानामास्वादो रसिकैः सह ॥ ५२ ॥

श्रद्धा विशेषतः प्रीतिः श्रीमूर्तिरंगसेवने । नाम संकीर्तनं श्रीमन्मथुरामण्डले स्थितिः ॥ ५३ ॥

भक्तिरसामृत सिन्धौ—

दुरुद्धाद्रुतवीर्येऽस्मिन् श्रद्धा दूरेऽस्तु पञ्चके । यत्र स्वल्पोऽपि सम्बन्धः सद्भियां भावजन्मने ॥ ५४ ॥

कोऊ साधे अंग इक इक साधे बहु अंग । निष्ठा भये जु उपजई ताकें प्रेम तरंग ॥

सिद्धि लही इक अंगकरि बहुत भक्तगण आहि । अम्बरीष मुख्य भक्तये बहुअंग साधन ताहि ॥

तथाहि पद्यावल्यां—श्री विष्णोः श्रवणे परीक्षितभवद् वैयासकिः कीर्तने,
 प्रल्हादः स्मरणे तदंगिभजने लक्ष्मीः पृथुः पूजने ।
 अक्रूरत्वभिवन्दने कपिपतिर्हास्येऽथ सख्येऽर्जुनः,
 सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत् कृष्णाक्षिरेषां परं ॥ ५५ ॥

तथाहि भागवते—

सवै मनः कृष्णपदारविन्दोर्ध्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने ।
 करौ हरेर्मन्दिरमाजनादिषु श्रुतित्रकाराच्युतसत्कयोदये ॥

इत्यादौ द्रष्टव्यः । ५६ । ५७ । ५८ ॥

कर्म त्यागि हरिकौ भजै शास्त्रसु आज्ञा जान । देव ऋषि जु पितरादिकौ नहीं ऋणी सो मान ॥
 तथाहि भागवते—

देवर्षिभूताप्तनृणां पितृणां न किकरो नायमृणीच राजन् ।
 सर्व्यात्मना यः शरणं शरण्यं गतो मुकुन्दं परिहृत्य कर्तम् ॥ ५६ ॥

भजे कृष्ण के चरण कौ तजि विधि धर्महिं जोय । पापाचार निसिद्धि मधि मन तिहि कवहुं न होय ॥
 पाप कदाचि दज्ञान तें होय उपस्थित आहि । प्रायश्चित्त करै न सो करै सुद्धि हरि ताहि ॥
 तथाहि भागवते—

स्वापादमूलं भजतः प्रियस्य त्यक्तान्यभावस्य हरिः परेशः ।

विकर्म यच्चोत्पतितं कथञ्चित् धुनोति सर्वं हृदि सन्निविष्टः ॥ ६० ॥

ज्ञान और वैराग्य पुनि इन्है आदि दै जोय । अंग न कवहुं हैं सकै कृष्ण भक्त कैं सोय ॥
 तथाहि तत्रैव—

तस्मान्मद्भक्तियुक्तस्य योगिनो वै मदात्मनः । न ज्ञानं न च वैराग्यं प्रायः श्रेयो भवेदिह ॥ ६१ ॥

जीव अहिंसा जम नियम इन्है आदि गुण जोय । कृष्ण भक्त के संग सदा हैं जु विपेस न सोय ॥
 तथाहि स्कान्दे—

एते न ह्यद्भुता व्याध तवाहिंसाद्यो गुणाः । हरिभक्तौ प्रवृत्ता ये न ते स्युः परतापिनः ॥ ६३ ॥

साधन सब विधि भक्ति के कहैं कछुक करि प्रीति । रागानुगा जु भक्ति की सुनो सनातत रीति ॥
 रागमई मुख्या भगति निति व्रजजन तिहि धाम । तिनकी अनुगति भक्ति कौ रागानुगा जु नाम ॥
 तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

इष्टे स्वारसिकी रागः परमाविष्टता भवेत् । तन्मयी वा भवेद्भक्तिः सात्र रागात्मिकोदिता ॥ ६३ ॥

तृष्णा गाढ़ जु इष्ट मधि यहै राग कौ आहि । है स्वरूप लक्षण यहै सुनो दूसरो ताहि ॥
 ईष्ट मध्य आविष्टता हिये निरन्तर होय । तिहि तटस्थ लक्षण कहैं परम विज्ञजन सोय ॥
 राग मई हरिभक्ति को रागात्मिका जु नाम । तिहि सुनि लोभी होय जन विरल भाग्य अभिराम ॥
 व्रजवासी के भाव की अनुगति करै लुभाय । शास्त्र युक्ति मानें न इह रागानुगा सुभाय ॥
 तथाहि तत्रैव—

रागात्मिकामनुसृता या सा रागानुगोच्यते । विराजन्तीमभिव्यक्तं व्रजवासिजनादिषु ॥ ६४ ॥

तत्रैव—तत्तद्भावादिमाधुर्यं श्रुते धीर्यदपेक्षते । नात्र शास्त्रं न युक्तिश्च तल्लोभोत्पत्तिलक्षणम् ॥ ६५ ॥

वाह्य और अन्तर जु है याके साधन दोय । वाह्य करै साधक वपु जु श्रवण कीरतन जोय ॥
 हिय निज सिद्ध शरीर मधि करि जु भावना ताहि । व्रज मधि सेवन कृष्ण कौ करै रैनदिन आहि ॥
 तथाहि तत्रैव—सेवा साधकरूपेण सिद्धरूपेण चात्र हि । तद्भावलिप्सुना कार्या व्रजलोकानुसारतः ॥ ६६ ॥

निज भावाश्रय भक्ति कौ पाछें लगि कै सोय । सेवा करै निरंतरहि अन्तरमना सु होय ॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्ण स्मरन्जनचास्य प्रेष्ठ निजसमीहितं । तत्तत्कथारतश्चासौ कुर्याद्वासं व्रजे सदा ॥६७॥

दास सख्य पित्रादि औ गण जु प्रेयसी ताहि । इन सब भावनि कौ गननि राग मार्ग मधि आहि ॥

तथाहि तृतीय स्कन्धे—

न कर्हिचिन्मत्पराः शान्तरूपे नन्दयन्ति नो मेऽनिषो लेहि हेतिः ।

येषामहं प्रिय आत्मा सुतश्च सखा गुरुः सुहृदो दैवमिष्टम् ॥६८॥

हयशीर्ष पञ्चरात्रे च—

पति पुत्र सुहृद्वात पितृवन्मित्रवद्धरिं । ये ध्यायन्ति सदोदयुक्तास्तेभ्योऽपीह नमो नमः ॥६९॥

करै भक्ति रागानुगा जोई जन इहिं रीति । चरनिनि मधि श्री कृष्ण के ताकें उपजै प्रीति ॥

प्रेमांकुर के नाम विवि है रति भावहि जान । जिन ही तें बस होत हैं कृष्ण आप भगवान ॥

यहै कछौ अविधेय कौ विवरण कछुक विचार । कछौ जु करि संक्षेप नहि कछौ जाय विस्तार ॥

कृष्ण भक्ति महिमा यहै कही शचीसुत आहि । पावै पद श्रीकृष्ण के जो जन सुनै जु याहि ॥

रूप जु श्री रघुनाथ के चरनिनि की जिहि आस । प्रभु चरितामृत कहत सो कृष्णदास तिहिंदास ॥

रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत लिखे ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे अभिधेय वर्णननाम द्वाविंशति परिच्छेदः ॥

त्रयोविंश परिच्छेदः

चिराददत्तं निजगुणवित्तं स्वप्रेमनामामृतमत्युदारः ।

आपामरं यो विततार गौरकृष्णो जनेभ्यस्तमहं प्रपद्ये ॥७०॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांसु जय गौरभक्त के वृन्द ॥

सुनौ जु अब फल भक्ति कौ प्रेम प्रयोजन जानि । होय भक्तिरस कौ हियें जाकौं सुने सुज्ञान ॥

होय गाढ़ रति कृष्ण मधि प्रेम नाम अभिराम । कृष्ण भक्ति रस कौ यहै स्थाई भाव जु नाम ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

शुद्धसत्त्वविशेषात्मा प्रेम सूर्यांशुसाम्यभाक् । रुचिभिश्चित्तमासृण्वकृदसौ भाव उच्यते ॥७१॥

ए विवि लच्छन भाव के हैं स्वरूप तटस्थ । अब जो लक्षण प्रेम को सुनौ सनातन स्वस्थ ॥

तथाहि तत्रैव—

सम्बद्धं समृण्वितस्वान्तो समत्वातिशयांकितः । भावः स एव सान्द्रात्मा बुधैः प्रेमा निगद्यते ॥७२॥

नारद पञ्चरात्रे—अनन्यमममा विष्णौ ममता प्रेम संगता । भक्तिरित्युच्यते भीष्मप्रह्लादोद्भवनारदैः ॥७३॥

अद्वैत काहू भाग्य करि काहू जीवहि होय । करै संग तब साधु कौ जीव भाग्य जुत सोय ॥

साधु संग तैं होय तब श्रवण कीरतन निज । होय जु साधन भक्ति करि सर्वानर्थ निवर्त्त ॥

भये अनर्थ निवर्त्ति कै भक्ति सु निष्ठा होय । भयें जु तिहिं श्रवणादि मधि पुनि रुचि उपजै सोय ॥

२३ शः परिः

मध्यलीला

२०५

होय सु रुचितै भक्ति मधि अति आसक्ति जु आहि । उपजै हिय आसक्ति ते प्रीति सु अंकुर ताहि ॥

वहै भाव जब गाढ़ है धरै प्रेम जो नाम । है जु प्रयोजन प्रेम सों सब आनन्द कौ धाम ॥

तथाहि भ० २० सिन्धौ—

आदौ श्रद्धा ततः साधुसंगोऽथ भजनक्रिया, ततोऽनर्थनिवृत्तिः स्यात् ततोनिष्ठा रुचिस्ततः ।

अथासक्तिस्ततोभावस्ततः प्रेमाभ्युदञ्चति, साधकानामयं प्रेम्नः प्रादुर्भावे भवेत्कमः ॥७४॥

तथाहि भागवते—सतां प्रसंगान्मम वीर्यसंविदो भवन्त्येति श्लोकादौ द्रष्टव्यः ॥७५॥

जा हरि जन के हृदय मधि इह भावांकुर होय । ताके इतेक चिन्ह हैं कहै शास्त्र सब जोय ॥

तथाहि भ० २० सिन्धौ—

ज्ञान्तिरर्थकालत्वं विरक्तिर्मानशून्यता, आशावद्धः समुत्कंठा नामगाने सदा रुचिः ।

आसक्तिस्तद्गुणारूपायाने प्रीतिस्तद्वसतिस्थले, इत्यादयोऽनुभावाः स्युर्जातभावांकुरे जने ॥७६॥

इह नव अंकुर प्रीति कौ जाके हिय मधि होय । ताके प्राकृत चोम करि होय चोम नहि सोय ॥

तथाहि भागवते—

तं मोपयातं प्रतियंतु विप्रा गंगा च देवी धृतचित्तमीशे ।

द्विजोपसृष्टः कुहकस्तत्तको वा दशत्वलं गायत विष्णुगाथाः ॥७७॥

विना कृष्णसम्बन्ध तिहि काल व्यर्थ नहि जाय । भुक्ति सिद्धि इन्द्रिय विषय तिहि नहि भावै चाय ॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

वाग्भिस्तुवन्तो मनसा स्मरन्त स्तन्वा नमन्तोऽप्यनिशं न तृप्ताः ।

भक्ताः स्रवन्नेवजलाः समग्रमायुर्हरेरेव समर्पयन्ति ॥७८॥

तथाहि भागवते—

यो दुस्त्यजान्दारसुतान् सुहृद्वाज्यं हृदिस्पृशः । जहौ युवैव मलवदुत्तमः श्लोकलालसः ॥७९॥

हैं सर्वोत्तम आपकौ दीन जानि यै जोय । कृष्ण कृपा करि है जु यह दढ़ करि माने सोय ॥

तथाहि पादो—

हरौ रति वहन्नेव नरेन्द्राणां शिखामणिः । भित्तामटन्नरिपुरे श्वपाकमपि वन्दते ॥८०॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

न प्रेमा श्रवणादि भक्तिरपि वा योगोऽथवा वैष्णवो,

ज्ञानं वा शुभकर्म वा कियदहो सजातिरप्यस्ति वा ।

हीनार्थाधिकसाधके त्वयि तथाप्यच्छेद्यमूला सती,

हे गोपीजनवल्लभ ! व्यथयते हाहा मदाशौच माम् ॥८१॥

होय समुत्कंठा सदा हियौ लालसा धाम । नाम गान मधि रुचि सदा लेय कृष्ण कौ नाम ॥

तथाहि कृष्णकर्णामृते—

त्वच्छैशवं त्रिभुवनान्द्रुतमित्यवेहि मन्त्रापलञ्च तव वा मम वाधिगम्यं ।

तत्किं करोमि विरलं मुरलीविलासी मुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्यां ॥८२॥

तथाहि भ० २० सिन्धौ—

रोदनविदुमकरन्दस्वन्दिदगिन्दीवराद्य गोविन्द ।

तव मधुरस्वरकण्ठी गायति नामावलि बाला ॥८३॥

सुविलासा महाभावपरमोत्कर्षतर्पिणी । गोकुल प्रेमवसतिजगत् श्रेणी लसद्व्यशाः ॥

गुण्यपि तगुरुस्नेहा सखीप्रणयितावशा । कृष्णप्रियावलीमुखया सन्तताभवकेशवा ॥

नायका जु नायक सु पुनि रस आलंबन दोय । श्रीराधा ब्रजराजसुत दोय मुख्य ये सोय ॥
ऐसै दास जु दास मधि सख्य सखागण जोय । वत्सल मधि पित मात आलंबन आश्रय सोय ॥
इन रस कौ अनुभव करै जैसें जन गण आहि । होय जु रस जा भांति हिय सुनौ जु कारण ताहि ॥

भक्तिरसामृतसिन्धौ—

भक्तिनिधूतदोषाणां प्रसन्नो ज्वलचेतसां । श्रीभागवतस्तनानां रसिकासंगरंगिणाम् ॥

जीवनोभूतगोविन्दपादभक्तिसुखश्रियां । प्रेमान्तरंगभूतानि कृष्णान्यवानुतिष्ठताम् ॥

भक्तानां हृदि राजन्ती संस्कारयुगलोज्ज्वला । रतिराजन्दरूपैव नीयमानानुरस्यतां ॥४४॥

कृष्णादिभिर्विभावाद्भेगैर्गतरनुभावाप्यनि । पौदानन्दचमत्कारकाष्ठाभाषयते पराम् ॥

यहै जु रस आस्वाद सों नहि अभक्त गण ताहि । कृष्ण भक्तगण करत हैं रस आस्वादन आहि ॥

तथाहि भ० २० सिन्धौ—

सर्वार्थैव गुरुहोऽयमभक्तैर्भगवद्रसः । तत्पादाम्बुज सङ्गीतौ भक्तौ रेवानुरस्यते ॥४५॥

यहै प्रयोजन विवरन जु कहीं अल्प करि सोय । पंचम पुरुषार्थ यहै कृष्ण प्रेम धन जोय ॥

हमनि प्रथम जु प्रयाग मधि यह रस कौ जु विचार । तुम्हरे माई रूप कौ कीयौ शक्ति संचार ॥

तुम हूँ हृद करि करहुगे भक्ति शास्त्र जु प्रचार । तीर्थ लुप्त मथुरा जु के करौ तिनहि उद्धार ॥

बृन्दावन मधि कृष्ण कौ सेवा जन आचार । शास्त्र स्मृति वैष्णव जु करि करिहो इनहि प्रचार ॥

रहनि युक्त वैराग्य की सबै सिखाई आहि । सुष्क ज्ञान वैराग्य सबै कियौ निषेध जु ताहि ॥

गीतायां—

अदोष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च ।

निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षामीत्यादीनि श्लोकानि ४८।४५

भागवते—

चीराणि किमित्यादि च ॥४६॥

पूछो सब सिद्धान्त तब तिनहै सनातन आहि । कहै गूढ़ भागवत के प्रभु सिद्धान्त जु ताहि ॥

कही है जु हरिचंस मधि गोलोक स्थिती सोय । कृष्ण स्तुति जब आय कैं इन्द्र करी है जोय ॥

मौशल लीला और हरि अन्तर्ध्यान बखान । कहै केश अवतार जे जे विरुद्ध विख्यान ॥

महिषी हरणादिक चरित है माया के ऐन । अर्थ सिखायें होय ज्यौ सब सिद्धान्त सुखेन ॥

तब सनातन गौर कें चरण सीस निज देय । कियौ निवेदन दीन हैं दांतनि मधि तृण लेय ॥

नीच जाति सेवी जुहौं अति पामर हम जोय । सिखये तुम सिद्धान्त जे अजहि अगोचर सोय ॥

ये सिद्धान्त अमृत उदधि मो मन तुच्छ जु आहि । हैं न सकैं मेरी हियौ एक बिंदु ह ताहि ॥

पंगु नचै बँ कौ प्रभु है तुम्हरो मन जोय । मम माथे पर चरण धरि मोहि देहु वर सोय ॥

सकल फुरो तुव हृदय मधि हम जो सिखयो तोहि । हैं है प्रभु तुम्हरे इंद्री वर ही तें बल मोहि ॥

तिहि सिर पर कर धारि कैं तब महाप्रभु आहि । फुरौ तुम्हरे हृदय सब इह वर दीनौ ताहि ॥

२३ श परिः]

मध्यलीला

[२०९]

प्रेम पयोधि कौ कहीं संक्षेप जु संवाद । कहीं जाय विस्तार नहि प्रभु जू कौ परमाद ॥
प्रभु उपदेशामृत सुनै जोई जन इक बार । वेगि मिलैं सो ताहि श्रीकृष्ण प्रेम धनसार ॥
श्री रूप जु रघुनाथ के चरननि की जिहि आय । प्रभु चरितामृत सौ कहै कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ कहै ब्रजमापादि प्रकास ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते मध्यखंडे प्रेम पयोजन वर्णनं नाम त्रयोविंशति परिच्छेदः ॥

चतुर्विंश परिच्छेदः

आत्मारामेति पञ्चार्कस्यार्थोऽनूयः प्रकाशयन् । जगत्तमो जहाराव्यात् स चैतन्योदयाचलः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
तब सनातन जू महाप्रभु जू के पद धारि । लगे कहन कछु फेरहु करि विनती सु विचार ॥
सुनी है जु तुम प्रथम ही सार्वभौम सों जोइ । एक पदय के अर्थ दस आठ किये है सोइ ॥
तथाहि—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्मन्थाऽप्युरुक्रमे । कुबन्त्यहेतुर्की भक्तिमित्यंभूतगुणो हरिः ॥ २ ॥

सुनिकें आचरज हृदय मम उत्कटित अति आहि । सुनैजु श्रवन सिराय ज्यौं कहीं कृपाकरि ताहि ॥

प्रभु बोलें हम बावरे बचन हमारौ जोय । सार्वभौम वारो जु करि सांवहि मानें सोय ॥

कहा प्रलाप्यौ हम तहां नहि कछु सुधि है सोय । जो तुम संग प्रतापतें कछु सुधि हैं हैं जोय ॥

सहज हमारें होय कछु नहीं अर्थकौ भास । तुम सब संग के बल जु करि होय कछु सु प्रकास ॥

एकादस पद पदय इहि है अति निर्मल जोय । प्रयक अर्थ नाना पदनि जग मगात हैं सोय ॥
तथाहि विश्वप्रकासे—

आत्मा वेह मनो ब्रह्म स्वभाव धृति बुद्धिपु प्रयत्ने च इति ॥ ३ ॥

ते हैं आत्मारामगण रमै सात इन जोय । आगैं आत्मारामगण गणना करि हैं सोय ॥

मुनि आदि शब्द जैहैं सुनौ तिन अर्थ तुम न्यारे न्यारे कहें पांछें मिलें होय जोयी हैं ।

कहिये मुनिशब्द ये मौनी औ मनन सील औ तपस्वी व्रती जती ऋषि मुनि होयी हैं ।

निर ग्रंथ शब्द कहैं जो अविद्या ग्रंथहीन विधि निषेध शास्त्रादि ज्ञान जानौ सोई है ।

मूर्ख नीच म्लेच्छ आदि शास्त्ररिक्तगण धनी और निरग्रंथ होय धन विन कोई है ॥

कहैं उरुकम शब्द करि जिहि क्रम बढ़ौजु होय । कहैंजु पुनि क्रम शब्द करि पद विक्षेपन सोय ॥

विश्वप्रकाशे—

निर्निश्चये निष्कमार्थे निर्निर्माणनिषेधयोः । प्रत्ये धने च सन्दर्भे वर्णसंग्रहोऽपि च ॥ ४ ॥

शक्ति कल्प जुत आक्रमण परिपाटी पुनि ताहि । एक चरण चालन किये कंपित त्रिभुवन आहि ॥

तथाहि—त्रिसाम्यसद्वनदुरुकम्पयानं ॥ ५ ॥

विभु स्वरूप व्यापक शक्ति धारण पोषण वर्त्य । परव्योम ईश्वर सकति गोलोकहि माधुर्य्य ॥
करै जु माया शक्ति करि ब्रह्मांडादिक जोय । परिपाटी तिन जननि की करै आप प्रभु सोय ॥

तथाहि—क्रमः शक्तौ परिपाट्यां क्रमञ्चालनकम्पयोः ॥ ६ ॥

हेतु परस्मै पद यहै पद कुर्वति सु जोय । हरि सुख हेतु सु भजन कौ कहै जु आसय सोय ॥

तथाहि—स्वरितचितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ ७ ॥

हेतु शब्द कहिये भुगति बाँझा जिती अपार । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति पुनि मुख्यसु तीन प्रकार ॥

एक भुक्ति पद करि कहै भोग प्रकार अपार । मिद्धि कहै अष्टादस जु मुक्ति जु पांच प्रकार ॥

सोइ अहेतुकि भक्ति है ये न होय जा मांहि । कृष्ण कौतुकी तिही वस औरन के वस नांहि ॥

भक्ति शब्द कौ अर्थ है दस प्रकार कौ जोय । इक साधन प्रेमा भगति नव प्रकार हैं सोय ॥

रति लक्षणा जु और पुनि प्रेम लक्षणा जोय । भाव लक्षणा औ महा भाव लक्षणा सोय ॥

सांत भक्त की रति जु सो वदै प्रेम परजंत । दास भगति की है जु रति राग दसा जिहि अंत ॥

सखा गृथ के रति जु अनुराग अवधि है जाहि । तात मात के स्नेह अनुराग सीव है ताहि ॥

महाभाव सीवा लहै प्रेयसि गण रति जोय । भक्ति शब्द के ये सबै अर्थ सु महिमा सोय ॥

शब्द जु इत्थंभूत गुण है ताके मधि जोय । व्याख्यान ताकौ करै सुनौ अवै तुव सोय ॥

इत्थंभूत जु शब्द यह भिन्न अर्थ है ताहि । तैसें हीं गुण शब्द कौ अर्थ भिन्न है आहि ॥

अर्थ जु पूर्णानंदमय इत्थंभूत हि आहि । आगे ब्रह्मानंद हूं त्रिण प्राय हैं जाहि ॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

त्वत्साक्षात् करणाल्हादविशुद्धाविस्थितस्य मे । सुखानि गोप्पदायन्ते ब्राह्मण्यपि जगद् गुरो ॥ ८ ॥

सर्वाकर्षक सवनि कौ आल्हादक है जोय । सब ही के मन श्रवन कौ महारसायन सोय ॥

अपने रस करि करै जो सर्व विस्मरण आहि । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति सुख गंध छुटावै जाहि ॥

जिन के गुण की है महाशक्ति अलौकिक जोय । करि राखे श्री कृष्ण कौ कृपा जु परवस सोय ॥

शास्त्रयुक्ति नाही इहां है सिद्धांत विचार । यह सुभाव गुण कौ तिहीं माधुरिता कौ सार ॥

अर्थ यहै गुण शब्द कौ हरि के गुण जु अपार । सत चित रूप जु गुण सबै पूर्णानंद विचार ॥

ऐश्वर्य्य माधुर्य्य तिहि औ कारुण्य स्वरूप । पूरणता निज जन विषै वत्सलता सु अनूप ॥

निज स्वरूप पर्यंतलौं हौ वदान्यता ताहि । और अलौकिक रूप रस सौरभदि गुण आहि ॥

क्योंहूं एक गुण करि करै आकर्षण मन काहि । सौरभादि गुण करि हरयौ सन क्रादिक मन ताहि ॥

तथाहि—तस्यारविन्दनयनस्य पदारविन्देति ॥ ९ ॥

हरयौ जु मन सुकदेव कौ लीला श्रवणजु ताहि । हरयौ जु श्रीअंग रूप करि गोपीगणमन आहि ॥

तथाहि—अजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयमिति, परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्य इति ॥ १० ॥

तथाहि—ब्रीत्तालकावृतमुखं तत्र कुण्डलश्रिगण्डस्थलाधरसुधं हसिताबलोकं ।

दत्ताभयञ्च भुजदण्डयुगं विलोक्य वत्तः भ्रियैकमणञ्च भवाम दास्यः ॥ ११ ॥

मधुर रूप गुण श्रवण करि रुक्मिण्यादिक जोय । आकर्षण तिनकौ कियौ जानतहैं सब कोय ॥
तथाहि—

श्रुत्वा गुणान्भुवनसुन्दर श्रवतां ते निर्विशय कर्णविवरैर्हरतोद्गतापं ।
रूपं दृष्ट्वा दृशिमतामखितार्थं लाभं त्वय्यच्युताविशति चित्रमपत्रपं मे ॥ १२ ॥

हरै जु मुरलीनाद करि लक्ष्म्यादिक मन जोय । भाव जोग्य जग में जिते जुवती जन हूं सोय ॥
तथाहि—यद्वाञ्छया श्रीर्ललना इत्यादि १३

तथाहि—

काश्यगं ते कलपदामृतवेणुगीत संमोहितार्थचरितान्न चलेत्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्यसौभगमिदञ्च निरीक्ष्य रूपं यद्गोद्विजद्रुममृगा पुलकान्यविभ्रन ॥ १४ ॥

निज गुरु जन के तुल्य हैं जे नारीगण आहि । वात्सल्य रस करि करै आकर्षण गुण ताहि ॥
दास्य और सख्यादिक जु भावनि करि कैं सोय । पुरुषादिक गणकौ करै आकर्षण गुण जोय ॥

अवर पक्षि मृग तरु लता चेतन औ जड़ आहि । प्रेम मत्त करिकैं करै आकर्षण गुण ताहि ॥

तथाहि—यद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यविभ्रन ॥ १४ ॥

अर्थ जु बहु हरि शब्द के परम मुख्य हैं दोय । हरै अमंगल सब हरै मनहि प्रेम दै सोय ॥

जिहिं तिहिं भांति करै श्रवण जोई सोई आहि । पाप जु चारि प्रकार के हरण करै जे ताहि ॥

तथाहि—

यथाग्निः सुसमृद्धाग्निः करोत्येधांसि भस्मसात् । तथा मद्विषया भक्तिरुद्धवैनांसि कृत्स्नशः ॥ १६ ॥

करै तवै बाधक भगति कर्म अविद्या नास । श्रवणादिक कौ फल जु है प्रेमा करै प्रकास ॥

निज गुण करि ताकौ हरै वपु इन्द्रिय मन आहि । ऐसैं कृष्ण कृपाल हैं ऐसैं गुणगण ताहि ॥

गुण करि सब मन हरि प्रचुर पुरुषारथनि छुटाय । यहै मुख्य हरि शब्दकौ लक्षण कियौ बनाय ॥

हैं जु च अपि ह्यां शब्द विव ये अव्यय हैं दोय । जाही अर्थ लगाइये कहै अर्थ ये सोय ॥

तऊ कहै जु च शब्द के मुख्य अर्थ ये सात । हैं जु मुख्य अति शब्द के सात अर्थ विख्यात ॥

तथाहि विश्वप्रकाशे—

चान्वाचये समाहारेऽन्योन्यार्थेच समुचये । यत्तान्तरे तथा पादपूरणे व्यवधारणे ॥ १७ ॥

तथाहि तत्रैव—

अपि संभावनाप्रश्नशंकागर्हासमुच्चये । तथा युक्तपदार्थेषु कामाचारक्रियासु च ॥ २८ ॥

इह एकादस पदनि कौ अर्थ सु निश्चय जान । करै श्लोककौ अर्थ अव जो जिहिं लगे प्रमान ॥

ब्रह्म शब्द कौ अर्थ तत्व सबै बृहत्तम जोय । है स्वरूप ऐश्वर्य्य करि जिहिं सम नाहीं कोय ॥

तथाहि—बृहत्त्वाद्वृहत्त्वाच्च यद्रूपं ब्रह्मसंज्ञितं ॥ १६ ॥

तिहीं ब्रह्म शब्दहि जुकरि कहै स्वयं भगवान । जिहि विन तीनों काल मधि वस्तु नहीं कछु आन ॥

तथाहि—

अहमेवासमेवाप्रे नान्यद्यत् सदसत् परं । पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्यत सोऽस्म्यहं ॥ २० ॥

आत्मा शब्द करि कृष्ण जु बृहत्तत्त्व जो रूप । सर्वव्यापक सबनिके साक्षी परम स्वरूप ॥

तथाहि—आतत्त्वाच्च मातृत्वादात्मा हि परमो हरिः ॥२१॥

व्याप्ति हेतु तिहिं कृष्णकी साधन त्रिविधजुआहि । ज्ञान जोगअरु भक्ति सुठि लक्षण न्यारे ताहि ॥

इन तीनों साधननि करि तीन रूप तिहिं भास । ब्रह्म और परमात्मा औ भगवत्त्व प्रकास ॥

तथाहि—ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्दते ॥२२॥

जदपि ब्रह्म परमात्मा कहैं कृष्ण कौं दोइ । निर्विशेष व्यापक कहैं रूढ़ि वृत्ति करि सोय ॥

निर्विशेष ही ब्रह्म के ज्ञान मार्ग करि भास । अंतर्जामी रूप करि जोग मार्ग जु प्रकास ॥

राग भक्तिविधि भक्तिये विविहैं भक्तिस्वरूप । निज भगवत भगवत्त्व करि तिहिं प्रकास विविरूप ॥

राग भक्ति करि पाइये श्री ब्रज के मधि जोय । कृष्ण स्वयं भगवान हैं ब्रज पति नंदन सोय ॥

तथाहि—

नायं सुखापो भगवान् देहितां गोपिकासुतः । ज्ञानिनाञ्चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥२३॥

पुनि विधि भक्ति जु मार्ग करि देह पारपद होय । जाय भक्त वैकुण्ठ कौ निहचैं करिकें सोय ॥

तथाहि—

यच्च ब्रजंत्यनिमिषामृषभानुवृत्त्या दूरे यमा ह्युपरि नः स्पृहणीयशीलाः ।

भक्तुर्मिथः सुयशसः कथनानुरागवैकल्यवाष्पकलया पुलकीकृतांगाः ॥२४॥

सो जु उपासक होतहैं त्रिविध प्रकारहि जान । इक अकाम बांछक मुकति सर्व काम पुनि आन ॥

तथाहि—

अकामः सर्वकामो वा मोक्षकाम उदार धीः । तीव्रेण भक्तियोगेन यजते पुरुषं परं ॥२५॥

बुद्धिमान कौं होय जो अर्थ विचारहि जान । निज कारज के लोभ करि तऊ भजैं भगवान ॥

भक्ति विना साधन सब दैन सकैं फल कोइ । भक्ति देय सब भलनि कौं प्रबल स्वतंतर सोय ॥

अजागल स्तन न्याय है जितेक साधन आन । याही तें हरि कौं भजैं बुद्धिमान जन जान ॥

तथाहि—

चतुर्विधा भजंते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन । आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥२६॥

आर्त और अर्थार्थी हैं सकाम मधि दोय । ज्ञानी औ जिज्ञासु पुनि मोक्षकाम विव सोय ॥

येऊ चारों सुकृति हैं महामाग्य जुत जान । होय जु सो सो काम तजि शुद्ध भक्ति रसवान ॥

साधु भक्तके संग करि हरिकी कृपा जु पाय । कामादिक दुःसंग तजि शुद्ध भक्ति लहि जाय ॥

तथाहि—

सत्संगान्मुक्तदुःसंगो हातुं नोत्सहते बभूवुः । कीर्त्यमानं यशो यस्य सकृदाकर्ण्य रोचनं ॥२७॥

कैतव आतम वंचना कहैं संग इन दोय । कृष्ण कृष्ण की भक्ति विन अन्य कामना जोय ॥

तथाहि—धर्मः प्रोक्तकैतवोऽत्र परमो निर्मात्सरयाणां सतां ॥२८॥

कैतव मुख्य प्र शब्द करि कही मुक्ति की चाह । श्री धर स्वामी पद यही कियौ अर्थ अवगाह ॥

अज्ञ ज्ञानि कामी जनहि दया जुक्त भगवान् । निज पद पल्लव दै करैं इच्छा कौं जु पिधान ॥

तथाहि—

सस्यं दिशत्प्रथितमर्थितो नृणां नैवार्थदो यत् पुनरर्थितो यतः ।

स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ॥२९॥

साधु संग श्री कृष्ण की दया भक्ति जु सुभाव । ए तीनों जु छुटाय सब करैं कृष्ण मधि भाव ॥

आगें जिहिं जिहिं अर्थ कौं करि हैं व्याख्या जोय । प्रभु गुण के आस्वाद कौं हेतु जानि हो सोय ॥

श्लोक व्याख्या हित प्रथम यहै कह्यौ आभास । ताही कौं अव करत हैं मूल अर्थ परकास ॥

हैं जु उपासी ज्ञान पथ द्वै प्रकार के जान । केवल ब्रह्म उपासक जु औ मुमुक्षु इक आन ॥

केवल ब्रह्म उपासकनि तीन भेद हैं जोय । इक साधक औ ब्रह्ममय प्राप्त ब्रह्म लय सोय ॥

नही जु केवल ज्ञान करि मुक्ति मुक्ति करि होय । भक्ति सु साधन करि यहै प्राप्त ब्रह्मलय सोय ॥

भक्ति स्वभाव जु ब्रह्म तें करि आकर्षण ताहि । दिव्य देह दै कृष्ण कौं भजन करावैं आहि ॥

होय भक्त वपु लहे तें गुण कौं सुमिरण ताहि । करैं जु गुण आकृष्ट हैं निर्मल भजन सु आहि ॥

तथाहि—मुक्ता अपि लीलया विग्रहं कृत्वा भगवन्तं भजन्त इति ॥३०॥

सुक सनकादिक जन्म तें हुते ब्रह्ममय जोय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट हैं कृष्ण हि भजैं जु सोय ॥

सनकादिक कौं मन हर्यौ सौरभ कृपा जु ताहि । करैं जु गुण आकृष्ट हैं निर्मल भजन सु आहि ॥

तथाहि—तत्पारविन्दनयनस्य पदारविन्देति ॥३१॥

व्यासकृपा करि शुक्लजु के लीलादिक सुनि हीय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट हैं करैं भजन मन दीय ॥

तथाहि—हरेर्गुणाक्षिप्रमति भगवान् वादरायणिः । अध्यगान्महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः ॥३२॥

परिनिष्ठितोपि नैगुण्य इत्यादिच ॥३३॥

नव योगेश्वर जन्म तें साधक ज्ञानी सोइ । विधि सिव नारद वदनतें हरिगुण सुनिकें जोय ॥

करैं जु गुण आकृष्ट हैं भजन कृष्ण कौ आहि । एकादश के मधि कियौ विवरण भक्तिहि ताहि ॥

अन्यच्च—

अक्लेशां कमलमुखः प्रविश्य गोष्ठं कुर्वन्तःश्रुति शिरसां श्रुति श्रुतिज्ञाः ।

उत्तुंगं यदुपुरसंगमाय रंगं योगेन्द्राः पुलकभृतो नवाप्यवापुः ॥३४॥

ज्ञानी मोक्षाकांक्षि है तीन प्रकार अनूप । इक मुमुक्षु जीवन मुक्त औ इक प्राप्ति स्वरूप ॥

हैं मुमुक्षु बहु जगत मधि संसारक जन जोय । करैं जतन करि मुक्ति हित हरि कौ सेवन सोय ॥

तथाहि—

मुमुक्षुवो घोररूपान हित्वा भूतपतीतय । नारायणकलाः शान्ता भजन्ति ह्यनसूयवः ॥३५॥

तिन सबहिनको साधु संग हरि गुण याहि पुराय । भजन करावैं कृष्ण कौ मोक्षजु चाह छुटाय ॥

तथाहि हरिभक्तिसुधोदये—

अहो महामन्वहुदोषदुष्टोऽप्येकेन भात्येष भवो गुणेन ।

सत्संगमाख्येन सुखावहेन कृताय नो येन कृशा मुमुक्षा ॥३६॥

श्री नारद के संग करि सौनकादि मुनि जोय । कियौ मुमुक्षा छाडिकें भजन कृष्ण कौ सोय ॥

कोऊ दरशन कृष्ण कौ कृष्ण कृपा लहि कोय । छाँड़ि मुमुक्षा गुननि करि भजै चरण तिहिं सोय ॥
तथाहि—भः रः सिन्धौ

अभिन्नुखधनमूर्त्तौ परमात्मनि वृष्णिपत्तने स्फुरति ।

आत्मारामतया मे वृथा गतो वत चिरंकालः ॥ ३७ ॥

जीवन मुक्ति अनेक तिहि जान भेद विवि मुक्त । भुक्ति मुक्ति इक ज्ञान करि माने जीवन मुक्ति ॥
निसि दिन प्रभुकी भक्ति करि जीवन मुक्त जु होय । गुणाकृष्ट है भजत हैं कृष्णचन्द्र कौ सोय ॥
जो जन शुष्क जु ज्ञानि करि जीवन मुक्त जु आहि । हरि पद के अपराध करि अधः पात हैं ताहि ॥
तथाहि—

येऽन्येर्विन्दात् विमुक्तमानिनस्त्वयस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।

आरुह्य कृतश्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृत्य युष्मदंग्रयः ॥ ३८ ॥

गीतायां—

ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मा न शोचति न काञ्चति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ३६ ॥
अन्यत्र च—

अद्वैत वीथीपथिकैरुपास्याः स्वानन्दसिंहासनलब्धदीप्ताः ।

हठेन केनापि वयं शठेन दासीकृता गोपवधूवितेन ॥ ४० ॥

प्राप्त स्वरूप जु भक्त बल दिव्य देह लहि जोय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट है भजै कृष्णपद सोय ॥
तथाहि—

मुक्ति हित्वान्यथारूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः ॥ ४१ ॥

मुक्ता अपि लीलिया विग्रहं कृत्वेति ॥ ४२ ॥

कृष्ण बहिर्मुख दोष करि माया तें भय जोय । हरि उन्मुख कौ देखतें माया मुक्त जु होय ॥
तथाहि—“भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादिति श्लोक” “दैवी ह्येषा गुणमयीति गीतायां” येऽन्येर्विन्दात्

विमुक्तमानिनेति” “श्रेयः सृतिं भक्तिमुदस्यति,” “मुखबाहुरुपादेभ्य इति ॥ ४७ ॥

भक्ति विना नाहिन मुक्ति मुक्ति भक्ति सौ होय । भक्त अवश्य भजै हरिहि पाय मुक्ति हूं जोय ॥
तथाहि—मुक्ता अपि लीलिया विग्रहं कृत्वेति ॥ ४८ ॥

येई आत्माराम छह हरिकौ भजै सुजान । पृथक् पृथक् जु चकार ह्यां अपि कौ अर्थ बखान ॥

करै जो आत्माराम हूं कृष्ण भक्ति निहकाम । कृष्ण भजन आसक्त है यह मुनि अर्थ सुवाम ॥

निरग्रन्था माया विना कोई विधि करि हीन । जहां जु जोई लगे सो वहै अर्थ आधीन ॥

करियै जवै च शब्द कौ इतरेतर जो अर्थ । तवै एक ही अर्थ कौ कहै जु परम समर्थ ॥

आत्मारामा फिरि यहै कहियै जव पटवार । पंच आत्माराम पट लोप होय जु चकार ॥

आत्मारामा शब्द यह रहे एक अवशेष । आत्मारामा इक पद जु जन पट कहै विशेष ॥
तथाहि—

स्वरूपानामेकशेष एकविभक्तौ उक्तार्थानामप्रयोगः रामश्च रामश्च रामश्च रामा इतिवत् ॥ ४६ ॥

पद चकार सोई तवै कहै समुच्चय जोय । आत्मारामा फिरि मुनय भजै कृष्ण कौ सोय ॥
निग्रन्था अपि यह सु अपि संभावनाहि जान । एई सातौं अर्थ हम प्रथम किये व्याख्यान ॥

अन्तर जामी सेवक जु आत्माराम बखान । सोऊ आत्माराम है योगी पट पद जान ॥
इक सबीज निर्वीज ए दोय भेद हैं ताहि । इक इक के त्रयभेद हैं पट विभेद भौ आहि ॥

तथाहि तत्रैव—केचित्स्वदेहांतहृदयावकाशे प्रादेशमात्रं पुरुषं वसन्तमिति ॥ ५० ॥

तच्चापि चित्तवडिशं शनकैर्वियुक्तं ॥ ५१ ॥

आरुरुक्षु जोग हि जु इक योगारूढ़ जु आन । और भेद है तीसरौ प्राप्त सिद्ध इक जान ॥
तीन तीन ये भेद जब किये दुहुनि के आहि । जोगी आत्माराम जो पट प्रकार भौ ताहि ॥

तथाहि—आरुरुक्षोमुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते । योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ५२ ॥

तत्रैव—यदा हि नेद्रियार्थेषु न कर्म स्वप्नुषज्जते । सर्व संकल्प संन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ५३ ॥

जन संगादिक हेतु लहि ये पट योगी जोय । कृष्णा गुणनि आकृष्ट है कृष्णहि भजै जु सोय ॥
जो अपि अर्थ च शब्द कौ कहै इहां हूं ताहि । मुनि निरग्रन्थ जु शब्द कौ अर्थ पूर्ववत् आहि ॥

उरुक्रम विषै अहेतुकी कहूं अर्थ है कोय । कहाँ अर्थ इतरेतर जु परम समर्थ जु सोय ॥
एई सब जन शांत है भजै कृष्ण कौ आहि । सांत भक्ति करिकें तवै कहियै नाम जु ताहि ॥

आत्म शब्द करि मन कहै जोई रमै जु ताहि । सोऊ हरिजन संग करि भजै कृष्ण पद आहि ॥
तथाहि श्रुतिस्तुतौ—

उदर मुपासते इत्यादौ हृदयमारुणयो दहरमिति ॥ ५४ ॥

कृष्ण गुणनि आकृष्ट है महामुनि हूं होइ । भक्ति करै जु अहेतुकी है निरग्रन्थ जु सोइ ॥
आत्म शब्द करि यत्न कहि करिकें जतनहि सोय । मुनिहूं कृष्ण हि भजत हैं गुण आकृष्ट जु होय ॥

तथाहि— तस्यैव हेतोः प्रयतेत कोविदो न लभ्यते यद्भ्रमतामुपचर्यथः ।

तल्लभ्यते दुःखवदन्यतः सुखं कालेन सर्वात्र गभीर रंहसा ॥ ५५ ॥

तथाहि—सद्वर्त्मस्यावबोधाय येषां निर्वर्णान्धनी मतिः । अचिरादेव सर्वार्थः सिध्यत्येषामभीष्टितः ॥
है अपि अर्थ च शब्द कौ अपि अवधारण जोय । जतन आग्रह विन भगति करै प्रेम नहि होय ॥

तथाहि—साधनौघैरनासंगैरलभ्या सुचिरादापि । हरिणा चाश्ददेयेति द्विधा सा स्यात् सुदुर्लभा ॥ ५७ ॥

गीतायां— तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकमिति ॥ ५७ ॥

आत्म शब्द करि धृति कहै रमै धैर्य मधि जोय । धैर्यवंत है कैं करै भजन कृष्ण कौ सोई ॥
कहियतु है मुनि शब्द करि पक्षि भृंगगण जोय । औ निरग्रन्थ जु शब्द करि है मूरख जन सोइ ॥

तथाहि— प्रायो वताम्ब मुनयो विहगा वनेऽस्मिन् कृष्णेक्षितमित्यादि ॥ ‘एतेऽनिल’ इत्यादि ।

‘प्रायो जामी मुनिगणा भवदीय मुख्या इति’ ॥ ६१ ॥

‘सरसि सारसहंसविहंगाश्चारुगीतहतचेतस एव । हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः’ ॥

‘किरात हूणान्ध्रपुलिन्दपुक्कशा आभीरशुम्भा यवनाः खसादयः ।

येऽन्ये च पापा यदपाश्रयाश्रयाः शुष्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः’ ॥ ६३ ॥

पूरणता ज्ञान हि कहै कैं धृति शब्द जु सोय । दुख अभाव उत्तम लवधि करि पूरणता होय ॥

तथाहि भ० २० सिन्धौ—

धृतिः स्यात्पूर्णज्ञान दुःखाभावोत्तमाप्तिभिः । अप्राप्तातीतनष्टार्थानभिसंशोचनादिकृत् ॥६४॥
कृष्णभक्त दुखहीन है चाह अन्य करि हीन । कृष्ण प्रेम सेवा महा पूर्णानंद प्रवीन ॥
भागवते—मत्सेवया प्रतीतं ते सालोक्यादि चतुष्टयं । नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतं ॥६५॥
गोस्वामिना—हृषीकेशे हृषीकाणि यस्य स्थैर्यगतानि हि । स एव धैर्यमानोति संसारे जीवचञ्चले ॥६६॥
अब धारण मधि इहां अपि जु समुच्चय जोय । है धृतिमंत भजै हरिहि पक्ष मूर्खगन सोय ॥
आत्म शब्द करि मति कहै जो जन बुद्धि विशेष । साधारण बुद्धि जु सहित है सब जीव अशेष ॥
आत्माराम रमै सुमति सो है दोय प्रकार । पण्डित मुनि निरग्रंथ औ मूर्ख जन अविचार ॥
लहि विचार रति बुद्धि हरि संग साधु करि सोइ । शुद्ध भक्ति हरिचरण मधि करै छाडि सब जोइ ॥

तथाहि—अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते । इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥६७॥

भागवते—ते वै विदन्त्यतितरन्ति च देवमाथां स्त्रीशूद्रहूनशबरा अपि पापजीवाः ।

यद्यद्भुतकर्मपरायणशीलशिक्षां स्तिर्यग् जना अपि किमु श्रुतधारणा ये ॥६८॥

जब विचार करिके भजै हरि चरणनि कौ आहि । जाते पावै कृष्ण कौ सो मति हरि दै ताहि ॥

तथाहि—ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥६९॥

साधु संग सेवा जु हरि श्री भागवत जु नाम । ब्रज मधि वास जु पंचये साधन मुख्यभिराम ॥
इनही पांचन मधि करै एक स्वल्प हूं कोय । प्रेम उदय सद्बुद्धि कै कृष्ण चरण मधि होय ॥
तथाहि—दुरुहाद्भुतवीर्योऽस्मिन् श्रद्धादूरेऽस्तु पञ्चके । यत्र स्वल्पोऽपि सम्बन्धः सद्भिः भावजन्मने ॥७०॥
है उदार महती सु जिहिं सर्व उत्तमा बुद्धि । नाना काम भजै तऊ लहै भक्ति की सिद्धि ॥

तथाहि—अकामः सर्वकामो वा इत्यादि ॥७१॥

ते सब काम छुटायकें भक्ति प्रभावजु आहि । करै भक्ति हरिचरण मधि खेंचि गुणनि करि ताहि ॥

इत्यंभूत गुणो हरिरिति ॥७२॥ स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवमिति ॥७३॥

आत्मा शब्द स्वभाव करि तहां रमै जन जोय । आत्माराम जु जीव जत थावर जंगम सोय ॥
है स्वभाव यह जीव कौ कृष्णदास अभिमान । भौ वपु आत्मज्ञान करि आछादित सो ज्ञान ॥
कृष्ण कृपादिक हेतु तें उदै स्वभाव जु होय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट है भजै कृष्ण कौ सोय ॥
एवहि अर्थ च शब्द है अपि च समुच्चय जान । है कैं आत्माराम हीं भजै कृष्ण भगवान ॥
सनकादिक मुनिजन सर्व जीव जु उत्तम सोय । है निरग्रंथ जु मूर्ख पसु नीच स्थावर जोय ॥
व्यास मुक जु सनकादिकों उदै स्वभाव जु होय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट है भजै कृष्ण कौ सोय ॥

तथाहि—तद्योऽद्वयः स्वगमृगाः सदयाव्रलोकैर्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥७४॥

तथाहि—किरातहृणान्धपुलिन्दपुक्कसाः आभीरशुम्हेति ॥७५॥

आगे तेरह अर्थ किय और जु पट ये दोइ । अर्थ भये उन्नीस ये मिलिकें दोऊ सोइ ॥
अर्थ किये उन्नीस ये आगे सुनौ जु आन । आत्म शब्द देहहि कहै चारि अर्थ तिहिं जान ॥

देहोपाधिक ब्रह्म कौ भजै देह मधि सोय । करै बहु सतसंग करि भजन कृष्ण की जोय ॥
तथाहि—उदरमुपासते य ऋषिबर्त्मसु कूर्पटशेति ॥७६॥ इत्यंभूतगुणो हरिरिति च ॥७७॥

देहारामी कर्म रति जाझिकादि जन जोय । कर्म छाडि सतसंग करि करै भजन ही सोय ॥
तथाहि—कर्मण्यग्निमन्त्रनाशवासे धूमधूमात्मनां भवान् । आपापयति गोविन्दपादपद्मासवं मधु ॥७८॥

जिते तपस्वी प्रभृत हैं देहारामी सोइ । छाडि तपहि सतसंग करि भजै कृष्ण कौ जोइ ॥
तथाहि—यत्पादसेवाभिरुचिस्तपस्विनामशेषजन्मोपचितं मलं धियः ।

सद्यः क्षिणोत्यन्वहमेधती सती यथा पदांगुष्ठविनिः सृता सरित् ॥७९॥

देहारामी कामवस सब ही आत्माराम । कृष्ण कृपा करि हरि भजै तजि सब अन्य हि काम ॥
तथाहि—स्थानाभिलाषी तपसि स्थितोऽहं त्वां प्राप्तवान् देवमुमीन्द्रगुह्यं ।

काचं विचिन्वन्नत्र दिव्यरत्नं स्वामिन् कृतार्थोऽस्मि वरं न याचे ॥८०॥

इन ही चारों अर्थ मिलि भौ तेईसु जु अर्थ । तीन अर्थ और जु सुनौ हैं जे परम समर्थ ॥
कहै समुच्चय मधि अर्थ आन च शब्द जु सोइ । आत्माराम पुनि मुनय भजै कृष्ण कौ जोइ ॥
है निरग्रंथ इह्या कछौ अपि निर्धारण जोय । राम और पुनि कृष्ण ज्यों वन मधि विहरै सोय ॥
अन्वाचये च शब्द अरु कहै अर्थ सुविचार । बटु भिन्नामट धेनु पुनि आनय इही प्रकार ॥
कृष्ण मनन मुनि गण सदा भजै कृष्ण कौ जोइ । भजै जु आत्माराम हूं गौण अर्थ कहि सोइ ॥
मुनि हीं कृष्णहिं भजत हैं एक अर्थ जु चकार । आत्माराम निग्रंथ हूं भजै यहि अर्थ सार ॥
है निरग्रंथ जु दुहुनि कौ यहै विशेषण होय । और अर्थ इक सुनौ ज्यों साधुसंगतें होय ॥
पुनि निरग्रंथ जु शब्द करि कहियै निरधन व्याध । सोऊ हरिजन संग करि करै जु भजन अगाध ॥
एक व्याध की कथा जन सुनौ जु करि अवधान । जाही तैं सत संग की है महिमा को ज्ञान ॥
लखि नारायण एक दिन श्री नारद जू आहि । गमन त्रिवेणी न्हायवैं किय प्रयाग कौ ताहि ॥
वन पथ मधि देखें जु मृग परे धरनि में जोइ । वान विधे कर पद कटे तरफरात हैं सोइ ॥
और कितिक दूरहि लख्यौ इक शूकर जो आहि । तरफरात ज्यों ही विध्यों कटे पाद कर ताहि ॥
कितक दूर आगे लख्यौ एक ससा अध जीय । जीवनि कौ दुख लखि भये नारद व्याकुल हीय ॥
आगे देख्यौ व्याध इक है तरु अंतर धान । मृग मारण के हेतु जिहिं कियौ वान संधान ॥
स्याम वरण लोयण अरुण महा भयंकर जोय । धनुष वान कर धरैं जिमि जम जु दंड धरि सोय ॥
नारद जू पथ छाडि कैं गये निकट चलि ताहि । मृग नारद कौ देखिकें गये भाजि सब आहि ॥
गारी दियौ चहैजु तिहिं व्याध क्रोध अति होय । ऋषिके अमित प्रभाव करि मुख नहि आवे सोय ॥
तुम जु गुसाई सु पथ तजि हां आये किहिं भाय । तुमहि देखि मेरे सहस मृग सब गये पलाय ॥
बोले नारद भूलि पथ तोहि जु पूछत आहि । मन हि भयौ संदेह इक दूरकरण कौ ताहि ॥
है तुम्हरे यों जानियें पथि सूकर मृग जोय । व्याध कहै जोई कहौ है निश्चै ही सोय ॥

नारद कहैं जु जीव जो मारे तुम गहि वान । काहे राख्यौ अध मरे लेहु नहीं तिहि प्रान ॥
 व्याध कहैं गोस्वामि जु मृगरिपु मेरी नाम । करौ पिता की सीख तें सब दिन ऐसी काम ॥
 जीव अधमरे जब धरणि तरफराय अति जोय । तब ही मेरे हृदय मधि बड़ौ जु आनंद होय ॥
 नारद कहैं जु वस्तु इक तुम पै मागौं जोय । लेहु मृगादिक सौ कहैं जो तुम्हरे मन होय ॥
 मृग छाला जो चाहिये ऐही मेरे गेह । मृग बाधंवर जो चहौ सो दैं हौं करि तेह ॥
 नारद कहैं न चाहिये मोहि कछु इन माहि । हौं मागौं कछु दान औ तुमपै जो हिय माहि ॥
 कान्हि हि तें तुम मारियौ जे मृगादि गहिवान । पहिले ही तें मारियौ नाहि रखि हौं अध प्रान ॥
 व्याध कहैं माँग्यौ कहा मो पै तुम इह दान । अध मारे होय जु कहा मोहि कहाँ तिहि ज्ञान ॥
 अपि बोले अध मारणे जीव व्यथा अति होय । ज्यों जीवनि दुख देहु तुम हैं है तुम्हरे सोय ॥
 तुम करिके जु कदर्थना जीव हते हैं जोय । तैसें तुमको मारिहैं जन्म मन्म मधि सोय ॥
 नारद सैगकरि व्याध को मन प्रसन्न भौ आहि । भय उपज्यो मनमें अधिक मुनि कैं वचन जु ताहि ॥
 व्याध कहैं सिसु काल तें यहै हमारी कर्म । तरिहौं दुर्जन अधम हूं करि जु कौन सौ धर्म ॥
 यहै पाप जासौं नमैं सोई कहाँ उपाय । मम निस्तार करौ जु तुम परां तुम्हारे पाय ॥
 नारद बोले जौ करौ वचन हमारी सार । तौ तेरी हम करि सकैं निश्चै करि निस्तार ॥
 व्याध कहैं जोइ कहाँ करि हौं सोई आहि । नारद कहैं जु धनुष जब तोरैं कहि हौं ताहि ॥
 व्याध कहैं तोरे धनुष किहि विधि करौ निवाह । कहैं जु अपि हौं अन्न तित देहौं जो तुम चाह ॥
 धनुष तोरि कैं व्याध तब पर्यौ चरण मधि ताहि । नारद ताहि उठाय कैं किय उपदेस जु जाहि ॥
 देहु द्विजनि कौ जाय कैं है घर में धन जोय । पहिरि वसन इक इक घर हि हो बाहिर जन दोय ॥
 नदी तीर मधि घास की एक कुटी जु बनाय । तिहि आगें इक चौतरी तुलसी तहां लगाय ॥
 करौ प्रणाम परिक्रमा तुलसी सेवन आहि । कृष्ण नाम कीरंतन जु करौ निरंतर ताहि ॥
 दिन दिन अन्न पटाय हौं हौं तुमको बहु जोय । भोजन दोऊ जन जिता करौ लेहुगे सोय ॥
 तब नारद मृग तीन तें स्वस्थ किये कर लाय । स्वस्थ होइ कैं जीव ते वेग हि गये पलाय ॥
 देखि व्याध के मन भयो अचिरज बड़ अभिराम । व्याध गयो निजघर तवै करि गुरुको जु प्रनाम ॥
 निज इच्छा नारद गये व्याध गेह निज आय । नारद कौ उपदेस सब कीनौ भलै बनाय ॥
 भयो व्याध वैष्णव नगर घर घर इह धुनि होय । लाँवन लागे अन्न सब लोक ग्राम कैं सोय ॥
 एक दिना नारद कहाँ पर्वत मुनि सौ आहि । एक सिप्य हमरो चलौ जाहि देखि वै ताहि ॥
 आये अपि दोऊ तवै तिहीं व्याध के घाम । व्याध दूर ही तें लहै गुरु दरसन अभिराम ॥
 हरवराय आयौ चण्यौ पथ नहि पावै धाय । पथ मधि लखि चैंटानि कौ इत उत घारे पाय ॥
 व्याध प्रणाम स्थान मधि लखि चैंटनि कौ सोइ । कारि वसन करि भूमि कौ परे दंडवत होइ ॥
 तथाहि—एते न छद्मस व्याध तवाहिवादयो गुणाः । हरिभक्तौ प्रवृत्ता ये न ते स्युः परतापिनः ॥

लायौ निज आंगण दुहुनि बहै व्याध तब जोय । लाय कुसायन भक्ति करि बैठारें रिपि सोय ॥
 न्याय नीर अति भक्ति करि पद दोऊन के धोय । पीयो सीस धर्यो पुरुष नारी सुत जल सोय ॥
 कंप पुलक औ अश्रु दग सरस कृष्ण गुणगाय । भुज उठाय नाचन लग्यो फिरि फिरि वसन फिराय ॥
 देखि व्याध के प्रेम कौ पर्वत मुनि भर भाय । तुम हौं पारस मुनि कहैं नारद सौ सुख पाय ॥
 तथाहि—अहो धन्योमि देवर्षे कृपया यस्य तत्क्षणम् । नीचोऽप्युत्पुलको लभे लुब्धको रतिमच्युते ॥८१॥
 आबत तुम्हरे अन्न कछु नारद पृच्छ्यो आहि । व्याध कहैं पठ्यो जिही सोलै आबत ताहि ॥
 इतनौ पठ्यो अन्न तुम कछु काम नहि ताहि । दूँ जन लायक भल जो चाह इती सब आहि ॥
 अपि जु कहैं ऐसैं रही भाग्यवान तुम आहि । अन्नदान कियो दुहुनि करि जु प्रसंसा ताहि ॥
 यह प्रसंग हम व्याधको तुमसौं कछौ जु आहि । हरिजन संग प्रभाव कौ ज्ञान होय मुनि याहि ॥
 सात और आये अरथ ए गणना तें जोय । ए दोऊ मिलि कैं भये अरथ बीस छह सोय ॥
 छुनौ अर्थ तुम और जिहि अर्थन कौ भंडार । स्थूल अर्थ विवि मृन्म करि सो वत्तीस प्रकार ॥
 शब्द आत्मा कहत हैं सब विधि करि भगवान । एक स्वयं भगवान हैं इक भगवान जु आन ॥
 जेई तिन में रमैं सब तेई आत्माराम । विधि भक्त जु रागी भगत तिन प्रति द्वै विधि नाम ॥
 दोऊ विधि के भक्त जे हैं तें चारि प्रकार । पारपद साधन जु सिद्धि साधकरण जु विचार ॥
 इक साधक हैं जातरति औ अजातरति रूप । इहि विधि साधन भक्त के भौ विवि भेद अनूप ॥
 तिन में विधि मारग जु इक रागमार्ग करि जोइ । चारि चारि के भये पुनि अष्ट भेद यौ सोइ ॥
 विधि भक्तिहि मधिहैं जु निति सिधि पारपद दास । सखा जु गुरुगण प्रेमसी चारि विभेद प्रकास ॥
 साधन सिद्धि दास जु सखा गुरु कांतागण आन । साधक रति उत्पन्नहैं भक्त चारि विधि जान ॥
 हैं अजात रति साधक जु जन यौ चार प्रकार । भौ विधि मारग भक्त के पोटस भेद प्रचार ॥
 अरु यौ राग जु मार्ग करि भक्तनि सौरह भेद । विवि पथ आत्माराम के भौ वत्तीस विभेद ॥
 मुनि निरग्रंथ च शब्द अपि चार शब्द कौ अर्थ । जहां लगै जोई तहां कीजे अर्थ समर्थ ॥
 ए वत्तीस छव्वीस वै मिलि हू अष्ट पचास । और एक भेद जु सुनौ अर्थ हि कौ जु प्रकास ॥
 इतरेतर जु च शब्द द्वै करि समास अभिराम । बेर अठावन लीजिये आत्माराम जु नाम ॥
 आत्माराम फेरि फिरि बार अठावन भाष । सब कौ सेसहि लोप करि एक बेर तिहि राख ॥
 तथाहि—स्वरूपाणामेकशेष एक विभक्तौ ॥ ८२ ॥
 आठ पचास चकार सौं सब कौ लोप जु होय । एक आत्माराम पद कहे अठावन सोय ॥
 तथाहि—उक्तार्थानामप्रयोगमिति ॥ ८३ ॥
 तरु अस्वस्थ च बेट तरु पुनि पीलू तरु जोय । और आग्रतरु मिलि सबै तरवः शब्द जु होय ॥
 तरव जु याही वनहि मधि फलैं हैं जु यौं जोय । इन ही उनसठि अर्थकौं किय विज्ञान जु सोइ ॥
 सर्व समुच्चय के किये और अर्थ इक होय । आत्मारामा पुनि मुनय निरग्रंथा भजि सोय ॥

अवधारनि मधि शब्द अपि सोऊ चार जु वार । चार शब्द संग कीजिये एव कार उच्चार ॥
तथाहि—उरुक्रम एव, भक्तिमेव, अहंतुकीमेव, कुर्वन्त्येव ॥ ८४ ॥

कहैं श्लोक के ये जु यौ संख्या साठ जु अर्थ । और एक अर्थ हि सुनौ है प्रामाण्य समर्थ ॥
आत्मशब्द करि कहत हैं और अर्थ अभिराम । है जु जीव लक्षण वहै जिहि चेत्रज्ञ जु नाम ॥
है ब्रह्मा कौ आदि लै और कीट पर्यंत । ताही की इक शक्ति करि है गणना सु अनंत ॥

तथाहि—विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता चेत्रज्ञा च तथा परेति ॥ ८५ ॥ चेत्रज्ञ आत्मा पुरुष इति च ॥ ८६ ॥

भ्रमत भ्रमत संसार मधि साधु संग जब पाइ । सवहीं सब तजि कै सवै कृष्ण हि भजै सु जाहि ॥
साठि अर्थ करि जो कह्यौ भजन कृष्ण कौ आहि । तेई अर्थ उदाहरण हैं सब ही ह्यां ताहि ॥
फुरे तिहारे संग करि इक सठि अर्थ अभंग । तुव हरि भक्ति जु फल हि करि उठे सु अर्थ तरंग ॥

तथाहि—भक्त्या भागवतं ग्राह्यं न बुद्ध्या न च टीकया ॥ ८७ ॥

भये सनातन अर्थ सुनि अतिही विस्मित आहि । नुतिजु करैं चैतन्य की चरण कमल धरिताहि ॥
ईश्वर तुम साक्षात् हो ब्रजपति नंदन सोय । सब हीं तुव निश्वास तें वेद प्रवर्तन होय ॥
तुम वक्ता भागवत के तुम हीं जानौ अर्थ । तुम बिन कोऊ और तिहि जानन कौ न समर्थ ॥

तथाहि विश्वेश्वरवाक्य—अहं वेत्ति शुको वेत्ति व्यासो वेत्ति न वेत्ति वा ॥ ८८ ॥

कहैं जु प्रभु काहे करौ नुति जु हमारी सोय । श्रीभागवत स्वरूप कौ विवरण करै जु कोय ॥
कृष्ण तुल्य श्री भागवत विभु सर्वाश्रय आहि । नाना अर्थ कहे जु प्रतिपद प्रति अक्षर ताहि ॥
प्रश्नोत्तर करि भागवत किय विद्या निरधार । चमत्कार लागे जननि जाकें सुनें अपार ॥

तथाहि शौनकप्रश्न—

ब्रूहि योगेश्वरे कृष्णे ब्रह्मण्यै धर्मवर्त्मणि । स्वां काण्ठामधुनोपेते धर्मः कं शरणं गतः ॥ ८९ ॥

तथाहि सुतोत्तर—

कृष्णस्वधामोपगते धर्मज्ञानादिभिः सह । कलौ नष्टदशामेवः पुराणार्कोधुनोदितः ॥ ९० ॥

कह्यौ जु एक श्लोक कौ यहै जु हम विख्यान । वौरे ने जु प्रलाप किय मानें कौन प्रमान ॥
हम ही सौं जो दूसरी कोऊ वौरी होय । इहीं भांति भागवत के अर्थनि जानें सोय ॥
फेरि सनातन वीनती करैं जोरि कर दोय । करिवे कौ स्मृति वैष्णवजु प्रभु निदेस दिय जोय ॥
नीच जाति हीं तुच्छ कह्यु नहि जानौ आचार । मोसैं कैसैं होय गो सुष्टु स्मृति परचार ॥
जौ दिग दरसन सूत्र करि करौ जु तुम उपदेस । आपुन मेरे हृदय मधि करौ आप परवेस ॥
तव ताकी दिग फुरै मम नीच हृदय मधि जोय । तुम ईश्वर जु कहाय हौ सोई सिद्ध जु होय ॥
प्रभु जु कहैं जिहि करण कौ तुम मन करि हौ जोइ । तुम कौ कृष्ण फुराय हैं तवही सोई सोइ ॥
सूत्र रूप तोऊ सुनौं करि दिग दरसन जोइ । प्रथम सकारण लिखोगे गुरु पद आश्रय सोइ ॥
लक्षण गुरु औ सिष्य के दुहं परीक्षण जोइ । सेव्य स्वयं भगवान सब मंत्र विचारण सोइ ॥
मंत्र सिद्ध साधन प्रभृति अधिकारी पुनि ताहि । प्रति दीक्षा स्मृति कृष्णजो शौच आचमन आहि ॥

दंतधावन स्नान विधि सन्ध्या वंदन जोय । उर्द्धपुण्ड्र सेवा जु गुरु मुद्रा धारण सोय ॥
गोपी चंदन और पुनि माला धात्री सोय । श्री तुलसी को आहरण कहिवैं नीकैं जोय ॥
वस्त्र पीठ औ गेह कौ संस्कार जो आहि । कृष्ण प्रबोधन विधि सकल कहिवैं नीकैं ताहि ॥
पंचकाल श्री कृष्ण की पूजा आरति जोय । प्रभु भोजन औ शयन श्री मूर्ति लक्षण सोइ ॥
लक्षण शालग्राम के महिमा नाम जु आहि । और नाम अपराध जे वर्जन करिवैं ताहि ॥
जे लक्षण वैष्णव जु के नीकैं कहिवैं सोइ । औ सेवा अपराध कौ खण्डन जैसैं होइ ॥
संख नीर औ गंध पुनि पुष्प वहित है जोइ । अरु सब धूपादिकनि के लक्षण कहिवैं सोइ ॥
जप नुति कृष्ण परिक्रमा दण्ड प्रणामजु ताहि । अरु सब धूपादिकनिकौ पुरश्चरण विधिआहि ॥
अनिवेदित कौ त्याग हरिजन निंदादिक त्याग । साधुन लक्षण साधु संग साधु निसेवन राग ॥
असत संग कौ त्याग औ श्रवण भागवत सार । दिवस पक्ष कौ कृत्य एकादश्यादि विचार ॥
मासकृत्य जनमाष्टमी वामन द्वादसि जोइ । राम जु नवमी और नरसिंह चतुर्दशि सोइ ॥
वेधत्याग इन सवनि कौ करनि अविद्धा आहि । बिना कियें दोष जु कियें भक्तिलाभ है ताहि ॥
श्री मूर्ति श्रीविष्णुकौ मन्दिर कारण जु आहि । तिनके सब लक्षण प्रथक कहै शात्र अवगाहि ॥
सदाचार सामान्य करि औ वैष्णव आचार । करिवौ अन करिवौ जितौ है स्मार्त व्योहार ॥
यहै जु सिद्धा रूप करि सूत्र कह्यौ दिक् ज्ञान । जवही तुम लिखिहौ स्फुरण करिहैं हिय भगवान ॥
यहै सनातन पर कह्यौ प्रभु जू कौ जु प्रसाद । जनकौ जाके श्रवण करि दूर होय अवसाद ॥
कर्णपूर निज ग्रंथ मधि करिकैं तिहि विस्तार । कृपा सनातन पर प्रभुजु राखी लिखि निरधार ॥

तथाहि—गोडेन्द्रस्य सभाविभूषणमणिस्त्यक्त्वा यच्छ्रद्धां श्रियं रूपस्याग्रज एष एव तरुणी वैराग्यलक्ष्मी दधे ।
अन्तर्भक्तिरसेन पूर्णहृदयो बाह्येऽवधूताकृतिः शैवालैः पिहितं महारसइव प्रीतिप्रदस्तद्विदां ॥ ९१ ॥

तथाहि—तं सनातनमुपागतमच्छोर्टष्टिमात्रमतिमात्रद्वयार्द्रः ।

आलिलिंग परिघायतदोभ्यां सानुकम्पमथ चम्पकगौरः ॥ ९२ ॥

तथाहि—कालेन वृन्दावनकेलिवात्ता लुप्रति तां ख्यापयितुं विशिष्य ।

कृपामृतेनाभिपिपेच देवस्तत्रैव रूपञ्च समातनं च ॥ ९३ ॥

यहै सनातन पर कह्यौ श्री चैतन्य प्रसाद । होवै जाके श्रवण करि खंडन सब अवसाद ॥
कृष्ण स्वरूप गुणनिकौ होइ भली विधि ज्ञान । साधन भक्तिजु द्विविधहै पथ विधि रागाहि ज्ञान ॥
प्रेम भक्ति रस कृष्ण कौ और भक्ति सिद्धांत । भक्ति जु याके श्रवण करि जानें सब के अंत ॥
श्री प्रभु नित्यानंद पद अरु अद्वैत सु जोय । जाके जीवन प्राण धन इह धन पावै सोय ॥
श्रीरूप सु रघुनाथ के चरननि की जिहि आस । प्रभु चरितामृत जो कहै कृष्ण दास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगतहित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सो लिखै ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां आत्मारामाश्वेति श्लोकव्याख्यासनातनअनुग्रहो
नाम चतुर्विंशति परिच्छेदः ॥

पञ्चविंशति परिच्छेदः

वैष्णवी कृत्य संन्यासिसुखान् काशीनिवासिनः । सनातनं सुसंस्कृत्य प्रभु नीलाद्रिमागतः ॥१॥
जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
याही विधि चैतन्य जू द्वै मासनि परजंत । सिखयौ तिनकों भक्ति के सिद्धांतनि कौ अंत ॥
परमानंद सेखर सँगी कीरतनिया जोइ । प्रभु हि सुनावै कीरतन अति बड रंगी सोइ ॥
संन्यासी गण की प्रभुजु जदपि उपेक्षा कीय । भक्तनि के दुख नास हित कृपा करी तिन हीय ॥
संन्यासिन पै जो कृपा लिखी प्रथम विस्तार । करिये तिहिं उद्देस हां करि संक्षेप विचार ॥
जहं तहं प्रभु निंदा करै संन्यासी गण सोय । महाराष्ट्र द्विज सुनि दुखी करै चितवन जोय ॥
प्रभुको सहज सुभावजो निकट लखै तिहि जोय । करि स्वरूप अनुभवजु तिहिं मानै ईश्वर सोय ॥
किहीं प्रकार सकै जु करि इकठां इन्हेंजु ताहि । लखि संन्यासी गण इन्हें भक्त होय इन आहि ॥
सर्व काल वाराणसी वास हमारी आहि । दुख पैहें हम सर्वदा यौं नहि करिहें ताहि ॥
न्यैति संन्यासी जु सब करि विचार मन एह । वहै विप्र आयौ तवै महाप्रभु जु के गेह ॥
तिहीं समें निंदाजु सुनि शेखर तपनजु दोय । दुखजु पाय प्रभु चरण मधि कियौ निवेदन सोइ ॥
भक्तनको दुख देखि प्रभु मन में चिंता कीय । संन्यासिन मन फेरिवैं कियौ तिनहों निज हीय ॥
तिही समें द्विज आइकैं कियौ निमंत्रण आहि । दैन्यादिक जु अनेक करि धरिक्कें चरणनि ताहि ॥
अंगीकृत तव महाप्रभु कियौ निमंत्रण ताहि । करि मध्यान्हजु और दिन गये गेह तिहि आहि ॥
तहां कियौ जैसैं जु प्रभु संन्यासिन निस्तार । पंचतत्व आख्यान मधि कियौ जु तिहिं विस्तार ॥
कहैं ग्रंथ वाढ़ै अधिक औ पुनरुक्त जु होय । तहां लिख्यौ नहिजो कछु कीजै लिखनजु सोइ ॥
कृपा करी जिहिं दिवसप्रभु संन्यासिन पर आहि । कोलाहल तिहिं दिवसतें भयौ ग्राम मधि ताहि ॥
प्रभु देखन हित आवही लोक समूह अपार । पंडित नाना शास्त्र मधि आवै करण विचार ॥
प्रभु सब शास्त्रनि खंडिकें करै भक्ति परचार । जुक्ति सहित वचननि फिरैं मन सबको निरधार ॥
लै उपदेस करै जु सब कृष्ण कीरतन जोय । लोक सब गावैं हँसैं करै नृत्य पुनि सोय ॥
संन्यासिन कौ गण भयौ प्रभु कौ प्रणत जु सोय । आपुसमें चरचा करै तजि अध्ययनहि जोइ ॥
शिष्य प्रकासानंद कौ न्यासी तिहिं जु समान । सभामध्य लाग्यौ कहन प्रभु कौ करि सनमान ॥
हैं जु कृष्णचैतन्य जू निज नारायण जोय । अति सुन्दर अर्थनि करै व्यास सूत्र के सोय ॥
मुख्यार्थ उपनिषद् कौ करै प्रगट विख्यान । पण्डित लोकनि के जु सुनि हैं सीतल मन मान ॥
सूत्र और उपनिषद् के मुख्य अर्थ तजि सोइ । संकर करै जु कल्पना करिकैं आग्रह जोइ ॥
आचारज कल्पित अर्थ सुनें सभाजन जोइ । मुख करिकैं हां हां करै हृदय न मानें सोइ ॥
वचन कृष्ण चैतन्य कौ मानें दृढ़ करि सांच । कलि में केवल न्यास करि नहि जीते भव आंच ॥
हर नाम या पद्य कौ जोइ किय व्याख्यान । वहै सत्य अति सुखद है अर्थजु परम प्रमान ॥

२५ श परिः]

मध्यलीला

[२२३]

मुक्ति नहीं है भक्ति बिनु कहै भागवत जोय । कलि रौ नामाभास करि सुखसौं मुक्ति जु होय ॥
तथाहि—श्रेयः स्मृति भक्तिमुदस्य ते धिभो क्लिश्यति ये केवलेतिश्लोकः ॥ २ ॥
तथाहि—येन्येरविन्दात्त विमुक्तमानिनेति श्लोकः ॥ ३ ॥
कहैं ब्रह्म पद पट भगति करि पूरण भगवान । तिर्विशेष थापै जु तिहिं पूरणता की हान ॥
श्रुति पुगाणजो कृष्णकौ कहि चिच्छक्ति विलास । पण्डित तिहिं मानें नहीं करै विमुख उपहास ॥
चिदानंद विग्रह जु हरि मायिक मानें ताहि । बड़ौ पाप यह सत्य है प्रभु वाणी जो आहि ॥
तथाहि—
नातः परं परमयद्भवतः स्वरूपमानन्दमात्रमधिकल्पमविद्वच्चर्चः ।
पश्यामि विश्वसृजमेकमविश्वमात्मन् भूतेन्दियात्मकमदस्त उपाश्रितोऽस्मि ॥ ४ ॥
तथाहि—
दृष्टं श्रुतं भूतभवद्विष्यत् स्थासुश्चरिण्युर्महदल्पकं वा ।
यिनाच्युताद्वस्तु तरां न वाच्यं स एव सर्वं परमात्मभूतः ॥ ५ ॥
तथाहि—
तद्वा इदं भुवनमंगलमंगलाय ध्याने स्म नो दर्शितं त उपासकानां ।
तस्मै नमो भगवतेऽनुविधेम तुभ्यं यो नादृतो नरकभागभिरसत्प्रसंगैः ॥ ६ ॥
तथाहि गीतायां—अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितं । परं भावमजानन्तः सर्वभूतमहेश्वरम् ॥७॥
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान । क्षिपाम्यजलमशुभानासुरीन्वैव योनिषु ॥८॥
सूत्र बाद परिणाम जो नहीं मानि कै ताहि । थपि विवर्त्त वाद हिं कस्यो व्यास भ्रांत भौ आहि ॥
यहै अर्थ कल्पित मनहि नहि भावत है सोय । करि कु कल्पना शास्त्र तजि बूढ़े पाखंड जोइ ॥
वाद मात्र करि गयौ सब जो परमार्थ विचार । कहा मुक्ति पैवौ कहा कृष्ण प्रसाद सुसार ॥
व्यास सूत्र कौ अर्थ निज संकर धर्यौ छिपाय । यहै सत्य चैतन्य कौ वचन और नहि भाय ॥
गोस्वामी चैतन्य जो कहे वहै मत सार । और जितौ मत सो सबै छार खार निरधार ॥
इतनौ कहि लाग्यौ करण कृष्ण कीरतन सोइ । सुनि जु प्रकासानंद कछु कहैं वचन यों जोइ ॥
थापन हित अद्वैत मत शंकर कैं हठ प्रीति । सूत्र अर्थ व्याख्या करै तातें औरें रीति ॥
भगवत्ता मानें थप्यौ जाय नहीं अद्वैत । याही तें सब शास्त्र कौ करै जु खण्डन द्वैत ॥
थाप्यौ चाहै निज मत हि ग्रंथ सु कर्त्ता जोइ । अर्थ शास्त्र कौ सहज जो तासैं नाहि न होइ ॥
कहि मीमांसक ईश्वर हि है जु कर्म कौ अंग । सांख्य कहै जग कौ प्रकृति कारण कौ जु प्रसंग ॥
न्याय कहै परमानु तें निहचैं विश्व जु होय । निर्विशेष हेतु हि कहै मायावादी जोय ॥
ईश्वर कारण परम जो तिहि नहि माने कोइ । पर मत कौ खण्डन करै थापै निज निज सोइ ॥
तातें पट दरसननि तें नहीं तत्त्व कौ ज्ञान । कहै महाजन जो कछु वहै सत्य करि मान ॥
तथाहि—तर्कोप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नेति श्लोकः द्रष्टव्यः ॥ ६ ॥
वाणी श्री चैतन्य की है जु अमृत की धार । तेई या वस्तुहि कहै वहै तत्त्व है सार ॥
यहै जु सुनि वृत्तांत सब महाराष्ट्र द्विज सोइ । सुख करि प्रभुको कहत हित कियौ गमन तिन जोय ॥
तिही समें प्रभु पंचनद करि स्नान भरि भाइ । हरी विदमाधव दरस हेत चले हैं चाइ ॥
सब वृत्तान्त कस्यो तिहिं द्विज ने पथ में आय । महा प्रभु जु सुनि कछु हसैं हियें महासुख पाय ॥
माधव कौ सौन्दर्य लखि भौ आविष्ट जु भाइ । नाचन लागे प्रेम करि आंगन के मधि आइ ॥

सेखर परमानंद पुनि तपन सनातन शोय । चारौ जन मिलि कै करै नाम कीरतन सोय ॥
 तथाहि—हरि हरये नमः कृष्ण आदवाय नमः । गोपाल गोविंद राम श्री मधु सूदन ॥ १० ॥
 कोलाहल हरि हरी कहि करै लोक दिसि चारि । मंगल नाद उख्यौ भरै स्वर्ग मर्त्य रस सार ॥
 वहै निकट ही धुनि सुनी तिहीं प्रकासानंद । देखन आयौ कौतुक सु लै करि सिष्यनि वृन्द ॥
 प्रेम नृत्य प्रभु कौ निरखि देह माधुरी रंग । हरी हरी बोलै वहू शिष्य गणनि के संग ॥
 कंप स्वेद स्वर भंग ही अरु वैवर्ण्य स्तम्भ । अश्रुधार करि जन भिजै पुलक कदम्बारंभ ॥
 हर्ष दैन्य चापल्य दै संचारी जु विकार । लखि कासी वासीन कै अचिरज भयौ अपार ॥
 प्रभु कै जन संघट्ट लखि बाह्य भयौ जब हीय । संन्यासिन के गणनि लखि नृत्य संवरण कीय ॥
 प्रभु जु प्रकाशानंद के पग वंदन किय आहि । आप प्रकाशानंद जू धरै चरण पुनि ताहि ॥
 कहै जु प्रभु तुम जगत गुरु वड़े पूज्यतम सोइ । तुम्हरे सिष्यनि सिष्य सम हौं नाहीं हौं जोइ ॥
 कहै करौ जु श्रेष्ठ हूँ दीन हि वंदन याहि । सर्व नास मम होत है तुम जु ब्रह्म सम आहि ॥
 सब ठां तुम्हरे जदपि हैं ब्रह्म मात्र कौ भान । जन शिक्षा हित यौं करण नहीं जोग्य है जान ॥
 ते बोले तुम्हरो प्रथम किय निंदा अपराध । तुम्हरे चरणनि परसि कै सब क्षय भयौ अबाध ॥

तथाहि—जीवन्मुक्ता अपि पुन वर्न्धनं यान्ति कर्मभिः । यद्यचिन्त्यमहाशक्तौ भगवत्पराधिनः ॥ ११ ॥

तथाहि—पादस्यर्शहताशुभ इति च ॥ १२ ॥

विष्णु विष्णु कहि प्रभु कहै छुद्र जीव हौं हीन । जीवहि माने विष्णुकरि यह अपराध नवीन ॥
 विष्णु बुद्धि जीवहि करै ब्रह्म रुद्र सम जोय । माने नारायण तिन्हें पाखण्डिन मधि सोय ॥
 तथाहि—यस्तु नारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादि दैवतैः । समत्वेनैव मन्येत स पापण्डी भवेद् ध्रुवम् ॥ १३ ॥
 कहै प्रकासानंद तुम स्वयं ईस भगवान । तौऊ जौ तुम करत हौ तिहि जु दास अभिमान ॥
 तऊ पूज्य हौ तुम वड़े हम तें यह विचार । तुम निंदा ते होइ मम सर्वनास निरधार ॥
 तथाहि—मुक्त्वानामपि सिद्धानां नारायणपरायणः । सुदुर्लभः प्रशान्तात्मा कोटिष्वपि महामुने ॥ १४ ॥

आयुः श्रियं यशो धर्म्मं लोकानाशिप एव च । हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥ १५ ॥

तथाहि तत्रैव ।—नैपां मतिस्तावदुरुक्रमांश्चि स्पृशत्यनथापगमो यदर्थः । महीयसामिति ॥ १६ ॥

अब तुम्हरे पद कमल मधि मम उपजैगी भक्ति । तिहि निमित्त तुव चरण मधि करै प्रणति अनुरक्ति ॥
 इतनौ कहि बैठे तहां प्रभु लै संग हिं सोय । लग्यौ प्रकासानंद तव प्रभु सौं पूछन जोय ॥
 कीजत मायावाद मधि दोषन कौ आख्यान । यह जान्यौ आचार्य कौ सब कल्पित व्याख्यान ॥
 तुम विवरण मुख्यार्थ कौ कियौ सूत्र कौ जोय । तिहि सुनि सब कै मन भयौ चमत्कार अतिसोय ॥
 ईश्वर तुम तुम्हरे यहै सर्व शक्ति जे आहि । कहौ जु तुम संक्षेप करि है सुनिवै मति ताहि ॥
 प्रभु जु कहै हौं जीव अति तुच्छ ज्ञान मम जान । व्यास सूत्र कौ गूढ़ है अर्थ व्यास भगवान ।
 व्यास सूत्र के अर्थ कौ जीव न जाने कोइ । याही तें निज सूत्र कौ व्याख्यान किय सोइ ॥
 जेई कर्त्ता सूत्र कौ वहै करै विख्यान । नौ सूत्रनि कै अर्थ कौ होय लोक के ज्ञान ॥
 जेई अर्थ जु प्रणव कौ गायत्री कौ सोइ । सोई अर्थ कहै प्रगट चतुः श्लोकीहि जोइ ॥

ईश्वर अज कौ जो कही चतुः श्लोकीहि सार । ब्रह्मा नारद कौ वहै किय उपदेस विचार ॥
 श्री नारद सोई अर्थ कयौ व्यास सौं आइ । सुनि कै वेद व्यास किय मन विचार बहु भाइ ॥
 यहै अर्थ सम सूत्र के व्याख्या कौ है रूप । करिअत श्रीमदभागवत सूत्रनि भाष्य स्वरूप ॥
 चारि वेद और उपनिषद है कछु जितेक आहि । सब संचय किय व्यास जू लै कै अर्थनि ताहि ॥
 तिहि जु सूत्र की जो रिचा वचन विचारे सोइ । वहै रिचा भागवत मधि चतुरश्लोकीहि जोइ ॥
 भाष्य सूत्र कौ भागवत याही तैं हैं जोइ । पद्य भागवत उपनिषद कहै अर्थ इक सोइ ॥
 तथाहि—आत्मावाक्यमिदं विश्वं यत्किञ्चिज्जगत्वां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृथः कस्य स्विद्वत्तम् ॥ १७ ॥
 एक श्लोक दिखाइ कै किय दिग दरसन ताहि । इही भांति भागवत सब पद्य रिचा समआहि ॥
 संबंधजु अभिधेय पुनि और प्रयोजन ताहि । चतुर श्लोकी प्रगट तिहि लक्षण किये जु आहि ॥
 साधन कौ फल प्रेम जो मूल प्रयोजन सोय । लहै जीव जिहि प्रेम करि सेवन हमरौ जोइ ॥
 तथाहि—ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितं । सरहस्यं तदंगत्र गृहाण गदितं मया ॥ १८ ॥
 जेई तीनौ तत्व हम कहि हैं तुम सौं जोइ । इन तीननि कौ जीव तुम जानि सकौ नहि कोइ ॥
 जैसौ ममजु स्वरूप है जैसे थिति मम जोइ । जैसौ मम गुण कर्म औ पट भग शक्ति जु सोइ ॥
 ए सब मेरी कृपा करि फुरौ जु तुमकौ आहि । इतनौ कहि कै प्रभु कहै तीन तत्व ये ताहि ॥
 तथाहि—यावानहं यथाभावो यद्रूप गुणकर्मकः । तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥ १९ ॥
 जगत पूर्व होई जु हों पट भग पूरण सोइ । मोही तें जु प्रपंच सब प्रकृति पुरुष मिलि होइ ॥
 करि प्रपंच ताके जु मधि हों हौं करौ प्रवेस । जो कछु दीसे जगत् मधि सौ होई जु असेस ॥
 रहौ पूर्ण अवसिष्ट हौं भये प्रलय सब ताहि । पावै प्राकृत जगत सब मोही में लय आहि ॥
 तथाहि—अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परं । पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ २० ॥

अहमेव जु अहमेव पुनि पद मधि तीन हि वार । पूरण भग श्री विग्रह जु थिति कौ किय निरधार ॥
 निराकार जे मानई विग्रह माने नाहि । तिन्है तिरस्कृत करण हित किय निश्चै पद मांहि ॥
 यही शब्द है ज्ञान कौ अरु विज्ञान विचार । मोही तें कारज प्रकृति हों न्यारो निरधार ॥
 रवि आभास स्थलहि ज्यौं भासै रवि आभास । सूरज विन नहि आप तें ताकौ होय प्रकास ॥
 मायातीत भये जनहिं मेरौ अनुभव होइ । कयौ तत्व संबंध यह सुनौ और सब जोय ॥

तथाहि—ऋतेऽर्थे यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि । तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तमः ॥ २१ ॥

साधन भक्त अभिधेय जो ताकौ सुनौ विचार । इन विचार तें है परै साधन भक्ति जु पार ॥
 देश काल औ सब दिसा सब जनकौ कर्त्तव्य । वहै भक्ति गुरु के निकट प्रष्टव्य जु श्रोतव्य ॥
 तथाहि—एतदेव हि जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनात्मनः । अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥ २२ ॥
 प्रीति प्रेम जो मो विषै है जु प्रयोजन सोइ । तिहि स्वरूप लक्षण करै कारज द्वारा होइ ॥
 भूतनि भीतर बाहिर हि पंचभूत जिमि होइ । भक्तनि के हौं त्यों फुरौ बाहिर अंतर जोइ ॥

तथाहि—यथा महान्ति भूतानि भूतेषु चैव चैव नु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहं ॥ २३ ॥

हमें बांधि राख्यौ हियें भक्ति प्रम करि जोइ । जहां परै आखैं तहां देखैं हम कौं सोइ ॥

तथाहि— विस्तृजति हृदयं न यस्य साक्षाद्विरवशाभिहितोऽपघौघनाशः ।

प्रणय रसनया धृतांगिपद्मः स भवति भागवत प्रधान उक्तः ॥ २४ ॥

तत्रैव— सर्वभूतेषु यः पश्येद्भगवद्भावमात्मनः । भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥ २५ ॥

याही तें भागवत मधि येई तीन वखान । संबंध अविधेय पुनि और प्रयोजन जान ॥

तथाहि—यदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयमिति ॥ ६ ॥

तथाहि—भगवानेक आसेदमग्र आत्मात्मनां विभु । आत्मेच्छानुगता वात्मा नानामत्युपलक्षणः ॥ २७ ॥

तत्रैव—कृष्णस्तु भगवान् स्वयमिति ॥ २६ ॥

यह संबंध कछौ सुनिव भक्त्यभिधेयजु आहि । प्रतिपद श्रीभागवत मधिहै सु अवस्थिति जाहि ॥

तथाहि तत्रैव—भक्त्याहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सतामिति ॥ यथा भक्ति र्मेमोजितेति ॥ ३० ॥

तत्रैव—भक्त्यैक्येशं गुरुदेवतात्मेति ॥ ३१ ॥

यह सुनौ अव प्रेम तुम मूल प्रयोजन जोइ । नृत्य गीत आँख पुलक जिहि लखन है सोइ ॥

तथाहि—भक्त्या संजातया भक्त्या विभक्त्युत्पुलकां तनुं ॥ ३२ ॥

तत्रैव—एवं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्येति श्लोक द्रष्टव्यः ॥ ३३ ॥

याही तें श्री भागवत सूत्रनिकौ निज रूप । निज कृत सूत्रनिकौ कियौ आपहि भाष्य स्वरूप ॥

तथाहि गरुडपुराणे—

अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थ धितिर्ययः । गायत्री भाष्यरूपोऽसौ वेदार्थपरिवृद्धितः ॥ ३४ ॥

सर्ववेदांतसारं हि श्रीभागवतमीष्यते । तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः कश्चित् ॥ ३५ ॥

गायत्री के अर्थ करि श्री भागवतारंभ । सत्यं परं पद करि भयौ सो संवधालंभ ॥

अरु धीमहि पद करि कछौ साधन पैवैं ताहि । पुनि ताही पद में कछौ मूल प्रयोजन आहि ॥

जन्माद्यस्येत्यादौ सत्यं परं धीमहि इति ॥ ३६ ॥ धर्म प्रोक्तिरुक्तैतवोऽत्र परमो निर्मत्सरारणामिति ॥ ३७ ॥

कृष्ण भक्ति रस रूप है श्रीभागवत सु आहि । तातें निगमागमन तें परम महत है ताहि ॥

तथाहि—निगमकल्पतरो र्गलितं फलमिति ॥ ३८ ॥ प्रथमस्कन्धे—स्वादु स्वादु पदे पदे इति च ॥ ३६ ॥

याही तें भागवत कौ नौकैं करौ विचार । श्रुति सूत्रनि के अर्थ कौ यातें पैहौ सार ॥

कृष्ण नाम संकीरतन करौ निरन्तर चाइ । हेलाकरि पैहौ मुकति कृष्ण प्रेम धन पाइ ॥

तथाहि—ब्रह्मभूतः प्रसन्नास्मा न शोचति न कांचतीति ॥ ४० ॥ मुक्ता अपि लीलयाविग्रहं कृत्वेति ॥ ४१ ॥

परिनिष्ठतोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोक लीलयेति ॥ ४२ ॥ “तस्यारविन्द नयनस्य पदारविन्देति” ॥ ४४ ॥

“आत्मारामाश्च सुनयो निर्ग्रन्थेति” ॥ ४४ ॥

तिही समें तिहिं सभा मधि महाराष्ट्र द्विज सोइ । विवरण याही पदयकौ कछौ सबनिसौं जोय ॥

प्रभु याही पदकौ अरथ कीनौ इक सठि भांति । जिहिं सुनि लोकनिकें हियें चमत्कार नहिंमाँति ॥

कियौ आग्रह सुनन हित तव सब लोकनि जोइ । प्रभु तव इक सठ अर्थ जे वारि कहै सब सोइ ॥

सुनि लोकनि कें अति भयौ चमत्कार सुख सार । गोस्वामी चैतन्य जू कृष्ण किये निरधार ॥

इतनौ कहि उठिकें चले गौर हरी प्रभु आहि । हरि धुनि करि कें लोक सब करै दंडवत ताहि ॥

सब कासी वासी करै नाम कीरतन जोइ । रौबें हसैं जु प्रेम करि नाचैं गावैं सोइ ॥

संन्यासी पण्डित करै श्री भागवत विचार । देसी सबै वाराणसी प्रभु जू किय निस्तार ॥

निज गण आगे प्रभु कहैं करिकें कछु मृदुहास । प्रेम पोट न्यायौ जु हौं वेंचन कासी वास ॥

कासी में गाहक नहीं नाहिन वस्तु विकाय । फिरि कें देसहि वोभ वहि लैं कें गयौ न जाय ॥

वोभ वहाँ हों तुम सबनि भयौ दुख हिय आइ । तुम सब की इच्छासु करि देहों ताहि लुटाय ॥

कहैं सबै जन तारिबैं हित तुम्हरो अवतार । पूरव दक्षिण औ पछिम कीनैं सब निस्तार ॥

इक वाराणसी रही ही तुम तें विषम विचार । कीनौ तिहिं निस्तार कैं हम सब के सुख सार ॥

जब वाराणसी ग्राम मधि भौ कोलाहल जोइ । देस गांव के लोग सुनि लागे आवनि सोइ ॥

लक्ष कोटि आवैं सु जन नाहिन गणना ताहि । प्रभु कौ नहि पावैं दरस कीरतन ठां आहि ॥

प्रभु जब जांदि स्नान हित देखन विश्वहि नाथ । प्रभु अवलोकन जब करै दुहुंदिसि होयसनाथ ॥

भुज उठाय प्रभु जु कहैं कछौ कृष्ण हरि सोइ । परै दंडवत लोकसब हरि धुनि करिकें सोइ ॥

जन निस्तारे इहीं विधि पाँच दिनन लौं जाइ । और दिना उदविगन हूँ चले महाप्रभु सोइ ॥

प्रभु जु उठि कैं रैन मधि कियौ गमन जब आहि । तवै भक्त जन पाँच ए पाछैं लगि लिय ताहि ॥

तपन मिश्र रघुनाथ पुनि महाराष्ट्र द्विज जोइ । शशिशेखर गायक हरहि परमानंद जन सोइ ॥

जैवौ चाहै सबै जन लीलाचल प्रभु संग । प्रभु सब कौं दीनी बिदा करि बहु जतन सुरंग ॥

हमकौं देखन आइ हौ पाछैं इच्छा जोइ । अब हम जैहैं एक ले भारखंड पथ होइ ॥

कछौ सनातन कौं प्रभु तुम वृन्दावन जाहु । तुम दोऊ भाई तहां कियौ गमन हिय चाहु ॥

कंथा और करंग कर जन गन मम कंगाल । वृन्दावन ऐहैं तिनहिं करि हौ तुम प्रतिपाल ॥

इतनौ कहि कैं प्रभु चले सब कौं हिय हि लगाय । परे तहांई भक्त सब हूँ मूर्खित अकुलाय ॥

कितिक छिन हि में सब उठे आये घर दुख पाप । चले सनातन जू तवै वृन्दावन भरि भाय ॥

इहां गुसाई रूप जू आये मथुरा आहि । तब सुबुद्धि राय जु मिले ध्रुव घाटहि मधि ताहि ॥

जब सुबुद्धि राय जु हुये अधिपति गौड हि आहि । साह हुसैं जु सैद सुत करै चाकरी ताहि ॥

इक दिन ताल खुदावतैं कियौ जु मुनसब ताहि । फिर तिहिं मारयौ चावकनि पाय छिद्र कछु आहि ॥

जब हुसैं पाछैं भयौ गौड देस नृप जोइ । तिन हं राय सुबुद्धि कौं बहुत बढ़ायौ सोइ ॥

तिहिं नारी तिहिं पीठ मधि चावक चिन्ह हि जोय । मारण हित तव राय कैं कहै नृपति सौं सोय ॥

कहैं नृपति पोषक जु मम राय पिता सम जोइ । नहीं बात इह है भली याहि मारिबैं सोइ ॥

करौ तुरग नारी कहै नहीं लेहु जो प्राण । कहै नृपति जाति हि लियें यह न जीवै जान ॥

मरयौ चहै नारी परयौ नृप संकट के बीच । करवा कौ पानी जु तिहि मुख हि दिवायौ नीच ॥

तब ही राय सुबुद्धि जू छल जु पाय कैं सोइ । आये पुरी वाराणसी विषय छाडि सब जोइ ॥

पूछ्यौ तिन पण्डित गननि प्रायश्चित्त जु आहि । खाय तप्त घृत प्राण तजि कहैं विप्र यौं ताहि ॥

कोऊ कहै इतौ नहीं अलप दोष है एह । सुनि कैं राय रहे तवहि मन में करि संदेह ॥

तब ही जब वाराणसी आये प्रभु जू सोइ । राय कछौ वृत्तांत निज तिन सौं मिलि कैं जोय ॥

छांते वृन्दाविपिन कौं जाहु कछौ प्रभु ताहि । करौ निरन्तर कृष्ण कौ नाम कीरतन आहि ॥
पाप दोषजै हैं जु तब करि इक नामाभास । अरु नामनितें कृष्ण पद पैहौ करि विश्वास ॥
चले राय वृन्दाविपिन प्रभु निदेस लै सोइ । नैमिष वन आये तबै अवधि प्रयाग हि होय ॥
प्रभु वार्त्ता पाई तबै राय जु मथुरा आय । भई नही प्रभु भेट यह भौ दुख हिय अधिकाय ॥
सूकी लकरी आनि कें मथुरा बेचें सोइ । पावै पैसा पांच छह एक वोभ के जोइ ॥
इक पैसा के चना चवि रहैं आय इहिं भाय । और वचैं धरि राखई वनिक हाट मधि जाय ॥
देखि दुखीजन कौं जु तिहिं भोजन दै सुख भेलि । देहि जु आवै गौडिया दही भात अरु तेल ॥
आये जब श्री रूप जी बहुत प्रीति किय ताहि । द्वादस करवाये जु वन अपने संग लै आहि ॥
रहे जु वृन्दाविपिन में मास एक ही रूप । चले सनातन सोधहित वेगहि नेह स्वरूप ॥
प्रभु जू गंगातीर पथ है कें गये प्रयाग । यह सुनि विव भाई तिही पथहि चले करि राग ॥
इहां सनातन जू तब आय प्रयाग हि सोइ । राज मार्ग सुधे चले आये मथुरा जोइ ॥
तिन्हें मिले तब राय जू मथुरा के मधि आहि । रूप और अनुपाम की कथा कही सब ताहि ॥
विवि भाई गौ गंग पथ ये आये पथ राज । याही तैं नाहिन भयौ तिन कौ मिलन समाज ॥
करै सनातन सौं अधिक नेह राय मति सार । नहीं सनातन मान ई सो स्नेह व्यवहार ॥
महा विरक्त सनातन जु वन-वन भ्रमै सुखैन । प्रति तरु प्रति कुंजनि रहै एक एक दिन रैन ॥
मथुरा कौ महात्म्य जिहि ग्रंथ संग्रहै जोइ । प्रगट करै तीरथ गुप्त वन में भ्रमै जु सोइ ॥
रहै सनातन इहीं विधि वृदावन मधि आह । रूप गुसाई अनुज सह कासी पहुंचे जाइ ॥
तपनमिश्र सप्तशेखर जु महाराष्ट्र द्विज सोइ । तीन जननि संग रूप जू कियो मिलन तब सोइ ॥
मिश्र गेह भिक्षा करै शेखर के गृहवास । प्रभु सिखयौ जु सनातन हि सुने मिश्र के पास ॥
कासी मधि प्रभुकौ चरित सुनिकें सुख सौं ताहि । संन्यासिन पै कृपा सुनि पाये अतिसुख आहि ॥
प्रणति देखि सब जननि की प्रभु जू विषे अपार । सुखी भये जन मुखनितें सुनि कीरतन सार ॥
गमन कियो गौड हि दिना दस रहि कें श्री रूप । यहै सनातन रूप कौ कछौ चरित्र अनूप ॥
इहां महाप्रभु जब चले लीलाचल कौं जोइ । निर्जन वन पथ चलन प्रभु पायौ अति सुख सोइ ॥
सुख सौं पावैं चले प्रभु बल भद्र हि के संग । वन मृगादि संग प्रथम ज्यों करै जु नाना रंग ॥
आय अठारह नला दिंग भटाचारज विप्र । निज जन गण हि बुलाइवैं पठयौ ताकौं छिप्र ॥
सुनि जन गण जनु फेरिकें जिये महा सुख पाय । ज्यों प्राणनि पाये उठें इन्द्रिय गण हुलसाइ ॥
आनंद विह्वल भक्तगण आये सब ही धाय । प्रभु कौ मिले नरेन्द्र मधि आय सबै सुख पाय ॥
पुरी भारती के चरण वंदन प्रभु किय जोइ । दोऊ प्रभु जू कौं कियो प्रेमालिंगण सोइ ॥

श्री स्वरूप दामोदर परिहृत गदाधर जू कासीश्वर गोविंद और जगदानंद हैं ।
वक्रेश्वर कासीमिश्र प्रद्युम्नमिश्र परिहृत दामोदर हरिदास ठाकुर अमंद हैं ॥
परिहृत श्री शंकर जू औरौ जिते भक्त सब परे प्रभु पाद पद्म जेजे अलिष्ट हैं ।
सब कौं आलिंगन के भये प्रेमाविष्ट प्रभु आनंद उद्धि वहै भक्त रस वृंद हैं ॥ १ ॥

सब भक्तनि संग लै चले महाप्रभु जू धाय । जगन्नाथ के दरस हित हियें भरे अति चाय ॥
जगन्नाथ कौ दरस करि भौ प्रभु प्रेमावेश । नृत्य गान बहु छिन कियो संग लै भक्त असेम ॥
जगन्नाथ सेवक तिन्हें द्वार प्रसाद जु दीय । तुलसी अधिकृत आयकें चरण वंदना कीय ॥
कोलाहल भौ ग्राम मधि आये प्रभु जन साथ । सार्वभौम रामानंद जु मिले जु वाणीनाथ ॥
सबकौं संगलै मिश्र घर आये प्रभु जू आहि । सार्वभौम पंडित तबै कियो निमन्त्रण ताहि ॥
प्रभु जु कहैं प्रसाद तुम ल्यावौ याही गेह । करिकें भोजन आयु छां सबके संग करि नेह ॥
तब दोऊ जगन्नाथ कौ निज प्रसाद जो दीय । सब जन संग महाप्रभु सुख सौं भोजन कीय ॥
यहै कछौ श्री गौर प्रभु लखि वृदावन जोय । जब सै लीलाचल गमन फिरि हूं कीनौ जोय ॥
यह मधि लीला कौ कियो कछु दिग दरसन सार । ज्यों कीनौ पटवरस लौं गमनागमन विहार ॥
सेस अठारह वरस लौं किय लीलाचल वास । जन गण संग करै प्रभु कीरतन उल्लास ॥
श्रवण करै याकौ सुजन श्रद्धा करि कें जोय । पैहै श्री चैतन्य के चरण वेग ही सोय ॥
क्रम करि लीला मध्य कौ अव कीजत अनुवाद । होतु किये अनुवाद कें किये कथा आस्वाद ॥
प्रथमहि लीला सेस कौ सूत्र कथन सुख सार । किहौ अंस कौ तिहीं मधि किय वर्णन विस्तार ॥
प्रभु प्रलाप वर्णन द्वितीय परिच्छेद मधि जोइ । नाना भावनि कौ तिहीं मधि दिग दरसन सोइ ॥
परिच्छेद तीजै कछौ प्रभु जू कौ संन्यास । जैसैं घर आचार्य कें कीनौ गौर विलास ॥
माधवेन्द्र जू कौ चरित वर्णन चौथें जान । थापन श्री गोपाल कौ खौर चोर विख्यान ॥
साखी श्री गोपाल कौ चरित पांचमैं आहि । नित्यानंद कहैं जु तिहिं सुने महाप्रभु ताहि ॥
सार्वभौम कौ छठैं मधि किय उद्धार विचार । तीरथ यात्रा सातयें वासुदेव निस्तार ॥
अठयें रामानंद कौ संवाद हि विस्तार । सुन्यौ आप प्रभु जू सकल सिद्धान्तनि कौ सार ॥
दक्षिण तीरथ भ्रमण प्रभु कछौ नवम में जोइ । सबै वैष्णवन कौ मिलन कछौ दसम मधि सोइ ॥
मंदिर मण्डल कीरतन कछौ ग्यारहैं जोइ । प्रख्यालन गृह गुंडिचा कछौ बारहैं जोइ ॥
रथ आगैं नर्तन जु प्रभु कछौ तेरहैं सोइ । चौदहैं हेरा पंचमी जात्रा दरसन सोइ ॥
त्रय देविन के भाव कौ श्रवण तिहीं मधि जान । भक्तनि के गुण पंद्रहैं श्री मुख करै बखान ॥
भिक्षा भट्टाचार्य गृह किय अमोघ निस्तार । विपिन गमन पथ गौड़ है सो सोरहैं मभार ॥
फिरि आये लीलाचल हि नाट हि सालातें जु । वन पथ है मथुरागमन कछौ सत्रहैं में जु ॥
वर्णन कियो अठारहैं वन विहार रस पाणि । उन विंशति मधि आगमन मथुरा तें जु प्रयाग ॥
ताही मधि श्री रूप कौ कछौ शक्ति संचार । मिलन सनातन कौ कछौ बीसति मधि सुखसार ॥
ताही मधि भगवान कौ किय स्वरूप विख्यान । हरि प्रभुता माधुर्य कहि एकविंसये जान ॥
द्वै प्रकार साधन भगति विवरण मधि बाईस । प्रेम भक्ति रस कौ कथन कछौ मध्य तेईस ॥
आत्मारामा पद अरथ चौबीस एं विचार । कासी वासी भक्त किय पचीसयें मभार ॥
कासी तें फिर आगमन लीलाचल मधि जोइ । भक्तन कौ मिलिबौ कछौ ताही के मधि सोइ ॥

परिच्छेद पचीस कौ यह कीनौ अनुद । जाकैं सुनें जु होत हैं ग्रन्थ अर्थ आस्वा
यहै कष्टौ संक्षेप करि मधि लीला कौ सार । वर्णन कोटिक ग्रंथ करि जाय न यह विस्ता
देस देस मधि प्रभु भ्रमै हेतु जीव निस्तार । आप भक्ति आस्वाद करि ताकौ कियौ प्रचा
कृष्ण तत्व हरि भक्त कौ तत्व जु प्रेम विचार । भावतत्व रसतत्व पुनि लीलातत्व सु सार
विस्तारे निज वदन करि भक्त हेतु प्रभु जोइ । कहूं कहां जे भक्त मुख सुने आप प्रभु सोइ ॥
दाता वडे कृपालु अति वत्सल जन दुख जान । तीन लोक में और नहिं श्री चैतन्य समान ॥
श्रद्धा करि लीला यहै सुनें भक्त गण आहि । पैहौ श्री चैतन्य पद कृपा जु हरि कै ताहि
पैहौ इहीं प्रसाद करि कृष्णतत्व कौ सार । सबै सास्त्र सिद्धांत के पैयै यातें पार ॥

राग भैरव—सुनौ रसिक भक्त जूथ दीन वचन मेरौ ।

सब की पद रेनु धरिकैं तनु कें आभरण करिकैं, करौ कछु निवेदन हों ताहि हिये हेरौ ॥ टेक ॥
कृष्ण लीला अमृत सार ताकी सत सहस्र धार, याहीं तें दसौं दिसा वहै निज सुधार ।
लीला चैतन्य जोई अक्षय सरवर हैं सोइ, तामैं मनहंस कौ करावौ आधार ॥ २ ॥
भक्ति के सिद्धांत रास फूले बन कमल जास, ताकौ मकरंद स्वाद करौ रसिक जेई ।
कुमुदवन जु प्रेमरस है प्रफुलित निसि द्यौस, वहै तामें मन भ्रमर गणहि पोख्यौ नित तेई ॥ ३ ॥
नाभा विधि भक्त सुजन हंस चक्रवाक निगम, सब ही मिलि जाही मधि करत है विहार ।
कृष्ण केलि रस मृणाल पैयै जहां सर्वकाल, ताही कौ भक्तहंस करै नित अहार ॥ ४ ॥
ताही सरवरहि जैकैं हंस मृग चक्र है कै, सुख सौं तुम करौ तहां सदाई विलास ।
नसि है सब दुख निदान पैहौ अति सुख की खानि, अनायास है है हियें प्रेमहि उल्लास ॥ ५ ॥
यहै अमृत रस अखंड साधु संत धन प्रचंड, बरखै उद्यान विश्व या की भकोर तें ।
तातें प्रेम फल फलें स्वादैं तिहिं भक्त सदा तिनके, अबसेस जिये जीव जगत घोरतें ॥ ६ ॥
गौर लीला अमृत पूर कृष्ण लीला पुनि कपूर, दोउन के मिलें होय माधुरी अपार ।
साधु गुरु प्रसाद जाहि लहै पान करै सोई, ताहि वहै माधुरी कौ स्वाद जानें निरधार ॥ ७ ॥
जिहि लीला अमृत विना करै जदपि खान पान, तऊ भक्त जीवन है दुर्वल अति सोई ।
एक बूंद पीवै जाहि प्रफुलित तन मन सु आहि हसैं गावैं नृत्य करै रस में मगन होई ॥ ८ ॥
यहै अमृत करौ पान जाकी सम नहीं आन, करि कें निज हृदय सुदृढ़ अति ही विश्वास ।
परौ जिन कुतर्क गर्त अशुचि कठिनता आवर्त, जाके विच परतहीं जु है है सब नास ॥ ९ ॥
महाप्रभू नित्यानंद श्री अद्वैत भक्त वृंद, और जिते श्रोता जन साधु आस पास ही ।
सब के श्री चरण कमल करिकैं सिरोरत्न विमल, ताहीं तें पूर्ण होय बांछित अनायास ही ॥ १० ॥
रूप श्री सनातन रघुनाथ जीव चरण कमल, धरिकैं निज सीस करै तिन ही की आस । ॥ ११ ॥
कृष्ण लीला अमृत सहित गौर चंद्र चरितामृत, कहै कछु ताहि दीन हीन कृष्णदास ॥ १२ ॥
रूप श्री सनातन जगन्नाथ सुवल स्याम चरण, कमल ही में भूंग जाकौ मन सतृष्ण ।
वरण्यो कविराज गौर चरितामृत भाषा निज, प्रगट करै भाषा ब्रज ताहि वेणी कृष्ण ॥ १३ ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखंडे कासी वासी वैष्णवकरन महाप्रभुलीलादिगमन
मध्यलीलानुवादकरणो नाम पंचविंशतिपरिच्छेदः ॥

॥ समाप्तोयं मध्यखण्डः ॥

